डॉक्टर ज़िवागो

बोरीस पास्तरनाक

बोरीस पास्तरनाक

(1890-1960)

चित्रकार पिता लियोनिड पास्तरनाक और संगीतज्ञ माता रोजा कॉफमेन की प्रथम सन्तान बोरीस पास्तरनाक को दृश्य-संवेदन और ध्वनि-संवेदन तो मानो विरासत में ही मिले थे। 1917 से 1932 के बीच की अवधि में पास्तरनाक रूसी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर हो गये थे। 1932 में अपनी आत्मकथात्मक कविता 'स्पेक्टोर्स्की' के प्रकाशन के बाद उन पर समाजविरोधी होने के आरोप लगाये गये और उन्हें सोवियत सत्ता का कोपभाजन होना पड़ा। पास्तरनाक इस के बाद मास्को की उपबस्तियों में लगभग एकान्त में रहते हुए जीविका के लिए अनुवाद कार्य करते रहे—मुख्यरूप से शेक्सपियर और गेटे की रचनाओं का अनुवाद। उन्होंने रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविताओं का भी रूसी में अनुवाद किया। लगभग पचीस वर्ष की चुप्पी के बाद उन के उपन्यास 'डॉ. ज़िवागो' का प्रकाशन हुआ। 1958 में उन्हें नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 'डॉ. ज़िवागो' के अतिरिक्त 'ट्विन्स इन दि क्लाउड', 'माई सिस्टर, लाइफ', 'थीम्स एण्ड वेरिएशन्स', 'एरियल वेज', 'दि ईयर 1905', 'लेफ्टिनेंट श्मिट' आदि उन की कृतियाँ बहुत प्रसिद्ध हुईं। 'सेफ कंडक्ट' शीर्षक से प्रकाशित उन की आत्मकथा भी बहुत लोकप्रिय हुई।

श्रीसत्य

हिन्दी के कथाकार-अनुवादक। उपन्यास 'चिन्मय', 'स्वप्नशेष', 'सती' तथा 'मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना' (हास्य-व्यंग्य) प्रकाशित।

डॉक्टर ज़िवागो

उपन्यास

बोरीस पास्तरनाक

नोबल पुरस्कार से सम्मानित रूसी लेखक

अनुवादक

श्रीसत्य

सहायक

सोहनलाल मेहता

बुद्धिवल्लभ चतुर्वेदी

वाग्देवी प्रकाशन
सुगन निवास, चन्दनसागर
बीकानेर 334001

प्रथम पॉकेट बुक संस्करण : 2000 ई.

मुद्रक : सांखला प्रिण्टर्स
सुगन निवास, चन्दनसागर
बीकानेर 334001

ISBN 81-85127-99-9

DOCTOR ZHIVAGO *(Novel)* by Boris Pasternak
Translated by Śrisatya

त्वदीय वस्तु गोविन्दम् तुभ्यमेव समर्पयेत्

मानवीय संवेदना से सजग-स्पष्ट-द्रष्टा और महान लेखक

बोरीस पास्तरनाक

को अपनी ही पुस्तक का यह अनुवाद

सादर समर्पित

पात्र-परिचय

यूरी : यूरी, यूरा, ज़िवागो। डाक्टर, लेखक, कवि। कथा नायक।

निकोलाय : यूरी की विचारधारा को सबसे अधिक प्रोत्साहन और प्रेरणा देने वाले, उसके मामा।

अलेक्जेण्डर : टोन्या के पिता। यूरी इन्हीं के यहाँ बड़ा हुआ था। बाद में यूरी के ससुर।

अन्ना : उदारहृदया, अलेक्जेण्डर की पत्नी, जिसकी मृत्यु ने यूरी के जीवन में अपूरणीय अभाव उत्पन्न कर दिया था।

टोन्या : यूरी की बचपन की साथी। पत्नी। यूरी के प्रति अनुरक्त, बाद में भाग्य की विडम्बना के कारण प्रताड़ित।

लारा : कोमारोवस्की द्वारा छली हुई संतप्त अनाथ लड़की। पाशा की प्रेमासक्त पत्नी। यूरी की उन्मुक्त, मगर गंभीर प्रेमिका। उसके जीवन की अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं की साक्षी। विभिन्न परिस्थितियों में यूरी के जीवन में विशिष्ट भूमिका अदा करने वाली। उसके काव्य और मनोभूमि के उच्च धरातल की प्रेरणा। युग की जीती-जागती तस्वीर।

कोमारोवस्की : लारा के जीवन में अपने अन्धानुराग द्वारा विष-बीज बोने वाला अधेड़ वकील। कथा के दुखान्त भाग का सूत्रधार।

पाशा आन्तिपोव : लारा का पति। प्रतिभाशाली, ओजस्वी, कर्मठ, शानदार, स्कन्ध-पुरुष। बाद में स्ट्रेलिनिकोव के रूप में प्रस्तुत।

गेल्युलिन : पाशा का मित्र होते हुए भी श्वेत दल के लेफ्टिनेन्ट के रूप में घातक शत्रु।

पोल्या : पेलेगिया, त्यागुनोवा। क्रान्ति और गृह-युद्ध में भटकती हुई भाग्य प्रताड़ित लड़की।

सामदेवयातोव : यूरी के सहायक। बाद में लारा के शुभेच्छु। मस्त स्वभाव के, अत्यन्त प्रभावशाली, बातूनी व्यक्ति।

मिकुलित्सिन : भूतपूर्व ज़िवागो-भवन के व्यवस्थापक और वन्य-भातृत्व के नेता, लिबेरियस के पिता।

लिबेरियस : गृह-युद्ध के समय सपक्षीय सेना का संचालक।

ग्लाफिरा : ग्लाशा। हरफन मौला। हर तरह के काम में मुस्तैद।

सीमा : निकोलाय निकोलायविच के दार्शनिक विचारों से प्रभावित ग्लाफिरा की बहन। लारा की सहेली।

तान्या : लारा और यूरी की अनाथ लड़की।

मरीना : यूरी का तीसरा प्रेमकाण्ड। मृत्यु साक्षी के समय लारा के अलावा अपना प्रेम व्यक्त करने अपने बच्चों के साथ शेष रही।

वास्या : सपक्षीय सेना से जान छुड़ा कर भागा हुआ एक लड़का। पोल्या के प्रति आसक्त। अन्तिम चरण में यूरी का सहायक और बाद में उसके साहित्य का प्रकाशक।

युवग्राफ : ज़िवागो का सौतेला भाई। मेजर जनरल। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से यूरी की सहायता करने वाला।

डुडरोव, निकी : यूरी के दो मित्र।

क्रम

1

पाँच बजे की एक्सप्रेस

'शाश्वत-स्मृति' का गीत गाते हुए वे आगे-आगे चले जा रहे थे। जब उनके गीतों का स्वर रुक जाता, तब उनकी पदध्वनि, घोड़ों की टाप और हवा की सांय-सांय उनके गीतों की लय को प्रवाहित करने लगती।

शव-यात्रियों को मार्ग देते हुए रास्ते के लोग एक ओर हट जाते। शव पर लटक रहे हारों को गिनते हुए उनके हाथ कन्धे, मस्तक और छाती को छू लेते। इस प्रकार मृतक आत्मा के प्रति वे अपनी धार्मिक श्रद्धा व्यक्त कर रहे थे।

कौतूहलवश कुछ लोग शव-यात्रियों के साथ चलने लगे। रास्ते चलते लोगों में से कुछ ने पूछा—किसे दफनाया जा रहा है?

उन्हें प्रत्युत्तर मिला—ज़िवागो को!

—अच्छा, यह बात है। तभी!

—ज़िवागो नहीं, यह उसकी पत्नी है।

खैर, मतलब एक ही है। भगवान उसकी आत्मा को शांति प्रदान करे। जनाजा बड़ा शानदार निकला है।

प्रत्येक क्षण सदा के लिए बीतता जा रहा था।

पादरी ने मंत्र पढ़ा—'भूमि ईश्वर की है और उसकी व्याप्ति सभी में है। पृथिवी और उसमें रहने वालों में 'वह' विद्यमान है।'

उसने मार्या निकोलायेवना की लाश पर क्रास के आकार में मिट्टी फैला दी। न्याय की अन्तरात्मा—'सोल आफ द जस्ट'—का गीत आरम्भ हुआ।

इसके बाद भयाक्रांत कार्यवाही शुरू हुई। कफन ढंक दिया गया। कीलें ठोंक दी गयीं और खुदी हुई कब्र में लाश को रख दिया गया। चार फावड़ों ने जल्दी-जल्दी मिट्टी डाली। बरसात की बूँदों की सी आवाज सुनाई देने लगी। कब्र पर मिट्टी का एक टीला बन गया।

एक दसवर्षीय बालक उसके पास जाकर खड़ा हो गया।

जब किसी बड़े आदमी की अंत्येष्टी-क्रिया सम्पादित होती है, तो लोगों में भावरहित चेतनाशून्य स्थिति आ जाती है। इसी कारण कुछ लोगों को लगा, यह बालक भी अपनी माँ की कब्र पर खड़ा होकर शोक-संदेश देना चाहता है।

बालक ने अपना सिर ऊपर उठाया। सामने फैली हुई पतझड़ के कारण वीरान विस्तीर्ण भूमि और ऊँचे उठे हुए आश्रम के गुम्बदों की ओर वह भाव-शून्य नेत्रों से देखता रहा। शोक के कारण छोटी नाक वाले इस लड़के का चेहरा विकृत हो गया था। उसने गर्दन सीधी की; ऊपर उठाई। यदि भेड़िये का बच्चा इसी तरह गर्दन ऊपर उठाकर देखता तो उसका यही अर्थ लगाया जाता कि वह अब जोर से चिल्लानेवाला है। अपने दोनों हाथों से मुँह ढँक कर वह फूट-फूट कर रोने लगा। वायु की शीतल ओसमयी लहरियों ने उसके चेहरे और हाथों को तरल कर दिया।

इसी समय तंग आस्तीन के काले कपड़े पहने एक व्यक्ति उसके पास चला आया। यह था निकोलाय निकोलायविच् वेन्डेनयापिन। मृत-स्त्री का भाई और इस लड़के का मामा। वह पादरी था; मगर उसकी अपनी प्रार्थना के कारण उसे इस धार्मिक अनुष्ठान के पद से मुक्त कर दिया गया था।

वह बालक के पास गया और उसे लेकर श्मशान भूमि से बाहर चला आया।

दो

उन्होंने वह रात वहीं आश्रम में बिताई। अपने पुराने सम्बन्धों के कारण कोल्या को यहाँ जगह मिल गई थी।

कुंवारी मरियम की अमरता प्राप्ति के त्यौहार का वह पहला दिन था।

उनका विचार था कि दूसरे दिन दक्षिण में वोल्गा के किनारे के एक शहर की ओर वे चले जायँ जहाँ कोल्या मामा एक प्रगतिवादी समाचार-पत्र के प्रकाशक के यहाँ काम करते थे। टिकट वगैरह खरीदे जा चुके थे। सामान असबाब भी बंधा हुआ तैयार था। दूर कहीं पड़ोस में डिब्बे जोड़ने वाले इंजन की फूत्कार हवा में तैरती हुई-सी सुनाई दे रही थी।

शाम हुई। ठंड पड़ने लगी। कमरे की दोनों खिड़कियाँ जमीन की सतह पर थीं। आश्रम के अन्तर्भाग की उपेक्षित वीरान बगिया का कोना वहाँ से दिखाई देता था। इसी कोने से घूम कर मुख्य सड़क आगे निकल जाती थी। सड़क पर यहाँ-वहाँ बर्फ़ फैली हुई थी।

इसी खिड़की से गिरजाघर का वह कोना भी दिखाई पड़ता था, जहाँ एक दिन पहले मार्या निकोलायेवना की अंत्येष्टि की गयी थी।

अन्तर्भाग के उस साग-सब्जियों वाले बगीचे में दीवाल के पास अकाशिया की झाड़ियाँ और बर्फ़ से ठिठुर कर कुम्हलाई हुई गोभी की दो चार क्यारियों के अतिरिक्त कुछ भी न था।

किसी प्रेत के वशीभूत होकर बिना पत्तों वाली अकाशी झाड़ियाँ नाचती-नाचती धरती पर पसर जाती थीं।

मध्यरात्रि की नीरवता में खिड़की पर होने वाली खड़खड़ाहट से बालक यूरा जाग गया। अन्धकारमय कमरा एक अजीब से प्रकाश से भर-सा गया। यूरा के शरीर पर सिवाय एक कमीज के कुछ भी न था, फिर भी वह उठकर खिड़की के ठंडे शीशे पर नाक लगाकर बाहर झाँकने की कोशिश करने लगा।

बाहर न सड़क दिखाई दे रही थी, न श्मशानभूमि, न आश्रम के अन्तर्भाग वाली बगिया। दिखाई देते थे चारों ओर सिर्फ़ बर्फ़ीले तूफ़ान के धुँध भरी तेज हवाओं के झोंके।

मानो तूफ़ान ने यूरा को देख लिया। उसे डराने की अपनी क्षमता पर विश्वास करके वह और जोर से सांय-सांय करने लगा। यूरा के ध्यान को अपनी ओर आकर्षित करने की वह हरचंद कोशिश कर रहा था।

श्वेत बर्फ़ की तरंगें जोर से आकाश की ओर उठतीं, छा जातीं, फिर उतनी ही तीव्र गति से नीचे गिरती हुई दिखाई देतीं और धरती का मुँह सफ़ेद फक् कर देतीं। पृथिवी पर तूफ़ान का एक छत्र साम्राज्य था। उसका मुकाबला करने वाला कहीं कोई न था।

खिड़की से नीचे उतरते ही यूरा की पहली इच्छा यह हुई कि वह कपड़े पहन कर बाहर भाग जाय और कुछ न कुछ करना शुरू कर दे। उसे डर था कि गोभी के पौधों पर बर्फ़ इस तरह छा जाएगी कि कोई उन्हें निकाल नहीं पाएगा। इसी तरह खुले मैदान में दफन की हुई उसकी माँ बेबसी से जमीन में और गहरी धँस जाएगी—और उससे दूर होती जाएगी।

एक बार फिर उसकी आँखें भर आईं; उसका मामा उठ बैठा। ईसा की कहानियाँ सुना कर वह उसे सान्त्वना देने की कोशिश करने लगा। अंगड़ाई लेकर अन्यमनस्क-सा मामा खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया।

दोनों कपड़े पहनने लगे। सुबह हो रही थी।

तीन

जब तक उसकी माँ जीवित थी, यूरा को मालूम नहीं था कि उसके पिता ने बहुत अर्से पहले ही उन्हें छोड़ दिया है। वह साइबेरिया में वेश्यागमन और शराब के नशे में धुत्त पड़ा रहता। यूरा को यह भी मालूम न था कि लाखों रुपयों की जायदाद उसके पिता ने इन्हीं सब कामों में उड़ा दी थी। उसे हमेशा यही कहा जाता था कि उसका पिता व्यवसाय के सिलसिले में पीटर्सबर्ग या किसी बड़े मेले में (विशेष कर इर्बिट के) गया है।

उसकी माँ शुरू से ही कमजोर थी। बाद में उसे क्षय हो गया। दक्षिणी-फ्रांस अथवा उत्तरी इटली में वह इलाज करवाने के लिए अक्सर जाया करती थी। उसकी इन यात्राओं में यूरा दो बार उसके साथ था। अक्सर उसे अपरिचित लोगों के पास छोड़ दिया जाता था। एक अजनबी से दूसरे अजनबी के पास रहने का वह आदी हो गया था। चिर रहस्य से

आच्छादित इस तरह की असामान्य पृष्ठभूमि के कारण और हर रोज़ के परिवर्तनों से वह इतना अभ्यस्त हो गया था कि उसे अपने पिता की अनुपस्थिति से कोई आश्चर्य नहीं होता था।

उसे अपने बचपन के वे दिन याद आ जाते, जब कई विभिन्न उपकरण उसके जाति-नाम से पुकारे जाते थे। ज़िवागो फैक्टरियाँ थीं, ज़िवागो बैंक थे, ज़िवागो भवन थे, ज़िवागो टाई-पिन थीं,—यहाँ तक कि एक विशेष प्रकार की केक का नाम भी 'ज़िवागो-बॅन' विख्यात हो गया था। एक समय ऐसा भी था कि मास्को के किसी भी स्ले-गाड़ी वाले को सिर्फ़ इतना ही कहते—'ज़िवागो के यहाँ' तो वह अपनी स्ले में बिठा कर इस दुनियां से परे की किसी और ही जादूभरी नगरी में आपको पहुँचा देता। ठीक उसी तरह, जिस तरह आप उसे कहें—टिम्बकटू चलो। उस क्षेत्र में जाते ही बड़े-बड़े बाग गाँवों की शांति का सुखद आभास देते। फर-वृक्षों की बड़ी-बड़ी डालियों पर कौवे जब बैठते तो हल्की-सी बर्फ़ जमीन पर गिरने लगती। उनकी काँव-काँव ईंधन की लकड़ियों के तोड़ने की आवाज़ की तरह सुनाई देती। दूर अन्धकार में जब रोशनी चमकने लगती, तब अपने घरों से कुत्ते खुले मैदान में आ जाते।

एकाएक सब कुछ विलीन हो गया। वे गरीब हो गये।

चार

माँ की मृत्यु के दो साल बाद सन् 1903 ग्रीष्म की गर्मियों में एक दिन यूरा अपने मामा कोल्या के साथ दो घोड़ों वाली खुली गाड़ी में, इवान इवानोविच वोस्कोबोयनिकोव नामक अध्यापक से मिलने के लिए कोलोग्रीवोव की जागीर में डुप्ल्यांका की ओर जा रहा था। इवान इवानोविच वोस्कोबोयनिकोव प्रचलित स्कूली किताबों का लेखक था। कोलोग्रीवोव रेशम बनाने के कारखाने का मालिक था; और वह कला का कद्रदां भी माना जाता था।

उस दिन 'कजान की कुंवारी' का त्यौहार था। फसल लहलहा रही थी। शायद दोपहर होने के कारण, अथवा त्योहार के कारण रास्ते में

बिलकुल सन्नाटा था। अधकटी फसल के खेत आधे बाल-कटे कैदियों की तरह धूप में तिलमिला रहे थे। सिर पर चिड़ियाँ चक्कर काट रही थीं। पके हुए धान की बालें तन कर सीधी खड़ी थीं।

रास्ते के उस पार भी फसल के ऊपरी कटे हुए हिस्से सिर ताने खड़े थे। दूर से ध्यानपूर्वक देखने पर लगता कि मानो वे मंथर गति से हिल रहे हों जैसे ऊपर फैले हुए आकाश की ओर देखते हुए सावधान भूमि-निरीक्षकों की तरह नोट्स तैयार करने में व्यस्त हों।

पावेल से निकोलाय निकोलायविच ने पूछा—ये खेत जमींदारों के हैं या किसानों के?

पावेल प्रकाशक महोदय का पीर-बवर्ची-भिश्ती-खर सभी कुछ था। वह चालक के स्थान पर बैठा हुआ था। कूबड़ निकाल कर और टांगें तिरछी करके अपनी लापरवाही से वह यह सिद्ध करना चाहता था कि दरअसल गाड़ी चलाना उसका काम नहीं है। उसने विरक्त भाव से जवाब दिया—ये जमींदारों के हैं।

उसने अपना पाइप निकाला, जलाया और एक-दो कश लेकर उनका दूसरी ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उसने कहा—वे हमारे हैं!

चलो जी, तेजी से चलो, उसने घोड़ों से कहा। घोड़ों की पूँछ और पीठ पर उसकी निगाह ठीक वैसी ही थी जिस प्रकार इंजिन ड्राइवर की इंजिन के अनेक कल-पुर्जों पर होती है। लेकिन घोड़े तो आखिर घोड़े ही ठहरे। एक घोड़ा कभी अपनी चाल तेज करके दौड़ने लगता तो दूसरा हँस की तरह शान से सिर हिला कर कुछ ऐसा ज़ाहिर करता मानो उसका काम तो मात्र शोभा बढ़ाना ही है और जैसे टापों और गले में बजने वाली घण्टी का सुर मिलाना ही उसका विशेष उत्तरदायित्व है।

निकोलाय निकोलायविच अपने साथ वोस्कोबोयनिकोव के भूमि सम्बन्धी मसलों पर लिखी गयी पुस्तक के प्रूफ लाया था। बढ़े हुए सैंसरशिप के कठिन कायदों का खयाल रखते हुए पुस्तक को एक बार फिर से देखने के लिये प्रकाशक ने आग्रह किया था।

उसने पावेल से कहा : यहाँ लोग काफी उपद्रवी हो रहे हैं? सुना है एक व्यापारी का गला काट डाला गया और गाँव के मामलों से सम्बन्धित एक सरकारी अफसर का सारा खेत जला डाला गया? इन सबके बारे में तुम्हारा क्या खयाल है? तुम्हारे गाँव वाले इस बारे में क्या कहते हैं?

पावेल का दृष्टिकोण प्रत्यक्ष रूप से सैंसर से भी अधिक अस्पष्ट था। वह चाहता था कि वास्कोबोयनिकोव अपने कृषि सम्बन्धी अडिग विचारों को मर्यादित करे।

—आप उनसे किस बात की अपेक्षा रखते हैं? अब किसान काबू से बाहर हैं। उनके साथ ज़रूरत से ज्यादा अच्छा व्यवहार हुआ है। इतना अच्छा व्यवहार हम लोगों को बिगाड़ने के लिए पर्याप्त है। हर किसान के हाथ में थमा दीजिए एक रस्सा और फिर देखिये हम एक दूसरे के गले में किस तरह फाँसी लगा देते हैं। '—चल बे—चल—जल्दी चल।'

मामा के साथ डुप्ल्यांका जाने का यूरा का यह दूसरा मौका था। उसका खयाल था कि वह रास्ता जानता है। आगे और पीछे फैली हुई जंगल की धूमिल रेखाओं को देखकर हर बार वह सोचता कि रास्ता दाहिनी ओर मुड़ जाएगा और कोलोग्रिवोव-जागीर दिखाई देने लगेगी। जहाँ दस मील तक फैला हुआ खुला मैदान होगा, नदी बह रही होगी और उसके पार रेलवे लाइन होगी। मगर हर बार उसका अन्दाज़ ग़लत सिद्ध होता। मैदान आते और जंगलों की विशाल कोख में समा जाते। एक के बाद एक आने वाले इन दृश्यों को देखकर यात्रियों के मन में विशालता की भावना का उदय होने लगता और वे भविष्य के बारे में सोचते हुए ख्वाबों में डूब से जाते।

जिन पुस्तकों ने निकोलाय निकोलायविच को बाद में इतना प्रसिद्ध कर दिया था, वे अभी तक लिखी नहीं गयी थीं। हालाँकि उसके विचार परिपक्व हो चुके थे। फिर भी उसे मालूम नहीं था कि वह सफलता के इतना करीब आ चुका है।

शीघ्र ही अपने जमाने के लेखकों में वह अपना निर्दिष्ट स्थान प्राप्त करने वाला था। क्रांतिकारी आन्दोलन के समय के दार्शनिकों और विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों के समकक्ष होने पर भी उनके साथ, उनके रहन-सहन और विचारादि के साथ उसका कोई मेल न था, सिवाय पारिभाषिक शब्दों की एकता के। बिना किसी अपवाद के वे सभी किसी न किसी बात अथवा तत्त्वविशेष की चर्चा में शब्दों के हेरफेर अथवा उसकी बाहरी रूपरेखा की बातें करके संतोष कर लेते थे। लेकिन निकोलाय पादरी होने के साथ क्रांतिकारी तथा आदर्शवादी टालस्टाय का अनुयायी दोनों ही था; और अपने मत पर दृढ़ था। वह किसी एक विचारधारा के पीछे पड़ता, प्रेरित होता और उस पर मजबूत रहता, ताकि उसे स्पष्ट मार्ग दिखाई दे और संसार अधिक श्रेष्ठ सुन्दर बने। उसके मतानुसार ये सिद्धान्त इतने सरल और सर्वव्यापी होने चाहिए कि वे किसी बच्चे की भी समझ में आ सकें अथवा किसी जड़-भरत को भी बिजली के प्रकाश की तरह स्पष्ट दिखाई दे सकें। ऐसी किसी नूतन विचारधारा उसके मन में दृढ़तापूर्वक जड़ जमा रही थी।

यूरा को अपने मामा के साथ रहना बहुत पसन्द था। उससे यूरा को अपनी माँ की याद आ जाती। माँ की तरह ही मामा का मस्तिष्क स्वतंत्रता-प्रेमी था। किसी भी प्रकार का अपरिचित वातावरण उसके लिए अनुकूल सिद्ध होता था। सभी प्राणियों को समानभाव से देखने की सौन्दर्यपूर्ण दृष्टि और मस्त स्वभाव ठीक माँ की तरह उसका भी था। माँ की तरह ही मामा किसी वस्तु का तत्त्व एक ही नजर में समझ सकता था और किसी भी विचार को, उसके समाप्त होने से पहले ठीक तरीके से अभिव्यक्त कर सकता था।

मामा के साथ डुप्ल्यांका जाते समय यूरा को बड़ी खुशी हो रही थी। यह बहुत ही खूबसूरत जगह थी। इससे भी उसे अपनी माँ की याद ताजा हो आती थी। माँ को भी प्राकृतिक दृश्यों के प्रति बड़ा चाव था और वह यूरा को अक्सर अपने साथ गाँवों की ओर ले आया करती थी।

निकी डुडोरोव से मिलने के लिए भी यूरा आतुर था। निकी उससे दो वर्ष बड़ा था। वह शायद यूरा को तिरस्कार की दृष्टि से ही देखता था। वास्कोबोयनिकोव के यहाँ रहने वाला वह एक स्कूल का विद्यार्थी था। उसने जब यूरा के साथ हाथ मिलाया तो उसके माथे के बाल ललाट पर लटक आये और उसका आधा चेहरा उसमें छिप गया। पूरी ताकत के साथ उसने यूरा का हाथ, हाथ मिलाते समय झटक दिया।

पाँच

संशोधित पाण्डुलिपि पढ़ते हुए निकोलाय निकोलायविच ने कहा—गरीबी की समस्या की जड़!

—मूल जड़ कहिये महाशय। मेरे खयाल में यह अधिक ठीक होगा।—इवान इवानोविच ने प्रूफ संशोधित करते हुए कहा।

आधे अंधकार से ढके हुए बरामदे के एक हिस्से में वे काम कर रहे थे। कुदाल-फावड़ा आदि बगीचे का सामान पास ही पड़ा था। एक ओर टूटी हुई कुर्सी पर एक बरसाती कोट लटक रहा था। कीचड़ से सने हुए बरसाती जूते एक कोने में उलटे पड़े थे। उनमें से पानी चू रहा था।

निकोलाय निकोलायविच ने लिखाया—दूसरी ओर जन्म-मृत्यु के आंकड़े साबित करते हैं...

—'विचाराधीन वर्ष के अन्तर्गत।' —यह भी जोड़ लीजिये—इवान इवानोविच ने कापी में नोट करते हुए कहा। थोड़ी देर तक निस्तब्धता छा गयी। ग्रेनाईट के टुकड़े कागजों पर रख दिये गये, ताकि वे उड़ न जाएँ।

काम खत्म होते ही निकोलाय निकोलायविच जाने के लिये तैयार हो गया।

बोला—तूफान आनेवाला है। चलना चाहिए।

—कोई बात नहीं। मैं जाने नहीं दूँगा। अब हम चाय पीयेंगे।

—लेकिन मुझे सन्ध्या से पहले शहर अवश्य पहुँच जाना चाहिए।

—बहस करना व्यर्थ है। मैं मानूँगा ही नहीं।

तम्बाकू की मिली-जुली गंध के साथ बगीचे में धुआँ फैला हुआ था। चाय तैयार थी। नौकरानी एक बड़ी-सी ट्रे में मक्खन, कैक और कुछ फल ले आई। मालूम हुआ कि पावेल घोड़ों के साथ नदी में स्नान करने गया हुआ है। निकोलाय निकोलायविच के पास सिवाय रुक जाने के कोई उपाय नहीं था।

इवान इवानोविच ने प्रस्ताव रखा—जब तक चाय तैयार हो रही है, चलो नदी तक घूम आएँ।

कोलोग्रिवोव की मित्रता के बल पर उसने मैनेजर के दो कमरों पर कब्जा जमा लिया था। बगीचे के एक कोने में, छोटी-सी बगिया में, उसके रहने का स्थान था। उसके पास से ही पुराना रास्ता गुज़रता था। जहाँ पर काफी घास उग आई थी और जिसका सिवाय मैले की गाड़ियाँ खड़ी करने के, अब कोई उपयोग नहीं होता था। परिणामस्वरूप नाली का कूड़ा-कचरा फेंकने का वह स्थान बन गया था।

लक्ष्मीपति कोलोग्रिवोव के विचार काफी उदार थे। क्रांतिकारियों का वह पक्षपाती था। अपनी पत्नी के साथ इस समय वह कहीं बाहर-गाँव गया हुआ था। कुछ नौकरों और अपनी दाइयों के साथ उसकी लड़कियां, लीपा और नादिया, उसी मकान में रह रही थीं।

मैनेजर के रहने के स्थान और नकली झील तथा लान से सुशोभित इस मकान के बीच ब्लेक-हार्न की बाड़-सी लगी हुई थी। जैसे ही वे दोनों बाड़ के करीब पहुँचे गोरैया का झुंड फुर्ती से उड़ गया। ब्लेक-हार्न के कांटे उन दोनों के शरीर पर चिपक गये थे और उनकी गपशप अबाध रूप से प्रवाहित थी।

पुराने भवन के पत्थरों के टीले, माली के रहने का स्थान और कोमल वनस्पतियों को गर्म रखने वाले शीशे के छोटे मकानों को वे पार कर गये। साहित्यिक महारथियों में प्रतिभाशाली लोगों की नई धारा के विषय में वे बातचीत कर रहे थे।

निकोलाय निकोलायविच ने कहा—प्रतिभाशाली लोग सुलभ हैं जरूर, मगर अपवाद रूप से। वे अपने में ही मस्त रहते हैं। क्लब और सोसाइटियाँ तो आजकल फैशन की तरह हर बारे में बन रही हैं। जहाँ भी लोग एकत्र होते हैं उनमें उदासीनता के चिह्न ही दृष्टिगोचर होते हैं—चाहे सोलोव्येय के प्रति वफादार लोगों का समुदाय हो, चाहे कान्त या मार्क्स के प्रति वफादार लोगों का दल। सत्यशोध तो सिर्फ़ व्यक्तिगत रूप से सम्भव है। और जिनका सत्यशोध के प्रति इतना आग्रह नहीं है, उनसे इस तरह के प्रतिभाशाली व्यक्तिवादी लोग अलग-से हो जाते हैं। दरअसल संसार में हैं ही कितनी चीज़ें—जिनके प्रति हम वफादार रह सकें? वास्तव में बहुत कम। चिर-शाश्वत—यह उपमा ही जीवन के लिये अधिक सार्थक है—प्रत्येक को इसी पर विश्वास करना चाहिए। प्रत्येक को ईसा-मसीह के प्रति सच्चा रहना चाहिए—अनश्वरता के प्रति ईमानदार रहना चाहिए।

मेरे प्यारे भाई, शायद तुम बुरा मान गये। मैंने जो कुछ कहा, तुम उसमें से एक भी शब्द नहीं समझे।

—हुं? इवान इवानोविच ने प्रत्युत्तर में हुँकार भरी। इवान दुबला-पतला चंचल स्वभाव का युवक था। अपनी छोटी दाढ़ी और खूबसूरत बालों के कारण वह लिंकन के समय् का अमेरिकन लगता था। अपनी दाढ़ी को सहलाने और उसकी नोक के साथ खेलते रहने की उसकी आदत थी। उसने कहा—वास्तव में मैं कुछ नहीं कहता। तुम्हें तो मालूम ही है कि इन बातों के प्रति मेरा दूसरा ही दृष्टिकोण है। खैर, जब बात चल ही निकली है, तो पूछता हूँ कि जिस दिन तुम्हें धर्मगुरु के पद से अलग कर दिया गया, उस दिन तुम्हारे मन पर क्या बीती? तुम्हें निश्चित रूप से दुख हुआ होगा—यह मैं शर्त लगा कर कह सकता हूँ। उन लोगों ने तुम्हारी काफी निन्दा की होगी?

—तुम विषय बदलने की कोशिश कर रहे हो। फिर भी...नहीं, उन्होंने मुझ पर श्राप नहीं बरसाये। आजकल किसी को श्राप दिया नहीं जाता।

कुछ कटु लगनेवाली बातें अवश्य हो गयीं और परिणामजनित घटनाएँ भी। उदाहरण के लिए मुझे कई वर्षों के लिए असैनिक नौकरी से वंचित कर दिया गया है। मास्को और पीटर्सबर्ग में मेरा प्रवेश निषिद्ध है। लेकिन ये सब छोटी बातें हैं। मैं कह रहा था कि प्रत्येक व्यक्ति को मसीह के प्रति ईमानदार रहना चाहिए। मैं इसे स्पष्ट रूप से समझाता हूँ। जिस बात को तुम नहीं समझ पा रहे हो—वह यह है कि नास्तिक होना सम्भव है। बहुत सरलता से तुम यह मान सकते हो कि ईश्वर का अस्तित्व है ही नहीं। और परमात्मा का अस्तित्व होना जरूरी भी क्यों है? फिर भी यह विश्वास तो करते ही हो कि मनुष्य प्राकृतिक नियमान्तर्गत नहीं रहता, बल्कि वह प्रागैतिहासिक रचना है। इतिहास—और इतिहास वह है जो मसीह के जन्म से प्रारम्भ हुआ। मसीह-वाणी द्वारा यह प्रस्थापित हुआ। आखिर इतिहास क्या है? मृत्यु की रहस्याच्छन्न पहेली के लिए शताब्दियों से चली आ रही मनुष्य की सतत चेष्टा ही तो इतिहास का प्रारम्भ है। इन सकल चेष्टाओं का लक्ष है मृत्यु पर विजय। इसीलिए लोग सामगान लिखते हैं, इसीलिए वे गणित शास्त्र की असीमता की खोज करते हैं, इसीलिए विद्युतचुम्बकीय लहरों की खोज करते हैं। इस दिशा में बिना आत्मा की प्रेरणा पाये अधिक प्रगति की नहीं जा सकती। बिना आध्यात्मिक साधना के इस प्रकार का अन्वेषण-अनुसन्धान नहीं किया जा सकता। इसीलिए मसीह ने अपनी उपदेश-वाणी में प्रत्येक आवश्यक निर्देशन दिये हैं। और यह सब क्या है?—पहली बात है अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम—यह जीवित शक्ति का उच्चतम परिष्कृत स्वरूप है। मनुष्य के हृदय में यदि एक बार यह भावना समा सकी तो अंत तक वह अबाध गति से प्रवाहित होती रहेगी।

आधुनिक मनुष्य की रचना में दो विचारधाराएँ प्रमुख हैं; जिसके बिना उसका व्यक्तित्व अकल्पनीय है। मुक्त व्यक्तित्व तथा जीवन की धारणा को ही त्याग माना जाता है। मजे की बात यह है कि यह सब अभी तक पूर्णतया नवीन विचारधारा है। साहित्यिक सृष्टि में इस पद्धति का कोई

इतिहास नहीं है। तुम्हें सर्वत्र मिलेगा संदेहरहित रक्तपात, पाशविकता और क्रूरता का अमिट दाग। किसी भी रूप में जो मनुष्य को गुलाम बनाता है वह निश्चित रूप से निकृष्ट कोटि का व्यक्ति है। प्रस्तुत इतिहास में तुम्हें मिलेगी मृत घमण्ड भरी अक्षयता की प्रतीक कांसे की प्रतिमाएँ तथा संगमरमर के कीर्तिस्तम्भ! ईसा-मसीह के उद्‌भव से पहले आदमी स्वतन्त्रतापूर्वक सांस नहीं ले पाया था। इसके बाद ही आदमी जंगली रूप में, गड्ढों में कुत्तों की तरह मरने के बजाय, घर में आदमी की तरह मरने लगा था। इसके बाद ही वंशसृष्टि हुई। अपने सर्वश्रेष्ठ कार्यकाल में मृत्यु जीतने की सतत चेष्टा में मनुष्य ने अपने आपको समर्पित कर दिया। उफ्, मैं पसीने से तर हो गया हूँ। शायद मैं दीवार के सामने व्यर्थ सिर टकरा रहा हूँ?

—यह गहरा आत्मचिन्तन है भले आदमी। यह मुझे हजम नहीं होता। डॉक्टरों ने इसे निषिद्ध कर रखा है।

—ओह, अच्छी बात है। छोड़ो इसे। तुम बिलकुल बेकार के आदमी हो। दुष्ट भी भाग्यवान होते हैं। देखो यह कितना खूबसूरत दृश्य है? मेरा खयाल है कि इन सबके निकटतम सम्पर्क में रह कर भी तुमने इस सुन्दरता की ओर कभी नहीं देखा!

सूर्यकिरणों में नदी की जलधारा चमक रही थी। उसके तेज प्रकाश से आँखें चौंधिया जाती थीं। नदी की लहरों में सलवटें पड़तीं, मुड़ाव आते और फिर अचानक सब कुछ विलीन हो जाता।

एक बड़ी नाव में घोड़े, गाड़ियाँ, किसान और उनकी स्त्रियाँ उस पार जाने के लिए रवाना हो गयीं।

इवान इवानोविच ने कहा—देखो इस समय पाँच बज रहे हैं। खिजरान से आनेवाली एक्सप्रेस पाँच बज कर पाँच मिनट पर यहाँ से गुजरती है।

दूर मैदान से आती हुई नीले-पीले रंग की गाड़ी दाहिनी ओर से आती हुई बहुत ही छोटे आकार में दिखाई दे रही थी। उन्होंने देखा कि

एक्सप्रेस अचानक रुक गयी है। इंजन के ऊपर से उड़नेवाले धुएँ के सफ़ेद बादल दिखाई दिये। कुछ ही क्षणों के बाद खतरे से सावधान करनेवाली सीटी की आवाज सुनाई दी।

वास्कोबोयनिकोव ने कहा—यह अद्‌भुत बात है।

—कुछ गड़बड़ जरूर है। इस दलदल के बीच गाड़ी के इस प्रकार खड़े हो जाने का कोई साधारण कारण नहीं हो सकता। कुछ खास बात जरूर हुई है।

—चलो, चल कर चाय पीयें।

छः

निकी न घर में मिला न बगीचे में ही। यूरा के मामा और इवान इवानोविच बाहर बरामदे में बैठे काम कर रहे थे। निरुद्देश्य रूप से चक्कर काटना यूरा ने बन्द कर दिया। यूरा ने सोचा कि निकी उसे अपने समान नहीं मानता और मेहमानों से तंग आकर वह कहीं छिप गया है।

यह बहुत बढ़िया जगह थी।

हर मिनट पर पीले रंग का थ्रश पक्षी अपने सुरीले कंठ से तीन बार पुकारता और एक क्षण के लिए रुक जाता; ताकि उसकी मधुर, लचीली और स्पष्ट आवाज गाँव के अणु-रेणु में व्याप्त हो जाय। गर्मी और स्थिर हवा के कारण फूलों की सुगन्ध अपने मूल-स्थान डंठलों में अचंचल भाव से पड़ी थी। यूरा को इन सबने एन्टिस और बोर्डिघेरा की याद दिला दी। वह इधर-उधर घूमता रहा। सारे बगीचे में से उसे अपनी माँ की आवाज का भ्रम कानों के समीप सुनाई देने लगा। मधुमक्खियों की भिनभिनाहट में, चिड़ियों की संगीतमय चहचहाहट में भी माँ का स्वर व्याप्त था। उसे लगा कि मानो माँ उसे चतुर्दिशाओं से पुकार रही है—उसे अपने पास बुला रही है। कभी इस ओर से पुकारने की आवाज़ आती, कभी उस ओर से। मानो वह उसका जवाब सुनने के लिए व्याकुल हो। इस भ्रम से वह कांप-सा उठा।

नीचे से उलझी हुई और सिरे से लटकती हुई झाड़ियों को पार कर वह पानी की नाली की ओर बढ़ा। नीचे टूटी हुई शाखाओं के कचरे में सीलन थी, अन्धेरा था। सचित्र बाइबिल में चित्रित इजिप्तियन राजदण्ड की तरह गठीले डंठलों की संख्या अधिक और फूलों की तादाद कम थी।

यूरा अपने आपको अधिकाधिक हतोत्साहित महसूस करने लगा। उसे लगा कि जैसे वह रो देगा। वह घुटनों के बल बैठ गया। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

यूरा ने प्रार्थना की—'हे मेरे पवित्र संरक्षको, हे देवदूतो, मुझे सत्य का साक्षी बना कर माँ से कह दो कि मैं बिलकुल ठीक हूँ। वह चिन्ता न करे। यदि मृत्यु के बाद भी जीवन है तो हे प्रभु, उसे स्वर्ग में अंगीकार करना; जहाँ सन्तों का सुखद सत्संग और प्रकाश-स्तम्भ की तरह प्रकाशित शाश्वत न्याय सुलभ है। मेरी माँ इतनी अच्छी थी कि वह पापात्मा हो ही नहीं सकती। उसे दया-दान दो; और कृपया अब उसे किसी प्रकार का सन्ताप मत दो। माँ...!' ऋषियों की तरह मार्मिक व्याकुलता के साथ मानो उसने अपनी माँ को धरती पर बुला लिया और जब वह इस विचित्र कष्टपूरित अवस्था को बर्दाश्त नहीं कर सका तो मूर्छित होकर गिर पड़ा।

अधिक देर तक वह अचेत नहीं रहा। जब उसे होश आया, उसने सुना कि उसके मामा उसे पुकार रहे हैं। वे उसे ऊपर से बुला रहे थे। प्रत्युत्तर देकर वह नाली से ऊपर चढ़ने लगा। अचानक उसे याद आया कि उसने अपने खोये हुए पिता के लिए तो भगवान से प्रार्थना की ही नहीं, जैसा कि उसकी माँ ने उसे सिखाया था।

थोड़ी देर की इस मूर्छा ने उसे हल्का कर दिया था। होश में आने के बाद वह इस ताजगी को छोड़ना नहीं चाहता था। उसने सोचा—पिता के लिए यदि फिर कभी उसने प्रार्थना कर ली तो कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा। वे थोड़ी देर रुक कर इन्तजार भी कर सकते हैं। यूरा ने सचमुच अपने पिता को कभी याद किया भी नहीं।

सात

ओरेनबर्ग के एक वकील का लड़का मिशा गोर्डन अपने पिता के साथ सेकेण्ड-क्लास के डिब्बे में सफर कर रहा था। नदी पार के मैदान में उनकी गाड़ी खड़ी हो गयी थी। गम्भीर चेहरे वाला मिशा ग्यारह साल का लड़का था। उसकी आँखें बड़ी-बड़ी थीं और उनमें गहराई थी। वह अपनी स्कूल के द्वितीय वर्ग में था। उसके पिता ओसिपोविच गोर्डन का तबादला मास्को में एक नये पद पर हो गया था। मकान आदि की व्यवस्था करने के लिए—उसकी माँ और बहिनें पहले ही पहुँच गयी थीं।

मिशा और उसके पिताश्री तीन दिन से सफर कर रहे थे। सूर्य की गर्मी से चूने की तरह सफेद दिखाई देने वाले धूल भरे गर्म बादलों से आच्छादित रूस के खेत, गाँव, कस्बे और घास भरे मैदान उनके सामने से गुजर गये। रेल की लेवल-क्रॉसिंग के बाहर सड़क के किनारे गाड़ियों की कतारें लगी हुई थीं। भयंकर तेजी के साथ आने वाली गाड़ी के कारण कतारवाली ये गाड़ियाँ निश्चल रूप से खड़ी थीं और घोड़े सजगता से घड़ियाँ गिन रहे थे।

बड़ी स्टेशनों पर मुसाफिर फुर्ती से डिब्बों से कूद कर बाहर निकल आते और खाने-पीने के सामान की खोज में इधर-उधर फैल जाते। अस्तगामी सूर्य की रश्मियों ने ज्योंही स्टेशन के पिछले भाग से इशारा किया मुसाफिर भाग कर गाड़ी में बैठ गये और गाड़ी के पहिये चल दिये।

संसार की समस्त हलचलों पर यदि अलग-अलग रूप से विचार किया जाय तो वे काफी गम्भीर और सुनिश्चित दिखाई देंगी। लेकिन यदि उसे अविभाज्य रूप से देखा जाय तो लगेगा कि जीवन-प्रवाह का आकंठ रस पीकर वे सबको अपने साथ एकत्रित करके बहाये लिये जा रही हैं! लोगों ने काम और संघर्ष किया है—अपने व्यक्तिगत स्वार्थ और चिन्ताओं के कारण! यद्यपि उन्हें इसके लिए बाध्य किया गया है—फिर भी कर्म की यह प्रेरणा पतनोन्मुख होकर कभी की समाप्त हो जाती, यदि उन पर सजग समग्रता की अनुभूति की निगाह, सीमाहीन

उदासीनता की कड़ी नजर, न होती। मानवीय जीवन के गुंथन और उनके एक दूसरे में मिश्रित होने के सुखद आश्वासन के कारण यह अनुभूति सान्त्वना बन कर मनुष्य में प्रस्थापित हुई।

मृत्युलोक में जो कुछ घटित हो रहा है, वह कहीं किसी दूसरे स्तर पर भी घटित हो रहा है इस विश्वास को ही कुछ लोग ईश्वरीय सत्ता के रूप में जानते हैं। कुछ लोग इसे इतिहास कहते हैं। कुछ लोग इसे किसी और नाम से पुकारते हैं।

मिशा अपने आपको इस साधारण नियम का दुर्भाग्यपूर्ण अपवाद समझता था। उसकी प्रगति और मुक्ति, संसार के साधारण लोगों की उदासीनता के बजाय अपनी व्यग्रता के कारण ही हुई थी। दूषित आत्मचेतना की अपनी विरासत के बारे में उसे मालूम था। इससे वह दुखित भी था, विक्षुब्ध भी।

ठीक उसी तरह के हाथ-पाँव वाला, एक ही भाषा बोलने वाला और एक ही जीवन-पद्धति का प्रत्येक व्यक्ति कितने भिन्न रूपों में है—मिशा का आश्चर्य कभी समाप्त न हो पाता। एक आदमी ऐसा है कि जिसे कोई पसन्द नहीं करता, कोई प्यार नहीं करता। क्यों एक आदमी दूसरे की अपेक्षा पतित होने पर, उन्नति की चेष्टा नहीं कर सकता? फिर ज्यू होने का अर्थ ही क्या है? इसका उद्देश्य क्या है? दुख का कारण बननेवाली इस मूक चुनौती का प्रतिफल क्या है और क्या है इसकी सार्थकता!

जब कभी वह अपने पिता के साथ इन समस्याओं का जिक्र छेड़ देता तो उसे यही जवाब मिलता कि ये सब व्यर्थ के प्रपंच हैं और तुम्हारे सवाल बेतुके हैं। तुम्हें इस तरह का विवाद नहीं करना चाहिए। निश्चित रूप से घटित होने वाले भविष्य के प्रति मूक विनम्रता के लिए प्रेरित करनेवाला उसे कोई समाधान प्राप्त नहीं होता।

जिनके कारण इस उलझन की सृष्टि हुई थी, उन तमाम लोगों की नजरों में धीरे-धीरे मिशा तिरस्कार का पात्र बन गया, सिवाय अपने माता-

पिता की नजरों के। उसे निश्चित रूप से विश्वास हो गया कि जब वह बड़ा होगा तब वह इस सारी अव्यवस्था को ठीक कर देगा।

उदाहरण के लिए, उसे कोई यह नहीं समझा सकता, कि नहाने के तालाब में स्प्रिंग-बोर्ड से कूद पड़ने वाले व्यक्ति की तरह जब वह पागल व्यक्ति उसके पिता को दूर हटा कर, दरवाजा खोल कर, कोरीडोर से भागते हुए सर के बल, चलती गाड़ी से कूद पड़ा, तो उसके पिता को गाड़ी रोकने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए थी!

काफी अर्से तक ट्रेन रुकी पड़ी रही। हकीकत यह थी कि ग्रिगोरी ओसिपोविच ने ही जंजीर खींच कर गाड़ी खड़ी कर दी थी। अन्य सहयात्रियों को लगता था कि इस तरह गाड़ी का रुकी रहना; और विक्षुब्ध कर देने वाली परिस्थिति इस गोर्डन-परिवार ने ही जानबूझ कर की है।

निश्चित रूप से कोई नहीं जानता था कि क्यों इतना समय लग रहा है। कुछ लोगों का कहना था कि अचानक गाड़ी रोकने के कारण वायुसंचालित ब्रेक खराब हो गये हैं। कुछ लोगों का मत था कि चूँकि गाड़ी ऊँची चढ़ाई पर रुकी है, इसलिए एंजिन बिना अधिक जोर लगाये गाड़ी खींच नहीं सकता। तीसरा विचार था कि आत्महत्या करने वाले व्यक्ति के वकील ने, जो उसके साथ ही था आग्रह किया है कि समीपवर्ती थाने से अधिकारी बुला लिये जाएँ, ताकि पंचनामा तैयार हो सके। सम्भवतः इसीलिए ड्राइवर का साथी तार के खम्बे पर चढ़ कर समाचार पहुँचाने की व्यवस्था कर रहा था। निरीक्षण-ट्राली अधिकारियों को लिये आ ही रही होगी।

डिब्बे के पिशाबघर से लगभग यू-डी-कोलोन की गंध की तरह तेज दुर्गन्ध आ रही थी। गन्दे तेल के धब्बों वाले कागज में लिपटे हुए तले हुए मुर्ग-शावकों की गन्ध भी वातावरण में फैल रही थी। कर्कश आवाज वाली और हवा के कारण धूल-धूसरित पीटर्सबर्ग की स्त्रियाँ कालिख और उबटन के संयोग से जिप्सियों के रूप में परिणत हो गयी थीं। वे अपने चेहरों पर पाउडर पोतने में और अंगुलियों को रूमाल से पोंछने में

इस तरह व्यस्त थीं कि मानो कहीं कुछ हुआ ही न हो। हावभाव से मटकती हुई जब वे अपने कंधे हिलाने की चेष्टा करतीं तो छोटा-सा डिब्बा उनसे मानो माफी माँगने लगता, वे गोर्डन के डिब्बे की ओर बढ़ीं।

मिशा को लगा कि उन स्त्रियों के सिकुड़े हुए होठों में से मंद फुसफुसाहट आसपास के पौधों के बारे में चर्चा कर रही है कि हे भगवान! ये पौधे कितने नाजुक हैं। शायद ये पौधे सोच रहे होंगे कि उनकी सृष्टि विशेष रूप से की गई है। सच ये सब चतुर हैं। यह सब इनके प्रति बड़ी भारी ज्यादती है।

आत्महत्या करने वाले व्यक्ति का शव नदी के किनारे घास पर पड़ा था। उसके माथे पर रक्त के काले दाग उभर आए थे। रक्त की जमी हुई धाराएँ उसके सारे चेहरे पर फैली हुई थीं। रक्त सूख कर जम गया था। लगता था कि यह उस आदमी का खून नहीं है बल्कि भिन्न किस्म की कोई चीज़ है। जैसे मुलम्मे के टुकड़े अथवा मिट्टी की रेखाएँ या नम-वर्छ वृक्ष के पत्ते!

बहुत सारे सहानुभूति दर्शाने वाले लोगों का झुण्ड शव को घेरे हुए था। मृतक के पास उद्विग्न और विचारशून्य दृष्टि से देखते हुए उसका वकील और हमसफर पालतू जानवर की तरह खड़ा था। वह पशमीने की कमीज पहने हुए था। हट्टे-कट्टे बलिष्ठ देह वाले उस व्यक्ति का चेहरा अभिमान से आप्लावित था। वह गर्मी से मरा जा रहा था और अपने हैट से हवा करने में व्यस्त था। किसी भी प्रश्न के उत्तर में बात काट कर वह कंधे हिलाते हुए कहता—वह शराबी था। इससे अधिक उससे उम्मीद की भी क्या जा सकती थी?

एकाध बार एक दुबली-पतली वृद्धा शव के समीप गयी। वह ऊनी कपड़े पहने हुई थी और उसके हाथ में लैस का रूमाल था। वह थी विधवा तिविरजिना। उसके दो लड़के एंजिन ड्राइवर थे। वह इसी गाड़ी से अपनी दोनों बहुओं के साथ नि:शुल्क-आदेश-पत्र लिये तीसरे दर्जे में यात्रा कर

रही थी। तिविरजिना के पीछे दो स्त्रियाँ चुपचाप इस तरह चल रही थीं जैसे धार्मिक-भिक्षुणियाँ अपनी धर्म-दीक्षित श्रेष्ठ माताओं के साथ चल रही हों। भीड़ ने उनके लिए रास्ता दे दिया। तिविरजिना का पति एक रेल-दुर्घटना में जीवित जल कर मर गया था। वह शव से कुछ दूर खड़ी हो गयी जहाँ भीड़ में से वह उसे देख सकती थी। उसने दीर्घ-श्वास ली, मानो वह दो दुर्घटनाओं की तुलना कर रही हो। जैसे कह रही हो— प्रत्येक अपने भाग्यानुसार, कोई प्रभु की इच्छानुसार मृत्यु प्राप्त करता है और यह है दिल पर पत्थर-सा भार रख देनेवाली घटना, कि कोई अपनी ऐश्वर्यसम्पन्न ज़िन्दगी में मतिभ्रम के कारण स्वयं मर जाय।

लगभग सभी यात्री डिब्बे से बाहर निकल आये थे। शव को एक नजर देखने के बाद वे अपने-अपने डिब्बों में लौट गये। उन्हें डर था कि कहीं उनका सामान चोरी न चला जाय। लाइन पर कूदने पर कुछ लोग आसपास के फूल तोड़ने लगे और कुछ बैठे-बैठे तंग आकर हाथ-पाँव फैलाने के इरादे से इधर-उधर टहलने लगे। उन सबको ऐसा लग रहा था कि यह सारा वातावरण इस तरह गाड़ी रोक देने के कारण ही उपस्थित हो गया है। यदि यहाँ गाड़ी खड़ी न कर दी गयी होती तो न यह दबा हुआ दलदल होता और न यह चौड़ी नदी। इस दुर्घटना के बिना न ये आस-पास के सुन्दर मकान होते और न दूसरे किनारे पर चर्च ही।

जिस तरह समीप में ही चर रहे किसी झुंड में से एक गाय ने आकर इस भीड़ की ओर एक नजर देखा, उसी तरह संध्याकालीन सूर्य-रश्मियों का प्रकाश भी इस मृतक के शव पर उदासीन भाव से पड़ रहा था। शुद्ध रूप से यह एक स्थानीय स्पष्ट घोषणा थी; और घटनास्थल इस नाटकीय मंच का एक विशिष्ट भाग।

इस दुर्घटना से मिशा गम्भीर रूप से प्रभावित हुआ था। दुख और अफसोस के मारे एक बारगी वह चीख-सा उठा। मृतक व्यक्ति इस लम्बी यात्रा के दौरान अनेक बार उसके पास उसके डिब्बे में आया था। वह घण्टों उसके पिता के साथ बातचीत करता रहा। वह कह रहा था

कि शांति, अनुबोधन और चारित्रिक शुद्धता की बातों से उसे बड़ा परित्राण मिलता है। वह यह भी कहता था कि इन सबको वह अपने आप में खोजता रहा है। उसने उसके पिता से कई महत्त्वपूर्ण बातों के बारे में अंतहीन सवाल पूछे थे। जैसे एक्सचेंज के बिल, समझौते की कार्यवाही, दिवालियेपन और षड्यन्त्र सम्बन्धी कानून की मुख्य बातें। अंत में उसने कहा था—खैर, मैं कभी यह न जान सका कि कानून इतना दयापूर्ण और विस्तृत है। मेरे वकील की तो इस बारे में बहुत बुरी धारणाएँ हैं।

जब इस आदमी का बोलने का उत्साह समाप्त हो जाता, तब पहले दर्जे से उसका हमसफर वकील उसे लेने चला आता और एक तरह से जबर्दस्ती खींचकर उसे रेस्ट्रां-कार में ले जाकर उसके लिए शराब की व्यवस्था कर देता।

यह हमसफर वही व्यक्ति था जो इस समय शव के पास लापरवाही के साथ खड़ा था; जैसे इस सारी दुर्घटना में उसे कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं लग रहा हो। यह बात सही थी कि उसके मुवक्किल का अथक-संघर्ष कुल मिलाकर उसके लिए लाभदायक ही सिद्ध हुआ।

मिशा के पिता ने उसे बताया कि आत्महत्या करनेवाला व्यक्ति सुप्रसिद्ध लक्ष्मीपति ज़िवागो था। स्वभाव उसका अच्छा था फिर भी था वह दुराचारी ही। उसका आधा दिमाग खराब हो चुका था।

मिशा की उपस्थिति की परवाह न करते हुए वह व्यक्ति अपनी स्वर्गीय पत्नी और मिशा की उम्र के अपने लड़के के बारे में बातें कर रहा था जिन्हें कि उसने छोड़ दिया था। इस बारे में बातचीत करते-करते वह रुकता, कुछ देर तक सोचता रहता। फिर भय से पीला पड़ जाता और थोड़ी देर बाद गुनगुनाने लगता और अपनी कथा का सिलसिला भूल जाता।

मिशा के प्रति उसने बहुत प्रेम जाहिर किया था। सम्भवतः इस प्रेम के माध्यम से वह किसी और के प्रति अपने मन का स्नेह व्यक्त कर रहा था। बड़ी स्टेशनों के बुक-स्टालों पर जहाँ कहीं खिलौने अथवा बच्चों

को पसन्द आनेवाली चीज़ें मिलतीं; वह कूद पड़ता, खरीद लाता और मिशा को इन उपहारों से लाद देता।

उसने बहुत ज्यादा शराब पी थी। तीन महीनों से वह सो नहीं पाया था। वह शिकायत भरे लहजे में कहता, जब कभी वह संयम रखने की चेष्टा करता है तो उसे इतनी यंत्रणा भुगतनी पड़ती है, जिसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती।

अंतिम समय में वह तेजी के साथ उनके डिब्बे में आया, उसने गोर्डन का हाथ पकड़ लिया। वह उससे कुछ कहना चाहता था। लेकिन वह कह नहीं पाया। इसके बाद वह तेजी के साथ कोरिडोर की ओर लपका और गाड़ी से नीचे कूद पड़ा।

मृतक व्यक्ति की अंतिम भेंट यूराल्स के खनिज पदार्थों की छोटी-सी डब्बी को खोल कर मिशा देखने बैठ गया। अचानक एक हलचल-सी मच गयी। एक डाक्टर, दो पुलिस के सिपाही और एक मजिस्ट्रेट को लिये एक ट्राली समानान्तर पटरी पर दौड़ती हुई आकर रुक गयी। वे सब लोग फुरती से कूद पड़े। साधारण रूप से औपचारिक प्रश्न पूछे गये और उनका जवाब लिख लिया गया। बालू में फिसलते-लुढ़कते पुलिस के सिपाहियों के साथ गार्ड ने मिल कर शव को खींच निकाला। एक ग्रामीण किसान स्त्री रो पड़ी। मुसाफिरों को अपने-अपने स्थान पर जाने का आदेश मिला। गार्ड ने सीटी बजाई और रेलगाड़ी चल पड़ी।

आठ

चारों ओर देखते हुए कमरे से निकल भागने का उपाय ढूंढ़ते हुए निकी ने गुस्से में सोचा— यह है पवित्रतम संयोग! चूंकि दरवाजे के बाहर से मेहमानों की आवाज आ रही थी इसलिए मुक्ति की कोई राह नहीं थी। एक उसका अपना और दूसरा वोस्कोबोयनिकोव का—ये दो पलंग इस कमरे में थे। थोड़ी देर तक सोचते रहने के बाद वह रेंगता हुआ पलंग के नीचे जाकर छिप गया। बाहर लोग उसे पुकार रहे थे। उनकी आवाज सुनाई दे रही थी। सब लोगों को उसके इस तरह गायब हो जाने पर

आश्चर्य हो रहा था और अब अंत में वे उसे खोजते हुए इस सोने के कमरे की ओर आ रहे थे।

—खैर, कोई उपाय नहीं—निकोलाय निकोलायविच ने यूरा से कहा—चले आओ। तुम्हारा मित्र शायद थोड़ी देर बाद लौट आये। इसके बाद तुम उसके साथ खेल सकोगे।

वे पीटर्सबर्ग में छात्रों के असंतोष की चर्चा करने बैठ गये। बड़ी ही कष्टपूर्ण अवस्था में और भद्दे तरीके से निकी पलंग के नीचे छिपा पड़ा रहा। आखिर जब वे बरामदे की ओर चले गये तो निकी अपने गुप्त स्थान से निकला, धीरे से खिड़की खोली और बाहर कूद कर पार्क में चला गया।

कल वह रात भर नहीं सो सका था, इसलिए इस समय वह अलसाया हुआ था और बेचैनी महसूस कर रहा था। वह चौदह वर्ष का हो चुका था और उसे 'बच्चा' कहे जाने पर सख्त एतराज था। वह इस विशेषण से तंग आ गया था। रात भर जागने के बाद जब वह पार्क में चला गया उस समय सूर्य पेड़ों के कंधों पर रोशनी डाल रहा था और उनके कंधों की सुदीर्घ ओस भरी परछाईं जमीन पर पड़ रही थी। ये परछाइयाँ बिलकुल काली नहीं थीं बल्कि भूरे रंग के भीगे कम्बल की तरह दिखाई दे रही थीं। ये तरल परछाइयाँ भूमि पर किसी कन्या की पतली उंगलियों की तरह प्रकाश की लकीरें खींच रही थीं। प्रातःकाल की मदभरी समीर चलने ही वाली थी। निकी के कदमों से थोड़ी दूर पर कुछ चमकीली रेखाएँ घास पर चमकनेवाली ओस की तरह प्रकाशित हो उठीं। निरन्तर प्रवाहित होने वाला वह प्रकाश पृथिवी में समा नहीं पाया था। तब मानो अनपेक्षित तेज-क्रियाशीलता के कारण वह एक ओर से निकल कर फैल गया। दरअसल दूब में रहने वाला यह एक सांप था। निकी कांप उठा।

निकी के स्वभाव में कई विचित्रताएँ थीं। फालतू के विषय और अन्तर्द्वन्द्व से उत्तेजित होने पर ठीक अपनी माँ की तरह वह जोर-जोर से बोलने लगता।

जीवित रहना कितना सुखद है—वह सोच रहा था।

—लेकिन यह इतना कष्टदायक क्यों है? भगवान का अस्तित्व है अवश्य। यदि वास्तव में प्रभु का अस्तित्व है तो मैं ही वह हूँ—सोहम्! उसने सामने के एक ऐसे वृक्ष की ओर देखा जिसकी पत्तियाँ चमकीली पन्नियों की तरह तरल थीं और जो नीचे से ऊपर तक निरन्तर झूल रहा था। 'मैं उसे आज्ञा दूँगा कि वह रुक जाय।'

सम्पूर्ण रूप से, अपने रक्त और मांसपेशियों की प्रत्येक शिराओं के साथ अपनी पागलपन भरी इस एकाग्रता में वह चुपचाप खड़ा रहा। 'स्थिर खड़े रहो'—उसने हुक्म दिया। पेड़ तुरन्त आज्ञानुसार स्थिर होकर जम-सा गया।

डेमेनिटी डुडरोव, उसका पिता, आतंकवादी विद्रोही था। उसे फांसी की सजा भी मिल चुकी थी मगर जार की आज्ञा से यह दंड स्थगित कर दिया गया था; और अब वह जेल में कठिन सजा भुगत रहा था। उसकी माँ इरिस्टोव परिवार की ज्योर्जियन राजकुमारी थी। वह थी बिगड़ी हुई सुन्दर स्त्री। अभी भी वह युवा थी और किसी न किसी काम के उत्साह का सरदर्द पाले रहती थी। विद्रोह के कार्य में, अथवा विप्लववादी सिद्धान्तों की पुष्टि में, अथवा सुप्रसिद्ध अभिनेताओं के पीछे या दुखद रूप से असफलता प्राप्त लोगों के उत्थान आदि के कार्यों में व्यस्त रहती।

वह निकी को बहुत प्यार करती थी। इनोचेक और नोचंका आदि जैसे हजारों कठिन और अजीब उपनामों से वह उसे पुकारा करती थी। एक बार वह उसे उसके ननिहाल के लोगों से मिलाने के लिए टिफलिस ले गयी थी। वहाँ के आंगन में छितरे हुए वृक्षों ने उसे खूब आकर्षित किया था। उस विशाल वृक्ष के पत्तों ने हाथी के कानों की तरह आंगन के दक्षिणी भाग को ढंक लिया था। निकी समझ नहीं पाया था कि दरअसल वह वृक्ष था अथवा दानव?

अपने पिता का नाम धारण करना निकी के लिए भयप्रद था। इवान इवान्गेत्रिच की राय थी कि वह अपनी माँ के नाम का उपकरण धारण

कर ले और नाम के इस परिवर्तन के लिए जार के पास दरख्वास्त कर दे। सकल संसार के प्रति क्रुद्ध निकी पलंग के नीचे छिपा हुआ चुपचाप पड़ा यही सब सोच रहा था। वोस्कोबोयनिकोव को क्या अधिकार है उसके जीवन में बिना मतलब दखलन्दाजी करने का? एक न एक दिन वह उसे जरूर सबक सिखायेगा।

और यह नाद्या? दुष्ट! सिर्फ़ इसलिए कि उसकी उम्र मुझसे ज्यादा है, वह पन्द्रह साल की हो गयी है, मुझसे नाक चढ़ा कर बात किया करती है, जैसे मैं बिलकुल बच्चा हूँ। एक दिन उसे इसका मजा जरूर चखाऊँगा। मुझे वह बिलकुल पसन्द नहीं। मैं उससे नफरत करता हूँ। मन ही मन उसने सैकड़ों बार इस बात को दुहराया है कि 'मैं उसे मार डालूँगा। एक दिन बोट में ले जाऊँगा और उसे डुबा कर जरूर मार डालूँगा!'

उसकी माँ शांत स्वभाव की ही थी। जाते समय उसके और वोस्कोबोयनिकोव के सामने वास्तव में वह झूठ ही बोली थी। वह कोकेश्यस के पास कहीं नहीं गयी थी बल्कि नजदीक के जंक्शन से ही लौट गयी थी और उत्तर में पीटर्सबर्ग में जाकर अपने पुराने व्यर्थ प्रपंचों में अच्छी तरह से समय व्यतीत कर रही थी। वह इस समय पीटर्सबर्ग में उन विद्यार्थियों के साथ थी जो पुलिस पर गोली चला रहे थे। इस समय बिचारे निकी को यहाँ सीलनभरी कालकोठरी में सड़ते रहना होगा। जितना लोग सोचते हैं, वह उतना मूर्ख नहीं है। वह नाद्या की हत्या कर डालेगा। स्कूल को अंगूठा दिखा कर अपने पिता के पास साइबेरिया भाग जायेगा और वहाँ विद्रोह आरम्भ कर देगा।

नौ

तालाब के किनारे मुकुलित पुष्पों से भरे हुए थे। उसमें से एक बोट खड़खड़ाता हुआ त्रिकोणाकार में गुजर रहा था। जैसे मतीरे की फांक काट ली गयी हो और उसका जमा हुआ रस बाहर निकल आया हो, उसी तरह तालाब का काला पानी दिखाई दे रहा था। निकी और नाद्या

लिलिज तोड़ रहे थे। रबर की तरह लचीले डंठल को दोनों ने जोर से पकड़ा तो दोनों के सिर टकरा गये और बोट एक ओर इस प्रकार खिंच गया जैसे नाव को किनारे लगाने वाले हुक-के-डंडे ने उसे एक ओर ढकेल दिया हो। सफेद पुष्पों का बीच का हिस्सा अंडे की जर्दी की तरह पीला और रक्तिम रेखाओं से पूरित था। वे फूल डुबकी मार कर बाहर निकल आते तो उनमें से पानी बहता रहता।

बोट को एक ओर से झुका कर बच्चे उन फूलों को चुनते रहे।

—मैं स्कूल से तंग आ गया हूँ। निकी ने कहा—मुझे अब अपना जीवन स्वतन्त्र रूप से आरम्भ कर देना चाहिए। अब वह समय आ गया है कि मैं बाहर जाकर अपनी जीविका खुद उपार्जित करूँ ।

—मैं तुमसे एलजेबरा के वर्गमूल समीकरण की बातें पूछना चाहती थी। मेरा एलजेबरा इतना कमजोर है कि मैं दूसरे साल भी शायद इसी क्लास में ही रह जाती।

निकी जानता था कि उसे चिढ़ाया जा रहा है। वह स्वयं को उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित करके मानो कहना चाहती थी कि निकी तुम अभी तक नितान्त शिशु हो। बीजगणित की बात करने का और मतलब ही क्या है? जब कि उसे मालूम है कि अभी तक मेरा उससे कोई लेना-देना नहीं है।

लेकिन निकी ने जाहिर नहीं होने दिया कि नाद्या ने उसे चोट पहुँचाई है। यह जानते हुए कि वह बेतुकी बात पूछा रहा है, उसने तटस्थ भाव से प्रश्न किया—बड़ी होकर तुम किसके साथ शादी करोगी?

—बहुत दूर की बात है। सोचती हूँ—किसी के साथ नहीं। दरअसल मैंने इस बारे में कभी कुछ सोचा ही नहीं।

—तुम यह मत समझना कि मुझे इस बारे में कोई खास दिलचस्पी है।

—तो फिर पूछा क्यों?

—तुम बेवकूफ हो, इसलिए!

बस। कलह आरम्भ हो गया। निकी को सुबह का अन्तर्द्वन्द्व याद आया। स्त्रीद्वेष याद आया। उसने धमकाया—यदि तुमने मुझे चिढ़ाना बन्द नहीं किया तो तुम्हें यहीं डुबा कर मार डालूँगा।

निकी ने उसकी कमर पकड़ ली। दोनों खूब देर तक झगड़ते रहे। परिणामस्वरूप संतुलन न रहा और वे दोनों पानी में गिर पड़े।

दोनों तैरना जानते थे। लिलिज के जाल में उनके हाथ-पाँव उलझ गये। नतीजा यह हुआ कि वे पानी की गहराई से निकल आये। उन्हें अपने कदमों के नीचे चिकनी मिट्टी की सतह महसूस हुई। वे बाहर निकल आये। उनके कपड़ों और जूतों से पानी चू रहा था। थक दोनों गये थे; निकी नाद्या के बनिस्बत ज्यादा।

यदि यही घटना पिछली वसंत-ऋतु में हुई होती तो चूते हुए कपड़ों में चलते वक्त भी वे चीखते, गालियाँ देते। लेकिन दोनों में से कोई इस समय कुछ भी न बोला। सांस लेना कठिन हो रहा था। व्यर्थ की इस घटना के बोझ से दोनों का दिल भरा हुआ था। दबे हुए गुस्से के कारण नाद्या उत्तेजित हो गयी थी। निकी का सारा शरीर दर्द कर रहा था। उसे ऐसा लग रहा था, मानो उसकी बांहें और टांगें नीली पड़ गयीं हैं, काली पड़ गयीं हैं और हड्डी-पसली चकनाचूर हो गयी है।

अंत में नाद्या बुजुर्गों की तरह चुपचाप धप् से बैठ गयी और बोली—तुम सचमुच पागल हो!

निकी ने उसी बुजुर्गाना लहजे में जवाब दिया—बहुत अफसोस है!

पानी की गाड़ी जिस तरह सड़क पर निशान बनाती हुई चलती है, उसी तरह दोनों पानी टपकाते हुए घर आये। जिस जगह सुबह निकी ने दूब का सांप देखा था, पार्क के उसी भाग में दोनों पहुँच गये। निकी को याद आई कुछ दिनों पहले की वह उत्तेजित अवस्था। याद आई सुबहवाले स्वर की सशक्तता—जब कि उसने प्रकृति पर हुक्म चलाया था। उसी वृक्ष को देख कर उसने सोचा, अब उसे क्या आज्ञा दी जाय? उसे लगा

कि इस समय उसकी उत्कृष्ट इच्छा एक ही है कि वह नाद्या के साथ फिर से तालाब में गिर पड़े।

और यदि ऐसी घटना फिर कभी घटी तो वह उसे अच्छा पाठ पढ़ायेगा।

2

भिन्न लोक की एक कन्या

यद्यपि जापान के साथ अभी तक युद्ध समाप्त नहीं हुआ था फिर भी अनपेक्षित रूप से कई अन्य घटनाओं द्वारा रूस प्रभावित हो चुका था। सारे राष्ट्र में विप्लव की लपटें उठ रही थीं। विद्रोह की प्रत्येक लहर दूसरे से अधिक प्रभावशाली और असाधारण थीं। इन्हीं दिनों की बात है कि बेल्जियम के एक इंजीनियर की रूसी नागरिकता प्राप्त पत्नी, जो स्वयं फ्रांसिसी थी, अपने दो बच्चों के साथ यूराल से मास्को पहुँची। इस महिला का नाम था अस्रालिया कार्लोवना गुइशर। उसका पुत्र रेडिओन और कन्या लारिसा उसके साथ थी। उन दिनों की प्रचलित प्रथा के अनुसार उसने अपने पुत्र और कन्या को एक ही संस्था के फौजी स्कूल और कन्या विद्यालय में भर्ती करवा दिया। यह कन्या विद्यालय ठीक वैसा ही था जिसमें नाद्या कोलोग्रिवोना जाया करती थी।

गुइशर महोदया ने अपनी बचत के रुपयों से कम्पनियों के शेयर खरीद लिये थे। अपने पति की मृत्यु के समय तो उन शेयरों के भाव काफी चढ़ रहे थे; लेकिन अब उनकी हालत खराब हो रही थी। भाव नीचे गिरते जा रहे थे। अपनी सम्पत्ति की सुरक्षा और भविष्य का विचार करके श्रीमती गुइशर महोदया ने एक चालू धंधा खरीद लिया। ट्रायम्फल आर्क के निकट लेवित्स्काया का कपड़े सिलाई का एक कारखाना था। इसी कारखाने को मय उसकी प्रतिष्ठा के साथ उन्होंने खरीद लिया था।

परिणामस्वरूप उन्हें स्थाई ग्राहक भी मिल गये और काम सीखने वाले सस्ते नौकरों का झुंड भी।

इस समय श्रीमती गुइशर के मुख्य सहायक थे श्री कोमारोवस्की। वकील होते हुए भी वे बहुत अच्छे व्यवसायी थे और उन्हें रूसी व्यवसायी वर्ग अच्छी तरह से जानता था। इन्हीं के साथ पत्र-व्यवहार करके गुइशर महोदया मास्को चली आई थीं और इस समय ये सज्जन ही उनके मुख्य आश्रयदाता थे। वकील साहब उन्हें स्टेशन लेने आये थे और मास्को के दूसरे छोर पर अवस्थित ओरुझिनी गली में माण्टेग्रेवो होटल में उनके रहने की व्यवस्था कर दी थी। वकील साहब के आग्रह के अनुसार ही बच्चों की शिक्षण-व्यवस्था हुई थी। वे काफी मस्त स्वभाव के थे। उन्होंने लड़की को कुछ इस प्रकार घूरा कि वह शरमा गयी और लड़के के साथ वे खुले दिल से मजाक करते रहे।

दो

सिलाई के कारखाने के समीप ही तीन कमरों के एक फ्लेट में आने से पहले गुइशर परिवार एक महीने तक माण्टेग्रेवो होटल में ही ठहरा। शहर का यह भाग काफी बदनाम था। कमरे अन्धकारपूर्ण और बस्ती गन्दगी से भरी हुई। आसपास रहते थे वेश्यागामी मनचले गाड़ी चलानेवाले लोगों के दल। फिर भी इस परिवार में से कोई, न खटमलों की ज्यादती से परेशान हुआ और न फर्नीचरों की बिगड़ी हुई हालत से ही निराश हुआ। उनके पिता की मृत्यु के बाद से ही उनकी माँ गरीबी में बड़ी मुश्किल से दिन काट रही थी। रोड्या और लारा हमेशा यही सुनते रहते कि सर्वनाश बिलकुल करीब आ चुका है। यद्यपि वे जानते थे कि गलियों में खेल रहे बच्चों की अपेक्षा वे अधिक अच्छी अवस्था में हैं; फिर भी उनके मन में अनाथ बच्चों की तरह धनवानों के प्रति डर का भाव घर कर चुका था।

श्रीमती गुइशर 35 वर्षीय स्थूलकाय सुन्दर महिला थीं। गरीबी के कारण क्षुब्ध मन पर नित्य मूर्खता के दौरे आते रहते। वह पुरुषों से बहुत डरती

थीं, पुरुषों से ही क्यों, उनका स्वभाव ही बड़ा डरपोक और कायर था। इस हार्दिक-क्षोभ और भ्रम के कारण ही उन्हें किसी एक की बांहों के सहारे पर विश्वास नहीं हो पाता था और वे दूसरे व्यक्ति के आलिंगन के आश्वासन के लिए व्याकुल रहा करती थीं।

वे इस होटल के 23 नम्बर के कमरे में रहते थे। इनके पड़ोस के 24 नम्बर के कमरे में टिश्केविच नाम का एक व्यक्ति रहता था। उसका स्वभाव काफी दयालु था। बाल उसके उड़ चुके थे, फिर भी वह नकली बालों की टोपी लगाये रहता। पसीना उसे बहुत आता था। किसी भी बात का जवाब देते समय उसकी मुद्रा वैसी हो जाया करती, जैसी प्रार्थना करते समय होती है। किसी बड़े संगीत-समारोह में जब भी वह शामिल होता, भावुकता के मारे वह सिर हिलाने लगता, आँखें मटकाता और अपने वाद्य-यंत्र बजाया करता। अक्सर वह होटल से बाहर ही रहता। दिन का अधिकांश भाग वह बोलशाह और कंजर्बेटोइर पर बिताता। एक अच्छे पड़ोसी के रूप में वे दोनों एक दूसरे के प्रति सौहार्दपूर्ण थे। एक दूसरे की मदद करते रहने के कारण वे घनिष्ठ भी काफी हो चुके थे। बच्चों की उपस्थिति में कोमारोवस्की के आ जाने पर श्रीमती गुइशर संकोच से घबड़ा उठती थीं। इसीलिए टिश्केविच अपने कमरे की चाबी उसके पास छोड़ जाया करता था ताकि उसका कमरा श्रीमती गुइशर के काम आ सके। थोड़े ही दिनों में वह उसके प्रति इतनी आश्वस्त हो गई कि रो कर जी हल्का करने के लिए और अपने संरक्षक से पिण्ड छुड़ाने की प्रार्थना करने के लिए वह उसके पास चली जाया करती थी।

तीन

त्वस्किया गली के कोने पर एक-मंजिले मकान में कारखाना था, उसका एक चौथाई भाग रेलवे के एंजिन डिपो, स्टोर आदि से घिरा हुआ था। माल गोदाम के क्लर्क की एक लड़की श्रीमती गुइशर के कारखाने में काम करती थी। उसका नाम था ओल्या डेमिल। वह काफी चतुर थी

और काम सीखने में तत्पर रहती थी। वह अब नये मालिक की भी कृपा पात्र थी। लारा गुइशर को ओल्या बहुत प्यार किया करती थी। कारखाने के काम करने के समय में मालिक बदल जाने पर भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। मशीनों पर काम करने वाली दर्जिनियों के हाथ अथवा पाँव फुरती से चलते रहते और सम्मिलित रूप से मशीनों का शोर सारे कारखाने में निरन्तर गूँजता रहता। फटे चिथड़ों से फ़र्श ढंक-सा गया था। कुछ भी कहने के लिए आपको वहाँ इतने जोर से बोलना होगा कि आपकी आवाज मशीनों के उस आर्तनाद और खिड़की के पास पिंजड़े में किरिलमोडेस्टोविच-के-नरी पक्षी की सुरीली आवाज से तेज करनी होगी। इस कारखाने की पुरानी मालकिन पक्षी के इस विचित्र नाम के रहस्य को अपने साथ ही कब्र में लेती गयीं।

प्रवेश करते ही जो कमरा आता था वहाँ टेबल पर फैशन सम्बन्धी अनेक पत्र-पत्रिकाएँ पड़ी रहतीं। स्त्रियाँ पत्रिकाओं में छपी मुद्राओं में खड़ी होतीं, बैठतीं और साथ ही विभिन्न नमूनों पर चर्चा करतीं। दूसरी मेज पर प्रबन्धक की कुर्सी पर एक क्षीणकाय महिला बैठी हुई थी। यह गुइशर महोदया की सहायिका थी। उसके पीले-पीले दांतों के बीच बोन-होल्डर में एक सिगरेट हमेशा दबी रहती। नाक और मुँह से निकलने वाले धुएँ के बीच उसकी आँखें जड़ी हुई-सी लगतीं। एक रजिस्टर में वह ग्राहकों के नाम, पते, उनके माप और आवश्यक निर्देशन लिख लिया करतीं। गुइशर महोदया को कारखाने चलाने का कोई अनुभव नहीं था। वे अपने आपको मालकिन होने के अयोग्य भी समझती थीं। लेकिन चूँकि कर्मचारी मेहनती और ईमानदार थे तथा उनकी सहायिका फेटिसोवा अनुभवी और विश्वासपात्र स्त्री थी, उनका काम चल जाता था। फिर भी श्रीमती गुइशर को प्रत्येक दिन संकटपूर्ण प्रतीत होता और वे भविष्य की कल्पना से हमेशा व्याकुल रहतीं। कई बार तो वे बिलकुल निराश हो उठतीं।

उनसे मिलने के लिए कोमारोवस्की अक्सर आया करता था। कारखाने से श्रीमती गुइशर के रहने के स्थान की ओर जाते समय वह काम करने

वाली मनचली औरतों के साथ अश्लील भद्दे मजाक करता जाता, कुछ स्त्रियाँ उसकी इन सारी हरकतों से शर्मिन्दा होकर, पर्दे की आड़ में छिप जाया करतीं।

उसके चले जाने के बाद कारखाने की स्त्रियाँ उसके मजाक का विश्लेषण करतीं, चर्वति-चर्वण का रस लेतीं और कहा करतीं—महाराजाधिराज आ रहे हैं! अमालिया की टीस! बूढ़ी बकरी! औरतों का हत्यारा! आदि।

उससे अधिक डरावना था उसका भयंकर कुत्ता। अपने कुत्ते जैक को वह अक्सर साथ ले आया करता था। जैक के जोरदार झटकों के मारे कोमारोवस्की एक तरह घिसटता रहता। इसी जैक ने वसंत ऋतु में एक दिन लारा के पैरों में दांत गड़ा दिये थे और उसके मोजे फाड़ डाले थे।

ओल्या ने लारा के कान में धीरे से कहा—इस दुष्ट को मार डालना चाहिए।

—हाँ। कितना भयंकर है? लेकिन तुम उसे किस तरह मार सकती हो?

—चुप रहो। शोर मत करो। मैं तरीका बताती हूँ। तुम्हारी माँ की मेज की दराज के ऊपर पत्थर के ईस्टरवाले अंडे पड़े हैं?

—हाँ हैं। वे संगमरमर-पत्थर के बने हुए हैं।

—नजदीक आकर सुनो, मैं उन्हीं के बारे में बात कह रही हूँ। उन पत्थर के अंडों को सूअर की चर्बी से ढंक दो और इस दुष्ट को खिला दो। वह खा जायेगा और इस तरह दम घुट जाने के कारण मर जायेगा। और फिर—बस, वह मर जायेगा!

लारा इस प्रस्ताव को सुन कर हँस पड़ी। वह सोचने लगी कि इस दरिद्र कामगार की लड़की में इतनी अक्ल आई कहाँ से? दरिद्रता के कारण बच्चे समय से पहले ही प्रौढ़ हो जाया करते हैं—उसे मालूम था, फिर भी यह लड़की कितनी पवित्र और सरल है?

लारा ने सोचा—ऐसा क्यों होता है? जो कुछ मैं देखती हूँ, उसे स्वीकार करने के लिए मेरा ही भाग्य बाध्य क्यों है?

चार

'वह माँ का...है, माँ उसकी...है?' ये कितने बुरे शब्द हैं। मुझे इन्हें जबान पर भी नहीं लाना चाहिए। वह मेरी ओर इस तरह से क्यों ताका करता है? मैं तो उसकी लड़की के समान हूँ।

लारा की उम्र यद्यपि 16 वर्ष की थी, उसका शरीर भर चुका था। देखने पर वह 18 वर्ष की नवयुवती लगती। वह बहुत सुन्दर थी। उसका स्वभाव कोमल था और विचार सुलझे हुए। लारा और रोड्या दोनों जानते थे कि बिना मेहनत के उन्हें कुछ भी प्राप्त होने वाला नहीं है। धनिकों के लाड़ले बच्चों की तरह उनमें अपरिपक्व-सिद्धान्त-बुद्धि नहीं थी, न अनावश्यक चीज़ों के प्रति व्यर्थ उत्सुकता। वे दोनों छोटे-से-छोटे प्रत्येक एहसान के प्रति कृतज्ञता महसूस करते। उन्हें प्रत्येक वस्तु की कीमत मालूम थी और जो कुछ उन्हें प्राप्त था उसके महत्त्व से वे परिचित थे। वे जानते थे कि प्रगति के लिए आवश्यक है कि लोगों की तुम्हारे प्रति अच्छी धारणा हो। लारा पढ़ने में मन लगाती थी; सिर्फ़ इसलिए नहीं कि पढ़ाई के प्रति उसका अति लगाव था, बल्कि इसलिए भी कि अच्छे विद्यार्थियों को ही कम फीस देनी होती है। वह माँ का काम करती। घर के कामों में हाथ बंटाती और कारखाने के संदेश भुगताया करती। उसकी चाल में गम्भीरता थी। उसकी भूरी आँखें, सुगठित शरीर और मर्यादित भावभंगिमा ठीक उसी के अनुरूप थी।

जुलाई के मध्य के रविवार का दिन था। माथे के नीचे दोनों हाथ टिकाये वह आलस्य से भरी लेटी हुई थी। रविवार के दिन ही अधिक देर तक सोया जा सकता है। कारखाने में कोई हलचल नहीं थी। सड़क की ओर खुलने वाली खिड़की में से ट्राम के पहियों की आवाज आ रही थी। यह आवाज उसे लोरी की तरह लगी। थोड़ी देर और सोने की लालसा के

कारण उसे नींद आने लगी। ऊपर से नीचे तक उसने चद्दर तान लिया। इस तरह तन कर सोने पर उसे मालूम रहता कि बिस्तर में वह कितनी जगह घेर लेती है। ऊपर से नीचे तक चद्दर से लिपटी हुई लारा प्रस्तुत प्रत्येक वस्तु से परिचित थी; अस्पष्टता थी उसमें खुद में। उसके शरीर के ढांचे में उसकी चेतना समग्र रूप से व्याप्त थी। भविष्य की चिन्ता में वह दबी जा रही थी।

अर्द्ध-निद्रित अवस्था में उसने सोचा—थोड़ी देर मुझे और सो लेना चाहिए। और वह 'कोचमेकर-रो' के प्रकाशमान हिस्से की कल्पना में मन्त्र-मुग्ध होकर खो-सी गयी। जहाँ इस समय गाड़ी बनाने वालों के ओसारों में साफ-सुथरी फ़र्श पर बहुत सारी गाड़ियाँ पड़ी होंगी। शीशे के कटे टुकड़ों की लालटनें होंगी। जहाँ अमीरी जीवन है और हैं बीयर की भरी बोतलें!

और सड़क के नीचे फेयनस्की की छावनी में विशाल सेना का प्रशिक्षण कार्य चल रहा था। आज्ञानुसार घेरे बनते। सिपाही उछल कर घोड़ों की जीन पर चढ़ बैठते और घोड़े आगे बढ़ जाते, कुछ दुलकी चाल से, कुछ तेजी से और कुछ सरपट! बाहर एक ओर बच्चे अपनी दाइयों के साथ खेल रहे होंगे। नर्सें जम्हाइयाँ ले रही होंगी।

पेट्रोव्का स्ट्रीट से कुछ आगे, लारा को याद आया 'हे प्रभु! सुनो लारा, कितना बढ़िया इरादा है! वास्तव में मैं तुम्हें अपना फ्लेट दिखाना चाहता था। बस करीब ही है।'

उस दिन ओल्गा का नामकरण होनेवाला था। कोचमेकर्स-रो में रहने वाले कोमारोवस्की के मित्र, उनके बच्चे इस अवसर पर नाचने और शराब की दावत में शरीक होने के लिए उपस्थित थे। माँ को वहाँ आमंत्रित किया गया था लेकिन वह जा नहीं सकती थी। उसकी तबीयत ठीक नहीं थी। माँ ने कहा था—लारा को ले जाओ। लारा की देखभाल के लिए तुम हमेशा मुझे ही कहा करते हो। अच्छा, अब तुम ही यह काम करो।

और उसने उसकी देखभाल की! क्या वह सिर्फ़ मजाक था? जर्मनी का एक विशेष प्रकार का नृत्य हो रहा था। बहुत ही उन्मत्त कार्य-कलाप से भरा हुआ यह नृत्योत्सव! सोचने का अवसर ही नहीं, गोल गोल घेरा बना कर नाचते जाओ और उपन्यास में वर्णित अमर जीवन क्षण भर में तुम्हारे सामने से गुजर जाय! प्रत्यक्ष रूप से इन सबका ऐसा असर पड़ता मानो तुम पर घड़ों पानी गिर गया हो और तुम स्तब्ध खड़े रह गये हो अथवा मानो तुम्हें किसी ने नग्न देख लिया हो। अपने सयाने होने का असर देने के लिए ही तो किसी को इतने घनिष्ठ रूप से परिचित होने देते हो! लारा ने सोचा भी न था कि वह इतना अच्छा नाचता है। उसके हाथ खूब सधे हुए थे। कमर में हाथ डाल कर जब वह उसे अधर में पकड़ लेता तो उसके मन में कितना आत्मविश्वास था! खैर। इस तरह वह अब किसी को चूमने नहीं देगी। उसने कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी कि अपने होठों पर किसी के होठ इतनी देर तक जमे रहेंगे। खैर। इस सारी बकवास को जाने दो। अब फिर इन सारी बातों पर वह कभी विचार नहीं करेगी।

लजाना, आँखें नीची कर लेना और कृत्रिम रूप से दूसरों को खुश करने के लिए हँसना उसे बन्द कर देना चाहिए; अन्यथा इसकी परिणति दुखान्त होगी। एक कदम आगे ही गहरी खाई है। नाचना और उसके बारे में सोचना ही बुराई की जड़ है। अब वह स्पष्ट रूप से इनकार कर देगी। टांग टूट जाने का बहाना किया जा सकता है अथवा कहा जा सकता है कि वह नाचना जानती ही नहीं।

पाँच

मास्को के रेल-कर्मचारियों में उस शिशिर ऋतु में काफी असन्तोष फैला हुआ था। मास्को-कजान लाइन के लोग हड़ताल पर थे। मास्को-ब्रेस्ट लाइन के लोगों के उनमें सम्मिलित हो जाने की आशंका थी। यद्यपि हड़ताल करने का निश्चय किया जा चुका था, फिर भी निश्चित तिथि के बारे में लोग विवाद कर रहे थे। हड़ताल होने में बस पहल होने की जरूरत थी।

अक्टूबर के प्रारम्भ का सर्दी भरा प्रात:काल था। मजदूरों को तनख्वाह मिलने वाली थी। काफी अर्से तक एकाउण्टेंटों से इस बारे में कुछ भी मालूम नहीं हो सका। अन्त में एक चपरासी तनख्वाह की शीटें लेकर हाजिर हुआ। साथ में लेजर-बुक्स भी लाये गये थे जिनमें जुर्माने की कटी हुई रकम का हिसाब था। खजांची ने तनख्वाह बाँटनी शुरू की। कण्डक्टर्स, स्विचमैन जौइनर, ड्राइवर, मेट्स, चारवुमेन आदि कतार में खड़े थे। लकड़ी की इमारतों, स्टेशन, उसके गुदाम, कारखाने तथा इंजिन-डिपो के बीच में से लोग मैदान की ओर जा रहे थे।

वातावरण में शीत ऋतु के आगमन की हवा समाई हुई थी। कुचले हुए मापल वृक्ष के पत्ते, पिघली हुई बर्फ़, इंजिन की गर्म कालिख और ताजी ज्यार की रोटी की गंध यही सब चारों ओर था। गाड़ियों के डिब्बे जोड़ने तथा इंजिन द्वारा पटरियाँ बदलने की क्रिया चालू थी। एक आदमी उनके बढ़ने, रुकने आदि के लिए झंडी से संकेत कर रहा था। इंजिन के भोंपे का स्वर, गार्ड की सीटी, डिब्बे जोड़े जाने की तीखी आवाज सारे कोलाहल से ऊपर उठ कर सुनाई दे रही थी। आसमान की अन्तहीन सीढ़ियों पर कदम रखता हुआ धुआँ ऊपर चढ़ रहा था। गर्म भाप के बादल ऊपर उठकर शीतभरे कुहरे को झुलसा रहे थे।

विभागीय व्यवस्थापक फुफलीजिन और ट्रेक ओवरसियर पावेल फेरापोन्येविच आन्टिपोव, आम रास्ते के आरपार टहल रहे थे। मरम्मत के कारखाने में पटरियों को जोड़ने के सामान के बारे में आन्टिपोव गर्म हो रहा था। फौलाद के बारे में उसे सन्देह था और उसका खयाल था कि कुहरे से भरी हवा में यदि ध्यान न रखा गया तो ये रद्दी लोहे की पटरियाँ फट जायेंगी। व्यवस्थापकों में से कोई उसकी शिकायतों की ओर ध्यान नहीं दे रहा था। निश्चित रूप से ठेकेदार अपने पैसे कमाने की धुन में लगा हुआ था।

फुफलीजिन एक कीमती रोएँदार ऊनी कोट पहने हुए था जिस पर रेलवे वर्दी की धारी सिली हुई थी। खुले बटन के कारण उसकी नागरिक

पोशाक दिखाई दे रही थी। बांध पर सावधानी से चलते समय वह अपनी सजधज की ओर गौर से देख कर प्रसन्न हो उठता। आन्टिपोव की तमाम बातें उसके एक कान में घुसतीं और दूसरे से आसानी से निकल जातीं। फुफलीजिन अपने ही विचारों में खोया हुआ था। बार-बार घड़ी निकाल कर वह समय देख रहा था। उसे जल्दी जाने की फिक्र थी।

फुफलीजिन कह रहा था—तुम ठीक कहते हो। लेकिन यह सब मेन-लाइन या बहुत लम्बी सीधे मार्ग पर अथवा जहाँ यात्रियों की अधिकता होगी वहाँ के लिये सम्भवतः हानिकारक हो। मगर तुम्हें जो कुछ मिल गया है उसका भी खयाल रखो। मामला है वहाँ का, जहाँ साइडिंग है और किनारा है; जहाँ बिच्छूघास फैली हुई है अथवा पीले पौधे उगे हुए हैं। रहा यात्रियों का सवाल, सो भी कोई खास बात नहीं। कोई पुराना शंटिंग-इंजिन इन थोड़े से लोगों को पहुँचाने का काम आराम से कर लेगा। आया आपकी समझ में? और आपको क्या चाहिए? आप ख्वामख्वाह आपे से बाहर हुए जा रहे हैं। आप फौलादी पटरियों की बात कर रहे हैं! मैं कहता हूँ इस तरह की जगह के लिये लकड़ियों की पटरियाँ भी काफी होंगी।

फुफलीजिन ने घड़ी देखी। रेलवे की ओर आती हुई सड़क पर उसे एक गाड़ी दिखाई दी। उसे लेने के लिए उसकी पत्नी आई थी। आम रास्ते के अन्त में गाड़ी खड़ी कर दी गई। घोड़े खोलकर बांध दिये गए। घोड़े रेल से डर गये थे और गाड़ीवान उनसे इस तरह से बातचीत कर रहा था जैसे दाई नटखट बच्चों से किया करती है। गाड़ी में एक ओर एक सुन्दर युवती पिछली सीट पर सिर रखे विचारशून्य-सी बैठी थी।

विभागीय व्यवस्थापक ने आन्टिपोव की ओर इस तरह से इशारा किया मानो कह रहा हो, कि रेलवे के अलावा भी सोचने लायक मेरे पास और भी बहुत सारी बातें हैं। बोला—ये बातें फिर किसी समय होंगी।

सूर्यास्त के समय, तीन चार घंटों के बाद पटरियों से दूर मैदान में, जहाँ कुछ भी दिखाई नहीं देता था। दो मानव मूर्तियाँ प्रकट हुईं। एक बार

उन्होंने चारों ओर देखा और तेजी के साथ वे दूसरी ओर चल पड़े। 'चलो, ज़रा जल्दी चलें। अब मुझे पुलिस की परवाह नहीं है। मगर भूमि में छिपे हुए ये कीड़े ज्योंही अपना काम समाप्त कर लेंगे फिर वे हमारी धरपकड़ करने लगेंगे। मुझे इन लोगों की सूरत से ही सख्त नफरत है। यदि तुम हर चीज़ की बाल की खाल इसी तरह निकालते रहोगे तो फिर कमेटी बनाने का मतलब ही क्या होता है? पहले तो आग से खेलते हो फिर पानी में कूद कर बच निकलने की फिक्र करते हो! दरअसल हो तुम भी एक खास किस्म के आदमी।'

—मेरी दार्या को टायफुस हो गया है। मुझे उसे अस्पताल ले जाना है। इस काम को खत्म किये बिना मैं कुछ भी ग्रहण नहीं कर सकता।

—सुना है, आज तनख्वाह बाँटी जा रही है। मैं थोड़ी देर बाद आफिस की ओर आता हूँ। यदि आज तनख्वाह का दिन न होता, तो खुदा-कसम मैं इन सबको आज निश्चित रूप से खत्म कर देता। एक मिनट के लिए भी किसी का इन्तजार नहीं करता।

—मैं पूछ सकता हूँ, कैसे?

—कोई खास बात नहीं। बायलर-रूम में जाकर सीटी बजा देने से ही सारा काम हो जायेगा।

एक दूसरे का अभिवादन करके वे विपरीत दिशाओं की ओर रवाना हो गये।

पटरियों के सहारे-सहारे तिमिरजिन शहर की ओर चल पड़ा। तनख्वाह लेकर लौटनेवाले लोगों की भीड़ में वह भी शामिल हो गया। एक ही नजर में वह समझ गया कि लगभग तमाम रेलवे-कर्मचारियों को तनख्वाह बाँटी जा चुकी है।

अंधेरा हो रहा था। आफिस की बत्तियाँ जल उठी थीं। चौराहे पर बेकार के मजदूर इकट्ठे हो गये थे।

चौराहे के कोने पर फुफलीजिन की पत्नी अपनी गाड़ी में उसी मुद्रा में अभी भी बैठी अपने पति का इन्तज़ार कर रही थी, जिसे कि तनख्वाह

मिलने वाली थी। तुषार-पात होना शुरू हो गया था। गाड़ीवान चमड़े की छत से गाड़ी ढंकने के लिए ऊपर चढ़ गया।

अपनी गाड़ी में बैठी श्रीमती फुफलीजिन कार्यालय के लैम्पों की रोशनी में चमकते हुए रजतमय ओलों के दानों की मन ही मन प्रशंसा करने में व्यस्त थी। जैसे तुषारवर्षा अथवा धुन्ध पर उसकी निगाह थी, उसी तरह उसकी अनिमिलित स्वप्निल दृष्टि कर्मचारियों पर भी टिकी हुई थी। तिमिरजिन ने उसे देखा, उसके भावों को समझकर बिना उसका विशेष सम्मान किये वह चला गया। उसने सोचा कि वेतन वह बाद में भी ले लेगा ताकि वह अपने पति के पीछे आफिस की ओर न दौड़ पड़े। कारखाने, काले इंजिन के मुड़ने के चबूतरे, गोदाम की ओर जाने वाले पंखाकार रास्ते को पार कर वह अन्धकारमय चौराहे की एक ओर बढ़ गया।

—तिमिरजिन! कुपरींका! अन्धकार में से कई आवाजें सुनाई दीं। अन्दर से किसी के चिल्लाने की आवाज आ रही थी, एक लड़का रो रहा था। 'अरे कोई अन्दर आकर इस लड़के की मदद करो।' एक स्त्री चीख रही थी।

बूढ़ा फोरमेन प्योटर खुडोलेव काम सीखनेवाले युसुप्का को पीट रहा था। काम सीखनेवालों के प्रति उसका व्यवहार इतना रुक्ष और कष्टदायक नहीं था। न वह ज्यादा शराब ही पिया करता था। एक जमाने में जब तरुण-कर्मचारी के रूप में वह मास्को आया तो एकबारगी उसने मास्को के औद्योगिक उपनगरों के व्यापारियों तथा संभ्रान्त घराने की लड़कियों की नजरें अपनी ओर आकर्षित कर ली थीं। कानवेन्ट स्कूल से स्नातक की दीक्षा प्राप्त मार्फा ने अपने सह-कर्मचारी तिमिरजिन के पिता के साथ ब्याह करके उसे नीचा दिखाया था। तिमिरजिन का पिता इंजिन ड्राइवर था। उसकी मृत्यु 1883 की सनसनीपूर्ण रेल-दुर्घटना में जल जाने से हुई थी। इस दुखद घटना के बाद खुडोलेव ने फिर मार्फा से प्रार्थना की, लेकिन उसने उसे फिर ठुकरा दिया। झगड़े करते रहने का

स्वभाव और शराब पीने की लत उसे इसके बाद ही लगी थी। अपने प्रति इस्तेमाल किए गए प्रत्येक शब्द को वह बदनामी और दुर्भाग्य मानता।

युसुप्का गमालुद्दीन का लड़का था। वह तिमिरजिन के मोहल्ले में ही रहता था। चूँकि तिमिरजिन उसे अपने संरक्षण में रखे हुए था, इसलिए खुडोलेव और भी ज्यादा चिढ़ गया था। वह चीख रहा था—फाइल इस तरह पकड़ी जाती होगी? चूँधी आँखोंवाले दुष्ट! अन्धे! युसुप्का के बाल पकड़ कर पीठ पर एक मुक्का जमाते हुए खुडोलेव गरजा—इस तरह से सांचे को खोला जाता है? झगड़े की जड़—शैतान कहीं के!

—महाशय अब मैं कभी नहीं करूँगा। मुझे मारो मत।

—इसको मैंने हजार बार समझाया है कि पहले खराद के धुरे को ठीक कर, फिर पेंच कस! लेकिन यह सुनेगा थोड़े ही? कभी नहीं। अपनी मर्जी के अनुसार काम करेगा। इस नालायक ने धुरा तो लगभग तोड़ ही डाला है।

—सच कहता हूँ महाशय, मैंने उस धुरे को छुआ तक नहीं।

भीड़ में से निकल कर तिमिरजिन ने पूछा—तुम क्यों लड़के को ख्वामख्वाह सता रहे हो जी?

खुडोलेव ने गुस्से में जवाब दिया—तुम्हें इस से क्या मतलब? इस नालायक पिल्ले को मार डालना ही ठीक है। देखो, यह मेरे धुरे को तोड़ ही चुका है और तुम? इससे पहले कि एक आधा हाथ तुम पर पड़ जाय, तुम यहाँ से चले जाओ। यह तो इसकी किस्मत है कि इतने पर भी वह अभी तक जिंदा है बेशर्म कहीं का! और आखिर मैंने किया ही क्या है? धमकाने के लिए थोड़े बाल खींच लिए और कान मल दिए, इतना ही तो!

—तो क्या इसके लिए उसकी गर्दन उड़ा देना चाहते हो? तुम जैसे बूढ़े आदमी को इस तरह का व्यवहार करते शर्म आनी चाहिए। बाल सफ़ेद हो गये मगर अभी तक तमीज नहीं आई।

—बोलते जाओ। बोलते जाओ। चुप मत रहना। अभी तक तुम्हारा सारा शरीर सही सलामत है न, बोलते जाओ। तुम कुत्ते की जात, मुझे नसीहत दे रहे हो? मैं तुम्हारा कचूमर निकाल दूँगा। मैं तुम्हारे बाप को जानता हूँ जो मोची था। तुम्हारी माँ के लक्षण भी मुझसे छिपे हुए नहीं हैं—बदचलन औरत।

इसके बाद जो कुछ हुआ उसमें एक पल से ज्यादा समय नहीं लगा। दोनों ने खराद की बेंचों में से जो कुछ भी हाथ लगा उठा लिया। यदि भीड़ उन्हें छुड़ाने के लिए दौड़ न पड़ती तो एक दूसरे की वे हत्या कर डालते। दोनों के सिर झुके हुए थे, उत्तेजना से उनका सिर दर्द करने लगा था, चेहरा पीला पड़ गया था, आँखें लाल हो उठी थीं। क्रोध के मारे उनसे एक शब्द भी बोला नहीं जा रहा था। उनकी भुजाएँ मजबूती के साथ पकड़ ली गयी थीं। अपने शरीर को झकझोर कर, जोर लगाकर अपने सहकर्मियों को अपने साथ घसीटते हुए छुटकारा पाने की दोनों ने हरचन्द कोशिश की थी। कपड़ों के हुक अथवा बटन खुल गये। कपड़ों के नीचे से उनका शरीर दिखाई दे रहा था। चारों ओर भयंकर कोलाहल मच गया।

'उसके हाथ से वसूला छीन लो। वर्ना वह उसका सिर फोड़ डालेगा।' 'अब शांत हो जाओ बाबा। वर्ना मजबूती से पकड़े हुए तुम्हारे हाथ टूट जायेंगे।' 'इन्हें अलग करके ताले में बन्द कर दो। तब इनका गुस्सा खत्म होगा।' लोग कह रहे थे।

अचानक अलौकिक शक्ति से तिमिरजिन ने अपने से चिमटे हुए लोगों को दूर हटा दिया; और वह दरवाजे की ओर लपका। लोगों ने उसका पीछा किया, मगर यह देखकर कि उसका दिमाग ठिकाने आ गया है और उसकी नीयत आक्रमण करने की नहीं है, उसे अकेले छोड़ दिया गया। वह बाहर आकर, दरवाजे को ढकेल कर, बिना मुड़े अपरिचित रास्ते पर लम्बे कदम रखता हुआ चल दिया और शरद् की अन्धकारमय रात्रि में विलीन हो गया। वह फुसफुसा रहा था—किसी की मदद करो और लोग तुम्हारा गला घोंटने को तैयार हो जायेंगे।

उसके मन में सारे संसार के प्रति घृणा होने लगी। झूठ, प्रपंच और अपने ही रवैये में प्रसन्नता प्राप्त करने वाले इन निकृष्ट लोगों के प्रति आज उसके मन में तीव्र घृणा व्याप्त हो गई। वह तेजी के साथ भागने लगा। मानो इससे समय की गति में भी तेजी आ जायेगी और संसार की प्रत्येक वस्तु उसके विचारों के अनुसार तर्कसंगत बन जायेगी।

'ये तकरीरें, भाषणबाजी, ये छोटी-मोटी अव्यवस्थाएँ आदि एक बड़े रास्ते पर जाने के लिए छोटी-छोटी श्रेणियाँ हैं।' उसने सोचा।

परेशानी के मारे वह बिना साँस लिये अचेतनावस्था में भागा जा रहा था! किस ओर जा रहा था, यह उसे मालूम नहीं था। लेकिन उसके पाँव जानते थे कि वे कहाँ जा रहे हैं।

गुप्त आवास से आन्टिपोव के साथ बाहर निकलते समय उसे यह निर्णय मालूम हो गया था कि आज की रात से ही हड़ताल हो जानी चाहिए और इसके लिए यह भी निश्चय हो चुका था कि कौन किस जगह पर क्या काम करेगा।

इंजिन के मरम्मत के कारखाने का भोंपू ज्योंही तिमिरजिन द्वारा बजाया गया, गोदाम और सामान के बाड़ों में से भीड़ निकल कर बाहर आ गयी। तेज भोंपू अपने हृदय तल की गहरी आवाज में गूँज उठा। इस भीड़ में बोयलर भी शामिल हो गये जिन्होंने तिमिरजिन का इशारा पाते ही औजार नीचे रख दिये थे। काम बन्द कर दिया था।

बहुत अर्से तक तिमिरजिन यही सोचा करता था कि उसी के कारण उस दिन काम बन्द कर दिया गया था और यातायात अवरुद्ध हो गया था। बाद में जब उस पर हड़ताल भड़काने तथा उपद्रव करने के आरोप का मुकद्मा चला, तभी उसे अपनी असलियत का पता चला।

लोग शोर मचा रहे थे—'यह सीटी इस समय क्यों बजी?' 'तुम सब कहाँ जा रहे हो?' 'क्या कोई सुन नहीं रहा है?' 'सभी बहरे हो गये हैं क्या?' तभी अन्धेरे में से किसी का उत्तर आया—'आग लगी है। खतरे की सूचना देते हुए भोंपू बज रहा है।'

दरवाजे खुले और बहुत से लोग बाहर आकर इकट्ठे हो गये। दूसरी आवाजें सुनाई दीं—आग! झूठ! 'उस गधे को देखो।' 'अरे यह हड़ताल है।' 'यह रहा वह! वो देखो!' 'यह हड़ताल है। औजार डाल दो। ढूंढ लेने दो उन्हें दूसरे बेवकूफों को, जो उनका यह रद्दी काम करें। घर चलो।'

भीड़ में अभिवृद्धि होने लगी। रेल कर्मचारी हड़ताल पर थे।

छः

सर्दी से ठिठुरता हुआ, नींद के अभाव में सुस्त तिमिरजिन दो दिन बाद घर लौटा। रात से ही पाला गिरने लगा था। साधारणतया इतनी सर्दी इस मौसम की शुरूआत में होती नहीं। इस भयंकर सर्दी के लायक वह कपड़े पहने हुए नहीं था। दरवाजे पर जमालुद्दीन पोर्टर मिल गया। टूटी-फूटी रूसी भाषा में उसने कहा—बहुत बहुत शुक्रिया मिस्टर तिमिरजिन, तुमने युसुप्का को बचा लिया। भगवान तुम्हारा भला करे।

—कैसी पागलपन भरी बातें कर रहे हो? तुम किसे मिस्टर कह कर पुकार रहे हो? खैर, जो कुछ कहना है थोड़े में कह दो। देखो, कितनी भयंकर ठंड है!

—कुप्रिन सेलेविच, अब तुम्हें सर्दी भुगतने की जरूरत नहीं। कल मैं तुम्हारी माँ के साथ सूखी लकड़ियों के ढेर स्टेशन के गोदाम से ले आया हूँ। आओ ताप लो। जल्द ही गर्म हो जाओगे।

—खैर, फिलहाल बर्फ़ की ठंड से जमा जा रहा हूँ। कुछ और कहना है तो कह डालो!

—मैं तुम्हें यही कहना चाहता था कि आज की रात तुम घर पर मत बिताना। तुम्हें कहीं छिप जाना चाहिए। कल पुलिस आई थी। हमसे पूछा—'यहाँ कौन आया करता है?' मैं घबरा गया था। जवाब दिया—'कोई नहीं।' तसल्ली की साँस लेकर मैंने कहा—'रेलवे के साथी आया करते हैं मगर कोई अपरिचित नहीं।' तुम बच गये।

तिमिरजिन अविवाहित था। वह अपनी माँ तथा अपने छोटे विवाहित भाई के साथ रहता था। पड़ोस के गिर्जाघर के मकान में वे रहते थे। इस मुहल्ले में कुछ पादरी, सड़क पर फेरी लगानेवाले, कुछ कर्मचारियों के दल, बूचड़ और कुजड़े आदि रहते थे। पलस्तरहीन बाड़े के चौकोर में पत्थर का बना हुआ मकान था। गन्दी फिसलनदार सीढ़ियों से बिल्लियों की तथा जर्मन आचार की बदबू आती रहती। मांस भण्डार और शौचालय पास-पास ही थे, उससे, दुर्गन्ध फैलने में जो कसर रह सकती थी, वह भी पूरी हो जाती थी।

तिमिरजिन का भाई जापान के साथ होने वाले युद्ध में नव-सिपाही के रूप में लड़ते हुए घायल हो गया था। क्रासनोयास्क के सैनिक अस्पताल में उसका इलाज हो रहा था। उसकी पत्नी तथा दो लड़कियाँ उसे देखने तथा उसे घर लिवा लाने के लिए वहाँ गई हुई थीं। तिमिरजिन वंश पीढ़ियों से रेलवे में नौकरी करता आ रहा था। इसलिए निःशुल्क वृत्ति आज्ञापत्र के बल पर उन्होंने सारे रूस की काफी यात्राएँ की थीं। तिमिरजिन और उसकी माँ के सिवाय शांत एकांत घर में कोई नहीं था।

अपने दूसरी मंजिल के फ्लेट पर आकर तिमिरजिन ने देखा कि नीचे जलवाहक गाड़ियों से भरी जाने वाली टंकी का ढक्कन खुला पड़ा है और नीचे पानी का धरातल जम गया है। 'यहाँ प्रोव आया होगा। जिस तरह वह पीता है, उसकी आंतड़ियाँ जल गयी होंगी।' प्रोव से उसका मतलब प्रोव अफनसयेमिच सोकोलोव से था। वह तिमिरजिन का रिश्तेदार था और गिरजे का मंत्रोच्चारक। उसने अपने फ्लेट की घंटी बजाई और दरवाजा खोला। रसोईघर से आनेवाली स्वादिष्ट भोजन सामग्री की गन्ध ने उसका स्वागत किया। माँ को देखते ही उसने कहा—बड़ी बढ़िया खुशबू आ रही है माँ। आह, अब थोड़ी गर्मी मिली। उसकी माँ ने उसे अपनी बाँहों में भर लिया और वह फूट-फूट कर रोने लगी। तिमिरजिन ने माँ का माथा सहलाते हुए धीरे से अपने आप को छुड़ा

लिया। माँ को आश्वासन देते हुए उसने कहा—अब कोई खतरा नहीं है। मास्को से वार्सा की लाइन बन्द है।

—मुझे मालूम है। इसीलिए तो रो रही हूँ। पुलिस तुम्हारे पीछे पड़ी हुई है। तुम कहीं छिप जाओ।

बात को हल्की करने की नीयत से और माँ को हंसाने के लिहाज से उसने कहा—वह तुम्हारा लड़का प्योटर मेरा सिर फोड़ डालता माँ!

—उस गरीब पर मत हँसो कुपरिंका।

—एन्टिपोव गिरफ्तार हो गया है। रात को पुलिस आई थी, तलाशी हुई, सारा सामान उलट-पुलट कर दिया गया और सुबह वे उसे पकड़ कर ले गये। उसकी दार्या टाइफ़ुस से पीड़ित अस्पताल में है। रह गया है माध्यमिक शाला में पढ़नेवाला उसका लड़का पाशा—अपनी बहरी चाची के पास।

—उस लड़के को हमें अपने पास रख लेना चाहिए। अच्छा, प्रोव क्या चाहता है?

—तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि वह यहाँ आया था?

—मैंने नीचे देखा है पानी की टंकी खुली पड़ी थी और बर्फ़ पर बर्तन पड़ा था। मन ही मन सोच रहा था कि प्रोव की ही आदत है इस तरह बड़े बड़े घूंट पीने की।

तुम बहुत होशियार हो गए हो कुपरिंका। हाँ प्रोव ही था। जलाने के लिए लकड़ियाँ माँगने आया था। मैंने दे दीं। लो, मैं तो भूल ही गयी, पता नहीं क्या कह रही थी! प्रोव जो समाचार लाया था, उससे तो बड़ी चिन्ता होती है। जार ने एक घोषणापत्र पर हस्ताक्षर कर दिए हैं। इससे सब कुछ गड़बड़ा गया है। घोषणापत्र में कहा गया है कि सबके साथ उचित व्यवहार होगा। किसानों को भूमि मिलेगी और वे हम कुलीनों के बराबर हो जायेंगे। दस्तखत तो कर ही दिए गए हैं; बस इसके आम तौर पर प्रचलित होने की ही कसर है। जार के प्रति धन्यवाद अथवा उसके

लिए भगवान से प्रार्थना करने का निर्णय पादरी संघ ने किया है। इस बारे में वह जो कुछ कह रहा था, वह सब मैं इस समय भूल गई हूँ।

सात

हड़ताल-संचालन के अपराध में अपने पिता के गिरफ्तार हो जाने के बाद पाशा तिमिरजिन के पास ही रहने चला आया था। वह साफ-सुथरा चतुर लड़का था। उसका चेहरा सुन्दर था। अपने बालों के प्रति सावधान होने के कारण वह हमेशा उन्हें कंघे अथवा ब्रुश से बनाता रहता। उसका स्वभाव काफी मस्त था। हँसने-हँसाने की वृत्ति विकसित थी और अपनी तेज निगाहों से किसी भी चीज़ को देख कर ग्रहण करने की उसकी क्षमता अद्‌भुत थी। किसी भी सुनी हुई अथवा देखी हुई बात की नकल करके वह लोगों को हँसाते-हँसाते लोट-पोट कर देता।

17 अक्टूबर को जब जार का घोषणापत्र प्रकाशित हुआ तो बड़ा भारी प्रदर्शन आयोजित हुआ। मास्को के अन्त में कलूगा गेट की ओर तेवर गेट पर लोगों की बड़ी भारी भीड़ जमा हो गयी। कहावत है न, अनेक दाइयाँ जापे का नाश कर देती हैं, यही हालत यहाँ भी हुई। अनेक क्रांतिकारी-दलों ने योजनाएँ बनाई थीं और तमाम आपस में लड़-झगड़ रहे थे। इसके बाद जब उन्होंने सुना कि निश्चित तिथि पर लोग प्रदर्शन करने के लिए जमा हो गये हैं तो उन्होंने अपने प्रतिनिधि जनता की रहनुमाई के लिए रवाना कर दिये। तिमिरजिन द्वारा मना करने पर भी उसकी मां प्रदर्शन में गई थीं।

मस्त स्वभाव का हँसमुख पाशा भी उसके साथ था।

नवम्बर के शुष्क पाले का दिन था। साफ आसमान से एक-एक करके तुषारखण्ड रुई की तरह जमीन पर फैल जाते।

नीचे सड़क पर भीड़ बही जा रही थी। चारों ओर जनसमुदाय था। सर्दी के कपड़े पहने स्त्री, पुरुष, विद्यार्थी, बूढ़े, बच्चे, रेलवे कर्मचारी, टेलीफोन एक्सचेंज में काम करनेवाले और स्कूल के बच्चे, सब इस भीड़

में शामिल थे। कुछ देर तक लोग 'मार्सिलैस वारसौ' और 'विक्टम्स दे फेल'—गीत गाते रहे। एक आदमी, जो जुलूस के अंतिम छोर पर चल रहा था और अपनी टोपी को लकड़ी की तरह संकेत के लिए इस्तेमाल कर रहा था, वह थोड़ी देर के लिए रुका और उसने ध्यान लगा कर सुनने की चेष्टा की कि लोग आखिर गा क्या रहे हैं? इसके बाद अस्त-व्यस्त रूप से गाना समाप्त हो गया। जमी हुई बर्फ़ के रास्ते पर लोगों के कदमों की आहट अब स्पष्ट रूप से सुनाई देने लगी। नेताओं को किसी हमदर्दी ने टेलीफोन द्वारा सूचना भिजवाई थी कि सड़क के निचले भाग में पुलिस जुलूस भंग करने के लिए तैनात है।

—'तो क्या हुआ?' एक नेता ने कहा। 'घबराने अथवा उत्तेजित होने की कोई जरूरत नहीं। हमें शांत रहना चाहिए। और अपने दिमाग ठिकाने मे रखने चाहिए। जो भी सार्वजनिक इमारत मिले, उस पर पहले कब्जा जमा लेना चाहिए।' फिर बहस शुरू हो गयी। सोसाइटी आफ शोप एसिस्टेंट्स की बिल्डिंग कब्जे में ली जाय अथवा टेक्निकल स्कूल पर आधिपत्य जमाया जाय; या विदेशी व्यापार विनिमय के स्कूल पर झंडा गाड़ दिया जाय! वे इधर बहस ही करते रहे और उधर जनता हाई-स्कूल के भवन तक पहुँच गयी। तुरन्त नेतागण सीढ़ियों पर पहुँच गये और जनता को रुक जाने का इशारा किया गया। लेकिन सम्भवत: जनता उनके इन इशारों की भाषा नहीं समझती थी। लिहाजा लोग एक दूसरे से सटे हुए दरवाजे खोल कर अन्दर पहुँच गये। 'लेक्चर हाल—लेक्चर हाल' पीछे से कुछ लोगों की आवाज आई। मगर उस ओर बहुत कम लोगों ने ध्यान दिया। वे स्कूल के बरामदों में अथवा कमरों में इधर-उधर घूम रहे थे। बड़ी मुश्किल से किसी तरह नेताओं ने जनता को लेक्चर-हाल में हाँकने में सफलता प्राप्त की। नेताओं ने बड़ी कोशिश की कि वे जनता को सूचित कर सकें कि जुलूस भंग करने के लिए क्या तैयारियाँ हो रही हैं? मगर कोई सुनने को तैयार नहीं था। उन्हें जब रुकने अथवा बिल्डिंग में जाने को कहा गया तो उसका यही अर्थ लिया गया था कि

कोई स्भा भी वहाँ होने वाली है। अच्छी बात है। होने दो। सभा शुरू हो गयी। आखिर इधर-उधर भटकनेवाले और गानेवाले लोग एक बार नीचे चुपचाप बैठने को राजी हो गये ताकि नेतागण अपनी कार्यवाही कर सकें। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि उन्होंने अपने शोरगुल में कुछ कमी कर दी हो। वह तो अबाध गति से चलता ही रहा। सम्भवतः बहुत सारी बातों पर नेता एकमत हो गये थे। यदि वहाँ थोड़ा बहुत अन्तर था भी तो जनता ने उस ओर ध्यान नहीं दिया। वे इतनी देर बाद बैठ जाने और आराम करने से ही संतुष्ट हो गये। एक व्यर्थ के वक्ता को सबसे अधिक स्वागत और समर्थन प्राप्त हुआ। कारण यह कि कोई उसकी बात सुन नहीं रहा था। हाँ, उसके प्रत्येक शब्द पर जोर-जोर से शोर मचाया जाता। लगता था, वह जो कुछ कह रहा है, उसके विरुद्ध किसी तरह का कोई तर्क नहीं है, किसी को कुछ कहना नहीं है। सब लोग मानो सहमत थे। किसी ने उसकी बात सुनने समझने का कष्ट नहीं किया। बीच-बीच में धिक्कार भरी आवाज भी आती थी। अंत में भाषण देनेवाले वक्ता की बिना परवाह किये, वे सब उठ खड़े हुए। उसके व्यर्थ प्रलाप से वे अब अघा गये थे फिर जुलूस सड़क पर चला आया। कंधों से कंधे मिले हुए टोपी से टोपी मिली हुई, जुलूस आगे बढ़ा!

अन्दर जिस समय सभा हो रही थी उस समय से बर्फ़ गिरने लगी थी सड़क सफेद फक् हो गई थी और बर्फ़ की पर्तें मोटी।

जब घुड़सवारों ने जुलूस रोकने की कार्यवाही शुरू की तो पहले तो जुलूस के पिछले हिस्से के लोगों को कुछ मालूम ही नहीं हो सका। फिर एक तुमुल घोष सुनाई दिया—हुर्रे! फिर 'बचाओ', 'मर गये', 'मार डाला' आदि की भयाक्रांत आवाज़ें आने लगीं और शोरगुल में खो गयीं। इसी आवाज़ की लहर के साथ सँकरे बरामदे से भीड़ विभक्त हो गयी और घुड़सवारों का दल घटनास्थल पर उपस्थित हो गया। फौज के कप्तान तथा उसके साथियों की तलवारें जनता के ऊपर चमक रही थीं। सारी पलटन फिर संघठित आकार में खड़ी हो गयी। जुलूस भंग हो

गया। मारकाट आरम्भ हुई। सड़क खाली होते देर न लगी। भीड़ समीप की गलियों में समा गई। हल्की बर्फ़ गिर रही थी। शुष्क सन्ध्या कोयले द्वारा चित्रित रेखाओं की तरह लगने लगी थी। मकानों के पीछे सूर्य अस्त हो रहा था। उसके गुलाबी प्रकाश से सारी चीज़ें लाल हो गयीं थी। और दिखाई दे रहा था घुड़सवारों के दल की टोपियों का लाल सिरा, जमीन पर झुका हुआ लाल झंडा और बर्फ़ पर लोगों के रक्त के लाल निशान! एक आदमी, जिसका सिर फूट गया था, कराहता हुआ फ़र्श के कोने पर रेंग रहा था। सड़क के उस पार घुड़सवारों का दल धीमी गति से वापस लौट रहा था। तिमिरजिन की माँ 'पाशा, पाशा' चिल्लाती हुई दौड़ रही थी।

पाशा उसके साथ ही था। सभा में अंतिम वक्ता की नकल करके वह श्रीमती तिमिरजिना को हँसाने की चेष्टा कर रहा था। फिर अचानक फ़ौज के आते ही पता नहीं कहाँ गायब हो गया? घुड़सवार फौजियों के एक चाबुक की मार तिमिरजिना पर भी पड़ी थी। यद्यपि मोटे कोट के कारण उसे चोट नहीं लगी फिर भी वह क्षुब्ध भाव से घुड़सवारों को मुक्का दिखाती हुई कह रही थी, 'इन नालायकों की निर्लज्जता तो देखो, मुझ जैसी बुढ़िया को मारने में वे अपनी बहादुरी समझते हैं, छिः।' पाशा सड़क की दूसरी ओर मिल गया। वह कुंजड़े की दूकान के पास के पत्थरवाले मकान की ड्योढ़ी पर खड़ा था जहाँ कि घुड़सवारों ने भीड़ को खदेड़ दिया था। भीड़ के भय से प्रसन्न होते हुए वह घुड़सवार अनेक तरह के प्रदर्शन कर रहा था, जिस तरह कि सर्कस में किये जाते हैं। कभी वह घोड़ा पीछे लाता फिर आगे बढ़ा लाता। अचानक उसने अपने साथियों को वापस लौटते हुए देखा। उसने घोड़ा मोड़ा और अपनी कतार में आकर शामिल हो गया। भीड़ तितर-बितर हो गई थी। भय के मारे पाशा कुछ बोल नहीं पा रहा था। श्रीमती तीमिरजिना को देखते ही वह दौड़ कर उसके पास पहुँच गया।

श्रीमती तिमिरजिना रास्ते भर बड़बड़ाती रहीं। नीच, नालायक, हत्यारे! जार ने आज़ादी दे दी, लोग ख़ुश थे और इन राक्षसों को यह

ख़ुशी बर्दास्त नहीं हो रही थी। ये लोग तो बस यही चाहते हैं कि सब कुछ तोड़-फोड़ दिया जाय। नष्ट कर दिया जाय।

घुड़सवारों से ही नहीं, वह सारे संसार के प्रति जल उठी थी—यहाँ तक कि अपने पुत्र से भी। गुस्से के कारण उसे लग रहा था ये सारी मुसीबतें उसके लड़के कुपरिंका द्वारा ही पैदा की गयी हैं। 'वे मंदबुद्धि, आखिर चाहते क्या थे? जब तक वे शैतानी करते रहते हैं वे स्वयं नहीं जानते कि वे क्या हैं, उनकी हस्ती क्या है? बताओ तो पाशा, वह किस तरह चल कर गया था? आह तुम्हारी नकल कितनी सजीव है?'

वह सोच रही थी कि क्या उसकी उम्र किसी घुड़सवार के चाबुक खाने की है? घर पहुँच कर जी भर कर वह अपने लड़के को कोस लेना चाहती थी।

'अच्छा माँ, तुम्हीं बताओ, तुमने क्या सोचा था कि कजाक-सेना अथवा पुलिस का कप्तान मैं हूँ?'

आठ

निकोलाय निकोलायविच ने भागती हुई भीड़ को अपनी खिड़की में से देखा था, वह जानता था कि ये कौन हैं। वह मालूम करना चाहता था कि क्या यूरा भी इस भीड़ में शामिल हुआ है? लेकिन उस भीड़ में उसे कोई अपना परिचित मित्र दिखाई नहीं दिया। फिर भी उसका खयाल था कि उसने डुडरोव को देखा है। उसके पूरे नाम से वह परिचित नहीं है। उसके कंधे पर गोली लगी थी और अब निकाल दी गयी थी। फिर वह ऐसी जगह आकर खड़ा हो गया था जहाँ उसका कोई काम नहीं था।

निकोलाय निकोलायविच हाल ही में पीटर्सबर्ग से लौटा था। मास्को में उसके पास कोई फ्लेट नहीं था और वह होटल में ठहरना नहीं चाहता था। लिहाजा इस समय वह अपने दूर के रिश्तेदार स्वेन्तिस्काय के साथ रहता था। उसे नाटक-गृह के कोने का एक कमरा मिल गया था। स्वेन्तिस्काय के कोई सन्तान नहीं थी। यह मकान डाल्गोरुकी से किराये पर लिया हुआ था। दो मंजिला यह मकान उसके माता-पिता ने राजकुमार डाल्गोरुकी

से किराये पर लिया था। यह काफी बड़ा था। दरअसल यह अनेक विभिन्न प्रकार के गन्दे मकानों के समूह का एक हिस्सा था। डाल्गोरुकी की सम्पत्ति के अन्तर्गत तीन आंगन और एक बगीचा था। त्रिकोणाकार जमीन संकीर्ण उद्यानपथों से आबद्ध थी। चार खिड़कियों के बावजूद भी उसका अध्ययन-कक्ष अन्धकारमय था। किताबें, कागज, बिछौने और चित्रों से भरे हुए इस कमरे में एक बालकनी भी थी, जो घर में एक अर्द्धवृत्त का आकार धारण कर लेती थी। शीत-ऋतु के कारण बालकनी के कांच के दरवाजे बन्द कर दिये गये थे। दरवाजे और खिड़कियों के सामने उद्यानपथ काफी दूर तक फैला हुआ था, जहाँ से बर्फ़ीले रास्ते और बेढंगे मकान स्पष्ट दिखाई देते थे।

तुषार से बोझिल वृक्षों की टहनियों की पीली छाया धुएँदार रेखाओं की तरह अपना बोझ अध्ययन कक्ष के फ़र्श पर डाल रही थी! निकोलाय निकोलायविच खिड़की से कहीं दूर चुपचाप देख रहे थे। पीटर्सबर्ग में बितायी गयी अंतिम शरद्-ऋतु की याद उन्हें ताजा हो आई। गापोन, गोर्की और स्त्रियों के विश्वविद्यालय के कोर्स की बात याद आई। कई आधुनिक फैशनेबुल लेखकों से भी मुलाकात हुई थी। वे चाहते थे इस पागलखाने से भागकर किसी शांत स्थान पर चले जायं जहाँ एकाग्र चित्त से अपनी पुस्तक लिख सकें। लेकिन कोई लाभ नहीं। प्रत्येक दिन लेक्चर होता; कभी स्त्रियों के लिए उच्च प्रशिक्षण विषय पर, कभी धार्मिक दर्शन पर, कभी रेडक्रास पर और कभी हड़ताल पर! उन्हें एकान्त में एक क्षण भी मुयस्सर नहीं था। एक मुसीबत से निकलकर एक तरह से दूसरी मुसीबत में पड़ गये थे। उनका जी चाहता था कि वे स्विट्जरलैण्ड चले जायं। जहाँ झीलों की शांति हो; पर्वतों और आसमान के बीच मुक्त वायु चंचल रूप से थिरक रही हो। वे खिड़की से हट गये। उनका इरादा हुआ कि बाहर जाकर किसी से मिल आयें अथवा यों ही थोड़ा टहल आयें। फिर उन्हें याद आया कि टाल्सटायन व्यावोलोचनोव किसी काम से उनसे मिलने आनेवाला है। वह कमरे में ही चहलकदमी करते रहे। उन्हें अपने भांजे का खयाल आया।

वोल्गा से पीटर्सबर्ग जाते समय उन्होंने यूरा को मास्को में अपने परिचित रिश्तेदार ग्रोमेकोज परिवार में छोड़ दिया था। इस परिवार का वातावरण यूरा के लिए बहुत अनुकूल था। तोन्या उसी की अवस्था की थी और मिशा भी उसका साथी था। निकोलाय निकोलायविच ने सोचा, इन तीनों की मण्डली हँसी मजाक में मस्त रहती होगी। वे 'मिनिंग आफ लव' और 'क्रूजर सोनाटा' के गीत गाया करते और पवित्रता का उपदेश दिया करते। वास्तव में तरुणों में पवित्रता का उन्माद होना ही चाहिए मगर उनमें यह कुछ अति-मात्रा में था। मात्रा का ज्ञान तो वे बिलकुल ही खो बैठे थे। उनमें कितना बचपन और कितनी चंचलता है। सेक्स को वे अश्लीलता मान कर घृणा किया करते थे। उसे गंदा घोषित करते समय वे झेंपते और लाज के मारे पीले पड़ जाते। सारे शारीरिक कार्य-कलाप में अश्लीलता आरोपित की जा सकती है, फिर यह प्रवृत्ति, कामोद्दीपक लेख तथा वेश्यावृत्ति तो अश्लील थी ही। यदि मैं मास्को में होता—निकोलाय ने सोचा—मैं उन्हें इस सीमा तक नहीं जाने देता। लज्जा आवश्यक है, मगर एक सीमा तक। आह, निल फियोकित्सोविच आ गया है। नवागन्तुक मेहमान के आ जाने से उसके चिन्तन में बाधा पड़ गयी।

नौ

घुटने से नीचे तक झुका हुआ पतलून, चौड़ी चमड़े की पेटी, मुड़े हुए जूते पहने एक मोटा-सा आदमी अन्दर चला आया। सूरत-शक्ल से वह काफी दयालु व्यक्ति मालूम देता था। वह काफी लम्बा था। नाक पर टिकी हुई उसकी काली डोरी से बंधी हुई ऐनक मानो क्रोध से कांप रही थी। हॉल में आते वक्त उसने अपना कोट खोल दिया था। मगर गुलबन्द वह खोल नहीं पाया। हाथ में फैल्ट हेट पकड़े इन सबके बोझ और परेशानी के मारे वह औपचारिक रूप से हालचाल भी नहीं पूछ सका। 'उम-म्-म्'—वह लाचारी के साथ कमरे में चारों ओर देखने लगा और धीरे-धीरे आगे बढ़ा। जब निकोलाय निकोलायविच ने कहा कि वह

अपना सारा सामान कहीं भी रख सकता है तो वह कुछ आश्वस्त-सा हुआ और उसकी वाक्-शक्ति लौट आई। यह व्यक्ति टालस्टाय का परम-भक्त था। परन्तु अपने गुरु के विचार उसमें बुझ कर शांत हो गये थे। राजनीतिक कैदियों की सहायतार्थ व्याख्यान देने की प्रार्थना के साथ वह यहाँ आया था। वह सभा जिस स्कूल में होने वाली थी उसका नाम बताने पर निकोलाय निकोलायविच ने कहा—मैं उस स्कूल में व्याख्यान दे चुका हूँ।

—राजनीतिक कैदियों के सहायतार्थ?

—हाँ।

—कोई बात नहीं। फिर एक बार तुम्हें व्याख्यान देना ही पड़ेगा। निकोलाय एक क्षण के लिए रुका और फिर रजामन्द हो गया। आगन्तुक व्यक्ति का काम हो गया था। निकोलाय ने उसे व्यर्थ बिठाये नहीं रखा। वह तुरन्त जाने को तैयार था, मगर सोच यह रहा था कि विदा के समय कोई अति-स्वाभाविक और मीठी बात कही जानी चाहिए। चूँकि मतलब की बात इतने सीधे रूप से हो गयी थी कि सारा वार्तालाप विकृत-सा हो गया था।

—तो आजकल तुम नीचे गिरते जा रहे हो। रहस्यवाद की ओर जा रहे हो।

—क्या मतलब?

—यह सब व्यर्थ है, समझे? तुम्हें अपनी ग्रामीण समिति की याद है?

—याद है। भूला नहीं हूँ। हम दोनों ने साथ ही प्रचार कार्य किया था।

—और हमने स्कूल के लिए झगड़े का शानदार काम भी किया था। अध्यापकों के कालेज के लिए भी हमने काफी सिर-दर्द मोल लिया था। याद है?

—याद है। उस लड़ाई का अपना महत्त्व था।

—और फिर तुमने जन-स्वास्थ्य के लिए भी तो काम किया है?

—हाँ, कुछ अर्से तक।

—हुम्। वे सब अक्लमंदी की बातें! 'लेट्स वी लाइक द सन्'—चाहने दो हमें सूर्यनारायण! देवी-देवता! इन सब पर अब तो विश्वास ही नहीं होता। हो सकता, तो अच्छा होता। तुम जैसा बुद्धिमान और हास्य-व्यंग्य से ओतप्रोत मस्त स्वभाव का, दुनिया की जानकारीवाला व्यक्ति...अच्छा आओ। तुम्हारी पवित्रात्मा में व्यर्थ की धींगामस्ती तो नहीं कर रहा हूँ न?

—सिर्फ़ बात के लिए बात करने से क्या लाभ? आखिर हम किस विषय पर विवाद कर रहे हैं? आपको तो मेरे विचार मालूम हैं नहीं?

—रूस को स्कूल और अस्पतालों की जरूरत ज्यादा है बनिस्बत देवी-देवताओं के।

—किसी को इस बात से एतराज नहीं हो सकता।

—किसान फटेहाल हैं। वे भूखों मर रहे हैं।

सो वार्तालाप अस्त-व्यस्त रूप से फिर चल पड़ा। इसकी व्यर्थता जानते हुए निकोलाय ने समझाने की चेष्टा की कि वह प्रतीकवादी विचारधारा के लेखकों की ओर किस प्रकार आकर्षित हुआ। फिर टालस्टाय के सिद्धान्तों की बात करते हुए उसने कहा—एक सीमा तक मैं तुमसे सहमत हूँ। लेकिन टालस्टाय यह जो कहते हैं कि मनुष्य जितना अधिक सौन्दर्य-भक्त होगा, उतना ही वह अच्छाई से दूर हट जायेगा।

—और आपका खयाल है कि यह दूसरी ही बात है—संसार की सुरक्षा सौन्दर्य के हाथों ही सम्भव है, यही न? डोस्टोवेस्की, रोजानोव और रहस्यात्मक नाटक आदि जाने क्या-क्या?

—ठहरो, मैं बताता हूँ कि मैं क्या सोचता हूँ। मनुष्य में जो पशुवृत्ति सोई हुई है वह क्या धमकाने से पकड़ में आ सकती है?—धमकी चाहे जिस किस्म की हो—चाहे जेल की हो अथवा मृत्यु के बाद नर्क-दंड की। मतलब यह कि सर्कस के शेर को चाबुक के जोर से पालतू बनानेवाला ही मानवता का प्रतीक माना जायेगा; न कि आत्मत्यागी

उपदेशक। देखो यह सिर्फ़ एक ही पहलू है। धमकी के मुग्दर के कारण मनुष्य ने पशुता पर विजय नहीं पाई है। बल्कि विजय उसे मिली है अपने आन्तरिक संगीत द्वारा। नग्न सत्य की न रोकी जा सकनेवाली शक्ति द्वारा, इसके प्रत्यक्ष उदाहरणों के चमत्कार के आकर्षण द्वारा। यह हमेशा माना जाता रहा है कि मसीह-वाणी के धर्मादेश में नैतिक शिक्षा तथा ईश्वरीय आज्ञा ही है। लेकिन मेरे लिए जो बात सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है, वह यह तथ्य है कि क्राइस्ट दृष्टान्त-कथाओं की वाणी में बोलता है जो कि जीवन से ओतप्रोत हैं। वह प्रतिदिन के व्यावहारिक यथार्थ में से सत्य को समझाता रहा है। नश्वरता की शाश्वतता के साथ समन्वय की धारणा ही इस विचारधारा की पृष्ठभूमि है। सारा जीवन ही प्रतीकात्मक है क्योंकि इसमें प्रत्येक वस्तु का एक अर्थ है।

—मैं तुम्हारी बातों में से एक शब्द भी नहीं समझा। इस विषय पर आप एक पुस्तक क्यों नहीं लिख डालते?

अन्त में वह व्यक्ति चला गया। निकोलाय दुखित-से हो उठे। उन्हें अपने आप पर झुंझलाहट हो रही थी कि उन्होंने अपने निकटतम गम्भीर विचारों को इस मूर्ख के मत्थे मढ़ने की चेष्टा क्यों की? जिस पर कि किसी भी प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ सकता!

व्याबोलीचनोव को भूल कर उनके गुस्से ने अपनी राह बदल दी। ऐसा उनके साथ अक्सर हुआ करता है। वे अपनी झुंझलाहट के लिए दूसरा कारण ढूंढ़ निकालते। वे डायरी नहीं रखते थे फिर भी साल में एकाध बार किसी एक मोटी पुस्तक में, खास रूप से प्रभावित करने वाली बातों को लिख लिया करते। वही पुस्तक निकाल कर उन्होंने बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा—'स्किलसिंगर ने आज का सारा दिन बर्बाद कर दिया। सुबह आई थी। रात्रि के भोजन के समय तक बैठी रही। फालतू की बकवास से उसने मुझे उकता दिया। प्रतीकवादी 'क' की कविता के रूप में नाटक की किताब, ग्रन्थकार 'ब' की विश्व के सिद्धान्त की एकता, ग्रहों की उग्रता, पदार्थों की विभिन्न ध्वनि, आदि जाने किस-किस किस्म की बकवास!'

यह सब इतना नीरस क्यों है, इतना असह्य और कृत्रिम क्यों है? सबसे बड़ी चीज़ है ममता, और इसमें किसी को वास्तविक दिलचस्पी है नहीं। आधुनिक मनुष्य को इसकी जरूरत ही नहीं। जब वे ब्रह्माण्ड के रहस्यों से चिढ़ जाते हैं तो फिर भौतिक पदार्थों की ओर ही तो मुखातिब होंगे! कालगणना का ढांचा भ्रम मात्र है भी नहीं, विज्ञान द्वारा स्पष्ट किये गये धरती और वायु के तत्त्व ही हमें विस्मय में डाल देते हैं। बात दरअसल यह है, कि यह सब मूल तत्त्व से अलग है। और यही आज की कला की प्रेरक शक्ति है।

जीते हुए लोगों और उधार मांगे हुए देवताओं की सबसे अधिक भीड़ पहले पहल रोम में थी। पृथिवी और स्वर्ग के बीच दो पहियों का धरातल तैयार किया गया था। एक ओर थे ग़ुलाम और दूसरी ओर थे देवताओं के दल तथा अन्य लोग। और थे भारी मांसल चमड़े में धंसी हुई आँखों वाले पाशविकतापूर्ण बादशाह। विद्वान ग़ुलामों के माँस से अनपढ़ बादशाहों की आंतड़ियाँ मोटी हो गयी थीं। आदमियों की संख्या उस समय इतनी ज्यादा थी जितनी फिर कभी नहीं हुई। दुष्टता और आकण्ठ विलासिता का मार्ग उस समय सबसे अधिक विस्तृत था।

और फिर इस रसहीन स्वर्णिम एवं संगमरमर के पहाड़ को हटा कर सर्वप्रकाशमय मानवता का लक्ष्य लिये 'उसका' उद्भव हुआ। उसके बाद न देवी-देवता रहे न लोग। रह गया था सिर्फ़ मनुष्य—मनुष्य जो बढ़ई है, मनुष्य जो किसान है, मनुष्य जो भेड़ें चराता है, अहंकार रहित मनुष्य—मनुष्य जो लोरियों में गाया जाता है—मनुष्य जिसकी तस्वीरें संसार की चित्रकला प्रदर्शनियों में शोभा पाती हैं!

दस

पेट्रोका मास्को में अनुपयुक्त स्थान पर अवस्थित था। मानो पीटर्सबर्ग का कोई कोना हो। सड़क के दोनों ओर, मिलते-जुलते से मकान, पुस्तक भण्डार, पुस्तकालय, अच्छे तम्बाकू के विक्रेता, सुन्दर जलपानगृह; ये सब एक-बारगी बड़ा प्रभाव डालते। दो बड़े गोल तुषारयुक्त लैम्पों से

अर्द्ध-चन्द्राकार रूप में सामने के दरवाजे सुसज्जित थे। यहाँ रहने वाले लोग सुदृढ़, स्वाभिमानी अच्छे पेशे के उचित वेतनभोगी थे। विक्टर इपोलिटोविच कोमारोवस्की ने यहीं पर अपना तीन मंजिल वाला मकान किराये पर उठा रखा था। मकान की देखभाल करने वाली महिला ऐसी थी जैसी कि साधारणतया न देखी जाती है न सुनी जाती है। इम्मा इर्नेस्टोवना इस मुस्तेदी के साथ अपने काम की ओर दौड़ती, मानो वह उस हर बात से परिचित है जो मालिक के जीवन में किसी तरह का व्यवधान डाल सकती हो। बदले में वह भी उसके प्रति शौर्यपूर्ण नम्रता से एक भद्र पुरुष की तरह पेश आता। किसी भी स्त्री अथवा पुरुष की वह अगवानी नहीं करती थी। क्योंकि उसका खयाल था कि उसके अतीतकालीन कौमार्यपूर्ण पवित्रता से किसी की तुलना की ही नहीं जा सकती। सारे फ्लेट में एक क्षण के लिए निःस्तब्धता छा गयी। पर्दे गिरा दिये गये। किसी आपरेशन-हॉल की तरह कहीं जरा-सी गर्द भी नहीं थी। विक्टर इपोलिटोविच रविवार की सुबह में अक्सर अपने बुलडाग के साथ पेट्रोव्का के कुचनेत्स्काय मोस्ट की ओर घूमने जाया करता था। आखिर एक चौराहे पर उनकी मुलाकात अभिनेता और जुआरी कान्स्टेटाइन इलारियोनोविच सतानिदि से हो जाया करती। वे साथ ही टहलते रहते, किस्से कहानियाँ कहते, फब्तियाँ कसते, आलोचना करते। उनकी बातें संक्षिप्त और महत्त्वहीन होती थीं। संसार की प्रत्येक वस्तु के प्रति उनकी अंतहीन शिकायतें थीं। बेहद गुस्सा था। इस घृणा के मारे उनकी आवाज भर्राने लगती। सड़क के आरपार उनकी गहरी निर्लज्जताभरी आवाज फैल जाती और फिर अपने ही कंपन में समाप्त हो जाती।

ग्यारह

बेमौसम का मौसम था।

नाली के पाइप और दीवार के साज़ पर पानी की बूंदों की टप-टप की आवाज़ एक छत से दूसरे छत तक प्रपात का संदेश पहुँचा रही थी। सब कुछ पिघल रहा था।

सारे दिन व्याकुल भाव से घूमते रहने के बाद जब लारा घर पहुँची तो उसे होश आया कि क्या कुछ हो चुका है।

सब सो रहे थे। अचेतनावस्था में वह माँ के शृंगार-टेबल के सामने धप् से बैठ गयी। उसका गुलाबी चेहरा सफेद फक् पड़ गया था। सफेद फीतेवाली फ्राक तथा बुर्का वह सन्ध्या के समय कारखाने से मांग लाई थी मानो वह कोई बड़ी कीमती भड़कीली पोशाक हो। काँच में पड़नेवाले अपने प्रतिबिम्ब के सामने वह बैठी थी। लेकिन उसे दिखाई कुछ भी नहीं दे रहा था। थोड़ी देर बाद उसने अपना मुँह जुड़ी हुई बाँहों पर टेक दिया। यदि माँ यह सब सुन ले तो वह निश्चित रूप से उसे मार डालेगी। उसकी हत्या करने के बाद वह खुद आत्मघात कर लेगी। यह सब हो कैसे गया? यह सम्भव किस तरह हुआ? इस विषय पर उसे पहले सोचना चाहिए था। अब बहुत देर हो चुकी है।

अब वह है एक पतित स्त्री! किसी फ्रांसिसी उपन्यास में से निकली हुई रमणी! यद्यपि कल भी वह स्कूल जायेगी और अपनी सहपाठिनियों के साथ ही बैठेगी लेकिन अपने समीप बैठी निर्दोष कन्याओं की तुलना में वह क्या होगी? हे भगवान, हे प्रभु, यह सब हो कैसे गया?

यदि किसी दिन, बहुत वर्षों के बाद जब भी सम्भव होगा, वह सारी हकीकत ओल्या डेमिनिया को कह देगी। तब वह उसे गले लगा कर फूट-फूट कर रो पड़ेगी।

पिघलता हुआ बर्फ़ बच्चों की तरह हिज्जे दुहरा रहा था। खिड़की के बाहर पानी की बूंदों की आवाज़ उसी तरह आ रही थी। कन्धे सिकोड़े सिर झुका कर लारा रोती रही।

बारह

'भाई इम्मा इर्नेस्टोवा, यह सब बेकार है। अब मैं थक गया हूँ। और तंग आ गया हूँ।' वह बारम्बार ड्रावर खोलता, बन्द करता, सारा सामान इधर-उधर बिखेर देता। वह स्वयं नहीं जानता था कि उसे किस चीज़ की जरूरत है।

दरअसल उसे चाहिए थी लारा। रविवार होने के कारण उससे मिलने की कोई सम्भावना नहीं थी। पिंजड़े में बन्द जानवर की तरह वह कमरे में इधर से उधर चहलकदमी कर रहा था।

उसके लिए लारा आत्मीय आनन्द का विशिष्ट कारण थी। उसके कोमल हाथों ने उसे उदात्त विचारों से चमत्कृत किया था। होटल के कमरे में पड़नेवाली उसकी छाया उसे निर्दोषिता की साक्षात् रूपरेखा दिखाई दे रही थी। जिस तरह लिनिन के कपड़े पर कसीदे की नक्काशी जड़ी हुई हो उसी तरह उसकी छाती पर बास्केट कसकर पसरी हुई थी। कोलतार की सड़क पर घोड़े की टापों की आवाज आ रही थी और खिड़की पर उसकी अंगुलियों की धीमी आवाज। अपनी आँखें बन्द करके उसने अपने आप से कहा : लारा! उसे लगा मानो लारा का सिर उसकी बांहों पर पड़ा है। जैसे वह सो गयी हो, और उसे यह मालूम नहीं हो सका हो कि कोई उसकी ओर घंटों अनिमिलित नेत्रों से, घण्टों जागता रह कर, देख रहा है। उसके बाल छितरा गये हैं। लारा की खूबसूरती उसकी आँखों में धुएँ की तरह समाकर उसका दम घोंट रही है।

उस दिन उसका टहलना सफल नहीं रहा। वह इधर-उधर भटकता रहा। थोड़ी देर के लिए रुक कर सोचता रहा सतानिदि की मजाकें तथा अपने परिचितों की निरन्तर प्रवाहमान कलरवपूर्ण चर्चाएँ! 'नहीं, नहीं, इससे अधिक बर्दाश्त किया नहीं जा सकता।' वह उठ कर पीछे की ओर घूमा। उसके साथी कुत्ते ने एक बार असहमति प्रदर्शित की, फिर अपने स्वामी के साथ उदासीन भाव से चल पड़ा।

कोमारोवस्की सोच रहा था—आखिर इन सबका मतलब क्या है? यह उसकी चेतना है या विक्षोभ—अथवा पश्चात्ताप? वह उसके बारे में इतना चिन्तित क्यों है? निश्चित रूप से वह अपने घर में सुरक्षित है। फिर क्यों वह उसे अपने दिमाग से बाहर नहीं निकाल सकता?

घर पर वापस आकर पहला दालान पार करके वह सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। खिड़की के कोने से शाही सजावट का प्रकाश उसके पैरों पर गिर रहा

था। दूसरे चढ़ाव के मध्य में वह रुक गया। उसने सोचा, 'मुझे इस तरह थकान, चिन्ता और क्षोभ की मनस्थिति से बाहर निकल आना चाहिए। मुझे मालूम होना चाहिए कि क्या कुछ घटित होनेवाला है।' इस लड़की का खिलौना बनना उसे शोभा नहीं देता। यह लड़की—उसके मृत मित्र की कन्या—आह, यह प्रेत-बाधा के रूप में परिवर्तित होकर उसके सामने उपस्थित हो गयी है। उसे अपने आपको इस जाल से खींच लेना चाहिए। उसे अपने तथा अपनी आदतों के प्रति सावधान रहना चाहिए। अन्यथा सब कुछ धुएँ की तरह विलीन हो जायेगा।

कोमारोवस्की ने सीढ़ियों के डंडे को इतने जोर से पकड़ रखा था कि उसका हाथ दर्द करने लगा। वह दृढ़ता से घूमा और नीचे चला गया। जमीन पर रंगीन प्रकाश की रेखाएँ गिर रही थीं। उसका कुत्ता उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। लटकते हुए जबड़े से फैन उगलते हुए उसने अपने मालिक की ओर बड़ी शान से देखा। कुत्ते को इस लड़की से विरक्ति थी। वह उसे देख कर भोंक उठता। अपने दांत निकाल कर वह हमला करने की भी चेष्टा करता। उस लड़की के प्रति मन ही मन वह इसलिए ईर्ष्या करने लगा था कि उसे डर था कि उसके स्वामी पर इस लड़की का संक्रामक असर पड़ रहा है।

'तुम्हारे खयाल में अब सब कुछ ठीक हो जायेगा। अच्छी बात है। स्वानिदि, विचित्र कथाएँ, गन्दी हरकतें और यही सब न? अच्छी बात है। फिर इसे ही स्वीकार करो। मगर यह—और यह—यह!

उसने बुलडोग को एक ठोकर लगाई और छड़ी से उसे पीट दिया। जैक रिरियाया, गुर्राया और अपना पिछला हिस्सा हिलाते हुए दरवाजा नोचने लगा मानो वह मालिक से फरियाद करना चाहता हो।

दिन गुज़रते गये।

तेरह

कितना मोहक घेरा है यह!

कोमारोवस्की का लारा के जीवन में यदि बलात् प्रवेश होता तो वह विद्रोह कर सकती थी और उससे सम्बन्ध तोड़ सकती थी। मगर यह सब इतना आसान नहीं था।

दरअसल मन ही मन वह इस बात से खुश थी कि एक सुन्दर व्यक्ति जिस के बाल सफेद होने लगे हैं, जिस की उम्र लगभग उसके पिता के समान है, जिस का हर सभा-संस्था में तालियों द्वारा सम्मान किया जाता है, जिस की चर्चा समाचार-पत्रों में सदा बनी रहती है, वह उसके साथ उसके लिए समय और धन खर्च करता है। उसके लिए इतना व्यग्र है। वह उसे नाच-गाने की महफिलों में, थिएटरों में साथ ले जाया करता। वह उसे 'देवी' कहता है। आखिर वह स्कूली लड़की ही तो थी। गाड़ी चलानेवाले के ठीक पीछे, गाड़ी के पिछले हिस्से में, अथवा 'आपेरा' की बोक्स में, लोगों की नजरों के ठीक सामने कोमारोवस्की का पागलपन भरा शारीरिक प्रेम उसे दुस्साहस की चुनौती से आनन्दित कर दिया करता।

बचपन भरी साहसप्रिय यह मनोवृत्ति अल्पजीवी थी। स्वयं के प्रति कलहपूर्ण टूटी हुई बोझिल आत्मा का भय उसके हृदय में जड़ जमा रहा था। पाठ याद करने की उसकी अथक संघर्षभरी चेष्टाएँ और नींदरहित रातें, आँसू और न खत्म होनेवाला सिरदर्द!

वह दिन भर अलसाई-सी रहती।

चौदह

वह उससे घृणा करती थी। वह उसके जीवन में अभिशाप था। प्रतिदिन वह इन्हीं विचारों में खोई रहती। आह, वह जीवन भर के लिए, उसकी गुलाम क्यों हो गयी? उसकी आवश्यकता के अनुसार अपने आपको समर्पित कर देने के लिए राजी हुई क्यों? आज वह अपने आप से शर्माने लगी है। उस पर उसका क्या अधिकार है? उसकी उम्र! अथवा अपनी माँ का उसके धन पर अवलम्बित होना? क्या दरअसल इसी ने उसे

प्रभावित कर रखा है, अथवा डरा रखा है? नहीं, नहीं। हजार बार नहीं। यह सब बकवास है।

उसका कोमारोवस्की पर अधिकार है, कब्जा है। क्या वह नहीं जानती कि उसे उसकी कितनी जरूरत है! डरने अथवा घबड़ाने की कोई बात नहीं। उसकी चेतना स्पष्ट है। दरअसल डरना तो कोमारोवस्की को चाहिए और शर्मिन्दा भी उसे ही होना चाहिए। उसे ही डर है कि मैं कहीं उसे छोड़ न दूँ! लेकिन ऐसा मैं कभी नहीं कर सकूँगी। अपने आश्रितों और कमजोरों के प्रति उसके छद्म-व्यवहार से वह परिचित नहीं थी।

यही दोनों में अन्तर था; और इसी से सारा जीवन भयग्रस्त हो जाता था। बिजली अथवा तूफान किसी पर इतनी सांघातिक चोट नहीं पहुँचा सकते जितनी कि दोषारोपण की फुसफुसाहट। लारा का सारा जीवन सन्देह और अविश्वास से भर-सा गया था। प्रत्येक सूत्र मकड़ी के जाले की तरह था। छुटकारा पाने की जैसे-जैसे कोशिश की जाय, जाले में अधिकाधिक फँसना पड़ता।

फिर धोखेबाज कमजोर व्यक्तियों द्वारा सुदृढ़ लोगों पर शासन किया ही जाता है।

पन्द्रह

वह तर्क-कुतर्क करती। अपने आपसे पूछती—यदि वह शादी-शुदा होती तो क्या अन्तर होता? लेकिन इस प्रश्न के उत्तर में वह आशारहित व्यथा से भाराक्रान्त सी हो उठती।

वह उसके चरणों के नीचे बैठकर याचना करते समय शर्मिन्दा क्यों नहीं होता? 'यह सब इस तरह से अधिक दिन तक नहीं चल सकता, सोचो, मैंने तुम्हारे साथ क्या कुछ किया है? तुम्हारा सर्वनाश होने वाला है। हमें तुम्हारी माँ से सब कुछ कह देना चाहिए। मैं तुमसे ब्याह कर लूँगा।' वह रोने लगता। इस तरह से जोर देता, मानो वह विरोध और बहस कर रही हो। लारा यह जानती थी कि यह अर्थहीन बकवास है। इसीलिए उसने इस बात की ओर कभी ध्यान नहीं दिया।

और गुप्त रूप से वह उसे ले जाता रहा, उन भयंकर रेस्तरां के एकांत कमरों में, जहाँ से गुजरते वक्त दूसरे ग्राहक आँखें फाड़-फाड़ कर उसकी ओर इस तरह देखते मानो वह नग्न खड़ी हो। कमरे में पहुँचकर वह अपने आपसे पूछती—यदि सचमुच मुझे वह प्यार करता है, तो इस तरह सबके सामने वह मुझे जलील करने की चेष्टा क्यों करता है?

एक बार स्वप्न में उसने देखा कि मानो वह जमीन में गड़ी हुई है। उसका दाहिना भाग और बायां पाँव खुला पड़ा है। उसके दाहिने स्तन के ऊपर जैसे घास का गुच्छा उग आया हो और लोग गा रहे हों—'काली आँखें, धवल-श्वेत स्तन' अथवा 'माशा मत करो नदिया पार।'

सोलह

लारा धार्मिक प्रवृत्ति की नहीं थी।

उसका कर्मकाण्डों पर विश्वास नहीं था। फिर भी जीवन का भार ढोने के लिए कभी-कभी मन के अन्तराल के सुखद संगीत के सत्संग की उसे आवश्यकता पड़ती ही थी जिसका स्वर वह स्वयं संजो नहीं पाती। वह जीवन के प्रति प्रभु का संदेश होता। चर्च जाने पर मानो यह संगीत करुण रूप से रोने लगता।

एक बार दिसम्बर के आरम्भ में लारा ओस्ट्रोवेस्की के एक नाटक की नायिका कोतेरिना की तरह व्याकुलता महसूस कर रही थी, वह भारी हृदय से चर्च में प्रार्थना करने गयी। उसे लगा कि किसी भी क्षण उसके कदमों के नीचे से जमीन फट जायेगी—और वह उसमें समा जायेगी फिर सारी चीज़ों का अंत आ जायेगा।

ओल्या ने कहा—यह रहे प्रोव अफानास्येविच।

—मुझे चुपचाप अकेले रहने दो। क्या कहा, प्रोव?

—हाँ प्रोव अफानास्येविच सोकोलोव। वह जो मंत्र पढ़ रहा है न, वह हमारा चचेरा भाई है। उसे दो बार निकाल दिया गया था। ओह, स्तोत्र पढ़नेवाला यह पंडित। तिमिरजिन का सम्बन्धी? चुप।

सामूहिक प्रार्थना के समय वे अन्दर पहुँच गये। मन्त्र था—मेरी आत्मा, प्रभु के प्रति कृतज्ञता महसूस करे। जो कुछ मुझ में है वह सब मसीह के नाम पर देवार्पित है।

चर्च आधा खाली था। पूजा करने वाले तमाम लोग वेदी के पास खड़े थे। यह एक नया भवन था। चर्च के दरवाजे पर एक पहरेदार खड़ा था। उसका ध्यान प्रार्थना की ओर बिलकुल नहीं था। वह एक बहरे को डांट रहा था। डांटते समय उसकी आवाज फट-सी जाती। पूजा करने वालों को बिना बाधा पहुँचाये मुट्ठी में पैसे रखे लारा आगे बढ़ी। दरवाजे के पास से उसने अपने लिए तथा ओल्या के लिए दो मोमबत्तियाँ खरीदीं; और अपने स्थान पर वापस लौट आई।

प्रोव अफानास्येविच मस्ती में धीरे-धीरे चलते हुए बता रहा था कि बिना उसकी मदद के भी सब लोग मन्त्रों का अर्थ बड़े मजे में समझ सकते हैं और आनन्दपूर्ण स्वर्गीय अवस्था प्राप्त कर सकते हैं।

आशीर्वादों में अन्ततः कोई दम नहीं। प्रभु का आशीर्वाद उन्हें ही प्राप्त है, जो पश्चात्ताप करते हैं। प्रभु के आशीर्वाद प्राप्त हैं उन्हें, जो धार्मिक कार्यों के लिए भूखे-प्यासे रहते हैं।

लारा काँप उठी। वह चुपचाप खड़ी रही। उसे लगा कि यह सब उसी को सुनाने के लिए कहा जा रहा है। 'सुखी हैं पददलित, क्योंकि उनके पास अपने बारे में बहुत कुछ कहने को है, उनके सामने प्रत्येक वस्तु मौजूद है। इसी के बारे में मसीह ने सोचा था।

मसीह की यही धारणा थी।'

सत्तरह

गुइशर परिवार का फ्लेट विद्रोह-क्षेत्र में था। उस मकान से थोड़ी दूर त्वेर-स्ट्रीट में यातायात का मार्ग अवरुद्ध करने के लिए एक बाड़ बनाई जा रही थी। अपने अपने घरों से लोग पानी की बाल्टियाँ लिए इस दीवार को मजबूत बनाने में लगे हुए थे। रेड-क्रास पोस्ट के आसपास

का स्थान विद्रोहियों के एकत्रित होने के स्थान के रूप में काम में लाया जा रहा था। लारा उनमें से दो लड़कों को जानती थी। एक था निकी डुडरोव, उसका स्वभाव लारा के समान ही था। वह स्पष्टवादी, अल्पभाषी और स्वाभिमानी था। अपनी स्कूली-सहेली नाद्या के मित्र के रूप में वह उसे जानती थी। अपने स्वभाव से मिलते-जुलते इस लड़के के प्रति उसकी काफी दिलचस्पी थी।

दूसरा लड़का था पाशा आन्तिपोव। वह तिमिरजिना के पास रहता था और अब पढ़ने के लिए हाई-स्कूल में चला गया था। ओल्या डेमिनियां की दादी वृद्धा तिमिरजिना को वह अच्छी तरह जानती थी। श्रीमती तिमिरजिना के यहाँ जब उसकी पहली मुलाकात पाशा आन्तिपोव से हुई थी तो उस पर पड़ने वाले अपने प्रभाव को देखे बिना वह न रह सकी। वह शिशु की तरह इतना सरल था कि लारा को देखकर उसने अपनी प्रसन्नता छिपाने की कोई कोशिश नहीं की। मानो वह कोई ऐसी सुन्दर दृश्यावली हो, जिसमें बिर्च-वृक्ष, घास, और बादल चित्रित हों; छुट्टियों में जिसे देख कर लड़के बिना इस बात की परवाह किए कि कोई उनकी ओर देख कर हँस तो नहीं रहा है, आह्लादित हो उठते हैं; उसी तरह उसे देख कर वह पुलकित हो उठा था। अचेतनावस्था में वह उस पर अपने प्रभाव का उपयोग अवश्य करती थी, लेकिन वास्तव में अपनी इस शक्ति से वह परिचित नहीं थी। बहुत अरसे के बाद और सम्बन्धों के अगले भाग में, सरल भाव के चरित्र वाले इस लड़के को गम्भीरतापूर्वक ठोक-पीट कर ठीक बनाने लायक वह पा सकी थी। इस समय तक पाशा यही जानता था कि वह सिर से पाँव तक उसके प्यार में डूबा हुआ है। लारा के प्रति जीवन भर निभाने की बात उसने स्वीकार की थी।

दोनों लड़के युद्ध का बहुत ही खतरनाक और परिपक्व खेल खेल रहे थे। इस खास किस्म के खेल में वे लड़ाई का साधारण खतरा तो उठा ही रहे थे, इसके अतिरिक्त देश-निष्कासन अथवा फाँसी पाने का भय भी था। जिस प्रकार वे कनटोपी पहने हुए थे, उसे देखकर यही लगता था कि

अभी तक इन दूध-पीते बच्चों को किसी देखरेख करने वाले व्यक्ति की जरूरत है। लारा भी इसी रूप में उनके बारे में सोचती थी। प्रत्येक वस्तु के प्रति उनकी जो निर्दोष बुद्धि थी, वही विकसित होकर इस समय इस खेल में संलग्न थी। घोड़ों की रूखी आवाज के साथ सन्ध्या काली दिखाई देने लगी थी। सड़क पार के उस मकान में लड़के छिपकर पिस्तोल चला रहे थे। 'लड़के पिस्तोल चला रहे हैं'—लारा ने सोचा, मास्को में गोलियाँ चलाने वाले प्रत्येक लड़के के प्रति वह यही सोच रही थी—'अच्छे भले लड़के।' वे इसीलिए तो अच्छे हैं, कि वे गोलियाँ चला रहे हैं। विद्रोह कर रहे हैं।

अठारह

सुरक्षा के लिए बनाई गई बाड़ को तोप से उड़ा दिये जाने की खबर सुनने पर उन्हें मालूम हो गया कि उनके मकान खतरे में हैं। सुरक्षित परिचित मित्रों के घर जाकर शरण लेने की बात सोची नहीं जा सकती। काफी देर हो चुकी थी। मास्को के किसी दूसरे भाग में जाना अब सम्भव ही नहीं था। सारा जिला घिरा हुआ था। उन्हें अपने नजदीक के पड़ोस में ही आश्रय ढूँढ़ना होगा। आखिर मौटिंग्रो जाने का निश्चय कर लिया गया। बहुत सारे लोग इसी तरह सोच रहे थे। होटल भरी हुई थी। संकटापन्न स्थिति के कारण कपड़े के तम्बुओं में लोगों को ठहराने की व्यवस्था किसी तरह कर ली गयी थी। थोड़ा-सा सामान लेकर लोग चल पड़े ताकि तलाशी लेते समय किसी को किसी प्रकार का संदेह न हो।

सिलाई का कारखाना अपने नियमानुसार आम हड़ताल के बावजूद भी खुला था। एक दिन ठंडी सुस्त दुपहरी में किसी ने आकर घंटी बजाई। आगन्तुक को बहुत कुछ कहना था। बहुत सारी शिकायतें थीं और उसके पास बहस करने लायक भी शायद बहुत कुछ था। मालिक के बदले फेटिसोवा के चले आने का नतीजा यह हुआ कि आग में तेल पड़ गया। थोड़ी देर के बाद सिलाई करने वाली तमाम औरतों को हाल में

बुलाया गया और आगन्तुक से उनका परिचय करा दिया गया। आखिरकार फेटिसोवा के साथ कुछ निश्चय करके, सबके साथ उज्जड़ता से हाथ मिलाकर वह व्यक्ति चला गया।

काम करने वाली औरतें अपनी-अपनी जगह वापस चली गयीं और अपने शॉल तथा सर्दी के फटे कपड़े समेटने लगीं। तेजी से आते हुए मैडम गुइशर ने व्याकुल कंठ से पूछा : क्या हुआ ?

—हम सबको वे लोग बाहर बुला रहे हैं। मैडम हम हड़ताल पर हैं।

मैडम गुइशर रो पड़ीं—लेकिन मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?

—कृपया बुरा मत मानिये मैडम, हमें आपके प्रति कोई शिकायत नहीं है। सारी दुनिया यही कर रही है। सब लोग यही कर रहे हैं। आखिर सबके विरुद्ध तो जाया नहीं जा सकता न ?

वे सब चले गये। ओल्या डेमेनिया और फेटिसोवा ने जाते समय मालकिन को धीरे से बताया कि वे उनके तथा दूकान के भले के लिए ही हड़ताल पर जा रही हैं।

मैडम गुइशर सोच रही थीं—कितनी कृतघ्नता है। इन्हीं लड़कियों पर मैं दया-दुलार करती रही ! ओल्या डेमेनिया तो अभी लड़की ही है, उसे तो माफ भी किया जा सकता है—मगर यह फेटिसोवा, बूढ़ी दुष्ट ! इसकी अक्ल क्यों मारी गयी है ?

लारा ने अपनी माँ को सान्त्वना देने और समझाने के लिहाज से कहा—ये सब आखिर हमारे लिए ही तो अपवाद नहीं बन सकते। आखिर सभी लोग जो कर रहे हैं, वही वे कर रहे हैं। उनमें से किसी के मन में हमारे विरुद्ध द्वेष-भावना नहीं है। यह सब जो कुछ हो रहा है, वह हो रहा है, हमारे भले के लिए। मानवता के कल्याण के लिए। कमजोरों की सुरक्षा के लिए, औरतों और बच्चों के लिए। हाँ सच। सिर मत हिलाओ, माँ। एक दिन तुम ही देखोगी कि इसी के कारण हम सब इससे बेहतर हालत में हैं !

हमेशा की तरह उसकी माँ लारा की बात समझ नहीं सकी। वह सिसकियाँ लेते हुए बोली—जब मैं कोई चीज़ ठीक से सोच नहीं पाती तो तुम अक्ल बघारने चली आती हो; और मुझे हैरान कर देती हो। लोग मेरे साथ इस तरह का भद्दा षड्यन्त्र कर रहे हैं और तुम कह रही हो कि वे मेरी भलाई के लिए ऐसा कर रहे हैं। लारा, मैं पागल हो जाऊँगी।

रोड्या स्कूल गया था और अभी तक लौटा नहीं था। लारा और उसकी माँ चिन्ता में बैठे थे। प्रकाशहीन गलियाँ कमरों की ओर शून्य-दृष्टि से ताक रही थीं और कमरे गलियों की ओर उदासीन भाव से देख रहे थे।

—अन्धकार होने से पहले हमें होटल की ओर चल देना चाहिए। लारा ने माँ से प्रार्थना की—टालमटोल मत करो। 'फिलेट फिलेट'—उन्होंने कुली को पुकारा और फिर उससे कहा—हमें मौटेंग्रो पहुँचा दो।

—अच्छी बात है मैडम!

—सामान ले चलो। जब तक कि हालत सुधर न जाय, इस घर पर निगाह रखना। पिंजरे में बन्द पक्षी को दाने डालने और उसका पानी बदलने की हिदायत भी गुइशर महोदया देना भूली नहीं। उन्होंने मकान की चाबी फियेट को दे दी।

—बहुत अच्छा, मैडम।

—धन्यवाद। भगवान तुम्हारा भला करे। अच्छा। लारा आओ बैठ जायें। फिर चलें।*

जैसे बीमारी के बाद ताजी हवा अपरिचित सी लगती है, उसी तरह बाहर आने पर उन्हें भी महसूस हो रहा था। धीमी प्रतिध्वनि करता हुआ जिस प्रकार चक्रयंत्र पॉलिश किए हुए नटों के साथ घूमता है उसी तरह चारों ओर शोरगुल मचा हुआ था। जब तोपों की सलामी का भयंकर धड़का होता सामने फैली हुई दूरी और अधिक चौड़ी हो जाती!

---

* यात्रा में रवाना होने से पहले सौभाग्य के लिए बैठ जाने का रूसी रिवाज।

फियेट जो कुछ कह रहा था। उसके विरुद्ध लारा और उसकी माँ जोर देकर कह रही थीं कि नहीं, ये गोलियाँ हवा में खाली छोड़ी जा रही हैं।

—बेवकूफी की बातें मत करो फियेट। खाली गोलीबारी के सिवाय और हो ही क्या सकता है? कोई भी तो निशानेबाजी करता हुआ नजर नहीं आता। फिर क्या कोई भूत गोली चला रहा है? निश्चित रूप से ये हवा में चल रही हैं।

एक चौराहे पर उन्हें रोक लिया गया। तलाशी के वक्त सम्बन्धित व्यक्ति ने उनके शरीर के प्रत्येक भाग पर अशिष्टतापूर्वक हाथ फेर दिया।

वे आगे बढ़े। लारा यह सोच कर खुश थी कि जब तक शहर का सम्बन्ध जिले से टूटा हुआ है, कोमारोवस्की की नजर उस पर नहीं पड़ेगी और न वहाँ उसे देख पायेगी। उसकी माँ ने तो ऐसी कठिन परिस्थिति पैदा कर रखी है कि वह चाहते हुए भी कोमारोवस्की के साथ सम्बन्ध तोड़ नहीं सकती। न वह अपनी माँ से यही स्पष्ट रूप से कह सकती है कि माँ उसे यहाँ आने से मना कर दो। इतना-सा कहने का अर्थ था, सारा भेद खुल जाय।

—यदि ऐसा हो भी जाय तो इसमें डरने की क्या बात है? हे प्रभु, कुछ भी हो जाय, कुछ भी हो, मगर यह सारी मानसिक यंत्रणा समाप्त हो जाय।

'हे प्रभु! हे भगवान!' वह हतोत्साहित होकर निढ़ाल होकर अर्द्ध-मूर्छित अवस्था में गिर-सी पड़ती! अभी-अभी उसने कौन सी बात याद की थी? पता नहीं उस चित्र का क्या नाम है, जिसमें एक मोटा सा रोमन आदमी था? यह तस्वीर रेस्तरां के एकान्त कमरों में लटकी हुई थी, जहाँ यह सब आरम्भ हुआ था! 'फूलदान वाली स्त्री' यही उस चित्र का शीर्षक था। यह चित्र सुप्रसिद्ध था। मोटा रोमन फूलदान और स्त्री के बीच खोया बैठा था। जब उसने इस चित्र को देखा, उस समय वह—स्त्री—स्त्री भी नहीं थी। किसी बहुमूल्य कलाकृति में चित्रित स्त्री से

उसका कोई मेल नहीं था। यह सब तो बाद में हुआ! खाने की मेज भव्य रूप से सजाई हुई थी।

जैसे कोई अज्ञात शक्ति उस पर छा गयी हो और वह हवा में उड़ रही हो। —तुम इस तरह कहाँ भाग रही हो? मैं इतनी तेजी से नहीं चल सकती, मैडम गुइशर ने लारा से कहा।

बन्दूक की आवाज सुन कर उसने सोचा—कितना दिव्य-भव्य! आशीर्वाद उन्हें, जो पददलित हैं। आह, आशीर्वचनों को धोखा दिया गया था—जिन पर प्रभु के आशीर्वाद हैं, उन्हें धोखा दिया जा रहा है। प्रभु, गोलियाँ तेजी से चलें। उन्हें बल दो।

उनके और मेरे एक-से विचार हैं।

उन्नीस

सिवित्सेव व्राझेक के किनारे एक गली में ग्रोमेको बन्धुओं का मकान था। एलेक्जेन्डर एलेक्जेन्डरोविच तथा निकोलाय एलेक्जेन्डरोविच ग्रोमेको दोनों रसायन शास्त्र के प्राध्यापक थे। एक थे पेट्रोव एकेडेमी में तथा दूसरे विश्वविद्यालय में। निकोलाय अविवाहित थे। एलेक्जेन्डरोविच की पत्नी अन्ना क्रूजर यूरात्स के समीपस्थ युर्यातिन के एक धनिक लौह-व्यवसायी की कन्या थी।

ग्रोमेको भवन में दो तल्ले थे। ऊपर के भाग में शयन कक्ष, अध्ययन कक्ष, पुस्तकालय और अन्ना की बैठक थी। टोन्या तथा यूरा का कमरा भी ऊपरी हिस्से में ही था। नीचे का भाग स्वागत कक्ष के रूप में काम में लाया जाता था। हरे-भरे पौधों के गमले, मछलीघर तथा बादामी रंग के पर्दों से यह निचला भाग सुसज्जित था।

ग्रोमेको बन्धु संगीत के बड़े प्रेमी थे! स्वभाव से सहानुभूतिशील तथा सुसंस्कृत। अक्सर उनके यहाँ संगीत की सन्ध्या-गोष्ठियाँ हुआ करतीं; वाद्यवृन्द और पियानो का स्वर गूँज उठता।

1906 की जनवरी की सन्ध्या में एक ऐसी ही संगीत-गोष्ठी आयोजित की गयी थी। तानेयेव के एक शिष्य द्वारा वायलन पर सोनाटा प्रस्तुत होने वाला था और तिचिकोवस्की द्वारा पियानो संगीत। सुबह से ही आयोजन की तैयारियाँ हो रही थीं। एक ही स्थान पर पियानो कई बार मधुर संगीत संचारित कर चुका था। माला के बिखरे हुए दानों की तरह संगीत के बुलबुले उठते; रसोईघर में स्वादिष्ट भोजन की तैयारियाँ होतीं।

शूरा स्किलसिंगर अन्ना की घनिष्ठ मित्र थी—पहले-पहल उपद्रव करने के लिए वही आकर उपस्थित हो गयी। वह लम्बे छरहरे बदन की स्त्री थी। नाक-नक्शा सांचे में ढला हुआ-सा। चेहरे पर शाही शान। भूरे रंग का अस्तर-खान का टोप पहनने पर वह काल्पनिक परी-सी दिखाई देती। दुख और चिन्ता में दोनों सहेलियों ने एक दूसरे का भार हल्का करने में हाथ बंटाया था। एक दूसरे को चिढ़ाते-चिढ़ाते बातचीत का रुख तीखा हो जाता, इसके बाद भावावेश का तूफान फूट पड़ता और आँसुओं की झड़ी लग जाती। बस, फिर शांति हो जाती। इस तरह की घटनाएँ उन पर वैसा ही असर डालतीं जिस तरह ब्लडप्रेशर पर उसके उपचार का प्रभाव होता है। शूरा स्किलसिंगर ने अनेक बार शादी की थी। उसे अपने पतियों की सूची भी याद नहीं थी। जैसे ही तलाक दे देती, वह अपने पति को बड़ी आसानी से भूल जाती। परिणामस्वरूप उसमें एकाकी स्त्री की तरह बेचैनी मौजूद रहती। वह ब्रह्मवादी थी एवं रूढिवादी चर्च के रीति-रिवाजों में भी पारंगत। जब वह देश-देशान्तर का भ्रमण कर रही थी तो पादरियों के साथ गीतों के पद गाते समय उनके उत्साह में अभिवृद्धि करने में भी वह पीछे नहीं रहती। वह हमेशा कोई न कोई गीत गाती रहती। यद्यपि उसका स्वर घोड़े की हिनहिनाहट से मिलता-जुलता-सा था। शूरा गणितशास्त्र में गहरी दिलचस्पी रखती थी और उसे भारतीय उपासना-विधि की जानकारी भी थी। मास्को के बहु-विख्यात पंडितों के नाम पते उसे अच्छी तरह से मालूम थे और वह

काफी विस्तृत रूप से उनके आन्तरिक भेद बता सकती थी। इसलिए जीवन के हर महत्त्वपूर्ण अवसर पर, हर संभ्रान्त परिवार में उसे मध्यस्थ के रूप में अथवा आयोजनों के संगठन के लिए सादर बुलाया जाता।

निश्चित समय पर मेहमान आने लगे। बर्फ़ गिरने लगी थी। दरवाजा खोलते ही तेज हवा अन्दर घुस आती। अन्दर आने वाले अतिथि ठंड से बचने के लिए गर्म कपड़ों और साधनों से इस तरह लदे हुए थे, कि किसी गाँव के अच्छे खासे गँवार दिखाई देने में कोई कसर बाकी नहीं रही थी। लेकिन उनके साथ आने वाली स्त्रियों के चेहरे कुहासे से चमक रहे थे। वे शॉल ओढ़े हुए थीं और उनके कोट के बटन खुले थे। सिर पर लगे हुए क्लिप पर बर्फ़ चिपक गयी थी। उनके सुश्रृंगार की अभिव्यक्ति कठिन हो गयी थी और भावाभिव्यक्ति का छल अनावृत्त हो गया था। एक नवागन्तुक के आते ही लोगों में फुसफुसाहट फैल गयी—'सुप्रसिद्ध रूसी संगीतज्ञ कुई का भतीजा!'

बालरूम के खुले दरवाजे के पार सफेद पतझड़ की सड़क की तरह खाने की मेज सजी हुई थी। बोदका की रक्तिम बर्फ़ जमी बोतलों पर प्रकाश अठखेलियाँ कर रहा था। सबकी नजर बरबस उस ओर चली जाती। रुपहले स्टेंड पर नमक आदि रखने की स्फटिक की शीशियाँ सजी हुई थीं। छोटे-छोटे तौलिये पिरामिड के आकार में सजे हुए थे। विविध प्रकार के स्वादिष्ट मांसल पदार्थों की गंध लोगों का ध्यान बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेती। स्वादिष्ट भोजन के आनन्द की क्षुधा में लोग फुरती से आकर क्रमबद्ध रूप में बैठ गये। 'कुई का भतीजा' लोगों में फिर फुसफुसाहट फैली। संगीत आरम्भ हुआ।

डर था कि सोनाटा रूखा-सूखा होगा और उसे सुनने में काफी परिश्रम करना पड़ेगा। लोगों की आशाएँ ग़लत सिद्ध नहीं हुईं। काफी देर तक वह सुदीर्घ सोनाटा चलता ही रहा।

मध्यान्तर में आलोचक केरिमबेकोव और एलेक्जेन्डर ग्रामेको में विवाद छिड़ गया। ग्रोमेको साहब संगीतज्ञ के पक्ष में बोल रहे थे जब कि

आलोचक महोदय उसे नीचा दिखाने में व्यस्त थे। आसपास के लोग इस विवाद से परे सिगरेट पी रहे थे, गप्पें मार रहे थे और कुर्सियाँ खिसका रहे थे। अंत में दूसरा संगीतकार प्रस्तुत हुआ। उसने अपने प्रशंसकों की ओर देखा और हँसते हुए अपना सिर हिलाया; बो-टाई ठीक की और इसके बाद संगीत का उदासीन स्वर लड़खड़ाता हुआ ऊपर उठने लगा।

यूरा, टोन्या और मिशा गोर्डन तीसरी श्रेणी में बैठे थे। दरवाजे के समीप खड़ी नौकरानी युगोरोवना हताशभाव से यूरा और अपने मालिक एलेक्जेन्डरोविच की ओर देख रही थी और चाहती थी कि वे उसका मतलब समझ जायें। वह एलेक्जेन्डरोविच से कुछ आवश्यक बातचीत करना चाहती थी। अपने कंधे हिलाकर एलेक्जेन्डरोविच ने अपनी नौकरानी की ओर इस तरह से देखा, मानो कह रहे हों 'तुम्हें शर्म आनी चाहिए। चुप रहो।' एक दूसरे से दूर बैठे वे काफी देर तक आपस में बहरे गूंगे आदमियों की तरह इशारों में बातचीत करते रहे। एलेक्जेन्डरोविच की पत्नी ने अपने पति की ओर डांटती हुई-क्रोधित निगाहों से देखा। नौकरानी अपने मालिक के मना करने पर भी, और यह जानते हुए भी कि तमाम लोग उनकी ओर देख रहे हैं, वहीं दरवाजे के पास खड़ी उन्हें बुलाती रही।

आखिर एलेक्जेन्डरोविच को उठना ही पड़ा। पंजों के बल चलते हुए, एक तरह से सबसे क्षमा-याचना मांगते हुए धीरे से नौकरानी के पास आ गये। पूछा—कुछ तो शर्म आनी चाहिए युगोरोवना! अभी, ऐसी क्या उतावली थी? क्या बात है?

युगोरोवना ने उनके कान में कुछ कहा। एलेक्जेन्डरोविच की समझ में कुछ भी न आ सका। उन्होंने पूछा—क्या कहा? मौटेंग्रो?

—जी हाँ। होटल।

—सो? क्या बात है?

—उसे लोग बुला रहे हैं। नौकरानी ने संगीतज्ञ की ओर इशारा करते हुए कहा—'उसका कोई रिश्तेदार मरणासन्न हालत में पड़ा है।'

—मर रहा है? मैं सब समझता हूँ, मुझे सब मालूम है। यह नहीं हो सकता। असम्भव युगोरोवना। जब तक यह अंतरा समाप्त न हो जाय मैं जाकर कुछ भी नहीं कह सकता। इसके बाद उन्हें बुला दूँगा।

—एक बेयरे के साथ उसके रिश्तेदार ने उसे बुलाने के लिए टेक्सी भेजी है। आप समझते क्यों नहीं, संभ्रान्त लोगों में से एक स्त्री मरणासन्न संकटकालीन अवस्था में है।

—इसके अलावा कुछ भी नहीं हो सकता। असंभव। जैसे कुछ मिनट उसकी मौत को टाल देंगे!

त्योरियाँ चढ़ाये, नाक मसलते हुए, वे फिर पंजों के बल निःशब्द अपने स्थान पर जाकर बैठ गये।

लोगों की तालियों से भरी प्रशंसा समाप्त होने से पहले, प्रथम भाग की समाप्ति पर एलेक्जेन्डरोविच ने संगीतज्ञ महोदय के पास पहुँच कर उसे सूचित किया कि उसे तुरन्त घर बुलाया गया है। वहाँ उसकी सख्त ज़रूरत है। शायद कोई एक्सीडेंट हो गया हो; मजबूरी है। संगीत स्थगित करना होगा।

उपस्थित लोगों की ओर मुखातिब होकर उन्हें शांत करने के लिए एक हाथ उठाकर इशारा करते हुए उन्होंने निवेदन किया—'भाइयो और बहिनो, मुझे दुख है कि इस ट्रियो में व्यवधान पड़ रहा है। अभी-अभी तिश्केविच महाशय के घर से मुझे एक दुखान्त सूचना मिली है। आपको इन्हें इजाजत देनी होगी। मेरी, और किसी की भी, इच्छा नहीं है कि वे जमी हुई गोष्ठी के बीच में से चले जायें, लेकिन ऐसे नाजुक अवसर पर इन्हें रोका भी नहीं जा सकता। शायद मेरी मदद उनके कुछ काम आ सके, इसलिए मैं उनके साथ ही जा रहा हूँ। यूरा, बेटे ज़रा जाकर साइमन से गाड़ी लाने को कह दो। गाड़ी नीचे तैयार होगी। सज्जनो, मैं अलविदा नहीं कह सकूँगा। मैं आप सबसे रुकने की प्रार्थना करता हूँ। आशा है, मैं वापस जल्दी ही लौट आऊँगा।

उस बर्फ़ भरी रात में लड़कों को आदेश मिला कि वे उनके साथ गाड़ी में चलें।

बीस

यद्यपि दिसम्बर से हालत सुधरने लगी थी और लोगों में साधारण जीवन का प्रवाह वापस एकत्रित होने लगा था, फिर भी बीच-बीच में यहाँ-वहाँ गोली चल जाया करती थी। दिसम्बर में जलने वाली अग्निशिखाओं की तरह साधारण रूप से विद्रोह की लपटें उठती दिखाई देतीं।

लड़कों ने पहले कभी इतनी लम्बी यात्रा इस तरह से नहीं की थी। मौटेंग्रो बहुत दूर नहीं था। स्मोलेन्स्काय बोवलेवार्ड के नीचे, नोविनस्काय के पास और डोवाया गली के आधे रास्ते पर ही यह होटल था। लेकिन जमी हुई बर्फ़ के कारण सब कुछ अस्तव्यस्त हो गया था और रास्ता दो भागों में चिर गया था। चौराहे पर जलाई जाने वाली अग्निशिखाएँ रूक्ष रूप से टेढ़ा-मेढ़ा धुआँ उगल रही थीं। धुंध के मारे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। मानो संसार का सारा भाग लुप्त हो गया हो। सिर्फ़ स्ले गाड़ी तथा लोगों के चलने-फिरने की आवाज से इतना आश्वासन अवश्य मिलता कि वे यात्रा कर रहे हैं—मगर राम जाने किस लोक की।

होटल के प्रवेश द्वार पर एक छोटी-सी स्ले खड़ी थी। घोड़े पर कपड़ा पड़ा हुआ था; उसकी दुम के ऊपर वाले घाव पर पट्टी बंधी हुई थी। पिछली सीट पर गाड़ी चलाने वाला सिमट-सिकुड़ कर अपने आपको गर्म करने की कोशिश में बैठा हुआ था। दास्तानों वाले हाथों में उसका झुका हुआ सिर रखा हुआ था।

होटल के दालान में गर्मी थी। प्रतीक्षा कक्ष में बैठा कुली झपकियाँ ले रहा था। जलते हुए स्टोव की आवाज और हवा आने के लिए छोटी खिड़की के खुलते बन्द होते पलड़ों से निकलनेवाली ध्वनि मानो उसे लोरियाँ दे रही थीं। अपने खुर्राटों से मानो वह बीच-बीच में उठ बैठता।

बायीं ओर के आईने के सामने एक स्त्री खड़ी थी। उसका चेहरा फूली हुई पकोड़ी की तरह मोटा और भद्दा था। उसका हल्का-सा फर कोट इस शीत ऋतु के लिए अपर्याप्त था। वह वहाँ खड़ी किसी का इन्तजार कर रही थी। शायद ऊपर से कोई नीचे आनेवाला था। उसकी पीठ कांच की ओर थी, उसने मुड़ कर आईने में देखकर अपने कंधे हिलाये—वह आश्वस्त होना चाहती थी कि पीछे की ओर से वह ठीक दिखाई दे रही है।

ठंड से काँपता हुआ गाड़ी सहित ड्राइवर अन्दर आ गया। उसका कोट फूला हुआ था और उसके मुँह से भाप निकल रही थी। 'कितनी देर तक तुम खड़ी रहोगी मेमजेल?' उसने आईने के पास खड़ी स्त्री से पूछा। 'मुझे नहीं मालूम कि मैं तुम जैसे लोगों के साथ कैसे घुल-मिल जाता हूँ। मैं यह तो नहीं चाहूँगा कि मेरा घोड़ा सर्दी में मर जाय।'

23 नम्बर के कमरे में होने वाली घटना होटल कर्मचारियों के प्रतिदिन की उतावली भरी व्याकुलता में और अधिक उद्विग्नता पैदा कर रही थी। दीवार पर डिब्बे की लम्बी कांच की चौखट के पीछे धड़ाके शब्द के साथ प्रत्येक मिनट पर अंक दिखाई देते, जिससे मालूम होता कि किस कमरे का कौन सा ग्राहक क्यों व्यग्र हो रहा है।

डाक्टर ने वृद्धा गुइशर को वमनकारक औषधि दी और उसकी अंतड़ियाँ साफ हो गयीं! ग्लाशा ने वहाँ की गंदगी साफ कर दी। सर्विस-रूम में इस समय भी काफी हलचल मची हुई थी। तिरास्का को डाक्टर तथा संगीतज्ञ महोदय को बुलाने के लिए भेजा गया था। कोमारोवस्की के आने से पहले ही 23 नम्बर कमरे के आगे लोगों की भीड़ एकत्रित हो गयी थी। यह सारी बात उस समय शुरू हुई थी जब तीसरे पहर में भण्डारघर से आगे तक जाने वाले संकरे मार्ग से सिशोय नामक नौकर हाथ में ट्रे लिये जा रहा था। इसी समय वहाँ एक व्यक्ति का धक्का उसे लगा और वह अपनी ट्रे पर झुकता हुआ दुहरा हो गया। तश्तरी फ़र्श पर गिर पड़ी। सूप फैल गया। कुछ बर्तन टूट गये।

सिशोय का कहना था कि तश्तरियाँ धोने वाला नौकर ही इसके लिए जिम्मेवार है और उसी से नुकसान वसूल किया जाना चाहिए। इस समय लगभग 11 बज रहे थे। लेकिन लोगों की भीड़ अभी भी वहाँ जमा थी। 'वह हमेशा काँपता रहता है। अपने हाथ-पाँव ठीक से संभाल नहीं पाता। जब भी बोतल लेकर बैठता है, वह सब कुछ भूल जाता है; जैसे वह अपनी प्रेयसी के पास बैठा हो। फिर वह चीखता है कि उसे धक्का किसने दे दिया? और किसने कांच के बर्तन तोड़ डाले? बेशर्म, दुष्ट।

—मेट्रयोना स्टेपानोवना, मैं पहले ही तुम्हें सावधान कर चुका हूँ, कि तुम तमीज से बात करो।

—यह तो कोई बहुत ही असभ्य जंगली औरत है। अपने अभिमान में वह अपने घर की बिल्ली तक को ठीक से नहीं पहिचान सकती। अच्छा ही हुआ कि इसने जहर ले लिया था।

मीशा और यूरा, मैडम गुइशर के कमरे के बाहर के बरामदे में इधर-उधर घूम रहे थे। एलेक्जेण्डर एलेक्जेण्डरोविच का खयाल था कि किसी संगीतज्ञ के जीवन में घटित होने वाली कोई विशुद्ध सम्मानपूर्ण करुण घटना होगी। पर जो कुछ प्रस्तुत था वह तो बड़ा विचित्र-सा था। कम से कम बच्चों के सामने तो यह सब न होता।

लड़के बीच के रास्ते में प्रतीक्षा कर रहे थे। नौकर ने उनके पास आकर कहा—'महाशय, आप अन्दर देवीजी के पास चले जाइये। उनकी तबीयत अब ठीक है। किसी तरह का कोई डर नहीं। आप यहाँ मत खड़े रहिए। आज दोपहर को इसी संकड़े रास्ते पर चीनी के बर्तन टूट जाने की दुर्घटना हो चुकी है। आप तो देख ही रहे हैं, रास्ता छोटा है और सामान लिए नौकरों को इधर-उधर दौड़ना ही पड़ता है।' लड़कों ने नौकर का तात्पर्य समझ लिया। वे वहाँ से हट गये।

कमरे में जलती हुई मोमबत्ती अपने स्थान से हटा कर शयन कक्ष के अन्दर लकड़ी के तख्तों पर रख दी गयी थी। शयन कक्ष से खटमलों की बदबू आ रही थी। शायद उसे छिपाने के लिए ही एक धूल-धूसरित

मैला पर्दा एक ओर लटका हुआ पड़ा था। किसी ने उसे गिराने की ओर ध्यान ही नहीं दिया।

मैडम गुइशर ने संखिया नहीं, आयोडिन पी ली थी। आँसू और पसीने से तर अस्त-व्यस्त वस्त्रों में वह बिस्तर पर लेटी हुई थी। उसके बाल चिपक गए थे! वह रो रही थी। नौकरानी सफाई करने में व्यस्त थी।

दोनों लड़के वहाँ से तुरन्त हट गए। उस दृश्य की ओर देखना उन्हें बहुत ही लज्जाजनक और अशिष्टतापूर्ण लगा। यूरा अच्छी तरह जानता था कि बेढंगी और तनावपूर्ण परिस्थितियों में स्त्री उस रूप में नहीं रह जाती जिसे कि मूर्तियों में अंकित किया जाता है। अन्त में किसी को उन तख्तों के पीछे लटकने वाले पर्दों को खींचने का खयाल आया।

'टिस्केविच महाशय, तुम्हारे हाथ कहाँ हैं? लाओ, मुझे तुम्हारे हाथों में अपने हाथ रखने दो।' मितली और आँसुओं से अवरुद्ध वह कह रही थी— 'ओह, मैं कैसी भयानक स्थिति में थी, महाशय टिस्केविच, मैंने सोचा— अच्छा हुआ कि वह सब गलत सिद्ध हो गया—मेरी अस्त-व्यस्त चिन्ताएँ—आह, बड़ी राहत मिली।—मैं जीवित हूँ—यह रही मैं!'

—मैडम गुइशर अब शान्त हो जाइए। यह सब कितना लज्जाजनक और भद्दा है।

एलेक्जेण्डर एलेक्जेण्डरोविच ने बच्चों की ओर मुखातिब होकर कर्कश स्वर में कहा—'चलो, घर चलें।' दुखद परेशानी की हालत में लड़कों की समझ में नहीं आ रहा था कि वे किस ओर देखें। वे मुख्य कमरे की छायादार गहराई की ओर चुपचाप ताक रहे थे।

दीवाल पर तस्वीरें टंगी हुई थीं। एक ओर किताबों का रैक था। मेज पर कागजों और फैशन-पत्रिकाओं के ढेर पड़े थे। गोल टेबल के उस ओर एक लड़की आरामकुर्सी पर सोई हुई थी। सम्भवत: वह इतनी थक गई थी कि इतने शोरगुल तथा उत्तेजना के बावजूद भी वह नींद रोक न सकी।

एलेक्जेण्डरोविच ने कहा—'अब हम चले।' उन्हें यहाँ आना बेतुका और अधिक देर तक रुके रहना भद्दा लग रहा था। वे टिस्केविच से इजाजत माँगने के लिए उसके बाहर निकल आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। शयन कक्ष से टिस्केविच के बजाय एक और सज्जन निकल आए। उनका शरीर स्थूलकाय था और चेहरा आत्मविश्वास से परिपूर्ण। लैम्प को सिर तक उठा कर वे टेबल के पास गए। और उसे उन्होंने वहाँ रख दिया। उजाले से लड़की की नींद उचट गई। उसने उस व्यक्ति की ओर देखा, और मुस्करा पड़ी। इस व्यक्ति को देख कर मीशा अपनी नजर वहाँ से हटा न सका। यूरा की कमीज का एक हिस्सा खींचते हुए धीरे से वह कुछ कहना चाहता था। यूरा ने उस ओर ध्यान नहीं दिया। बोला—लोगों के सामने फुसफुसाहट मत करो। लोग क्या सोचेंगे?

उधर लड़की और उस व्यक्ति के बीच मूक अभिनय चल रहा था। जबान से बिना एक शब्द निकाले वे आँखों ही आँखों में बातें कर रहे थे। इन गुप्त इशारों में छिपे हुए भयानक अर्थ को दोनों अच्छी तरह से समझते थे। मानो वह व्यक्ति किसी कठपुतली के नाच के दृश्य का स्वामी हो और वह लड़की उसके प्रत्येक इशारे पर नाचने वाली आज्ञाकारिणी कठपुतली। उसके संकुचित होठों की मुस्कान थकान के कारण शिथिल मालूम पड़ती थी। उसकी विनोदपूर्ण दृष्टि के प्रत्युत्तर में कपटपूर्ण दृष्टि का संकेत मिला। दोनों इस बात से संतुष्ट थे कि मामला आसानी से निपट गया। उनका रहस्य गुप्त रहा और मैडम गुइशर की आत्महत्या की चेष्टा विफल हो गयी।

यूरा आँखों ही आँखों से इस दृश्य को चुपचाप पी लेना चाहता था। वह दालान के आधे अंधकारपूर्ण भाग में खड़ा था, जहाँ से उसे कोई देख नहीं पाता। वह अपलक दृष्टि से उनकी रहस्यपूर्ण और लज्जाजनक कार्यवाही का यह अभिनय देखता रहा। विरुद्ध भाव यूरा के मन में एक साथ एकत्रित होने लगे।

यह वही बात थी, जिस पर टोन्या और मिशा ने आपस में अन्तहीन विवाद किया है। आखिर उसे 'अश्लील' घोषित कर दिया गया। यह थी

वही शक्ति, जो उन्हें हमेशा डराती, धमकाती और आकृष्ट करती। उनका खयाल था कि शब्दों द्वारा इन सारी बातों की चर्चा करके वे सुरक्षित अवस्था में हैं! और यही सब फिर यूरा की आँखों के सामने उपस्थित था—साकार, सच्चा। फिर भी स्वप्न की तरह आवरणयुक्त और अस्पष्टतापूर्ण! उसकी बच्चों की सी दार्शनिकता गायब हो गयी! उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे?

—जानते हो, वह कौन है? बाहर आने पर मिशा ने यूरा से पूछा। अपने ही विचारों में डूबे हुए यूरा ने कोई जवाब नहीं दिया। मीशा ने कहा—इसी ने तुम्हारे पिता को शराब के लिए बाध्य किया था और उनकी मृत्यु का कारण भी यही व्यक्ति है। उनके साथ जो वकील था वह यही है! तुम्हें याद है?

यूरा अपने पिता अथवा भूतकाल के बारे में नहीं, उस लड़की के बारे में सोच रहा था।

—सायमन, इस सर्दी में तुम तो जम गये होंगे? एलेक्जेण्डरोविच ने कहा। वे घर की ओर चल पड़े।

3

क्रिसमस महोत्सव

शिशिर काल में एक बार एलेक्जेण्डर एलेक्जेण्डरोविच ने अन्ना को एक पुराने फैशन की आलमारी ला दी। काली लकड़ी की बनी हुई यह आलमारी इतनी बड़ी थी कि घर के किसी दरवाजे से उसे अन्दर लाना मुश्किल था। आखिर उसके अलग-अलग हिस्से किये गये। फिर समस्या यह उपस्थित हुई कि उसे रखा कहाँ जाय? इसके उपयोग को देखते हुए

उसे स्वागत कक्ष में रखा नहीं जा सकता। सोने के कमरे में रखने पर उसका विशाल आकार बाधा डालता। अन्त में सोने के एक कमरे के सामने उसके लिए जगह बनाई गई। आलमारी लाने वाला मार्केल उसे रखवाने में मदद कर रहा था।

कुछ देर तक सारा काम ठीक-ठाक चलता रहा। अन्ना के सामने ही आलमारी जोड़ दी गयी। बस, ऊपरी छत जोड़नी बाकी थी। मार्केल की मदद के लिए अन्ना ने छत के नीचे अपना सिर लगा दिया। वह आलमारी के अन्दरूनी भाग में खड़ी थी। उसका पाँव फिसल गया और वह आलमारी की एक दीवार के सहारे लड़खड़ाती हुई गिर पड़ी। छेद में बिठाई जाने वाली चूल पर ही ये दीवारें आधारित थीं। इनके चारों ओर लपेटी हुई रस्सी किसी काम नहीं आ सकी। धड़धड़ाकर आलमारी के तख्ते अन्ना को कुचलते हुए नीचे गिर पड़े। अन्ना कुचल-सी गयी।

—आह, मालकिन आपने यह क्या कर डाला? कहीं हड्डी पर तो चोट नहीं आई? ज़रा दबा कर देखो तो? छोटी-मोटी खरोंच की तो परवाह करने की कोई ज़रूरत नहीं। वे तो भगवान की दया से अपने आप जल्द ठीक हो जाती हैं। बल्कि इस बहाने से थोड़ा बहुत आराम ही नसीब हो जाता है। चिन्ता की कोई बात नहीं। मैं आपकी मदद के बिना ही इस आलमारी को ठीक से जोड़ देता। सूरत से शायद मैं सामान उठाने-धरने वाला ही दिखाई देता हूँ। मगर वास्तव में आलमारियाँ बनाना मेरा पेशा है। पता नहीं, इन्हीं हाथों से मैंने कितना फर्नीचर तैयार किया है। आप विश्वास ही नहीं करेंगी। महोगनी लकड़ी की कहिये, अखरोट की लकड़ी की कहिये, सभी किस्म की, तरह-तरह की आलमारियों का धंधा मैं करता रहा हूँ। जी हाँ। बात की बात है, पता नहीं कितनी होशियार, युवा और सम्पन्न स्त्रियाँ मेरे सामने से गुजर गयीं। सभी कुछ मेरी नाक के नीचे से गायब हो गया। बात की बात यह है कि इन सबका कारण था मेरा पीना—तेज नशे का अभ्यास!

मार्केल ने अन्ना के लिए एक कुर्सी बिछा दी। उसकी मदद लेकर वे उसमें बैठ गयीं। पीड़ा की चीत्कार के साथ वे अपने खरोंच सहला रही

थीं। मार्केल फिर आलमारी जोड़ने में व्यस्त हो गया। आलमारी की छत ठीक करके उसने कहा—बस, दरवाजे लगाने भर की कसर है, इसके बाद यह देखने लायक बन जायेगी।

दरअसल अन्ना को यह आलमारी पसन्द नहीं आई। किसी बड़ी राजसी समाधि की तरह वह उसे नजर आती थी। बहम और डर के मारे वह व्याकुल हो उठी। मन ही मन उसने उसका नाम 'अस्कोल्ड का मकबरा' रख दिया। उसका मतलब था शाहजादे आलेग के घोड़े से—जिसके कारण उसकी मृत्यु हुई थी। अस्त-व्यस्त शिक्षा-दीक्षा के कारण उसकी विचारधारा भी कुछ विचित्र-सी थी।

इस दुर्घटना के बाद ही वह फेफड़े की बीमारी की शिकार हो गयी।

दो

1911 का पूरा नवम्बर महीना अन्ना ने बिस्तर पर ही बिताया। उसका फेफड़ा सूज गया था। यूरा, मिशा गोर्डन एवं तोन्या आगामी वसन्त ऋतु तक ग्रेजुएट हो जाने वाले थे। यूरा डाक्टरी में, तोन्या कानून में और मिशा दर्शन-शास्त्र में।

यूरा के मस्तिष्क में बहुत सारी बातें मिश्रित होकर खो जाया करतीं। उसके विचार, उसकी आदतें, उसकी प्रवृत्तियों में एक विशेषता थी। उसका व्यक्तित्व असाधारण रूप से प्रभावशाली था। उसमें बहिर्मुखी दृष्टिकोण की ताजगी हमेशा मौजूद रहती। यद्यपि चेष्टा की गयी थी कि कला, साहित्य और इतिहास की ओर उसकी प्रवृत्ति हो; फिर भी अपने डाक्टरी पेशे को स्वीकार करते समय उसे किसी तरह की दुविधा महसूस नहीं हुई। उसका खयाल था कि कला कोई खास महत्त्वपूर्ण काम नहीं है, जब कि सहज स्वाभाविक प्रसन्नता अथवा उदासीनता जीवन का अति महत्त्वपूर्ण व्यापार है। शरीर और प्रकृति शास्त्र में उसकी गहरी दिलचस्पी थी। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में व्यावहारिक रूप से उपयोगी काम करना ही चाहिए—यह उसकी निश्चित धारणा थी। इसीलिए उसने डाक्टरी पढ़ने का फैसला किया था।

चार वर्षों के इस कोर्स के पहले वर्ष का एक सत्र उसने आपरेशन-रूम में बिताया था। विद्यालय के भूगर्भ में यह कमरा काफी गहराई में अवस्थित था। सीढ़ियों से नीचे उतरते ही बिखरे हुए बालों वाले व्यस्त छात्रों की भीड़ वहाँ हमेशा दिखाई देती है। कुछ विद्यार्थी अपने काम में डटे हुए हैं। फटी हुई पुस्तकें और हड्डियाँ आस-पास बिखरी पड़ी हैं। प्रत्येक कोने में कोई न कोई विद्यार्थी चीरफाड़ करने में व्यस्त है। कुछ विद्यार्थी एक दूसरे की मजाक करते हुए, ठिठोली करते हुए भी मिल जायेंगे।

इस मुर्दाघर के अन्धकारमय भाग में मिलेंगे, पानी में डूब कर मरी हुई स्त्रियों के शव एवं बिना शिनाख्त के भरी जवानी में आत्महत्या करने वालों की सुरक्षित रूप से रखी हुई लाशें। मसालों से सुरक्षित रखने के कारण वे सड़ नहीं पाई थीं। स्वयं प्रकाशित फासफोरस की तरह वे चमक रही थीं। इन्जेक्शन लगाकर उन्हें कृत्रिम रूप से सुव्यवस्थित रूप में रखा गया था। शल्यक्रिया से कटे हुए शव खुले रूप में पड़े थे। अंग-प्रत्यंग काट-काट कर अलग कर दिये गये थे; फिर भी मनुष्य के शरीर का सौन्दर्य प्रत्येक भाग में सम्पूर्ण रूप से विद्यमान था। एक टेबल पर किसी मृत लड़की की लाश निर्दयता के साथ बुरी हालत में पड़ी थी। यूरा उसे स्तब्ध-भाव से कुछ देर तक देखता रहा। 'थोड़ी देर बाद इसकी बांह अथवा हाथ काट डाला जायेगा।'

दुर्गन्धनाशक दवा की गन्ध सारे भूगर्भ कक्ष में फैली हुई थी। एक विचित्र रहस्य से सारा कमरा आच्छादित था। इन अपरिचित नग्न मृतकों का रहस्यपूर्ण जीवन—और जीवन मृत्यु का यह अनन्त रहस्य।

मृत्यु यहाँ निकट सम्पर्क की परिचिता है : मानो यही उसका घर अथवा मुख्य अड्डा हो। सब कुछ इस रहस्यपूर्ण आवर्तन में लुप्त हो जाता है—चीरफाड़ करते वक्त यूरा व्याकुल हो उठा। अनेक बातों तथा विचारों ने उसे इसी तरह व्यथित किया है। वह इन सब से अभ्यस्त था। फिर भी इसी कारण से तो किसी काम को छोड़ा नहीं जा सकता। यूरा का चिन्तन सुव्यवस्थित था, इसीलिए लेखन परिपक्व। स्कूली-दिनों से ही

उसका विचार था कि वह गद्य में एक पुस्तक लिखे—जीवन पर अंकित अपने प्रभावों के संकलन की पुस्तक। डायनामाइट में छिपी शक्ति की भांति आज तक घटित प्रत्येक प्रभावशाली घटनाओं, विचारों और दृश्यों तथा प्रतिक्रियाओं के बारे में वह लिखना चाहता था जो उसने देखी और अनुभव की हैं। ऐसी पुस्तक लिखने के लिए अभी तक भी वह परिपक्व नहीं हुआ था। इसलिए वह कविताएँ लिख कर सन्तोष कर लेता; ठीक उस चित्रकार की भांति जो मन के अन्तराल में छिपी हुई किसी गुप्त अमर-कृति के निर्माण के लिए जीवन का काफी हिस्सा व्यतीत कर देता है।

कविता की शक्ति और उसकी मौलिकता के कारण, विचारधाराओं की भ्रांति के पाप की कालिमा के घुमड़ते हुए भावों से उसे कुछ सान्त्वना मिलती। उसका विश्वास था कि मौलिकता की शक्ति ही कला-कर्म को वास्तविकता प्रदान कर सकती है। बिना इसके कला फालतू और अनुपयोगी है! उसके लिए समय नष्ट करना व्यर्थ है।

उसके चरित्र विकास में उसके मामा का गहरा प्रभाव पड़ा था। निकोलाय निकोलायविच लाउसाने में रहते थे, जहाँ से उनकी अनेक पुस्तकें रूसी तथा अन्य भाषाओं में प्रकाशित हुई थीं। उन्होंने संसार के इतिहास को नई दृष्टि से देखा था। उन्होंने मृत्यु की चुनौती के प्रत्युत्तर में काल और स्मृति के आधार पर नई मनुष्य निर्मित सृष्टि की कल्पना की थी। क्रिश्च्यनिटी की नूतन अनुबोधक प्रेरणा के परिणामस्वरूप उन्हें कला के रूप के विचारों के बारे में नवीनता प्राप्त हुई थी।

मीशा गोर्डन इन विचारों से अधिक प्रभावित हुआ था बनिस्बत यूरा के। इसी प्रभाव के कारण उसने दर्शन-शास्त्र का अध्ययन करने का निश्चयँ किया था। वह प्रत्येक धर्म-शास्त्र के व्याख्यानों में हाजिर रहता। बाद में तो एक बार वह धार्मिक कालेज में भर्ती भी हुआ था। मामा की जिन विचारधाराओं के प्रभाव के साथ यूरा बड़ा हुआ और उसकी बुद्धि का विकास हुआ; ठीक उन्हीं विचार-धाराओं ने मीशा को संकुचित कर

दिया। वंशानुगत प्रभाव के अनुसार मीशा के चरम-सीमा पर सोचने के स्वभाव के विरुद्ध यूरा नहीं था; इसलिए वह सावधान रहता कि उसकी विचित्र कल्पनाओं और योजनाओं के बारे में वह मीशा के साथ चर्चा न करे। साथ ही मन ही मन वह चाहता था कि मीशा जीवन के समीप रहे और व्यावहारिक बने।

तीन

नवम्बर के अन्तिम दिनों में एक दिन यूरा शाम को घर देर से पहुँचा। आज उसने दिन भर कुछ भी नहीं खाया था। इस समय वह बुरी तरह थका हुआ था। आते ही उसे मालूम हुआ कि दोपहर के समय अन्ना को कड़ी चोट लगी है। वह दर्द से चीख रही है। बहुत सारे डाक्टर जमा हो गए थे और उन्होंने अन्ना का निरीक्षण-परीक्षण करके एक बार तो एलेक्जेण्डरोविच को यहाँ तक कह दिया था कि अन्तिम कर्मकाण्डों के लिए पादरी को बुला लिया जाय। बाद में उनका यह मन्तव्य बदल गया। लिहाजा पादरी को बुलाना नहीं पड़ा। अब उसकी तबीयत ठीक थी। उसने यूरा को बुलाया था। आते ही वह उसके पास पहुँच गया।

अभी-अभी जो घटना घट चुकी थी, उससे सारा कमरा दुःख से परिपूरित मालूम होता था। पास में पड़ी टेबल पर एक नर्स सामान संजो रही थी। सेक के लिए जो ट्वाल्स और रूमाल काम में लाए गए थे, वे सिकुड़े और भीगे हुए पड़े थे। इलाज के समय काम में लाई गई रुई रक्तिम कफ के कीचड़ में पड़ी थी। अन्ना के होठ सूख गए थे और वह पसीने से लथपथ थी। सुबह से ही उसका चेहरा विवर्ण हो गया था।

यूरा ने सोचा—रोग के लक्षण और उसके निदान में कोई गलती तो नहीं हो गई है? स्थिति नाजुक दिखाई दे रही है। अभिवादन करके वह उसके समीप ही बैठ गया। उसने नर्स को बाहर चले जाने का इशारा किया। ऐसे अवसर पर जिस प्रकार उत्साहजनित बातचीत की जानी चाहिए, करने की चेष्टा करते हुए यूरा ने अन्ना की नब्ज देखी। स्टेथस्कोप ढूँढ़ने

के लिए उसने अपनी जेब टटोली। अन्ना ने सिर हिला कर उसे मना कर दिया। मानो कह रही हो—यह सब व्यर्थ है।

यूरा उसका निषेध समझ गया। सम्भवत: वह कुछ और ही बात कहना चाहती थी। बोलने की अथक चेष्टा करने पर भी उससे बोला नहीं जा रहा था। किसी तरह उसने रुक-रुक कहा—

'सभी कहते हैं कि यह मेरा अन्तिम दिन है—कहते हैं कि मैं मृत्यु से लौट आई हूँ। मृत्युचक्र मेरे सिर पर घूम रहा है। किसी भी क्षण...

'तुम तो ज़रा से दन्त-दर्द को भी नहीं सह सकते, डर जाते हो। मेरी मृत्यु से भी तुम्हें सदमा लगेगा, तुम सह नहीं पाओगे। इसलिए अभी से इसके लिए तैयार हो जाओ। यह सिर्फ़ दन्त-पीड़ा ही नहीं है—यह है तुम्हारा समग्र जीवन। इसे खींच लिया जायेगा। जानते हो इसका मतलब क्या होता है?—मेरा मन बीमार, कमजोर और भयांक्रान्त है।' वह चुप हो गई। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

यूरा कुछ नहीं बोला। एक क्षण रुकने के पश्चात् अन्ना ने फिर कहना शुरू किया—तुम समझदार हो, बुद्धिमान हो—यही तुम्हारी विशेषता है। तुम कुछ बोलो। कुछ कहो। मुझे इससे शान्ति मिलेगी।

—क्या कहूँ? बेचैन-सा यूरा अपनी कुर्सी पर बैठा था। वह उठा। कमरे में चहल-कदमी करता रहा फिर वापस आकर कुर्सी पर बैठ गया। बोला—पहली बात तो यह है कि कल तुम अधिक स्वस्थता महसूस करने लगोगी। मुझे इसके लक्षण दिखाई दे रहे हैं। मैं झूठ नहीं बोलता—और चेतना की उपस्थिति—मृत्यु के मुख से वापस लौट आना—तुम इस बारे में मेरी राय जानना चाहती हो? एक वैज्ञानिक की राय? फिर कभी बताऊँगा? नहीं—अभी ही? अच्छी बात है। जैसी तुम्हारी मर्जी। लेकिन, यह तो तुम जानती ही हो कि सीधे-सादे शब्दों में इसकी मीमांसा नहीं हो सकती।

इसके बाद वह योजनाहीन लम्बा भाषण दे बैठा। अपने इस वक्तव्य पर उसे खुद बड़ा आश्चर्य हो रहा था।

—मौत के बाद—मृत्यु से वापस लौट आना—! कमजोर आदमियों को सान्त्वना देने के लिए आज तक जो कठोर पद्धति अपनाई जाती रही है—मैं उसका क़ायल नहीं। मैंने मसीह के मृत्यु और जीवन सम्बन्धी वक्तव्य को हमेशा भिन्न रूप में समझा है। हजारों सालों से मृत्यु प्राप्त करते आ रहे इन अगणित मनुष्यों के लिए इस धरती के अलावा और जगह मिलेगी कहाँ? ब्रह्माण्ड उसके लिए अपर्याप्त होगा। ईश्वर, अच्छाई की धारणाएँ और उनकी सार्थकता की इतनी भीड़ वहाँ जमा हो जायेगी कि पाशविकता के धक्कममुक्कों में सब कुछ कुचल जायेगा।

सनातन रूप से विद्यमान यह जीवन हमेशा जटिल रूप में अपनी प्रामाणिकता कायम रखे हुए समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। अनेक संयोगों में अनेक आकार-प्रकार में वह प्रत्येक क्षण नूतन रूप धारण करता रहता है। यही तो तुम जानना चाहती हो कि मृत्यु के बाद तुम्हारा उत्थान होगा या नहीं? तुम मृत्यु से तो ऊपर उठ ही चुकी हो। मृत्यु के बाद, इस धरती पर जब तुम पैदा हुई, उस समय ही तुम उस से ऊपर उठ चुकी थी। तुमने कभी इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। तुम्हें दर्द महसूस हो रहा है? नाड़ियों का सम्बन्ध टूटता-सा लग रहा है? दूसरे शब्दों में प्रश्न यह है कि तुम्हारी चेतना का क्या हो रहा है? आखिर यह चेतना है क्या चीज़? पहले इसी पर विचार करें। देखें। नींद लेने के लिए ज्यादा फिक्रमंद होने का मतलब है निद्रा-दोष का रोग। हाज्मे के बारे में ज्यादा जागरूक होने का मतलब है, पेट की बीमारी। यह चेतना अथवा जागरूकता ही दरअसल में जहर है। खासकर तब, जब हम इसका उपयोग अपने लिए करें। रेल्वे-इंजिन के हेड-लैम्प की तरह चेतना का प्रकाश दूसरों के लिए ही उपयोगी है। उसे उलट देने पर दुर्गति के सिवाय और क्या होगा?

सो, तुम्हारी अपनी इस चेतना का क्या होगा? दूसरे की चेतना की बात नहीं कह रहा हूँ, कह रहा हूँ तुम्हारी अपनी चेतना की बात। अच्छा आखिर तुम हो क्या? समस्या का यही तो कठिनतम पहलू है। इसी का

पता पहले लगाना होगा। अपने बारे में निरन्तर जानने की उत्कंठा वाली वस्तु-विशेष है क्या? शरीर के अवयव? गुर्दे, कलेजा, रक्तवाहिनी शिराएँ? नहीं। ये सब बहिर्भाग की चीज़ें हैं। दूसरों के लिए, परिवार के लिए, तुम्हारे जो काम हैं, वे ही तुम्हारे अस्तित्व के क्रियाशील प्रमाण हैं। और देखो, इस तरह दूसरों में तुम्हारे प्राण प्रतिष्ठित हैं। इसी तरह दूसरों में तुम्हारी आत्मा हमेशा मौजूद रहती है। दूसरों में प्रतिष्ठित तुम्हारे ये प्राण ही चिरन्तन हैं। तुम दूसरों में विद्यमान रही हो और रहोगी। कोई हर्ज नहीं, यदि इसे सिर्फ़ तुम्हारी स्मृति मात्र घोषित किया जाय। भविष्य में प्रवेश करने के बावजूद भी यहाँ तुम्हीं रहोगी। फिर यह अंतिम बात—चिन्ता मत करो। मृत्यु कहीं नहीं है। उससे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं। जिस प्रतिभा का तुमने अभी-अभी जिक्र किया था—वह हमारी अपनी चीज़ है। इसके कर्ता-धर्ता हम हैं। ऊँचे स्तर पर, विशाल पैमाने पर जिसे यह प्रतिभा प्राप्त है, उसका अर्थ यही है कि वह जीवन के लिए सार्थक हो। सेन्ट जॉन कहते हैं—यहाँ मृत्यु नहीं है। उनकी दलील कितनी सरल है—चूँकि अतीत गुजर चुका है—इसलिए अब मृत्यु शेष नहीं रही। इसी बात को इस तरह से कहा जा सकता है कि मृत्यु यहाँ है ही नहीं। क्योंकि उसने अपना काम पहले ही समाप्त कर लिया है। यह सब बातें पुरानी हो चुकी हैं, और हम इस से तंग आ गये हैं। अब हमें कुछ नई चीज़ चाहिए, और वह है शाश्वत जीवन। कमरे में बेचैन-सा घूमता यूरा कहता रहा।

—अब सो जाओ। बिस्तर के समीप जाकर अन्ना के ललाट पर हाथ रख कर उसने कहा।

थोड़ी देर के बाद अन्ना को धीरे-धीरे नींद आने लगी।

नर्स को अन्दर भेज कर यूरा सोच रहा था—हे प्रभु, मैं नये किस्म का कौनसा नीम-हकीम बनने जा रहा हूँ? जादू के मंत्र पढ़ कर हाथों पर सरसों जमाने की तरह...!

चार

अन्ना का स्वास्थ्य सुधर रहा था। दिसम्बर के मध्यभाग तक वह उठने-बैठने लगी थी, यद्यपि कमजोरी अभी तक थी। डाक्टरों का कहना था कि उसे अभी कुछ दिनों तक और बिस्तर पर आराम करना चाहिए।

अक्सर यूरा और टोन्या को बुलाकर वह यूराल्स में बिताये बचपन से लेकर अब तक की घटनाओं की चर्चा किया करती। अपने पिता की जागीर वेरीक़िनों में पलकर ही वह बड़ी हुई थी। वेरीकिनो रेउवा नदी के किनारे बसा हुआ था। यूरा अथवा टोन्या वहाँ कभी गये नहीं थे। मगर अन्ना की बातें सुनकर यूरा वहाँ की कल्पना आसानी से कर सकता था। वहाँ बारह हजार एकड़ तक उपजाऊ जमीन फैली हुई थी। अन्धकारपूर्ण रात्रि की तरह काले जंगलों के साथ कूइगर की ओर चट्टानों के बीच से निकलने वाले प्रपात का स्वर उसे करीब से सुनाई दे सकता था।

जीवन में पहली बार, अपने लिए विशेष तौर से बनवाये गये सन्ध्याकालीन कपड़े यूरा और टोन्या ने पहने थे। यूरा की डिनर-जैकेट थी। टोन्या की पोशाक में से सिर्फ़ उसकी गर्दन ही दिखाई दे रही थी। आगामी 22 तारीख को परम्परानुगत रूप से आयोजित क्रिसमस पार्टी में आज वे इस नई पोशाक को पहली बार धारण करने वाले थे। दोनों उसे पहनकर खुश थे और उसे वापस खोलना नहीं चाहते थे। अन्ना ने नौकरानी के जरिये उन दोनों को बुलवाया। कोहनी के बल पर बिस्तर से थोड़ी-सी उठकर, उन दोनों लाड़लों की ओर वह एकटक देखती रही। मन ही मन प्रसन्न होती हुई अन्ना ने उन्हें पीछे की ओर घूम जाने को कहा। बोली—बहुत ही अच्छे लग रहे हो। अच्छा टोन्या बेटा, मुझे एक बार फिर देख लेने दो। मुझे क्या मालूम कि ये कपड़े आज तैयार हो जायेंगे। मैं तो सोचती थी कि टांकों में थोड़ी सिकुड़न रह ही जायेगी। मालूम है, मैंने तुम्हें क्यों बुलाया है? बताती हूँ।

—मैं अन्ना इवानोवना को जानती हूँ। मुझे मालूम है कि तुमने वह पत्र पढ़ा है। मुझे यह भी मालूम है कि तुम निकोलाय निकोलायविच से सहमत हो। तुम दोनों सोच रहे होंगे कि मुझे वसीयत लिखने से इनकार नहीं करना चाहिए। यद्यपि तुम्हें इसमें से अधिकांश बातें मालूम हैं, फिर भी मैं सारी बात खुलासे से समझाती हूँ।

'पहली बात तो यह है कि वकील शत-प्रतिशत रूप से चाहते हैं कि यह सब जरूर हो। क्योंकि उन्हें मालूम है कि ज़िवागो-केस द्वारा तुम्हारे पिता की जायदाद में से उन्हें काफी पैसा मिल जाएगा। सही बात तो यह है कि दरअसल कानूनी वसीयत कोई है ही नहीं। कर्जे और गड़बड़-घुटाले के लिए सिवाय और है ही क्या? यदि वास्तव में पैसा होता तो भला मैं क्यों इस तरह उसे कोर्ट को देने के लिए राजी होती? उसे अपने लिए इस्तेमाल नहीं करती? यही तो बात का मुख्य पहलू है। सारा केस ही भ्रमपूर्ण है। इसलिए अधिक अच्छा तो यह होगा कि जिस मिलकियत का कोई अस्तित्व ही नहीं, उसके तथाकथित अधिकार छोड़ दिये जायें! क्या हर्ज है, यदि यह सब हमारे प्रतिद्वन्द्वियों के पास चला जाय जो वहम के मारे मरे जा रहे हैं और हमारे पीछे पड़े हुए हैं।'

'श्रीमती एलाइश पेरिस में अपने बच्चों के साथ रहती हैं। इस दावेदार को तो शायद तुम भी जानते हो। मैं उससे काफी अर्से से परिचित हूँ—और भी अनेक दावे और दावेदार हैं—पता नहीं, उन सबके बारे में तुम लोग कुछ जानते हो या नहीं—मगर मुझे उसके बारे में कुछ ही दिन पहले बताया गया था। जब माँ जिन्दा थी, तभी पिताजी एक भ्रष्ट राजकुमारी स्टोल-बुनोवाइनरित्सी के साथ बेवकूफी कर बैठे थे। उस महिला के एक दसवर्षीय बालक भी है। राजकुमारी एकान्तवासिनी है। ओमास्क के बाहर उसका मकान है। वह वहीं रहती है और कभी बाहर नहीं जाती। मैंने एक बार उसके मकान का एक फोटोग्राफ देखा था। बहुत ही आलीशान और खूबसूरत मकान है वह। आजकल तो मुझे ऐसा लगता है मानो वह घर अपनी पाँचों खिड़कियों में से, यूराल्स और

मास्को के बीच की हजारों मील की दूरी को भेदकर मेरी ओर उदासीनता से घूर-घूर कर देख रहा है। सम्भवत: आज की उसकी यह मलिन दृष्टि कल क्रुद्ध भी हो उठे। —सो मैं इन सबसे क्या चाहती हूँ? काल्पनिक सम्पत्ति, झूठे दावेदार, ईर्ष्यालु दुश्मनों की भीड़ और कानूनी वकीलों का झुण्ड? फिर भी इन सारी बातों को यों ही नहीं छोड़ा जा सकता।'

अन्ना ने कहा—जानते हो मैंने तुम्हें क्यों बुलाया है?

उसने यह प्रश्न एक बार फिर पूछा। बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये, उसने जहाँ खत्म हुआ था वहाँ से सिलसिला जोड़ने की कोशिश की। —'उसका नाम था—बच्चूस। अजीब नाम है न? सचमुच दलदल में फँसा लेने की कला में निपुण आदमी था वह। भूत की तरह काला। उसकी दाढ़ी भौंहों तक बढ़ी हुई थी और कहने को वह अपने आप को बच्चूस कहा करता था। चेहरे पर एक घाव का निशान था। एक बार वह लड़ा था भालू के साथ, तभी उसे वह चोट आई थी। उसमें सभी कुछ ऐसी विचित्र बातें ही थीं। नाम बड़े और दर्शन छोटे। नाम तो ऐसे, जैसे तुम्हारे दादाजी की दुनाली बन्दूक से छूटने वाली गोली की आवाज़; हम लोग चौंक कर उत्सुकता के मारे नीचे दौड़ आते, वहाँ कोई तो भालू का बच्चा लिए जादूगर खड़ा मिलता अथवा कोई कोयले बेचने वाला, या खनिज पदार्थों का नमूना लिए कोई आदमी। नाम से तो आदमी को जाना नहीं जा सकता। तुम्हारे दादा जी हमेशा उन्हें आफिस के नाम एक चिट दे देते। प्रत्येक को कुछ न कुछ मिल जाता। किसी को पैसे, किसी को धान और किसी को धक्के! खिड़कियों के पास तक जंगल फैला हुआ था। और बर्फ़, बर्फ़—छत से भी ऊँचे तक—!' अन्ना को खांसी आने लगी।

—'अब बस करो अन्ना, अधिक बोलना ठीक नहीं।' यूरा और टोन्या ने प्रार्थना की।

—ऊँह। मैं बिलकुल ठीक हूँ। एक बात याद आ गयी। युगोरोवना कह रही थी कि कल क्रिसमस महोत्सव की पार्टी में जाने के लिए तुम चिन्ता कर रहे हो? मैं ऐसी बातें सुनना पसन्द नहीं करती। तुम्हें शर्म आनी चाहिए। फिर तुम अपने आपको डॉक्टर कहते हो। खैर, तय यह रहा कि तुम लोग कल वहाँ जाओगे—हाँ क्या कह रही थी...? बच्चूस! जब वह जवान था तब लुहारी का काम किया करता था। भालू के साथ हुई एक लड़ाई में उसे सांघातिक चोट लगी थी। उसने अपने पेट के अन्दर के भाग के लिए लोहे का एक सेट बनवा लिया था। इस बात का शाब्दिक अर्थ लेने की बेवकूफी मत करो, यूरा। मेरा यह मतलब नहीं। ऐसा हो भी नहीं सकता। मुझे मालूम है। मेरा मतलब सिर्फ़ इतना ही है कि लोग उसके बारे में इसी तरह की बातें किया करते थे।

खांसी के दूसरे दौरे से उसकी बातचीत में बाधा पड़ी। खांसी बढ़ती ही गई। सांस लेना मुश्किल हो रहा था।

कहते-कहते वह रोने लगी।

पाँच

सन् 1906 की वसंत ऋतु में लारा स्कूल की अन्तिम कक्षाओं में थी। कोमारोवस्की के साथ 6 महीनों के उसके अनैतिक सम्बन्धों ने उसके धीरज का अंत कर दिया था। कोमारोवस्की उसके भोलेपन का नाजायज फायदा उठाने में कभी कसर नहीं रखता। मौका पाते ही वह उसके अशोभनीय कर्मों की याद इस तरह दिलाता, जैसे जो कुछ वह कर रहा है, वह जानबूझ कर नहीं कर रहा हो। उसके इन इशारों ने उसे उस अवस्था में डाल दिया था, जहाँ कोई विलासी एक स्त्री को ओछा बना कर, उसे शक्तिहीन इन्द्रिय-सुख की लालसा के स्वप्नों में खो जाने के मोहक भ्रम में डाल देता है। रात भर किसी अनपेक्षित जादू भरी विरुद्ध आचरण वाले पागलपन के संसार में वह पड़ी रहती। सब कुछ अस्त-व्यस्त और तर्क-विरुद्ध! रजत-घंटियों की रुनझुन की तरह दर्द चीसें

मारता। आत्मा की आवाज़ के विरुद्ध स्वीकार अथवा अस्वीकार करने की चेष्टा का अर्थ होता सन्ताप देने वाले चुम्बनों की बौछार! ऐसा लगता कि मानो यह सब सीमाहीन है। सोचती, आगामी छुट्टियों में जब स्कूल और पढ़ाई नहीं रहेगी तब कोमारोवस्की और उसके बीच कोई बाधा नहीं रहेगी। उस दिन सुबह से ही काफी गर्मी पड़ने लगी थी। क्लासरूम की खिड़कियों में से मधुमक्खियाँ इस तरह चली आती थीं, जैसे यह उनका ही घर हो; और उनके साथ ही बाहर मैदान में खेलने वाले बच्चों का शोर भी अन्दर चला आता। वसुन्धरा की हरित गंध और कोंपलों को देखते-देखते सिर दर्द करने लगता, ठीक उसी तरह, जिस तरह बंहुत अधिक खाना खा लेने पर होता है।

नेपोलियन की इजिप्तियन जय-यात्रा के बारे में इतिहास का पाठ पढ़ाया जा रहा था। अध्यापिका महोदया जब फ्रेजुस की लड़ाई तक पहुँचीं तब तक आकाश काला पड़ गया था, बादलों की गड़गड़ाहट और बिजली की चमक शुरू हो गयी थी। तूफानी बादलों के साथ गर्द भरी बरसात की गंध से सारा क्लासरूम भर-सा गया था। दो लड़के खिड़कियाँ बन्द करवाने चपरासी को बुलाने का गुरुतर कार्यभार करने के लिए भाग गये। ज्योंही उन्होंने दरवाजा खोला, डेस्कों पर रखे हुए ब्लाटिंग पेपर हवा के साथ उंड़ गये।

खिड़कियाँ बन्द कर दी गयीं। मिट्टी से सनी हुई भारी बरसात शहर भर में फैल गई। लारा ने कापी का एक पन्ना फाड़ कर अपने पास बैठी सहपाठिन को लिखा—नाद्या कोलिग्रिवोवा, नाद्या, तुम बहुत से धनवान व्यक्तियों को जानती हो। मुझे मास्टरी की नौकरी दिलाने की व्यवस्था कर दो। जितना पैसा मिल सके, मिले। मैं अपनी माँ से दूर रहना चाहती हूँ।

नाद्या ने वापस जवाब लिखा—मेरे माता-पिता तुम्हें बहुत चाहते हैं। उन्हें लीपा के लिए किसी संरक्षिका की आवश्यकता भी है।

छः

कोलोग्रिवोव के यहाँ लारा ने तीन साल नितान्त सुरक्षित रूप से बिताये। किसी ने उसे किसी प्रकार से दिक नहीं किया। यहाँ तक कि उसकी माँ तथा भाई ने भी किसी तरह की बाधा नहीं डाली जिनके कि प्रति उसकी विरक्ति की सीमा नहीं थी।

कोलोग्रिवोव नये किस्म के कुशल व्यवसायी थे। स्वास्थ्य के बारे में काफी सजग। एक तो इसलिए कि धन की सुरक्षा के लिए यह आवश्यक है, दूसरे निम्नतम श्रेणी से उठ कर उन्होंने असीम ऊँचाई प्राप्त की थी, इसलिए भी। स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाने वाली हर बात के प्रति उन्हें चिढ़ थी। राजनीतिक अपराधियों को उनके यहाँ शरण अवश्य मिलती; और वे उनकी रक्षा के लिए वकीलों की व्यवस्था भी करते।

क्रांति के बारे में वे इतने अधिक उत्साहित थे कि मजाक के बतौर उनके बारे में कहा जाता था कि उन्होंने एक बार अपनी ही फेक्ट्री के मजदूरों की हड़ताल को बढ़ावा दिया था। वे शिकार के शौकीन थे और पक्के निशानेबाज। 1905 में सेरेबरेन्ने के जंगल में विद्रोहियों को बन्दूक चलाना भी वे सिखाया करते।

जिस प्रकार कोलोग्रिवोव का व्यक्तित्व अपनी जगह असाधारण था, उसी तरह उनकी पत्नी सेराफीमा का व्यक्तित्व भी उल्लेखनीय था। इन दोनों के प्रति लारा की असीम श्रद्धा थी। इस परिवार के लोगों ने भी उसे अपना ही एक सदस्य बना लिया था!

चिन्तामुक्ति के इन तीन वर्षों के पश्चात् एक दिन उसका भाई रोड्या उससे मिलने आया। अपने किसी काम के सिलसिले में वह इस ओर से गुजर रहा था। उसने बताया था कि वह यों ही अपनी बहिन को देखने के लिए चला आया है। लम्बी टाँगों पर शानदार कवायद करते हुए, नाक से बोलते हुए उसने लारा को जो कुछ कहा उसका सारांश यह था कि उसके केडिट्स-दल ने अपने अधिकारी को विदा-भेंट देने के लिए कुछ रुपया जमा किया था। उपहार पसन्द करने का गुरु-गंभीर कार्य

उसे ही सौंपा गया था। दो दिन पहले यह पैसा वह जुए में गँवा चुका है। अब हालत खराब है। कहते-कहते वह रोने लगा। उसके गालों पर आँसुओं की धारा बहने लगी।

डर के मारे लारा सफेद-फक् पड़ गयी। रोड्या सिसकते हुए कह रहा था—कल मैं कोमारोवस्की से मिलने गया था। उसने तो बात करने से भी इनकार कर दिया। उसने कहा था कि यदि तुम चाहो तो—उसने कहा है कि तुम्हें हममें से किसी के प्रति ज़रा-सा प्यार भी नहीं है। फिर भी लारा, मैं जानता हूँ कि तुम्हारा उस पर कितना बड़ा अधिकार है। तुम्हारा एक शब्द भी उसके लिए काफी होगा। सोचो, मेरे लिए इसका क्या मतलब होता है? यह कितनी रद्दी बात है? मेरे कैडेट के सम्मान को इसे कितनी चोट पहुँचेगी? उसके पास जाने से तुम्हारा क्या बिगड़ जायगा? क्या तुम यह चाहती हो कि मेरी जिन्दगी इस तरह तबाह हो जाय?

—'तुम्हारी जिन्दगी! तुम्हारे कैडेट होने का सम्मान।' मर्यादाशून्य सी वह बेचैनी के साथ कमरे में चहलकदमी करते हुए चीख रही थी—मैं कैडेट नहीं हूँ। मेरा कोई सम्मान नहीं है? तुम्हें जो करना हो, करो। तुम्हें मालूम है तुम मुझसे क्या करने को कह रहे हो? तुम जानते हो कि वह तुम्हारे जरिये क्या करवाना चाहता है? गुलामी और दीनता के इतने सालों के बाद आज तुम यहाँ इस रूप में आकर हाजिर हो गये हो; जैसे तुम्हें कोई मतलब नहीं यदि मेरी आजादी का यह बना बनाया घरोंदा हवा से छितरा दिया जाय! तुम जहन्नुम में जाओ। गोली खाकर मर जाओ। मुझे तुम्हारी रत्ती भर परवाह नहीं।...कितना धन चाहिए तुम्हें?

—छः सौ से कुछ ज्यादा, यों कहो सात सौ रूबल! कुछ संकोच के साथ हिचकिचाते हुए उसने कहा।

—रोड्या, तुम पागल हो गये हो क्या? तुम जानते हो कि तुम क्या कह रहे हो? जुए में तुमने सात सौ रूबल दांव पर लगा दिये? जानते हो

इतने रूबल कमाने के लिए मुझ जैसी औरत को कितने अरसे तक ईमानदारी से मेहनत करनी होगी?

वह टूट गयी। फिर ठंडे स्वर में बोली, जैसे किसी अपरिचित से कह रही हो—अच्छी बात है। मैं कोशिश करूँगी। कल आना। अपनी पिस्तोल लेते आना। उसे मुझे दे देना। याद रखना कारतूस काफी हों।

कोलोग्रिवोव से उसे रूबल्स मिल गये।

सात

कोलोग्रिवोव के यहाँ काम करते हुए भी लारा ने अपनी पढ़ाई जारी रखी। वह इस समय कालेज में पढ़ रही थी। पढ़ने में होशियार थी, और आशा थी कि 1912 में वह ग्रेजुएट हो जायेगी।

उसकी छात्रा लीपा ने 1911 की वसंत ऋतु में स्कूली पढ़ाई समाप्त कर ली। प्राइसेनडंक नामक एक नवयुवक इंजीनियर के साथ उसकी सगाई हो चुकी थी। वह अच्छे घराने का संभ्रान्त श्रीसम्पन्न युवक था। यद्यपि लीपा के पिता उसके इस चुनाव से सहमत थे, फिर भी उनकी राय नहीं थी कि वह इतनी छोटी उम्र में शादी कर ले। लेकिन लीपा अपने परिवार की बिगड़ी हुई लाड़ली और ज़िद्दी लड़की थी। चीख-चिल्ला कर, ज़िद में जोर-जोर से पाँव पीट कर वह एक भयंकर नाटक उपस्थित कर देती।

इस श्रीसम्पन्न परिवार में लारा को इस घर की एक सदस्या मान लिया गया। किसी ने उसे कर्ज की याद नहीं दिलाई। वास्तव में किसी को याद था भी नहीं। इस धन का उपयोग इतना गुप्त न होता तो सम्भवतः वह यह कर्ज कभी का लौटा चुकी होती। साइबेरिया में अपने पिता के पास वह गुप्त रूप से पैसे भेजती। कलहकारिणी और चिड़चिड़े स्वभाव की माँ की भी मदद करती और कतर-ब्योंत कर पाशा आन्तिपोव के रहने-खाने के खर्च का कुछ भाग उसकी मकान-मालकिन को दे दिया करती। लारा के कारण ही आन्तिपोव को केमरिगर स्ट्रीट में आर्ट थिएटर के

पास जगह मिल गयी थी। पाशा लारा से उम्र में कुछ छोटा था। वह उसे बहुत प्यार करता था। लारा की छोटी-से-छोटी इच्छा पूरी करने में वह हमेशा तत्पर रहता। स्कूल में उसका विषय विज्ञान था। मगर लारा की सलाह थी कि वह ग्रीक और लैटिन विषय ले ले, ताकि उसे आर्ट-डिग्री मिल जाय। लारा की महत्वाकांक्षा थी कि अगले साल दोनों ग्रेजुएट होकर ब्याह कर लेंगे और यूराल्स के किसी मुख्य शहर में अध्यापन का काम करने एक साथ चले जायेंगे।

1911 की ग्रीष्म ऋतु में कोलोग्रिवोव के साथ लारा अंतिम बार डुप्ल्याँका गयी। इस जगह के प्रति उसे बड़ी श्रद्धा थी। इस जगह पर उसे मालिक से भी ज्यादा प्यार था। धूल से भरी हुई तप्त रेलगाड़ी से वे वहाँ पहुँचे। सामान उतार कर गाड़ी में रखवा दिया गया। सारा परिवार अपनी अपनी जगह पर विराजमान हो गया। लाल-सुर्ख कुर्ता और बिना बाँहों का कोट पहने कोचवान ऋतु की तमाम स्थानीय खबरें सुनाने लगा। सीमाहीन शांतिपूर्ण विस्तृत गाँव में चमत्कारपूर्ण सुगन्ध चारों ओर फैली हुई थी। लारा स्तब्ध भाव से यही सब देखती रही। फैले हुए तमाम गाँवों की सुगन्धपूर्ण हवा में लारा ने आँखें बन्द करके दीर्घ श्वास ली। यह उसे बहुत ही अच्छा लगा, किसी रिश्तेदार से अधिक प्रिय, किसी प्रेमी से अधिक निकट, किसी पुस्तक से अधिक बोधपूर्ण। पलक झपकते ही मानो उसे जीवन का नवीन अर्थ मिल गया। इस संसार की भयंकर माया को समझने के लिए ही तो उसका अस्तित्व है कि वह प्रत्येक वस्तु को उसके सही नाम से जान सके। यदि वह यह नहीं कर सकी तो जीवन के प्रति उद्दाम ममता के परिणामस्वरूप वह उन वंशजों की सृष्टि करेगी जो इसका अन्वेषण कर सकेंगे।

वह बहुत थकी हुई थी। उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया था। बड़ी आसानी से उसे आपे से बाहर किया जा सकता था। वैसे वह काफी समझदार थी और उसका स्वभाव उदार था। मिजाज की यह नाजुकता एक तरह से नई चीज़ ही थी। कोलोग्रिवोव दम्पति उसे बहुत चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि वह हमेशा की तरह उनके पास ही रहे। लीपा अब

बड़ी हो गयी थी और वह अपने आप को असाधारण हस्ती समझने लगी थी। कोलोग्रिवोव ने तनख्वाह लेने के लिए लारा पर काफी दबाव डाला लेकिन उसने इनकार कर दिया। उसे पैसों की सख्त जरूरत थी और कमाने का कोई उपाय नहीं था। व्यावहारिक रूप से यह लज्जाजनक और असंभव था कि मेहमान होते हुए वह व्यक्तिगत रूप से कमाने की कोई चेष्टा करे। उसकी निश्चित धारणा थी कि यह स्थिति कृत्रिम और असह्य है। वह कल्पना किया करती कि वह इस परिवार के लिए बोझ है, सिर्फ़ सौजन्यवश वे इस पर पर्दा डाले हुए हैं। कभी-कभी उसकी तीव्र इच्छा होती कि जितनी दूर जा सके वह कोलोग्रिवोव से भाग जाय। साथ ही वह यह भी मानती थी कि जो पैसा उसने लिया है, उसे पहले चुकाया जाना चाहिए। वह जानती थी कि इस घर के लिए वह उपयोगी हो सके, ऐसा कोई उपाय नहीं है। रोड्या की शैतानी भरी बेवकूफी में उसकी निरी चंचलता ने जो कुछ किया वह अच्छा नहीं हुआ। उत्तेजना के मारे वह इसी तरह अपना दिमाग चाटती रहती। उसे लगता कि जैसे उसकी धड़कन क्रमशः मन्द होती जा रही है। यदि कोलोग्रिवोव के मित्र कभी उसकी ओर देख लेते तो वह यही समझती कि लोग उसे पालतू नौकर समझते हैं। यदि कारणवश उसे अकेले रहना होता तो वह यही समझती कि अब उसका उनके लिए कोई महत्त्वपूर्ण अस्तित्व नहीं है। इस प्रकार की उन्मादक अवस्था के बावजूद भी वह प्रत्येक मनोरंजक कार्यक्रम में भाग लेती। सारी ऋतु में पार्टियों की झड़ी लगी रहती। नदी किनारे की सैर, तैरने, नाव की सैर तथा आधीरात तक चलती रहने वाली पिकनिक में वह भाग लेती रहती। नाचती, गाती, हंसी की फुलझड़ियाँ छोड़ती और इसी तरह इन सब में व्यस्त रहती। नाटकीय कार्यक्रम तथा शूटिंग-प्रतिस्पर्द्धा में भाग लेने से भी वह चूकती नहीं। उसका निशाना अच्छा था। निशानेबाजी के अभ्यास के लिए रोड्या द्वारा दी हुई हल्की रिवॉल्वर उसे पसन्द थी। वह हँसते हुए कहा करती—अफसोस यह है कि मैं मर्द नहीं हूँ, अन्यथा द्वन्द्व युद्ध में मैं काफी नाम कमा लेती।

अपना ध्यान बंटाने के लिए वह जितनी ही कोशिश करती, उतना ही उसके लिए यह जानना मुश्किल होता जाता कि आखिर वह चाहती क्या है ? इस प्रश्न के उत्तर में वह अधिक दीनता महसूस करने लगती।

छुट्टियों के बाद लौट कर घर आने पर हालत नाजुक हो उठी थी। अन्य दिक्कतों के अलावा पाशा के साथ झगड़ा भी हो गया। किसी गम्भीर बात को लेकर किसी भी हालत में वह पाशा के साथ झगड़ा करना नहीं चाहती थी। उसके लिए वही तो अंतिम शरण-स्थल था। पाशा में अब कुछ-कुछ आत्मविश्वास का भाव तथा उसकी बातों में उपदेश-तत्व आने लगा था। इससे लारा को खुशी भी होती और वह चिढ़ती-कुढ़ती भी।

लीपा, पाशा, कोलोग्रिवोव, रूबल—इन सबकी चिन्ताओं से उसका दिमाग हमेशा भरा रहता। वह इससे तंग आ गयी थी। उसे लगता था कि वह पागल हो जायेगी। अन्तर्मन से वह चाहती थी कि जो कुछ घटित हो चुका है, उससे वह नाता तोड़ ले। चाहती थी कि वह किसी ऐसे सिरे से, नई प्रकृति से जीवन शुरू करे जहाँ किसी ने प्रयत्न ही न किया हो। इसी मानसिक अवस्था में 1911 के क्रिसमस दिवस पर वह एक निर्णय पर पहुँच गयी। उसने निश्चय किया कि वह कोलोग्रिवोव को छोड़ देगी और अपने पैरों पर खड़ी होने की कोशिश करेगी। इसके लिए यदि पैसों की आवश्यकता पड़ी तो वह कोमारोवस्की से लेगी। उसे विश्वास था कि वर्षों की प्राप्त स्वतन्त्रता के कारण दोनों में जो दूरी आ गयी है उसके बावजूद भी वह उसकी खुले दिल से मदद करेगा। वह उससे किसी तरह का स्पष्टीकरण अथवा शर्त की मांग नहीं करेगा। इसी खयाल से 27 तारीख को वह पेटरोवका स्ट्रीट की ओर चल पड़ी। दस्तानों में रोड्या की रिवॉल्वर छिपी हुई थी। यदि कोमारोवस्की ने इनकार कर दिया अथवा उसे जलील करने की चेष्टा की तो वह उसे गोली मार देगी।

चहल-पहल से भरी हुई गली से वह काफी उत्तेजित अवस्था में गुजर रही थी। उसे किसी बात का भान नहीं था, वह किसी ओर नहीं देख रही थी

उसके हृदयतल में सिर्फ़ एक ही आवाज़ गूँज रही थी...रिवॉल्वर की गोली की आवाज़! उसे ठीक से नहीं मालूम था कि वह किसे निशाना बनाने जा रही है? रास्ते भर पिस्तोल की आवाज़ ही उसे सुनाई देती रही। उसे अचानक महसूस हुआ कि पिस्तोल का निशाना सिर्फ़ कोमारोवस्की की ओर ही नहीं उसके स्वयं की ओर भी तना हुआ है।

डुप्ल्याँका में ओक पेड़ पर की गयी उसकी निशानेबाजी और उस पर निर्भर उसका भाग्य।

आठ

—मेरे दस्ताने मत छूओ।

उसका कोट उतारने के लिए इम्मा इर्नेस्टोवना के हाथ बढ़ाने पर लारा ने उसे मना करते हुए कहा। लारा का स्वागत करते समय वह अनेक बार 'आह' और 'ओह' की आवाज़ सुन चुकी थी। उसने कहा—कोमारोवस्की बाहर गये हुए हैं। थोड़ी देर ठहर कर इन्तज़ार करना होगा। 'नहीं, मैं इन्तज़ार नहीं कर सकती। मैं बहुत जल्दी में हूँ। वे कहाँ हैं?'

—'क्रिसमस पार्टी में गये हुए हैं।' वहाँ का पता लेकर, कागज के टुकड़े को मुट्ठी में कस कर पकड़े हुए वह चिर-परिचित अन्धकारमय सीढ़ियों से नीचे उतर आई। स्वेटिटस्की का मकान मुचनोय गोरोडोक की ओर था। इस ओर वह दूसरी बार आई थी। उसने चारों ओर देखा। बर्फ़ीली सर्दी थी। सारी गली काली-मोटी बर्फ़ से ढँकी हुई। हवा सर्द। लारा को साँस लेने में कष्ट हो रहा था। जमी हुई गाढ़ी बर्फ़ ने उसके उत्तेजित चेहरे को छेद-सा डाला। उसका दिल धड़क रहा था। वह वीरान खाली गलियों में से गुज़र रही थी। बर्फ़ की पर्तों से पर्दे ढँके हुए थे। मकानों की बन्द खिड़कियाँ मानो चूने से पोत दी गयी थीं। क्रिसमस-ट्री के रंगीन प्रकाश का प्रत्यावर्तन गली में पड़ रहा था। अन्दर लोग त्योहार मनाने में, मौज करने में व्यस्त थे। सतह पर ऐसा लगता था कि मानो जादूभरे दीप के पास तमाशा किया जा रहा हो।

रास्ते में पाशा का मकान पड़ता था। एक क्षण के लिए वह रुकी। वह बिलकुल टूट चुकी थी। अधिक चलना उसे कठिन मालूम देता था। एक तरह से उसके मन की आवाज़ कंठ से निकल ही गयी—मैं अधिक बर्दाश्त नहीं कर सकती। ऊपर जाकर मैं पाशा को सब कुछ बता दूँगी। अपने आप को घसीटती हुई वह पाशा के मकान के भारी दरवाजे तक पहुँच गयी।

नौ

पाशा जब भी बोलता उसके गाल बाहर निकल आते। उसके चेहरे का रंग रक्तिम-वर्ण का था। इस समय आईने के सामने खड़ा वह कालर फिट करने के कठिन कार्य में चरम-व्यस्त था। दुहरे माथे का बटन कड़क किये गये कमीज के बटन के छेद में जा नहीं रहा था और उसे एक पार्टी में जाने की जल्दी थी। वह इस समय इतना भोला और प्यारा लग रहा था कि लारा ने दरवाजे पर दस्तक देने की ज़रूरत नहीं समझी और यह जानते हुए भी कि वह पूरे कपड़े पहने हुए नहीं है उसने पाशा को अपने बाहुपाश में आलिंगन-बद्ध कर लिया। लारा के इस उद्वेग को पाशा पलक झपकते ही समझ गया।

अपने स्कर्ट का एक कोना उठा कर वह इस तरह डगमगाते हुए कदमों से आगे बढ़ी जैसे वह पानी में से गुजरते हुए, नदी पार कर रही हो। पाशा उसकी ओर बढ़ा। बोला—बात क्या है लारा? क्या हुआ?

—'मेरे पास बैठ जाओ। बैठो। कपड़े बाद में भी पहन लेना। मैं उतावली में हूँ। एक मिनट के बाद मुझे यहाँ से चल देना होगा। मेरे दस्ताने मत छूओ। ठहरो। एक मिनट के लिए मेरी ओर मत देखो।' लारा ने अपना कोट खोल कर टांग दिया और जेब में पिस्तोल रख दिया।

—मोमबत्ती जला कर बिजली की रोशनी बंद कर दो। मेरी ओर देखो। पाशा को मालूम था कि उसे अन्धकार में मोमबत्ती की धीमी रोशनी में बातचीत करना बहुत पसन्द है। इसलिए वह हमेशा अपने पास दो-चार

मोमबत्तियाँ रखता था। मोमबत्ती की शिखा जलने से आनाकानी-सी करती हुई चटकने लगी। छोटे-छोटे सितारे उछल कर इधर-उधर छिटक गये; फिर तीर की तरह स्थिर भाव से वह खड़ी हो गयी। सारा कमरा मध्यम रोशनी से भर-सा गया। खिड़की के चौखटे पर मोमबत्ती की ज्योति-शिखा के समीप बर्फ़ पिघल रही थी। वहाँ एक काला झरोखा-सा बन गया था। मानो झाँकने के लिए कोई छेद हो।

लारा ने कहा—सुनो पाशा, मैं मुसीबत में हूँ। तुम्हें मेरी मदद करनी होगी। डरो मत और न मुझसे सवाल-जवाब करो। हम दूसरे लोगों की तरह नहीं हो सकते! मेरी बातों को गम्भीरतापूर्वक सुनो। मैं भयंकर खतरे में हूँ। यदि तुम मुझे प्यार करते हो, यदि तुम चाहते हो कि मेरा सर्वनाश न हो, तो ब्याह की बात को टालो मत।

—यही तो मैं भी चाहता हूँ। जिस दिन भी तुम कहो, मैं ब्याह करने के लिए तैयार हूँ। मगर यह तो बताओ कि दरअसल तुम्हें इस समय किस बात की चिन्ता है? पहेलियाँ बुझा कर मुझे दुखित मत करो!

लारा ने अपने गंभीरतम प्रश्न को टाल कर विषय बदल दिया। काफी देर तक वे अनेक तरह की बातें करते रहे, उनमें से कोई ऐसी बात नहीं थी, जिसका उसके सर्वनाश से कोई सम्बन्ध हो।

दस

युनिवर्सिटी गोल्ड-मेडल प्रतिस्पर्द्धा के लिए ग्रीष्म ऋतु में आँख की स्नायुओं की पद्धति के बारे में यूरा एक निबंध तैयार कर रहा था। यद्यपि उसने जनरल-मेडिकल ज्ञान ही प्राप्त किया था फिर भी उसने दृष्टि के मनोवैज्ञानिक पहलू पर विशेषता प्राप्त कर ली थी। उसकी दिलचस्पी सृजनशील प्रतिभा की ओर थी ही; साथ ही कला के काल्पनिक और विचारों के तार्किक रूप में भी थी। उसके चरित्र के इस पहलू के कारण ही उसने अपने लिए यह विषय चुना था।

स्वेटिटस्की की ओर इस समय यूरा टोन्या के साथ किराये की स्ले में जा रहा था। बचपन और युवावस्था के छः वर्ष एक ही परिवार में, एक

साथ बिताने के कारण, एक दूसरे के बारे में जो कुछ जानने लायक था, वे उसे अच्छी तरह से जानते थे। एक दूसरे का तौर-तरीका, आदतें, मजाकें आदि से वे अच्छी तरह से परिचित थे। इस समय मौन भाव से गाड़ी में बैठे अपने ही विचारों में खोये-से दोनों चले जा रहे थे। ठण्ड के कारण उनके होठ मजबूती से बन्द थे।

यूरा प्रतिस्पर्द्धा के निबंध के बारे में सोच रहा था कि उसे उस निबंध पर और अधिक मेहनत करनी चाहिए। त्योहार की सज्जा की ओर उसका ध्यान गया। वर्ष के अन्तिम दिनों का कोलाहल भरा यह महोत्सव!

उसने गोर्डन से वादा किया था कि वह उसके साथी विद्यार्थियों के भित्ति पत्र के लिए एक लेख अवश्य लिख कर देगा जिसका कि गोर्डन सम्पादन करता था।

ठण्ड से जमे हुए कानों को रगड़ती हुई उनकी ठुड्डी कालर से टकरा रही थी। अपने विचारों में खोए हुए वे गाड़ी में चले जा रहे थे। हाँ, एक विचार दोनों के मस्तिष्क में एक ही साथ चक्कर काट रहा था। मानो उन्हें अभी-अभी नवीन दृष्टि-दान मिला हो; उन्हें एक दूसरे की नजरों में अन्ना के सोने का कमरा दिखाई दिया। टोन्या यूरा की घनिष्ठ मित्र थी। यूरा की हर बात के प्रति टोन्या की स्वीकारोक्ति होती—बिना किसी प्रकार के स्पष्टीकरण की मांग के। वही टोन्या अचानक उसे गहन गंभीर और अबूझ-सी दिखाई देने लगी। उस के इस रूप की तो उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी। वह एक सम्पूर्ण स्त्री के रूप में सामने प्रस्तुत थी। कल्पना के बल पर वह अपने आप को शहंशाह के रूप में, धीरोदात्त नायक के रूप में, मसीहा के रूप में, एक विजेता के रूप में अवश्य देखा करता था, लेकिन स्त्री के रूप में तो कभी नहीं। उसे लगा कि टोन्या के दुर्बल कन्धों पर सबसे कठिन काम का भार आ पड़ा है। (यद्यपि वह एक स्वस्थ सुन्दर लड़की थी, फिर भी इस समय यूरा को वह कमजोर दिखाई देने लगी थी।) उसके प्रति उसे सहानुभूति-सी होने लगी। साथ ही कुछ संकोच-सा अनुभव होने लगा। यही तो युवावस्था

की भावाभिव्यक्ति की शुरूआत है। टोन्या का यूरा के प्रति परिवर्तित व्यवहार भी उतना ही गम्भीर और आश्चर्यजनक था।

यूरा को अन्ना के बारे में चिन्ता हो रही थी। वह सोच रहा था कि उन्हें ऐसे अवसर पर बाहर नहीं निकलना चाहिए था। रवाना होते समय अन्ना की तबीयत कुछ खराब होने लगी थी। उनके अन्दर जाने पर अन्ना ने हमेशा की तरह यही आदेश दिया कि वे तुरन्त पार्टी में चले जाएँ। अन्ना ने पूछा था कि मौसम कैसा है ? जवाब देने के लिए जब वे खिड़की के पास पहुँचे तो लौटते वक्त टोन्या के कपड़ों का पल्ला पर्दों में अटक गया था और परिणामस्वरूप ऐसा लग रहा था मानो ब्याह के समय दुल्हन की पिछले हिस्से की चद्दर घिसट रही हो। सब हँसने लगे थे।

जो कुछ थोड़ी देर पहले लारा ने देखा था, वही सब यूरा को इस समय दिखाई दे रहा था। कोहरे से ढंकी हुई खिड़कियों में से रोशनी प्रकाशित हो रही थी। प्रत्येक घर में मास्को का क्रिसमस महोत्सव चमक रहा था। पेड़ों पर मोमबत्तियाँ जल रही थीं। विभिन्न प्रकार की पोशाकें पहने लोग हँसी-मजाक कर रहे थे। खेल-कूद रहे थे।

कामेरगर स्ट्रीट से गुजरते समय यूरा ने देखा कि एक खिड़की में मोमबत्ती का पिघला हुआ मोम चिपक गया है। गली में पड़ने वाले प्रकाश से लगता था कि जैसे कोई वहाँ से ध्यानपूर्वक झाँकने की चेष्टा कर रहा है। मोमबत्ती की शिखा, रास्ते से गुजरने वाली तथा किसी का इन्तजार करती हुई खड़ी गाड़ियों का निरीक्षण कर रही थी।

'दीपशिखा जली, जली एक दीपशिखा टेबल पर—'

उलझी हुई, निश्चित रूपरेखा विहीन कविता की शुरूआत हुई। वह गुनगुनाने लगा। उसे आशा थी कि एक न एक दिन यह अपने आप अपने परिष्कृत रूप में प्रस्तुत होगी। लेकिन इससे ज्यादा उसे उस समय कुछ सूझा ही नहीं।

स्वेटिटस्की की क्रिसमस पार्टी में एक अर्वाचीन शास्त्रीय पद्धति अपनाई गई थी। दस के लगभग, जब तमाम बच्चे अपने-अपने घर चले गये, क्रिसमस वृक्षों पर फिर रोशनी जलाई गई। युवकों की यह पार्टी सुबह तक चलती रही। बैठक के कमरे में वयस्क लोग बैठे रात भर ताश खेलते रहे। पीतल की कड़ियों में पिरोये हुये पर्दों ने इस बैठक कक्ष को बालरूम से अलग कर दिया था। सुबह का नाश्ता सबने एक साथ ही किया।

फ्लेट के पिछवाड़े से अपने चाचा-चाची के कमरे को पार करके हाल की ओर आते हुए स्वेटिटस्की के भतीजे ज्योर्ज ने पूछा—बड़ी देर से आये तुम लोग। क्यों ?

यूरा और टोन्या ने अपना सामान यथास्थान रख दिया। गृहस्वामी का अभिवादन करने के लिए जाने से पहले दोनों ने बाल रूम की ओर देखा।

क्रिसमस पेड़ों पर पवित्र सुगन्ध से पूरित रोशनी की पर्तों पर पर्तें जड़ी हुई थीं। जो लोग नाच नहीं रहे थे, वे एक दूसरे का अनुकरण करते हुए धीरे-धीरे इधर-उधर चलते हुए बातें कर रहे थे। नाचघर के मध्यभाग में नर्तकगण फुरती से घूम रहे थे, चक्कर काट रहे थे। इस नृत्य का संयोजन एक सहायक वकील के सुपुत्र, कानून के एक विद्यार्थी, कोका कोर्नाकोव द्वारा किया गया था। उसी ने जोड़े साधे थे और उनका व्यूह तैयार किया था।! इस नृत्य का निर्देशन भी वही कर रहा था। नृत्य निर्देशन के लिए वह जोर-जोर से आज्ञाएँ देता और लोग उसे सहर्ष मानते। गीत की धुनों के लिए वह समय-समय पर पियानो बजानेवाले को भी इशारे करता रहता। अपने साथियों के साथ नाचते-नाचते लोग विस्तृत घेरे को तंग करते जाते। वाज-संगीत के समाप्त होने से पहले ही अदृष्ट रूप से समयबद्ध ताल के साथ उनका नृत्य अपने सुनिश्चित स्वरूप में आ गया। सब आनन्दमग्न थे। तालियाँ बजा रहे थे। बीच-बीच में पेय पदार्थों का क्रम चालू था। उनका चिल्लाना और हँसना क्षण

भर के लिए भी न रुकता। पेय पीते समय, अथवा खाली गिलास रखते वक़्त, शोर दसगुना अधिक बढ़ जाता। जैसे उन्होंने कोई अत्यन्त नशीली चीज़ पी ली हो और वे होश में न रह सके हों।

यूरा और टोन्या बिना इस बालरूम में रुके गृहस्वामी के कमरे की ओर चल दिये।

बारह

गृहस्वामी के पिछले कमरे में बेतरतीब फर्नीचर पड़ा हुआ था। स्वेटिटस्की की क्रिसमस की तैयारियों के लिए यही जगह थी। वार्निश और सरेस की गंध आ रही थी। चारों ओर रंगीन डिब्बे तथा लपेटे हुए कागजों के ढेर के साथ फालतू मोमबत्तियाँ भी हर कुर्सी पर पड़ी हुई थीं। स्वेटिटस्की महोदय भोजन की टेबल पर प्रत्येक व्यक्ति के निश्चित स्थान के लिए चिटें तैयार कर रहे थे। लौटरी के टिकटों के नम्बर लिख रहे थे। ज्योर्ज उनकी सहायता कर रहा था लेकिन उसकी गिनती बारम्बार गड़बड़ा जाती और गृहस्वामी बीच-बीच में नाराज-से हो उठते। यूरा और टोन्या को देख कर वे बहुत प्रसन्न हो उठे। उनके लिए वे दोनों बच्चों के ही समान थे। इसलिए बिना किसी खास औपचारिता के, उन्होंने दोनों को काम पर लगा दिया।

—यह पहले से कर रखना चाहिए। यह नहीं कि मेहमान आये हुए हों और आप सब मिलकर यह गोरखधंधा शुरू करें। ज्योर्ज, देखो, तुमने यह क्या कर डाला? सारा सामान ही तुमने गलत ढंग से रख दिया है।

—यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि अब अन्ना की तबीयत ठीक है। मुझे बड़ी चिन्ता हो रही थी।

—तुम हर विषय को बड़ी सरलता से ले लेते हो। उसकी तबीयत तो और अधिक खराब हो रही है।

बाहर के हो-हुल्लड़ के पीछे, स्वेटिटस्की के साथ टोन्या और यूरा ने आधी सन्ध्या बिता दी।

तेरह

लारा बालरूम में ही थी। उसकी पोशाक सायंकालीन तो नहीं ही थी, वह किसी को जानती भी नहीं थी। फिर भी वह वहाँ से गयी नहीं। नींद में चलने वाले भानरहित व्यक्ति की तरह या तो वह कोका के साथ नाचती रही अथवा निरुद्देश्य भाव से इधर-उधर भटकती रही। बीच में एकाध बार रुक कर, उसने हिचकिचाते हुए खड़े रह कर कमरे के बाहर की ओर देखा। उसे आशा थी कि दूसरी ओर ताश खेलता हुआ कोमारोवस्की उसकी ओर देख लेगा। कोमारोवस्की ताश खेलने में मशगूल था। उसके दाहिने हाथ में ढाल की तरह पकड़े हुए ताश के पत्ते या तो सचमुच उसका चेहरा ढंके हुए थे, जिससे वह लारा की ओर देख नहीं पाता था; अथवा उसकी ओर न देखने का वह बहाना किये बैठा था। लारा इस अपमान के संताप से जल रही थी। इसी समय एक लड़की बालरूम में से अन्दर की ओर गयी। उसकी ओर कोमारोवस्की ने कुछ ऐसी दृष्टि से देखा, जिससे लारा अच्छी तरह से, घनिष्ठ रूप में परिचित थी। इस लड़की को लारा जानती नहीं थी। कोमारोवस्की की इस चापलूसी भरी निगाहों से प्रसन्न होकर, शर्माती हुई वह लड़की मुस्करा दी। लारा इस बेशर्मी के व्यवहार से मन ही मन शर्मिन्दा और क्षुब्ध हो उठी थी। उसने मन ही मन कहा—'नया शिकार!' जैसे शीशे में अपना प्रतिबिम्ब दिखाई दे, ठीक उसी तरह उस लड़की में अपने आपको प्रतिष्ठित कर लारा ने देखा। कोमारोवस्की से बातचीत करने का इरादा उसने छोड़ा नहीं था। बल्कि अधिक उपयुक्त अवसर की खोज में, अपने आपको शान्त करती हुई वह बालरूम की ओर चली गयी।

लारा के साथ जो सुन्दर नवयुवक नाच रहा था उसके साथ थोड़ी देर बातचीत होने पर उसे मालूम हुआ कि कोमारोवस्की के साथ ताश खेलने में व्यस्त व्यक्ति इस नवयुवक का पिता है। सर्पीली गर्दन और प्रज्वलित नेत्रों वाली काले रंग की उसकी माँ अपने पुत्र को नाचते हुए और अपने पति को ताश खेलते हुए इस तरह देख रही थी, जैसे निगरानी

कर रही हो। अन्त में लारा को मालूम हुआ कि जिस लड़की को देख कर वह क्षुब्ध हो उठी थी, वह इस नवयुवक की बहिन थी; और उसका सन्देह निर्मूल था।

इस नवयुवक से परिचित होते समय उसने उसके नाम की ओर ध्यान नहीं दिया था। नाचते समय उसने अब मन ही मन उसका नाम दुहराया। उसे इस नाम से किसी दुखान्त घटना की याद आ गयी। याद आया कि यह वही व्यक्ति है, जिसने रेल्वे हड़ताल के मास्को सेण्ट्रल कोर्ट में चल रहे मुकद्दमे के सिलसिले में बेतुका व्याख्यान दिया था जिसमें तिमिरजिन भी शामिल था। लारा की इच्छानुसार कोलिग्रिवोव महोदय भी पैरवी के लिए गये थे। मगर उन्हें सफलता नहीं मिल सकी। सो, यही है वह कोर्नाकोव! कितना अद्‌भुत संयोग!

चौदह

प्रातःकाल के करीब दो बज गये। यूरा के कान भिन्नाने लगे थे। मध्यान्तर में चाय और बिस्कुट लिया गया और फिर नाच आरम्भ हुआ। क्रिसमस-वृक्ष पर जल कर गिरी हुई मोमबत्तियों को बदलने की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। यूरा खोया-खोया सा बालरूम के मध्य में टोन्या को किसी अपरिचित व्यक्ति के साथ नाचते हुए देख रहा था। अपने कपड़ों को लहराती हुई, मछली की तरह फड़कती हुई, वह उसके पास आई और तेजी के साथ गायब हो गई। टोन्या काफी उत्तेजित थी। मध्यान्तर में उसने चाय के बजाय सन्तरों से अपनी प्यास बुझाई। सन्तरों को छीलने के बाद वह अपनी अंगुलिया रूमाल से पोंछती और रूमाल को आस्तीन या अपने झालरदार कपड़े की कालर में खोंस लेती। अपने साथी के साथ नाचती हुई, घूमती हुई, आकर उसने यूरा का हाथ पकड़ लिया, मुस्कराई। टोन्या के हाथ का रूमाल यूरा के पास आ गया। यूरा ने उसे अपने होठों से लगाया और आँखें बन्द कर लीं। टोन्या के हाथों और संतरे की सुगन्ध से रूमाल तर था। यूरा को कुछ अद्‌भुत-सा, कुछ नवीन-सा लग रहा था। ऐसा कि, जैसा उसने कभी अनुभव नहीं किया;

कुछ ऐसा तीखा नशा-सा उसके नख-शिख में प्रवाहित हो गया। यह चंचल और मादकतापूर्ण महक अन्धकार में चिर-मित्रता की मौन भाषा थी। वह रूमाल की सुगन्ध में खो-सा गया।

इसी समय अन्तर्भाग से गोली की आवाज़ गूँज उठी।

एक क्षण के लिए सर्वत्र निःस्तब्धता छा गयी। इसके बाद लोग फुरती से बालरूम और बैठक के बीच लटकने वाले पर्दे के उस ओर दौड़ पड़े। कुछ शोर मचा रहे थे—कुछ बहस कर रहे थे—सब लोग एक साथ बात करने में लगे हुए थे।

निराशा से व्याकुल कोमारोवस्की कहता रहा—उसने यह क्या कर डाला ?

—बोर्या, बोर्या, बताओ तो तुम्हें कुछ हुआ तो नहीं? —श्रीमती कोर्नाकोव मूर्च्छितावस्था में चिल्ला रही थीं—डाक्टर ड्रोकोव कहाँ है? अभी-अभी तो वे यहाँ थे। लेकिन कहाँ गये? कैसे कह सकते हो कि यह जरा-सा खरोंच भर है। मैं पहले ही कहती थी, इन दुष्ट अपराधियों के गुप्त भेदों में मत पड़ो। देख लो, वे किस तरह के लोग होते हैं। ओह, आज तुम्हें अपने दृढ़ निश्चय के लिए शहीद हो जाना पड़ा। यह रही वह गंदी, दुष्ट, नालायक लड़की। मैं तुम्हारी आँखें निकाल लूँगी। तुम किसी भी हालत में यहाँ से भाग कर बच नहीं सकती। कोमारोवस्की साहब, आप क्या कह रहे थे? उसने आप पर गोली मारी थी? नहीं। कभी नहीं। मैं यह सब बर्दाश्त नहीं कर सकती। ऐसे दुखद मौके पर मजाक मत करो कोमारोवस्की साहब! कोका, कोका, क्या तुम कोमारोवस्की की बात पर विश्वास कर सकते हो? इसने तुम्हारे पिता की हत्या करने की चेष्टा की थी। लेकिन—सिर्फ़ सौभाग्य। कोका, ओ कोका—।

बैठक के इस कमरे से भीड़ बाहर निकल आई। कोर्नाकोव हँसते हुए सबको विश्वास दिलाने की चेष्टा कर रहा था कि वह बिलकुल ठीक-ठाक है। ठीक उनके पीछे दूसरा दल लारा को खींचते हुए ला रहा था।

यूरा उसे देखकर अवाक् रह गया। फिर वही लड़की, उतनी ही विचित्र परिस्थितियों में। वही भूरे बालों वाला व्यक्ति उसके पास खड़ा था। इस बार वह इस आदमी को पहचान गया। यही सुप्रसिद्ध वकील कोमारोवस्की था। उसके पिता की जायदाद के बारे में यही कुछ न कुछ करने वाला है। एक दूसरे के प्रति किसी तरह की नम्रता बताने की दोनों ने आवश्यकता नहीं समझी और उन्होंने इस तरह से ज़ाहिर किया कि मानो वे दोनों एक दूसरे से नितान्त अपरिचित हैं। और यह लड़की, अच्छा यही लड़की है वह, जिसने इस वकील साहब पर गोली चलाई थी ? शायद कोई-न-कोई राजनीतिक कारण रहा होगा। बेचारी ! भाग्य विपरीत थे। उसका सौंदर्य कितना दर्पपूर्ण है और लोग उसकी बाँहें पकड़ कर इस तरह खींच रहे हैं, जैसे उन्होंने किसी चोर को पकड़ लिया हो।

लारा मूर्च्छित हो रही थी। एक तरह से उसे जबरदस्ती आरामकुर्सी तक ले जाया गया। वहाँ पहुँचते ही बेहोश होकर वह गिर पड़ी। उसे होश में लाने में मदद करने के लिए जाने से पहले यूरा गोली का निशाना बनने वाले व्यक्ति के प्रति कुछ सहानुभूति बताना चाहता था। कोर्नाकोव के पास जाकर उसने उन्हें हाथ दिखाने के लिए कहा। उनके बच जाने के सौभाग्य के लिए बधाई दी। और बताया कि इस पर तो मलहम-पट्टी करने की भी जरूरत नहीं है। सिर्फ़ आयोडीन की कुछ बूंदें ही काफी होंगी। फिलितसाता सैमियोवना के पास यह दवा अवश्य मिल जायेगी। टोन्या और फिलितसाता उसी ओर आ रही थीं। उनका चेहरा सफ़ेद-फक् था। किसी सदमे के कारण उनका चेहरा विवर्ण हो गया था। घर से बुलावा आया है, उन्हें तुरन्त घर पहुँचना चाहिए।

यूरा काल्पनिक दुखान्त घटना की बात सोच कर अपना सामान लेने के लिए दौड़ पड़ा।

पन्द्रह

अन्ना के कमरे की सीढ़ियों तक ही वे पहुँच सके थे, तब तक अन्ना दमे के तीव्र दौरे के कारण मर चुकी थी। ठीक समय पर रोग का पता नहीं

चल सका। एकबारगी टोन्या पछाड़ खाकर गिर पड़ी। दूसरे दिन जब वह शांत हुई तो अपने पिता अथवा यूरा की बात के प्रत्युत्तर में सिवाय सिर हिलाने के वह कुछ कह नहीं पाती। दुख के आवेग से उसका गला रुंध जाता। उसकी रुलाई रोके नहीं रुकती।

अन्तिम संस्कारों के अनुष्ठान के समय छोटे से मंच पर रखे हुए अन्ना के कफन के पल्ले को वह काफी देर तक पकड़े बैठी रही। फूलों से सजे हुए इस जनाजे के अलावा उसकी निगाह किसी ओर नहीं थी। पास ही खड़े लोगों से जब उसकी नजर मिलती तो वह उठ कर अन्दर भाग जाती। उसका गला रुंध जाता और वह मूर्च्छित-सी होकर बिस्तर पर गिर पड़ती।

सर्दी, मोमबत्तियों का चकाचौंध पैदा करने वाला प्रकाश, गम्भीर स्वर में गाये जाने वाले गीत, नींद का अभाव और चुपचाप एक कोने में खड़ा यूरा दुःख और उत्तेजना की निद्राच्छन्न गम्भीर व्याकुलता में डूब-सा गया।

आज से दस साल पहले उसकी माँ मर गयी थी। वह उस समय बिलकुल बच्चा था। उस समय की व्याकुलता, दुःख और व्यग्रता उसे याद थी। उस समय उसका अपना कोई महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व नहीं था। उस दिन उसे मालूम नहीं था कि उसके अस्तित्व की कोई जरूरत, महत्त्व और कीमत है ? अन्तर की व्याकुलता और बाहर की व्याप्त परिस्थितियाँ ही उस समय महत्त्वपूर्ण थीं। बाहरी दुनिया का दबाव चारों ओर से उसे घेरे हुए था। माँ की मृत्यु का दुःख उसे उस समय ऐसा महसूस हुआ था मानो वह किसी जंगल में खो गया हो और नितान्त अकेला पड़ गया हो। यह जंगल उसकी जानकारी की तमाम चीज़ों से भरा हुआ था, ऊपर फैला हुआ आसमान, इर्द-गिर्द की दूकानें, घंटाघर के सुनहले गुम्बद, रात्रि में तारों से भरा अगम्य ऊँचा स्वर्ग और पवित्र परमात्मा, सभी कुछ उसमें था। नर्स जब ईश्वर के बारे में उसे बता रही थी तो उसे लगा था, मानो अगम्य ऊँचाई वाला स्वर्ग उसके आँचल के पास तक झुक आया हो। नर्स

के साथ जब वह मृतक-संस्कार के समय गिरजाघर तक गया तो उसे लगा था कि जैसे वही स्वर्गीय रक्तिम स्वर्णमय फूलों के रस में डूबा हुआ स्वर, गिरजाघर में उठने वाले मृत्यु समय के गीतों में मिश्रित हो गया हो। सामने प्रस्थापित प्रतिमा के सम्मुख तारों का प्रकाशपुँज फैल गया था। परमात्मा उसे परम पिता के रूप में करीब लगने लगे थे। सब लोग अच्छे से अच्छे रूप में 'सर्विस' सम्पादित करने में व्यस्त थे। उस समय उसे लगा था कि सारा संसार वयस्क लोगों की भीड़ से भरा हुआ जंगल है। इस जंगल के मालिक और रक्षक सर्वात्मा प्रभु के प्रति उसे उस दिन अगाध श्रद्धा थी।

अब यूरा बहुत बदल चुका है। धर्मशास्त्र, उपाख्यान, काव्य, इतिहास और प्राकृतिक-विज्ञान का स्कूल और कालेज में बारह साल तक उसने अध्ययन किया था। इन सब का अध्ययन वह इस तरह करता, मानो वह सब उसी का इतिवृत्त हो, उसी के परिवार का इतिहास हो। अब उसे न मौत डरा सकती थी, न जीवन ही भयभीत कर सकता था। सारे ब्रह्माण्ड की और अपनी हस्ती उसे एक समान ही लगने लगी थी। इसलिए बचपन में माँ के प्रति की गयी प्रार्थना के स्वर अन्ना के लिए प्रार्थना करते समय बिलकुल भिन्न थे। उसने पहली प्रार्थना विस्मृत भाव से, भय और दु:ख की व्याकुलता के साथ की थी। और आज उसकी प्रार्थना के मंत्रों के प्रत्येक शब्द का संदेश उसके हृदयतल को छू लेता है। किसी गंभीर बात की तरह प्रत्येक शब्द का आशय आज उसके बिलकुल करीब सा है। धरती और आसमान की शक्ति के बारे में परम्परानुगत रूप से चली आ रही धारणाओं के साथ आज उसके दु:ख की अनुभूति का कोई साम्य नहीं।

सोलह

—'दया करो, हे सर्वशक्तिमान परमात्मा, हे चिरंतन जगदात्मा हमारी रक्षा करो!' —यह सब क्या है? वह स्वयं क्या है? शव को बाहर निकाला जा रहा था। सुबह 6 बजे के लगभग वह सोफे पर बैठे-बैठे सो

गया। उसका शरीर कुछ गर्म था। लोगों ने यहाँ वहाँ सारे घर में उसकी तलाश की; मगर किसी ने सोचा भी नहीं था कि पुस्तकालय में आलमारी के समीप वह सोफे पर सोया हुआ होगा।

—'यूरा, ओ यूरा!' मार्केल उसे पुकार रहा था। शव के पुष्पहार ले जाने के लिए उसे यूरा की मदद की आवश्यकता थी। सोने के कमरे के सामने रखी हुई आलमारी के दरवाजे खुल जाने के कारण शयन कक्ष का दरवाजा बंद हो गया था; जहाँ कि पुष्पहारों के ढेर पड़े थे। नीचे से लोग पुकार रहे थे—मार्केल, मार्केल, यूरा—यूरा! आखिर मार्केल ने लात मार कर दरवाजा खोल डाला और पुष्पहारों के साथ दौड़ता हुआ नीचे चला आया।

'सर्वशक्तिमान, परम पवित्र चिरंतन परमात्मा।' ये शब्द गलियों में मंथर गति से गूँज रहे थे। मानो वायु में मयूरपंख द्वारा शब्दों की रसवन्ती रेखा खींच दी गई हो। पादरी के हाथ में जंजीर-युक्त धूपदानी का धुआँ, पुष्पहार और नीचे की जमीन झूम रही थी।

शूरा स्किलसिंगर ने कन्धे हिलाते हुए कहा—अरे यूरा तुम? हे भगवान! क्या बात है रे? शव ले जाया जा रहा है, तुम हमारे साथ चल रहे हो न?

—हाँ। आ रहा हूँ।

सत्तरह

अन्त्येष्टि-क्रिया समाप्त हो गयी।

गिरजे के बाहर सर्दी में काँपते हुए भिखारी जमा हो गये थे। गाड़ी में पुष्पहारों के साथ क्रूजर गाड़ी हिलती हुई आगे बढ़ी। शूरा स्किलसिंगर ने बाहर आकर अपना आँसुओं से भरा घूँघट ऊपर उठाया और चारों ओर खोजती हुई निगाह डाली। कफन ले जाने वालों को उसने इशारे से बुलाया और उनके साथ गिरजे में गायब हो गयी। बाहर काफी लोग जमा हो गये थे।

—सो, अन्ना इवानोवना चली गयी। वह हमारे बीच नहीं रही। बिचारी इस जंजाल से छूट गयी।

—हाँ, उसका सारा जीवन अपने ढंग का ही था। वह चिर-विश्राम करने चली गई है। भगवान उसकी आत्मा को शांति दे।

—तुम्हारे पास गाड़ी है या तुम ग्यारह नम्बर की ट्राम पकड़ोगे?

—खड़े-खड़े मेरे पाँव दर्द करने लगे हैं। थोड़ी दूर पैदल चलें। फिर टेक्सी ले लेंगे।

—देखा तुमने, फुफकोव कितना दुखित हो उठा था। उसके पति के समीप खड़ा वह आँसू बहा रहा है। उसकी नाक से पानी बह रहा है। वह एकटक उसकी ओर ताक रहा है!

—उसकी नजर उस पर हमेशा बनी रहती थी।

शहर के अंतिम छोर पर अवस्थित श्मशानभूमि की ओर वे चल पड़े। पाला समाप्त हो चुका था। आज के शान्त दिन एक जीवन के साथ-साथ पाला भी मानो विदा ले चुका था। इस अन्त्येष्टि के लिए ही यह दिन इस रूप में प्रस्तुत था।

इस श्मशान में यूरा की माँ दफनाई गई थी। कुछ बरसों से वह कब्र पर गया नहीं था। उस ओर देख कर उसने मन ही मन पुकारा—माँ!, ठीक उसी तरह, जिस तरह आज से वर्षों पहले उसने पुकारा था।

गम्भीरतापूर्वक शवयात्रियों का दल चल रहा था। शोकाकुल यात्रियों के पदचाप से सारा रास्ता साफ स्वच्छ हो गया था।

श्मशानभूमि की गुलाबी दीवारों से ऊपर गुम्बदों के सूली के निशान पर तुषार जंजीरों के रूप में लिपटा हुआ था। मठ से कुछ दूर एक दीवार से दूसरी दीवार तक धुले हुए कपड़े सूख रहे थे। आज से बहुत सालों पहले श्मशान के इसी भाग में तूफान ने उपद्रव किया था। अब वहाँ मकान बन चुके थे। इसका रूप बदल गया था। यूरा चुपचाप अकेला आगे-आगे चला जा रहा था। दूसरों को अपने बराबर आने के लिए बीच-बीच में

वह रुक जाता। इस छोटे से समुदाय की ज़िन्दगी में इस मृत्यु ने जो निर्जनता भर दी थी उसी चुनौती के प्रत्युत्तर में यूरा को सौन्दर्य-रचना की कल्पना करने, विचार करने के लिए प्रेरित किया। स्पष्ट रूप से पहली बार उसे अनुभव हुआ कि कला के दो चिरन्तन पूर्वाधिकार हैं—एक मृत्यु पर विचार करने का और दूसरा जीवन की सृष्टि करने का। उसे तत्वबोध हुआ कि यही प्रतिभासम्पन्न अमर कलाकृतियों का मर्म है। यही तत्व संत जॉन का रहस्योद्घाटन है। शताब्दियों की कला-चेष्टाएँ इसी तथ्य को प्रतिपादित करती रही हैं।

इस आशा से वह प्रसन्न हो उठा कि एक या दो दिन वह घर अथवा विश्वविद्यालय से दूर एकान्त में बितायेगा। अन्ना की याद में एक कविता लिखेगा। इस कविता में, जीवन में प्राप्त प्रत्येक आकस्मिकता का वर्णन होगा। अन्ना की उत्तम विशेषताओं के अलंकार होंगे, तोन्या का घनीभूत संताप होगा। अन्त्येष्टि-क्रिया से वापस लौटते समय घटित घटना होगी; और होगा सूखते हुए कपड़ों वाला श्मशानभूमि का वह स्थान; जहाँ एक बच्चे के रूप में वह दु:ख और भय से कातर हो उठा था—सभी कुछ कविता में संकलित होगा।

4

भविष्य का पूर्वाभ्यास

तप्त बुखार में बेहोश लारा बिस्तर पर पड़ी थी। स्वेंटिटस्की अपने नौकरों तथा डाक्टर के साथ पास ही खड़े धीमे स्वर में बातचीत कर रहे थे। कमरे के दूसरे रास्ते पर मध्यम रोशनी फैली हुई थी। मकान का बाकी हिस्सा खाली और अन्धकारपूर्ण था। कोमारोवस्की विक्षुब्ध भाव से इधर-उधर चहलकदमी कर रहा था मानो वह यहाँ अतिथि नहीं है;

बल्कि यह उसी का घर है। लारा का हाल जानने के लिए वह शयन कक्ष की ओर बीच-बीच में झाँक लेता और फिर लम्बे कदम भरता हुआ चहलकदमी करने लगता। खाने की मेज पर स्पर्शरहित तश्तरियाँ अभी भी सजी हुई थीं। पास से जब भी कोई टैक्सी गुजरती तो पीने के पानी का पारदर्शक कांच का बर्तन उसके प्रकाश से चमक उठता। कोमारोवस्की के हृदय में तूफान चल रहा था। 'छिः, कितना लज्जाजनक षड्यन्त्र!' इस घटना से उसके पद और मर्यादा पर बड़ा भारी आघात लग सकता था। उसकी प्रतिष्ठा खतरे में थी। किसी भी कीमत पर वह इस सिलसिले में उठने वाली अफवाहों को रोकना चाहता था; और यदि इस सम्बन्ध में समाचार फैल ही गये हों तो उन्हें परिपक्व होने से पहले ही समाप्त कर देना चाहता था। उसके हृदयान्दोलन का दूसरा महत्त्वपूर्ण कारण यह था कि वह फिर एक बार इस ध्वस्त और असाध्य लड़की के प्रति तीव्र मोहजनित आकर्षण महसूस करने लगा था। वह जानता था कि लारा साधारण लड़कियों की तरह नहीं है। आरम्भ से ही उसने इस लड़की में एक अजीब सी असाधारणता पाई है। मन ही मन वह जानता था कि उसने उसके जीवन को कितने दुख और असाध्य दर्द से अस्त-व्यस्त कर दिया है। वह अपने नवीन भविष्य-पथ को चुनने के लिए कितनी कृतसंकल्प थी?

लेकिन यह बात स्पष्ट थी कि उसे लारा की मदद करनी ही चाहिए। उसके लिए एक अलग कमरा ले लेना चाहिए। मगर उससे दूर रहना होगा। उसकी परछाईं भी उस पर नहीं पड़नी चाहिए, वर्ना अपने भीषण स्वभाव के अनुसार न जाने वह क्या कर बैठे?

और कितनी ही मुसीबतें तो अभी तक बाकी ही हैं। कानून आँखें बन्द किये थोड़े ही रहेगा? इस घटना को अभी तक दो घंटे भी नहीं हुए होंगे, फिर भी पुलिस दो बार यहाँ चक्कर लगा चुकी है। प्रत्येक बार रसोईघर के पास सार्जेण्ट से मिल कर कोमारोवस्की मामले को ठीक-ठाक करने में लगा हुआ था। बात आगे चल कर वहाँ उलझती है, जहाँ उसे यह

साबित करना होगा कि लारा दरअसल गोली कोमारोवस्की पर मारना चाहती थी न कि कोर्नाकोव पर। बात यहीं पर खत्म थोड़े ही होगी? उस पर लगाये गये आरोपों के एक भाग का ही इससे स्पष्टीकरण होगा। फिर भी उस पर मुकद्दमा तो चलाया ही जा सकता है। उसके बचाव के लिए, कुछ भी करने के लिए कोमारोवस्की कटिबद्ध था। यदि मामला कोर्ट में आया तो वह निष्णात मनोवैज्ञानिकों की गवाही पेश करके साबित करने की चेष्टा करेगा कि लारा ने जो कुछ किया है, उसके लिए वह स्वयं जिम्मेवार नहीं है। वह हरचन्द कोशिश करेगा कि मुकद्दमा खारिज हो जाय।

विचारों की इस प्रतिच्छाया में वह धीरे-धीरे शांत होने लगा। रात बीत चुकी थी। सुबह का प्रकाश टेबल और कुर्सियों के नीचे चोरों की तरह घुस गया था। उसे मालूम हुआ कि अभी तक लारा की तबीयत ठीक नहीं है। वह अपनी एक वकील महिला-मित्र से मिलने चला गया। उसके पास आठ कमरों वाला फ्लेट था। इनमें से दो कमरे उसने किराये पर उठा रखे थे। संयोगवश एक कमरा अभी भी खाली था। उस कमरे को किराये पर लेकर वह लारा को वहाँ ले गया। वह उस समय भी बुखार के कारण बेहोश थी।

दो

एफिना औसिमोवना प्रगतिशील विचारों की स्त्री थी। किसी के बारे में अविवेकपूर्ण पूर्वधारणा बनाने के वह विरुद्ध थी। परमावश्यक स्पष्टवादिता के प्रति उसका दृढ़ आग्रह था। उसकी टेबल पर जर्मन सोश्यल डेमोक्रेटिक पार्टी के 1891 में स्वीकृत कार्यक्रम की लेखक के हस्ताक्षरों वाली एक प्रति हमेशा पड़ी रहती। इस लेखक के साथ उसके पति का एक चित्र दीवार पर टंगा हुआ था। अपने यहाँ आने वाले इस मरीज के बारे में उसकी धारणा अच्छी नहीं थी। उसका मत था कि लारा काम से जी चुराने वाली है, और इस समय बीमारी का ढोंग किये पड़ी है। अपनी इस विरक्त भावना को उसने गुप्त भी नहीं रखा।

दरवाजों को भड़ाम से खोलते बन्द करते, जोर-जोर से गाने की चेष्टा करके, अपने कमरों की ओर तेजी के साथ आते-जाते वह इस मरीज के प्रति अपने मन की विरक्ति ज़ाहिर करने से बाज नहीं आई।

अर्बत के बाजार में एक बड़ी भारी बिल्डिंग के ऊपरी हिस्से में उसका फ्लेट था। शिशिर ऋतु के आगमन से पूर्व मकान की खिड़कियों में से सर्द हवा आसमान में व्याप्त दिखाई देने लगती। बाढ़ के समय फैली हुई नदी की तरह यह हवा सारे फ्लेट में भर जाती। शिशिर के विदा होने से पहले ही वसंत ऋतु के आगमन की सूचना सारे फ्लेट में फैल जाती। दक्षिण से एक गर्म हवा का झोंका फ्लेट के अन्तर्भाग में दूर इंजिन की समुद्री शेरों की गर्जनाभरी आवाज़ के साथ घुस आया। लारा बिस्तर पर पड़ी पुरानी स्मृतियों को संजोने में समय व्यतीत कर रही थी।

उसे याद आई अपने बचपन के दिनों की वह अविस्मरणीय सन्ध्या, जब वह अपने परिवार के साथ यूराल्स से मास्को आई थी। उस बात को आज सात-आठ साल बीत चुके हैं। टैक्सी द्वारा अन्धकारमय गलियों में से गुज़रते हुए वे होटल की ओर जा रहे थे। रास्ते के लैम्पों की रोशनी गाड़ी चलाने वाले की कुबड़ी परछाईं डाल रही थी। वह परछाईं दीर्घाकार में फैलती विशाल रूप धारण करके छत के उस पार तक फैल गयी।—इस के बाद सिलसिला टूट गया।

मास्को के चर्चों की घंटियों का स्वर अन्धकार में काँपता रहता। दौड़ती हुई ट्रामों की घंटियों की आवाज़ कान के ठीक पास सुनाई देती। गाड़ी चली जा रही थी। गलियों में से गुज़रते वक़्त लारा दोनों ओर की रोशनी से डर जाती कि प्रकाश में घंटों और चक्कों का स्वर अधिक उभर उठेगा और उसे बहरा बना देगा! कोमारोवस्की ने उनके स्वागत के उपलक्ष्य में एक विशालाकार मतीरा भेंट किया था। उस मतीरे को देखकर, कोमारोवस्की के ऐश्वर्य और सम्पन्नता का अन्दाज उसे हो गया था। हरे रंग का मतीरा काट डाला गया और ठंडा-मीठा रसपूर्ण टुकड़ा उसकी ओर बढ़ाया गया। वह सावधान हो गयी। लेकिन फाँक लेने से वह

इनकार नहीं कर सकी। उसके उस स्तब्ध भाव ने मतीरे का स्वाद और सुगन्ध हर लिया था और मुँह का कौर उसके गले में अटक गया था। जिस तरह वह राजधानी की रातों से डर गयी थी, उसी तरह वह कोमारोवस्की से भी डरने लगी थी। सारी बातों का दरअसल यही स्पष्टीकरण है।

सब कुछ अब बदल चुका है। इतना कि पहचानना भी मुश्किल है। उसका उस पर कोई अधिकार नहीं, कोई दावा नहीं। कभी उसने अतीत की याद नहीं दिलाई। न वह उसे देखने ही आया। एक भद्र व्यक्ति की भांति दूर से ही वह उसकी मदद में तत्पर है।

कोलोग्रिवोव का स्वभाव उससे बिलकुल अलग किस्म का है। वे उससे मिलने आये थे। उन्हें देख कर वह बहुत खुश हुई। उनकी लम्बी-चौड़ी देह की उपस्थिति में उनकी बुद्धिमत्ता प्रकाशित हो रही थी। हमेशा की तरह उनके होठों पर मुस्कराहट थी, चेहरे पर प्रफुल्लता! आगत अतिथि ने अपने मस्त स्वभाव तथा शरीर से आधा कमरा भर दिया। अपने हाथ मलते हुए वे उसके बिस्तर पर बैठ गये। पिछली बार जब उन्हें पीटर्सबर्ग में धार्मिक-मिनिस्टरों की सभा में बोलने के लिए बुलाया गया था तो उन बुजुर्गों के बीच उन्होंने इस तरह भाषण दिया था, मानो सामने नटखट शैतान स्कूली लड़के खड़े हों। और इस समय यहाँ सामने पड़ी है उनकी बेटी जितनी ही एक लड़की। कल तक वह उनके परिवार की एक सदस्या थी। शायद ही उन्होंने इससे कभी विशेष बातचीत की हो अथवा उसकी ओर ध्यानपूर्वक देखा हो। उनकी हर क्रिया में सुशीलता थी, तेजस्विता थी, ऐसी मोहकता थी, जिसे सब लोग चाहते हैं, प्यार करते हैं। इस लड़की के साथ इस समय तटस्थता से बातचीत करने में उन्हें संकोच हो रहा था। उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा था कि बातचीत किस तरह शुरू की जाय ताकि उसके मर्मस्थल पर चोट न पहुँचे। मुस्कराते हुए उन्होंने वात्सल्य भाव से कहा—बेटी, अब कैसी हो? यह सारा नाटक करने की तुम्हें क्या सूझी?

रुक कर दीवार और छत पर सीलन के धब्बों की ओर वे इस प्रकार देखने लगे, मानो उन्हें वे बेहद नापसन्द हों। सिर हिला कर उन्होंने आगे कहा—डुसल्डोफ में चित्रकारों की एक अन्तरराष्ट्रीय प्रदर्शनी होने वाली है। चित्र, मूर्तियाँ, फूल—मैं वहीं जा रहा हूँ। देखो तो, यहाँ कितनी सीलन है? रहने के लिए अच्छी जगह चाहिए। यह जो देवी जी हैं न, इस गृह की स्वामिनी—आपस की बात है—बुरा मत मानना, भगवान की सृष्टि का प्रलयंकारी नमूना है। मैं उन्हें अच्छी तरह से जानता हूँ। बिस्तर पर पड़े अब तुम्हें काफी दिन हो गये हैं। थोड़ा-बहुत बाहर जाकर घूम आया करो। अब तो तुम उठ-बैठ सकती हो। यह कमरा बदल डालो। कोई काम हाथ में ले लो। हो सके, तो आपकी पढ़ाई खत्म करो। यहाँ मेरा एक चित्रकार मित्र है। वह दो साल के लिए तुर्किस्तान जा रहा है। उसके स्टूडियो में पार्टीशन है। छोटा-सा फ्लेट समझ लो। वह चाहता है कि किसी अच्छे आदमी को, जो उसके घर की निगरानी कर सके, यह जगह दे दे। इस बारे में यदि तुम्हारी राय हो, तो मैं सब-कुछ बन्दोबस्त कर दूँ। एक और बात! बहुत पहले ही मुझे यह सब करना चाहिए था; क्या कहूँ, बड़ा कठिन कर्तव्य-सा मुझे लगा। चूँकि लोपा—यह थोड़ी-सी रकम है, उसके संरक्षण के लिए छोटी-सी दक्षिणा। नहीं, 'नहीं' मत कहो। मैं कहता हूँ, ज़िद मत करो। सच, तुम्हें यह लेनी ही होगी।

विरोध, आँसुओं और कठिन संघर्ष के बावजूद भी उन्होंने लारा को बाध्य कर दिया कि वह हजार रूबल्स का चैक स्वीकार कर ले। तन्दुरुस्त होने पर कोलोग्रिवोव द्वारा प्रस्तावित जगह पर रहने के लिए लारा चली गयी।

यह दुमंजिली विशालकाय बिल्डिंग थी। नीचे की ओर एक गोदाम था। दूसरे हिस्से में घास-फूस, अनाज और पक्षियों के घोंसलों के तिनके बिखरे पड़े थे। कबूतर घमण्ड भरी आवाज़ में खिड़की के पास शोर मचाते हुए फड़फड़ाते रहते। पथरीले गटर में दौड़ लगाने वाले चूहों की आवाज़ कभी-कभी सुनाई दे देती।

तीन

लारा के कारण पाशा आन्तिपोव काफी दुखित था। जब तक वह संकटापन्न अवस्था में थी, उसे लारा को देखने की इजाजत नहीं मिल सकी। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। जहाँ तक उसे मालूम था, लारा की गोली का लक्ष्य था वह व्यक्ति, जिसने कि उन्हें संरक्षण दिया था और जो इस समय की संकटपूर्ण परिस्थितियों से बचाने के लिए इतनी कोशिश कर रहा था। लारा के सिर पर लटक रही दण्डाज्ञा से वही उसे सुरक्षित रखे हुए था। लारा का उससे थोड़ा-सा परिचय मात्र ही तो था। मन ही मन वह कोमारोवस्की के प्रति कृतज्ञता महसूस करता।

लारा स्वस्थ हो गयी। उसने पाशा को बुला कर कहा—पाशा, मैं एक खराब लड़की हूँ। तुम मुझे नहीं जानते। तुम्हें बिलकुल मालूम नहीं कि मैं किस प्रकार की लड़की हूँ। किसी दिन तुम्हें सब कुछ बता दूँगी। इस बारे में अभी कोई बात मत करना। तुम जानते हो न, कि जब भी मैं तुमसे बात करने की कोशिश करती हूँ, चीख पड़ती हूँ। मुझे तुम अकेली छोड़ दो। मेरे बारे में सब कुछ भूल जाओ। मैं तुम्हारे लायक नहीं हूँ।

इसके बाद हृदय-विदारक असह्य दुखद दृश्य उपस्थित हो जाता। अर्बत स्ट्रीट में जब तक लारा रही, यही सब चलता रहा। आंसुओं से भीगे चेहरे से पाशा एक ओर चुपचाप खड़ा रहता। गृह-स्वामिनी पाशा को इस हालत में देखकर लारा के कमरे की ओर दौड़ पड़ती और पेट पकड़ कर इतने जोर से और इतनी देर तक हँसती कि लारा बर्दाश्त नहीं कर सकती। वह चीखती—मैं इतनी ज्यादती बर्दाश्त नहीं कर सकती। खामोश रहने वाला यह आदमी! सेमसन!

पाशा को अपने अशुद्ध प्रेम से मुक्त करने के लिए, अपने प्रति उसके प्यार को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए, उसके दु:ख को समाप्त करने के लिए लारा ने घोषित कर दिया कि वह उसके भले के लिए, उसके साथ सम्बन्ध तोड़ रही है। अब पाशा के साथ उसका कोई लेना देना नहीं है। इसलिए, कि वह उसे प्यार नहीं करती। लेकिन आत्मत्याग करते समय

वह इस तरह सिसकने लगती कि उसकी बातों पर विश्वास करना कठिन हो जाता।

पाशा को संदेह होता कि लारा ने घनघोर पाप किया है। उसके किसी भी शब्द पर उसे विश्वास नहीं होता। उससे घृणा करने और उस पर अभिशाप बरसाने के लिए भी वह तैयार था। लेकिन वह उसे आकण्ठ प्यार करता था। उसके प्रत्येक विचार के प्रति उसका द्वेषपूर्ण विरोध था। जिस तकिये पर उसका सिर रखा हुआ था, जिस बर्तन से वह पानी पीती थी, उनके प्रति भी उसके मन में द्वेष था। अन्त में यह तय किया गया कि जब वे एक दूसरे को अपने दिमाग से नहीं निकाल सकते तो उन्हें अब निश्चित रूप से आवश्यक कदम उठा लेना चाहिए। बिना इम्तिहानों की प्रतीक्षा किये दोनों ने तुरन्त शादी करने का निश्चय कर लिया। आगामी रविवार को ही ब्याह होने वाला था। मगर लारा की इच्छानुसार उसे एक बार और टाल दिया गया।

सफलतापूर्वक ग्रेजुएट होने के बाद उनका ब्याह सोमवार को हुआ। उसकी सहपाठिन् तुस्या की माँ चिपुर्को द्वारा ब्याह की सारी व्यवस्था की गयी थी। उनकी आवाज़ मधुर थी, हृदय उदार। उनके दिमाग में कुछ तो परम्परागत और कुछ उनके प्रतिभाशाली दिमाग की अपनी उपज के अनेक वहम भरे हुए थे। ब्याह वाले दिन कपड़े पहनाते हुए चिपुर्को ने लारा के कान में अपनी मधुर स्वर में एक खास किस्म की आवाज़ की। उस दिन बड़ी गर्मी थी। शहर और बगीचे के धूल से भरे रास्ते और गिरजाघरों के सुनहले गुम्बद गुलाबी दिखाई दे रहे थे। हवा का कहीं नामोनिशान नहीं था; और सूर्य की गर्मी से आँखें चौंधिया जाती थी। उस दिन बहुत सारे लोगों की शादियाँ होने वाली थीं। नई सजधज में सजे हुए शृंगारयुक्त नवयुवक तथा नवयुवतियाँ चारों ओर दिखाई दे रही थीं।

विवाह-वेदी तक जाने के रास्ते पर जो कालीन बिछा हुआ था उस पर लारा ने ज्योंही कदम रखे चिपुर्को ने मुट्ठी भर कर उनके फलने-फूलने

की कामना सहित कुछ सिक्के उछाल दिये। इसी इरादे से चिपुर्को ने धीरे से लारा को कहा कि जब ब्याह का मोहरा सिर पर रखा जाय तो अपनी नंगी अंगुलियों से क्रॉस के निशान बनाने के बजाय उन्हें घूंघट तथा आंचल से ढक ले। साथ ही उसने यह भी बताया था कि वह मोमबत्तियों को अपने पति की मोमबत्तियों से ऊँची रखे ताकि घर में उसका शासन हो। लेकिन लारा ने अपना समस्त भविष्य पाशा के लिए समर्पित करते हुए मोमबत्तियों को नीचे ही रखा; लेकिन व्यर्थ! पाशा ने अपनी मोमबत्तियाँ और नीचे झुका लीं।

पाशा द्वारा सजाये गये स्टूडियो में, जहाँ इस समय लारा रहती थी, ब्याह के भोज में सम्मिलित होने के लिए वे सब गिरजाघर से सीधे वहीं पहुँच गए।

मेहमानों ने शोर मचाया—यह ज्यादती है।

दूसरों ने समर्थन में कहा—आने दो इसमें मधुरता।

वर और वधू शर्म से लाल हो गये। फिर रूसी रिवाज के अनुसार उन्होंने सबके सामने एक दूसरे को चूम लिया। चिपुर्को ने गीत आरम्भ किया—'भगवान तुम्हें दे प्यार और दे एकसूत्रता!' तथा 'पड़ने दो सलवट कपड़ों में, सुन्दर बाल बिखर जाने दो!'

मेहमानों के चले जाने के बाद जब दोनों अकेले रह गये तो अचानक पाशा को इस शांति में बेचैनी-सी महसूस होने लगी। पाशा ने पर्दे खींच कर कोशिश की कि बाहर सड़क पर जलने वाले लैम्प की रोशनी अन्दर आने न पावे। उसे बड़ी झुंझलाहट हो रही थी, मानो कोई उन पर निगाह बनाये हुए है। अरे, वह प्रकाश की रेखा के बारे में अधिक चिन्ता कर रहा है, बनिस्बत लारा के प्रेम के बारे में सोचने के।

उस सुदीर्घ रात्रि में पाशा अतल गहरी निराशा में डूब-सा गया; साथ ही खुशी के उच्चतम शिखर तक पहुँच गया। लारा की स्वीकारोक्तिपूर्ण बातों ने उसके तमाम सन्देह बदल डाले। उसने जो कुछ पूछा, उसके

प्रत्युत्तर में उसकी आत्मा उसे नीचे गिराती रही। उसका घायल मन लारा की दैवी-वाणी का साथ नहीं दे पा रहा था।

वे सुबह तक बातचीत करते रहे। एक रात में ही पाशा के जीवन में असंदिग्ध आकस्मिक परिवर्तन हो गया। दूसरे दिन नींद से उठने पर उसे इस परिवर्तित रूप को देखकर आश्चर्य हो रहा था। वह सोच रहा था—क्या अभी भी वह पाशा आन्तिपोव है? क्या अभी भी उसे इसी नाम से पुकारा जा सकता है?

चार

लारा और पाशा दोनों ने समान ओजस्विता के साथ अपनी-अपनी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त की। दोनों को यूराल्स के एक शहर में नौकरी मिल गयी थी।

फिर मदिरापान का दौर चला, गीत गाये गये, शोरगुल मचा।

स्टूडियो के पार्टीशन के पीछे, लारा सन्दूक, झोले और सूटकेस में सामान रखकर रवाना होने की तैयारियाँ कर रही थी। सारा सामान व्यवस्थित रूप से रख कर उसे करीने से लगाने में वह व्यस्त थी। दूसरी ओर पाशा अपने मेहमानों का मनोरंजन कर रहा था।

कॉलेज के रजिस्ट्रार से अपनी जन्म-तिथि का सर्टिफिकेट तथा अन्य जरूरी कागजात लेकर, तथा कुली के साथ अनेक थैलों में सामान लिए वह वापस लौट आई। आगत अतिथियों से मिल कर, उसने हाथ मिलाते हुए कपड़े बदलने के लिए वह शयन कक्ष की ओर चली गयी। उसके वापस आते ही लोगों ने प्रसन्नता भरी तालियाँ बजाईं; और उसके बाद वही शोरगुल शुरू हो गया जो कुछ दिन उस विवाह भोज के पहले हुआ था। वोदका की मादक धारा बह निकली। टेबल पर खाना सजाया हुआ था। लोग कुछ न कुछ कह रहे थे, भाषण दे रहे थे, विचित्र आवाज़ों में शोर मचा रहे थे। हँसी-मजाक की वर्षा हो रही थी।

लारा ने अपने पति से कहा—मैं बहुत थक गई हूँ। तुम सारी व्यवस्था संभाल लोगे?

—संभाल लूँगा।

—कुल मिला कर आज मैं बहुत खुश हूँ। बहुत सुखी हूँ। और तुम?

—बहुत ज्यादा। लेकिन यह लम्बी कथा है।

कोमारोवस्की को अपवाद रूप से नवयुवकों की इस पार्टी में सम्मिलित कर लिया गया था। वह कह रहा था कि दोनों मित्रों के चले जाने पर वह कितना वियोग-दुख महसूस करने लगेगा। उसके लिए सारा शहर रेगिस्तान बन जायेगा। वह इतना भावुक बन गया कि उससे बोला नहीं जा रहा था। उसने पाशा से वचन लिया कि वे उसे समय-समय पर पत्र लिखते रहेंगे। यदि उसका मन यहाँ नहीं लगा और वह उनका वियोग न सह सका तो समय निकाल कर उन्हें देखने के लिए वह यूराल्स अवश्य आयेगा।

लारा ने जोर देकर लापरवाही के साथ कहा—यह सब बिलकुल व्यर्थ है और बेतुका भी। पत्र लिखना, सहारा रेगिस्तान, आदि—इन सबका क्या मतलब होता है? रही वहाँ आने की बात, सो कभी सोचना भी मत। भगवान की असीम कृपा के बल पर हमारे बिना भी तुम्हारा काम चल ही जायेगा। हम कोई ऐसे दुर्लभ विचित्र प्राणी तो हैं नहीं। क्या कहते हो पाशा? अपना अपना भाग्य सबके साथ है। निश्चय ही तुम्हें बहुत से नौजवान दोस्त मिल जायेंगे।

अचानक उसके वक्तव्य का सिलसिला टूट गया। वह भूल गई कि वह क्या कह रही है। वह रसोईघर की ओर चली गई और सामान बाँधने में व्यस्त हो गई। वह अपने काम में इतनी तन्मय थी कि बाहर बैठे मेहमानों की आवाज़ उसे सुनाई नहीं दे रही थी। उनकी उपस्थिति और अस्तित्व की बात, बाहर के कमरे से आने वाले अट्टहास से उसे अनुभव हुई। उसने सोचा शराब पी लेने पर प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को भिन्न रूप में बताने की चेष्टा करने लगता है। जितनी ही अधिक शराब पी जायेगी उतनी ही उग्र उसकी नाटकीय चेष्टाएँ होंगी। इसी समय दूर से सुनाई देने वाली आवाज़ के आकर्षण ने उसे खिड़की के पास आकर्षित

कर लिया। मैदान में बँधा हुआ टाँगोंवाला घोड़ा कूदता हुआ फिर रहा था। पता नहीं यह घोड़ा किसका था और किसने उसे बाहर के बाग में इस तरह छोड़ दिया था। बँधे हुए उस घोड़े की टापों की आवाज़ के साथ उसे किसी भिन्न प्रदेश की कल्पना का गहरा सुख महसूस होने लगा।

नाद्या अपने परिवार की ओर से उसके विवाहोपलक्ष में शुभकामनाओं के साथ एक उपहार लाई थी। अपनी यात्रा का सन्दूक खोल कर उसने एक कीमती नेकलेस निकाला।—'यह गुलाबी रत्नों का है। इसे शायद नीलमणि कहते हैं।'

लारा ने नाद्या को अपने पास टेबल पर बिठाया और उसे खाने-पीने के लिए बाध्य कर दिया। नेकलेस सामने टेबल पर पड़ा था। एकबारगी उसे जी भर कर देखने का लोभ वह संवरण नहीं कर सकी। छोटे अंगूरों की तरह, ओस के दानों की भाँति, मखमली डिब्बे में वह नेकलेस दिखाई दे रहा था। जो अब तक बच गये थे उन्होंने नाद्या का साथ देने के लिए फिर शराब पी, और नशे में धुत्त हो गये।

ये सब लारा और पाशा को स्टेशन पहुँचाने के लिए आये थे। रात अधिक हो चुकी थी। गहरी नींद में मस्त सभी लोग इसीलिए वहीं सो गये थे। नाद्या के आने से पहले भी काफी लोग नाक बजाने लगे थे। लारा को पता ही नहीं चला कि कब वह लागोंडिना के पास सोफे पर सो गयी।

बाग में से आती हुई आवाज़ ने उसे जगा दिया। घोड़े का मालिक उसे पकड़ने के लिए आ गया था। आँखें खोल कर उसने मन ही मन पूछा—इस समय पाशा क्या कर रहा होगा? कमरे में चक्कर काट रहा होगा?

लेकिन पाशा के भरोसे उसने देखा एक दैत्याकार मनुष्य को। उसके चेहरे पर ठुड्डी के पास दाग़ था जो कि भौंहों तक फैला हुआ था। उसे मालूम हो गया कि यह चोर है। उसने चीखना चाहा। लेकिन उसके गले से आवाज़ नहीं निकली। नेकलेस की उसे याद आई। कुहनी के बल ऊँची होकर उसने टेबल पर सुरक्षित रूप से पड़े नेकलेस की ओर देखा। चोर की निगाह अभी तक वहाँ नहीं पहुँची थी। वह सिर्फ़ सूटकेस की

तलाशी ले सका था जिसे कि आज लारा ने बड़ी मेहनत से बाँध कर तैयार किया था। लारा स्वयं इस समय अर्द्ध निद्रावस्था में और नशे में थी। एक बार उसने फिर चिल्लाने की कोशिश की। लेकिन व्यर्थ। पास सो रही इरा के पेट में उसने अपनी कुहनी चुभा दी। इरा दर्द के मारे चीख पड़ी। उसकी आवाज़ के साथ ही लारा का कंठ भी खुल गया। सारा सामान वहीं छोड़कर चोर भाग खड़ा हुआ। कुछ लोग बिना यह जाने कि माजरा क्या है, उसका पीछा करने के लिए उछल कर दौड़ पड़े। लेकिन तब तक वह गायब हो चुका था।

इस हलचल ने सब को जगा दिया था। इसके बाद लारा ने किसी को सोने नहीं दिया। उनके लिए चाय बनाई गई। स्टेशन जाने का समय हो गया था।

फिर लारा सामान बांधने में व्यस्त हो गई। उसने हाथ जोड़ कर पाशा और कुलों से कहा कि उसकी मदद करने के बहाने उसके काम में विघ्न न डालें।

ठीक समय पर वे सब स्टेशन पहुँच गये। धीरे-धीरे गाड़ी रवाना हो गई। अपना हैट हिलाते हुए वे अपने मित्रों को विदा कर रहे थे। 'हुर्रा' की आवाज़ स्टेशन पर गूँज उठी।

गाड़ी की रफ्तार तेज हो गयी।

पाँच

तीसरे दिन मौसम बहुत ही खराब था। महायुद्ध के बाद यह दूसरी पतझड़ थी। ब्रुसिल्वो की आठवीं सेना कारपेंथाइन में जमा थी। हंगेरी पर आक्रमण करने के लिए तैयार यह सेना अब पीछे हट रही थी। लड़ाई से पहले गेलेसिया रूस के अधिकार में था, वहाँ से उन्हें खदेड़ दिया गया था। इस पलायन से बड़ी भारी क्षति हुई थी।

यूरा को अब डॉ. ज़िवागो के नाम से लोग जानने लगे थे। अस्पताल के स्त्रियों वाले विभाग में वह टोन्या को ले आया था। प्रसूति विभाग के

दरवाजे पर उसने अपनी पत्नी को विदा दी। बाहर बरामदे में खड़ा यूरा नर्स का इन्तजार कर रहा था ताकि उसे टोन्या का समाचार मिल सके और जरूरत पड़ने पर वह स्वयं हाजिर हो सके। वह स्वयं जल्दी में था। उसे अपनी अस्पताल जाना था; और रास्ते में अपने दोनों मरीजों को भी देखना था। अपना कीमती वक्त इस तरह खराब होने से वह चंचल हो उठा था। वह खिड़की के पास खड़ा बाहर की ओर देख रहा था। वर्षा ऋतु की हवा तूफान के कारण इन्द्रधनुष का प्रकाश बिखेर रही थी। अभी तक अन्धेरा गहरा नहीं हो पाया था। काँच से ढंकी हुई खिड़की में से दूर के मकान और अस्पताल के दूसरे भाग की ओर जाने वाली ट्राम अभी भी स्पष्ट दिखाई दे रही थी। निरन्तर धीमी बरसात हो रही थी। बारिश की इस मंदगति से तेज हवाएँ शायद नाराज हो उठीं। फटे हुए कम्बल को धोती हुई-सी हवाएँ एक दिशा में अधिक तेज हो उठीं। दो डिब्बों वाली ट्राम अस्पताल के प्रवेशद्वार में घुस गयी। उसमें घायल आदमी भरे हुए थे। मास्को की अस्पताल में लुत्सक की लड़ाई के बाद दुखद रूप से भीड़ बढ़ गयी थी। जमीन पर, रास्ते पर, जहाँ भी जगह मिलती घायल रख दिये जाते। इस भीड़ का प्रभाव स्त्रियों की चिकित्सा के विभाग पर भी पड़ा था।

थकान के कारण यूरा खिड़की से हट गया। उसे हॉली-क्रास की एक घटना याद आ गयी। वहाँ वह काम करता था। सर्जिकल-वार्ड में एक स्त्री कुछ दिनों पहले मर गयी थी। यूरा ने बताया था कि वह कलेजे की बीमारी से पीड़ित थी। लेकिन साथी डाक्टरों का खयाल था कि यह उसकी भूल है। मृत्यु के बाद की शव-परीक्षा आज होने वाली थी। इस काम के लिए आज जो व्यक्ति ड्यूटी पर था, वह अच्छा-खासा पियक्कड़ था लिहाजा ठीक से कहना मुश्किल था कि वह क्या परिणाम घोषित करेगा।

स्त्री-रोगों का विशेषज्ञ डाक्टर बाहर निकल आया। अपने विषय का वह निष्णात सुप्रसिद्ध डाक्टर था। उसे जब भी कोई सवाल पूछा जाता, कंधे हिलाकर आँखें मिचका कर कहा करता—'विज्ञान ने जो कुछ उन्नति

की है वह अपर्याप्त है। अभी तक संसार की बहुत सी बातों का अन्वेषण होना शेष है।' यूरा के पास से गुजरता हुआ डाक्टर बिना कुछ कहे, कंधे हिलाकर इस प्रकार का भाव जताता गया 'धीरज रखो। चिन्ता की कोई बात नहीं।'

स्त्री-रोगों का यह चिकित्सक जितना ही संयत भाषी था, उतनी ही बातूनी उसकी सहायिका थी। उसने कहा—तुम्हारी जगह यदि मैं होती तो मैं तुरन्त घर चली जाती। फिलहाल जल्दी ही कुछ होने की सम्भावना नहीं है। कुछ भी आसार नजर आने पर हॉली-क्रास अस्पताल में मैं तुम्हें इत्तला कर दूँगी। सहज स्वाभाविक प्रसव होने के तमाम लक्षण हैं। चीरफाड़ की नौबत नहीं आएगी। यद्यपि नाभि के नीचे का हिस्सा तंग है और बच्चे का माथा पीछे के भाग में है। पीड़ा और ऐंठन नहीं है। इन तमाम बातों से थोड़ी चिन्ता जरूर होती है। लेकिन इस समय इन सबके बारे में कहना कठिन है। प्रसव-पीड़ा शुरू होने पर तकलीफ कैसा रूप धारण करती है, इसी पर सब कुछ निर्भर है। तभी कुछ कहा जा सकेगा।

दूसरे दिन यूरा ने फोन किया। एक नौकर चोंगा उठा कर उसे ठहरने के लिए कह कर चला गया। उन दस मिनटों तक यूरा की हालत बड़ी दयनीय-सी हो गई। जब वह वापस आया भी तो अपर्याप्त सूचना के साथ। अपनी गंवारू भाषा में उसने कहा—'वे कहते हैं कि तुम्हें कह दिया जाय कि तुम अपनी बीवी को बहुत जल्दी ले आये। उसे वापस घर ले जाओ।' यूरा ने क्रोधित होकर किसी जिम्मेदार व्यक्ति को बुलाने के लिए कहा। इसके बाद एक नर्स ने आकर बताया कि लक्षण भ्रमपूर्ण हैं। फिर भी चिन्ता की कोई बात नहीं। एकाध दिन लग सकता है। तीसरे दिन उसे बताया गया कि प्रसव-पीड़ा आरम्भ हो चुकी है, सुबह से रुक-रुक कर दर्द शुरू हो गया है। पानी की थैलियाँ फूट चुकी हैं।

यूरा बिना सोचे विचारे अस्पताल की ओर दौड़ पड़ा। अधखुले रास्ते में उसने टोन्या की मार्मिक आवाज़ सुनी। उसकी आवाज़ ऐसी लग रही थी

जैसे किसी रेल-दुर्घटना में घायल और अंग-भंग जीवित व्यक्ति को रेल के पहियों के बीच से निकाला जा रहा हो। टोन्या को देखने की इजाजत उसे नहीं मिल सकी। उसने दाँतों तले नाखून इतनी जोर से दबाया कि खून निकल पड़ा। वह खिड़की के पास जाकर चुपचाप खड़ा हो गया। बाहर तिरछी बरसात बरस रही थी। एक नर्स बाहर निकली। साथ ही यूरा को नवागत शिशु के मधुर क्रन्दन की आवाज़ सुनाई दी। खुशी के मारे मन ही मन उसने कहा—वह बिलकुल सुरक्षित है। बिलकुल सुरक्षित।

—इस सुरक्षित प्रसूति के लिए बधाई, डाक्टर। लड़का है।

कुछ रुककर मधुर आवाज़ में उसने कहा—अभी आप अन्दर नहीं जा सकेंगे। जब सब कुछ तैयार हो जायेगा, तब हम आपको बुला लेंगे। तुम्हें इसके लिए लम्बा चौड़ा बयान देना होगा। उसने काफी कष्ट भुगता है। पहली प्रसूति थी न इसलिए। पहली बार में हर चीज़ में तकलीफ होती ही है।

यूरा एक ही बात सोच रहा था कि वह बिलकुल सुरक्षित है। नर्स की किसी बात की ओर उसका ध्यान नहीं था। अभी-अभी जो कुछ घटित हो चुका है, उसके साथ उसे शामिल करके नर्स इस तरह कह रही है कि इस सबमें उसका कोई बहुत बड़ा महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। वास्तव में वह इस सारे गोरखधंधे में क्या करे? पिता-पुत्र! बिना किसी खास चेष्टा अथवा तकलीफ के प्राप्त इस पितृत्व के प्रति गौरव करने लायक उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। यह सब उसकी चेतना के बहिर्मार्ग में था। अन्तर में वह भारी खतरे से टोन्या के सुरक्षित होने के समाचार से खुश था।

अस्पताल के पास ही अपने एक मरीज को देख कर आध घंटे में वह वापस लौट आया। बरामदे में स्त्री-रोगों का वही चिकित्सक मानो धरती फाड़ कर उसके सामने प्रकट हो गया। उसने यूरा से धीमे स्वर में पूछा, ताकि मरीज उसकी बात सुन न सके—अपनी समझ में तुम यहाँ

क्या कर रहे हो? क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है, घावों की सड़ांध, रक्त आदि की बातों से तुम्हारे मन पर आघात पहुँच रहा है? बड़ा बढ़िया तरीका है, यह तुम्हारा। और तुम अपने आप को डाक्टर कहते हो?

—मेरा मतलब यह नहीं है। सिर्फ़ इस छेद में से मुझे उसे एक बार देख लेने दो।

—ओह, यह बात है। ठीक है। यदि तुम्हारी यही मर्जी है तो देख लो। लेकिन इस बात का खयाल रखना कि मेरी नजरों में न पड़ो। यदि मरीज ने तुम्हें देख लिया, तो तुम्हारी गर्दन मरोड़ डालूँगा। हत्या हो जायगी।

वार्ड के अन्दरूनी भाग में दो औरतें सफेद कपड़ा लपेटे दरवाजे की ओर पीठ किये खड़ी थीं, एक धाय थी, दूसरी नर्स। नर्स की हथेलियों में एक नन्हा सा मानव सन्तान विरोध-सा करते हुए रो रहा था। नारा काटने के लिए धाय पट्टी बाँध रही थी। टोन्या बिस्तर पर पड़ी थी। उसका पलंग काफी ऊँचा था। अभी-अभी गुज़र चुकी दुर्दान्त तकलीफ के बादलों के बीच टोन्या थकी हुई पड़ी थी। यूरा को लगा कि जैसे कोई छोटा-सा जहाज समुद्र के किनारे आराम से पड़ा हो। अज्ञात देश देशान्तरों से आने वाले इस जहाज को मानो खाली कर दिया गया हो। मृत्यु रूपी पानी की उत्ताल तरंगों को चीर कर, देशान्तर में बसने वाले जीवन का भार लिए वह किनारे पहुँच गया हो। अभी-अभी ऐसी ही एक आत्मा जहाज से नीचे उतरी है। जहाज ने लंगर डाल दिया है। उसका पार्श्वभाग खाली हो गया है। वह आराम कर रहा है। दूसरे देशों की, जहाँ से वह चला आया है, अब उसे याद नहीं रही। किसी को मालूम नहीं कि उसने किस देश का ध्वज लहरा दिया है। कोई ऐसी भाषा नहीं जानता कि आगत व्यक्ति के साथ वार्तालाप करके जानकारी हासिल कर सके।

अस्पताल पहुँचने पर यूरा को प्रत्येक व्यक्ति ने हार्दिक बधाई दी। उसे आश्चर्य हो रहा था कि इतनी जल्दी यह खबर फैल कैसे गई? वह

अस्पताल के कर्मचारियों के कमरे से चला गया। चारों ओर अन्तहीन भीड़ पसरी हुई थी। आगत व्यक्तियों के कीचड़ से सने बर्फ़ भरे जूतों की गन्दगी तथा सिगरेट के टुकड़ों आदि से कमरा भर-सा गया था। खिड़की के पास एक बुजुर्ग व्यक्ति ड्यूटी पर तैनात था। अपने चश्मे के ऊपरी भाग से पानी के एक बर्तन में पड़े किसी तरल पदार्थ की जांच कर रहा था। यूरा की ओर देखे बिना ही उसने कहा—बधाई!

—धन्यवाद।

—मुझे धन्यवाद का क्या करना है? मुझे उसकी जरूरत नहीं। पिचुझकिन ने मृतक शव की परीक्षा कर ली है। प्रत्येक व्यक्ति बहुत ही प्रभावित हुआ। तुमने जो बीमारी बताई, वही थी। तुम्हारा विश्लेषण बिलकुल सही था—सभी यही कह रहे हैं। तुम्हारे विषय में ही सब लोग चर्चा कर रहे हैं।

इसी समय मुख्य डाक्टर ने अन्दर आकर दोनों का अभिवादन करते हुए कहा—यह सब क्या है? यह कितनी गन्दी जगह है जी? हाँ ज़िवागो, यह वही बीमारी थी। तुमने ठीक ही बताया। हम सब गलत थे। कैसी माया है। बधाई। एक बात और तुम्हारी योग्यता की फिर खोज हो रही है। इस बार मैं उन्हें रोक नहीं सकता। डाक्टरों का भयंकर अभाव है। जल्द ही तुम्हारी नाक में बारूद की गंध भभकने लगेगी।

छः

पाशा दम्पति युर्यातिन में चार साल तक व्यवस्थित रूप से जम कर रहे। लारा के पास काफी काम था। घर-गृहस्थी देखनी थी, अपनी तीन वर्षीय कन्या कात्या की देखभाल करनी थी। अपनी समझ में उसकी नौकरानी मर्फुतका उसकी मदद में तत्पर रहती, मगर वह लारा के लिए पर्याप्त न होता। पाशा की प्रत्येक बात का ध्यान रखने से उसे छुट्टी मिल ही नहीं पाती थी। इसके अतिरिक्त कन्या विद्यालय में उसे पढ़ाने के लिए भी जाना होता। एक क्षण का विश्राम किए बिना वह निरन्तर काम में लगी रहती। वह बहुत खुश थी। सुखी थी। इसी तरह

के जीवन की उसने कल्पना की थी। उसे युर्यातिन बेहद पसन्द था। वह यहीं पैदा हुई थी।

आगत शिशिर ऋतु के लक्षण दिखाई देने लगे थे। लोग नदी में से बोट निकाल कर, गाड़ी में लाद कर शहर की ओर ला रहे थे। घर के आँगन में ये बोट पड़े रहेंगे और उनकी छाया में बच्चे खेलते रहेंगे। लारा के किराये के मकान में ऐसा ही एक बोट पड़ा था। ग्रीष्म ऋतु की सफेद बोट की छाया में कात्या खेल रही थी। युर्यातिन के प्रान्तीय रास्ते लारा को बेहद पसन्द थे। यहाँ के लोग सरल थे, बुद्धिमान थे और उन पर सहज ही विश्वास किया जा सकता था। फेल्ट जूते और भूरे रंग के फलेनेल आस्तिन के कोट पहनने की यहाँ आम रिवाज थी। लारा को यह धरती और उसके सीधे सादे लोग बहुत ही पसन्द थे।

इन लोगों के विपरीत, साधारण रेल्वे कामगार का पुत्र पाशा यहाँ आकर रईस बन गया था। युर्यातिन के लोगों के बारे में उसकी धारणाएँ लारा के विपरीत थीं। उन्हें वह आचारहीन और पिछड़े हुए लोग मानता। तेजी से पढ़ने और उसे याद रखने की उसकी असाधारण प्रतिभा अब और अधिक उभर आई थी। अतीत में उसने जो कुछ किया, उसके लिए लारा धन्यवाद की पात्र थी। अपने प्रान्त से यहाँ आने के बाद तो उसे लगने लगा था कि लारा उसके मुकाबले में अधिक विद्वान नहीं है। अपने साथी स्कूली मास्टरों से निश्चय ही वह बहुत आगे बढ़ा हुआ था। वह अक्सर शिकायत किया करता कि इस संगति में उसका दम घुट रहा है। अपनी उलझी हुई विचारधारा के कारण स्वदेशभक्ति की बात इस युद्ध-काल में उसे बेतुकी-सी लगने लगी थी। पाशा श्रेष्ठ साहित्य लेकर ग्रेजुएट हुआ था। इस समय वह लैटिन और प्राचीन इतिहास पढ़ाया करता था। अपने स्कूली दिनों से ही विज्ञान, शरीर-शास्त्र और गणित के प्रति उसकी लगन थी। यह लगन अब अधिक प्रस्फुटित हुई। घर पर अध्ययन करते हुए वह विश्वविद्यालय के स्तर पर आ गया था। वह चाहता था कि वह विज्ञान में डिग्री हासिल

कर वैज्ञानिक विभाग में तबादला करवा कर अपने परिवार के साथ पीटर्सबर्ग चला जाय। रात-रात भर पढ़ाई करते रहने के कारण उसका स्वास्थ्य खराब हो गया था और वह नींद न आने के रोग से पीड़ित हो गया।

लारा के साथ उसके सम्बन्ध अच्छे होते हुए भी स्पष्ट नहीं थे। वह उसकी कृपा और मोह से त्रस्त-सा हो उठता। लेकिन वह लारा की आलोचना कभी न करता। उसे डर था कि उसके किसी साधारण से निर्दोष आलोचनात्मक शब्द का अर्थ वह कहीं गलत न ले बैठे। उसे भय रहता कि कहीं भूल से कोई ऐसी बात न हो जाय जिससे कि लारा के किसी और के साथ एक दिन के सम्बन्ध की बात उसकी ओर से हाजिर हो जाय। इस बात से वह भयभीत-सा हो उठा कि लारा कहीं, उसके दिमाग में उसके प्रति, उठने वाले बेतुके विचारों से परिचित तो नहीं है? परिणामस्वरूप दोनों एक दूसरे के प्रति सहज-स्वाभाविक रूप में नहीं थे। दोनों एक दूसरे के प्रति अधिक उदार व्यवहार करने की चेष्टा किया करते।

आज रात को उनके यहाँ मेहमान आने वाले थे। लारा की प्रधानाध्यापिका और पाशा के कुछ साथी अध्यापकों के साथ पंचायत कोर्ट का एक सदस्य भी आने वाला था। पाशा के दृष्टिकोण के अनुसार वे सब गधे थे। पाशा लारा की नाटकीय प्रसन्नता को देख कर खुश हो रहा था। सोच रहा था, लारा अपने चेहरे से तो ऐसा ज़ाहिर कर रही है, मानो ये सब लोग उसे बेहद पसन्द हों।

उन सबके चले जाने के बाद, मर्फुतका के साथ घर का काम-काज निपटाने में लारा को काफी समय लग गया। कपड़े बदल कर वापस आकर उसने देखा कि कात्या ठीक से ओढ़ कर सो गयी है और पाशा को भी नींद आ गयी है। वह अपने पति के पास, ठीक शिशु के साथ माँ की सरलता सहित लेट गयी। लेकिन पाशा सोने का सिर्फ़ बहाना किये पड़ा था। नींद न आने की बीमारी के कारण उसे मालूम था कि उसे घंटों

जागते रहना होगा। वह धीरे से उठा, कोट पहना और बाहर चला गया।

ओसभरी रात में उसके कदमों के नीचे बर्फ़ की पर्तों का चूरा गिर रहा था। मद्ययुक्त स्पिरिट की ज्वाला की तरह आसमान में पीले और आसमानी रंग के सितारे चमक रहे थे और मृत्यु-लोक में जमी हुई बर्फ़ के ढेले फेंक रहे थे। नदी के किनारे, शहर के अंतिम भाग में उनका घर था। इस गली में यही अंतिम मकान था। उसके पार वाले मैदान को चीर कर रेल्वे-लाइन चली गयी थी। रास्ता पार करने के लिए वहाँ एक फाटक था, तथा सिगनल देने वाले आदमी की झोंपड़ी। उलटे पड़े एक बोट पर पाशा बैठ गया और देखता रहा चुपचाप आसमान में, झिलमिलाते हुए सितारों की ओर। अतीतकालीन कुछ वर्षों से जिन विचारों से वह अभ्यस्त हो चुका था वे फिर उसके सामने आकर उपस्थित हो गये। अच्छा है, यदि अभी ही निर्णय किया जा सके।

—ऐसे तो चल नहीं सकेगा, उसने सोचा—विवाह से पहले ही उसे इन तमाम बातों पर विचार कर लेना चाहिए था। उसका शिशु की भांति लारा की ओर देखना, वह क्यों बर्दाश्त करती रहती है? क्या सचमुच वह उसके सामने मात्र शिशु ही है? उस समय भी वह जो चाहे उससे करवा सकती है। एक दिन उसने तमाम बन्धन तोड़ डालने का आग्रह किया था, उस दिन उसमें इन बन्धनों को तोड़ने की अक्ल क्यों नहीं आई? क्या उस दिन भी यह स्पष्ट नहीं था कि वह उसे प्यार नहीं करती? उसके प्रति उसकी सिर्फ़ दयाभावना है। कृपाभावना है। अपने इसी विराटरूप की वह पूजा करती है, अपने इसी निजी धीरोदात्त स्वरूप को वह प्यार करती है। लारा का वास्तविक ध्येय क्या है? वह चाहे जितनी गुणसम्पन्न हो, उदार हो, कृपायुक्त हो, गृहस्थ जीवन में उसका वास्तविक उपयोग क्या है? फिर भी मुसीबत यह है कि वह उसे उतना ही प्यार करता है, जितना कि हमेशा करता रहा है। सचमुच वह बहुत प्रिय थी। फिर—उसकी ओर से जो प्रतिदान मिलता है, क्या वास्तव में

वह भी प्यार ही है? अथवा उसकी प्रेमपूर्ण उदारता के प्रति उसकी असीम कृतज्ञता? कौन इसका निश्चय करे?

सो, उसे क्या करना चाहिए? अपनी बच्ची के साथ वह अपने आप को इस गाँव के घेरे से मुक्त कर दे? अपने आप को मुक्त करने से अधिक अच्छा यही होगा। लेकिन यह हो कैसे? तलाक? डूब कर आत्महत्या कर ले? कितनी लज्जाजनक ओछी बात है। जैसे मैं इसी किस्म की हरकतें करता रहता हूँ। वह मन ही मन क्रोधावेश में फुसफुसाया। सोचा, फिर इस अति-नाटकीय व्यापार की पुनरावृत्ति बारम्बार क्यों की जाय?

उसने सितारों की ओर देखा, मानो उनसे सलाह माँग रहा हो। छोटे-बड़े, झुण्ड में और अकेले, कुछ नीले, कुछ इन्द्रधनुष के रंग के सितारे चमकते रहे। अचानक वे सब लुप्त हो गये। जैसे कोई टार्च हिलाता हुआ मैदान के उस पार रास्ता बता रहो हो—पाशा घर, मकान, बोट और अपने इन विचारों से मुक्त हो गया।

लेवल-क्रोसिंग से आकाश में पीले-रंग का धुआँ छोड़ती हुई, घायलों से लदी एक गाड़ी पश्चिम की ओर चली गयी। मानो पिछले वर्ष के अगणित दिन और रातें एक साथ सामने से गुज़र गयी हो।

पाशा उठा। मुस्कराया। घर आकर बिस्तर पर लेट गया।

उसे जवाब मिल गया था।

सात

लारा ने जब पाशा का निश्चय सुना तो वह स्तब्ध-सी रह गयी। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने सोचा, यह पागलपन है, वह अपने आपे में नहीं है। वह इन सब की ओर ध्यान नहीं देगी, और वह इन तमाम बातों को भूल जायेगा। लेकिन पिछले पखवाड़े में उसने तैयारियाँ शुरू कर दी थीं। सम्बन्धित कागजात उसने भर्ती-आफिस में भिजवा दिये थे। हाई-स्कूल में उसकी एवज में नया आदमी रख लिया

गया था। ओमस्क की मिलेट्री-ट्रेनिंग स्कूल से उसे नियुक्ति पत्र भी मिल गया था।

लारा रोई, चीखी, पछाड़ खाकर गिर पड़ी। पाशा के चरणों में बिखर कर व्याकुल भाव से कहती रही—पाशा, ओ पाशा, मुझे छोड़ कर मत जाओ। ऐसा मत करो। मैं सब कुछ संभाल लूँगी। तुमने अभी तक अपनी डाक्टरी जांच भी नहीं करवाई है। देखो, तुम्हारी तबीयत कैसी है ? अपने इन बदलते हुए विचारों को छोड़ दो पाशा। शर्म करो। अपने उन्मत्त विचारों के कारण अपने परिवार को छोड़ते तुम्हें लज्जा नहीं आती ? अब तक तुम रोड्या की ईर्ष्या-द्वेष की मजाक उड़ाते रहे हो। और अब तुम स्वयं ईर्ष्या में जले जा रहे हो ? फिर भी तुम अपने आप को स्वयंसेवक कहते हो ? आफिसर की वर्दी पहन कर शेखी हाँकने की, तलवार की बहादुरी दिखाने की तुम्हें अब क्या जरूरत है ? पाशा तुम्हें हो क्या गया है ? तुम अपने आप में नहीं हो! मैं तुम्हें इस रूप में पहचान भी नहीं पाती। किसलिए तुम यह सब करने के लिए तैयार हो गये ? सच कहना पाशा, क्या यही सब कुछ है, जिसकी रूस को इस समय जरूरत है ?

अकस्मात् उसे मालूम हो गया कि यही सब कुछ नहीं है। अचानक उसके हाथ खास मुद्दा लग गया। पाशा ने उसके स्वभाव को गलत समझा है। उसका विरोध था लारा के मातृत्वपूर्ण प्रेम के प्रति, जो कि उसके प्यार का वस्तुतः मुख्य भाग रहा है। यह प्यार साधारणतया औरत और मर्द के बीच के प्यार से कुछ ज्यादा ही है, कम नहीं।

उसने अपने दांतों से होंठ कस लिए, जैसे किसी ने उसका हृदय चीर डाला हो। आँसू बहाती हुई, वह उसका सामान बांधने बैठ गयी।

उसके चले जाने के बाद उसे लगा कि सारा शहर शांत है और आसमान में उड़ने वाले कौवे भी गायब हो गये हैं। मर्फुतका उसे होश में लाने के लिए पुकार रही थी। कात्या उसकी बांह खींचती हुई चीख रही थी। जीवन की सबसे बड़ी इस पराजय से वह टूट गयी। उसकी तमाम उल्लासपूर्ण और मनोहारिणी आशाओं पर पानी फिर गया था।

साइबेरिया से पाशा अपनी चित्तवृत्ति के बारे में लारा को लिखा करता। अब वह प्रत्येक वस्तु को अधिक स्पष्ट रूप से देख सकता था। पत्नी और कन्या का अभाव उसे बुरी तरह खटकने लगा था। थोड़े ही दिनों में संकटकालीन अवस्था में सेना के आगे ध्वज लेकर चलने की ड्यूटी उसे मिली। युद्ध पर जाने से पहले मास्को अथवा युर्यातिन जाने का उसे समय ही नहीं मिला। इसके बाद उसने जो पत्र लिखे, उसमें वह हतोत्साहित मालूम नहीं पड़ता था। वह कोशिश कर रहा था कि किसी तरह चोट लग जाने के कारण अथवा बतौर ईनाम के उसे घर जाने के लिए छुट्टी मिल जाय। इसके बाद अचानक पाशा के पत्रों का सिलसिला टूट गया। बुशिलोव की सेना तितर-बितर हो गयी थी और आक्रमण कर रही थी। फौजी कार्यवाही को कारण मान-कर कुछ दिन तक तो लारा चुप रही। उसने सोचा आक्रमण के समय पत्र लिखना कठिन ही है। शिशिर ऋतु में फौज की गति मन्द पड़ गयी। सेना अपने आप को सुरक्षित रखने की फिक्र में थी। फिर भी पाशा की ओर से कोई समाचार नहीं मिला। वह बहुत ही उत्सुक और चिन्तित हो उठी। पहले तो उसने स्थानीय अधिकारियों से मिलकर युर्यातिन में तहकीकात की। उसने मास्को पत्र लिखा, उसके पुराने कैम्प के पते पर पत्र लिखा। लेकिन कहीं से उसे कोई जवाब नहीं मिला। शायद कोई इस बारे में कुछ जानता ही न था।

इस समय लारा स्थानीय स्त्रियों के साथ शहर के अस्पताल के मिलेट्रीवार्ड में सेवा किया करती थी। उसने मन लगा कर नर्सिंग की शिक्षा ली। योग्य नर्स बनने के कारण स्कूल से उसे छः महीने के लिए छुट्टी मिल गयी। मकान को मर्फुतका के भरोसे छोड़ कर, कात्या को लेकर वह मास्को चली आई। यहाँ लीपा अपने मकान में अकेली रह रही थी। उसने कात्या को उसके पास छोड़ दिया। लीपा का पति जर्मन नागरिक था, इसलिए उसे शत्रुदेशीय नागरिकों के लिए निश्चित स्थान पर रहने के लिए बाध्य किया गया था। पाशा के समाचार न पाकर, किसी और उपाय से उसे खोज निकालने का लारा ने निश्चय किया।

अपने इस विचार के अनुसार उसे हंगरी तक जाने वाली अस्पताली-ट्रेन में नर्स की नौकरी मिल गयी। यह ट्रेन लिस्को शहर से गुज़रती थी, जहाँ का पता उसे पाशा ने अंतिम पत्र में लिखा था।

आठ

चिकित्सा-सम्बन्धी साज-सामानों से युक्त रेड-क्रास की एक ट्रेन विभागीय मुख्य कार्यालय पर पहुँची। घायलों की सहायता के लिए तात्याना कमेटी ने ऐच्छिक चन्दा एकत्रित किया था। मालगाड़ी के भद्दे डिब्बों को जोड़ कर यह रेलगाड़ी तैयार की गयी थी। सैनिकों के लिए उपहार लिये सिर्फ़ फर्स्ट-क्लास में ही कुछ यात्री मास्को से आ रहे थे। ऐसे ही एक डिब्बे में मिशा गोर्डन भी था। उसे मालूम था कि उसका बाल्य-सखा यूरा विभागीय अस्पताल में है। उस स्थान विशेष तक जाने की आज्ञा हासिल करके वह स्टेशन पर उतर पड़ा। पास के ही गाँव में उसे जाना था। उस गाँव की ओर जाने वाली एक गाड़ी भी उसे मिल गयी थी। गाड़ी चलाने वाला बायलोरूसी था। टूटी-फूटी रूसी भाषा में वह बातचीत कर सकता था। मगर तत्कालीन गुप्तचरों के व्यापक संदेह के कारण वह अधिक बोल नहीं रहा था। जब भी वह बोलता सिर्फ़ नीरस बड़बड़ाहट की ध्वनि ही सुनाई देती। उसके आडम्बरपूर्ण ईमानदारी के रवैये से मीशा हतोत्साहित हो कर चुपचाप बैठा रहा।

सेना-संचालन का यहाँ मुख्य कार्यालय था। उसे बताया गया था कि गाँव अधिक से अधिक पन्द्रह मील दूर होगा। मगर वास्तव में पचास मील से कम यात्रा उन्हें नहीं करनी पड़ी। क्षितिज के पार से लगाकर उनके पास तक अमैत्रीपूर्ण असंतोष से भरी हुई हवा सनसनाती रही। गोर्डन ने कभी भूकम्प नहीं देखा था। मगर उसे लग रहा था कि दुश्मनों की फौज की मुश्किल से सुनाई देने वाली ध्वनि भूकम्प के धक्कों से कम नहीं होती। आसमान में पीला प्रकाश फैल गया। सन्ध्या हुई।

नष्ट-भ्रष्ट गाँवों को पार करते हुए वे आगे बढ़ रहे थे। गाँव के गाँव खाली, सुनसान और वीरान दिखाई दे रहे थे। सुरक्षा की तलाश में कुछ

लोग तलघरों में रह रहे थे। जहाँ एक समय पर आलीशान मकान और भव्य साजो-सामान था, वहाँ जगह-जगह गर्द, टूटे-फूटे पत्थर, ईंट चूने के बुरादे के ढेर लगे हुए थे। सर्वनाश की यह लीला एक ही दृष्टि में देखी जा सकती थी। कमरे को हटा कर, इधर-उधर कुरेदती हुई बुड्ढी औरतें अपने ही मकानों के खण्डहरों में पता नहीं क्या ढूँढ़ रही थीं। उन्हें लग रहा था कि उनके चारों ओर खड़ी ध्वस्त दीवारों के कारण वे अपरिचितों की निगाहों से बची हुई हैं। पास से गुजर रहे गोर्डन की ओर उन्होंने आँख उठा कर देखा, मानो वे पूछ रही हो—संसार कब होश में आयेगा भाई, शांति और व्यवस्था फिर कब लौट आयेगी?

अन्धेरा होते-होते गाड़ी गश्त लगाने वालों की सीमा तक पहुँच गयी। वहाँ उन्हें मुख्य रास्ते से जाने की आज्ञा मिली। गाड़ी चलाने वाला नया रास्ता नहीं जानता था। ध्येय-रहित घंटों इधर-उधर चक्कर काटते रहने के बाद आखिर सुबह वे एक ऐसे गाँव में पहुँचे, जिसकी उन्हें तलाश थी। लेकिन पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि इसी नाम के दो गाँव हैं। आखिर किसी तरह वे असली गाँव तक पहुँचे। जैसे ही वे वहाँ पहुँचे, केमोमाइल और आइडोफाम की गंध से उनका सिर भिन्नाने लगा। गोर्डन ने निश्चय किया कि सारा दिन ज़िवागो के साथ बिता कर संध्या होने से पहले वह स्टेशन चला आयेगा। लेकिन परिस्थितियों ने उसे एक हफ्ते के लिए वहीं रोके रखा।

नौ

अगली टुकड़ी आगे बढ़ रही थी।

जिले के दक्षिणी भाग में जहाँ इस समय गोर्डन उपस्थित था, रूसी फौज शत्रुओं का व्यूह भेद करती हुई आगे बढ़ रही थी। मदद करने वाली टुकड़ी उनके पीछे थी। दोनों टुकड़ियों की दूरी का अन्तर बढ़ता गया। नतीजा यह हुआ कि मदद करने वाली सेना पीछे पड़ गयी और अगली सेना काट डाली गयी; अथवा उसके सैनिकों को गिरफ्तार कर लिया

गया। इन गिरफ्तार युद्ध-बन्दियों में लेफ्टिनेन्ट पाशा भी था। जब उसकी टुकड़ी ने आत्म-समर्पण किया तो उसे भी यही करना पड़ा।

विश्वास यह किया जाता था कि किसी गोले के फट जाने के कारण पाशा की मृत्यु हो गयी है और वह उसके मलीदे में दफन हो गया है। उसके घनिष्ठ मित्र गुल्युलिन ने इस बात की पुष्टि की थी और इसीलिए इसे अधिकृत सूचना मानी गयी। वह मोर्चे पर दुरबीन से यह सब देख रहा था। गुल्युलिन भी सेना के आगे ध्वजधारी लेफ्टिनेन्ट था। जो कुछ गुल्युलिन ने देखा, वह किसी भी आक्रमण का एक साधारण दृश्य था। शोर मचाते हुए फुरती से लोग खुले मैदान में दौड़ते। उनका लक्ष्य था आस्ट्रीयन को अपने रास्ते से उड़ा दिया जाय। भागते हुए आदमियों को मैदान सीमाहीन लगता। दलदल की तरह कदमों के नीचे की जमीन खिसकती हुई-सी मालूम देती। माथे पर रिवॉल्वर हिलाते हुए उनका लेफ्टिनेन्ट आगे-आगे दौड़ रहा था। बीच-बीच में हुर्रे के नारे लगाये जाते, जिसे न वे स्वयं सुन पाते न कोई दूसरा। दौड़ते-दौड़ते वे जमीन पर लेट जाते, फिर उठ खड़े होते और शोर मचाते दौड़ पड़ते। हर बार किसी न किसी के चोट आती और वह जंगल के पेड़ की तरह टूट कर गिर पड़ता।

गुल्युलिन ने चिन्तित स्वर में सेना अधिकारी से कहा—वे लक्ष्य से बाहर गोली चला रहे हैं। तोप लगाई जाय।

सेना के अधिकारी ने गंभीर स्वर में कहा—नहीं, ठहरो। सब ठीक है।

आक्रमणकारी शत्रु से मुठभेड़ करने उनके करीब पहुँच चुके थे। आगे वाली टुकड़ी की गोलाबारी रुक गयी थी। एकाएक की इस नि:स्तब्धता में सबके कलेजों की धड़कन मानो रुक गयी। दूर से निरीक्षण करने वालों ने देखा कि अपनी सेना शत्रुओं की खाई तक पहुँच गयी है और कुछ ही मिनटों में हिम्मत और विध्वंसक साधनों का आश्चर्यजनक इस्तेमाल होने ही वाला है। इसी समय उन्होंने देखा सोलह-इंची जर्मन बम आक्रमणकारियों के ठीक सामने फट पड़ा। इसके बाद जो कुछ हुआ

वह सब धूल भरे धुएँ में छिप गया। गुल्युलिन चीख-सा उठा—'या अल्लाह! सब कुछ खत्म हो गया। वे सब गये।' उसके होठ सूख गये थे। उसे विश्वास हो गया कि लेफ्टिनेन्ट पाशा और उसके तमाम साथी मारे गये। दूसरा बम निरीक्षण स्थान के ठीक सामने आकर फटा। झुक कर दोहरे होकर वे सुरक्षित दूरी तक भाग आये।

पाशा की अन्तिम खोज गुल्युलिन द्वारा ही की गयी थी। एक बार जब यह मान लिया गया कि पाशा मर चुका है तो गुल्युलिन को कहा गया कि वह उसके सारे सामान को अपने पास संभाल कर रख ले और उसकी विधवा पत्नी को दे दे। लारा की अनेक तस्वीरें उसके सामान में मिली थीं।

गुल्युलिन का व्यवसाय मेकेनिक का था। उसे अभी-अभी उच्च पद प्रदान किया गया था। उसका पिता तिमिरजिन ब्लाक में कुली था। यह वही युसुप्का था जिसे फोरमेन खुडोरोव ने पीटा था। उन पुरानी यातनाओं के पश्चात् आज जब वह उच्च पद पर प्रतिष्ठित हुआ, तो वह सचमुच खुशी महसूस कर रहा था। छोटे से शहर और आसपास के कमाण्डर बनने का कोई कारण उसकी समझ में नहीं आ पाया था। बुलावा आने पर, अपनी इच्छा के विरुद्ध रक्षक सेना के इस पद पर वह प्रतिष्ठित किया गया था। यह रक्षक-सेना नवसिखियों का दल था। उनके ही समान उम्र तथा अनुभव के आदेशक प्रतिदिन उनसे ड्रिल करवाते, उन्हें कवायद सिखाते। दोनों के लिए यह सब कुछ भूल जाना काफी आसान था। समीप के स्टोर के सामने गुल्युलिन को इस रक्षक दल का निरीक्षण करना होता और उन्हें बदलना होता। वह बेहद लापरवाह था। उसे किसी की परवाह नहीं थी। मास्को से बुलाये गये आदमियों को उसकी आज्ञान्तर्गत रखा गया था। वे सब उसे खुडोलेव की तरह परिचित-से लगते। वह रूखी हँसी हँसते हुए कहा करता—अच्छा। बहुत बढ़िया। एक और पुराने दोस्त!

सलाम करते हुए सीधे तन कर खुडोलेव ने जवाब दिया—हाँ साब!

यह असंभव था कि इसका अंत यों ही हो जाता। पहले ही दिन उसकी गलती पर वह गरज उठा। सीधे देखते हुए भी सामने खड़ा खुडोलेव उसकी ओर नहीं देख रहा था। गुस्से के मारे उसने उसके जबड़े पर एक घूँसा जमा दिया और दो दिन रोटी और पानी पर रखने की नजरबन्दी की सजा उसे दे दी। इसके बाद गुल्युलिन का प्रत्येक काम बदले की भावना से प्रभावित रहता। लेकिन यह खेल, कठिन कानून, मर्यादा तथा उसके पद के सम्मान के विरुद्ध था। आखिर किया क्या जाय ? दोनों एक ही स्थान पर तो नहीं रह सकते। लेकिन उसकी समझ में कोई बहाना नहीं आ रहा था, जिससे कि अनुशासन-भंग की कार्यवाही किये बिना किसी का तबादला किया जा सके। दूसरी ओर अपने तबादले के लिए भी उसे कोई बहाना नहीं मिल रहा था। ध्वजधारी कप्तान की इस रसहीन शिथिल और फालतू की ड्यूटी से छुट्टी लेने के लिए वह कौनसे न्यायसंगत कारण बता सकता है ?

जब उसे मोर्चे पर जाने की आज्ञा मिली तो उसे अपने दूसरे गुण दिखाने का स्वर्णिम अवसर मिल गया। उसे तुरन्त लेफ्टिनेन्ट बना दिया गया।

गुल्युलिन तिमिरजिन के समय से पाशा को जानता था। सन् 1905 में पाशा आन्तिपोव उसके साथ लगभग छः महीने तक रहा था। रविवार के दिन वह अक्सर उसके साथ चला आया करता था। वहीं एकाध-बार उसने लारा को देखा था। इसके बाद उनके बारे में उसने कभी कुछ नहीं सुना। युर्यातिन से वापस लौटने पर अपने इस बाल्य-सखा को परिवर्तित रूप में देख कर, गुल्युलिन एकबारगी हतबुद्धि-सा रह गया। वह उसे अति शर्मीला, शैतानी से भरा उद्दण्ड लड़का समझता था। लेकिन वह तो अब उद्यत चित्तोन्मादक पाण्डित्य से आकण्ठ भरा हुआ था। वह बहादुर, मितभाषी और विवेकपूर्ण व्यक्ति था। अक्सर गुल्युलिन ने उसे खिड़की में से दूर तक चुपचाप ताकते देखा था। निश्चय ही वह किसी ऐसी चीज़ के बारे में सोच रहा था, जो उसके मस्तिष्क पर कब्जा जमाये हुए थी। हो सकता है वह उसकी लड़की हो, हो सकता है वह उसकी पत्नी हो।

परियों की कथाओं में वर्णित सम्मोहित और परिवर्तित स्वरूप में पाशा अदृश्य हो गया। गुल्युलिन के पास रह गया था उसका सामान, उसकी पत्नी के चित्र और उसके गुप्त परिवर्तन का अनावृत्त रहस्य।

लारा द्वारा पाशा के लिए की जाने वाली तहकीकात की बात गुल्युलिन तक आखिर पहुँच ही गयी। वह लारा को समाचार लिखना चाहता था। लेकिन एक तो उसे वक्त नहीं मिला और दूसरे वह बात को इस तरह से लिखना चाहता था कि इस दुखद असह्य समाचार के सदमे को वह संभाल सके। वह तब तक टालमटोल करता रहा, जब तक कि उसे यह मालूम नहीं हो गया कि लारा पास के ही अस्पताल में नर्स के रूप में काम कर रही है। उस समय तक वह दरअसल यह भी तय नहीं कर पाया था कि लारा को वह किस पते पर पत्र लिखे।

दस

दोपहर के खाने के समय जब भी मीशा डाक्टर ज़िवागो के घर आता, वह यही सवाल पूछता—आज घोड़े मिल सकेंगे?

ज़िवागो जवाब देता—कोई सम्भावना नहीं। खैर जाओगे कहाँ? न दायें जा सकते हो न बायें। चारों ओर धांधली मची हुई है। किसी को किसी तरह का होश नहीं है। कहीं-कहीं हम लोगों ने जर्मन सीमा तोड़ दी है। कहा जाता है कि हमारी बहुत-सी उत्साहपूर्ण टुकड़ियाँ गिरफ्तार हो गयी हैं। उत्तर में जर्मनों ने स्वेन्ता पार कर लिया है। जिसके बारे में कहा जाता था कि वह अभेद्य है। यह सब उनके थोड़े-से घुड़सवारों की सेना की शक्ति है। वे रेलें उड़ा रहे हैं। रसद-संग्रह नष्ट कर रहे हैं। मेरा अनुमान है, हम चारों ओर से घेर लिए गये हैं। इस हालत में तुम कर रहे हो घोड़ों की बात।

'कारपेन्को, थोड़ा कष्ट करके खाने की मेज लगा दो। आज हमें खाने को क्या मिलेगा दोस्त?' नौकर की ओर मुखातिब होकर डाक्टर ज़िवागो कहता। पता नहीं किस प्रकार यह गाँव अभी तक क्षति-रहित

था। अस्पताल मेडिकल यूनिट और उनके आश्रम सारे गाँव में फैले हुए थे। वहाँ की पश्चिमी पद्धति की जालीदार लम्बी खिड़कियों का एक भी कांच टूटा हुआ नहीं था।

सुनहली शरत्ऋतु समाप्त होकर भारतीय गर्मियों में तब्दील हो गयी। दिन में डाक्टर और उसके साथी अधिकारी खिड़की खोल देते। फाइलें तथा कागज इधर-उधर उड़ते रहते। कपड़ों के बटन खोल दिये जाते, फिर भी सारे वस्त्र पसीने से तर हो जाते। रात में खुले स्टोव के सामने वे ताश खेलते। स्टोव के धुएँ से आँखें भर आतीं और वे नौकर पर बिगड़ते कि उसे चूल्हा ठीक से जलाना नहीं आता।

अभी तक रात थी। गोर्डन और ज़िवागो एक दूसरे के सामने बैंच पर लेटे हुए थे। उनके बीच खाना खाने की मेज थी। नीचे की ओर खिड़की पूरी दीवार तक फैली हुई थी। कमरा गर्म था और तंबाकू के धुएँ से भरा हुआ था। उन्होंने जालियों के दो-किनारे खोल दिये ताकि शिशिर ऋतु की रात की ताजी हवा आ सके। हमेशा की तरह वे गप-शप कर रहे थे, और हमेशा की तरह जंगल की ओर आकाश में प्रकाश की रेखाएँ चमक रही थीं। बीच-बीच में बन्दूकों की आवाज़ सुनाई देती। ज़िवागो एक क्षण के लिए रुका। बोला, 'यह है बर्था, सोलह इंची जर्मनी बम। इस छोटे से बम का वजन 216 पाऊण्ड है।' इसके बाद जब वे अपनी बातचीत में लगे तो भूल गये कि वे किस विषय पर बातचीत कर रहे थे।

—सारे गाँव में इतनी बदबू किस चीज़ की आ रही है? गाँव में घुसते ही मेरा दम घुटने लगा था।

—मुझे मालूम है, कि तुम्हारा मतलब क्या है? यह पटसन है। यह यहाँ बहुतायत से होती है। इस पौधे में चिपचिपापन और सड़ांधवाली गंध होती है। इन पटसन के खेतों में लड़ाई में मारे गये लोगों की लाशों का तब तक पता नहीं चलता, जब तक कि वे बदबू मारने न लगें। चारों ओर मृतक मनुष्यों की ही यह दुर्गन्ध हैं। सुनो, फिर बर्था!

इन दिनों उन्होंने लगभग तमाम विषयों पर बातचीत कर डाली। युद्ध और तज्जनित अपनी सम्प्रति मन:स्थिति के साथ ज़िवागो ने मिशा को बताया था कि सर्वनाश का यह क्रूर तर्क स्वीकार करना उसके लिए कठिन है। निरन्तर घायलों के दृश्य देखना काफी कष्टप्रद है। खासकर कुछ ऐसे भयंकर घाव, जो कि आजकल सर्वव्यापी हो रहे हैं। इन में से जो जीवित बच जाते हैं; गहरी समस्या उनकी अधिक है, जिन्हें कि आधुनिक युद्ध की पद्धति ने मांस के लौंदे के रूप में उपस्थित कर दिया है।

ज़िवागो के साथ गोर्डन ने भी हृदयद्रावक दृश्य देखे थे। जब कि दूसरे लोग हिम्मत के साथ कमर कस कर युद्ध कर रहे हैं, उस समय चुपचाप देखते रहना मिशा को अनैतिक आचरण-सा लगा। मृत्यु के भय को जीत लेने का अति मानवीय यह उद्यम! लोग किस किस्म का खतरा मोल ले रहे हैं और उसके लिए कितनी कीमत अदा कर रहे हैं? जीवन की प्रस्तुत परिस्थितियों के अनुसार ईमानदारी और सरलता से काम करने में उसका विश्वास था। घूमते-घूमते एक बार वे जंगल के एक हिस्से में चले आये, जो कि फौज की गोलाबारी के कारण ध्वस्तप्राय: था। एक और टूटी-फूटी जर्जरित हालत में तोपगाड़ी पड़ी थी। गोलियाँ दागने वाला एक यंत्र पेड़ से चिपका हुआ पड़ा था। इस जंगल में एक घर था। यह था वन-विभाग का एक दफ्तर। इस समय यह दफ्तर प्राथमिक उपचार केन्द्र के काम में लाया जाता था। जहाँ यह रास्ता था, उसके एक ओर भूरे रंग के दो तम्बू गाड़ दिये गये थे।

—मुझे अपने साथ तुम्हें यहाँ नहीं लाना चाहिए था। एक मील के भीतर ही खाइयाँ हैं और हमारी टुकड़ियाँ जंगल के उस पार वहाँ हैं। तुम आसानी से सुन सकते हो कि वहाँ क्या हो रहा है? इसलिए बहादुरी दिखाने की चेष्टा मत करो। यदि तुमने ऐसी चेष्टा की तो मुझे विश्वास नहीं होगा। भय से आच्छादित हो जाना स्वाभाविक है, बिलकुल प्राकृतिक। परिस्थिति किसी भी क्षण बदल सकती है और यहाँ किसी भी समय भीषण गोलाबारी हो सकती है।

बड़े-बड़े जूते पहने, थके हुए सैनिक धूल भरे कोट में पसीने से तर शाम के वक़्त लौट आते। जमीन पर लेटने के कारण उनकी पीठ, छाती और कन्धों पर मिट्टी लगी हुई होती। जीवित बच जाने वाले ये वे सैनिक थे जो कि पहली टुकड़ी में से वापस लाये गए थे। पिछले चार दिनों की भयंकर लड़ाई के बाद उन्हें आराम करने के लिए वापस पीछे भेज दिया गया था। वे इस तरह से बिखरे पड़े थे मानो उनमें कोई शक्ति न रह गई हो कि वे मुस्करा सकें, स्थिर चित्त से कुछ कह सकें। उनके पास से बहुत सी गाड़ियाँ रास्ता पार कर गईं पर किसी ने उस ओर नजर उठा कर भी न देखा। बारूद ले जाने वाली स्प्रिंग रहित इन गाड़ियों में घायल लाये गए थे। धक्कों के कारण उनकी हड्डियाँ टूट गई थीं, अंतड़ियाँ हिल उठी थीं। अपने निश्चित तरीके से वे गाड़ियाँ प्राथमिक उपचार केन्द्र की ओर जा रही थीं। जब आध घण्टे के लिए गोलन्दाजी रुक गई थी, तब खाइयों में से ये अगणित घायल लाये गये थे। अधिकांश तो बेहोश ही पड़े थे। घायलों पर फुरती से मलहम पट्टी बांध दी जायेगी और अत्यावश्यक आपरेशन तत्काल सम्पादित कर लिए जायेंगे।

आफिस के बरामदे में गाड़ियों के खड़े होने पर चपरासी स्ट्रेचर ले आया। घायलों को उतारा जाने लगा। एक नर्स ने अपने तम्बू का एक कोना एक ओर उठा कर बाहर की ओर देखा। वह छुट्टी पर थी। तम्बू के पीछे दो आदमी जोर-जोर से चीख-चिल्ला कर वाद-विवाद कर रहे थे। चारों ओर फैले हुए लम्बे वृक्षों में उनकी आवाज़ प्रतिध्वनित हो उठती। उनकी आवाज़ का स्पष्ट अर्थ समझ में नहीं आ रहा था। दोनों आफिस की ओर बढ़े। उनमें से एक उत्तेजित जवान लेफ्टिनेन्ट था। वह दूसरे व्यक्ति पर रोब गालिब कर रहा था जो कि चलते-फिरते दवाखाने का अधिकारी था। वहीं-कहीं कोई बन्दूक पड़ी थी और अधिकारी जानना चाहता था कि आखिर वह बन्दूक गई कहाँ? डाक्टर इस बारे में कुछ जानता भी नहीं था और न उसे इस जंजाल से कोई मतलब ही था। उसने दोनों से प्रार्थना की कि वे इतना शोरगुल न करें। उसे अकेले में छोड़ दें।

वह बहुत व्यस्त है। घायल आ गए हैं। लेकिन वह आफिसर पूर्ववत चीखता-चिल्लाता रहा। वह सारे संसार को कोस रहा था। अपने तातारी लहजे में वह आफिसर अभी भी बकझक कर रहा था। अन्त में उसने अपना घोड़ा खोला, उछल कर उस पर चढ़ गया और जंगल की ओर चला गया। नर्स अपने तम्बू में से यह सब देख रही थी।

दो हल्के घाव वाले सैनिक बिना किसी प्रकार की मदद के स्ट्रेचर में से उठ कर एक ओर बढ़ रहे थे। वह उनकी ओर चीखती हुई भागी—तुम लोग यह क्या कर रहे हो? —नर्स की अभिव्यक्ति अत्यधिक व्याकुल हो उठी।

वीभत्स रूप से टूटे-फूटे घायल व्यक्ति को चपरासी ले जा रहा था। बम के लोहे के एक टुकड़े ने उसके चेहरे को क्षत-विक्षत कर दिया था। उसकी जबान और होठों का मांस उधड़ गया था। फिर भी वह ज़िन्दा था। उभरे हुए गालों की जगह उसका जबड़ा बैठ गया था। अमानवीय स्वर में वह धीरे से कराह उठता। उसकी उस आवाज़ का इसके सिवाय कोई अर्थ नहीं निकाला जा सकता कि उसे तुरन्त समाप्त कर दिया जाय, ताकि इस असह्य पीड़ा से उसे मुक्ति मिल जाय।

हल्के घावों वाले सैनिक उसकी चीत्कार से इतने व्याकुल हो उठे कि वे हाथ में लोहे की सींखचें लिए स्ट्रेचर की ओर, इस दृश्य को समाप्त करने के लिए बढ़े।

—नहीं। ऐसा मत करो। डाक्टर इसका इन्तजाम कर लेगा। यदि ऐसा करना ही पड़ा तो उसके पास इसके लिए खास किस्म के औजार हैं। हे भगवान, हे ईश्वर, इसे तू अपने पास बुला ले! ताकि मेरा यह विश्वास बना रहे, कि अभी तक तेरा अस्तित्व कायम है!

अभी-अभी जो आदमी उत्तेजित अवस्था में शोर मचाते हुए जंगल की ओर चला गया था मृतक उसी जमालुद्दीन का पुत्र था—सामने खड़ी नर्स थी लारा। गोर्डन और ज़िवागो इस भयंकर दुखान्त घटना के साक्षी थे। वे

सब यहाँ एक साथ मौजूद थे, एक ही स्थान पर। कुछ लोग एक दूसरे को पहचान नहीं सके, कुछ लोग एक दूसरे को जानते भी न थे।

यह निश्चित बात है कि इन सबके बारे में कोई ऐसी चीज़ है, जिसे कभी जाना नहीं जा सकेगा। कुछ लोगों को किसी उचित अवसर की प्रतीक्षा करनी होगी, जब कि इस दुर्गम रहस्य का उद्‌घाटन होगा!

ग्यारह

इस सारे क्षेत्र में यही गाँव ईश्वरीय चमत्कार से किसी तरह बच गया था। विनाश के महासागर में कुछ ही सुरक्षित द्वीप-समूह बचे थे। एक दिन मीशा के साथ गाड़ी में जाते हुए ज़िवागो ने देखा, कि कुछ लोगों की प्रसन्नता भरी भीड़ में एक कजाक नौजवान एक बुड्ढे को तंग कर रहा है। एक सिक्का हवा में उछाला जाता और बुड्ढा जब सिक्के को ढूँढ़ने के लिए नीचे झुकता तो नौजवान उसे चपतिया देता। लोग इस तमाशे से बड़े खुश हो रहे थे। वृद्ध की पत्नी अपने झोंपड़े में से चीख रही थी, उसकी पोतियाँ रो रही थीं। कुछ देर तक तो यह निर्दोष मजाक चलता रहा। लेकिन कौन कह सकता है कि यही ज़रा-सा मजाक किस समय गंभीर स्वरूप धारण कर लेगा? गाड़ीवान ने समझा कि इस मनोरंजक घटना को उसके यात्री भी देखना चाहते होंगे। उसने भीड़ के पास गाड़ी खड़ी कर दी। डाक्टर ने उस नौजवान कजाक को अपने पास बुलाया, उसे डांटा और इस मजाक को बन्द करने के लिए कहा।

नौजवान ने तुरन्त जवाब दिया—हम सिर्फ़ मजाक ही कर रहे हैं।

मीशा और ज़िवागो अपने गाँव की ओर रवाना हो गये। वे रास्ते भर चुपचाप बैठे रहे। ज़िवागो ने कहा—ओफ्-ओह! कितना भयंकर! इस युद्ध में ज्यू-आबादी जिस दौर से गुज़र रही है, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। रूस के पश्चिमी क्षेत्र में जहाँ रूसी ज्यू रहते थे, वहाँ कुछ लोगों को अपवाद स्वरूप छोड़ कर, सबको कैद कर लिया गया है। बतौर सजा के उन की जायदाद लूट ली गई। इस से ही सन्तोष नहीं हुआ। उन्हें अपमानित करने के लिए उन पर आरोप लगाया गया कि

उनमें पर्याप्त देशभक्ति नहीं है। हम उनसे देशभक्ति की अपेक्षा कर ही कैसे सकते हैं? शत्रु-पक्ष के लोग उन्हें पूरे नागरिक-अधिकार देने को प्रस्तुत हैं और हम सिवाय उन पर मुकद्दमा चलाने के कुछ कर नहीं सकते। उन लोगों के प्रति यह जो नाराजगी और गुस्सा है उस के मूल में हमारी घृणा का विरोधाभास है। इसकी पृष्ठभूमि में वे ही कारण हैं, जिससे कि हमारे मन में उन लोगों के प्रति सहानुभूति पैदा हो सकती थी। यह कारण है, उनकी गरीबी, उनकी बढ़ी हुई आबादी, उनकी कमजोरी। वे हमारा मुकाबला नहीं कर सकते।

मीशा ने जवाब नहीं दिया।

बारह

फिर वही लकड़ी की पटरी, रात का समय और खुली खिड़की। वे दोनों बातचीत कर रहे थे।

ज़िवागो बता रहा था कि उसने जार को पहले-पहल मोर्चे पर कब और किस रूप में देखा। फौज में ज़िवागो का वह पहला वसन्त था। कारपांइन पर्वतमाला की घाटी के मुँह पर तैनात यूनिट के साथ वह काम कर रहा था। यही घाटी हंगरी के रास्ते को अवरुद्ध करती थी। इस यूनिट का मुख्य कार्यालय इसी घाटी में था। दर्रे के तले में रेल्वे स्टेशन था। देवदार के पेड़ काफी संख्या में थे। उनके सिर मानो आकाश को छू रहे थे। पत्थरों की छोटी पहाड़ियाँ जंगल में फटे हुए कम्बल के पैबंद की तरह दिखाई देतीं। सीलन और अन्धकार से भरी हुई यह भूरे रंग की हवाशून्य घाटी एक ओर से लटकती हुई-सी मालूम पड़ती। रेल्वे स्टेशन पर धुएँ के बादल मंडराते रहते। मानो प्रत्येक वस्तु भाप और धुएँ से आच्छादित हो। मैदानों में था भूरे रंग का कुहरा, भूरे पर्वत, काला जंगल, अंधकारपूर्ण बादलों की घटा। उस समय शहंशाह गलेसिया में निरीक्षण का दौरा कर रहे थे। अचानक सूचना मिली कि वे इस यूनिट का निरीक्षण करने के लिए आने वाले हैं। इस यूनिट के वे स्वयं माननीय कर्नल थे। वे यहाँ किसी भी क्षण पहुँच सकते थे। स्टेशन पर उनके

सैनिक-सम्मान की व्यवस्था की गयी थी। संशय और द्विधा के साथ दो घंटे बीत गये। अंत में दो शाही-गाड़ियाँ एक के बाद एक सामने से गुजर गयीं। फिर जार की ट्रेन प्लेटफार्म पर आकर रुकी।

ग्राण्ड ड्यूक निकोलन के साथ जार ने गोलंदाज-टुकड़ी का निरीक्षण किया। उनके प्रत्येक शब्द में अभिवादन और नम्रता का भाव था। बीच-बीच में 'हुर्रा' के नारों की आवाज़ ऐसे सुनाई देती, मानो बाल्टी का पानी नीचे छलक रहा हो। आशु-क्षुब्ध जार की मुस्कराहट से उनकी थकावट और वृद्धावस्था के चिह्न दिखाई दे रहे थे।

सिक्कों और मूर्तियों में जिस जार का चित्रण था उससे प्रस्तुत जार काफी भिन्न दिखाई दे रहे थे। चेहरे की मुसकराहट के बावजूद भी वे काफी थके हुए और वृद्ध मालूम पड़ते थे। उनके चेहरे पर क्षमा की निर्विकार भावना थी। ग्राण्ड ड्यूक की ओर उनकी दृष्टि विनयपूर्ण थी। ग्राण्ड ड्यूक सम्मानपूर्ण तरीके से, अदब के साथ उन्हें अपनी दिक्कतें समझा रहे थे। वे शब्दों का इस्तेमाल कम करते। उनकी भौंहें और कन्धे ही उनकी बात को अधिक स्पष्टता से व्यक्त कर देते।

इस गर्म भूरे पहाड़ी प्रभात में जार के इस स्वरूप को देख कर यूरा दुख, अफसोस और भय महसूस कर रहा था। उसने सोचा कि एकाकीपना, अविश्वास और शर्मीलापन किसी भी अत्याचारी व्यक्ति के लिए अच्छे गुण साबित हो सकते हैं। इन्हीं गुणों से वह किसी की हत्या भी कर सकता है और ऐसा व्यक्ति किसी भी बड़े से बड़े अपराधी को सहज भाव से क्षमा कर सकता है। किसी को भी बन्धन में फँसा सकता है, किसी को भी मुक्त कर सकता है।

उसे विल्हेम की तरह एक भाषण देना चाहिये था—'मैं, मेरी तलवार, मेरी प्रजा!' जनता के बारे में कुछ न कुछ कहना ही चाहिए था। लेकिन उनके व्यवहार में शुद्ध रूसी तरीका था। दुखद रूप से वे इन तमाम ओछाइयों से ऊपर उठे हुए थे। इस तरह के तमाशे की रूस में कल्पना भी नहीं की जा सकती। एक जमाना था जब कि यह सब काफी

प्रचलित था। राजा, महाराजा और राजनीतिज्ञों के भाषण में इस्तेमाल होने वाले ये ब्रह्म वाक्य—'जनता—मेरी प्रजा, आदि!' अब तो ये मुहावरे भर के लिए हैं।

सम्प्रति मोर्चे पर काफी संवाददाता और पत्रकार जमा हो गये थे। वे अच्छे खासे दर्शक थे। प्रचलित अक्ल के कुछ अंश उन्हें किसी तरह मिल गये। घायलों को देखकर जनता के लिए उन्होंने एक नया सिद्धांत बनाया। जिस में डाह्ल (रूसी डिक्शनरी संयोजक। यह शब्दकोश श्रेष्ठ साहित्य का अंग माना जाता है। इस में भाषा योजना की हर प्रकार की सूची संकलित की गई है।) की तरह व्यर्थ भाषा का उन्माद और शाब्दिक व्यभिचार होता। इनमें से एक प्रकार यह है। दृश्यों के रेखाचित्र का यह साहित्यिक रूप कल ही मैं पढ़ रहा था। मेरे पास अभी भी वह होगा। यह रहा... 'भूरे रंग का एक दिन, कल की तरह सुबह से वर्षा का विद्रोह जारी है। मैं खिड़की के पास खड़ा देख रहा हूँ, अन्तहीन पंक्तियों में खड़े कैदी। घायलों की भीड़। एक धड़ाका! बन्दूक की गोलियाँ ठीक कल की तरह आज भी चल रही हैं। आने वाले कल को भी यही आवाज़ फिर सुनाई देगी। प्रतिदिन प्रतिक्षण होने वाला यह गोलीबार।'

है कि नहीं यह चतुराई भरा व्यंग्य! लेकिन बन्दूक के विरुद्ध उसे क्या कहना है? बन्दूक गोली दागने के सिवाय कर ही क्या सकती है? उससे और कुछ उम्मीद तो की नहीं जा सकती। बन्दूक के पचड़े में न पड़कर वह अपने आप पर संयम रख ले तो ही बहुत होगा! वह अपनी स्वयं की ओर क्यों नहीं देखता? इसी वाक्य में हैं अल्पविराम, आंकड़ों की भीड़, दिन-रात का विस्तारपूर्ण विवरण! लेकिन उसके दिमाग में यह बात नहीं आ सकती कि बारम्बार दुहराने का क्रम वह स्वयं बंद क्यों नहीं कर देता। बन्द करने की आवश्यकता है उसके इस विचार-प्रवाह को। अपनी नोटबुक में एकत्रित इस बेवकूफी को ज़ाहिर कर देने से कोई तुक की बात नहीं निकल सकती। 'तथ्य' का अपने आप में कोई मतलब नहीं, जब तक कि उसमें आदमी अपना मापदण्ड, अपना आत्म-विश्वास, अपनी प्रतिभा, अपनी कल्पना न डाल दे।

गोर्डन ने कहा—ठीक कहते हो। सुबह आज जो दृश्य हम लोगों ने देखा था उसी के बारे में सोच रहा हूँ। उस कजाक नौजवान द्वारा वृद्ध की मजाक उड़ाये जाने जैसे उदाहरणों की कमी नहीं है। इन घटनाओं में शायद कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है कि जिससे किसी स्थिर सिद्धान्त की मीमांसा हो सके। इन सबके बारे में चिन्ता करने की कोई बात नहीं। लेकिन ज्यू लोगों के प्रश्न को यदि अविभाज्य रूप में लिया जाय तो उसमें निश्चित रूप से दर्शन के सिद्धान्त निकाले जा सकते हैं।

—तुम कह रहे थे, जनता क्या है? उसके प्रति सबसे बड़ी देन किसकी है? एक तो वे लोग हैं जो उनकी परिचर्या करते हैं, सेवा करते हैं; दूसरे वे लोग हैं जो उन्हें भूल जाते हैं और उन्हें अपनी कर्म-कुशल तेजस्विता के कारण विश्वव्यापी अमरता में खींचे चले जाते हैं? खैर, जाने दो। इस बारे में अधिक बहस नहीं की जा सकती। आखिर ये राष्ट्र क्या हैं, जिनके बारे में हम बातें कर रहे थे? इस युग में उनका महत्त्व सिर्फ़ राष्ट्र के रूप में ही नहीं है। बदले हुए, विकसित हुए, परिवर्तित किये हुए लोगों द्वारा बनाये गए देश हैं। इसमें विशेष बात है रूपान्तर की; न कि प्राचीन पद्धतियों के प्रति उनकी ईमानदारी की। मसीह के उपदेश इस बारे में क्या कहते हैं? कानून से उन की तुलना हो नहीं सकती। वे निश्चित वाक्य नहीं हैं। मसीह वाणी एक सरल प्रायोगिक देन है—क्या तुम नूतन जीवन-पद्धति में रहना चाहते हो? इस प्रश्न के उत्तर में प्रत्येक व्यक्ति ने खुशी के साथ हाँ भरी थी। और वे उसी को अंगीकार करके हजारों सालों से चले आ रहे हैं।

मसीह कहता है कि प्रभु के साम्राज्य में न 'ज्यू' है और न उसके अतिरिक्त ही कोई जाति विशेष। उसका अर्थ यही है कि प्रभु की नजरों में सब लोग एक समान हैं। यह मतलब तो लोग पहले से जानते ही हैं। ग्रीक के दार्शनिकों और रोम के हेव्यू सन्तों को यह बात पहले से ही मालूम थी। मसीह जीवन के नये मार्गों और उसके निकट सम्पर्क की बात कहते हैं। प्रभु का साम्राज्य हृदय की उपज ही तो है। वहाँ न कोई राष्ट्र है, न उसका विरोध—वहाँ है सिर्फ़ लोग! जनता!

अभी-अभी तुम कह रहे थे कि तथ्यों का उस समय तक कोई अर्थ नहीं, जब तक कि मनुष्य की प्रतिभा कोई मायने उसमें आरोपित न कर दे। अच्छा, जो मायने इस तथ्य को सार्थक सिद्ध करता है—वह है क्रिश्च्यनिटी। मनुष्य मात्र के लिए, उसके व्यक्तित्व के लिए यही रहस्यपूर्ण भूमिका है!

हम उन राजनीतिज्ञों के बारे में बातचीत कर रहे थे जिनकी दिलचस्पी समग्र जीवन में नहीं है। जिनकी स्वार्थजनित नकारात्मक बाधाएँ विश्व को अखण्डित रूप में देख नहीं सकतीं। सुनहले बन्धनों में आबद्ध समुदाय को देख कर वे बहुत प्रसन्न होते हैं। बन्धन जितने ही अधिक हों, उतनी ही उनकी खुशी ज्यादा होगी। जनता...खास कर जब वह छोटे से समुदाय में हो, पिछड़ी हुई हो, दुर्भाग्यग्रस्त हो, तभी उन्हें न्याय करने का, तौलने का, फैसला करने का मौका मिल सकता है। तभी उनके लिए व्यवस्था की जा सकती, ताकि वे अपना हिस्सा उनसे प्राप्त कर सकें। इस तरह की प्रवृत्ति के शिकार 'ज्यू' लोगों से बढ़कर और कौनसा उदाहरण हो सकता है? राष्ट्रीय धारणाओं ने हजारों सालों से उन्हें 'जनता' मात्र बने रहने के लिए बाध्य किया है। सिर्फ़ जनता मात्र! इसके अतिरिक्त कुछ नहीं। विशेष बात यह है कि मृत्युदायक इस कठिन कर्म के लिए उन्हें बांध दिया गया है। जब शेष संसार अपने विकसित मस्तिष्क की शक्ति द्वारा मुक्ति हासिल कर रहा था, ये लोग जनता ही बने रहे। यह असाधारण बात नहीं है? सोचो तो, इसका मतलब क्या होता है? प्रतिदिन की जीवन-प्रणाली के प्रति थकान से भरी हुई उदासीनता! पहले उनकी आत्मा पर विजय पाई गयी, इसके बाद उनकी भाषा पर, फिर उनकी जाति पर। उन्होंने यह सब देखा, सुना और उपेक्षित भाव से इसे होने दिया, स्वीकार कर लिया। उनमें तेजस्वी आध्यात्मिक शक्ति के संचार होने की इजाजत दी भी कैसे जा सकती थी? अब तो हालत यह है कि इस आवरण को यदि वे उतार भी फेंकें, तो उसके नीचे सिर्फ़ कंकाल मात्र रह जायेगा। फिर यह शहादत है

किसके लिए? इस चक्र के निरन्तर चलते रहने से किसका लाभ है? ये निर्दोष पुरुष, स्त्रियाँ तथा बच्चे इन दयापूर्ण परोपकारी भले लोगों से पता नहीं, कितनी शताब्दियों तक प्रताड़ित, लांछित और अपमानित होते रहेंगे? जनता के ये मित्र तथा राष्ट्रीय प्रश्नों पर लिखने वाले ये तमाम लेखक, वे चाहे किसी राष्ट्र के हित के अनुकूल क्यों न लिखते हों—क्या निरे कल्पनाशून्य और बुद्धिहीन हैं? क्यों 'ज्यू' लोगों के बुद्धियुक्त नेता विश्वव्यापी विपत्तियों से सरलता से बाहर निकल नहीं आते? यदि उन्हें बायलर की तरह कर्तव्य-बोझ से एक न एक दिन फट ही पड़ना है, तो हमेशा से मानव शोणित बहाने वाली इस सेना को वे बरख़ास्त क्यों नहीं कर देते? जो कि पता नहीं किसके लिए निरन्तर युद्ध कर रही है। वे उससे क्यों नहीं कहते—अब काफी हो चुका। रुक जाओ। इस एकता को भंग कर दो—एकत्रित भीड़ में शामिल मत होवो। छंट जाओ। हट जाओ। हम सबके साथ मिल जाओ। इस संसार में तुम्हीं सर्वश्रेष्ठ क्रिश्च्यन हो। तुम स्वयं वही हो जिनके विरुद्ध तुम्हें भड़का दिया गया है। निकृष्ट और कमजोर, उन आदमियों ने तुम्हें, तुम्हारे विरुद्ध भड़का दिया है, जो कि तुम में से ही हैं!

तेरह

दूसरे दिन जब ज़िवागो खाना खाने घर आया, तो उसने मिशा से कहा—तुम यहाँ से जाने के लिए बहुत उत्सुक थे न? अब हम सब यहाँ से विदा हो रहे हैं। तुम्हारा सौभाग्य—यह नहीं कह पाऊँगा—क्योंकि यह सौभाग्य नहीं है। हम यहाँ से बुरी तरह पराजित होकर खदेड़े जा रहे हैं। पश्चिम से दबाव पड़ रहा है। सिर्फ़ पूर्व का रास्ता खुला है। तमाम मेडिकल-यूनिट को निकल जाने का हुक्म मिल गया है। कल अथवा परसों हम लोग यहाँ से चले जाएँगे। पता नहीं, कहाँ किस ओर?

—'क्योंजी कार्पेन्को महाशय, आपने गोर्डन साहब के कपड़े अभी तक धोये या नहीं?' हमेशा यही होता है। कार्पेन्को-साहब इस सवाल के जवाब में हमेशा यही कहेंगे कि उन्होंने अपनी लड़की को कपड़े धोने के

लिए दे दिये हैं। और यह लड़की कौन है, कहाँ है, इस बारे में न वह खुद जानता है और न किसी को ही कुछ मालूम है।

मीशा ने ज़िवागो की कमीज उधार माँगने के लिए माफी चाही और नौकर झूठे बहाने करता रहा। ज़िवागो ने किसी ओर ध्यान नहीं दिया।

—यही फौजी जिन्दगी हम लोगों के नसीब में लिखी हुई है। जैसे ही कोई एक स्थान पर रहने का थोड़ा बहुत अभ्यस्त हो जाय, उसे दूसरी जगह के लिए रवाना हो जाना होगा। जब मैं यहाँ आया था, मुझे यहाँ का कुछ भी पसन्द नहीं था। और अब, भगवान की दया से मुझे यह भी मुश्किल से याद आयेगा कि यहाँ की कोई चीज़ मेरे विपरीत भी थी! अब मुझे ऐसा लगने लगा है कि मैं सारी ज़िन्दगी यहाँ गुजार सकता हूँ। लगता है कि कोने में पड़े स्टोव की ओर देखते हुए, खपरेल पर पड़ने वाली सूर्य की रोशनी की ओर ताकते हुए और उसके आरपार पेड़ों की छाया को निहारते हुए मैं सारी ज़िन्दगी यहाँ गुजार सकता हूँ।

वे तैयार हो गये।

रात के समय बन्दूक की आवाज़, भागते हुए लोगों की पदचाप और हो-हल्ले के कारण उनकी नींद खुल गयी। गाँव में भयंकर आग लगी थी। खिड़कियों पर आग की लपटों की परछाईं पड़ रही थी। ज़िवागो ने नौकर को पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए भेजा। मालूम यह हुआ कि जर्मन घुस आये हैं। ज़िवागो फुरती से अस्पताल की ओर भागा। वहाँ जाने पर मालूम हुआ कि यही हकीकत है। गाँव में आग धधक रही है। अस्पताल खाली की जा रही है। इस समय 'खाली करने का हुक्म' प्राप्त करने का भी अवकाश नहीं था।

—सुबह से पहले हम यहाँ से चल देंगे। पहले जत्थे के साथ तुम चले जाना। गाड़ी तैयार है। मैंने तुम्हारे लिए व्यवस्था कर दी है। अच्छा, खुदा हाफिज! चलो, मैं तुम्हें पहुँचा आऊँ, ताकि तुम्हें ठीक से जगह मिल जाय। ज़िवागो ने कहा।

दीवार के सहारे झुकते हुए वे गाँव की गलियों की ओर दौड़ पड़े। सामने गोलियाँ चल रही थीं और चौराहे पर बमों का फूटना स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। मानो परिकल्पित छतें मैदानों के ऊपर उड़ रही हों।

—और तुम? गोर्डन ने दौड़ते हुए पूछा।

—मैं दूसरे जत्थे के साथ आ रहा हूँ। मुझे लौट कर अपना सामान इकट्ठा करना है।

गाँव के किनारे वे विदा हो गये। गाड़ियों और यात्रियों का दल रवाना हो गया। हाथ हिला कर डाक्टर ज़िवागो ने अपने मित्र को विदा दी। जलते हुए खलिहानों के प्रकाश में थोड़ी देर और ज़िवागो दिखाई देता रहा।

ज़िवागो फुरती से, संरक्षण के लिए मकान की ओर भागा। कुछ ही गज़ दूर रहा होगा कि उसके पांव में फूटे हुए बम का एक टुकड़ा लगा, रक्त से सना हुआ वह बीच रास्ते में बेहोश होकर गिर पड़ा।

चौदह

अस्पताल के आफिसरों के वार्ड में ज़िवागो का स्वास्थ्य सुधर रहा था। यह अस्पताल एक छोटे से शहर में था। यहाँ एक रेल्वे-लाइन थी और यह हेडक्वार्टर के बिलकुल समीप था। फरवरी के अंत का गर्मी से भरा हुआ दिन था। उसके बिस्तर के पास वाली खिड़की खुली पड़ी थी। खाना खाने से पहले का समय काटने में तमाम मरीज व्यस्त थे। चर्चा का विषय थी नई नर्स—जो कि अभी-अभी अस्पताल में आई थी और वहाँ का दौरा करने वाली थी। उसके बिस्तर के ठीक सामने के पलंग पर गुल्युलिन अखबार पढ़ते-पढ़ते गुस्से से चिल्लाने लगता था। सेंसरशिप के कारण अखबार के कालम खाली पड़े थे, यही उसके क्रोध का मुख्य कारण था। यूरा अपनी पत्नी का पत्र पढ़ रहा था। यह पत्र युद्धस्थल के डाकघर द्वारा हाल ही में दिया गया था। हवा के कारण कागज की फरफराहट सुनाई दे रही थी। किसी के हल्के पदचापों ने उसका ध्यान भंग कर दिया। उसने नजर उठा कर देखा। लारा वार्ड में आ गयी थी।

ज़िवागो और गुल्युलिन दोनों ने उसे पहचान लिया था। लेकिन दोनों को मालूम नहीं था कि उभयपक्ष भी उसे पहचानता है। लारा ने एक मरीज के पास आकर कहा—कैसे हो ? खिड़की क्यों खोल दी ? तुम्हें सर्दी नहीं लगती ?

गुल्युलिन के पास आकर उसने उसके स्वास्थ्य के बारे में पूछा। घड़ी देखती हुई वह उसकी नब्ज की गति का अनुमान लगा रही थी। अचानक उसने उसका हाथ छोड़ दिया। भ्रान्तियुक्त भावनाओं के साथ उसकी ओर ताकती हुई वह उसके बिस्तर पर बैठ गयी।

—वास्तव में मैं यही उम्मीद करता था, लारा। मैं तुम्हारे पति को जानता हूँ। हम एक ही फौजी-टुकड़ी में थे। उसका सारा सामान, तुम्हारे लिये ही, मैंने अपने पास रखा है।

उसने कहा—असंभव! यह बिलकुल असंभव है। तुम उसे जानते हो ? कितना असाधारण संयोग! सच कहो, वास्तव में यह सब कैसे हुआ ? बम के कारण क्या वही मारा गया था ? विस्फोट के ध्वंसावशेष में ही वह दफन हो गया ? मैं सब समझती हूँ। कृपया मुझे सब कुछ बता दो। मेहरबानी करके घबराओ मत, और संकोच मत करो।

गुल्युलिन का साहस उसका साथ नहीं दे पा रहा था। सान्त्वना देने के लिए कोई झूठी बात उसे खोजे नहीं मिल रही थी।

—पाशा को बन्दी बना लिया गया। अपनी टुकड़ी से वह बहुत आगे निकल चुका था। फौज चारों ओर से घेर ली गयी थी; और काट डाली गयी थी। उसे आत्मसमर्पण के लिए बाध्य किया गया था।

लेकिन लारा ने उस पर विश्वास नहीं किया। इस अनपेक्षित आकस्मिक मुलाकात और समाचारों से वह सिहर उठी थी और नहीं चाहती थी कि वह उपस्थित अपरिचित लोगों के सामने बेहोश होकर गिर पड़े। वह तेजी के साथ बरामदे की ओर भाग गयी। थोड़ी देर बाद जब वह वापस लौटकर आई तो बाहर से बिलकुल शान्त दिखाई दे रही थी। उसे डर था

कि गुल्युलिन से उसने ज़रा भी बात की तो उसके मुँह से चीख निकल जायेगी। इसलिए जानबूझ कर उसकी उपेक्षा करती हुई, ज़िवागो के पास आकर भावनाहीन स्थिर स्वर में उसने पूछा—कैसे हो? अब आपकी तबीयत कैसी है?

—धन्यवाद! मैं डाक्टर हूँ। अपनी देखभाल मैं खुद कर सकता हूँ। मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं।

लारा ने सोचा, उसकी आवाज़ में बुरा मान जाने की ध्वनि क्यों है? उसने आश्चर्य से छोटी नाक वाले चेहरे की ओर देखा, जिस पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं था।

कई दिनों से मौसम खराब था। रात में अशान्त, गर्म, धरती की गन्धभरी गंध के साथ हवा चलती रही। जनरल हेडक्वार्टर से अनेक प्रकार के समाचार आ रहे थे। अन्तर्भाग से खतरे की सूचना देने वाली अफ़वाहें उड़ रही थीं। बीच-बीच में पीटर्सबर्ग के साथ तार का सम्बन्ध टूट जाता।

यूरा, गुल्युलिन तथा अन्य मरीजों के साथ दो-चार शब्दों में थोड़ी-बहुत बातचीत करके लारा ने सुबह और शाम का दौरा समाप्त किया। वह सोच रही थी यूरा के बारे में। कितना विचित्र प्राणी है। नौजवान और निष्ठुर। छोटी-सी नाक के कारण उसे खूबसूरत तो नहीं कहा जा सकता। लेकिन बोलने का उसका संयत तरीका! इस्तेमाल किये जाने वाले शब्दों का सुन्दर चुनाव। कुछ भी हो उससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं। मेरा काम है, अपना कर्तव्य पूरा करना। वह वापस मास्को अपनी कन्या कात्या के पास जाना चाहती थी। वहाँ से नर्सिंग के इस काम से मुक्ति की प्रार्थना करके, छुट्टी लेकर वापस युर्यातिन लौट कर स्कूल में पढ़ाने का काम शुरू करना चाहती थी। पाशा के साथ क्या गुजरी, अब इस बारे में सब कुछ स्पष्ट हो गया था।

—वहाँ कात्या कैसी होगी? उसके क्या हालचाल होंगे? गरीब अनाथ लड़की! उसके अनाथ होने की बात, उसे हमेशा रुला देती।

सब कुछ बदल गया था। इससे पहले हर तरह का कठिन कार्यभार, हर प्रकार का त्याग दूसरों के लिए था, स्वदेश के लिए था। लेकिन अब युद्ध में हार हो रही थी। (और यह अभाग्य उसकी पृष्ठभूमि में था!) लगता था मानो सब कुछ स्थान भ्रष्ट हो गया हो। कोई वस्तु पवित्र रूप से सही स्थान पर नहीं रह गयी थी। सभी कुछ बदल गया था। नैतिक वातावरण और उसका स्वर बदल गया है। कोई नहीं जानता कि क्या कहना चाहिए? और कोई किसी की सुनता भी तो नहीं। मानो सारी उम्र बच्चे की तरह दूसरों के निर्देशन में रहने के बाद, अचानक मालूम हो गया हो कि अब खुद के कदमों के बल पर चलना होगा। अब कहीं किसी तरह का सहारा नहीं है। न परिवार है, न वे लोग, जिनका निर्णय मान्य हो सके। ऐसे समय ज़रूरत होती है, किसी एक चीज़ पर, किसी एक तत्त्व पर, एकान्त रूप से विश्वास करने की। सत्य अथवा सौन्दर्य से अनुशासित जीवन में मनुष्य के बने तमाम नियम, कायदे, कानून अस्वीकृत हो गये हैं। जब कि किसी निश्चित ध्येय के प्रति पूर्ण रूप से आत्मसमर्पण करने की ज़रूरत महसूस होने लगती है।

उसे याद आया कि कात्या उसके पास है। उसकी प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति के लिए, उसके ध्येय की पूर्ति के लिए वह अप्रतिबन्धित रूप में अभी भी कायम है। अब, जब कि पाशा इस संसार में नहीं रहा, लारा 'माँ' के सिवाय कुछ भी नहीं है। उसकी सारी शक्ति अपने अनाथ बच्चे पर ही केन्द्रित रहेगी।

मास्को से ज़िवागो को सूचना मिली कि गोर्डन और डुडरोव ने बिना अनुमति के उसकी पुस्तक छाप दी है। एक महान साहित्यिक कृति के रूप में उसका खूब सम्मान हुआ है। यह भी समाचार मिला कि मास्को शोचनीय अवस्था से गुजर रहा है और वहाँ किसी महत्त्वपूर्ण घटना की आवृत्ति होने वाली है। जनता में असंतोष बढ़ता जा रहा है। कोई न कोई गंभीर घटना घटित होने वाली है।

रात काफी बीत चुकी थी। ज़िवागो को बुरी तरह नींद आ रही थी। जब भी उसकी नींद खुलती, उसे लगता कि बीते दिनों की उत्तेजना उसे

जगाये रख रही है। खिड़की के बाहर हवा, तन्द्राछन्न अवस्था में, अलसा कर जंभाई लेती हुई, ठंडी साँस में शिकायत करती हुई, चीख रही थी—टोन्या, शाशा, मैं तुम लोगों से दूर हूँ। मैं घर आना चाहता हूँ। मैंने तुम्हें क्यों खो दिया? मैं वापस अपने काम पर लौटना चाहता हूँ। वायु की सनसनाहट के मध्य यूरा सोता रहा, जागता रहा। खुशी और दुख का आकस्मिक सांघातिक आवेग, विपरीत मौसम की संत्रस्त रात्रि की तरह उसे कुरेदता रहा।

लारा सोच रही थी कि आखिरकार गुल्युलिन ने पाशा की स्मृति के प्रति श्रद्धा ही व्यक्त की है। उसके सामान को उसने उसके लिए संजोये रखा है। छि: उस में इतनी भी शराफत नहीं थी कि वह उसके बारे में भी कुछ पूछे कि वह कहाँ से आया है और कौन है? अपनी इस कृतघ्नता का प्रायश्चित्त करने के लिए दूसरे दिन अस्पताल का चक्कर लगाते हुए उसने गुल्युलिन से बातचीत की 'भगवान की कृपा' गुल्युलिन की बात सुनकर उसने मन ही मन कहा। गुल्युलिन कह रहा था; 28 ब्रेस्ट स्ट्रीट, तिमिरजिन, 1905 की क्रांति, शिशिर ऋतु, युसुप्का...आदि आदि...उसे तो कुछ भी याद नहीं आता। हाँ उस साल, उस साल, वह मकान। सचमुच ऐसा भी कोई मकान, कोई समय, कोई स्थान और अवस्था थी जो कि स्पष्टता से पुन: उसके सामने लौट आये? जिसे वह ईसा-वाणी कहा करती थी—वह बन्दूक की आवाज़। बचपन में पहली बार कितनी तेजस्वी, कितनी गंभीर, कितनी दृढ़ अनुभूति उसने महसूस की थी।

मुझे माफ कर दो लेफ्टिनेन्ट। आपने अपना क्या नाम बताया था? हाँ, आपने नाम बताया था। एक बार और बता दीजिए। धन्यवाद! उन तमाम बातों की याद दिलाने के लिए मैं तुम्हें कितना ही धन्यवाद दूँ, कम है।

सारे दिन वह यही सोचती रही, वह मकान, वह साल, वह स्थिति, वह अवस्था...। मानो अपने आप से बातचीत कर रही हो।

वही दृश्य, ब्रेस्ट स्ट्रीट नम्बर 28, फिर गोलाबारी शुरू हो गयी है—यह लड़ाई अब कब तक चलती रहेगी? इस बार जो बच्चे गोलियाँ चला रहे हैं, वे सब मेरी तरह बड़े हो गये हैं और यहाँ मौजूद हैं। वे सब लोग यहाँ मौजूद हैं, जो उस समय अपने अथवा दूसरों के घर में सादगी से रहते थे। वह सब कुछ कितना असाधारण था, कितना असाधारण!

उछलते, शोर मचाते, वैशाखी अथवा लकड़ी के सहारे वे तमाम मरीज शोर मचाते हुए दूसरे कमरे की ओर भाग आये, जो बिस्तर पर असहाय हालत में नहीं थे। लोगों का शोर ऊपर उठ रहा था—पीटर्सबर्ग की गलियों में लड़ाई। नगर-रक्षा के लिए तैनात सेना विद्रोहियों में शामिल हो गई है।

यह क्रांति है!

5

व्यतीत

जहाँ अस्पताल स्थानान्तरित किया गया था, उसे मेल्यूजेवो कहा जाता था। उपजाऊ काली मिट्टी के प्रदेश में यह शहर अवस्थित था। पथ पर से गुज़रने वाले सैनिकों की पदधूलि से काली मिट्टी आसमान में टिड्डियों के दल की तरह छाई हुई थी। फौज की टुकड़ियाँ युद्ध-स्थल की ओर जा रही थीं और कुछ वहाँ से आ रही थीं। यह कहना कठिन था कि युद्ध जारी है अथवा समाप्त हो गया।

नर्स लारा, ज़िवागो और गुल्युलिन के लिए नित नये काम कुकुरमुत्ते की तरह पैदा होते रहते। उनके साथ थे कुछ दूसरे लोग भी, जो कि थोड़े बहुत जानकार तथा अनुभवी माने जाते थे, उन्हें जो भी काम आ पड़ा,

उसके लिए ले लिया गया था। सेना के रसद और स्वास्थ्य विभाग अथवा म्युनिसिपल काऊन्सिल के लिए वे काम कर रहे थे। कामों का इस तरह बदलना उनके लिए नवीनतापूर्ण होता; और वे इसे खेल के रूप में ही लेते। लेकिन कभी-कभी उन्हें महसूस होता कि अब यह खेल समाप्त हो जाना चाहिए और उन्हें अपने साधारण काम पर लग जाना चाहिए तथा घर लौट जाना चाहिए।

लारा और डॉ. ज़िवागो अपने कामों के सिलसिले में एक दूसरे के सम्पर्क में आते रहते।

दो

वर्षा के कारण काली मिट्टी का कीचड़ काफी के रंग में तब्दील हो गया था। पलस्तरहीन सड़कें इस मिट्टी से लथपथ हो गयीं। शहर छोटा था, लिहाजा किसी भी सड़क के पार फैला हुआ मैदान तथा मुक्त गगन आसानी से दिखाई दे सकता था। यह सारा प्रदेश क्रांति और युद्ध की ज्वाला से प्रज्वलित था।

ज़िवागो ने अपनी पत्नी को लिखा—मैं पड़ोस की सेना की कुछ टुकड़ियों को देखने गया। उनके आचरण को अनुशासन-बद्ध करने के प्रत्येक उपाय के बावजूद हालत नाजुक है। पुनश्च—यद्यपि मैं इसका उल्लेख पहले भी कर चुका हूँ। मेरा अधिकाँश कामकाज एक नर्स के साथ होता है। यह मास्को की एक नर्स है जो कि यूराल्स में पैदा हुई थी। तुम्हें याद होगा अन्ना की मृत्यु वाले दिन स्वेटिटस्की की क्रिसमस पार्टी में एक छात्रा ने एक सरकारी वकील पर गोली चलाई थी। शायद इसके बाद उस पर मुकद्दमा भी चला था। मुझे याद आता है कि मिशा और मैंने इसे एक बार और देखा था। उस समय भी वह साधारण स्कूल-छात्रा ही थी। वह किसी रद्दी से होटल में रहती थी। एक बार पिताजी हमें वहाँ ले गये थे। मुझे यह तो ठीक से याद नहीं है कि किस सिलसिले में हम वहाँ गये थे? इतना ही याद है कि वह भयंकर ठंड भरी रात थी। खैर, यही लड़की लारा आन्तिपोव है।

मैंने घर जाने की बहुत कोशिश की। लेकिन यह इतना आसान नहीं है। काम अधिक नहीं है और इसे आसानी से किसी को सुपुर्द किया जा सकता है। मगर समस्या है यात्रा की। या तो कोई रेल है ही नहीं; और है तो भी इतनी भरी हुई कि जगह मिलना मुश्किल है। फिर भी अनिश्चित काल तक तो यह सब चल नहीं सकता। हम में से कुछ लोगों ने त्यागपत्र दे दिये हैं तथा कुछ लोगों को छुट्टी मिल गयी है। अगले हफ्ते तक किसी भी हालत में हम लोग यहाँ से रवाना हो जायेंगे। लारा और गुल्युलिन भी इस योजना में शामिल हैं। हम लोगों को अलग-अलग रवाना होना होगा। इससे हमें अधिक सुविधा और मौका मिल सकेगा। सो मैं इस गोरखधन्धे से निकल कर अचानक कभी भी आ सकता हूँ। यद्यपि मैं कोशिश करूँगा कि पहुँचने से पहले तुम्हें तार दे दूँ।

रवाना होने से पहले उसे टोन्या का उत्तर मिल गया। भारी दिल से आँसुओं से भीगे हुए टूटे-फूटे वाक्यों में; आँसुओं और स्याही के धब्बों के साथ उसने अपने पति से प्रार्थना की थी कि वह मास्को न आये। बल्कि उस नर्स के साथ यूराल्स चला जाय जिसके कि सारे जीवन में आकस्मिक घटनाओं तथा अच्छे लक्षणों का समावेश है। सीधे-सादे तरीकों के साथ, उसकी टोन्या की, तुलना नहीं हो सकेगी। शाशा के भविष्य की चिन्ता मत करना। उसके लिए तुम्हें कभी शर्मिन्दा नहीं होना पड़ेगा। मैं वादा करती हूँ कि उसकी परवरिश ठीक उसी तौर-तरीके से होगी, जो कि तुमने बचपन से हमारे इस घर में देखी है।

ज़िवागो ने तुरन्त उत्तर लिखा—तुम पागल हो क्या टोन्या, ये सब तुम क्यों सोच रही हो? समझ में नहीं आता कि तुम सचमुच में कुछ समझती ही नहीं हो, अथवा किसी चीज़ को गहराई से सोचना ही नहीं चाहती। यदि तुम्हारे घर और तुम पर मेरा इतना अभेद्य विश्वास न होता तो युद्धस्थल पर बिताये गये इन दो भयंकर विनाशकारी वर्षों के बाद भी मैं बाकी बचता? शब्दों से सब कुछ कहा नहीं जा सकता। जल्द ही हम मिलने वाले हैं। हमारा जीवन नये सिरे से फिर शुरू होगा

और सारी बातें साफ हो जायेंगी। तुम्हारे पत्र से मुझे जो परेशानी हो रही है, वह यह है कि यदि मेरे ही कारण तुमने इस तरह का पत्र लिखा है, तो उसका अर्थ है कि मेरा व्यवहार ही दोषपूर्ण है। तुम्हारे सामने ही नहीं, एक और स्त्री के सामने भी मैं अपराधी हूँ कि मैंने उसे भी वहम में रखा। जब वह लौटेगी, मैं उससे सच्चे दिल से माफी माँग लूँगा। तहसील तथा जिला स्तर पर तो ग्राम पंचायतें पहले से ही मौजूद थीं, स्थानीय पंचायतें गांव-गांव में स्थापित की जा रही हैं। प्रशासन के परिवर्तनों में निर्देशक का काम करने वाले अपने एक मित्र की सहायता करने के लिए वह भी वहाँ गयी हुई है। तुम्हें जानकर आश्चर्य होगा कि एक ही मकान में रहते हुए भी मुझे यह नहीं मालूम कि उसका कमरा कौन-सा है। मैंने इस ओर कभी ध्यान ही नहीं दिया।

तीन

मेल्युजेवो से दो रास्ते आते थे। एक पूर्व की ओर तथा दूसरा पश्चिम की ओर। एक कच्ची सड़क जंगल में से जेबूशिनो की ओर जाती थी। यह एक छोटा सा शहर था। जहाँ अनाज का व्यवसाय हुआ करता था। शासन की दृष्टि से मेल्यूजेवो के आश्रित होते हुए भी यह कई दृष्टियों से आगे बढ़ा हुआ था। दूसरी सड़क पक्की थी। शीत में दलदल की तरह तथा गर्मियों में शुष्क रहने वाले खेतों में से गुज़रती हुई यह बिरुचि की ओर रेल्वे स्टेशन तक चली गयी थी। इसी शहर के चक्की वाले ब्लाजिको द्वारा जून में जेबूशिनो स्वतंत्र गणराज्य बन गया। युद्धकाल में जिन भगोड़े सैनिकों ने हथियार डाल दिये थे वे ही, 212 नम्बर की रेजिमेन्ट के सिपाही, बिरुचि से यहाँ चले आये थे। इस गणराज्य को उनका समर्थन प्राप्त था। इस गणराज्य ने अस्थायी सरकार को अमान्य कर दिया और शेष रूस से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। ब्लाजिको एक विशेष सम्प्रदाय के विचारों को मानता था और एक बार उसने टालस्टाय से पत्र-व्यवहार द्वारा सम्पर्क भी स्थापित किया था। स्थानीय काऊन्सिल को वह स्वर्गीय प्रतिष्ठायुक्त पद कहा करता था और इसे

नवीन स्वर्णयुग का साम्राज्य घोषित किया करता था—जहाँ प्रत्येक व्यक्ति बांट कर काम करेगा और सारी सम्पत्ति सबके लिए समान भाव से सुलभ होगी।

जेबूशिनो हमेशा से पौराणिक कहानियों तथा अतिशयोक्तिपूर्ण कथाओं का उद्गमस्थल रहा है। गहरे जंगलों में स्थित इस स्थान का उल्लेख 'टाइम्स आफ ट्रबल्स' में उपलब्ध है। कहा जाता था कि ये जंगल डाकुओं से भरे पड़े हैं। इसके व्यापारियों की स्मृद्धि तथा यहाँ की चमत्कारपूर्ण काल्पनिक मिट्टी के उपजाऊपन की बात दूर दूर तक प्रसिद्ध थी। इसी कारण इसके बारे में अनेक लोकप्रिय अन्धविश्वास प्रचलित हुए, रीति-रिवाज प्रस्थापित हुए। यहाँ के लोगों की बोलने की विशेषता और विचित्रता इसे अन्य शहरों से अलग करने के लिए यथेष्ट थी। ऐसी ही काल्पनिक विचित्र कथाएँ ब्लाजिको के मुख्य सहायक के बारे में भी कही जाती थीं। सुना है कि वह बहरा और गूँगा ही पैदा हुआ था। मगर मौका आने पर उसकी वाणी ईश्वरीय चमत्कार से खुल जाती थी। यह गणतंत्र अधिक दिनों तक टिका नहीं। एक पखवाड़े में ही समाप्त हो गया। जून के अन्तिम सप्ताह से पहले ही अस्थाई सरकार के वफादार सैनिकों ने इसे ढहा दिया। भागे हुए सैनिक बिरुचि की ओर लौट पड़े। एक बार रेल्वे-लाइन के पास, जंक्शन के दोनों ओर के जंगलों की सफाई की गई थी। चोरी से आकर मजदूर यहाँ से लकड़ियाँ काट ले जाते। उनकी टूटी हुई झोपड़ियाँ अभी भी ध्वंसावशेष के रूप में यहाँ मौजूद थीं।

भगोड़े सैनिकों ने अपना डेरा यहीं डाला।

चार

काउन्टेस जबरिस्काया ने अपना मकान युद्ध के प्रारम्भ काल में ही रेडक्रास को दे दिया था। यहीं डॉक्टर ज़िवागो का इलाज हुआ था; और यहीं वह अब डॉक्टर के रूप में काम कर रहा था। शहर के सबसे अच्छे क्षेत्र में यह मकान था। इसकी दो मंजिलें थीं। मुख्य सड़क के एक कोने

में तथा चौराहे के पास वाले स्थान को प्लाज कहा जाता है। पहले यहाँ सैनिकों की कवायद हुआ करती थी, अब सभाएँ होती हैं।

यहाँ से पड़ोस का दृश्य अच्छी तरह दिखाई देता है। काउन्टेस का पिछला बगीचा भी यहाँ से बखूबी दिखाई देता है। रजडोलनोये जिले में इस काउन्टेस की बड़ी भारी जागीर थी। यह मकान काउन्टेस ने किन्हीं आकस्मिक कार्यों के सिलसिले में आने पर ठहरने के लिए लिया था। गर्मी में इधर-उधर से आने वाले मेहमानों के लिए ठहरने की यहाँ उचित व्यवस्था थी। मकान-मालकिन अक्सर पीटर्सबर्ग में ही रहती थी। अब यह घर अस्पताल बन गया था और उसकी स्वामिनी पीटर्सबर्ग में गिरफ्तार थी। नौकर-चाकरों के बड़े भारी झुण्ड में से अब केवल दो स्त्रियाँ ही बच रही थीं। एक थी उस्तिन्या जो कि काउन्टेस की रसोईदारिन थी और दूसरी फ्यूरी, जिसने उसकी उन लड़कियों को पाला-पोसा था, जिनकी अब शादी हो चुकी है।

पुराना कोट पहने तथा चप्पलें फटकारती हुई भूरे बालों तथा गुलाबी चेहरे वाली मैडम फ्यूरी इस प्रकार चल-फिर रही थी मानो यह अस्पताल नहीं, उसका घर ही हो। टूटी-फूटी रूसी भाषा में वह विचित्र कथाएँ सुनाते वक़्त अपने शब्दों का अंतिम हिस्सा हड़प कर जाती। नाटकीय अभिनय और हावभावों के मध्य से उठने वाली उसकी हँसी का अन्त खाँसी के दौरे से होता। उसका खयाल था कि वह नई नर्स लारा के अन्दर-बाहर की तमाम बातें जानती है। वह सोचती, डॉक्टर ज़िवागो और लारा का एक दूसरे के प्रति आकर्षित होना अनिवार्य रूप से स्वाभाविक है। उसके कथनानुसार कामुक प्रेम के उत्तेजक षड्यन्त्र लेटिन-हृदय की विशेषता है। इन दोनों के संयोग को देख कर वह इतनी खुश हो उठती, जितनी वह कभी नहीं हुई थी। अँगुलियों के कपटपूर्ण इशारों का अर्थ लारा की समझ में नहीं आता और ज़िवागो इन सबसे क्रोधित हो उठता। अपने स्वभाव की विशेषताओं के अनुसार वह अपने इस भ्रम को किसी भी कीमत पर छोड़ना नहीं चाहती थी।

उस्तिन्या का स्वभाव और भी विचित्र था। सेब की तरह फूला हुआ और पका हुआ उसका डीलडौल अंडा देती हुई मुर्गी के शरीर जैसा फूला हुआ लगता। वास्तव में वह अपने शब्दों की कीमत जानती थी और अपने निर्दिष्ट विषय पर दृढ़ रहती। हर विषय पर अन्धविश्वास से भरी बेलगाम कल्पनाओं से उसका मस्तिष्क भरा हुआ था। जेबूशिनो उसकी मातृभूमि थी और कहा जाता था कि उसका पिता जादूगर था। उसे अनेक टोटके मालूम थे। घर से बाहर जाते समय वह स्टोव तथा दरवाजों के सुराखों को अभिमंत्रित जरूर कर जाती ताकि उसकी अनुपस्थिति में अग्नि अथवा प्रेतबाधा से मकान बचा रहे। वैसे वह काफी अरसे तक चुप रह सकती थी लेकिन यदि एक बार उसे भड़का दिया जाय तो फिर उसे शांत करने का कोई उपाय नहीं रहता। यदि उसके अन्धविश्वास के विरुद्ध कुछ भी कहा जाय, तो अपने पक्ष का समर्थन करने के लिए वह कमर कस कर तैयार हो जाती।

जेबूशिनो के गणतंत्र का उन्मूलन हो जाने के बावजूद भी, मेल्यूजेवो की क्रांतिकारी समिति का जिले पर आतंकवादी प्रभाव था। निश्चय यह किया गया था कि इसका उत्तर वे जागृत जन आन्दोलन द्वारा देंगे। इस तरह की कार्यवाही के लिए सन्ध्या के समय अवसर मिल गया। शांतिमय चौराहों पर स्वेच्छा से सभाएँ हुईं। उपस्थित लोगों में अधिकाँश ऐसे थे जो बिलकुल निठल्ले थे। प्लाज के दूसरी ओर आगे की स्टेशन पर सिवाय गप्पें मारने के, उनके पास कोई काम नहीं था। समिति उन्हें प्रोत्साहित कर रही थी और अतिथि वक़्ताओं के भाषणों की व्यवस्था कर रही थी। आगन्तुक वक़्ता बहरे और गूँगे की चमत्कारपूर्ण कथाओं पर बिलकुल विश्वास नहीं करते; और अपने इस अविश्वास को ज़ाहिर करने के लिए उतावले बने रहते। छोटे कारीगर, सैनिकों की स्त्रियाँ तथा मेल्युजेवो के भूतपूर्व कर्मचारी उनकी बात मानने को तैयार नहीं थे। अपने पक्ष का समर्थन करने के लिए वे तैयार रहते। उनमें से एक उस्तिन्या भी थी। पहले तो स्त्र्योचित लज्जा और संकोच के कारण वह पीछे चुपचाप बैठी रही। फिर धीरे-धीरे निर्भीक स्वर में उनकी बातों

को काटने लगी।...थोड़ी देर बाद वह एक कुशल अनुभवी सार्वजनिक वक़्ता के रूप में दिखाई देने लगी।

अस्पताल की खुली खिड़कियों में से चौराहे की यह भिनभिनाहट सुनाई दे रही थी—सन्ध्या के बाद तो इसके शब्द भी स्पष्ट होने लगे। जब उस्तिन्या बोलती, तो मेडमेजिल दूसरे कमरे में बैठे लोगों से प्रार्थना करती कि लो सुन लो। वह टूटे-फूटे स्वर में कहती...रास्पू,...जार जेबूशि...बहरे...गूँ...विश्वासघातक, विश्वासघातक! तीखी जबान से मुकाबला करने वाली अपनी साहसी सहेली के लिए मेडमेजिल गौरव अनुभव कर रही थी। ये दोनों एक दूसरे को बहुत चाहती थीं; यद्यपि उनका आपसी कलह कभी समाप्त नहीं हो पाता।

मास्को लौटने के लिए प्रधानता प्राप्त आज्ञा-पत्र लेने के लिए डॉ. ज़िवागो कार्यालयों के चक्कर काट रहा था; अपने परिचित मित्रों से विदा ले रहा था।

उस समय युद्धस्थल के स्थानीय विभाग में नवनियुक्त युवा डिपुटी अफ़सर मेल्यूजेवो की सेना के साथ जाने के दौरान यहाँ रुका हुआ था। कहा जाता था कि अभी वह नितान्त बालक ही है। युद्धस्थल की नई घटनाओं के कारण उसकी नियुक्ति हुई थी। आक्रमण की तैयारियाँ हो रही थीं। सैनिकों की उदासीनता भंग करने तथा उनमें कठिन अनुशासन लाने के लिए जी-तोड़ कोशिश की जा रही थी। क्रान्तिकारी न्यायालयों की स्थापना की गई और जो मृत्युदण्ड समाप्त कर दिया गया था, उसे फिर लागू कर दिया गया।

डॉ. ज़िवागो को अपने कागजातों के लिए स्थानीय नगर के मेजर के दस्तखतों की आवश्यकता थी। वहाँ तक पहुँचना काफी मुश्किल था। लम्बी लाइन लगी हुई थी और कोलाहल इतना था कि कुछ भी सुनाई न दे। इस भीड़ द्वारा किया जाने वाला सत्कार बहुत आनन्ददायक तो नहीं ही था। शान्तभाव से क्लर्क चुपचाप लिखने में व्यस्त थे। बढ़े हुए काम की उलझन से उनकी कमर टूट गयी थी। बीच-बीच में नजर उठा कर वे

एक दूसरे की ओर व्यंग्यपूर्ण दृष्टि से देख लेते। मेजर के कमरे से प्रसन्नताभरी आवाज़ आ रही थी। लगता था कि उस कमरे में बैठे लोगों ने अपने कुर्तों के बटन खोल दिये हैं और अब नाश्ता कर रहे हैं।

अन्दर वाले कमरे के पास आकर गुल्युलिन ने ज़िवागो की ओर देखा। शरीर की जितनी भी मुद्राएँ बढ़ा-चढ़ा कर संकेत के लिए काम में लाई जा सकती थीं, उन सबका इस्तेमाल करके वह ज़िवागो को बुला रहा था। ज़िवागो को किसी भी तरह शहर के इस मेजर से मिलना ही था, वह अन्दर चला गया। सारे कमरे में व्यग्रता व्याप्त थी। इस समय का नायक और शहर की सनसनी का कारण, डिपुटी अफसर मध्य भाग में विराजमान था। इस कार्य से सम्बन्धित न होते हुए भी और विभागीय कर्मचारी वर्ग से अलग होते हुए भी, वह इस कागजी राज्य के प्रशासकों में पंचायत कर रहा था। ज़िवागो के आने पर उसका परिचय देते हुए मेजर ने कहा—'यह लो, हमारा दूसरा सितारा यह रहा!' डिपुटी अफसर अपने में मग्न था। उसने किसी की ओर नहीं देखा। ज़िवागो द्वारा प्रस्तुत कागजों पर दस्तखत करने के लिए वह ज़रा-सा मुड़ा और सौजन्यपूर्वक हाथ मिला कर वह फिर अपने ध्यान में खो गया। ज़िवागो बैठ गया। एक वही व्यक्ति था जो यहाँ आकर आदमी की तरह बैठा था। शेष सब तो आराम से अस्त-व्यस्त टेढ़े-मेढ़े रूप में बैठे थे। मेजर अपनी टेबल पर बायरन की तरह मुद्रा बनाये हुए, हाथ की बन्द मुट्ठी पर गाल टिकाये बैठा था। भयंकर डीलडौल वाला हृष्ट-पुष्ट उसका सहायक सोफे के किनारे बैठा था। सोफे पर उसके पाँव इस तरह सिकुड़े हुए थे मानो वह जमीन पर बैठा हो। गुल्युलिन पैर फैलाये कुर्सी पर बैठा था। उसके हाथ पीछे की ओर बंधे हुए थे। वह बारम्बार कंधों की ओर माथा झुका लेता था। लट्टू की तरह वह निरन्तर घूमता रहता। एक मिनट के लिए भी शान्त न होता। उसकी बातचीत का विषय था बिरुचि के भगोड़े सैनिक।

यह डिपुटी-अधिकारी ठीक वैसा ही था, जैसा कि उसके बारे में प्रसिद्ध था। स्कूल की चाहरदीवारी से अभी-अभी निकला हुआ दुबला-पतला

और शानदार लड़का। दीपशिखा की भांति उसके आदर्शों की रोशनी जल रही थी। कहा जाता था कि वह किसी अच्छे घराने का लड़का है। कुछ लोगों का मत था कि वह किसी सम्माननीय सभासद का पुत्र है। फरवरी में इसी युवक ने अपनी फौज के साथ डूया की ओर कूच किया था। उसे गिंज अथवा गिंजे नाम से पुकारा जाता था। ज़िवागो इस नाम से आसानी से अभ्यस्त नहीं हो पाया। शुद्ध पीटर्सबर्ग तथा वाल्टिक स्वर का असर उसके बोलने में था। बात करने का ढंग उसका बड़ा साफ था। अपनी कम उम्र के कारण वह बेचैनी महसूस कर रहा था और इसीलिए अपने आप को प्रौढ़ बताने के प्रयास में व्यंग्यात्मक भाव-प्रदर्शन करने की निरन्तर चेष्टा कर रहा था। अपने कंधों को कृत्रिम रूप से सिकोड़ने की चेष्टा करते हुए वह अपने हाथ गहराई से जेब में डाले रहता।

नगर के मेजर ने उसे इत्तला दी थी कि थोड़ी दूर पर रेल्वे में कजाक रेजिमेण्ट है। ये क्रांतिकारी हैं और स्वामिभक्त भी। उन्हें बुलाकर विद्रोहियों को घेर लिया जाय और बस काम खत्म। इस सेना का कप्तान चाहता है कि शीघ्रातिशीघ्र उन्हें निःशस्त्र कर दिया जाय।

डिपुटी अफसर झल्लाकर कहने लगा—कजाक! किसी भी हालत में नहीं। यह सन् 1905 नहीं है। उन ऐतिहासिक बातों को इस समय याद मत करो। हमारे विचार एक दूसरे के विरोधी हैं, वे मिल नहीं सकते, और उधर तुम्हारे जनरलों को अक्ल का अजीर्ण हो रहा है।

—अभी तक कुछ किया तो गया है नहीं। यह तो सिर्फ़ एक राय है, एक योजना मात्र!

—उच्चाधिकारियों के साथ एक समझौते के अनुसार वे हमारी युद्ध सम्बन्धी किसी कार्यवाही में किसी तरह की दखलन्दाजी नहीं करेंगे। कजाकों को बुलाने की आज्ञा को मैं रद्द नहीं कर रहा हूँ। आने दो उन्हें। मैं अपनी बुद्धि के अनुसार ऐसा कदम उठाऊँगा जो मेरे पक्ष में होगा। मेरा खयाल है, उनका पड़ाव वहीं है।

—खैर, जी हाँ, किसी भी रूप में एक सशस्त्र छावनी!

—बहुत खूब। मैं वहाँ जाना चाहता हूँ। मुझे वह भयानक स्थान दिखा दो। दोस्तो, वे चाहे विद्रोही हों, चाहे भगोड़े, आखिर वे इन्सान हैं। और ये लोग बिलकुल बच्चों की तरह हैं। उन्हें जानना-समझना चाहिए। उनकी मनोवृत्ति समझनी चाहिए। उन्हें जानने के लिए सही तरीके इस्तेमाल करने होंगे। उनके हृदय को छूने के लिए उन्हें अग्रसर करना होगा। मैं उनके पास जाकर खुले दिल से बात करूँगा। देख लेना, वे अपने स्वर्णिम स्थान पर, जिसे उन्होंने त्याग दिया है, अवश्य लौट आवेंगे। तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास नहीं हो रहा होगा? मैं शर्त बदने के लिए तैयार हूँ।

—मैं समझता हूँ। एक हद तक आप सही हैं।

—मैं उनसे कहूँगा कि मेरा ही उदाहरण लो। मैं अपने माता-पिता का इकलौता लड़का हूँ, उनकी एक मात्र आशा। फिर भी मैंने अपना परिवार, प्रतिष्ठा और नाम सब कुछ न्योछावर कर दिया है। मैंने तुम्हारी स्वतंत्रता के लिए लड़ाई शुरू की है। संसार में अब तक प्राप्त स्वतंत्रता से विशाल आजादी के लिए मैं संघर्ष कर रहा हूँ। हमारे पुराने रक्षकों की तो बात जाने दो, जो हम सबके शानदार अग्रवर्ती थे। हमारे अधिकारों के इन योद्धाओं को कठोर परिश्रम के लिए साइबेरिया भेज दिया गया है अथवा स्कूल्सबर्ग के किले में कैद कर लिया गया है। यह जो कुछ हुआ है क्या सिर्फ़ हमारे अपने स्वार्थ के लिए? और तुम? तुम, सिर्फ़ साधारण प्राइवेट नहीं, बल्कि विश्व की प्रथम क्रांतिकारी सेना के योद्धा हो। इस गौरवपूर्ण आह्वान से तुम बच नहीं सकते! जिस समय सारा देश अपना रक्त बहा रहा है और शत्रुओं के नागपाश से मुक्त होने की चेष्टा कर रहा है, तुमने शत्रुपक्ष को मौका दिया है कि वे तुम्हें मूर्ख बनायें। राजनीतिक रूप से अचेत तुम उपद्रवी बन गये हो। उच्छृंखलता के कारण तुममें धूर्तता आ गई है जिसके लिए कोई भी चीज़ अपर्याप्त है। कहावत है न, अंगुली पकड़ कर पहुँचा पकड़ लेना अथवा साँप को

दूध पिलाना। एक इंच देने पर वे सवा गज़ की माँग करने लगेंगे। यह जो कुछ मैं कह रहा हूँ, वह व्यर्थ शब्दाडम्बर ही नहीं है! मैं उन्हें अपने आप से शर्मिन्दा करूँगा।

अपने सहायक की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखते हुए नगर के मेजर ने इस विषय पर टीका प्रस्तुत की—नहीं, यह बहुत खतरनाक होगा।

गुल्युलिन डिपुटी अफसर के उन्मादी विचारों को रोकने का भरसक प्रयत्न कर रहा था। वह 212 नम्बर के रेजिमेन्ट को अच्छी तरह से जानता था। उनके साथ वह स्वयं युद्धस्थल में भाग ले चुका था। डिपुटी अफसर की सरलता से डॉ. ज़िवागो अस्थिर-सा हो उठा। नगर के मेजर व उसके सहायक की छल-कपट भरी बातें और गूढ़ चालें वास्तव में बहुत अधिक घातक थीं। एक की मूर्खता दूसरे के पाखण्ड के लिए अनुकूल थी। नीरस, अनावश्यक और उत्साहरहित इन बातों से डा. ज़िवागो उकता गया था।

शून्यता और सुस्ती से भरे इस संसार से पलायन करने की कितनी तीव्र इच्छा है लोगों की—कि वे प्रकृति के आँचल में शरण ले सकें; बिना आवाज़ किये कस कर मेहनत कर सकें; गहरी निश्चिन्त नींद सो सकें; वास्तविक संगीत सुन सकें; और जहाँ मानवीय अनुबोधन बिना बोले सुलभ हो।

ज़िवागो को याद आया कि वह नर्स लारा के प्रति अपना स्पष्टीकरण जाहिर करना चाहता था। यद्यपि यह सब दुखद और अप्रसन्नता का ही कारण होगा। फिर भी इस बहाने से, इस कीमत पर भी, ज़िवागो के मन में उसे देखने की लालसा थी। वह उठा और फुरती से चल दिया। किसी को मालूम नहीं हो सका।

पाँच

लारा लौट आई थी।

मेडमेजिल ने ज़िवागो को यह खबर देते हुए कहा था कि लारा बहुत ही थकी हुई है और खाना खाकर ऊपर के कमरे में सोने चली गयी है। उसने

कहा है कि उसे किसी भी तरह से परेशान न किया जाय। फिर भी मेरा खयाल है, वह अभी तक सोई नहीं होगी।

ज़िवागो ने पूछा—उसका कमरा कौनसा है?

इस प्रश्न को सुन कर मेडमेजिल कुछ देर तक तो आश्चर्यचकित-सी खड़ी ही रही। इसके बाद उसने उसके कमरे का विस्तारपूर्वक ठिकाना बता दिया। अंधेरे के धुंध में मकान तथा उनकी बाड़ एक साथ मिल गयी थीं। खिड़की में से चमक रही रोशनी के कारण बगीचे की गहराई से वृक्ष और आगे बढ़ गये थे। मौसम गर्म थी और पसीने से लथपथ। पेड़ की छाल पर बत्ती की रोशनी पसीने की तरह चू रही थी।

ज़िवागो सीढ़ियों के पास ही रुक गया। वह सोच रहा था कि लम्बी यात्रा से लौट आने के बाद थकी हुई लारा को जगाना अशिष्टतापूर्ण और दुखदायी होगा। अच्छा है, यदि स्पष्टीकरण कल ही दे दिया जाय। मस्तिष्क की चंचलता की शून्यवत मुद्रा से प्रताड़ित वह खिड़की के सामने जाकर खड़ा हो गया।

शान्तिपूर्ण रात्रि में धीमी गुप्त आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। पास से गुजरने वाले रास्ते के नल से पानी की बूँदें टपक रही थीं। खिड़की के बाहर लोग कानाफूसी कर रहे थे। दूर कहीं साग-सब्जियों की बाड़ी सींची जा रही थी। कुएँ से निकाली गई बाल्टी जब वापस पानी खींचने के लिए डाली जाती, तो उसकी जंजीर की झनझनाहट सुनाई देती। दिन भर का अचेत संसार मानो अब जाग उठा हो, उसी तरह एक साथ फूलों की गंध महक उठी। सदियों पुराना काउन्टेस का बाग गिरी हुई टहनियों से भरा हुआ था। उस मकान की विशालता के अनुरूप धूलभरे पुराने नींबू के वृक्षों से सुगन्ध की उत्ताल लहरें आ रही थीं। बाड़े के पार, बायीं ओर की सड़क से कोलाहल सुनाई दे रहा था, जिसमें नशे में मदमस्त सिपाहियों के गीतों की अंतिम टूटी-फूटी कड़ियाँ और दरवाजों की खटखटाहट शामिल थीं। काउन्टेस के बगीचे में कौओं के घोसलों के पीछे से चमकीला चन्द्रमा उदित हुआ। जेबूशिनो की नई ईंटों से बनी हुई मिल के रंग से,

ब्रहचि के जलरक्षक-गुम्बद की तरह चाँद पीला दिखाई देने लगा। खिड़की के ठीक नीचे ताजी कटी हुई घास की महक चीनी चाय अथवा धतूरे की गंध की तरह तेज थी। वहीं एक गाय बंधी हुई थी। दूर गाँव से चल कर आने के कारण वह थकी हुई थी। नई मालकिन का खाना उसे रुचिकर नहीं लग रहा था, वह अपने पुराने झुंड से मिलने के लिए व्याकुल थी। उसकी मकान मालकिन उसे फुसलाते हुए कह रही थी—अच्छा, अच्छा, मैं बताती हूँ, सींग कैसे मारे जाते हैं! अपना सिर हिला कर गाय दीन स्वर में रंभाई। मेल्यूजेवो के काले खलिहानों के पीछे तारे चमक रहे थे। सहानुभूति का तार इन दोनों के बीच गुँथा हुआ था। सम्भवत: उस संसार में भी बाड़े हों, जहाँ उसके प्रति मुक्त सहानुभूति सुलभ हो। जीवन में सब कुछ उत्पन्न हो रहा है, बढ़ रहा है। खेतों और [illegible], [illegible] तथा बाड़ों के बीच, जड़ और चेतन में शांत वायु की [illegible] उल्लासपूर्ण जीवन की लहर व्याप्त हो गयी।

इन तमाम ग़र्क़ कर देने वाले विचारों से बचने के लिए ज़िवागो चौराहे पर व्याख्यान सुनने चला गया।

चन्द्रमा आकाश के मध्यभाग में आ गया था। चौराहे पर घनी दूधिया चाँदनी छिटकी हुई थी। सामने के पत्थर के मकान की ड्योढ़ी के खम्बे की छाया चौड़े कालीन की तरह बिछी हुई थी। चौराहे के पार सभा हो रही थी। यदि ज़िवागो चाहता, तो उस सभा का प्रत्येक शब्द वह अच्छी तरह से सुन सकता था। लेकिन वहाँ की सुन्दरता ने उसे इतना मोहित कर लिया कि बजाय भाषण सुनने के, वह इसी सौन्दर्य को निहारता रहा। चौराहे के चारों ओर संकरी सड़कें चली गयी थीं। दोनों ओर टेढ़े-मेढ़े देहाती घरों की कतारें थीं। यह सारा सुहावना दृश्य एक ही नजर में किसी भी खिड़की से आसानी से देखा जा सकता है। सामने के बाग में लाल सिर की नम मक्का अपने चिकने बालों के साथ स्पष्ट दिखाई दे रही थी। जिस प्रकार रात-पाली में काम करने वाली स्त्रियाँ हवा खाने के लिए बाहर चली आती हैं, ठीक उसी तरह एक पतला कांटेदार वृक्ष बाहर दूर, एक

किनारे पर दिखाई दे रहा था। यह चाँदनी रात अन्तर्दृष्टि के वरदान की तरह अद्‌भुत थी। इसी समय एक नूतन परिचित नपी-तुली काँपती हुई आवाज़ सुनाई दी। ज़िवागो ने विश्वस्त रूप से ध्वनित होने वाली इस आवाज़ को पहचान लिया। डिपुटी आफिसर व्याख्यान दे रहा था।

नगरपालिका ने उसके सम्मान का समर्थन करते हुए उसे अपने पक्ष में आन्दोलन करने के लिए कहा था। और वह भावपूर्ण होकर मेल्युजेवो के लोगों को उनकी असंगठित व्यवस्था और बोल्शेविक प्रभाव को छिन्न-भिन्न करने के प्रयत्नों के लिए डाँट रहा था। वह कह रहा था कि जेबूशिनो की व्यवस्था के लिए भड़काने वाले लोगों से उन्हें प्रभावित नहीं होना चाहिए। उसी जोश के साथ, जो कि शहर के मेजर के सामने वह व्यक्त कर चुका था, उसने उन्हें शत्रु की बढ़ी हुई शक्ति की याद दिलाई और देश के संकटकाल की अवस्था बतलाई। भीड़ में गड़बड़ होने लगी। वक़्ता के भाषण में दखल न देने की प्रार्थना के उत्तर में विरोध प्रदर्शन होने लगा। विरोध की जोरदार तेज आवाज़ों के कारण, सभापति के पद पर बैठे हुए वक़्ता का साथी जोर से चिल्लाया कि मंच पर भाषण नहीं दिया जा सकता। जनता से शांत होने के लिए उसने फिर एक बार कहा। कुछ लोगों का आग्रह था कि हमारी एक महिला-नागरिक कुछ कहना चाहती है। उसे भाषण देने दिया जाय। कुछ लोग शांत रहने के लिए शोर मचा रहे थे। एक स्त्री भीड़ चीरते हुए आगे बढ़ी। लकड़ी के बने मंच के पास आकर वह खड़ी हो गयी। लोगों ने महिला को पहचान लिया। सबका ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो गया। यह स्त्री थी उस्तिन्या। उपस्थित भीड़ शान्त हो गयी।

उसने अपना भाषण आरंभ किया—अभी आप जेबूशिनो के बारे में बात कर रहे थे। साथी डिपुटी अफसर साहब हमें अच्छी तरह से देखने के लिए कह रहे हैं। ठगे न जाने की हिदायत दे रहे हैं। लेकिन वास्तव में आप बोलशेविक-मेनशेविक्स शब्दों के साथ खिलवाड़ करने के अलावा कुछ भी नहीं जानते। बस इसी के बारे में आप कह रहे थे—बोल्शेविक-

मेनशेविक्स! अब इस बारे में कोई झगड़ा नहीं है। हम सब भाई-भाई हैं। मैं इसे ईश्वरीय कृपा मानती हूँ न कि मेनशेविक। कल-कारखानों का गरीबों के पास चले जाना बोल्शेविक नहीं है—यह है प्रेम और दयालुता भरी मानवता! बिना आपके कहे भी हमने उस बहरे और गूँगे के बारे में काफी सुना है। हर कोई उसके बारे में बोलने लगता है। तुम्हें उसके विरुद्ध क्या तकलीफ है? वह सचमुच गूँगा था और फिर अचानक बिना तुम्हारी इजाजत लिये वह बोलने लगा। तो हुआ क्या? इसमें आश्चर्य की कौनसी बात है? इससे भी अधिक असाधारण बातें होती ही हैं। उदाहरण के लिए एक गधी को ले लीजिए। वह पुकारती है बालम; बालम! 'वह कहती है कि मेरी सुनो, मैं साफ बात कहती हूँ। उस रास्ते पर मत जाओ अन्यथा पछताओगे।' खैर, वह बहरा और गूँगा था, इसलिए स्वाभाविक रूप से कुछ भी सुन नहीं सकता था। वह अपने रास्ते पर चलता रहा। उसे बहरा और गूंगा तो कहा ही जाता है। उसने सोचा, क्या ज़रूरत है उसकी बात सुनने की, आखिर तो वह गूँगी है, जानवर है, गधी है! देख लो, उस गधी की बात न सुनने के लिए अब वह कितना पछता रहा है। आप सब तो जानते ही हैं कि इसका अंत क्या हुआ?

—क्या हुआ? एक ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

उस्तिन्या ने तुरन्त जवाब दिया—अब काफी हो चुका। यदि आप लोग इतने ज्यादा सवाल पूछेंगे तो समय आने से पहले ही बूढ़े हो जायेंगे।

भीड़ में से शोर मचाने वालों ने आग्रह भरे स्वर में पूछा—नहीं, यह ठीक नहीं है। हमें पूरी बात बताओ।

—अच्छी बात है। क्यों और कैसे? आप लोग तो बर्र की तरह चिपके जा रहे हैं। इसे ही कहते हैं बाल की खाल निकालना। अन्त में वह नमक के एक खम्भे के रूप में परिवर्तित हो गया।

—नहीं देवी। यहाँ तुमसे एक गलती हो गयी। दरअसल वह नमक नहीं लोट था! लोग चिल्ला रहे थे—यह लोट की बीवी है। सब लोग हँस रहे थे। अध्यक्ष ने सभा को अनुशासन में लाने की कोशिश की।

ज़िवागो सोने चला गया।

छः

दूसरी सन्ध्या को ज़िवागो लारा से मिला। वह भण्डारघर में थी। कपड़ों का ढेर सामने पड़ा था। वह इस्तरी कर रही थी। भण्डारघर ऊपर के हिस्से के पिछले कमरे में था। यहाँ सोमरस तैयार होता, खाना परोसा जाता और जूठी तश्तरियों को यहीं से हस्त-चालित लिफ्ट द्वारा बर्तन धोने वाले कमरे की ओर रवाना कर दिया जाता। यहाँ चीनी और काँच के बर्तन रखे जाते। उनकी सूची भी यहीं रहती। समय-समय पर उनका मिलान किया जाता। कुछ लोग यहाँ आराम का समय गुजारते और पहले से निश्चित की हुई मुलाकातें यहाँ होतीं। कमरे की खिड़कियाँ खुली थीं। पुराने बाग की टोपीदार झाड़ियों की सूखी टहनियों की गन्ध के साथ, फले हुए नींबू की मिश्रित सुगन्ध आ रही थी, जिसमें कि दो इस्तरियों के कोयलों की गंध मिल गई थी। बारी-बारी से लारा प्रत्येक इस्तरी का इस्तेमाल कर रही थी। एक के ठंडी हो जाने पर उसे गर्माने के लिए रख देती।

—अच्छा? रात को तुम आये क्यों नहीं? मेडमेजिल ने मुझे बताया था। यद्यपि बात आपकी ठीक है। शायद मैं आपको अन्दर आने ही नहीं देती। आते ही मैं सोने चली गयी। खैर, आप कैसे हैं? इन कोयलों का खयाल रखना, सूट पर न गिर जायें।

—लगता है, सारी अस्पताल के कपड़े तुम्हीं धोती हो?

—नहीं तो! मेरे भी तो बहुत सारे कपड़े हैं। देख लीजिए? आप कई बार कह चुके हैं कि मैं मेल्युजेवो से चिपक-सी गयी हूँ। खैर। अब मैं जा रही हूँ। सच। कपड़े धोकर सामान बाँधना है। ये सब काम खत्म होते ही मैं चली जाऊँगी यूराल्स और आप मास्को। एक दिन कोई आपसे पूछेगा—मेल्युजेवो नामक छोटे से शहर को जानते हो? तब आप जवाब देंगे—मुझे ऐसी कोई चीज़ याद तो नहीं आती। फिर कोई

पूछेगा—लारा कौन थी? तब आप उतनी ही सफलता से जवाब दे देंगे—इसका तो नाम ही नहीं सुना।

—शायद ऐसा ही हो। तुम्हारी यात्रा कैसी रही? गाँवों के क्या हाल-चाल हैं?

—यह लम्बी कथा है। हे प्रभु, ये इस्तरियाँ कितनी जल्द ठंडी हो जाती हैं! ज़रा वह दूसरी इस्तरी मुझे दे दो। और मेहरबानी करके इसे वहाँ रख दो। धन्यवाद। हर गाँव अलग-अलग किस्म का है। गाँव तो वहाँ के रहने वालों पर ही निर्भर करता है। कुछ गाँवों के लोग उद्यमी हैं, मेहनती हैं। यहाँ तक तो ठीक है। बाकी गाँवों के लोग तो मानो पियक्कड़ ही हैं। ऐसे लोगों वाले गाँव निर्जन और भयंकर लगते हैं।

—क्या बेहूदगी है। वे नशेबाज क्यों हैं? आप क्या खाक समझ रहे हैं? और, यह इसलिए कि वहाँ कोई है ही नहीं। तमाम लोग सेना में भर्ती हो गये हैं। अच्छा, नई क्रांतिकारी काऊन्सिल के क्या हालचाल हैं?

—नशेबाज लोगों के बारे में तुम गलत सोचती हो। खैर, इस विषय पर हम बाद में बहस कर लेंगे। काऊन्सिल में बड़ी दिक्कतें हैं। जो हिदायतें दी जाती हैं, वे उपयुक्त नहीं हैं, उन्हें लागू करना मुश्किल है। कोई उन पर ध्यान ही नहीं देता। सारे किसानों को इस समय फिक्र है, भूमि-प्रश्न की। मैं रजडोलनोये गया था। बहुत बढ़िया जगह है। जाकर जरूर देखो। इसे पिछले वसन्त में लूट लिया गया था और जला डाला गया था। खलिहान जले हुए हैं, फलों के वृक्ष झुलसे हुए पड़े हैं। वहाँ के मकान बर्बाद हो गये हैं। जेबूशिनो नहीं था, मैंने उसे वहाँ नहीं देखा। फिर भी उसके बारे में काफी दन्तकथाएँ प्रचलित हैं कि सचमुच ऐसा बहरा गूँगा एक व्यक्ति है। दिखने में वह कैसा है, इस बारे में भी लोग बहुत कुछ बताते हैं। कहा जाता है कि वह नौजवान है और पढ़ा-लिखा भी है।

—कल रात को प्लाज में उस्तिन्या उसके पक्ष में बोल रही थी।

—जैसे ही मैं वहाँ से वापस आया, वहाँ की गंदगी का तूफान यहाँ भी मौजूद था। एक बार ही नहीं, मैंने पचासों बार उनसे कहा है कि इस

बतंगड़ को छोड़ दो। क्या हमारे पास अपनी खुद की कोई चीज़ नहीं है, जिसके बारे में सोच सकें। और, आज सुबह शहर के मेजर का एक नोट लिए एक नौकर आया था। उन्हें एक चाँदी का टी-सेट और कांच की ग्लासें चाहिए थीं। उनके लिए यह जीवन-मरण का प्रश्न है। कहते थे कि कल लौटा देंगे। ये बर्तन उन्हें सिर्फ़ रात भर के लिए ही चाहिए। कहते हैं कि हम यह सब उधार मंगवा रहे हैं। वापस लौटा देंगे। इस तरह से उधार मंगवाने की बातें मैं अच्छी तरह जानता हूँ।

युद्ध-स्थल पर हमारे विभाग के लिए नियुक्त नया रसद अफसर यहाँ पहुँच गया है। वह उन्हें घेर कर अथवा उन्हें निःशस्त्र करके इन भगोड़ों की समस्या हल करना चाहता है। हमारे लोग कजाकों को बुला लेना चाहते हैं। लेकिन वह कहता है, नहीं, मैं उनके दिलों को टटोलूँगा, छूऊँगा। वह कहता है कि जनता बच्चों की तरह है। वह शायद इसे बच्चों का खेल ही समझता है। गुल्युलिन उसके साथ बहस करने बैठ गया। उसने कहा—जंगलों की छानबीन बन्द कर दो। उनके साथ हमें अपने तरीके से फैसला करने दो। लेकिन इस तरह के लड़के के दिमाग में जो बात घर कर जाय, उसे समझाना बड़ा मुश्किल है। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी बात सुनो। इस्तरी एक मिनट के लिए बन्द ही कर दो। सुनो, यहाँ जल्दी ही कोई मुसीबत आने वाली है। सम्भवतः उसे रोकना हमारे बस की बात नहीं। मैं चाहता हूँ कि इस तरह की कोई बात होने से पहले तुम चली जाओ।

—आप अतिशयोक्ति कर रहे हैं। ऐसी कोई बात होने वाली नहीं है। खैर, कुछ भी हो। मैं यहाँ से जा रही हूँ। लेकिन यह इतना आसान तो नहीं है कि मैं हाथ उठा कर अलविदा कह कर रवाना हो जाऊँ। मुझे सारा सामान अच्छी तरह से सुपुर्द करना है। मैं नहीं चाहती कि लोग यह समझें कि मैंने कोई चोरी की है और भाग गयी हूँ। समस्या यह है कि यह सब कैसे सुपुर्द किया जाय? सामान की लम्बी सूची के अन्तर्गत...आपको कैसे बताऊँ कि मुझ पर क्या गुजरी है? इसके बदले मुझे यह धन्यवाद मिला कि मैं छल कर रही हूँ। जबरिंस्काया की चीज़ें

मैंने अस्पताल के नाम पर दर्ज कर ली थीं। यही राजकीय आज्ञा है। वे कहते हैं कि मैंने जानबूझ कर धोखा देकर यह सब किया है ताकि यह सामान इस जगह की मालकिन को मिल जाय।

—बर्तन अथवा बिछौनों की चिन्ता छोड़ दो। जाने दो इन्हें जहन्नुम में। इस समय क्या यही बातचीत की जा सकती है? काश, मैं तुम्हें कल देख पाता। कल तो मैं ऐसी मूड में था कि स्वर्ग और पृथिवी के तमाम प्रश्नों का उत्तर दे सकता था। मजाक नहीं, सच कह रहा हूँ। कल मुझे अपने दिल का बोझ हल्का करने की बड़ी खुजली हो रही थी। मैं तुम्हें अपनी पत्नी के बारे में, अपने बच्चे के बारे में, अपने बारे में, बहुत कुछ कहना चाहता था। एक नौजवान आदमी, एक नौजवान औरत से क्यों बिना किसी प्रकार की कलुषित मनोवृत्ति के सन्देह के बातचीत नहीं कर सकता? गोली मारो, इन शक-सन्देहों को। तुम इस्तरी करती रहो। मेरी बातों की ओर ध्यान मत दो। मैं तो बोलता ही जाऊँगा। बहुत दिनों से इस तरह बकवास करना चाहता था।

—सोचो तो, आजकल क्या-क्या हो रहा है और कैसे जमाने में हम रह रहे हैं। तुम्हें कभी महसूस होता है कि कितना कुछ अचिन्त्य हो रहा है? ऐसी बातें तो किसी युग में सिर्फ़ एक ही बार होती हैं। ज़रा सोचो, सारे रूस की छत फट गई है और हम खुले आकाश के नीचे निराश्रित बाहर खड़े हैं। अब हम पर निगाह रखने वाला कोई नहीं है। हम बिलकुल स्वतंत्र हैं। सिर्फ़ शाब्दिक सैद्धान्तिक आजादी नहीं, बल्कि वास्तविक स्वतंत्रता। हमारी आशाओं के विपरीत यह आजादी जैसे आकाश से टपक पड़ी हो। आकस्मिक रूप से प्राप्त यह स्वतंत्रता महज गलतफहमी के कारण मिल गयी।

—और हर एक व्यक्ति आज कितना बड़ा हो गया है? अपने इस विराट आकार से प्रत्येक व्यक्ति भ्रमित-विस्मित हो उठा है। जैसे अपनी इस महानता के प्राप्त परिचय से वह सराबोर हो गया हो। तुमने इस ओर कभी ध्यान दिया है?

—तुम इस्तरी करती रहो। बोलो मत। मैं कहता हूँ। लाओ, मैं इस्तरी बदल दूँ? तुम ऊब तो नहीं गयी न?

कल चौराहे की एक सभा मैंने देखी। अद्भुत दृश्य था। रूस की धरती अब स्थिर नहीं रह सकती, वह उठ खड़ी हुई है। वह चंचल हो उठी है, और उसे अब चैन नहीं है। उसकी वाणी खुल गयी है और अब वह खामोश नहीं रह सकती। सिर्फ़ लोग ही बातचीत नहीं कर रहे हैं, आसमान के सितारे और जंगल के पेड़ भी आपस में मिल कर बातचीत करते हैं। पत्थर के बने मकानों में फूलों की सभा होती है, और वे दार्शनिक चर्चाएँ करते हैं। धर्मोपदेशक पुस्तकों के वर्णन की तरह नहीं लगता तुम्हें? ठीक मसीह के युग की तरह, सेन्ट पॉल के दिनों की तरह? तुम्हें याद आता है?—'तुम्हारी वाणी में भविष्य मुखरित हो उठेगा। प्रभु से प्रार्थना करो कि वे तुम्हें इसे समझने का सामर्थ्य दे।'

—मुझे मालूम है, सितारों और वृक्षों की सभा से आपका क्या मतलब है? मुझे भी ऐसा ही लगा था। मैं इसे समझ सकती हूँ।

—इसका मुख्य कारण था युद्ध। शेष काम क्रांति ने कर दिया। युद्ध ने एकबारगी जीवन में कृत्रिम बाधा उत्पन्न कर दी। कितनी बेहूदगी थी। काफी देर तक रोक लेने पर जिस प्रकार साँस फूट पड़ती है, उसी तरह क्रांति को अधिक देर तक रोका नहीं जा सका। प्रत्येक व्यक्ति नव-जागृति से चमत्कृत था, नये रूप और नये परिवर्तनों से प्रभावित। इसी बात को इस तरह कहा जा सकता है कि प्रत्येक व्यक्ति सिर्फ़ युद्धस्थल में ही नहीं जूझ रहा था, बल्कि वह अपने साथ भी युद्ध कर रहा था। मेरा खयाल है कि समाजवाद महासमुद्र है। निजी चेष्टाओं से युक्त, ये व्यक्तिगत क्रांतियाँ पृथक् रूप से बहती हुईं, इस समुद्र में समाहित हो जाती हैं। यह महासमुद्र है, जीवन के सम्पूर्ण अधिकारों से युक्त। जीवन से मेरा मतलब है, प्रतिभापूर्ण कला की क्रियात्मक समृद्धि। जिन सिद्धान्तों को उन्होंने सिर्फ़ किताबों में ही पढ़ा था, उनके क्रियात्मक रूप को देखने का संकल्प लोगों ने अब ही लिया है।

उत्तेजना के कारण उसकी आवाज़ काँपने लगी थी। लारा ने इस्तरी करना बन्द कर दिया। ज़िवागो की ओर गंभीरतापूर्वक विस्मयजनक दृष्टि से देखा। ज़िवागो दिग्भ्रमित-सा भूल गया कि वह कह क्या रहा था? एक क्षण की संकोचपूर्ण स्तब्धता के बाद, उसके दिमाग में जो कुछ आया, वह कहता गया।

—आजकल मेरी तीव्र लालसा हो उठती है, किसी ऐसे संसार का घनिष्ठ भाग बन जाने की, जहाँ सृजनशील जीवन हो। और फिर ऐसे संसार के मुक्त उल्लास के साथ तुम्हारे सामने आकर खड़ा हो जाऊँ। तुम्हारे सामने, जिसका चेहरा अनेक उलझनों और परेशानियों के कारण दुख से भरा हुआ है। पता नहीं किस दिव्यलोक के प्रति तुम्हारी दृष्टि इस तरह मुग्ध रहती है? तुम्हारे चेहरे पर आने वाले ये चिन्ताजनक भाव न आयें, तुम अपने जीवन से सुखी रहो, और तुम्हें किसी से किसी तरह की ज़रूरत न हो—तुम्हारे चेहरे पर ऐसे भाव हों, न कि उदासीनता के चिह्न! और कोई तुम्हारा बहुत ही घनिष्ठ मित्र अथवा पति, (अधिक अच्छा हो, यदि वह सैनिक हो) आकर मुझे कहे कि लारा को अकेले रहने दो। उसके बारे में किसी तरह की चिन्ता करने की अब आवश्यकता नहीं। उसके बाद ही, इस बात के जवाब में उसे मार गिराऊँगा...माफ करना, मेरा मतलब यह नहीं था।

उसकी आवाज़ ने फिर उसका साथ नहीं दिया। वह उठ कर खिड़की के पास चला गया। उसे बहुत ही संकोच महसूस हो रहा था। खिड़की के पार अंधकार से ढंके हुए बगीचे की ओर उसकी बेचैन दृष्टि थी। लेकिन वास्तव में उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। अपने आप को संभालने की चेष्टा में वह व्यस्त था।

इस्तरी करने की टेबल को पार करके कुछ कदम आगे बढ़ाकर, लारा कमरे के ठीक मध्य भाग में खड़ी हो गयी। जैसे अपने आप से कह रही हो; बोली—इसी का मुझे डर था। मुझे...यूरी...डॉक्टर ज़िवागो, ऐसा मत कीजिये। आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। ओह, ज़रा देखो तो,

यह क्या हो गया? इस्तरी करने की टेबल की ओर वह दौड़ पड़ी। कड़क डाले हुए ब्लाउज पर रखी हुई इस्तरी में से धुआँ निकल रहा था।

—डॉक्टर! इस्तरी को एक ओर खड़ी करते हुए उसने कहा—पागल मत बनिये। एक मिनट के लिए मेडमेजिल के पास चले जाइये। पानी पीकर वापस लौट आइएगा। और मेरे लिए आप ठीक वैसे ही बने रहिए, जिस रूप में मैं आपसे आज तक परिचित थी, और जिस रूप में मैं आपसे सदैव परिचित रहना चाहती हूँ। क्या आप सुन रहे हैं? कृपया ऐसा ही कीजिए। मैं प्रार्थना करती हूँ। मैं हाथ जोड़ती हूँ।

उनके पास इससे अधिक स्पष्टीकरण थे भी नहीं। एक सप्ताह के बाद लारा चली गयी।

सात

ज़िवागो के घर जाने में अभी तक कुछ दिनों की देर थी। रवाना होने से पहले की रात तूफान का बड़ा जोर रहा। आँधी और वर्षा की मिश्रित आवाज़ हवा के परिवर्तित झोंकों के साथ छतों से उछलती-कूदती सारे रास्ते को पीट रही थी। बिना रुके बादल गरज रहे थे। जब भी बिजली चमकती, लगता कि पेड़ों की कतार दूर तक भागती चली जा रही हो। मेडमेजिल फ्यूरी की आँख खुल गयी। वह व्याकुल होकर उठ बैठी। कोई सामने का दरवाजा इस तरह खटखटा रहा था मानो बहुत ज़रूरी काम हो। क्या अस्पताल में कोई भी ऐसा नहीं है कि उठ कर दरवाजा खोल दे? क्या उसे ही सारा काम हमेशा करते रहना होगा? सिर्फ़ इसलिए, उसे सभी कुछ करना होगा क्योंकि वृद्ध और कमजोर होते हुए भी वह स्वभाववश वफादार और कर्तव्यपालन में तत्पर है? माना कि जेबूशिनो अमीर थे और यह मकान उनका था। लेकिन क्या यह अब जनता का अस्पताल नहीं है? फिर वे किससे उम्मीद करते हैं कि इसकी देखभाल करे? तमाम पुरुष-नर्स गायब हैं, कोई नर्स नहीं, कोई डॉक्टर नहीं, कोई अधिकारी नहीं, कोई नौकर नहीं? आखिर वे सब गये कहाँ—वह जानना चाहती थी।

थी। मेडमेजिल के कमरे में ध्वनिहीन बिजली का प्रकाश इस तरह पसर गया मानो वह कुछ ढूँढ़ रहा हो। इसी समय दरवाजे की खटखटाहट, जो रुक गयी थी फिर शुरू हो गयी। सम्भवत: सहायता की तात्कालिक आवश्यकता के मारे कोई बारम्बार निराशा से दरवाजा पीट रहा था। हवा के उठाव के साथ फिर बारिश शुरू हो गयी। मेडमेजिल चिल्लाई—आती हूँ। अपनी ही आवाज़ से वह डर गयी। आखिर कौन हो सकता है? पैरों में चप्पल पहन कर तथा ड्रेसिंग गाऊन गले में डाल कर वह ज़िवागो को उठाने फुरती से चल दी। उसके साथ होने पर डर नहीं लगेगा। ज़िवागो ने भी दरवाजा खटखटाने की यह आवाज़ सुनी थी और वह भी जलती हुई मोमबत्ती लिये नीचे आ रहा था।

—ज़िवागो! ज़िवागो! वे सामने का दरवाजा खटखटा रहे हैं। मुझे अकेले नीचे जाने में डर लगता है। रूसी में फ्रेंच भाषा का मिश्रण करती हुई वह बोली—देख लेना, या तो लारा होगी अथवा लेफ्टिनेन्ट गुल्युलिन। ज़िवागो का भी यही खयाल था कि कोई न कोई परिचित ही होगा। या तो गुल्युलिन को भागने से रोक दिया गया होगा, और वह आश्रय के लिए यहाँ चला आया होगा; अथवा नर्स लारा होगी, जो यात्रा रोक दी जाने के कारण लौट आई होगी।

बरामदे में आकर ज़िवागो ने रोशनी मेडमेजिल के हाथ में थमा दी। चिटखनी खोलकर उसने चाबी लगाई। तेज हवा के झोंके से दरवाजे खुल गये। मोमबत्ती की रोशनी ठंड भरी बारिश की बौछार के कारण बुझने लगी।—'कौन है? कौन है वहाँ? वहाँ कोई है?' अन्धेरे में मेडमेजिल के साथ डाक्टर ज़िवागो बारी-बारी से चिल्ला रहा था। उन्हें कोई उत्तर नहीं मिला। फिर वही खटखटाहट। लेकिन इस बार दूसरी ओर! उन्होंने सोचा, यह आवाज़ पिछले दरवाजे से आ रही है, अथवा फ्रेंच खिड़की वाले बगीचे के दरवाजे की ओर से?

—शायद हवा ही है। फिर भी पिछले हिस्से की ओर एक निगाह डाल लो। हो सकता है कि कोई हो। मैं यहाँ खड़ा हूँ।

मेडमेजिल घर में गायब हो गयी और डाक्टर बरामदे के पोर्च में आकर खड़ा हो गया। अंधेरे से उसकी आँखें अभ्यस्त हो गयी थीं और वह उषा के प्राथमिक संकेतों की भाषा आसानी से समझ सकता था।

जैसे उनका पीछा किया जा रहा हो शहर के ऊपर बादल दौड़ लगा रहे थे। उनकी दिशाओं की ओर खड़े पेड़ों की शिखाओं को वे छूते, तो ऐसा लगता कि वृक्ष आसमान में झाड़ू लगा रहे हैं। बारिश की निरन्तर बौछार ने घर की लकड़ी की दीवार का रंग भूरे से काला कर दिया था। मेडमेजिल वापस लौट आई। डाक्टर ने पूछा—ठीक है?

—तुम ठीक कह रहे थे। वहाँ कोई नहीं है। मैं चारों ओर हो आई। अलबत्ता भण्डारघर से टकराने वाली टहनी ने खिड़की का काँच तोड़ दिया है। नतीजा यह हुआ कि फ़र्श पर एक छोटा सा तालाब बन गया है। लारा के कमरे का भी यही हाल है। वहाँ तो महासागर है, महासमुद्र! और देखो, उस ओर, वह टूटा हुआ फाटक दीवाल की बाहरी सतह पर टकरा रहा है। इसी के कारण खटखटाने की आवाज़ सुनाई दे रही है।

थोड़ा-बहुत बातचीत करके दोनों अपने-अपने कमरों में चले गये। दोनों को अफसोस था कि यह भय कितना झूठा था।

उन्हें विश्वास था कि ठंड से अकड़ी हुई और बारिश से बुरी तरह भीगी हुई लारा बाहर खड़ी होगी। अपने कपड़े बदल कर जब वह गर्माने के लिए स्टोव के पास आयेगी तो वे उससे दर्जनों प्रश्न पूछेंगे। प्रत्युत्तर में हँसते हुए, अपने केशों को पीछे की ओर झटकते हुए, वह अपनी साहसिक कार्यावली सुनाएगी। उन्हें इसका इतना विश्वास था कि जब उन्होंने दरवाजा बन्द किया तो सड़क के कोने पर उसकी छाप उन्हें दिखाई देती रही मानो उस स्त्री का बिम्ब अथवा उसकी प्रतिमूर्ति उनका पीछा कर रही हो।

आठ

कहा जाता था कि बिरुचि के उपद्रव के लिए टेलिग्रेफिस्ट कोल्या फ्रोलेंको अप्रत्यक्ष रूप से ही सही, जिम्मेवार है। वह एक घड़ीसाज का

लड़का था। मेडमेजिल उसे बचपन से ही जानती थी। उसकी काउन्टेस की लड़कियों के साथ वह खेला करता था। उस समय ही उसने फ्रेंच सीखी थी। बिना कोट अथवा हैट के उसने उसे अक्सर बाइसिकल पर देखा था। प्रत्येक मौसम में ग्रीष्मकालीन जूते पहिने, रास्ते के तारों के खम्भों की हालत का निरीक्षण करते हुए, छाती पर हाथ बाँधे, वह तेजी से साइकल चलाते हुए गुज़रा करता था। मेल्युजेवो के कुछ ही घरों में टेलिफोन था। इन सबकी लाइन बिरुचि स्टेशन पर एक ब्रांच-लाइन द्वारा जोड़ दी गयी थी। स्टेशन के आफिस में फ्रोलेंको ही इस लाइन पर काम करता था। अपने काम पर उसकी निगाह काफी तेज थी। स्टेशन मास्टर की अनुपस्थिति में टेलिफोन एवं टेलिग्राफ मास्टर ही नहीं, बल्कि आने-जाने वाली रेलों को सिगनल देने का काम भी वही करता। बात यह थी कि सिगनल-संचालन भी इसी नियंत्रण-कक्ष से होता था। एक साथ ही अनेक यान्त्रिक साधनों की देखभाल के फलस्वरूप फ्रोलेंको ने एक विशेष किस्म की भाषण कला आविष्कृत कर ली थी, जो आकस्मिक, अस्पष्ट तथा गूढ़ार्थक होती। लिहाजा, वह चाहता तो प्रश्नोत्तर की बला अच्छी तरह से टाल सकता था अथवा किसी बात में पकड़ाई नहीं देता। अव्यवस्था वाले दिन, प्राप्त साधनों के दुरुपयोग का जो मौका उसे मिल गया था, उसके लिए उसकी काफी भर्त्सना हुई थी। यह बात सही थी कि अपने इस छल-कपट के व्यवहार से गुल्युलिन के अच्छे इरादों को उसने मात दे दी। शायद अनजान में ही, उसने घटनाओं का रुख इतना प्राणघातक सिद्ध कर दिया। गुल्युलिन ने शहर से फोन करके गिंज से सम्पर्क स्थापित करना चाहा था जो कि उस समय स्टेशन के आस-पास ही था अथवा कहीं बाहर गया हुआ था। वह कहना चाहता था कि उससे तुरन्त मिलना चाहता है इसलिए वह उसकी प्रतीक्षा करे। जब तक मुलाकात न हो जाय, वह कोई कदम न उठाये। फ्रोलेंको ने आने वाली ट्रेन के लिए सिगनल देने की व्यवस्था बताते हुए गिंज को फोन से बुलाने से इनकार कर दिया था। साथ ही उस रेल को रोकने के लिए भी ऐसे ही झूठे-सच्चे बहुत से बहाने बताता रहा,

जानते कि कजाक बिरुचि स्टेशन पर आ रहे थे। जब यह सेना स्टेशन पर उतरी तो उसके चेहरे की अप्रसन्नता छिपी नहीं रही। नियंत्रण कक्ष की विशाल खिड़की के ठीक सामने गाड़ी का इंजिन धीरे-धीरे सरकता हुआ चला आया। फ्रोलेंको ने हरे रंग की झंडी उठाई, खिड़की की ताक पर रखे हुए पानी के जग से पानी पिया; फिर बाहर की ओर देखा। अपने स्थान पर बैठा इंजन चालक मैत्रीपूर्ण संकेत कर रहा था। प्रत्युत्तर में जीभ निकाल कर फ्रोलेंको ने उसकी ओर मुक्का तान दिया। इसका अर्थ इंजन ड्राइवर समझ गया। कंधे उचका कर सामने की ओर निर्देश करके उसने पूछा—'मैं क्या करूँ?' 'यदि तुम मेरी जगह होते तो क्या करते?' 'वह मालिक है।' 'कुल मिला कर तुम हो एक गंदे जंगली जानवर हो।' इंजन ड्राइवर के साथ यह सारी बातचीत संकेतों में ही हो रही थी।

रास्ते के किनारे मजबूती के साथ बंधे हुए घोड़े खड़े थे। काठ की बनी लकड़ी गली में उनके टापों की आवाज़ें पत्थर के प्लेटफार्म से टकरा रही थीं। ये घोड़े अनेक स्थानों से यहाँ लाये गये थे। रास्ते के अंत में लकड़ी के डिब्बों की दो कतारें उपेक्षित अवस्था में पड़ी थीं। वर्षा ने उनका रंग धो दिया था; सीलन और कीड़ों ने उनके अन्दरूनी भाग को सड़ा दिया था। इस प्रकार अपनी प्रारम्भिक अवस्था में, जंगली लकड़ी के रूप में वे वापस लौट आये थे।

स्टेशन के बाहर आते ही कजाक उछल कर अपने घोड़ों पर सवार हो गये और भगोड़े सैनिकों की सफाई के लिए तेजी से दौड़ पड़े। विद्रोहियों को शीघ्र ही घेर लिया गया। यद्यपि उनके पास, उनके झोंपड़ों में बन्दूकें थीं, फिर भी घुड़सवारों को देख कर, एकबारगी वे भयभीत हो उठे। स्वाभाविक रूप से वे लम्बे वृक्षों के जंगल में, अधिक लम्बे और प्रभावशाली दिखाई दे रहे थे। उन्होंने अपनी तलवारें निकालीं। गिंज घेरे के भीतर चला गया। बीच में रखे लकड़ी के ढेर पर खड़े होकर ली उपस्थित लोगों को भाषण देते हुए सैनिक-कर्तव्य, मातृभूमि आदि अनेक विषयों पर वह बोला। मगर इन विचारों के प्रति उपस्थित जनता

की न कोई दिलचस्पी थी न सहानुभूति। उन्होंने काफी युद्ध देख लिया था। अब वे थक गये थे और उच्छृंखल हो गये थे। ये तमाम बातें उन्होंने कई बार सुनी थीं। उभय-पक्ष के ललचाने वाले प्रचार से वे चिड़चिड़े हो गये थे। इसके अतिरिक्त वे थे सीधे-सादे लोग। उन्हें सबसे अधिक एतराज था गिंज के विदेशी नाम के प्रति और उसके बाल्टिक शब्दोच्चारण के प्रति।

गिंज ने महसूस किया कि उसका भाषण काफी लम्बा हो गया है। वह अपने आप पर क्षुब्ध हो उठा। उसने सोचा कि उसे एक बार फिर स्पष्ट तौर से और संयत तरीके से सारी बातें इस तरह कहनी चाहिए कि ये लोग उसे समझ सकें। उसके मतानुसार इन लोगों को कृतज्ञ होना चाहिए था; बजाय इसके उनके चेहरों पर उकताहट, तटस्थता और अमित्रता के भाव थे। धीरे-धीरे उसका धैर्य समाप्त हो गया। वह सीना तान कर अब तक जब्त की हुई धमकी काम में लाना चाहता था। उसने याद दिलाया कि युद्ध के क्रांतिकारी न्यायालय स्थापित कर दिये गये हैं और उनकी यह आज्ञा है कि वे हथियार रख दें और अपने नेताओं को हमारे सुपुर्द कर दें। यदि इससे तुमने इनकार किया तो उससे साफ ज़ाहिर हो जायेगा कि तुम अधम देशद्रोही, राजनीतिक रूप से पिछड़े हुए और सिरफिरे उपद्रवी मात्र हो।' ऐसी बात सुनने का उपस्थित लोगों में धैर्य नहीं था। सैकड़ों लोगों का शोर उठा। यह आवाज़ क्रोध रहित थी। 'अच्छी बात है। ठीक है रख दो हथियार। अब बहुत हो चुका।' साथ ही कुछ लोगों का घृणायुक्त तीखा स्वर भी सुनाई दिया। लोग उसे ध्यान लगाकर सुनने लगे। उन्मत्त शोर और ऊपर उठा—

—साथियो, इनकी बातें सुनते रहो। इतने दिनों तक हम इनकी चालबाजियों में नहीं आये। इसीलिए हम देशद्रोही हैं? और महाशय आप क्या हैं? क्या ज़रूरत है हमें इनकी परवाह करने की? हो सकता है कि ये साहब कोई जर्मन जासूस हों। देख लो। अपने कागजात बताइये साहब? कायर कहीं के! आँख फाड़-फाड़ कर क्या देख रहे हो?' फिर

कज़ाकों की ओर मुखातिब होकर उन्होंने कहा—तुम लोग व्यवस्था करने आये हो न? ठीक है। वही करो। हमें बाँध दो और मार डालो।

लेकिन कजाकों को भी गिंज का दुर्भाग्यपूर्ण भाषण पसन्द नहीं आया। 'हम इनके लिए जानवर ही तो हैं।' वे बड़बड़ाये—यह सोचता है कि यह हमारा स्वामी है। उन्होंने तलवारें म्यान में रख लीं। एक-एक करके घोड़ों से उतर पड़े। और 212वीं रेजिमेण्ट के सिपाहियों के साथ मिल गये। तुरन्त उनमें मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो गये।

कजाक अफसर ने गिंज से चिन्तित स्वर में कहा—आप भाग जाइए। यदि इन्होंने आपको भागते हुए देख लिया तो खैर नहीं। आपकी गाड़ी रेल के लेवलक्रासिंग पर खड़ी है। वह आपको ठीक समय पर मिल जाय, इसकी व्यवस्था कर दी जायेगी। जल्दी कीजिए। गिंज को लगा कि इस तरह चोरी से भाग जाना उसकी शान और मर्यादा के खिलाफ है। फिर भी वह स्टेशन की ओर चल पड़ा। यद्यपि वह बहुत उत्तेजित था, फिर भी अपने स्वाभिमान के कारण उसके कदम शानदार तरीके से धीरे-धीरे ही उठते। जंगल के छोर पर, जहाँ से रेल्वे-लाइन दिखाई देती थी, उसने अपने चारों ओर देखा। बन्दूकधारी सैनिक उसका पीछा कर रहे थे। चलने की रफ्तार तेज करते हुए आश्चर्य से उसने मन ही मन सोचा—आखिर वे चाहते क्या हैं?

पीछा करने वालों ने भी अपनी रफ्तार तेज की। धीरे-धीरे फासला कम होता जा रहा था। इसी समय उसे टूटे-फूटे डिब्बों की दोहरी दीवार दिखाई दी। उसके पिछले भाग पर चढ़ कर वह भागने लगा। जो ट्रेन कजाकों को लाई थी, वह निर्धारित स्थान पर खड़ी हो गयी थी। लाइन खुली थी। उसे पार करके वह प्लेटफार्म पर चढ़ने लगा। सिपाही उसका पीछा कर रहे थे।

फ्रोलेंको और स्टेशन-मास्टर हाथ हिला कर, और चिल्ला कर, उसे बुला रहे थे ताकि वहाँ पहुँच जाने पर वे उसकी सुरक्षा का प्रबन्ध कर सकें। गिंज के मस्तिष्क में एक बार फिर अपने कुल का सम्मान जागृत

हुआ। यह आत्मसम्मान उसे आत्मबलिदान करने के लिए प्रेरित कर रहा था। लेकिन यही इस समय सुरक्षा के लिए सबसे अधिक बाधक था। भय के मारे उसका कलेजा फटने लगा था। अपने डर को रोकने के लिए, उसने अपने आप से कहा—मुझे इन्हें डाँटना चाहिए कि तुम होश में आओ। तुम जानते हो कि मैं गुप्तचर नहीं हूँ। संभव है कि कोई मानवीय गुण उन्हें रोक दे।

पिछले कुछ महीनों में, कुर्सियों पर आराम से बैठे लोगों के सामने, न्यायालय अथवा सभामंच के आसन से जोशीली मुद्राओं के साथ वफादारी और महानता की बातें करने का वह अभ्यस्त हो गया था। उन्हें चुनौती देते हुए काम करने के लिए प्रेरित करने पर उपस्थित लोगों पर जो असर हो सकता था, वह उसी से अभ्यस्त था। इस समय भी उसे ऐसी ही स्थिति की ज़रूरत महसूस हो रही थी।

स्टेशन की घंटी के ठीक नीचे पानी का एक कठरा था, जो कि आग लग जाने की संकटकालीन अवस्था में काम में लाया जा सकता था। गिंज हृदयद्रावक असम्बद्ध शब्दोच्चारण के साथ उस पर कूद पड़ा। उसकी इस पागलपन भरी साहस की भावभंगिमा ने दो कदम दूर खड़े फ्रोलेंको तथा स्टेशन मास्टर को आश्चर्यचकित कर दिया। वे उसे शरण देकर, उसकी रक्षा कर सकते थे। वे वहीं रुक गये। पीछा करने वालों ने अपनी बन्दूकें नीची कर लीं। लेकिन तब तक गिंज कठरे की ओर बढ़ चुका था। उसका एक पाँव पानी में और दूसरा बाहर लटक रहा था। भद्दे तरीके से पैर फैलाए पास ही बैठे लोग उसकी ओर देखकर हँसने लगे। उसके सामने के एक आदमी ने उसकी गर्दन पर भयंकर आघात किया। दूसरे लोगों ने आकर अपनी संगीनें उसके सारे शरीर में चुभो दी।

तब तक वह मर चुका था।

नौ

मेडमेजिल ने फ्रोलेंको को टेलीफोन करते हुए कहा कि वह डॉ. ज़िवागो के लिए मास्को जाने वाली ट्रेन में अच्छी जगह की व्यवस्था कर दे। साथ

ने उसने धमकी दी कि यदि उसने ऐसा नहीं किया तो वह सारा भण्डा फोड़ देगी। फ्रोलेंको हमेशा की तरह एक साथ दो जगहों पर बातचीत कर रहा था। लिहाजा उसके दशमलव की गणना की आवाज़ बातचीत में मिश्रित होती रहती। 'प्स्कोव, प्स्कोव, मेरी आवाज़ तुम्हें सुनाई दे रही है? क्या कहा, विद्रोही? कैसी मदद?' 'मेडमेजिल आप क्या कह रही थीं? फोन रख दीजिए। मेहरबानी करके रख दीजिए।' 'प्स्कोव, प्स्कोव. छत्तीस, दशमलव, शून्य एक पांच—ओह शैतान कहीं के, लाइन काट दी। हल्लो, हल्लो। मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा है। फिर आप आ गयीं मेडमेजिल? मैंने कह तो दिया कि मैं स्टेशन मास्टर से नहीं कह सकता। सब झूठ। छत्तीस...ओह...मेडमेजिल लाइन छोड़िये न?'

और मेडमेजिल कह रही थीं—मेरी आँखों में धूल मत झोंको। फुसफुस, प्स्कोव प्स्कोव। झूठा कहीं का। मैं सब कुछ समझती हूँ। कल डॉ. के लिए ट्रेन में व्यवस्था कर देना। मैं तुम्हारी कोई भी बात नहीं सुनूँगी।

दस

जिस दिन ज़िवागो विदा हुआ उस दिन बड़ी गर्मी थी। दो दिन पहले की तरह तूफान उमड़ रहा था। मिट्टी की झोपड़ियाँ और बत्तकें गर्मी के मारे सफ़ेद दिखाई दे रही थीं। हफ्तों से रेल का इन्तजार करने वाली भीड़ से स्टेशन के सम्मुख के विस्तृत मैदान की घास ढंक-सी गयी थी। भूरे मोटे कोट पहने वृद्ध इधर-उधर समाचार और अफ़वाहों की खोज में मंडरा रहे थे। किशोर लड़के पड़े-पड़े छिली हुई टहनियों को घुमा कर इस तरह खेल रहे थे मानो वे भेड़ें चरा रहे हों। उनके छोटे भाई-बहन लोगों के कदमों के आसपास भागदौड़ मचा रहे थे। उनकी माताएँ पास ही बैठी थीं।

सहानुभूति-हीन, रुक्ष स्वर में स्टेशन मास्टर ने ज़िवागो से कहा—'जैसे ही गोली चली, सब भेड़ों की तरह बिखर गये।' वे प्रवेश-द्वार के सम्मुख लोगों की भीड़ पार कर रहे थे—'पलक झपकते ही यह घासभरा मैदान खाली हो गया। अब फिर सारा मैदान दिखाई देने लगा है। इन बंजारों के

कारण चार महीनों से इस मैदान को देखना नामुमकिन था। एक तरह से हम भूल ही गये थे कि यह सब कैसा दिखाई देता था। यहाँ वह पड़ा था। कितनी अजीब बात है! युद्ध में मैंने कुछ बुरी बातें भी देखी हैं। आखिर उसने उनका क्या बिगाड़ा था? लेकिन वे आदमी थोड़े ही हैं? वे कहते हैं कि वह लाड़ला लड़का था, अच्छा, कृपया बायीं ओर मेरे आफिस में चले आइये। इस गाड़ी में तो जगह मिलने का कोई उपाय दिखाई नहीं देता। मुझे तो डर लगता है कि कहीं वे आपको कुचल न डालें। मैं आपके लिए लोकल-गाड़ी में जगह की व्यवस्था कर देता हूँ। उसी की तैयारियाँ हो रही हैं। लेकिन किसी को कहियेगा नहीं। खास-कर तब तक, जब तक कि हम उन्हें अन्दर लेना शुरू न कर दें। वर्ना गाड़ी जुड़ने से पहले ही वे उसे तोड़ डालेंगे। आप सुखीनिची में बदली कर लीजिएगा।

ग्यारह

छावनी से जब यह ट्रेन आ गई—जिसके बारे में बहुत कुछ गुप्त रखा गया था—सारी भीड़ रास्ते में आकर जमा हो गयी। किनारे की ओर लोग पत्थर की गोलियों की तरह लुढ़कने लगे। एक दूसरे को धक्का देते हुए, निश्चित रास्ते पर आकर, गाड़ी की सीढ़ियों से छत की ओर तथा खिड़कियों से अन्दर घुसने में व्यस्त हो गये। गाड़ी रुकने से पहले ही अच्छी तरह से लद गयी। सारे य़ात्री ऊपर से नीचे तक गाड़ी से चिपक गये। किसी तरह डॉ. ज़िवागो ने अपने लिए जगह की व्यवस्था कर ली। सुखीनिची तक वह अपने सामान पर ही बैठा रहा। बादल छंट गये थे। सूर्य के तेजस्वी प्रकाश में खेत चमक रहे थे। एक सिरे से दूसरे सिरे तक झिंगुरों की आवाज़ गूँज रही थी। सम्भवतः उनकी आवाज़ के कारण ही गाड़ी के पहियों की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। खिड़की के पास बैठे लोगों के कारण सूर्य की यह रोशनी डिब्बे के अन्तर्भाग तक नहीं पहुँच पा रही थी। भीड़ के बीच में से रोशनी की पतली लकीरें लुक-छिप जातीं। फिर चलती गाड़ी की परछाईं के साथ वे बाहर भाग जातीं। ज़िवागो के आसपास बैठे लोग चीख-चिल्ला कर गा रहे थे। गालियों का

रण-कौतुक और जुआ चल रहा था। जब भी गाड़ी रुकती, आने वाली भीड़ की आवाज़ में अन्दर का शोर मिश्रित हो जाता। समुद्री तूफ़ान में एकाएक जिस तरह क्षणिक निःस्तब्धता आ जाती है, ठीक उसी तरह इस कोलाहल के बीच की क्षणिक निःस्तब्धता में प्लेटफार्म पर चल-फिर रहे लोगों की पदध्वनि आसानी से सुनाई दे सकती थी। लोगों के विदा का स्वर, मुर्गों की बांग और स्टेशन के बगीचे के पेड़ों की चरमराहट स्पष्ट सुनाई देने लगती। जैसे जेबूशिनो से ज़िवागो को शुभ सन्देश भेजा गया हो, एक परिचित सुगन्ध सारे डिब्बे में व्याप्त हो गयी। जंगली फूलों से ऊपर उड़ती हुई खिड़की के एक ओर से आकर इस सुगन्धि ने सब पर अपनी उत्कृष्टता की छाप अंकित कर दी। खिड़की की भीड़ के कारण पेड़ों को देखना संभव नहीं था, फिर भी वह कल्पना [illegible] कि वे सब यहीं कहीं बहुत ही समीप उगे हुए हैं। नक्षत्रों के छोटे [illegible] से अलंकृत घनी रात्रि की तरह इन वृक्षों की अचँचल टहनियाँ फैली हुई थीं। सारे रास्ते में निम्बू की महक थी; लोगों की भीड़ में : यह सुगन्ध अफ़वाहों की तरह इधर-उधर डोलती हुई, सांकेतिक रूप से उनके पहुँचने की मानो प्रतीक्षा कर रही थी।

बारह

सुखोनिची में एक भले कुली ने अंधेरे रास्ते से चल कर एक अनिश्चित गाड़ी के दूसरे दर्जे में ज़िवागो का सामान रख दिया तथा उसके बैठने की व्यवस्था कर दी। इसी समय कण्डक्टर आ उपस्थित हुआ। अभी तक कुली सामान जमा कर ही रहा था कि कण्डक्टर साहब उसे उठा कर बाहर फेंकने की तैयारी करने लगे। किसी तरह ज़िवागो ने उसे शान्त किया। वह चला गया।

यह रहस्यपूर्ण गाड़ी विशेष आज्ञाधीन थी। इसके डिब्बे खाली थे। सशस्त्र पहरा था। बहुत थोड़ी स्टेशनों पर रुक कर वह तेजी से जाने वाली थी। ज़िवागो के डिब्बे में एक पिघली हुई मोमबत्ती का थोड़ा-बहुत प्रकाश था। खुली खिड़की से आने वाली हवा से दीपशिखा काँपने लगती। यह

मोमबत्ती थी एक दूसरे नवयुवक की। हाथ-पाँव देख कर ही उसकी लम्बाई का अन्दाज आसानी से हो जाता। वह कोने की सीट पर खिड़की के पास लेटा हुआ था। ज़िवागो के आने पर वह ढंग से बैठ गया। उसकी सीट के नीचे कालीन की तरह कुछ बिछा हुआ था। कोने की सीट पर खिड़की के पास वह लेटा हुआ था। उसके हिलते हुए कोने से एक शिकारी कुत्ता शोर मचाता हुआ बाहर निकल आया। कुत्ते ने सूँघ कर, इधर-उधर दौड़ कर, ज़िवागो का अच्छी तरह से निरीक्षण कर लिया। फिर अपने स्वामी की आज्ञानुसार वह वापस अपनी जगह में सिमिट-सिकुड़ कर झाड़ू की तरह घुस गया। ज़िवागो का ध्यान अब चमड़े की गोलियों की पेटी और कठरे पर रखे उभरे हुए थैले और बन्दूक की ओर गया। यह नौजवान शिकार खेलने बाहर गया था। वह व्यक्ति बहुत बातूनी था। ज़िवागो को देखते ही वह मुस्कराया; और फिर उसके साथ बातचीत में संलग्न हो गया। उसके बोलने के लहजे में रूसी, जर्मन और फ्रांसिसी उच्चारण का मिश्रण था; परिणामस्वरूप उसकी बोली बड़ी विचित्र-सी लगती।

यह किस किस्म का शैतान है! ज़िवागो को आश्चर्य हो रहा था। शायद मैंने इस तरह के दिमाग के बारे में कहीं पढ़ा है। डॉक्टर के रूप में मुझे यह मालूम होना चाहिए। लेकिन पता नहीं, यह क्या है? इस दोषयुक्त वाणी का कारण सम्भवतः दिमाग की कोई बीमारी हो। कारण जो चाहे रहा हो, यह सब उसे इतना हास्यास्पद-सा लग रहा था कि वह उसकी ओर सीधे मुँह से देख नहीं पा रहा था। उसने अपने आप से कहा—अब सोना चाहिए।

युवक ने पूछा—यदि इस मोमबत्ती के कारण आपको नींद न आती हो तो इसे बुझा दूँ? ज़िवागो ने स्वीकृतिसूचक सिर हिलाया। सारे डिब्बे में सूचीभेद अन्धकार छा गया। ज़िवागो ने पूछा—आपको चोरों से डर नहीं लगता? खिड़की बन्द कर दूँ?

कोई जवाब नहीं मिला। उसने अपना प्रश्न फिर जोर से बोल कर दुहराया। फिर भी कोई जवाब नहीं मिला। उसने एक दियासलाई जला

कर देखा कि कहीं वह बाहर तो नहीं चला गया है? इतनी जल्दी गहरी नींद में सोना तो नामुमकिन है। वास्तव में वह अपनी जगह पर बैठा हुआ था। ज्योंही ज़िवागो ने झाँका, उसने मुस्करा कर उसके चेहरे की ओर देखा। दियासलाई बुझ गयी। उसने दूसरी जलाई। उसकी रोशनी में उसने तीसरी बार अपना प्रश्न दुहरा दिया। नवयुवक ने तुरन्त जवाब दिया—जैसा आप ठीक समझें। मेरे पास ऐसी कोई चीज़ नहीं है, जिसके प्रति चोरों को लोभ हो। लेकिन यदि खुली रहने दें तो अच्छा है। नहीं तो दम घुटने लगेगा।

कैसा विचित्र आदमी है। स्पष्ट रूप से मतिभ्रष्ट!

वह अन्धेरे में बातचीत नहीं कर सकता।

तेरह

[illegible] ने लेटते ही ज़िवागो को आशा थी, कि वह तुरन्त सो जायेगा। पिछले हफ्ते की घटनाओं और रवाना होते समय की तमाम बातों से वह बुरी तरह थक गया था। लेकिन वह सो नहीं सका। भोर तक जागता ही रहा। अतल अन्धकार में विचारों के भंवरों में चक्कर खाते हुए उसके मस्तिष्क में दो घेरे बनते जा रहे थे। उलझन सुलझती; और फिर उलझ जाती। एक घेरे में थी टोन्या, उसका व्यवस्थित पारिवारिक जीवन, जहाँ सभी कुछ कवितामय था। इसके प्रति उसका असीम प्रेम था और मन की स्वीकृति थी। सम्पूर्ण रूप से सुरक्षित इसी जीवन के लिए वह उत्सुक हो रहा था। दो वर्षों के बिछोह के बाद आज वह इस एक्सप्रेस से वहाँ जा रहा है। काश, वह अब तक वहाँ पहुँच गया होता। वहाँ भी क्रांति के प्रति उसकी आस्था थी। वह उसकी इमदाद करता था। आज इस क्रांति को मध्यम-वर्ग ने स्वीकार कर लिया था। जिसे कि सन् 1905 में विद्यार्थियों ने ब्लोक के अनुयायियों के रूप में स्वीकार किया था। इस परिचित घेरे में नवागत वस्तुओं के प्रति आकर्षण था। 1912-14 के युद्ध से पहले के रूसी कला, विचार और जीवन के लक्षण तथा वायदे रूस के प्रारब्ध के लिए सम्पूर्ण रूप में प्रकट हुए थे। सचमुच

युद्ध के समाप्त होते ही उन परिस्थितियों में वापस लौट जाना और उसी में बने रहना, उतना ही सुखद है, जितना कि घर लौट आना।

उसके विचारों के दूसरे घेरे में जो नयी चीज़ें थीं वे पहले विचारों से बिलकुल भिन्न थीं। न ये पुराने विचारों द्वारा प्रेरित थीं और न ये नितान्त परिचित ही। ये थीं वास्तविकता द्वारा प्रमाणित, इसमें है युद्ध की खूनखराबी, उसका आतंक, पाशविकता, पृथकता और निर्जनता। तरह-तरह के मुकद्दमे, जो विचित्र सांसारिक ज्ञान को प्रतिपादित करते हैं। छोटे छोटे नगरों में युद्ध के परिणामस्वरूप निःसहाय लोगों के साथ सबको यहाँ फेंक दिया गया है। ऐसी नई चीज़ को भी क्रांति कहा जाता है। फिर 1905 में विद्यार्थियों के आन्दोलन द्वारा जो आदर्श स्थापित किया गया था, उसे क्या कहा जाय? और आज की यह रक्त से सनी हुई, दयाहीन, तात्विक क्रांति! सैनिकों का यह अद्‌भुत उत्थान! नेतृत्व कर रहे हैं पेशेवर राजनीतिक बोलशेविक!

युद्ध के शिकंजे में फँसी हुई नर्स लारा भी उसके विचारों का केन्द्रबिन्दु थी; जिसका व्यतीत अज्ञात है। उसे किसी के प्रति कोई शिकायत नहीं। मगर उसका मौन हजार-हजार शिकायतों से भरा हुआ है। रहस्यपूर्ण तरीके से, दृढ़तापूर्वक वह सबसे अलग है। ज़िवागो ने कोशिश की थी कि वह लारा को सम्पूर्ण हृदय से प्यार न करे। शुरू से अब तक, उसने अपने परिवार, मित्रों तथा सभी लोगों को प्यार करने की अपनी चेष्टा के प्रति निरन्तर संघर्ष किया है। रेल पूरी तेजी के साथ भागी जा रही थी। खिड़की से आने वाली खुली हवा में उसके बाल लहरा रहे थे और उन में धूल जमा होती जा रही थी। रात हो या दिन, भीड़ का तूफान मचा रहता। नींबू के वृक्ष चरमराते रहते! कभी-कभी दिखाई दे जातीं, लड़खड़ाती गाड़ियों की छोटी-छोटी रोशनियाँ जो स्टेशन की ओर आ रही होतीं। उनके पहियों की आवाज़ें भी नींबू की चरमराहट में डूब-सी जातीं। आखिर यह सब क्या है? ज़िवागो सोच रहा था। किस चीज़ के कारण ये छायाएँ नृत्य करती हुई आपस में टकराती रहती हैं? वे किस

विषय में एक दूसरे के साथ धीरे-धीरे बातचीत कर रही थीं? वृक्षों के पत्ते बड़ी मुश्किल से इस तरह हिलते, मानो दुर्बल हों और नींद से बोझिल हों।

सोते हुए और करवट बदलते हुए ज़िवागो सोच रहा था—रूस में अशान्ति बढ़ती जा रही है, उत्तेजना के स्वर ऊँचे उठ रहे हैं, क्रांति का संदेश चारों ओर व्याप्त हो रहा है। राष्ट्र के भाग्योदय की कठिन घड़ी आ गयी है।

यही है महानता की सर्वोच्च सम्भावना!

चौदह

ज़िवागो काफी देर तक सोता रहा। ग्यारह बजे के लगभग वह उठा। उस समय उसका पड़ोसी अपने कुत्ते को पुकार रहा था—प्रिंस! प्रिंस!

वह डिब्बा इन दो यात्रियों तक ही सीमित था। इस डिब्बे में कोई दूसरा मुसाफिर अभी तक नहीं आया था।

वे कलूगा प्रान्त पार कर चुके थे और मास्को की सीमा में प्रवेश कर रहे थे। बीच-बीच में आने वाली स्टेशनों के नाम से ज़िवागो बचपन से ही अच्छी तरह से परिचित था। युद्ध के पूर्व की शांति के साथ उसने हजामत बनाई और हाथ-मुँह धोया। नाश्ते के लिए उसके विचित्र साथी ने उसे निमंत्रित किया था। डिब्बे में आते ही उसने अपने इस हमसफर की ओर ग़ौर से देखा। ज़िवागो को जो बात सबसे अधिक खटक रही थी, वह थी उसकी अबाध बड़बड़ाहट। थोड़ी देर के लिए चुप रहना भी उसके लिए संभव नहीं था। बोलना उसे पसन्द तो बहुत था, लेकिन जो कुछ वह बोलता, उसका अर्थ कुछ भी समझ में नहीं आता। वह सिर्फ़ बोलने की क्रिया मात्र थी। बोलते वक़्त वह ऐसे उछलने लगता, मानो स्प्रिंग पर बैठा हुआ हो। इतने जोर से हँसता कि सुनने वाले के कान बहरे हो जायें। इस पर भी जब उसे महसूस होता कि वह अपने विचार प्रकट नहीं कर पा रहा है, तो जोरों से घुटनों पर थापी देता, हाथ मलता

और हँसी के मारे झूम उठता। अंत में उसकी यह हँसी चिल्लाहट में परिणित हो जाती। पिछली रात की तमाम विचित्रताएँ अभी भी मौजूद थीं। सारी बातें बेतुकी और असम्बद्ध। बिना माँगे वह सफाई देते हुए न जाने किन अपराधों को स्वीकार करने लगा। अविश्वसनीय और असम्बद्ध विवरण देते हुए वह झूठ बोलने लगा था। जनसाधारण द्वारा मान्य विचारों का खण्डन करते हुए वह ज़िवागो को प्रभावित करने की चेष्टा कर रहा था। ज़िवागो को याद आया कि पिछली शताब्दी के शून्यवादी दार्शनिकों की यही मौलिक अवस्था थी।

उस युवक ने बताया कि वह एक सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी का भतीजा है। उसका कहना था कि उसके माता-पिता प्रतिक्रियावादी, प्रागैतिहासिक थे। उनके पास काफी बड़ी रियासत थी जो कि अब युद्धस्थल की सीमा में सम्मिलित कर ली गयी है। वह यहीं छोटे से बड़ा हुआ। उसके चाचा का उसके माता-पिता के साथ जीवन भर साँप-नेवले जैसा सम्बन्ध रहा। मगर चाचा ने अधिक दिनों तक उनका विरोध नहीं किया। अब तो उन्हें बचाने के लिए वह अपने प्रभाव का उपयोग भी कर रहा है। वह अपने चाचा के विचारों से प्रभावित हुआ है। जीवन, राजनीति तथा कला में वह अतिवादी विचारधारा का था। ज़िवागो को पीटर परखावेस्काय की याद आ गयी; उसमें इतनी वामपक्षीयता तो नहीं थी जितना कि भ्रष्टाचार। ज़िवागो सोच रहा था कि अब वह कहेगा कि वह भविष्यवादी है। बाद में बातचीत का रुख भविष्यवाद से उछल कर खेलकूद, घुड़दौड़, बर्फ़ की स्केटिंग अथवा फ्रांसिसी कुश्ती में तब्दील हो जायेगा। इस समय वे शिकार की बातचीत तक पहुँच गये थे। युवक का कहना था कि वह घर के पास ही शिकार खेला करता है। यदि उसमें शारीरिक हीनता न होती तो वह अपने निशानेबाजी पर नाज कर सकता था। ज़िवागो जब उसकी ओर उत्सुकता से देख रहा था, तो उसने जोर से पूछा—'मालूम हुआ तुम्हें, मेरी असली दिक्कत और मुसीबत क्या है?' इस प्रश्न के साथ, उसने अपनी जेब से दो कार्ड

निकाल लिये। एक था परिचय पत्र, जिसमें इस युवक के दो नाम लिखे हुए थे। चाचा जिस नाम को धारण करता था, उसी नाम से पुकारने की उसने ज़िवागो से प्रार्थना की थी। दूसरा कार्ड चौखानों में विभक्त था। इसमें अनेक प्रकार से जोड़े हुए हाथ तथा मुड़ी हुई अँगुलियों के चित्र अंकित थे। इससे स्पष्ट हो गया कि यह बहरे गूँगों की बारहखड़ी है। यही हार्टमेन या ओस्ट्रोग्रेडाय का चमत्कारपूर्ण वरदान प्राप्त शिष्य था। वह दूसरों की बातचीत कान से नहीं, आँखों से, विश्वस्त रूप से सुनने में समर्थ था।

उसकी तमाम बातों के साथ उसके शिकार-अभियान तथा प्रान्तीय अभियान को संयोजित करते हुए ज़िवागो ने कहा—अभद्रता के लिए क्षमा करना। एक बात बताइये, जेबूशिनो में जो गणतंत्र स्थापित हुआ है, उसमें प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से आपका हाथ था क्या?

—आपने कैसे अनुमान लगा लिया? क्या आप ब्लेजिको को जानते हैं? हाँ, मैं उससे सम्बन्धित था, इसके बाद उसकी फिर वही हँसी, बड़बड़ाहट, शरीर की व्यग्रता और घुटनों को पीटना आरंभ हो गया। पोगोरेवशिल ने बताया कि ब्लेजिको तो एक निमित्त मात्र है। उसके विचारों के क्रियात्मक रूप लेने का वह एक आकस्मिक स्थान था। ज़िवागो की समझ में उसकी बातें ठीक से नहीं आ रही थीं। कभी वह अराजकवादी-सा लगता और कभी लगता कि सरल शिकारी की तरह वह झूठ बोल रहा है। उसके बाद उसने रूस में निकट भविष्य में घटित होने वाली भयंकर उथल-पुथल की भविष्यवाणी की। ज़िवागो ने उसका मन ही मन समर्थन करते हुए कहा कि यह असंभव नहीं। लेकिन इस नवयुवक की अरुचिकर, लड़कपनभरी उद्दण्डतापूर्ण घोषणा उसे पसन्द नहीं आई।

उसकी बात काटते हुए ज़िवागो ने कहा—एक मिनट ठहरो। हो सकता है कि जो कुछ आपने कहा है, वह सत्य हो। लेकिन इस समय जो विप्लव और शत्रुओं का आक्रमण एक साथ हो रहा है, ऐसे समय पर

भयंकर प्रयोग करना अप्रासंगिक और घातक नहीं है? एक संकट को पार करके ही दूसरी मुसीबत का हल ढूँढ़ना चाहिए। पहले एक बार कुछ शांति तथा व्यवस्था कायम होनी ही चाहिए।

पोगोरेवशिल न जवाब दिया—यह पागलपन भरा वक़्तव्य है। जिसे आप व्यवस्था कह रहे हैं वही दरअसल वस्तुस्थिति है। जिस चीज़ के लिए आप इतने सचेष्ट हैं, उसी शांति और व्यवस्था के लिए यह सारा सर्वनाश, सही और आवश्यक प्रारंभिक अवस्था है। अभी तक समाज पर्याप्त रूप से छिन्न-भिन्न नहीं हुआ है। पहले इसी पर गदा-प्रहार होना चाहिए। इसके टुकड़े टुकड़े हो जाने पर ही क्रांतिकारी सरकार नई प्रणाली से नयी समाज व्यवस्था स्थापित कर सकेगी।

परेशान होकर ज़िवागो बरामदे में चला गया। रेल अपनी तेज रफ्तार के साथ मास्को में प्रवेश कर रही थी। ग्रीष्मकालीन मकानों से भरे बर्च के जंगल से गुजरती हुई रेल से, बिना छत के प्लेटफार्म पर खड़े स्त्री-पुरुष धूल के बादलों में लहराते हुए दिखाई दे रहे थे।

ज़िवागो अच्छी तरह समझ गया कि वह इस समय कहाँ है, और थोड़ी देर बाद क्या होने वाला है; और उसे इस समय किसकी प्रतीक्षा है! अनेक प्रकार के परिवर्तन, उद्दाम हलचलें, युद्ध, विप्लव, क्रांति, विनाश के ध्वंसावशेष—यह सब, पिछले तीन वर्षों की विशाल शून्यता की निरर्थकता को प्रकट कर रहे हैं। इन सबके बावजूद जो घटना सच्ची और सार्थक है, वह इस समय, इस तरह चक्कर काटते हुए वापस घर आ जाने की है। यह विश्वास कितना सुखद है कि उसका घर अभी भी सुरक्षित है, विद्यमान है—जिसका चप्पा-चप्पा उसे इतना प्यारा है! यह है, जीवन का समर्थ सार्थक संकेत! प्रयाणकर्त्ताओं का अन्तिम अन्वेषण। कलाकार की कल्पना के अनुसार अपने ही घर में नवीन रूप में लौट आना!

पत्तों से ढके हुए वन से रेल खुले मैदान में आ गई। रेल की लटपटाती दुम के पार बैंगनी रंग का काला बादल आधे आकाश में छा गया था।

अकस्मात, तेज वर्षा शुरू हुई। 'क्राइस्ट द सेवियर चर्च' दिखाई देने लगा। थोड़ी देर बाद शहर के गुम्बद, चिमनियाँ, छतें और मकान दिखाई देने लगे। अपनी सीट की ओर जाते हुए ज़िवागो ने कहा—मास्को! चलो तैयार हो जाओ।

पोगोरेवशिल फुरती से उठ खड़ा हुआ। अपने झोले में से उसने एक बतख निकाली और ज़िवागो की ओर बढ़ाते हुए बोला—लो, इसे रक्खो। यही यादगार रहेगी। आपके सत्संग का मैंने बहुत सुख पाया। ज़िवागो का विरोध व्यर्थ था। अन्त में इस भेंट को स्वीकार करते हुए उसे कहना पड़ा—अच्छी बात है। अपनी पत्नी के लिए मैं यह उपहार ले जाऊँगा।

जैसे उसने यह शब्द पहली बार सुना हो, वह प्रसन्नता से खिल उठा। उसके अट्टहास की आवाज़ से उसके कुत्ते प्रिंस का आसन डोल गया। अपने स्थान से बाहर आकर वह भी इस प्रसन्नता में दुम हिलाता हुआ शरीक हो गया।

रेल स्टेशन पर आ गई। डिब्बे में अन्धेरा छा गया। मानो रात हो।

6

सैन्य शिविर

ज़िवागो जब तक गाड़ी में बैठा था, उसे लग रहा था कि सिर्फ़ गाड़ी ही चल रही है, समय की गति रुक गयी है और अभी तक आधा दिन भी नहीं गुज़रा है। लेकिन स्मालेस्काय के भीड़भरे चौराहे से जब उसकी टैक्सी गुजरी, उस समय दोपहर ढल चुका था। पिछले सालों की स्मृति के अनुसार ज़िवागो को लग रहा था यहाँ भीड़ अपनी पुरानी आदत के अनुसार ही खड़ी है। वर्ना बिना बुहारे, खाली दूकानों के बाजार में उनके

खड़े होने का कोई कारण नहीं हो सकता। इधर-उधर उसने कुछ वृद्ध स्त्री-पुरुषों को देखा, जिनकी खामोशी में मौन प्रताड़ना थी। वे बिना कुछ बोले उन चीज़ों को बेचने की कोशिश कर रहे थे, जो बिलकुल उपयोगी नहीं हैं। जैसे, कागजी फूल, काफी छानने की चालनी, सीटियाँ, काली जाली और बंद हो चुके दफ्तरों के लोगों के सन्ध्याकालीन कपड़े। सीधे-सादे लोगों के पास कुछ उपयोगी व्यवसाय था। वे राशन की बासी रोटियों के नुकीले टुकड़े, सीलनभरे गंदे शक्कर के गोले और मोटी तम्बाकू बेच रहे थे। यही सारी गंदगी बाजार भर में फैली हुई थी। एक से दूसरे हाथ में जाते-जाते चीज़ों के दाम बढ़ते जाते। वे गली में मुड़े। उनकी पीठ की ओर सूर्यनारायण अस्त हो रहे थे। इस बाजार को पार कर, वे तेजी से आगे बढ़े। चारों ओर पोस्टरों की भरमार को देखकर ज़िवागो आश्चर्यचकित-सा रह गया। दीवारों से उखड़ कर वे सड़क पर इधर-उधर हवा में उड़ रहे थे। हवा उन्हें एक ओर ले जाती और पहिये, राहगीरों के कदम और पशुओं के खुर उन्हें दूसरी ओर। कई चौराहों को पार कर एक गली के नुक्कड़ पर ज़िवागो का मकान आ गया। गाड़ी रुक गयी। गाड़ी से उतरते ही ज़िवागो का दिल धौंकनी की तरह धड़कने लगा, साँस रुक गयी। आगे बढ़ कर उसने बन्द दरवाजे की घंटी बजाई। कोई जवाब नहीं मिला। थोड़ी देर बाद व्यग्रता के मारे वह बारम्बार घंटियाँ बजाता रहा। इसी समय टोन्या ने आकर दरवाजा खोल दिया। इस अप्रत्याशित मिलन ने दोनों को एकबारगी निःस्तब्ध कर दिया। किसी के मुँह से एक शब्द भी नहीं निकल सका।

दरवाजा पकड़े टोन्या की खुली बाँहें उसका स्वागत कर रही थीं मानो आलिंगन के लिए आमंत्रित कर रही हों। दोनों ने अपने आपको संभाला और एक दूसरे की भुजाओं में आबद्ध हो गये। क्षण भर बाद उन्होंने तुरन्त बोलना शुरू कर दिया।

—पहले यह बताओ, सब अच्छे हैं न?

—हाँ ! सब अच्छे हैं। चिन्ता कीं कोई बात नहीं। मैंने आपको चिट्ठी में बहुत-सी बेतुकी बातें लिखी थीं। मुझे माफ कर दो। खैर, इस बारे में फिर बात करेंगे। आपने तार क्यों नहीं दिया ? मार्केल आपका सामान ले आयेगा। युगोरोवना ने इतनी देर तक दरवाजा नहीं खोला, आपको उस समय बड़ी चिन्ता हो रही होगी ? वह बाहर गयी हुई है।

—तुम बहुत दुबली हो गयी हो टोन्या। मगर सुन्दर और ठाठदार दिखाई दे रही हो। ठहरो, मैं गाड़ी वाले से निपट आऊँ।

—युगोरोवना आटा खरीदने की कोशिश में गयी है। बाकी के तमाम नौकरों को भी छुट्टी दे दी गयी है। अब सिर्फ़ एक लड़की है नूशा ! आप उसे नहीं जानते। साशा की देखभाल वही करती है। मैंने सबको बता दिया था कि आप आ रहे हैं। सब लोग आपको देखने के लिए बहुत उत्सुक हो रहे हैं—गोर्डन, डुडरोव—हर कोई।

—साशा कैसा है ?

—भगवान की दया से बिलकुल अच्छा। अभी ही सोकर उठा है। गाड़ी से आये हैं न आप, टायफुस का खतरा हो सकता है...नहीं तो पहले हम उसी के पास जाते।

—पिता जी घर में ही हैं ?

—आजकल वे संसद में सदस्य भेजने वाली काऊन्सिल के अध्यक्ष हैं। सुबह से रात तक उसी में व्यस्त रहते हैं। आपको किसी ने नहीं लिखा ? आपने किराया चुका दिया ? मार्केल, ओ मार्केल !

वे अभी तक दरवाजे के बीच सामान फैलाये उसी तरह खड़े थे। राह चलते लोग रुक कर उनकी ओर जिज्ञासाभरी दृष्टि से ऊपर से नीचे तक देख रहे थे। सूती कमीज पर वेस्टकोट पहने, पोर्टर की टोपी हाथ में लिए मार्केल दरवाजे की ओर दौड़ते हुए, अपने मालिक का स्वागत करते हुए, शोर मचाता हुआ आ रहा था—या खुदा, यूरी एण्ड्रोविच ! मेरी आँखों के तारे। आ गये तुम ? हमें भूल तो नहीं गये ? हम तुम्हारे

लिए रोज़ दुआएँ माँगते थे। भगवान ने हमारी लाज रख ली। अच्छा हुआ, तुम घर लौट आये।

फिर दर्शकों की ओर मुड़ कर उसने उन्हें झिड़कते हुए कहा—क्यों जी, आपको क्या चाहिए? कौन-सी ऐसी विचित्र बात है कि सब मिल कर इस तरह घूर रहे हो? चलिए, चलिए, अपना रास्ता नापिये।

ज़िवागो ने आगे बढ़कर मार्केल को गोद में उठा लिया। बोला—कैसा है रे तूँ मार्केल? गधे, टोपी तो सर पर रख ले। बता तो, क्या हालचाल हैं? बीवी कैसी है? बच्चियाँ कैसी हैं?

—वे हो ही कैसी सकती हैं? दिन-रात चन्द्रमा की तरह बढ़ रही हैं। और नये हालचाल यह हैं कि जब आप बड़े-बड़े कामों में लगे हुए थे, उस समय हम भी बहुत व्यस्त थे। ये गंदी सड़कें, टपकती हुई छतें, यह पागलपन, खुदा बचाये। रमजान की तरह भूखे पेट दिन काटे हैं!

—मैं डाक्टर से तुम्हारी शिकायत करूँगी। यूरी, यह हमेशा ऐसे ही करता रहता है। लेकिन मैं इन बेवकूफी की बातों को अधिक बर्दाश्त नहीं कर सकती। और वह सोचता है कि यह सब आपको पसन्द है। उसे जैसे चढ़ा दिया जाय, बस, वैसा ही तेज हो जाता है, इसे मैं अच्छी तरह से जानती हूँ। उम्र हो गयी, अब तो कुछ तमीज सीखो मार्केल!

मार्केल ने ज़िवागो का सामान उठाया, दरवाजा बन्द किया और बिना कुछ कहे, अन्दर चला गया। ज़िवागो ने हँसते हुए कहा—टोन्या तुमसे नाराज है। सुना नहीं, वह तुम्हें क्या कह रही है? वह कह रही है कि तुम्हारा दिल स्टोव के पाइप की तरह काला है।

—ठीक है डाक्टर साहब। मानो चाहे मत मानो, उन लोगों ने एक सौ चालीस वर्षों से दबी पड़ी मेसन की पुस्तकें पढ़ी हैं। मैं कहता हूँ कि अब लोगों ने अपनी अक्ल बेच खाई है। लेकिन मैं कुछ बोल थोड़े ही सकता हूँ? देख लो, टोन्याजी मेरी ओर किस तरह से सिर हिला रही हैं। मार्केल ने कहा।

—मेंढकी को भी जुकाम होता है। तुझे आश्चर्य हो रहा है रे मार्केल? अब काफी बकवास हो चुकी। बन्द कर यह सब! डाक्टर को किसी चीज़ की ज़रूरत होगी, तो वे तुझे बुला लेंगे।

दो

—शुक्र मनाओ कि वह चला गया। आपका खयाल है कि वह देहाती गंवार है! अच्छी बात है। आप चाहें तो उसकी बातें सुनते रहिये। लेकिन सच, वह बिलकुल नाटक करता रहता है। जबान इतनी तेज है उसकी, कि मक्खन भी उसके मुँह में न पिघले। हर समय अपनी जबान तेज करते रहने पर भी उसे यह नहीं मालूम कि वह इसका इस्तेमाल किस गरीब, बूढ़े और दुष्ट व्यक्ति के लिए करेगा!

—कोई खास बात नहीं। शायद उसने कुछ शराब पी है। बात इतनी-सी है।

—बताइये तो, वह होश में रहता ही कब है? खैर छोड़ो, इन बातों को। साशा फिर सो जायगा। यदि रेल की यात्रा से टायफुस के कीटाणुओं का डर न होता तो—

—मेरे खयाल में ऐसी कोई बात नहीं है। मैंने बड़े आराम से सफर किया था। फिर भी मैं जाकर नहा आता हूँ। बाद में एक बार फिर अच्छी तरह से नहा लूँगा। तुम किस रास्ते से जा रही हो? क्या अब दर्शन कक्ष से हम लोग नहीं जाते?

—अच्छा, आपको मालूम ही नहीं? पिताजी और मैंने मिलकर यह तय किया था कि निचली मंजिल का कुछ हिस्सा कृषक परिषद् को दे दिया जाय। इतने बड़े घर को जाड़ों में गर्म रखना बहुत मुश्किल है। ऊपर का हिस्सा देने के लिए भी हमने उन्हें कह दिया है। मगर अभी तक उन्होंने वहाँ सिर्फ़ पुस्तकालय और बीजों का संग्रह ही रखा है। मुझे डर था कि कहीं चूहों की भरमार न हो जाय। आखिर बीज भी तो धान ही हैं। लेकिन वे उसे रखते हैं खूब साफ-सुथरा। कुछ भी हो, अब कमरों की

भीड़ नहीं रही। सिर्फ़ रहने भर का स्थान है। पिछली सीढ़ियों से ऊपर चलें। आओ, मैं रास्ता दिखाती हूँ।

—इस तरह निचला और ऊपर वाला हिस्सा दे देने से मुझे बड़ी खुशी हुई है। जिस अस्पताल में मैं था, वह मकान भी इसी तरह का था। वहाँ भी असंख्य कमरे थे। जैसे क्यारियों में प्रेत हों, इस तरह गमलों में जड़ फैलाये पौधे चारों ओर रखे रहते। इनको देखकर युद्ध से घायल व्यक्ति अपना आपा खो देते, चिल्लाने लगते। आखिर हमें उन सबको वहाँ से हटाना पड़ा। कहने का मतलब यह, कि अब वह मकान अमीरों के लायक तो नहीं रहा। क्या ज़रूरत है, व्यर्थ की वस्तुओं के ढेर की, अत्यधिक फर्नीचर की, बहुत अधिक कमरों की, फिजूल की आत्माभिव्यंजना की? मुझे खुशी है कि हमारे ये फालतू के कमरे काम में आ रहे हैं। हो सके तो, हमें और कमरे भी उन्हें दे देने चाहिए।

—उस पार्सल में क्या है डाक्टर? चिड़िया की चोंच-सा कुछ बाहर निकल रहा है। अरे, यह तो बतख है। बहुत बढ़िया, जैसे जंगली हँस हो। मुझे तो विश्वास ही नहीं होता। आजकल यहाँ तो यह सब सोने के भाव पर भी नहीं मिलता।

—एक साहब ने रेल में मुझे यह उपहार दिया था। उसकी लम्बी कथा है, फिर कहूँगा। अब क्या करूँ? उसे रसोईघर में रख दूँ?

—हाँ, हाँ। मैं नूशा को नीचे भेजती हूँ। वह उसे काट छील कर साफ कर देगी। लोग कहते हैं, आगामी शिशिर ऋतु में अकाल और सर्दी का आतंक रहेगा।

—सभी जगह ऐसी बातें ही हो रही हैं। रास्ते में रेल की खिड़की के पास बैठा मैं यही सोच रहा था कि शान्तिमय काम और पारिवारिक जीवन से बढ़ कर सारे संसार में है ही क्या चीज़? और यदि उसके अतिरिक्त कुछ है भी तो वह हमारे बस की नहीं। लगता तो यही है कि बुरे दिन आने वाले हैं। लोग घर छोड़-छोड़ कर बाहर भाग रहे हैं। कुछ लोग दक्षिण की ओर जा रहे हैं; कुछ लोग काकेशस की ओर। मैं किसी

भी हालत में ऐसा करना पसन्द न करूँ। देश पर जब भी कोई मुसीबत आये तो हर नौजवान को लोहे के चने चबाने के लिए तैयार रहना चाहिए। लेकिन तुम्हारी बात अलग है। तुम्हें इन सब मुसीबतों से नहीं गुजरना होगा। मैं चाहता हूँ कि तुम्हें सुरक्षित रूप से फिनलैण्ड भेज दूँ। लेकिन देखो, यदि हम इसी तरह हर सीढ़ी पर गप मारते रहे तो ऊपर पहुँच ही नहीं सकेंगे।

—ठहरो। सुनो। मैं तो कहना ही भूल गयी, निकोलाय निकोलायविच वापिस आ गये हैं।

—क्या कहा? निकोलाय निकोलायविच?

—हूँ। मामा कोल्या!

—यह कैसे हो सकता है? असंभव!

—सच कहती हूँ। वे स्विटजरलैण्ड में थे। घूम-फिर कर लन्दन से फिनलैण्ड होते हुए वे यहाँ आ गये हैं।

—मजाक तो नहीं कर रही हो टोन्या? तुमने उन्हें देखा है? इसी दम उनसे मुलाकात नहीं हो सकती?

—इतनी उतावल मत कीजिए। वे देहात में किसी के यहाँ गये हुए हैं! उन्होंने वादा किया था कि वे परसों तक यहाँ आ जायेंगे। अब बहुत बदल गये हैं वे। देखोगे, तो विश्वास नहीं करोगे। रास्ते में पीटर्सबर्ग में वे रुके थे। वे हो गये हैं बोलशेविक। पिता जी से जब वे बहस करने लगते हैं तो पिताजी काफी गर्म हो जाते हैं। लो, हम जैसे सीढ़ियों से खिसकेंगे ही नहीं। हाँ, क्या कह रहे थे, बुरा समय आने वाला है? लोग कहते हैं कि भयजनित मुसीबतें और असुरक्षा की अवस्था फिर आने वाली है?

—मैं भी यही सोचता हूँ। खैर, इससे क्या होगा? देखा जायेगा? इसी से सारी बातों का अन्त नहीं आ जाता। जिस तरह दूसरे लोग ऐसे वक़्त का इन्तज़ार करेंगे, और उपाय निकालेंगे, वैसे ही हम भी देखेंगे कि क्या होता है।

—लोग तो कहते हैं कि अब जलाने की लकड़ी, पानी और बिजली तक मुयस्सर नहीं होगी। बाहर से सामान आयेगा ही नहीं। लो, हम फिर रुक गये। चलो, चलें। सुनो अर्बिट के बाजार में छोटे-छोटे लोहे के स्टोव बिक रहे हैं। मेरे पास दूकान का पता है। खत्म होने से पहले ही मैं एक स्टोव खरीद लेना चाहती हूँ।

—ठीक है खरीद लेना। मैं मामा कोल्या की बात नहीं भूल पाता।

—मैं बताऊँ, हम क्या करेंगे? हम मकान के कोने के दो तीन कमरों वाला एक हिस्सा अलग रख देंगे जो एक दूसरे से सम्बद्ध होंगे। ये कमरे हमारे पिताजी के लिए तथा दूसरा नूशा और साशा के लिए रहेगा। शेष सारा मकान हम दे देंगे। फ्लेट की तरह, एक अलग दरवाजा निकलवा लेंगे। लोहे के स्टोव को बीच वाले कमरे में रख देंगे और खिड़की के पास नल लगवा लेंगे। कपड़े धोने का काम, रसोई बनाने का काम और गपशप मारने का सारा काम इन्हीं कमरों में हो जायेगा। आशा तो है कि अगले शिशिर में ईंधन मिलने लगेगा।

—ये दिन भी गुजर जायेंगे। एक बढ़िया विचार आया, जानती हो क्या? गृह-प्रतिष्ठा समारोह होना चाहिए।

—अच्छी बात है। मामा कोल्या को बुलाकर यह बतख पकायेंगे।

—बहुत बढ़िया। मैं गोर्डन से कहूँगा कि वह किसी प्रयोगशाला से थोड़ी शराब ले आये!

—अब देखिये, यही कमरा है। सूटकेस नीचे रख दो। नीचे जाकर अपना सामान ले आओ। गृह-प्रतिष्ठा के समारोह के अवसर पर डुडरोव और शूरा स्किलसिंगर को भी बुलाना चाहिए। तुम्हें एतराज तो नहीं? मालूम है न शौचालय वगैरह किस ओर हैं? जाओ, किटाणुनाशक दवा पानी में डाल देना। मैं तब तक साशा को तैयार करने के लिए नूशा को नीचे भेजती हूँ। जैसे ही आप तैयार हो जायेंगे, मैं आपको बुला लूँगी।

तीन

मास्को में ज़िवागो के लिए सबसे अद्‌भुत था उसका छोटा सा लड़का साशा। बालक के पैदा होते ही उसे रणस्थल पर बुला लिया गया। इसीलिए वह उसे देख नहीं पाया था। जाने से पहले टोन्या को अस्पताल में देखने के लिए वह गया था। उस समय वह वर्दी में था और शीघ्र ही मास्को छोड़ने वाला था। वह बच्चों को खिलाने-पिलाने का समय था, इसलिए उसे अन्दर जाने नहीं दिया गया। वह प्रतीक्षालय में बैठा, प्रसव विभाग से आने वाले दस-बारह बच्चों के रीरियाने की आवाज़ें सुन रहा था। बच्चों को अच्छी तरह लपेट कर, ताकि उन्हें सर्दी न लग जाय, कई नर्सें, उन्हें अपनी बाँहों में दबाये उसके पास से गुजरीं। जैसे दैनिक कार्य-कलाप में व्यस्त हों तमाम बच्चे 'वा-वा' की आवाज़ में रो रहे थे। इन रोने की आवाज़ में एक भिन्न स्वर भी था, जो कि महज रोने के लिए नहीं रो रहा था बल्कि जानबूझ कर ठंड का विरोध करते हुए धीमे स्वर में कुछ कह रहा था।

ज़िवागो ने उसी समय बच्चे का नामकरण कर दिया था। अपने ससुर के सम्मान में वह उसका नाम अलेक्जेण्डर रखना चाहता था। पुकारने के लिए साशा, यह छोटा-सा नाम काफी माना गया। पता नहीं क्यों, उसे लगा कि यह जो अकेली-अकेली सी आवाज़ शोर में से उठ रही है, वह उसी के बालक की है। ऐसा लगता था कि इस आवाज़ में नये मानव का भावी व्यक्तित्व और भाग्य समाया हुआ है। वह गलत नहीं था। सचमुच में वह साशा की ही आवाज़ थी। लड़के के बारे में यही पहली बात वह जानता था। इसके अलावा अपने लड़के से उसका परिचय टोन्या द्वारा युद्धस्थल पर भेजे गये चित्रों द्वारा हुआ था। फोटो में वह बहुत खूबसूरत दिखाई दे रहा था। कम्बल पर, घुटने ऐंठा कर, मुट्ठी बाँधे वह इस तरह से खड़ा था मानो 'कृषक-नृत्य' की तैयारी कर रहा हो। उस समय साशा एक साल का था और चलना सीख रहा था। अब वह दो वर्ष का हो गया है, और बोलने लगा है।

खिड़की के पास वाली टेबल पर अपना सूटकेस रख कर ज़िवागो ने उसे खोल दिया। उसे याद नहीं आ रहा था कि पहले यह कमरा किस काम में लाया जाता था। शायद टोन्या ने फर्नीचर बदल दिया हो, दीवार के कागज बदल दिये हों, अथवा उसे नये तरीके से सजाया हो। उसने हजामत का सामान निकाला।

गिरजाघर के घण्टों के बीच उसकी खिड़की के ठीक सामने आकाश के मध्यभाग में स्थित चन्द्रमा दिखाई दे रहा था। उसके सामान, कपड़ों और पुस्तकों पर जब चाँदनी चमकने लगी तो कमरे की रोशनी ही बदल गयी और उसे एहसास हुआ कि वह इस समय कहाँ है? इस कमरे में पुराना फर्नीचर पड़ा रहता था। यहीं पर अन्ना के परिवार के महत्त्वपूर्ण कागजात तथा ग्रीष्मऋतु में सर्दी के कपड़े सन्दूकों में बन्द पड़े रहते। अपने जीवनकाल में वह बच्चों को वहाँ जाने नहीं देती थी। सिर्फ़ क्रिसमस अथवा ईस्टर के दिनों में दावत में शामिल होने वाले बच्चों की भीड़ के लिए ऊपर की सारी छत खोल दी जाती। वहाँ वे लुका-छिपी का खेल खेलते, टेबलों के नीचे छिप जाते, कोयले से मुँह पोत कर नाटक किया करते।

यही सब ज़िवागो सोचता रहा। अपना सामान लाने के लिए वह नीचे उतर गया। रसोईघर में, एक अखबार के कागज पर नूशा बतख को चीर रही थी। डॉक्टर को सामान लाते देखकर वह शर्माकर, वस्त्रों से पंख झाड़ती हुई, उसकी सहायता के लिए आगे बढ़ी। ज़िवागो ने उसे धन्यवाद देकर कहा कि वह स्वयं इसका इन्तजाम कर लेगा। ऊपर जाते ही उसने अपनी पत्नी की आवाज़ सुनी। वह पुकार रही थी—आपके आने में अब कितनी देर है?

टोन्या का पुराना स्कूली कमरा अब बाल-कक्ष था। सामने पालने में पड़ा बालक उतना सुन्दर तो नहीं था, जितना कि फोटो में दिखाई देता था। फिर भी उसका चेहरा अपनी दादी से, यूरी की माँ मार्या निकोलायेवना से हू-ब-हू मिलता-जुलता था। ज़िवागो के पास अपनी

माँ के जितने भी चित्र थे उनमें से किसी का प्रतिबिम्ब उससे इतना नहीं मिलता।

—'यह रहे तुम्हारे पिता। अच्छे लड़के की तरह इनसे हाथ मिलाओ?' कहते हुए टोन्या ने पालने को एक ओर झुका दिया ताकि डॉक्टर उसे आसानी से उठा सके और चूम सके।

एक बार तो नन्हे साशा ने अपने सामने उपस्थित इस अपरिचित गम्भीर व्यक्ति को अपनी ओर झुकने दिया। इसके बाद अचानक वह उछला और अपनी माँ का पल्ला पकड़ कर उसने अपने पिता के गालों पर गुस्से में एक चपत जमा दी। इसके बाद अपने इस दुस्साहस से डर कर वह माँ की छाती में चिपक गया और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा।

—ऐसा न करो ना। देख तो, पिताजी क्या सोचेंगे? वे सोचेंगे कि साशा कैसा लड़का है। अच्छा बताओ तो, पिताजी का चुम्बन कैसे लेते हैं? घबराओ मत, डरो मत।—टोन्या ने बच्चे को डाँटते हुए कहा।

—रहने दो उसे टोन्या। न उसे अधिक परेशान करो, न खुद परेशान होवो। मुझे मालूम है कि तुम इस समय क्या सोच रही होगी। ऐसी कोई बात नहीं। तुम कहोगी, कि शकुन अच्छे नहीं हुए। मैं कहता हूँ, ये तमाम बातें बेकार हैं। यह बिचारा मुझे जानता भी तो नहीं। ऐसा होना बिल्कुल स्वाभाविक है। देख लेना, एक दो दिन में यह मुझसे हिलमिल जायेगा और हम आपस में सुलह कर लेंगे। सब ठीक-ठाक हो जायेगा।

फिर भी पता नहीं क्यों, बाहर निकलते समय बुरे शकुन की कल्पना से उसका दिल भारी हो गया।

चार

कुछ ही दिनों में उसे महसूस होने लगा कि वह स्वयं कितना एकाकी है। उसने सोचा, इसमें गलती किसकी है? उसने वही तो पाया है, जिसकी वह अब तक तमन्ना करता रहा है। उसके तमाम मित्रों में भी बड़ा भारी परिवर्तन आ गया है। उसकी स्मृति में उनका जो स्वरूप स्पष्ट था, वे

उससे नितान्त भिन्न दिखाई देते हैं। किसी का अपना निजी दृष्टिकोण नहीं। मानो सबकी विशेषताएँ धूमिल पड़ गयी हों। या हो सकता है कि अतीत में, उसने इन सबके बारे में अतिशयोक्ति से ही सोचा हो।

जब तक कि व्यवस्था का यह रूप था, साधनसम्पन्न व्यक्ति आसानी से अपनी बेवकूफी भरी तरंगों को गरीबों के बल पर पूरी कर सकते थे। इस तरह की बेवकूफी और आरामतलबी कुछ ही लोगों को मुयस्सर थी; जब कि अधिकाँश लोग दुखी थे। मौलिकता और प्रतिभा का भ्रम इस तरह वे अपने लिए आसानी से पैदा कर लेते थे। ज्योंही निम्नवर्ग ऊपर उठा और अमीरों ने अपनी सुविधाएँ खो दीं—ये लोग तुरन्त गायब हो गये। बड़ी आसानी से उन्होंने अपने स्वतंत्र विचार छोड़ दिये जो कि वास्तव में उनमें थे ही नहीं।

सीधे-सादे काम पर लगे हुए दो तीन साथी, टोन्या और उसके पिता—बस, इतने लोगों के बीच ही वह अपनापन महसूस कर पाता; जो कि बिना व्यर्थ की बकवास अथवा बनावटीपन के उसके साथ पेश आ सकते थे।

योजनानुसार कुछ ही दिनों बाद वोदका और बतख की दावत आयोजित की गयी। इस दावत में जो लोग आये थे, वह उनसे पहले ही मिल चुका था। इसलिए इस दावत को उपस्थित लोगों से मिलने का श्रेय नहीं दिया जा सकता। उन अभावपूर्ण दिनों में इस तरह की बतख बड़े ऐश्वर्य की बात मानी जाती थी। साथ में खाने के लिए रोटी नहीं थी। इसलिए पकी हुई बतख का जायका फीका पड़ गया था। कुछ ऐसा भी लगता कि जैसे उपस्थित लोगों की इस दावत के लिए सहमति सहज सुलभ न हो।

गोर्डन दवा की एक बोतल में शराब ले आया था। यह उन दिनों चोर-बाजार की प्रचलित मुद्रा थी। टोन्या ने इस शराब में अपनी इच्छानुसार कम-बेसी पानी मिला कर उसे हल्का कर दिया। इस तरह कुछ कमजोर और कुछ तेज नशे का प्रभाव सिर्फ़ अधिक तेज शराब के नशे से ज्यादा ही महसूस हो रहा था, इससे भी लोगों में कुछ चिढ़-सी हो रही थी।

लेकिन सबसे अधिक खेद की बात यह थी कि सम्प्रति स्थिति में यह दावत अनुचित थी। कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि इसके अतिरिक्त किसी अन्य मकान में, उस समय, उसी तरह से खाने-पीने का आयोजन हो रहा होगा।

खिड़की के बाहर अन्धकार में लिपटा हुआ था, निश्चेष्ट और भूखा मास्को। लोग भूल गये थे खेल-तमाशे को, खाने-पीने की इस तरह की दावत को। इसीलिए यह लगता है कि सबकी तरह रहना, यही जीवन-यापन का सही तरीका है। बिना किसी प्रकार का स्मृति-चिह्न छोड़े, दूसरों में समा जाना ही जीवन का साकार स्वरूप है। जिसे दूसरों में बाँटा न जा सके ऐसा आनन्द, आनन्द ही नहीं। इस तरह की बतख और [illegible], जो शहर भर में एक ही घर में हों, न बतख है, न वोदका! [illegible] अतिथियों के साथ बैठे लोग गुप्त-बेचैनी महसूस कर रहे थे। [illegible] गोर्डन काफी गंभीर स्वभाव का था, वही इस समय झिझक-[illegible] कर बोल रहा था; उसके स्वर में संकोच था, वाणी बुझी हुई। [illegible] सम्भवतः उसे अब अपनी प्रतिभा पसन्द नहीं थी। लगता था कि [illegible] सुधारने का वह निरन्तर असफल प्रयास कर रहा हो। वह कोशिश [illegible] कि वह प्रसन्न दिखाई दे। वह एक के बाद एक कहानी कहता जा [illegible] था। उसका खयाल था कि वे कहानियाँ काफी मजेदार और [illegible] हैं। जहाँ तक ज़िवागो को याद आता, गोर्डन का जीवन के [illegible] इतना सरल, विनोदमय दृष्टिकोण नहीं था, न ऐसे शब्द ही [illegible] थे।

[illegible] तक आया नहीं था। अपनी गप में उसके ब्याह की बात [illegible] गोर्डन बता रहा था कि उसकी शादी हुए लगभग एक वर्ष [illegible] और वह अपनी बीवी से अलग है। अपनी कथा के अंतिम [illegible] तक पहुँचते-पहुँचते उसने बताया कि यह विवाह डुडरोव ने [illegible] में कर लिया था। उन दिनों वह नौकरी कर रहा था और उनके [illegible] की जाँच हो रही थी। अपने अधिकारियों को सलाम न करने का [illegible] उस पर लगाया गया था। अपने भुलक्कड़ स्वभाव के कारण उसे

बड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ा। नौकरी से छुट्टी पाने के बाद भी अपनी आदतों के अनुसार अपने कंधे पर लगी हुई पट्टियों की ओर देखने की उसकी आदत गयी नहीं। वह बार-बार कंधे उचका कर उस ओर निगाह डाल लिया करता। वह बहुत विक्षिप्त हो गया था। उसका दिमाग ठीक से काम नहीं कर रहा था। कहानी को आगे बढ़ाते हुए वक़्ता ने कहा—एक बार वोल्गा नदी के किनारे एक बोट का इन्तज़ार करती हुई दो लड़कियाँ उसे मिलीं। वह भी बोट का इन्तज़ार कर रहा था। सेना के दिनों की खुमारी अभी भी उसमें बाकी थी। उन दोनों लड़कियों में से छोटी के प्रेमजाल में वह फँस गया। और उसने तुरन्त उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रख दिया। क्या यह कथा मजेदार नहीं है ? वक़्ता ने पूछा। उसे अपनी कहानी को संक्षिप्त करके जल्द ही खत्म करना पड़ा, क्योंकि कथा के नायक के अन्दर आने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। डुडरोव आ गया।

डुडरोव का स्वभाव बिलकुल विपरीत था। मौसम की सूचना देने वाले यंत्र के कांटे की तरह हवा के प्रतिकूल पीठ कर देने वाली अस्थिरता और अनिश्चितता उसके स्वभाव में थी। अब वह एक उद्यत विद्वान हो गया था। पढ़ते समय उसे एक राजनीतिक बंदी को बचाने के आरोप में स्कूल से निकाल दिया गया था। वह चित्रकला के अनेक स्कूलों में भटकता रहा; अंत में उसे साहित्यिक विभाग में जगह मिल गयी। अपने सहपाठियों से बहुत बाद उसे डिग्री मिली। इसके बाद वह रूसी तथा विश्व इतिहास का प्राध्यापक नियुक्त हो गया। इस समय वह 'भयंकर इवान की भूमि नीति' तथा 'सेंट जस्ट' पर एक पुस्तक लिख रहा था। बड़े प्रेम से प्रत्येक विषय पर उसने संभाषण किया। उसकी आवाज़ स्थिर थी। बोलते समय उसकी स्वप्निल आँखें एक स्थान पर केन्द्रित रहतीं, जैसे कि वह भाषण दे रहा हो।

सन्ध्या के अन्त तक दावत में काफी शोरगुल सुनाई देने लगा। लोग बहस करते-करते चिल्लाने लगे थे। इसी समय शूरा स्किलसिंगर अन्दर

आ धमकी। इस उत्तेजना भरे शोरगुल को बढ़ावा देते हुए अपने स्वाभावानुसार वह लोगों की मजाक उड़ाने में व्यस्त हो गयी। डुडरोव ज़िवागो का बचपन का साथी है। वह उसे हमेशा 'तू' अथवा 'तुम' ही कहता था। बड़े हो जाने पर भी 'आप' उससे नहीं कहा जाता। उसने पूछा, तुमने मायाकोवेस्की की 'युद्ध और शांति' अथवा 'मेरी रीढ़ की बंसी' कविता पढ़ी या नहीं?

इस भयंकर शोर में उसे ज़िवागो का उत्तर सुनाई नहीं दिया। इसलिए उसने एक बार फिर पूछा—तुमने 'मनुष्य' अथवा 'मेरी रीढ़ की बंसी' नहीं पढ़ी?

—एक बार तो कहा मैंने। तुम सुनते ही नहीं। मुझे मायाकोवेस्की बहुत पसन्द है। वह तो डोस्टोवस्की का ही एक क्रम है। या यों कहो कि उसी के किताबों का ही कोई चरित्र कविता लिखने लगा है। उसकी 'युवा-कहानी', 'कच्ची जवानी' या 'हिप्पोलिट' या 'राशकोलनिकोव'—इन विषयों को समाविष्ट करने की उसकी अद्भुत काव्य-शक्ति! समाज के मुँह पर तमाचा मारते हुए खरे तरीके से कहने का उसका तरीका! वाह!

फिर भी इस सन्ध्या के प्रमुख आकर्षण का केन्द्र थे मामा कोल्या। टोन्या का सोचना गलत था कि वे बाहर गये हुए हैं। वे उसी दिन लौट आये थे जिस दिन उनका भांजा मास्को आया था। ज़िवागो उनसे एकाध बार मिल चुका था। लिहाजा मिलन के प्राथमिक 'आह', 'ओह' से ऊपर उठ कर उन्होंने दिल खोल कर बातचीत की। हँसे-बोले। जिस दिन पहली बार ज़िवागो उनसे मिलने गया था, रात मटमैली हो गयी थी और थोड़ी बूंदा-बांदी हो रही थी। वह उनसे मिलने के लिए उनकी होटल में गया। होटल में बिलकुल जगह नहीं थी। होटल वाले किसी को लेते ही नहीं थे, जब तक कि शहर के अधिकारियों का बड़ा आग्रह न हो। लेकिन निकोलाय निकोलायविच काफी लोकप्रिय थे। अपने पुराने सम्बन्धों के कारण उन्हें जगह मिल गयी।

वह होटल क्या था, पागलखाना ही था; जो कि मरीजों के भरोसे छोड़ दिया गया था, जिनका राम ही मालिक था! उस गंदगी भरे कमरे की बड़ी खिड़की से सामने का उजाड़, डरावना मैदान बखूबी दिखाई देता, मानो स्वप्निल रात में फैला हुआ विस्तार हो, न कि होटल के सामने का मनोरम स्थान।

ज़िवागो के लिए अपने मामा का मुकाबला करना बड़ा कष्टदायक था। साथ ही वह घटना अविस्मरणीय थी। वह उस व्यक्ति के साथ बहस कर रहा था, जिसका बचपन से ही उसके मस्तिष्क पर आधिपत्य था। मामा कोल्या के अनुरूप उसके भी बाल खिचड़ी थे। अपनी ढीली विदेशी पोशाक में, अपनी अवस्था में वह अधिक खूबसूरत दिखाई दे रहा था।

माना कि ज़िवागो पर घटनाओं का प्रभाव छांया हुआ था; और उन घटनाओं के समक्ष खड़े होने पर उसका निजी अस्तित्व विलुप्त हो जाता है। लेकिन इस मापदण्ड से अपने मामा को तौलने की बात उसके खयाल में कभी नहीं आई।

राजनीति पर बोलते वक़्त अपने मामा के तटस्थ स्वर को सुन कर ज़िवागो आश्चर्यचकित रह गया। वे अधिकाँश रूसियों से अलग अपनी विचारधारा में ही मगन थे। उनके जिस पुराने रूप से ज़िवागो परिचित था, उससे भिन्न, नवीनतापूर्ण समावेश का यह रूप सूचक था। इसे देख कर उसे कुछ लज्जाशील-व्यथा महसूस हो रही थी।

नशे के कुछ घण्टों पहले तक तो वे इन तमाम बातों की परवाह करते रहे। इसके बाद राजनीति की बहस से परे, चिल्लाने, हँसने, एक दूसरे की पीठ ठोकने, जोर-जोर से एक ही साँस में बोलने तथा गला घोंट देने वाली उत्तेजना के मारे उन तमाम बातों को भूल गये। उनकी समानता का सबसे बड़ा कारण अथवा तथ्य था कलाकार की सृजनशील भावनाओं से भरा हुआ उनका दिल। वे रिश्तेदार थे। एक दूसरे का इतिहास उन दोनों के बीच था। स्मृतियों की लहरें उठतीं और वे जीवन की अनेकानेक घटनाओं और परिस्थितियों की चर्चा और मीमांसा करने

बैठ जाते। रचनात्मक कार्य की योग्यता वाले व्यक्ति ही जान सकते हैं कि वह क्षण कितना महत्त्वपूर्ण था जब उनके रिश्ते की सारी मर्यादा विलीन हो गयी। न कोई मामा रहा; न कोई भांजा। न कोई बूढ़ा; न कोई जवान। उन दोनों के मिलन का कारण थी एक समान चेतना और सिद्धान्तों की मौलिक पृष्ठभूमि। पिछले दस वर्षों में निकोलायविच ने लेखक अथवा लेखकीय समस्याओं के बारे में सम्बद्ध रूप से कभी कुछ नहीं कहा था। न कभी उन लोगों से उनकी मुलाकात ही हुई थी, जिनसे उनके विचार घनिष्ठ रूप से मिलते थे। आज जब यूरी उनसे मिला तो वह भी इतना समझदार और उत्साहपूर्ण नहीं था। सो वे चिल्लाये, कमरे में इधर-उधर टहलते रहे, खिड़की के पास चुपचाप खड़े उसके काँच को [illegible] रहे। उनके आत्मप्रेरणा के औचित्य से काँपती हुई उनकी [illegible] समझदारी की गहराई साबित कर रही थी।

पहली भेंट इस प्रकार हुई थी।

अन्य लोगों के लिए कोल्या मामा को पहचानना मुश्किल था। इसके बाद में वे एक दूसरे से कई बार मिले।

कोल्या मामा जानते थे कि वे मास्को में अतिथि हैं। अपनी यह धारणा उन्हें पसन्द थी। मास्को के बारे में ही नहीं, पीटर्सबर्ग अथवा किसी भी स्थान विशेष के बारे में उनकी यही मान्यता थी। वे इसी में आनन्द लेते थे जो उन्हें बैठकबाज राजनीतिज्ञ और वाणी-वीर समझते हैं। वे यही कल्पना किया करते कि पैरिस की रोलेण्ड महोदया की तरह आश्रय के कहीं उन्हें मास्को में भी मिल जायेंगे। मास्को के पिछले भाग पर, सड़क के किनारे के फ्लेटों में गृहिणियाँ उनका स्वागत करतीं। अपनी स्त्री-मित्रों के यहाँ जाकर वे उनकी तथा उनके पतियों की हल्की चुटकी लेते, मज़ाक करते। उनके पिछड़े हुए दृष्टिकोण के लिए उन्हें चिढ़ाते। एक समय जिस तरह उन्हें अपनी शंकायुक्त जिज्ञासामय विद्वत्ता पर गर्व था, उतना ही आज उन्हें समाचार पत्रों से घनिष्ठ रूप से परिचित होने पर गर्व था। कहा जाता है कि स्विटजरलैण्ड में वे एक अनिश्चित प्रेम-

काण्ड, एक व्यवसाय और एक आधी लिखी पुस्तक छोड़ आये हैं। मास्को में सिर्फ़ एक डुबकी लगाने के लिए वे चले आये। यहाँ से सुरक्षित बचे, तो उनका इरादा था कि आल्प्स पर्वत की ओर चल पड़ेंगे। वे बोलशेविकों के समर्थक थे। अक्सर उन दो वाम-पक्षीय सामाजिक क्रांतिकारियों का उल्लेख किया करते, जो कि पत्रकार थे और मिरोश्का पोमोर तथा सिल्विया कोटेरी के बनावटी नामों से लेख लिखा करते थे। उनके विचारों के साथ उनका मेल खाता था। वे अक्सर अपनी बातचीत के दौरान उनका उल्लेख किया करते थे।

यूरी के ससुर महाशय गरजते—बड़ी भयंकर बात है निकोलाय निकोलायविच! तुमने इन सब मिरोश्काओं और कटोरियों का कैसा कीचड़ जमा कर रखा है?

—कोटेरी सिल्विया!

—नाम से क्या फ़र्क़ पड़ जायेगा? चाहे वह कटोरी हो अथवा कोटेरी।

—फिर भी वह है कोटेरी ही। निकोलाय आग्रह करते।

बस, इसी तरह उनका विवाद चलता।

—अच्छा, हम किस विषय पर बहस कर रहे हैं? यदि इतना-सा मालूम हो जाय तो हमें बहुत शर्मिन्दा होना पड़ेगा। सोचने की बात यह है कि सदियों तक मनुष्य ने कठिन जीवन बिताया है—इतिहास इसका गवाह है। चाहे सामन्तशाही हो अथवा दासवृत्ति। पूँजीवाद हो अथवा उद्योगीकरण—यह अवस्था अन्यायपूर्ण तथा अस्वाभाविक ही मानी जायेगी। यह ध्रुव सत्य है कि संसार एक ऐसी उथल-पुथल से गुज़र रहा है, जिससे कि जनता को नई रोशनी मिलेगी। एक दिन सु-व्यवस्था अवश्य स्थापित होगी। यह तुम भली-भाँति जानते हो, कि पुराने ढाँचे से चिपके रहना व्यर्थ है। उसे जड़मूल से नष्ट करना ही होगा। सारी इमारत ढह जायेगी। और क्या होगा? सत्य चाहे कितना ही कड़ुवा और भयानक हो, उसके निश्चित परिणाम को टाला नहीं जा सकता। इसमें देर हो सकती है, फिर भी इसे अमान्य नहीं किया जा सकता।

—'यह बात नहीं है। मैं इस बारे में बात नहीं कर रहा था।' अलेक्जेण्डर उत्तेजित हो गये और बातचीत में गर्मी आ गयी।

—तुम्हारे पोरपोरी और मीरोशका बेतुके आदमी हैं। वे कहते कुछ हैं, और करते कुछ और। खैर, तुम्हारे तर्क कहाँ गये? नहीं, ठहरो। मैं तुम्हें एक चीज़ बताता हूँ।

इसके बाद वे मेज की दराजों को भड़भड़ा कर एक अख़बार निकाल लाते जिसमें परस्पर विरोधी कोई लेख होता।

अलेक्जेण्डर चाहते थे कि उनकी बातचीत के बीच कोई ऐसी चीज़ आ जाये जिससे कि उनकी भनभनाहट का औचित्य सिद्ध हो जाय।

जब भी वह अपनी किसी खोई हुई चीज़ को खोजते, कपड़े बदलने के कमरे में बर्फ़ के बूटों की तलाश करते, स्नानागार में तौलिया लिये खड़े रहते, भोजन परोसते अथवा मित्रों के गिलास में शराब ढालते—उन्हें बकवास करने का भयंकर दौरा आ जाता। यूरी को उनकी यह बातचीत बड़ी अच्छी लगती। वह उनके 'ग्रोमेको' गीत की गुनगुनाहट की बड़ी तारीफ़ किया करता था। अलेक्जेण्डरोविच के होठों पर, गले की तितली-टाई की तरह मूँछें निकली हुई थीं। इन दोनों की समानता उनकी उम्र के बावजूद उन्हें लड़कपन का विश्वस्त रूप प्रदान कर रही थीं।

दावत की रात को शूरा स्किलसिंगर देर से पहुँची। पुरुषों की टोपी और पूरा सूट पहने, कमरे को पार करके, शिकायतों और दोषारोपणों की बौछार के साथ वह वहाँ उपस्थित हो गयी। सबसे हाथ मिलाते हुए वह पूछती जाती—टोन्या कैसी हो?, कैसे हो अलेक्जेण्डर?, मानोगे, यह ठीक नहीं हुआ है। सारे मास्को को मालूम हो गया है कि यूरी वापस लौट आया और टोन्या, तुमने मुझे बताया तक नहीं?, शायद मैं इस लायक हूँ ही नहीं। कहाँ है यूरी?, अच्छा, आप कैसे हैं जी?, मैंने यह पढ़ लिया है। विचित्र है। इस लेख की कोई बात समझ में नहीं आती। फिर भी आसानी से कहा जा सकता है कि इसमें असीम प्रतिभा समाई हुई है। कैसे हो निकोलाय? ठीक हो न! यूरी, मुझे तुमसे कुछ खास

बात करनी है। फिर मिलूँगी। अरे बच्चों, तुम यहाँ भी हो। बहुत अच्छे। गोगोचका, गूसी-गूसी-गेण्डर! खाना-पीना चल रहा है? चलने दो। मैं भी तुम लोगों के साथ ही आने वाली हूँ? अब तक तुम लोगों को मालूम ही नहीं हुआ होगा कि इस दावत में किस चीज़ की कमी है? तुम कुछ नहीं जानते कि संसार में क्या कुछ हो रहा है? किताबों में नहीं, असली मजदूरों को, असली सिपाहियों की सामूहिक सभा को देखो। उनसे लड़ाई में विजय पाने के लिए कहो। और वे विजय प्राप्त कर लेंगे। यूरी, तुम देखते तो पागल हो गये होते। कितनी उत्तेजना! कितनी एकनिष्ठा।'

कोलाहल के कारण शूरा की बातचीत में व्यवधान पड़ने लगा था। वह ज़िवागो के पास आई, उसके पास अपना मुँह ले जाकर उसने उसका हाथ अपने दोनों हाथों में थाम लिया। 'मैं तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगी। असली लोगों को मैं तुम्हें दिखाऊँगी। ऐन्थ्यूस की तरह तुम्हें मिट्टी का सान्निध्य प्राप्त करना चाहिए। तुम मेरी ओर इस तरह घूर-घूर कर क्यों देख रहे हो? मैं वही पुरानी बूढ़ी शूरा हूँ। तुम्हें मालूम है यूरा, पुराने वेस्टजेब विद्यालय में मैंने पूरा जेल देखा है। मैंने कई बाधाओं का सामना किया है। तुम्हारा क्या खयाल है? सच बताना, तुम क्या सोचते हो? सचमुच हम इन लोगों को जानते ही नहीं। मैं अभी-अभी वहीं से आ रही हूँ। मैं उनकी भीड़भाड़ में बिलकुल ठीक थी। उन लोगों के लिए मैं एक पुस्तकालय की स्थापना कर रही हूँ।'

वह शराब के नशे में धुत्त थी। यूरा का सिर भी चक्कर खा रहा था। उसकी समझ में नहीं आया कि शूरा कब कमरे के एक कोने में, और वह दूसरे कोने में चला गया। वह एक टेबल के किनारे खड़ा अप्रत्याशित रूप से भाषण देने लगा, मानो अपने आपसे कह रहा हो। चुप होने में उसे काफी समय लगा। 'भद्र पुरुषो और देवियो...मैं चाहता हूँ...मिशा, गोगोच्का, टोन्या...मैं क्या करूँ? कोई नहीं सुनेगा। मुझे कुछ कह लेने दो।...हमारे हाथ से निकल जाय, इससे पहले हम उस चीज़ को देख

लेना चाहते हैं, जिसके बारे में हमने कभी कुछ सुना नहीं, जिस पर हमारा विश्वास नहीं। जब यह होगा, मैं चाहता हूँ कि यह हो, भगवान करे ऐसा मौका अवश्य आये और हमारे होश-हवाश दुरुस्त रहें। हमारी आत्मा हमारा साथ न छोड़ दे। गोगोच्का, अभी से तालियाँ मत बजाओ। बाद में भी इस खुशी को मना सकोगे। मेरा बोलना अभी तक खत्म नहीं हुआ है। यहाँ आओ, सुनो। तीन वर्षों के बाद, लोगों ने संकल्प लिया है कि अगले और पिछले वर्ग की असमानता शीघ्र समाप्त कर दी जाय। इसके बाद रक्त का समुद्र अपनी सहस्र भुजाओं के साथ उन सबको अपने में समाहित कर लेगा जो युद्ध से बच गये हैं। यह बाढ़ ही क्रांति होगी। हमें, जब हम सेना में थे, तभी यह महसूस हुआ था, और जब यह होगा तब आप सबको भी मालूम होगा कि जैसे जीवन स्थिर हो गया हो। कोई चीज़ व्यक्तिगत न रह गयी हो। जब इस समय की स्मृतियों का इतिहास लिखा जाएगा, यदि उस समय तक हम जीवित रह सके तो हमें मालूम होगा कि, संसार में अन्यत्र जो अनुभव शताब्दियों में हासिल नहीं हो सका, वह हमें 5 या 10 साल में ही मिल गया। ठीक से मुझे नहीं मालूम कि जनता स्वयं ज्वार सी उमड़ती हुई आगे बढ़ेगी अथवा क्रांति के नाम पर ऐसा किया जायेगा। इतनी बड़ी घटना के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होगी। हम उस पर विश्वास कर लेंगे। इन दानवीय घटनाओं का विश्लेषण करना छोटे मुँह बड़ी बात होगी। वास्तव में इसके लिए उनके पास कोई कारण नहीं है। इसकी शुरूआत होती है—पारिवारिक कलह से। उसके बाद एक दूसरे के बाल नोचे जाते हैं, बर्तन तोड़-फोड़ दिये जाते हैं, इतना सब हो जाने के बाद में सोचा जाता है कि शुरूआत किसने की? गलती किसकी थी? लेकिन वास्तव में जो सचमुच में बहुत बड़ी चीज़ है, वह बिना कार्य-कारण की ही है; जैसे इस सृष्टि का आरंभ! इसी तरह यह, इस तरह, अचानक हमारे सामने आ उपस्थित होती है, जैसे यह हमेशा यहाँ मौजूद रही हो अथवा आसमान से टपक पड़ी हो।

मेरा निश्चित मत है कि रूस ही संसार का प्रथम समाजवादी देश होगा। जब ऐसा होगा तो एकबारगी हम हतप्रभ-से हो जायेंगे। जब हम होश में आयेंगे तब भी हम अर्द्ध-चेतनावस्था में ही होंगे। हमारी आधी स्मृति चली जायेगी। हमें याद ही नहीं आयेगा कि पहले क्या हुआ, और बाद में क्या हुआ? उन अनिर्वचनीय कारणों की खोज करने की ज़रूरत ही नहीं होगी। जिस प्रकार अन्तरिक्ष तक फैले हुए वन और ऊपर फैले हुए आसमान से हम परिचित हैं, इसी तरह हम उससे परिचित हो जायेंगे।'—ज़िवागो कुछ और भी कहता रहा। थोड़ी देर बाद वह शान्त हो गया। जब वह एक ओर बैठ गया तो वह नहीं सुन सका कि उसे क्या कहा जा रहा है, और वह उन प्रश्नों का क्या अंटसंट जवाब दे रहा है। उसे मालूम था कि उपस्थित लोगों का उसके प्रति असीम प्यार है। लेकिन उसे स्वयं को घनीभूत दुख का भार महसूस हो रहा था। उसने कहा—आप सबको धन्यवाद! बहुत-बहुत शुक्रिया! मैं आपकी भावनाओं के प्रति कृतज्ञ हूँ। मैं इसके योग्य नहीं हूँ। मेरे प्रति इतना अधिक प्रेम ज़ाहिर करने की जल्दबाजी मत कीजिए। आपके इस प्रेम के विशाल आकार में मुझे आपके भविष्य के प्रेम की नींव दिखाई दे रही है।

सब लोगों ने हँसी के मध्य तालियाँ बजाईं। सबने इसे विनोदमय चुस्त संभाषण माना था। ज़िवागो खुद नहीं जानता था कि वह क्या कह रहा है और उसने कितनी आसानी से कितने भीषण अभाग्य की भविष्यवाणी कर दी है। भविष्य चाहे कितना ही सुनहला और गौरवमय क्यों न हो, चाहे उसमें अच्छाई की अगाध तृष्णा को तृप्त करने की कितनी ही क्षमता क्यों न हो, वह शक्तिहीनता की भावना से आच्छादित था। अतिथि विदा हो गये। उनके जाते ही पर्दे गिरा दिये गये। खिड़कियाँ खोल दी गयीं। उषाकाल के बादल पीले पड़ने लगे थे। किसी की आवाज़ सुनाई दी—हम यहाँ मजाक करते रहे और उधर तूफान के आसार नजर आ रहे हैं!

शूरा ने हाँ भरी—मैं भी वर्षा में बुरी तरह फँस गयी थी।

बगलवाली सुनसान सड़क पर अभी भी अन्धकार था। पेड़ों से पानी की बूँदों के टपकने का स्वर चिड़ियों की चरचराहट में तब्दील हो गया। बादल ऐसे कड़के, मानो आसमान में सीधा हल खींच दिया गया हो। इसके बाद निःस्तब्धता छा गयी। जैसे पतझड़ की ऋतु में अधिक पक जाने पर जमीन से आलू निकाले जाते हैं, ठीक उसी तरह चार धमाके हुए। धूल और धुएँ भरे इस धड़ाके ने कमरे में स्थान बना लिया। जीवन के प्रमुख तत्त्व, बिजली के प्रकाश की तरह स्पर्श्य सिद्ध हो गये। भूमि, आसमान, वायु, जल और प्रसन्नता के लिए आवश्यक तत्त्व! अभी भी सामने की सड़क पर विदा हुए अतिथियों की आवाज़ गूँज रही थी। जिस प्रकार बहस करते हुए वे घर में शोर मचा रहे थे उसी तरह उनकी आवाज़ सड़क पर भी सुनाई दे रही थी। धीरे-धीरे यह ध्वनि क्षीणकाय होते-होते लुप्त हो गयी। —दुनियाँ में जिन लोगों को मैं एकान्त रूप से प्रेम करता हूँ—वह एक तुम हो टोन्या और दूसरे पिताजी!

—कितनी देर हो गयी है, चलो सो जाएँ।

पाँच

अगस्त बीत चुका था। सितम्बर समाप्तप्रायः था। सम्प्रति मौसम की समाप्ति के साथ इस मृत्युलोक की हवा कठोर और भारी हो गयी थी। जाड़ा सब लोगों की चर्चा का विषय था। खाने और जलाने का सामान जमा किया जाने लगा था। भौतिकवाद की विजय के उन दिनों में पदार्थ स्वयं बेतुकी सनक का विषय बन गया था। भरणपोषण की सामग्री और ईंधन की समस्या की चर्चा इन दोनों चीज़ों की वास्तविक आवश्यकता से अधिक महत्त्वपूर्ण हो गयी थी। शहर के तमाम लोग ऐसे असहाय हो गये थे मानो किसी नन्हे बालक को एकाएक किसी ऐसी अज्ञात शक्ति के सामने खड़ा कर दिया गया हो, जिसने अब तक के तमाम ज्ञात प्रयोगों को झाड़पोंछ कर उनकी स्मृति से निकाल दिया हो; और रह गया हो सिर्फ़ उजड़ा हुआ वीरान जंगल। फिर भी दैनिक जीवन के संघर्ष में इस बारे में बातचीत करते हुए लोग अपने आपको छलते हुए, पता

नहीं, किस अज्ञात उद्देश्य की ओर लड़खड़ाते हुए बढ़ते जा रहे थे। मगर ज़िवागो को स्थिति अपने सही रूप में दिखाई दे रही थी। वह जानता था कि सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो चुका है, कठिन परीक्षा का परिणाम था, मृत्यु-दण्ड और यह सजा सबको भुगतनी होगी। शेष बचे दिन आसानी से अंगुलियों पर गिने जा सकते हैं। और ये दिन तेजी के साथ भागे चले जा रहे हैं। अपने निजी जीवन के विवरण, काम, दिक्कतें, पत्नी, बच्चा, कमाने की ज़रूरत और दैनिक कार्यविधि द्वारा ही उसकी मुक्ति संभव थी, और इन्हीं सब के कारण वह बचा हुआ था। भविष्य के इस विराट स्वरूप के सामने वह बहुत ही लघु सिद्ध हो रहा था। इस आगत भविष्य के प्रति उसे प्यार भरा गर्व था और डर भी। जैसे वह सबसे विदा ले रहा हो, महान रूस के, मुसीबतों से निरन्तर संघर्ष कर रहे रास्ते चलते लोग, वृक्ष और चारों ओर छाया हुआ आसमान उसकी नजरों के सामने अपनी समस्त करुणा के साथ गुजर जाता। इस स्थिति के परिष्कार के लिए वह सब कुछ करने को तैयार था, लेकिन वह कर ही क्या सकता था?

वह अस्पताल में वापस काम करने लगा था। अभी भी इसे 'हॉली क्रास' का अस्पताल ही कहा जाता था। यद्यपि इस नाम से सम्बद्ध सब बातें अदृश्य हो गयी थीं। फिर भी यह नाम इसीलिए बना रहा, क्योंकि इसके लिए किसी को दूसरा नाम सूझा ही नहीं। हास्पिटल के कर्मचारी विभिन्न कैम्पों में विभक्त हो गये थे। वहाँ के मध्यवर्गीय मन्दबुद्धि लोगों से वह परेशान हो उठता और वे भी उसे खतरनाक मानते। जो लोग राजनीति में आगे बढ़ गये थे, वे उसे पर्याप्त रूप से 'लाल' मानने को राजी नहीं थे। नतीजा यह हुआ कि वह वहाँ किसी को खुश नहीं कर सका। अपने साधारण कार्यों के अलावा आँकड़ा-संकलन विभाग का कार्यभार भी डायरेक्टर ने उसे सौंप दिया था। प्रश्नावलियों के अन्तहीन फार्म उसके हाथ से गुज़र चुके थे। मृत्यु, बीमारी और कर्मचारियों की कमाई का औसत निकालना था। साथ ही लोगों की राजनीतिक जागरूकता का स्वर, उनका चुनाव में योग, निरन्तर कम हो रहे ईंधन,

अनाज और औषधि के ब्योरे के साथ परीक्षण का विवरण भी उसे भेजना था। कर्मचारी-कक्ष में खिड़की के समीपवाली पुरानी टेबल पर बैठा ज़िवागो काम कर रहा था। अनेक आकार-प्रकार के नक्शे और फार्मों की टेबल पर भीड़ लगी हुई थी। सबको एक ओर सरकाकर वह बैठ गया। कभी-कभी वह कुछ क्षणों के लिए तसल्ली के साथ सोचना चाहता था, अपने मेडिकल नोट्स के बारे में ही नहीं, बल्कि अतीत की पुरानी डायरी के बारे में भी, जिसमें गद्य, पद्य और जो भी दिमाग में आया, लिखा हुआ था। और प्रत्येक बात उसके अपने रंग में रंगी हुई थी कि संसार का गति-चक्र रुक गया है और खुदा जाने, अब आगे क्या होने वाला है। सुनहले पतझड़ के दिनों के पीतवर्ण सूर्य की रोशनी से कमरा भर-सा गया। उषाकाल में जब पहली बार पाला पड़ता है, और जब शीत ऋतु के पक्षी और नीलकंठ, चमकदार पत्तों में विहार करते हैं—इसके बाद ही कल्पना अंगड़ाई लेती है कि आकाश अधिकाधिक ऊँचा उठने लगता है कि आकाश और धरती के बीच एक पतली, धुंधली, नीली बर्फ़ीली लकीर पारदर्शक वायु को चीरंती हुई चली जाती है! तब, संसार में सभी कुछ प्रत्यक्ष हो कर प्रस्तुत हो जाता है। बहुत दूर से जमी हुई और गुँजार करती हुई आवाज़ सारे शहर में इस तरह पसर गयी थी मानो आगामी वर्षों की पूरी ज़िन्दगी खुल कर फैल गयी हो। पतझड़ के छोटे दिनों की सन्ध्या की तरह यदि यह अल्पजीवी न होती तो सम्भवत: इसे मान्य करना मुश्किल होता। प्राथमिक पतझड़ के सूर्यास्त का रसीला और चमकदार प्रकाश कर्मचारी-कक्ष में फैला हुआ था। वह अपनी टेबल पर सोचने की मुद्रा में बैठा था। कर्मचारी-कक्ष के ऊपरी भाग से चिड़ियाँ उसके हाथ पर अपनी प्रतिच्छाया डालती हुई उड़ जातीं। इसी समय रसायनशास्त्र का प्रदर्शक वहाँ चला आया। वह एक हट्टा-कट्टा आदमी था, लेकिन अब उसका वज़न इतना कम हो गया था कि उसकी चमड़ी की सिकुड़नें स्पष्ट दिखाई देने लगी थीं। उसने कहा—वृक्षों की तमाम पत्तियाँ गिर चुकी हैं। सोचने की बात यह है कि इतनी तेज हवा और बारिश वे कैसे बर्दाश्त करती रही थीं? और आज के पाले ने यह

काम इतनी आसानी से कर कैसे डाला? यूरी ने नजर उठा कर ऊपर देखा। खिड़की के पास से जो रहस्यमय पक्षी अब तक उड़ रहे थे वे वास्तव में उन वृक्षों के पत्ते थे। वृक्षों से पतित होकर कुछ देर तक तो वे उसी ऊँचाई में उड़ते रहते, उसके बाद टूटे हुए सितारे की तरह दूर मैदान में जाकर गिर पड़ते।

—खिड़कियों में सीमेंट लगा दी है क्या?

ज़िवागो लिखते हुए बोला—अभी तक नहीं।

—अब तक तो लग जानी चाहिए थी।

रासायनिक साहब कहते गये—तारास्यूक चला गया। लाख रुपये का आदमी था। घड़ी सुधारने से लगाकर जूते सीने तक का सारा काम कर लेता। कोई भी चीज़ चाहिए, वह कहीं न कहीं से लाकर हाजिर कर ही देता। अब इन खिड़कियों में हमें ही सीमेंट लगानी पड़ेगी।

—सीमेंट है ही नहीं।

—हम बना लेंगे। मैं नुस्खा बताता हूँ।

इसके बाद वह समझाने लगा कि किस तरह चाक में तेल मिलाकर सीमेंट बनाई जा सकती है। 'शायद तुम अपना काम करना चाहते हो। मैं चलता हूँ,' कहते हुए वह दूसरी खिड़की के पास चला गया। वहाँ रखी बोतलों और दवाओं के कुछ नमूनों को ग़ौर से देखते हुए उसने कहा—इस तरह तो आँखें खराब हो जायेंगी। अन्धेरा हो रहा है और रोशनी मिलती नहीं। चलो, घर चलें।

—दस-पन्द्रह मिनट तक मैं थोड़ा और काम करूँगा।

—उसकी स्त्री यहीं नौकरी करती है।

—किसकी?

—तारास्यूक की।

—मुझे मालूम है।

—किसी को नहीं मालूम कि वह स्वयं कहाँ है? वह सारे देश में फिरता रहता है। पिछली ग्रीष्म ऋतु में दो बार वह अपनी पत्नी से मिलने आया था। फिर चला गया। अब नये सिरे से ज़िन्दगी शुरू कर दी है उसने। वह उन बोलशेविक सिपाहियों में शामिल हो गया है जो आजकल सभी जगह दिखाई पड़ते हैं। उनके बारे में बताऊँ कुछ? उदाहरण के लिए तारास्यूक को ही ले लो। वह किसी भी चीज़ पर अपना हाथ आजमा सकता है। जिस काम को भी वह हाथ में लेता है उत्तम तरीके से करता है। जिस तरह उसने दूसरे काम सीखे, सेना में भी उसने मन लगा कर लड़ना सीखा—पक्का निशानेबाज साबित हुआ। उसके चेहरे के रंग का सामंजस्य हाथ और आँखों से कितना होता है? वह है सुन्दर! पक्का धुनी। जिस किसी काम को हाथ में लेता है, उसके पीछे पड़ जाता है। उसे यह मालूम हो गया है कि बन्दूक आदमी के लिए क्या कर सकती है? वह जानता है कि यह उसे विशिष्टता देती है, शक्ति देती है। यही वह चाहता था; कि वह अपने आप में एक ताकत सिद्ध हो सके। पुराने दिनों में ऐसे लोग डाकू हो जाया करते थे। तारास्यूक की बन्दूक उससे छीन लो, और फिर देखो? हाँ, तो फिर नारे लगे—'अपने मालिकों की ओर बन्दूकें तान दो।' और तारास्यूक ने वैसा ही किया। कहानी यहाँ आकर खत्म हो जाती है। यही तो मार्क्सवाद है, जीवन की यही सही पद्धति है। मालूम है न तुम्हें?

वह प्रयोग करने वाली नलियों के पास चला गया।

—वह स्टोव सुधारने वाला कैसा रहा?

—बड़ा दिलचस्प आदमी था। उसके साथ 'हेगल' और 'क्रास' की बहुत सी बातें हुईं। उसे भेजने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं तुम्हारा आभारी हूँ।

—हेडलबर्ग में उसने दर्शनशास्त्र में डाक्टरेट प्राप्त की थी।

—स्टोव की क्या हालत है? अभी भी धुआँ देता है?

—बहुत अच्छी नहीं। धुआँ बन्द ही नहीं होता।

—शायद उसने चिमनी ठीक-से नहीं लगाई होगी। पाइप को धुआँकश से निकालने के बजाय उसने खिड़की के रास्ते से निकाला होगा।

—नहीं, पाइप तो धुआँकश से ही निकाला गया है। मगर फिर भी धुआँ आता है।

—तब उसे ठीक से हवा का रास्ता नहीं मिल रहा होगा। इस समय तारास्यूक होता तो काम आता। खैर, आखिर वह लौट ही आयेगा। मास्को एक ही दिन में नहीं बन गया था। स्टोव को ठीक कर लेना पियानो बजाने की तरह आसान थोड़े ही है। अच्छा तुमने तो ईंधन जमा कर लिया होगा?

—मिलता ही कहाँ है?

—अच्छी बात है। मैं तुम्हारे पास चर्च का कुली भेज दूँगा। पक्का ईंधन-चोर है। बाड़ की लकड़ी तोड़कर उसके कोयले बना लेता है। मगर उसके साथ सौदा करना पड़ेगा। पक्का चूहे पकड़ने वाला है।

नीचे के कपड़े बदलने के कमरे में जाकर कोट रख कर वे बाहर निकल आये।

—चूहा पकड़ने वाला? लेकिन हमारे यहाँ चूहे कहाँ हैं?

—मेरा मतलब यह नहीं। मैं कह रहा था ईंधन के बारे में। चूहा पकड़ने वाली तो एक बुड्ढी औरत है। बड़ा सुव्यवस्थित व्यापार करती है वह ईंधन का। ईंधन के लिए वह मकान खरीद लेती है।

—अन्धेरा है। संभल कर चलना। पुराने जमाने में तो मैं आँखों पर पट्टी बाँध कर भी तुम्हें इस शहर में घुमा ला सकता था। मैं यहीं पैदा हुआ हूँ, यहाँ की चप्पाचप्पा भूमि से मैं परिचित हूँ। लेकिन जब से इन लोगों ने बाड़ तोड़नी शुरू कर दी है, मेरे लिए दिन में भी अपना रास्ता ढूँढ़ निकालना मुश्किल हो गया है। मानो किसी अपरिचित विचित्र शहर में रह रहा हूँ। सामने का वह छोटा शाही मकान कभी दिखाई ही नहीं देता था। गोल हरे टेबल और बाग वाली कुर्सियाँ अभी भी वहाँ पड़ी सड़ रही

हैं। बाहर जो घेरा था वह गायब हो गया। उस दिन ऐसी ही एक जगह से गुजर रहा था, मैंने वहाँ एक बुढ़िया को अपनी लाठी से कुछ कुरेदते हुए देखा। उसकी उम्र सौ साल से कम नहीं होगी। मैंने कहा—दादी, मछली मारने के लिए कीड़े ढूँढ़ रही हो क्या? मैं तो मजाक कर रहा था। लेकिन उसने गंभीर स्वर में जवाब दिया—'कीड़े नहीं, कुकुरमुत्ते ढूँढ़ रही हूँ!' सच, यह सारा शहर जंगल हो गया है। चारों ओर सड़े हुए पत्तों और कुकुरमुत्तों की दुर्गन्ध उड़ती रहती है।

—मुझे मालूम है तुम किस जगह की बात कह रहे हो? सिल्वर स्ट्रीट और साइलेंट स्ट्रीट के बीच के रास्ते की न? मेरे साथ वहाँ कुछ न कुछ अनहोनी बात होती ही है। किसी न किसी नई चीज़ के दर्शन हो जाते हैं। जिस व्यक्ति से पिछले बीस वर्षों से मुलाकात नहीं हुई, वह भी वहाँ मिल जाता है। लोग कहते हैं कि यह जगह खतरनाक है। कोई ताज्जुब नहीं, पीछे एक खरगोशों का बाड़ा है, उसके पास से स्मालेस्काय के नजदीक से संकरी गलियाँ चोरों के अड्डे की ओर चली गयी हैं। इससे पहले कि तुम संभल सको, कोड़ों से वे तुम्हारी चमड़ी उधेड़ डालें। और इन सड़क की बत्तियों को देखो, मुश्किल से रोशनी दे रही हैं। ध्यान रखना, कहीं गिर न पड़ो।

छः

सिल्वर स्ट्रीट को पार करने वाली गली में अनेक प्रकार की घटनाएँ ज़िवागो के साथ घटित हुईं। अक्टूबर-युद्ध के कुछ ही दिनों बाद, एक ठंडी अन्धकारपूर्ण रात्रि में, वहाँ उसे एक आदमी मूर्च्छित अवस्था में पड़ा मिला। फुटपाथ के एक किनारे पड़े उस आदमी के हाथ-पाँव फैले हुए थे और उसका सिर बत्ती के खम्भे के पास लटका हुआ था। ज़िवागो ने झकझोर कर उसे जगाने की कोशिश की, तो उसके मुँह से बड़बड़ाहट के अस्पष्ट से कुछ शब्द निकले। हमला करके उसे लूट लिया गया था। उसके सिर पर चोट आई थी, पर ज़िवागो ने देखा कि उसकी कोई हड्डी टूटी नहीं है। पास की दवाओं की एक दूकान से उसने अस्पताल को

फोन किया और आकस्मिक अवसरों पर काम में लाई जाने वाली गाड़ी मंगवाई। मरीज को लेकर वह एमरजेंसी वार्ड में ले गया। बाद में मालूम हुआ कि वह एक सुप्रतिष्ठित राजनीतिक नेता है। अनेक प्रकार की गलतफहमियों और संदेहों का शिकार होने पर, इसी व्यक्ति ने कई वर्षों बाद ज़िवागो की रक्षा की थी।

सात

टोन्या की योजना के अनुसार शीतकाल में सारा परिवार ऊपर की मंजिल के तीन कमरों में व्यवस्थित हो गया। उस दिन रविवार था। ज़िवागो छुट्टी पर था। हवा ठंडी थी; और बर्फ़ के बादलों के कारण अन्धकार छाया हुआ था। सुबह से ही आग जलाई गयी थी और स्टोव से निरन्तर धुआँ निकल रहा था। नूशा सीलभरी लकड़ियों को जलाने का अथक परिश्रम कर रही थी। टोन्या स्टोव के बारे में कुछ न जानते हुए भी उसे बहुत सारी उल्टी-सीधी हिदायतें दे रही थी। चूँकि ज़िवागो इस बारे में कुछ बता सकता था, इसलिए सहायता करने के लिहाज से जब वह आगे आया, तो टोन्या ने उसके कन्धे पकड़ कर जबर्दस्ती घटनास्थल से हटाते हुए कहा—आप यहाँ पंचायत मत कीजिए। इससे काम और अधिक बढ़ जाएगा। आग पर तेल मत छिड़किए।

—तेल तो ठीक है। मगर मुसीबत यह है कि यहाँ न आग है, न तेल!

—यह कोई मजाक करने का वक़्त है?

इस स्टोव की गड़बड़ी के कारण आज की सारी योजनाएँ खट्टी पड़ गयीं। खयाल यह था कि मुँह-अन्धेरे तमाम काम खत्म कर लिया जायगा और दोपहर तक वे बिलकुल खाली हो जायेंगे। लेकिन अब तो भोजन का ही ठिकाना नहीं है। अभी तक टोन्या ने अपने बाल भी नहीं धोये थे। धुआँ और अधिक निकलने लगा। तेज हवा के कारण धुएँ से चिमनी उड़ गयी, और सारे कमरे में धुएँ का कालिखभरा बादल जंगल के राक्षस की तरह विकराल रूप में छा गया। अंत में ज़िवागो ने सबको वहाँ से भगा दिया। आधी लकड़ियाँ बाहर निकालीं। लकड़ी के छिलके डाले। खिड़की खोल

दी। हवा अन्दर घुस आई। पर्दे हिले, ऊपर उठे, मेज के कागज उड़ गये। दरवाजा भड़ाम से बन्द हो गया। धुआँ बाहर निकलने लगा। हवा बचे हुए धुएँ के साथ चूहे-बिल्ली का खेल खेलती रही।

लकड़ियाँ चटकती हुई जलने लगीं। आग की लपटें निकलने लगीं। कमरे की हवा साफ़ हो गयी। कमरे में रोशनी फैल गयी। पिछले दिनों रसायन विभाग के प्रदर्शक ने जो नुस्खा बताया था उस तरह की सीमेंट बना कर उसने उसका इस्तेमाल किया। देवदार की छाल की गर्म गन्ध, और चंदन की सुगन्ध की तरह स्टोव से सूखकर जलती हुई लकड़ियों की गन्ध आने लगी। इसी समय ठीक निर्भीक हवा की तरह निकोलाय निकोलायविच वहाँ आ उपस्थित हुए। बोले—सड़क पर लड़ाई हो रही है। अस्थाई सरकार के लिए नौसिखिये सैनिक, बोलशेविकों की सहायता में दुर्ग-रक्षक सैनिकों के साथ लड़ रहे हैं। जम कर भिड़न्त हो रही है। विप्लव के इन सूत्रों को गिना नहीं जा सकता। आते वक़्त मैं भी फंस गया था। पहली बार ड्रिमिट्रोवका के कोने में और बाद में निकित्सी गेट पर। सीधे आना-जाना मुश्किल हो गया है। घूम कर आना पड़ता है। कोट पहनो और बाहर आओ यूरा, देखो, यह इतिहास है। जीवन में एक बार ही इसे देखने का मौका मिल सकता है।

खाना खाने तक वे इसी तरह घण्टों बोलते रहे। अंत में यूरी ने एक तरह से जबर्दस्ती उन्हें खींच कर बाहर निकाला। इसी समय गोर्डन ऐसे ही समाचारों के साथ अन्दर आ गया। गोर्डन ने बताया कि किस तरह बन्दूकों की गोलियों की बाढ़ आ गयी है, और किस तरह राहगीर डर के मारे बिखर गये हैं। यातायात बन्द हो गया है। बड़े भाग्य से वह किसी तरह बच कर आ सका है। पहले तो निकोलाय ने उसकी बातों पर विश्वास ही नहीं किया; लेकिन बाहर झाँक कर, जब से वापस लौटे, तो बोले—गोलियों की तेज आवाज़ आ रही है। ईंट और पलस्तर के टुकड़े टूट-टूट कर गिर रहे हैं। बाहर कहीं कोई जीवन दिखाई नहीं देता। सचमुच सारा यातायात बन्द हो गया है।

उसी हफ्ते साशा को सर्दी लग गयी थी। ज़िवागो ने कहा—'मैंने एक बार नहीं, बीस दफे कहा है कि उसे स्टोव के पास मत जाने दो। सर्दी के बजाय गर्मी उसके लिए अधिक घातक है।' उसके गले में पीड़ा थी, शरीर तप रहा था, डर था, कहीं अधिक बीमार न हो जाय। डॉक्टर ने उसका परीक्षण करना चाहा तो बालक विरोध करता रहा, उसने दाँत भींच लिये, चिल्लाया। समझाने, बहलाने और धमकाने का उस पर कोई असर नहीं हुआ। एक बार भूल से उसका मुँह खुल गया और डाक्टर ने इस मौके से लाभ उठा कर चाय का चम्मच उसके मुँह में रख दिया। हलक में सूजे हुए टान्सिल के सफेद धब्बे साफ दिखाई दे रहे थे। इन धब्बों को देख कर एक बारगी वह चिन्तित हो उठा। उसने अच्छी तरह से परीक्षण किया। सौभाग्य से यह डिप्थेरिया नहीं था। लेकिन तीसरी रात को साशा तीव्र कंठ-पीड़ा से व्याकुल हो उठा। वह साँस नहीं ले पा रहा था, बुख़ार भी काफी था। बच्चे का इस तरह तड़पना ज़िवागो बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था, न ही उसके पास इसके निवारण का ही कोई उपाय था। दूध की सख्त ज़रूरत थी। लेकिन सड़क पर जोरदार लड़ाई चल रही थी। बन्दूक अथवा तोपों की गड़गड़ाहट एक मिनट के लिए भी थम नहीं पाती थी। जान की बाजी लगा कर, यदि वह किसी तरह सड़क पार कर भी लेता, तो भी उसे कहीं दूध नहीं मिल पाता। जब तक स्थिति काबू में नहीं आ जाती, जब तक उसका कोई निश्चित परिणाम सामने नहीं आ जाता, शहर का सारा जीवन मृतप्राय: था।

फिर भी परिणाम स्पष्ट था। अफ़वाह यह थी कि मजदूर बाजी जीत रहे हैं। यद्यपि नौसिखिये सैनिक लड़ाई लड़ रहे थे; मगर तितर-बितर हो चुके थे। स्विटसेव जिले पर सेना की टुकड़ी का अधिकार हो गया था और केन्द्र की ओर उनका जोर बढ़ता जा रहा था। जर्मन-सीमा वाली टुकड़ी तथा काम करने वाले जवानों का दल, सड़क पर खुदी हुई खाइयों के मोर्चे पर डटे हुए थे। वे सड़क के किनारे रहने वाले उन लोगों की ओर ताक रहे थे जो कि अपने घर के सामने, उनके खड़े होने पर उनकी मजाक उड़ाया करते थे। शहर के इस भाग में कुछ हलचल आरम्भ हो रही थी।

तीन दिन तक ज़िवागो के घर में एक तरह से बन्दी रहने के बाद गोर्डन और निकोलाय निकोलायविच को मुक्ति मिली थी। साशा की बीमारी के समय उनकी उपस्थिति से ज़िवागो को काफी तसल्ली मिली। यद्यपि टोन्या का काम उनके कारण बहुत अधिक बढ़ गया था, फिर भी उसने इस ओर ध्यान नहीं दिया। गृहस्वामिनी के इस सौजन्यपूर्ण व्यवहार के प्रति कृतज्ञता बताने के लिए, उन्हें खुश करने के लिहाज से वे कुछ न कुछ विनोदी बातें करते ही रहे। ज़िवागो अब तंग आ गया था और चाहता था कि वे चले जाएँ।

आठ

अतिथियों के कुशलपूर्वक घर पहुँचने का समाचार उन्हें मिल गया था। परन्तु अभी तक यह नहीं कहा जा सकता था कि शहर में शान्ति कब स्थापित होगी। लड़ाई अभी भी जारी थी और कई जिलों और प्रान्तों का यातायात अवरुद्ध था। यूरी अस्पताल जा नहीं सकता था और अपने मेडिकल नोट्स तथा डायरी वहीं, अस्पताल में छोड़ आया था।

केवल अपने पड़ोस के आसपास तक जाकर लोग रोटी खरीद लाया करते। किसी भाग्यवान को हाथ में दूध की बोतल ले जाते देखते, तो पूछ लेते कि उसे यह कहाँ से प्राप्त हुआ है? बीच-बीच में गोलाबारी की आवाज़ सुनाई देती रहती! विश्वास किया जाता था कि उभय-पक्ष में समझौता हो रहा है। गोलाबारी के खत्म होने अथवा बढ़ जाने से लोग समझौते की सफलता अथवा असफलता का अन्दाज लगा रहे थे। बीते हुए अक्टूबर की एक संध्या को यूरी, बिना किसी खास आवश्यकता के, अपने एक सहकर्मी से मिलने के लिए चल पड़ा। वह तेजी से जा रहा था। सड़क सुनसान थी। कहीं कोई मिला नहीं! वायु के झोंकों के साथ शिशिर ऋतु का प्राथमिक पाला पड़ने लगा था। पता नहीं कितनी सड़कें वह पार कर गया। बर्फ़ीली हवा ने तूफान का रूप धारण कर लिया। जैसे रास्ता भूल गया हो, तूफान इधर-उधर भटक रहा था। उसके इस तरह अनिश्चित रूप से भटकने से लोगों की अक्ल

मानो हैरान थी। भौतिक घटनाओं और नैतिक संसार में, नजदीक दूर की बाधाओं के बावजूद भी, धरती की हलचलों की, पृथ्वी और आसमान के बीच समानता मौजूद थी। खंडित द्वीपों की तरह बौछार पड़ रही थी। जमीन पर मानो बुझी हुई आग के बुलबुले उठते और अन्तरिक्ष में जाकर फूट पड़ते। हवा में बर्फ़ के धुएँदार बुलबुले उठते; यूरी को लगा कि पैरों के नीचे के गीले पत्थरों में से भाप निकल रही है! सामने से एक लड़का ताजे अख़बार लिये भागता हुआ चिल्ला रहा था—ताजी ख़बर। ताजे समाचार।

लड़के ने ज़िवागो के कथनानुसार रेजगारी अपने पास ही रख ली और नम अख़बारों के बण्डल से उसने एक समाचार-पत्र निकाला, डॉक्टर की ओर फेंक कर वह बर्फ़ीले तूफान में अदृश्य हो गया। सड़क के किनारे की रोशनी के पास वह चला गया जिससे कि मुख्य समाचार पढ़े जा सकें। यह पत्र का एक ओर छपा हुआ अतिरिक्त-संस्करण था। राजकीय घोषणा थी कि सोवियत पीपल्स कनीसार संघटित हो चुका है और सोवियत शक्ति तथा प्रोलितेरियत समाज की तानाशाही रूस में स्थापित हो गयी है। इसके बाद तार अथवा टेलिफोन से प्राप्त अन्य अनेक छोटे-मोटे सरकारी-आदेशों के साथ अन्य समाचारों के विवरण थे। बर्फ़ीले तूफान से ज़िवागो की आँखें चौंधिया गयी थीं और अख़बार के अक्षर भाप के कारण भूरे रंग के दिखाई देने लगे थे। दरअसल बर्फ़ीले तूफान के कारण अक्षर उसे नहीं दिखाई दे रहे हों, ऐसी बात नहीं थी; इस समय की महानता और आने वाली शताब्दियों तक के उसके महत्त्व के कारण वह एक बारगी स्तब्ध और हतबुद्धि हो गया था। चूँकि, वह समाचार पढ़ना चाहता था इसलिए उसने सुरक्षित स्थान की खोज में चारों ओर निगाह डाली। वह इस समय सिल्वर और साइलेंट स्ट्रीट को पार करने वाली गली के किनारे एक आलीशान पंचमंजिले मकान के नीचे खड़ा था। ऊपर के भाग से आने वाली रोशनी के नीचे जाकर वह पढ़ने लगा। इसी समय उसे किसी की पदध्वनि सुनाई दी। एक नवयुवक चुपचाप वहाँ तक आया, संकोच के साथ कुछ क्षणों के लिए रुका और

फिर वापस अन्दर चला गया। दरवाजा खुलने की आवाज़ आई। वह अन्दर किसी से बातचीत कर रहा था। उनकी बातचीत का स्वर प्रतिध्वनि के कारण इतना बिगड़ गया था कि यह कहना असंभव था कि स्त्री अथवा पुरुष कौन बोल रहा है ? फिर दरवाजा बन्द हो गया। किसी के कदम उसी ओर वापस चल पड़े। यूरी समाचारपत्र पढ़ने में ही मशगूल था लेकिन किसी अपरिचित को सीढ़ियों के छोर पर इस तरह रुकते देख कर उसने सिर ऊपर उठा कर देखा।

रेन्डियर की टोपी और कोट पहने हुए उस युवक की उम्र लगभग अठारह वर्ष की होगी। शाही रौबदार चेहरे में उसकी सँकरी आँखों की अस्थिर चमक, संदेहास्पद पिता की संतान का आभास दे रही थी। शायद उसने यूरी को कुछ और ही समझा था। जैसे वह उसे जानता हो, उसने शर्मीली, चकितदृष्टि से उसकी ओर देखा; लेकिन बोल एक शब्द भी न पाया। उसके भ्रम को दूर करने के लिहाज से ज़िवागो ने भी उसकी ओर हतोत्साहित नजरों से देखा। भ्रम के संकोच से घूम कर वह लड़का प्रवेश-द्वार की ओर चला गया। काँच के दरवाजों के बन्द होने की आवाज़ सुनाई दी। ज़िवागो वहाँ कुछ देर तक और खड़ा रहा। आज के समाचारों से उसका मस्तिष्क आलोड़ित था। वह सिर्फ़ उस लड़के की ही बात नहीं भूल गया बल्कि यह भी भूल गया कि वह अपने किस साथी से मिलने जा रहा था? सीधे घर की ओर लौटते वक़्त, आये दिन होने वाली उन दिनों में महत्त्वपूर्ण मानी जाने वाली तुच्छ घटनाओं से परेशान, अपने घर के नजदीक ही वह लकड़ियों के एक ढेर से टकरा गया। यहाँ कोई सरकारी संस्था थी। ढाँचा-मात्र दिखाई देने वाला यह मकान ईंधन की पूर्ति करता था। ईंधन के उस ढेर के पास बन्दूक लिये एक आदमी पहरा दे रहा था। इधर-उधर टहलता हुआ, वह बीच-बीच में बाड़े के बाहर की ओर भी झाँक लेता। बिना अधिक सोचे, पहरेदार की पीठ मुड़ते ही, बर्फ़ीली हवा की धुंध में रोशनी से बचते हुए, झुक कर उसने लकड़ियों का गट्ठर बनाया और पीठ पर लाद कर सुरक्षित रूप से घर ले आया। वह ठीक मौके पर घर पहुँच

गया था। घर में ईंधन था ही नहीं। लकड़ियाँ चीर डाली गयीं। स्टोव जलाया गया। अलेक्जेण्डरोविच ने गर्माने के लिए अपनी आरामकुर्सी स्टोव के और अधिक समीप खींच ली। यूरी ने जेब से अख़बार निकाल कर उनके हाथ में थमा दिया। कुन्दों को कुरेदते हुए, घुटनों के बल बैठ कर, वह बुदबुदाया—देखिये, है कोई बात! एक नजर डाल कर देखिये। कितनी सरल शल्यक्रिया है! जिस तरह चाकू से पुराना दुर्गन्धयुक्त फोड़ा काट डाला जाता है, ठीक उतनी ही सरलता से, बिना असावधानी के, इस प्राचीन अन्याय के प्रेत को खत्म किया जा सकता है, जिसने हममें अर्थहीन नम्रता भर दी, जिसने अतल गहराइयों तक हमें नीचे खींच लिया। इस प्रकार निर्भीकता से, किसी बात के निष्कर्ष को राष्ट्रीय दृष्टिकोण से देखने का उसका स्वभाव है। उसमें टालस्टाय की तरह समस्या के प्रति दृढ़ तादात्म्य और पुश्किन की तरह प्रज्वलित प्रत्यक्षता थी।

अलेक्जेण्डर अलेक्जेण्डरोविच बीच में बौखला पड़े। उन्हें लगा कि यूरी उन्हीं से कुछ कह रहा है। वे बोले—क्या कहा, पुश्किन? ठहरो। मुझे पहले इसे पढ़ लेने दो। सुनने और पढ़ने का काम मुझसे एक साथ नहीं हो सकता।

—वास्तव में यही बौद्धिक देन है। ज़ैसे हम किसी को कहें कि एक नया युग, एक नया संसार बसा लो; तो पहले उसके लिए जगह छोड़नी होगी। नयी बस्ती बसाने से पहले शताब्दियों तक उन्हें पहले संसार के समाप्त होने की प्रतीक्षा करनी होगी। वे हिसाब किताब माँगेंगे, वे बिना किसी प्रकार की गलती का सही-सही हिसाब-किताब माँगेंगे। हिसाब की कोई गड़बड़ी उन्हें पसन्द नहीं होगी।

—यह ईश्वरोक्ति दैनिक जीवन में जड़ दी गयी है। अब कोई परवाह नहीं करता—चाहे ले लो, अथवा छोड़ दो। यही तो इतिहास का चमत्कार है। किसी को इसके लिए पर्याप्त समय की आवश्यकता की ओर ध्यान देने का अवकाश ही नहीं है। कहा नहीं जा सकता कि यह

कब शुरू हो जायेगा। बिना किसी परिलक्षित देरी के यह कहीं से भी आरंभ हो सकता है। किसी भी दिन, हो सकता है, आने वाले सप्ताह की किसी व्यस्त घड़ी से ही, यह आरम्भ हो जाये। वास्तव में यही तो चमत्कार है। केवल वास्तविक महानता ही स्थान और समय की परवाह नहीं करती।

नौ

जिस प्रकार लोग अनुमान लगा रहे थे शीत ऋतु अपने विकराल रूप में आकर उपस्थित हो गयी। पिछली शीत ऋतुओं जितनी तो यह भयंकर नहीं थी, फिर भी उसी प्रकार काली, भूखी और सर्द! जो कुछ परिचित था वह निराशा के अतल अन्धकार में समा गया था और जीवन की आधारशिलाएं बदल गयीं थीं। अमानवीय रूप से जीवन को पकड़े रखने के बावजूद भी वह मानो हाथ से फिसलता जा रहा था। एक के बाद एक—तीन भयंकर शीतऋतुएँ क्रमशः आ गयीं। मानो अब ये इस बार एक दूसरे में मिल गयी हों, उन्हें विभक्त किया नहीं जा सकता। पुराने जीवन के ढर्रों के साथ, ये नये तरीके अभी तक जड़ जमा नहीं पाये थे। गृहयुद्ध छिड़ने के एक साल बाद भी जीवन के इन दो विभिन्न प्रकारों में अब अधिक विरोध नहीं था। फिर भी वे पहेली के दो हिस्सों की तरह अलग-अलग पड़े थे और आपस में मिल नहीं पा रहे थे।

जगह-जगह नये चुनाव हो रहे थे। नगरपालिकाओं की व्यवस्था स्थापित करने की कोशिश जारी थी। गृह-निर्माण, व्यापार और कारखानों का सिलसिला जमाया जा रहा था। काले चमड़े की पोशाक पहने प्रत्येक विभाग का अधिकारी दृढ़ इच्छाशक्ति, असीम अधिकार, डाँटडपट और पिस्तोल के बल पर बिना सोये अथवा हजामत किये, दिनरात काम में लगे हुए थे। जैसे चोरों के साथ दयाहीन व्यवहार किया जाता है, ठीक उसी तरह अजीब मुस्कान के साथ, वे बुर्जुवा परम्परा के औसतन सरकारी सामान रखने वाले लोगों के साथ बात करते। योजनानुसार सभी कुछ नये सिरे से संगठित किया जा रहा था। कम्पनी

के बाद कम्पनी, सहकारी उद्योगों के साथ सहकारी उद्योग! सभी कुछ बोलशेविकों से प्रभावित हो गया था। 'हॉली-क्रास' अस्पताल अब दूसरे परिष्कार के रूप में प्रसिद्ध हो चुका था। वहाँ भी बहुत-सा रद्दोबदल हुआ। कुछ लोगों ने त्यागपत्र दे दिये। कुछ लोगों को, उनके काम के पर्याप्त न होने के कारण निकाल दिया गया। कुछ डॉक्टर ऐसे थे जो फैशन के रूप में प्रेक्टिस किया करते थे। बहुत अधिक बोलते, अधिक फीस लेते, समाज में अधिक प्रतिष्ठा पाते। उन्होंने अपने स्वार्थ के कारण ही त्यागपत्र दिये थे; मगर फिर भी उनका दावा था कि उन्होंने विरोध स्वरूप ऐसा किया है। जो लोग वहाँ काम कर रहे थे, उनके प्रति इन लोगों का हेय दृष्टिकोण था। ज़िवागो अभी भी वहीं काम कर रहा था।

उस दिन टोन्या और यूरी आपस में इस तरह बातचीत कर रहे थे—

—बुधवार की बात मत भूलना। डॉक्टरों के संघ में हमारे लिए दो आलू के बोरे मिलने वाले हैं। मैं तुम्हें बता दूँगा कि मुझे कब छुट्टी मिलती है। हम साथ ही स्ले में चलेंगे।

—बुधवार आने में अभी तक बहुत देर है। आप सो जाइये। बहुत देर हो गयी है। सभी कुछ तो आप कर नहीं सकते? जाइये, आराम कीजिए।

—चारों ओर महामारी फैली हुई है। थकान बीमारी को रोक नहीं पाती। मुझे पिताजी और तुम्हारे बारे में बड़ा डर लग रहा है। मैं नहीं जानता कि क्या करूँ? हम लोग अपना पूरा खयाल नहीं रखते। टोन्या, तुम्हें अभी तक नींद नहीं आ रही है?

—नहीं!

—मैं अपने बारे में चिन्तित नहीं हूँ। मेरी नौ ज़िन्दगियाँ हैं। परन्तु यदि मैं बीमार हो जाऊँ तो समझदारी के साथ मुझे तुरन्त अस्पताल भिजवा देना।

—ऐसी बातें क्यों कर रहे हैं ? भगवान की कृपा से आप जल्द ही ठीक हो जायेंगे। मुसीबतों के ये दिन भी किसी तरह गुज़र जायेंगे।

—न कोई ईमानदार आदमी रह गया है, न साथी। अपना काम जानने वाले लोग तो और भी कम हैं। यदि कोई ऐसी-वैसी बात हो तो पिचुजकिन के सिवाय किसी पर एतबार मत करना। बशर्ते, वह अभी तक यहीं हो। तुम्हें नींद नहीं आ रही है ?

—नहीं।

—तनख्वाह काफी नहीं थी सो वे सब अस्पताल से चले गये। अब उनमें भी नागरिकता के सिद्धान्त और भावनाएँ आ गयी हैं। सड़क पर यदि मुलाकात हो जाये तो मुश्किल से ही कोई हाथ मिलाता है। भौंहें तिरछी करके वे पूछ लेते हैं—क्या तुम अभी तक उनके लिए काम कर रहे हो ? मैं कहता हूँ—जी हाँ। यदि आपको एतराज न हो तो, यह भी कह दूँ कि मैं उन लोगों का सम्मान करता हूँ, जिनके कारण मुझे यह दरिद्रता और कष्ट भुगतने का गौरव मिल सका।

दस

उबले ज्वार, मछली का झोल, गेहूँ व राय की बनी माँड़, यही उन दिनों अधिकाँश लोगों का भोजन था। एक महिला प्राध्यापक ने टोन्या को डबलरोटी सेंकना सिखा दिया था; और टोन्या का विचार था कि पुराने जमाने की तरह सिकी हुई रोटियों को बेच कर बड़े स्टोव को गर्माने की व्यवस्था की जा सकेगी। रोटी तो वह अच्छी तरह से सेंक लेती थी, मगर व्यापारिक-योजना असफल रही। हालत बहुत ही खराब थी। एक दिन प्रातःकाल के समय, यूरी के काम पर चले जाने पर, अपना फटा हुआ कम्बल ओढ़ कर, अन्यमनस्क-सी वह ईंधन की तलाश में चल पड़ी। घर में सिर्फ़ चन्द लकड़ियाँ बची थीं। नजदीक की गलियों के नुक्कड़ पर, जहाँ मास्को के गाँव के किसान सब्जियाँ अथवा आलू बेचा करते हैं, वह पहुँच गयी। (आम रास्ते पर उन्हें गिरफ्तार किया जा

सकता था।) जिसकी उसे तलाश थी, वह उसे मिल गया। ग्रामीण ढँग का कोट पहने एक युवा व्यक्ति खिलौने जैसी स्ले को सावधानी से खींचता हुआ उसके पीछे-पीछे चल दिया। स्ले में कुछ लकड़ियाँ थीं। 19वीं शताब्दी के चित्र में चित्रित किसी पुराने मकानों की कलात्मक पतली लकड़ियों की तरह बर्च-वृश की छोटी टहनियों से स्ले भरी हुई थी। चूँकि, लकड़ियाँ अभी हाल ही में काटी गयी थीं, इसलिए जलाने के लिए उपयुक्त नहीं थी—और यह बात टोन्या को मालूम थी। फिर भी इसके अलावा कोई चारा नहीं था, इसलिए विवाद करना फ़िजूल था। उस युवक ने लकड़ी की पाँच-छः भारियाँ अन्दर लाकर रख दीं और उसके बदले में, अपनी पत्नी को उपहार देने की खुशी के साथ, टोन्या की काँच की आलमारी उठा ले गया। भविष्य में आलू के सौदे के लिए उसने पियानो का भाव पूछ लिया। घर आकर यूरी ने टोन्या के इस सौदे के बारे में कुछ नहीं कहा। यदि वे चाहते तो स्वयं उस अलमारी को चीर कर जलाने के काम में ला सकते थे। मगर यह बात उन्हें सूझी ही नहीं।

टोन्या ने कहा—आपने टेबल पर पड़ा अपना संदेश पढ़ा?

—अस्पताल से भेजा गया था, वही है क्या? मुझे संदेश मिल गया है। एक रोगी का बुलावा है। वहाँ थोड़ी देर आराम करके जाऊँगा। बहुत दूर है। कहीं ट्राइम्फल आर्क के पास। मेरे पास उसका पूरा पता है।

—आपने देखा, वे कितनी फीस देने को तैयार हैं? पढ़ लीजिये। एक बोतल जर्मन शराब अथवा मोजों के जोड़े। पता नहीं, वे किस तरह के लोग हैं। उन्हें क्या पता, हम आजकल किस तरह दिन काट रहे हैं।

—शायद माल देने वाला ठेकेदार हो।

—निश्चय ही सप्लाइयर—माल देने वाला ठेकेदार ही होगा।

छोटे निजी उद्योग-धँधे वालों को, सरकार को विविध प्रकार माल देने का ठेका प्राप्त लोगों को, एजेन्ट, रियायत देने वाले, माल देने वाले ठेकेदार आदि कहा जाता था। यद्यपि सरकार ने निजी व्यापार को

समाप्त कर दिया था। फिर भी आर्थिक संकटकाल में इन लोगों को कुछ सुविधाएँ मिली हुई थीं। इन लोगों में निष्कासित फर्मों के प्रमुख लोगों का अस्तित्व नहीं था। वे लोग तो इस सदमे को बर्दाश्त ही नहीं कर सके। ये थे नयी श्रेणी के व्यापारी, इन्हें व्यापार का कोई अनुभव नहीं था। वे थे युद्ध और क्रांति में से चुने हुए कुछ लोग।

यूरी ने गर्म पानी में शक्कर की किस्म का एक पदार्थ डाल कर दूध की तरह बना कर पी लिया; और अपने मरीज को देखने के लिए चल पड़ा। एक दीवार से दूसरी दीवार तक, खिड़कियों की सतह तक बर्फ़ जमी हुई थी। सामने फैले हुए मैदान में कभी-कभी, स्ले पर थोड़ा-सा अनाज ले जाते हुए लोगों की मरियल-सी छाया चलती-फिरती नजर आती। इस ओर यातायात लगभग नहीं के बराबर था।

पुरानी दूकानों के बोर्ड अभी भी लटक रहे थे, मगर उनका सरकारी संघों को दूकानों से कोई लेना-देना नहीं था। अधिकाँश दूकानें खाली पड़ी थीं, ताले लगे हुए थे अथवा उन पर तख़्ते जड़ दिये गये थे। इसका कारण सामान न होना ही नहीं था। बल्कि बात यह थी कि व्यापार और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का पुनर्गठन अभी तक कागजों तक ही सीमित था। इन ढकी हुई दूकानों के विवरण ने अभी तक उन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं डाला था।

ग्यारह

तामर गली के पास, ब्रेस्ट गली के अंत में यूरी को मकान मिल गया। पुराना ईंट छप्पर का मकान था। एक ओर लकड़ी की सीढ़ियाँ दीवाल तक चली गयी थीं।

उस दिन नियत समय पर वहाँ किरायेदारों की सार्वजनिक सभा हो रही थी। बॅरो-सोवियत की एक महिला प्रतिनिधि वहाँ उपस्थित थी। इसी समय एक सैनिक-आयोग ग़ैरलाइसेंस-शुदा हथियारों की तलाशी के लिए वहाँ आ उपस्थित हुआ। लिहाजा, किरायेदारों को अपने-अपने फ्लेटों की ओर वापस जाना पड़ा। आयोग के प्रधान ने बॅरो-सोवियत

की प्रतिनिधि महिला से कहा कि उन्हें अधिक देर नहीं लगेगी, इसलिए वे जावें नहीं, थोड़ी देर में तलाशी हो जायेगी, और वे फिर सभा चालू रख सकेंगे। यूरी के पहुँचने तक आयोग अपना काम लगभग समाप्त कर चुका था। मगर ज़िवागो को अपने मरीज का फ्लेट अभी तक नहीं मिल सका था। अहाते में आते ही एक बन्दूकधारी ने डॉक्टर को रोका। आयोग के प्रधान ने बहस को टालते हुए आज्ञा दी कि तलाशी का काम तब तक रोक दिया जाय जब तक कि डॉक्टर अपने मरीज का परीक्षण न कर ले।

इस घर के मालिक ने आकर दरवाजा खोल दिया। उसके चेहरे का रंग जैतून की तरह था और उसकी आँखों से स्पष्ट रूप से वेदना झलक रही थी। पत्नी की बीमारी, तलाशी और डॉक्टर के प्रति असीम आदर, इन तमाम बातों ने उसे काफी उत्तेजित कर दिया था। डॉक्टर का समय बचाने के लिए अपनी समझ में मरीज की हालत को संक्षेप में समझाने की वह कोशिश कर रहा था। लेकिन जल्दबाजी के मारे, उसकी बातचीत लम्बी-चौड़ी और असम्बद्ध हो गयी थी।

डॉक्टर ने घुसते ही देखा कि फ्लेट ऐश्वर्य-सम्पन्न था। शायद सारा फर्नीचर मुद्रा-स्फीति के समय जल्दी में खरीदा गया था। अनेक किस्म की चीज़ें बेतरतीब पड़ी थीं। उस युवक का खयाल था कि उसकी पत्नी किसी मानसिक आघात के कारण बीमार है। बेतुके तरीके से उसने फिर समझाने की कोशिश की कि हाल ही में उसने एक पुरानी, आवाज़ करने वाली घड़ी खरीदी है। घड़ी बनाने वाले की कला का यह अद्‌भुत उदाहरण है। इसे दिखाने के लिए वह डॉक्टर को वहाँ ले गया। जिस घड़ी में वर्षों से चाबी नहीं दी गयी थी, वह अचानक चलने लगी। एक विचित्र ध्वनिमय नृत्य के बाद वह रुक गयी। उसकी स्त्री इस आवाज़ से डर गयी।

युवक ने कहा—इसे यकीन हो गया है कि इसकी आखिरी घड़ी आ पहुँची है और यह मृत्यु-घोष है। यह बेहोश पड़ी रहती है, न कुछ खाती है, न पीती है, न किसी को पहचान पाती है।

डॉक्टर को सन्देह हुआ। उसने कहा—सो आपका खयाल है कि उसे मानसिक आघात है? मैं उसे देख सकता हूँ?

वे दूसरे कमरे में गये। चीनी-मिट्टी की छत का लैम्प चौड़े बिस्तर के पास जल रहा था। बड़ी-बड़ी काली आँखों वाली एक छोटी स्त्री पलंग के कोने पर लेटी हुई थी। डॉक्टर और इस युवक को देखकर बिस्तर के कपड़ों में से अपना हाथ निकाल कर, उसने निषेधात्मक तरीके से हिलाया। उसके आस्तीन का कपड़ा कंधों तक लटकने लगा। जैसे वह कमरे में अकेली हो, वह एक दर्दभरा गीत धीमे स्वर में गाने लगी, अपनी ही आवाज़ से क्षुब्ध होने के कारण वह अपनी रुलाई रोक नहीं पाई। वह चिल्लाने लगी और घर जाने की माँग करने लगी। डॉक्टर के करीब आने पर उसे छूने से मना करते हुए उसने उसकी ओर पीठ कर दी।

—मुझे इसका परीक्षण करना ही होगा। डरने जैसी कोई बात नहीं। बुरी तरह से टाइफ़ुस के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। बिचारी बहुत तकलीफ महसूस कर रही होगी। मेरी राय में उसे अस्पताल में दाखिल करवा दो। मुझे मालूम है कि इसकी प्रत्येक आवश्यकता की वस्तु यहाँ सुलभ है, लेकिन वास्तव में इसे इस समय ज़रूरत है निरन्तर डॉक्टरी-संरक्षण की। वहाँ इसे कुछ हफ्तों के लिए रखना होगा। किसी तरह की गाड़ी का प्रबन्ध कर सकते हो? गाड़ी न मिल सके तो कोई छकड़ा ही सही। हाँ, अच्छी तरह से लपेट कर ले जाना होगा। मैं तुम्हें दाखिल करने का आज्ञापत्र लिख देता हूँ।

—मैं गाड़ी लाने की कोशिश करता हूँ। लेकिन एक मिनट ठहरिये। ठहरिये। वास्तव में क्या यही बात है? ओह, कितनी भयंकर!

—मुझे यही अंदेशा है।

—देखिये बात यह है कि यदि मैं इसे यहाँ से जाने देता हूँ तो मैं इसे हमेशा के लिए खो दूँगा। यहाँ आकर देखना आपके लिए मुमकिन नहीं है? जितनी बार भी संभव हो, आप आइयेगा। जो भी आप माँगेंगे मैं बखुशी दूँगा।

—माफ कीजिए। मैंने बता दिया है कि उसे निरन्तर डॉक्टरी संरक्षण की ज़रूरत है। मैं उसकी भलाई के लिए ही कह रहा हूँ। आप गाड़ी का प्रबंध कीजिए और मैं उस मकान-संघ के कमरे में जाकर, दाखिल करने का आज्ञापत्र लिखता हूँ। इस आज्ञापत्र पर मकान की मुहर लगानी होगी। इसके अलावा और भी छोटी-मोटी कार्यवाही करनी है!

बारह

शाल ओढ़े, भूरे कोट पहने, एक के बाद एक किरायेदार नीचे के ठंडे कमरे में जमा होने लगे। पहले यह कमरा अंडे रखने का गोदाम था। अब मकान-कमेटी ने इसे अपने संघ का कमरा बना लिया था। एक ओर कुछ कुर्सियाँ और मेजें रखी हुई थीं, मगर प्रस्तुत भीड़ के लिए वे अपर्याप्त थीं। इसलिए अंडे रखने के डिब्बों को उलट कर बैठने की कुर्सियों के रूप में काम में लाया जा रहा था। एक ओर डिब्बों की कतार छत तक लगी हुई थी। चारों ओर घासफूस का ढेर और अंडे की जर्दी की चिपचिपाहटभरी गंदगी फैली हुई थी। पत्थर के फर्श पर चूहों की दौड़भाग अबाधगति से अभी भी जारी थी।

हर बार एक मोटी-सी स्त्री, अपना स्कर्ट थामे, फैशनेबुल जूतों की आवाज़ के साथ अपनी मोटी आवाज़ में चिल्ला रही थी—ओलिया, ओलिया, तुम्हारे यहाँ चारों ओर चूहों की भरमार है। हटो, हटो, गंदे कहीं के—हाय-हाय—नालायक गंदे दुष्ट कहीं के। हाय-हाय—देखो, ये किस तरह दाँत किटकिटा रहे हैं? हाय, ये ऊपर ही चढ़ जाना चाहते हैं। ये तो मानो स्कर्ट में ही घुस जायेंगे। मुझे डर लगता है। उस ओर देखो, ए महाशय! माफ करना, महाशय नहीं, साथी नागरिक साहब, उस ओर देखो।

उसका अस्तरखान ऊपर से तीन भागों में विभक्त होकर लटक रहा था। रेशमी कपड़े से उसका पेट और छाती ढकी हुई थी। छोटे व्यापारियों तथा दूकान के क्लर्कों के दायरे में अपने जमाने में वह रूपवती महिला के रूप में प्रसिद्ध थी। मगर अब तो उसकी छोटी आँखें घनी भौंहों के नीचे

रेखा-मात्र ही दिखाई देती थीं। एक बार उसके किसी प्रतिद्वन्द्वी-प्रेमी ने उस पर तेज गन्धक का तेजाब डालने की कोशिश की थी। वह बाल-बाल बच गयी। फिर भी, चेहरे के एक कोने पर तथा गालों पर उसका एकाधा निशान बाकी बच ही गया था।

सभापति के पद पर प्रतिष्ठित बॅरो-सोवियत की प्रतिनिधि ने कहा—शोर मत मचाओ, क्रोपोजिना। हम अपना काम कैसे कर सकेंगे?

सभापति महोदया को इस घर के बारे में तथा यहाँ रहने वालों के बारे में बहुत कुछ मालूम था। वे जानती थीं कि इस घर की देखभाल करने वाली चाची फातिमा पहले अपने पति के साथ इसी मकान के निचले गंदे कोने पर रहा करती थीं; और जो अब अपनी एकमात्र लड़की के साथ ऊपर की पहली मंजिल पर रहने चली गयी हैं। उन्होंने फिर पूछा—अच्छा फातिमा चाची, यहाँ के बारे में बताओ तो, क्या हाल हैं?

फातिमा ने शिकायत की कि इतने बड़े मकान और इतने सारे रहने वालों को वह अकेली संभाल नहीं पाती। तय यह हुआ था कि यहाँ रहने वाला प्रत्येक परिवार बारी-बारी से सीढ़ियों और दरवाजों के बाहर की सफाई किया करेगा, लेकिन कोई इस ओर ध्यान नहीं देता।

—फिक्र मत करो फातिमा चाची। हम इन सबको अच्छा सबक सिखायेंगे। यह किस किस्म की मकान-कमेटी है? सब के सब बेकार हैं। यहाँ अपराधी तत्वों को आश्रय दिया जा रहा है। दूषित चरित्र वाले लोग बिना अपना नाम दर्ज कराये, गलत तरीके से यहाँ रह रहे हैं। हमें उनसे पिण्ड छुड़ाना ही होगा, और नये लोगों का चुनाव करना होगा। मैं तुम्हें यहाँ की मैनेजर बना दूँगी। बस, बेकार का आडम्बर मत करना।

फातिमा ने प्रार्थना की कि उसे छुट्टी दे दी जाय, लेकिन प्रतिनिधियों ने उसकी बात सुनने से इनकार कर दिया।

इसके बाद, चारों ओर देख कर और इस बात से आश्वस्त होकर कि उपस्थिति पर्याप्त है, छोटी-सी भूमिका के साथ उसने अपना भाषण

आरंभ किया। मकान-कमेटी की कमियों की निन्दा करते हुए, उसने प्रस्ताव रखा कि नये उम्मीदवार चुनाव के लिए खड़े किये जायं। इसके बाद वह अपने काम की दूसरी बात करते हुए, अपने भाषण के अंत में उसने कहा—सो, बात यह है साथियो, साफ़ बात यह है कि यह मकान काफी बड़ा है और हॉस्टल के लिए उपयुक्त है। ग्राम-सभाओं के लिए प्रतिनिधियों के आने पर, हमारे सामने समस्या यह उठ खड़ी होती है कि हम उन्हें आखिर ठहरायें कहाँ? इसलिए, यह तय किया गया है कि इस मकान को बॅरो काउन्सिल हॉस्टल के लिए ले लिया जाय। साथी तिमिरजिन, जो कि पहले यहीं रहते थे और जिन्हें निष्कासित कर दिया गया था, उनके सम्मान में इसका नाम तिमिरजिन हॉस्टल रखा जाय। किसी को एतराज तो नहीं है? रही तारीख की बात। सो उसके लिए कोई जल्दी नहीं है। काम करने वाले लोगों के रहने की व्यवस्था की जा रही है। बाकी के लोग अपना-अपना प्रबन्ध कर लेंगे। उन्हें एक साल का नोटिस दे दिया गया है।

—हम सब काम करने वाले हैं।' 'हम में से प्रत्येक काम करने वाला है।' 'हम सब कामगार हैं।' चारों ओर से लोगों की आवाज़ें आने लगीं। अवरुद्ध कंठ से बीच में एक आवाज़ सुनाई दी—यह है महान रूस! अब सभी देश एक समान है। मुझे मालूम है, आपका इशारा किसकी ओर है!

—सब एक साथ मत बोलिए। पहले किसका जवाब दूँ? राष्ट्रों का इससे क्या लेना-देना है? वाल्डर्किन नागरिक? क्रोपोजिना की बात ही ले लीजिए। उसके बारे में राष्ट्रीयता का कोई प्रश्न नहीं उठता। फिर भी हम उसे निकाल रहे हैं।

क्रोधावेश और कलह की गर्मी के साथ क्रोपोजिना को जितने भी बेहूदे नाम याद आये, उन सबके साथ सम्बोधित करती हुई वह चिल्लाई—आप! आप निकालेंगी हमें! कोशिश करके देखो तो। मैं सबको देख लूँगी।

—कैसी भूतनी है? कोई शर्म-लाज नहीं?

प्रतिनिधि ने कहा—तुम पंचायत मत करो फातिमा। मैं अपने बारे में खुद फिक्र कर लूँगी। अब बस करो। मैं तुम्हारे बारे में सब जानती हूँ। चुप रहो। वर्ना, तुम्हें तुरन्त अधिकारियों के सुपुर्द कर दूँगी कि वे तुम्हें वोदका बनाने अथवा चोरों के गिरोह को रखने के अपराध में गिरफ्तार कर लें।

यूरी जब इस कमरे में आया तो शोरगुल अपनी चरम सीमा पर पहुँचा हुआ था। उसने पहले आदमी से पूछा कि वह मकान-कमेटी के प्रमुख सदस्य से बात करना चाहता है। दूसरे आदमी ने तुरही की तरह मुँह पर हाथ रख कर पुकारा—ग-लि-उ-लि-ना! आप यहाँ आइये!

यूरी अपने कानों पर विश्वास नहीं कर पाया। झुकी हुई एक अधेड़ उम्र की स्त्री—चाची फातिमा उसके सामने आकर खड़ी हो गयी। चेहरा देखते ही वह समझ गया कि यही गुल्युलिन की माँ है। फिर भी उसने अपने आप को ज़ाहिर नहीं होने दिया। बोला—'यहाँ रहने वाले एक परिवार की स्त्री को टायफुस हो गया है।' उसका नाम बताते हुए उसने कहा कि इस रोग के संक्रामक होने की रोकथाम करने के लिए बहुत सारी सावधानियाँ बरतनी होंगी। साथ ही उसने यह भी हिदायत दी कि रोगी को तुरन्त अस्पताल भिजवाने की व्यवस्था की जाय। दाखिले के आज्ञापत्र पर मुहर लगनी चाहिए। लेकिन यह सारी कार्यवाही की कहाँ जाय?

फातिमा ने सोचा कि उससे पूछा जा रहा है कि रोगी को अस्पताल कैसे ले जाया जाय? उसने उत्तर दिया—बॅरो काउन्सिल की साथी—देमिना के लिए गाड़ी आने वाली है। उसका स्वभाव काफी उदार है। मैं उनसे कह दूँगी। मरीज के लिए गाड़ी मिल जायेगी। चिन्ता मत करिये डॉक्टर साहब, हम उसे अच्छी तरह से अस्पताल पहुँचा देंगे।

—यह तो बहुत अच्छी बात है। दरअसल मेरा मतलब यह था कि मैं दाखिले का आज्ञापत्र आखिर किस जगह लिखूँ? लेकिन यदि गाड़ी मिल

सकती है तो...एक बात पूछ लूँ ? क्या आप ही लेफ्टिनेन्ट गुल्युलिन की माताजी हैं ? युद्धस्थल में हम एक ही यूनिट में थे।

वह अस्थिर हो उठी, उसका चेहरा पीला पड़ गया। यूरी का हाथ पकड़ कर उसने कहा—बाहर आ जाओ। हम वहीं बात करेंगे।

ज्योंही वे दरवाजे से बाहर आये उसने फुरती से कहा—भगवान के लिए धीरे बोलो। मुझे ख्वामख्वाह बर्बाद मत करो। युसुप्का गलत रास्ते पर चला गया है। तुम्हीं सोचो—वह क्या है ? आखिर वह कारखाने में काम सीख रहा था—कामगार था। उसे समझना चाहिए—सीधे-सादे लोगों की हालत आजकल बेहतर है। अन्धा भी इस बात को देख सकता है। मुझे पता नहीं, आप क्या सोच रहे हैं ? आपके लिए यह सब ठीक हो सकता है। लेकिन युसुप्का के लिए यह अपराध है, पाप है। भगवान उसे क्षमा करे। युसुप्का के पिता प्राइवेट थे। और उन्हें मार डाला गया था। लोग कहते हैं कि उनका चेहरा जल गया था और उनके हाथ-पाँव उड़ गये थे ! उसकी आवाज़ काँपने लगी। जब तक वह शांत नहीं हो गयी, वह चुप रही। इसके बाद बोली—आओ, मैं आपको गाड़ी दिलवा देती हूँ। मैं जानती हूँ, आप कौन हैं ? कुछ दिनों पहले वह आया था, तो वही बता रहा था। वह कहता था कि आप लारा गुइशर को जानते हैं। अच्छी-भली लड़की थी। मुझे उसकी याद है। हमारे यहाँ अक्सर आया करती थी। आजकल वह क्या कर रही है, मुझे कुछ भी पता नहीं है। तुम लोगों के बारे में कोई कुछ नहीं बता सकता। कुलीन लोगों का एक दूसरे के साथ रहना स्वाभाविक है। लेकिन युसुप्का के लिए यही पाप है। चलिये गाड़ी की व्यवस्था करें। मुझे पूरा भरोसा है कि देमिना 'ना' नहीं कहेगी। जानते हो, यह देमिना कौन है ? यह है ओल्या देमिना। लारा की माँ के यहाँ दर्जिन का काम किया करती थी। वह इसी घर की है। चलिए। आइये।

तेरह

काफी अन्धेरा था। चारों ओर के अन्धकार को भेदती हुई देमिना की जेबी-टार्च की रोशनी चार-पाँच कदम आगे, बर्फ़ के एक ढेर से दूसरे

डेर तक उछलती हुई आगे-आगे चल कर रास्ते पर रोशनी डाल रही थी। इससे रास्ता कम दिखाई दे पा रहा था, भ्रम अधिक होता। चारों ओर घनघोर अन्धकार था, और वह मकान पीछे छूट गया था, जहाँ लोग लारा को बचपन से ही जानते हैं। यहाँ के लोग कहा करते हैं कि लारा का पति आन्तिपोव यहीं पल-पुस कर बड़ा हुआ है। मजाक के स्वर में, उदारता बताते हुए देमिना ने कहा—बिना टार्च के आप को रास्ता कैसे मिल पाता, कामरेड डॉक्टर? यदि चाहें तो मैं अपनी टार्च दे सकती हूँ। यह सही बात है डॉक्टर साहब कि जब हम लड़कियाँ ही थीं, मेरा उस पर काफी जोर था। उनकी एक दर्जी की दूकान थी। इस साल मैंने उसे देखा था। जाते वक़्त वह मास्को में रुकी थी। मैंने कहा—बुद्धू, तू कहाँ जा रही है? यहीं रह। आ जा, और हमारे साथ रह। तुम्हारे लिए नौकरी की व्यवस्था हम कर देंगे। लेकिन कोई लाभ नहीं। वह राजी ही नहीं होती। खैर, वह अपना भला-बुरा खुद समझती है। उसने पाशा के साथ ब्याह कर लिया। उसने दिमाग की बात सुनी, दिल की नहीं। बस, इसके बाद से वह विक्षिप्त है। वह चली गयी।

—उसके बारे में आपका क्या खयाल है?

—खयाल रखना, यह जगह फिसलनदार है। मैंने उन्हें हजार बार कहा कि रास्ते पर गन्दगी मत बिखेरो। लेकिन उन्हें कहना भैंस के आगे बीन बजाने की तरह है। मेरा 'उसके' बारे में क्या खयाल है? मतलब? मैं क्या सोच सकती हूँ? मेरे पास सोचने के लिए वक़्त ही कहाँ है? यहीं मैं रहती हूँ। एक बात मैंने उसे नहीं बताई, सेना में उसका एक भाई था न, मेरे खयाल में उसे गोली मार दी गई है। रही उसकी माँ की बात, वह पहले मेरी मालकिन थी। मैं खयाल रखती हूँ कि वह ठीक से रहे। अच्छी बात है, मुझे जाना है। नमस्कार।

वे विदा हो गये। देमिना की छोटी टार्च की रोशनी सँकरे प्रवेश-द्वार की ओर बढ़ कर, दीवाल और गन्दी सीढ़ियों पर धब्बे की शक्ल में रोशनी डालती हुई चली गयी। रह गया अन्धकार में यूरी अकेला।

दाहिनी ओर थी गार्डन-ट्रायम्फ-स्ट्रीट और बायीं ओर गार्डन-कोच-स्ट्रीट। दूर तक काली बर्फ़ फैली हुई थी। वे गलियों के बजाय, साइबेरिया अथवा यूराल्स के इमारती पत्थर के घने जंगलों के कटाव की तरह दिखाई दे रहे थे।

घर पर प्रकाश था, गर्मी थी। टोन्या ने पूछा—इतनी देर कैसे हो गयी? आप जब यहाँ नहीं थे, एक असाधारण बात हो गयी। वैसे यह ध्यान देने योग्य नहीं है! मैं कहना भूल गयी थी, कल पिताजी के हाथ से घड़ी टूट गयी। वे बहुत ही अस्थिर हो उठे। घर में यही एक घड़ी थी, जो चालू थी। उसे ठीक करने की उन्होंने बहुत कोशिश की। लेकिन कुछ हुआ नहीं। किनारे पर रहने वाला घड़ीसाज भयंकर कीमत माँग रहा था—तीन पाउण्ड रोटियाँ। मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि क्या किया जाय और पिताजी उधर मुँह लटकाये बैठे थे। आपको भरोसा नहीं होगा, इसके बाद लगभग एक घंटे पहले इस घड़ी का एलार्म अपने आप बजने लगा। उसकी तीखी और बहरा कर देने वाली जोर की आवाज़ से हम सब अप्रतिभ-से हो गये। हतबुद्धि-से हो गये। यह वही एलार्म घड़ी थी। ऐसी बात आप सोच भी नहीं सकेंगे। यह देखिये, फिर यह अपने आप चलने लगी।

—मेरी 'टायफुस' की घड़ी आ पहुँची। हँसते हुए यूरी ने घड़ियाल वाली टायफुस से पीड़ित, मरीज की सारी कथा कह सुनाई।

चौदह

बहुत दिनों तक यूरी पर टायफुस का आक्रमण नहीं हुआ। फिर भी ज़िवागो परिवार की बर्दाश्त करने की अच्छी-खासी अग्निपरीक्षा हो गयी। उनके पास कुछ भी नहीं था। वे भूखों मर रहे थे। ज़िवागो उस पार्टी-सदस्य के पास भी जा आया था जिसे उसने एक बार डकैतों द्वारा किये गये हमले से बचाया था। उसने यथासंभव उसकी मदद की। लेकिन अब तक गृह-युद्ध छिड़ गया था। वह मुश्किल से मास्को में रह

पाता। साथ ही सुखों के अभाव को भुगतने की बात को वह स्वाभाविक मानता था। वह स्वयं भूखा है, इस बात को उसने प्रकट नहीं होने दिया।

ब्रेस्ट-स्ट्रीट के अपने पुराने मरीज के यहाँ भी वह गया। लेकिन पिछले महीनों में वह युवक गायब हो गया था और उस स्त्री-मरीज के बारे में कुछ भी मालूम नहीं हो सका। गुल्युलिन की माँ फातिमा चाची के यहाँ जाने पर, वे भी उसे मिली नहीं। अधिकाँश किरायेदार नये थे। देमिना युद्धस्थल पर थी।

एक दिन सरकार द्वारा नियंत्रित कीमत पर उसे ईंधन का भाग मिला। उसे लाने के लिए उसे विन्दवा स्टेशन तक जाना था। अन्तहीन मेश्चेन्काय स्ट्रीट को पार करके वह घर लौट रहा था। उसकी निगाह ईंधन पर लगी हुई थी, जो कि उस अप्रत्याशित बहुमूल्य खजाने को लिये चल रहा था। अचानक उसे महसूस हुआ कि गली उसे बिलकुल भिन्न रूप में दिखाई देने लगी है। उसके कदम लड़खड़ा रहे हैं। आगे चला नहीं जाता। 'यह है, यही! हो गया। यह टायफुस है!' उसके नीचे गिरने पर ड्राइवर ने उसे उठाकर लकड़ियों के ढेर पर रख दिया। पता नहीं, वह कैसे और कब घर लौटा।

पन्द्रह

पन्द्रह दिन तक वह बारम्बार बेहोश होता रहा। स्वप्न में उसने देखा कि टोन्या ने उसके लिखने की टेबल पर दो गलियों की लकीरें खींच दी हैं—एक गार्डन-कोच-स्ट्रीट और दूसरी गार्डन-ट्रायम्फ-स्ट्रीट। पास में ही टेबल-लैम्प जला दिया गया है। उसकी गर्म नारंगी चमक से सारी सड़क प्रकाशमान हो गयी है—ताकि अब वह लिख सके सो वह लिख रहा था। वह उस बात को लिख रहा था, जिसे वह बड़े अर्से से लिखना चाहता था लेकिन लिख नहीं पाया था। अब जैसे सब कुछ सरल हो गया हो। उसने उत्सुकता के साथ वही बात लिखी, जो कि वह कई बरसों से लिखना चाहता था। केवल बीच-बीच में किरगिज आँखों वाला एक लड़का बिना बटन का रेन्डियर-कोट (जैसा कि यूराल्स और साइबेरिया

में लोग पहना करते हैं) पहने हुए, रास्ते में आ खड़ा होता। उसे निश्चय हो गया कि यही मृत्यु-दूत है। अथवा सीधे तरीके से कहा जाय तो— यही मृत्यु है। लेकिन यह मृत्यु नहीं हो सकती, जो कि उसे लिखने के लिए प्रेरित कर रही है, मदद कर रही है। मृत्यु उपयोगी नहीं हो सकती, उसके लिए सहायक होना संभव नहीं। उसकी कविता का शीर्षक न तो श्मशानभूमि था, न मृत्यु के बाद का पुनर्जन्म ही। उसकी कविता का विषय था इन दोनों के बीच के दिन। शीर्षक था— अशान्ति!

कई दिनों से वह इसका विश्लेषण करना चाहता था कि उछलती, कूदती, डूबती, ढकती, और उड़ती समुद्री लहरों की तरह किस तरह तीन दिन तक विशाल काली कीटयुक्त धरती पर चट्टानों और पत्थरों की वर्षा करके मृत्युहीन-प्रेम के अवतार पर आक्रमण किया गया था। इस धरती पर किस प्रकार तूफान प्रचण्ड वेग से आगे बढ़ा और पीछे हटा।

दो पँक्तियाँ उसके मस्तिष्क में निरन्तर चक्कर काटती रहीं—

'पास तुम्हारे, मन मुदित हमारे' और 'वक़्त आ गया, जाग उठो!'

नारकीय भ्रष्टाचार, सर्वग्राही मृत्यु ठीक उसके पास, उसकी रग-रग को छू रही थी; साथ ही वसन्त-ऋतु, मेरीमेगडोलेन और जीवन भी उसके बहुत करीब चले आये थे।

समय आ गया है अभ्युदय और उद्भव का!

सोलह

वह अच्छा होने लगा। अर्द्ध-बुद्धि युक्त व्यक्ति की तरह पहले तो वह प्रत्येक वस्तु की ओर देखता रहा। उसे कुछ भी याद नहीं आ रहा था। उसे किसी एक चीज़ का दूसरी वस्तु के साथ सम्बन्ध दिखाई नहीं देता। किसी वस्तु के प्रति कोई कौतूहल नहीं होता। बिस्तर पर उसके खाने की व्यवस्था टोन्या कर रही थी। वह भूल गया कि ऐसी चीज़ें अब भी कायम हैं। उसे उसमें परियों की कहानियों अथवा कविता जैसा स्वाद

आता। मानो यही रोगमुक्ति का उपयुक्त इलाज हो। फिर भी, जल्द ही वह सोचने लायक और वस्तुओं की ओर ग़ौर करने लायक हो गया। उसने टोन्या से पूछा—यह सब तुम्हें कहाँ से मिल गया?

—आपका ग्रोन्या हमारे लिए यह सब ले आया था।

—ग्रोन्या कौन?

—ग्रोन्या ज़िवागो।

—ग्रोन्या ज़िवागो?

—हाँ। ग्रोन्या ज़िवागो। आपका सौतेला भाई युवग्राफ। टोमस्क का आपका सौतेला भाई। जब तक आप बीमार थे, वह यहाँ रोज आया करता था।

—[illegible]न्डियर की टोपी पहनता है?

—हाँ! तो, आपने उसे देखा है। आप तो लगभग अचेत ही थे। वह कह रहा था कि वह आपको अच्छी तरह से जानता है। किसी एक मकान के पास उसने आपको देखा भी था। वह आपसे बात करना चाहता था, लेकिन उसे बहुत डर लग रहा था। आपके प्रति उसकी बड़ी श्रद्धा है। जो कुछ भी आप लिखते हैं, वह अवश्य पड़ता है। ये तमाम चीज़ें वही हमारे लिए ले आया है। चावल, मुनक्का, चीनी! अभी वह चला गया है। वह चाहता है कि हम भी उनके यहाँ चलें। अजीब लड़का है। मेरा खयाल है, वह सरकार से किसी न किसी रूप में सम्बन्धित है। वह कहता था कि एक दो साल के लिए हमें शहर से बाहर चले जाना चाहिए। 'गाँवों की ओर चल दो।' मैंने क्रूइगर जाने की बात सोची थी और इस बारे में उसका विचार पूछा था। उसने कहा है कि यह बहुत ही बढ़िया इरादा है। चारों ओर जंगल है। हम खेती-बाड़ी कर सकते हैं, साग-सब्जी उगा सकते हैं। बिना संघर्ष के, भेड़ों की तरह मरने से क्या फायदा?

यूराल्स से दूर, युर्यातिन शहर के पास वेरिकिनो इस्टेट की ओर उस साल के अप्रेल महीने में ज़िवागो परिवार चल पड़ा।

7

यात्रा

मार्च के अन्त के दिन हमेशा की तरह वर्ष के प्रारम्भिक गर्म दिन थे। इस कृत्रिम वसन्त के पश्चात् अधिक शीत वाली ऋतु आने ही वाली थी। ज़िवागो परिवार रवाना होने की तैयारियाँ कर रहा था। समाचार सुन कर आसपास के लोग चिड़ियों की तरह जमा हो गये। उनके शोरगुल से बचने के लिए उन्होंने उन्हें बताया कि ईस्टर के लिए सफाई हो रही है। ज़िवागो यात्रा के इस कार्यक्रम से सहमत नहीं था। इसलिए पहले तो वह योंही टालमटोल करता रहा। लेकिन अब ऐसा समय आ गया था कि उसे अपने विचार स्पष्ट रूप से कहने ही पड़े। उसने टोन्या और उसके पिताश्री से पूछा—अब भी आप सब लोग जाने के लिए आमादा हैं? और मैं ग़लत हूँ?

टोन्या ने जवाब दिया—आप ही तो कह रहे थे कि अगले वर्षों के लिए हमें कोई समुचित व्यवस्था करनी चाहिए। पता नहीं, मास्को के बाहर साग-सब्जी उगाने के लिए भूमि पर अधिकार की नयी प्रणाली कब स्थापित होगी? तब तक हम क्या करेंगे? ज़िन्दा कैसे रहेंगे? असली समस्या यह है; और इस बारे में आप चुप हैं।

अलेक्जेण्ड्रोविच महोदय बीच में बोल पड़े—यह निरा पागलपन है!

ज़िवागो ने आगे कहा—मुझे आपत्ति है अनिश्चितता के प्रति। हम आँखें बंद करके जिस ओर जा रहे हैं, उस जगह के बारे में हम कुछ भी नहीं जानते। वेरिकिनों में हमारे परिचित तीन आदमियों में से माँ और दादीजी तो मर गयीं। सम्भवत: दादाजी को भी बन्दी बना लिया गया हो, बशर्ते वे अभी तक कायम हों। आपको शायद मालूम नहीं, पिछले साल युद्ध के समय जंगल और कारखानों का उन्होंने एक सौदा किया

था। ये सब किसी दूसरे के सरनामे कर दिये गये हैं। पता नहीं, किसी बैंक के, अथवा किसी खास आदमी के। वास्तव में हमें मालूम ही क्या है? यह जागीर अब किसकी है? मेरा मतलब यह नहीं, कि यह किसकी सम्पत्ति है—चूल्हे में जाय वह, मुझे उसकी परवाह नहीं। लेकिन यह तो मालूम हो कि वहाँ कौन जिम्मेदार व्यक्ति है। कौन सारी व्यवस्था करता है? पता नहीं जंगलों की लकड़ियाँ काट ली गयीं हैं या नहीं, अथवा कारखाने चल रहे हैं या नहीं? सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि देश के उस भाग में किसके हाय में सत्ता है? और हमारे पहुँचते-पहुँचते सत्ता किसके हाय चली जायेगी? आप लोग मिकुलिस्सिन, अपने पुराने मैनेजर, पर भरोसा कर रहे हैं कि वह हमारी देखभाल कर लेगा? लेकिन कैसे कहा जा सकता है कि वह अभी तक वहाँ है; अथवा मर [illegible] [illegible] सिवाय नाम के और उसके बारे में क्या जानते हैं हम लोग? और यह भी हमें सिर्फ़ इसलिए याद है, क्योंकि दादाजी को इसका उच्चारण करने में तकलीफ हुआ करती थी। फिर भी मेरा इरादा यह नहीं है कि मैं आपकी उलझन बढ़ाऊँ। आपने इरादा कर ही लिया है: अच्छी बात है। मैं सहमत हूँ। अब इसे स्थगित करने में कोई तुक नहीं है। अब तो इस बात का ठीक-ठीक पता लगाना चाहिए कि यात्रा के लिए क्या-क्या आवश्यक प्रबन्ध करना होगा?

दो

यारोस्लास्काय स्टेशन की ओर सारी बातों का पता लगाने के लिए यूरी चल पड़ा। लकड़ियों के डंडों के बीच से, हाल के तंग रास्ते से, यात्रियों की अन्तहीन पँक्तियाँ धीरे-धीरे गुज़र रही थीं। उनसे कुछ दूर पथरीले फर्श पर भूरे रंग के फौजी कोट पहने हुए लोग पड़े थे। वे पड़े-पड़े खाँस रहे थे, इधर-उधर थूक रहे थे और गुम्बदों की प्रतिध्वनियों को गलत साबित करते हुए अपने ऊँचे स्वर में पता नहीं क्या बकझक कर रहे थे। ये थे वे व्यक्ति, जिन्हें कि संक्रान्ति-काल के बाद अस्पताल में बहुत अधिक भीड़ हो जाने के कारण निकाल दिया गया था। डॉ. ज़िवागो

मरीजों की इस तरह की भीड़ से परिचित था और रोगियों को छुट्टी देने का काम वह स्वयं करता था, लेकिन उसे मालूम नहीं था कि मरीजों की संख्या इतनी अधिक है और उनकी हालत इतनी नाजुक है कि शरण के लिए उन्हें रेल्वे स्टेशन पर आने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। एक रेल्वे-कुली ने डॉ. से कहा—आपको अवश्य ही प्राथमिकता मिलनी चाहिए। फिर भी जगह कब मिल सकेगी, इसकी जानकारी हासिल करने के लिए आपको रोज़ यहाँ आना होगा। आजकल गाड़ियाँ सोने की तरह दुष्प्राप्य हैं। सिर्फ़ भाग्य का ही भरोसा है।

अपनी दो अँगुलियों को अँगूठे से रगड़ कर उसने कहा—थोड़ा आटा, अथवा ऐसी ही कोई चीज़ दिये बिना काम नहीं चल सकता। आप तो जानते ही हैं कि बिना तेल के दिया नहीं जलता। आपसे अधिक क्या कहूँ? थोड़ी बहुत वोदका का प्रबन्ध किये बिना अधिक सफलता हासिल नहीं की जा सकती।

तीन

उन दिनों अलेक्जेण्डर अलेक्जेण्ड्रोविच को उच्च अर्थशास्त्रीय परिषद् के सलाहकार के रूप में कार्य करने के लिए आग्रह किया गया था, और डॉक्टर ज़िवागो को एक मरणासन्न सरकारी अधिकारी का इलाज करने के लिए बुलाया गया था। इसका मेहनताना उन्हें मिल गया। तत्कालीन सबसे कीमती मुद्रा के रूप में उन्हें वे चिटें मिल गयीं थीं, जिससे कि सीमित-ग्राहकों की दूकानों से सामान खरीदा जा सकता था। संत साइमन के मठ से कुछ आगे एक पुराने फौजी भण्डार में ऐसी ही एक दूकान थी। डॉक्टर और प्रोफेसर फौजी मकानों को पार कर उस गुम्बदाकार भवन के सामने पहुँच गये। एक दीवार से लगा कर दूसरी दीवार तक रुपये-पैसे की लेन-देन वाले काउण्टर की खिड़कियाँ लगी हुई थीं। एक शाँत और स्थिर व्यक्ति वहाँ खड़ा सामान तौल और नाप रहा था। अपनी चौड़ी पैंसिल से सूची में निशान करते-करते वह भण्डारघर की ओर देख लिया करता। अधिक ग्राहक थे नहीं, इसलिए

उनकी बारी जल्द ही आ गयी। भण्डारी ने चिटों की ओर देखते हुए पुकारा—थैलियाँ!

प्रोफेसर और डॉक्टर ने तकियों की अनेक थैलियाँ निकाल कर सामने पसार दीं। उन्होंने आश्चर्यचकित नेत्रों से देखा कि आटा, दाल, मैदे की मिठाई, शक्कर, चर्बी, साबुन, दियासलाई, कागज, आदि उनके थैलों में भरा जा रहा है। भण्डारी के सद्व्यवहार के प्रति कृतज्ञता महसूस करते हुए, उसका अधिक समय बर्बाद न करने के इरादे से, उन्होंने सारा सामान बड़े बोरे में भरा और कन्धे पर लाद कर वे वापस लौट पड़े। बाहर आने पर भोजन प्राप्ति के विचार से ही नहीं, वरन् वे इस विचार से मदमस्त हो रहे थे कि उनका जीवन बिलकुल व्यर्थ नहीं है। वे भी उपयोगी हैं। घर पहुंचने पर टोन्या उन पर तारीफ की जो बौछार करेगी, सचमुच वे उसके अधिकारी हैं।

चार

सरकारी दफ्तरों में यात्रा सम्बन्धी कागजातों की जाँच-पड़ताल करवाने में और वापस मास्को लौट आने पर जगह मिलने की लिखा-पढ़ी करवाने में लोगों का सारा दिन बर्बाद हो जाता।

टोन्या इस समय घर-गृहस्थी की चीज़ें छाँट रही थी। वह प्रत्येक वस्तु को हथेली में उठा कर बीस बार तौलती कि उसकी निश्चित धारणा के अनुसार ले जाये जाने वाले सामान में इसे शामिल करना चाहिए या नहीं? साथ में ले जाये जाने वाले सामानों का थोड़ा-सा भाग ही ऐसा था जो उनके लिए व्यक्तिगत रूप से काम आ सकता था। बाकी का सामान तो इसलिए ले लिया गया था कि रास्ते में चीज़ें खरीदने का वह साधन बन सके। वेरिकिनो पहुँचने के कुछ हफ्तों तक भी इसी से उन्हें काम चलाना था।

खुली खिड़कियों में से वासन्ती पवन के साथ ताजी कटी हुई सफ़ेद रोटी की सुगन्ध आ रही थी। मुर्गे बाँग दे रहे थे। बच्चे आँगन में खेलते हुए

शोर मचा रहे थे। खुली खिड़की से आकर हवा सारे कमरे में फैल गयी और गर्म कपड़ों के बीच रखी जाने वाली माउथबॉल्स की गन्ध उसमें महक उठी। पहले जो लोग चले गये थे, उनके अनुभव पर आधारित कुछ निश्चित सिद्धान्तों के आधार पर, साथ ले जाने वाले सामानों की सूची बनाई गयी। बाहर खेल रहे बच्चों की किलकारियाँ और गौरैया चिड़िया की चहचहाहट मानो उसके कानों के पास आकर आवश्यक निर्देशन दे रही थी। ध्वनि आई—कपड़े के लम्बे थान? लेकिन रास्ते में तलाशी हो सकती है। सभी प्रकार के सामानों की तरह कपड़े भी काफी फटे हुए होने चाहिए। सन्दूक अथवा भारी टोकरियाँ साथ में नहीं ली जा सकतीं, क्योंकि रास्ते में कुली मिलने की संभावना बिलकुल नहीं है। सामान इतना हल्का और छोटा होना चाहिए कि कोई स्त्री अथवा बालक भी आसानी से उठा सके। तम्बाकू और नमक काफी उपयोगी वस्तुएँ हैं, मगर खतरनाक भी कम नहीं। मुद्राएँ, केरेन्सी सरकार द्वारा प्रचलित नोट थीं। सबसे मुश्किल है ज़रूरी कागजातों का सुरक्षित रूप से साथ में ले जाना।

पाँच

उनके रवाना होने से एक दिन पहले, बर्फ़ बिखेरने वाले भूरे बादल आकाश में उड़ने लगे थे। वे धरती पर चक्रवात के रूप में गिरते हुए, गलियों के घटाटोप अन्धकार में सफेदी में लिपटे हुए दूर तक फैल गये। बर्फ़ीला तूफान आया।

रवाना होने की सारी तैयारी हो चुकी थी। सामान बाँधा जा चुका था। शेष सामान के साथ यह मकान एक बूढ़े दम्पति को सुपुर्द कर दिया गया। वे युगोरोवना के सम्बन्धी थे। ये सज्जन मास्को की एक दूकान में काम करते थे और उन्होंने ही गत शीत ऋतु में टोन्या की आलू और लकड़ियों; कपड़े और फर्नीचर के सौदों में मदद की थी।

मार्केल पर विश्वास नहीं किया जा सकता। अपनी राजनीतिक बैठकों में नायक-पद पर विराजमान होकर यद्यपि वह यह तो नहीं कहता था कि

उसके मालिकों ने उसका रक्त चूस लिया है; इसी बात को वह यों कहता था कि उन्होंने जानबूझकर उसे अज्ञानान्धकार में रखा। इस तरह पिछले वर्षों के अज्ञान का अभियोग वह अपने मालिक पर लगाया करता।

मेज की दराज़ों तथा आलमारियों का अन्तिम निरीक्षण करते हुए खोल कर, बन्द कर, ताला लगाते हुए टोन्या ने उस वृद्ध परिवार को अन्तिम आवश्यक हिदायतें दे दीं।

कुर्सियाँ और मेजें दीवारों के सहारे लगा दी गयी थीं। पर्दे गिरा दिये थे। कोने में गट्ठरों का ढेर लगा हुआ दिखाई दे रहा था। सज्जाविहीन खिड़कियों से देखने पर, खाली कमरे से दुख भरे दिन मूर्तिमान हो उठते। यूरी को याद आया वह दिन, जब उसकी माँ की मृत्यु हुई थी। टोन्या और अलेक्जेण्ड्रोविच को भी अन्ना की मृत्यु के अन्तिम दिन की याद आ गई थी। पता नहीं क्यों, उनको लग रहा था कि इस मकान में यही उनकी अन्तिम रात्रि है—फिर जाने कब वे वापस लौटकर यहाँ आ सकेंगे? एक दूसरे को दुख से बचाने के लिहाज से कोई भी मन के इन अपशकुनों की चर्चा करना नहीं चाहता था; फिर भी उनका मन उदास हो गया था। इसी छत के नीचे बिताई गयी पिछली ज़िन्दगी के सुख-दुख भरे क्षण याद करके उनकी आँखों में आँसू छलक आये; जिसे वे बड़ी मुश्किल से रोक पा रहे थे। अपनी मनोस्थिति पर नियंत्रण रखते हुए टोन्या इस घर की संरक्षिका से अन्त तक बातचीत करती रही—उनकी कृपा के लिए वह उनकी अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा कर रही थी और कोशिश कर रही थी कि वे उसे कृतघ्न न समझें। चोली तथा कपड़ों की भेंट देते हुए भी वह उनसे कष्ट के लिए बार-बार क्षमा माँग रही थी।

सज्जाहीन खिड़की से बाहर के सूचीभेद के अन्धकार में लिपटी हुई रात पसरी हुई पड़ी थी।

छः

उन्होंने प्रातःकाल घर छोड़ा। सब नींद में सोये ही पड़े रहते, किसी को मालूम ही न हो पाता, और वे चले गये होते। मगर जेबारोतिना, जो कि

सामाजिक घटनाओं का सूक्ष्म विवरण रखने में बेहद कुशल थी, पता नहीं कहाँ से आकर वहाँ टपक पड़ी और चिल्लाई—साथियो, सावधान! सावधान! हमारे पुराने पड़ोसी, ग्रोमेको-परिवार हमसे विदा हो रहा है। आओ, इन्हें विदा कर दें।

उसकी चिल्लाहट के कारण सब लोग उठकर, ड्योढी में आकर इस तरह जमा हो गये मानो तस्वीर खिंचाने के लिए लोग क्रम-बद्ध रूप से खड़े हों। काँपते हुए, जंभाई लेते हुए, कन्धों के कोट नीचे की ओर खींचते हुए और जल्दी में पहने जूतों को ठीक से पाँव में धँसाने की चेष्टा करते हुए लोग उन्हें विदा करने के लिए तैयार हो गये। मार्केल ड्योढ़ी के पास वाली सीढ़ियों पर लाश की तरह लटका हुआ पड़ा था। उस जमाने की उस शुष्क अवस्था में भी, पता नहीं कहाँ से, इतनी शराब लाकर पी गया था। घातक नशे से बेहोश, इस लाश के बोझ से सीढ़ियों की रेलिंग चरमरा रही थी, मानो टूट ही पड़ेगी। वह स्टेशन तक सामान ले जाना चाहता था। लेकिन किसी ने उसके आग्रह की ओर ध्यान नहीं दिया। मन ही मन उसे यह बात बुरी लगी। किसी तरह उससे पिण्ड छुड़ाकर वे बगल की गली में आ गये।

हवा धीमी हो गयी थी, गत रात्रि की अपेक्षा अधिक बर्फ़ गिर चुकी थी। अन्धेरा था। बर्फ़ की परतें ऊन की तरह धीमे-धीमे नीचे की ओर तैरती हुई आ रही थीं; और जो टुकड़े ऊपर रह गये थे, लगता था उन्हें नीचे तक आने में संकोच हो रहा हो! अर्बत में बर्फ़ का इतना ज़ोर नहीं था। गली की चौड़ाई के आकार की, रंगमंच के धवल पर्दे की तरह बर्फ़ गिर रही थी। राह चलते लोगों के कदमों के पास वे झालर के रूप में लिपट जातीं ताकि वे आगे बढ़ने का विचार छोड़ दें; और महसूस करें कि मौसम कैसी है।

रास्ते में सिर्फ़ ये ही यात्री थे। एक स्ले गाड़ी में वे इस गली को तेजी से पार कर गये। सामान सहित स्ले स्टेशन पर पहुँच गयी। ज़िवागो को उसको अपनी प्रार्थना के अनुसार पैदल चलने की इजाजत मिल गयी थी।

सात

स्टेशन पहुँचने पर ज़िवागो ने देखा कि टोन्या और अलेक्जेण्ड्रोविच पहले से ही अन्तहीन लाइन में खड़े हैं। बाहर की ओर घूमते हुए साशा और नुशा अन्दर झाँक कर बारम्बार देख रहे हैं कि वे बड़े आदमियों की इस लाइन में शामिल हो सकते हैं या नहीं? उनके गले, कलाइयों और टखनों पर मोम की मोटी पर्त पोत दी गयी थी ताकि जूँएँ न पड़ जाएँ। काफी दुर्गन्ध आ रही थी। कतार काफी दूर तक पसरी हुई थी। प्लेटफार्म से लगभग आधा मील से भी अधिक दूरी पर उन्हें गाड़ी मिलने वाली थी। सफाई करने वालों के अभाव के कारण स्टेशन गन्दगी-भरा दिखाई दे रहा था। धूल और बर्फ़ से आच्छादित प्लेटफार्म के बाहर की गलियाँ हमेशा-सी दिखाई नहीं दे रही थीं। टोन्या ने इशारे से यूरी को अपने पास बुला कर ज़ोर-ज़ोर से समझाया कि यात्रा सम्बन्धी कागजों पर कहाँ मुहर लगवानी चाहिए?

—दिखाओ तो, उन्होंने क्या लिखा है?

कंधे के पीछे से पढ़ते हुए कतार में खड़े एक आदमी ने बीच में ही कहा—'यह तो विशेष डिब्बे के लिए है!' कहने वाला उस किस्म के स्पष्टवादी व्यक्तियों में से था जो कि हर परिस्थिति में उचित नियमों की जानकारी रखते हैं और पूरी कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ चर्चा करने में तत्पर रहते हैं। इस तरह के आदमियों के लिए किसी भी परिस्थिति को अंगीकार कर लेना कठिन नहीं होता। उसने आगे समझाया—इस मुहर के कारण, यदि यात्रियों के लिए अलग डिब्बा हो, तो उसमें जगह पाने का आपको हक है। उस पर दावा करने का आपको अधिकार है।

—यात्रियों का डिब्बा! अजी, गाड़ियों के बीच, धक्कों से बचाने वाली जो जगह होती है न, वहाँ पर भी यदि आपको जगह मिल जाय तो खुदा का शुक्र मनाइयेगा।

उस अटल सिद्धान्तवादी व्यक्ति ने दूसरों की बातों की ओर ध्यान न देने का आग्रह करते हुए आगे समझाया—सभी विशेष गाड़ियाँ हटा दी गयी

हैं। अब तो फौजी सैनिक, अपराधी लोग, जानवर, आदमी आदि—सबके लिए एक ही प्रकार की गाड़ी है; या यों कहो कि ये सब उसी गाड़ी के लिए हैं।

—बातें करने में खर्च ही क्या होता है? वैसे तुम चाहे जो कह सकते हो, लेकिन जो बात कहो उसे इतने साफ़ तरीके से कहो कि किसी भले आदमी की समझ में आ जाय।

—हाँ जी, आपने काफी समझा दिया है; और वे यह स्वीकार करते हैं कि उन्हें विशेष डिब्बे में जगह मिलने की मुहर लगा हुआ कागज प्राप्त है। लेकिन समझाने का इतना कष्ट करने से पहले, आपको यह तो देख लेना चाहिए कि इस तरह के आदमी विशेष डिब्बे में जा कैसे सकते हैं? विशेष डिब्बा सैनिकों से भरा हुआ है। उनके पास बन्दूक है और आँखें पक्की निशानेबाज! उनमें से कोई व्यक्ति लोगों की ओर देखता है—जैसे किसी सम्पत्तिशाली व्यक्ति की ओर देखा जाता है! फिर यह तो डॉक्टर है। उससे भी बदतर! बन्दूक उठा कर—धाँय—काम खत्म! समझे?

यदि लोगों का ध्यान किसी अन्य चीज़ के प्रति आकर्षित न हो गया होता तो डॉक्टर के प्रति प्रकट की जाने वाली यह सहानुभूति न जाने किस सीमा पर जा पहुँचती। कुछ देर तक लोग काँच की खिड़कियों से उत्सुकतापूर्वक रास्ते की ओर देखते रहे। छत के अन्तिम छोर से गिरती हुई बर्फ़ दिखाई दे रही थी। ऐसा लगता मानो पानी की मछली को चारा डालने के लिए रोटियों के छोटे-छोटे टुकड़े डाले जा रहे हों; और ये टुकड़े धीरे-धीरे पानी में डूबते हुए से धरती पर शान्त भाव से गिर कर अदृश्य हो रहे हों। पिछले आध घण्टे से अनेक अपरिचित चेहरे स्टेशन पर इधर-उधर घूम रहे थे। लोगों का खयाल था कि वे रेल्वे में काम करने वाले लोग होंगे। तभी लोग उस तरफ दौड़ पड़े, जहाँ से धुएँ का छोटा सा बादल उठता हुआ नजर आ रहा था।

क़तार में से आवाज़ें आने लगीं—'बदमाशो, दरवाजा खोलो।' जन-समुदाय उमड़ कर दरवाजे से जा टकराया। पीछे के लोग आगे वाले आदमियों को धकेल रहे थे।

—देखो, यह क्या हो रहा है? हमें तो यहाँ ताले में बन्द कर दिया गया है और उधर कुछ नालायकों को मौका मिल गया, और वे लोग घुसे चले आ रहे हैं। दुष्टों, दरवाजा खोल दो, वर्ना हम इसे तोड़ डालेंगे। दोस्तो, आओ, आगे बढ़ें।

सर्वद्रष्टा सैद्धान्तिक व्यक्ति बोला—भला, इन मूर्खों को उस भीड़ से ईर्ष्या करने की क्या ज़रूरत है? ये बेगार में पकड़े हुए सैनिक हैं, जो कि पेट्रोग्राड से मजदूरी करने के लिए बुलाये गये हैं। इन्हें उत्तरी स्टेशन से वोलोगडा भेजा जा रहा था; किन्तु अब उन्हें पूर्व की ओर भेजा जा रहा है। वे कोई अपनी इच्छा से यात्रा थोड़े ही कर रहे हैं? उन पर तो पहरा लगा हुआ है।

आठ

तीन दिनों तक यात्रा करने के बावजूद भी वे मास्को से अधिक दूर नहीं जा सके। ठंड काफी थी। खिड़की से बाहर के रास्ते, मैदान, जंगल और ग्रामीण घरों की बर्फ़ में गहराई से डूबी हुई छतें दिखाई दे रही थीं।

ज़िवागो परिवार को खिड़की के एक ओर, छत के नीचे, सोने की पटरी की ऊपरी पँक्ति का एक कोना मिल गया था। यही सबसे बड़ा सौभाग्य था। टोन्या ने पहले कभी सरकने वाले भारी दरवाजों वाली और जमीन से काफी ऊँची मालगाड़ी में यात्रा नहीं की थी। पहले तो औरतों को उन डिब्बों में चढ़ना-उतरना मुश्किल-सा लगा। यूरी ने उन्हें हाथ पकड़ कर ऊपर चढ़ाया। लेकिन बाद में वे अभ्यस्त हो गयीं। टोन्या के खयाल में यह पहियों वाला एक अस्तबल था; और उसे पक्का विश्वास था कि पहले ही झटके में उसके अँजर-पँजर बिखर जायेंगे। लेकिन लगातार तीन दिन तक गाड़ी की परिवर्तित दिशा और गति की ओर वे धक्के खाते रहे, फिर भी अक्षय बने रहे। टोन्या की धारणा निराधार साबित

हुई। 23 डिब्बों की यह गाड़ी जब भी किसी ग्रामीण प्लेटफार्म पर रुकती, तो उसका अगला अथवा पिछला भाग प्लेटफार्म से काफी दूर खड़ा हो पाता। अगले डिब्बे में नौसेना के सैनिक, बीच के डिब्बे में यात्री और अन्त के आठ डिब्बों में बेगार लोग थे। प्रत्येक उम्र, दशा और व्यवसाय के लगभग 500 यात्रियों से गाड़ी लदी हुई थी। इन सबने मिलकर बड़ा विचित्र दृश्य उपस्थित कर दिया था। पीटर्सबर्ग के अमीर, चुस्त वकील, शेयर बाजार के दलाल, टैक्सी-चालक, फर्श साफ़ करने वाले, स्नानागार-सेवक, तातारी व्यापारी, भागे हुए पागल, दूकानदार और संन्यासी सभी वहाँ उपस्थित थे। तप्त-सिगड़ियों के सामने बैठे शेयर बाजार के दलाल और वकील अन्तहीन गप्पें हाँक रहे थे। दूसरी ओर नंगे पैर, पैन्टों के बाहर तक निकली हुई कमीजें पहने, दाढ़ी और बिना दाढ़ी वाले लोग दरवाजे के पास खड़े उदास और मूक भाव से रास्ते के ग्रामीणों और किसानों को देख रहे थे। चूँकि बेगार सैनिकों के लिए जितने डिब्बे निश्चित किये गये थे, उनमें भीड़ बहुत थी और वे उसमें समा नहीं पा रहे थे, इसलिए उनमें से कुछ लोगों को यात्रियों के डिब्बे में भर दिया गया था।

नौ

जब कभी गाड़ी खड़ी होती, टोन्या सावधानी के साथ बैठ जाती कि कहीं उसका सिर छत से टकरा न जाय। गाड़ी के धीमी होने पर, स्टेशन के आकार, वहाँ रुकने के समय और लाभदायक आदान-प्रदान के सौदे के भावी परिणाम का अन्दाज लगाने के लिए वह दरवाजे की दरारों से झाँकने लगती। पटरी के अनेक जोड़ों और घुमावों के कारण जब गाड़ी उछल कर खड़ी हो गयी तो टोन्या की नींद खुल गयी। काफी बड़ा स्टेशन मालूम पड़ता था। आँखें मलते हुए, बाल संवारते हुए उसने गठरियों में से 'छोटे मुर्गों, घोड़े की लगामों एवं पहियों' से चित्रित एक टॉवेल निकाला। यूरी भी जाग रहा था। उसे उतरने में उसने मदद की। सिगनल देने के छोटे-छोटे घर और रास्ते की बत्तियाँ, बर्फ़ के रूमाल फैलाये हुए वृक्ष दरवाजे के सामने से गुज़र गये। गाड़ी रुकने से पहले ही

अस्पृश्य बर्फ़ के फ़र्श पर नाविक कूद पड़े और उन ग्रामीण औरतों के पास पहुँच गये जो भोजन का अवैधानिक व्यापार कर रही थीं।

जिस प्रकार बर्फ़ पर फिसलने वाले लोगों की दौड़ शुरू होने पर लोग रास्ता दे दिया करते हैं उसी तरह उड़ते हुए फीतों वाली टोपी पहने, काली वर्दी वाले नाविकों के तेजी से आने पर लोगों ने उन्हें जगह दे दी। जिस प्रकार भविष्यवक्ता के सम्मुख लोग उत्तेजित हो जाते हैं, उसी तरह एक दूसरे के पीछे छिपती हुई, लजाती ग्रामीण बालाएँ घर की बनी चटनी, उबला हुआ माँस और ताजी रोटियाँ बेच रही थीं। जब भी ये नाविक उनसे भद्दी मजाकें करने लगते शाल में लिपटी हुई वे अपने आप में सिमट-सिकुड़ कर लज्जा से लाल हो उठतीं, लेकिन मन ही मन वे उनसे इसलिए डरती थीं क्योंकि उन्हें मालूम था, कि इन्हीं ने स्वतंत्र व्यापार को बंद करवा दिया था। गाड़ी खड़ी होते ही अनेक यात्री भी प्लेटफार्म पर आ पहुँचे थे। उन्हें देख कर, उन लड़कियों का डर खत्म हो गया और वे परेशानियों से छुटकारा पा गयीं। उनका व्यापार तेजी से चलने लगा। कन्धे पर तौलिया लटकाये टोन्या इन सामानों पर नजर डालती हुई, स्टेशन के पिछले भाग की ओर जा रही थी। जैसे उसे सामान खरीदना न हो, और सिर्फ़ हाथ-मुँह धोने ही जाना हो। कई औरतों ने उसे पुकारा—अजी, इस तौलिये के बदले आप क्या लेंगी?

जैसे उसने ध्यान ही न दिया हो, वह अपने पति के पीछे, उनके संरक्षण में आगे बढ़ती रही। लाल रंग की तस्वीरों वाले शाल में लिपटी हुई एक औरत एक कोने में बैठी हुई थी। चित्रित तौलिये पर नजर पड़ते ही वह खुश हो गयी। वह टोन्या के पीछे-पीछे चल दी। अपना सामान उसे बताते हुए वह बड़बड़ाई—देखिये, आपने ऐसी चीज़ कभी नहीं देखी होगी। आपको पसन्द है? इसके बारे में ज्यादा सोचिये-वोचिये मत, वर्ना हाथ से निकल जायेगी। इस तौलिये के बदले में मैं इसका आधा भाग दे सकती हूँ। आप यह सौदा करेंगी? अन्तिम बात पर टोन्या का ध्यान ही नहीं गया। उसने पूछा—देवी, क्या मतलब है आपका?

सिर से पूँछ तक पकाये हुए और दो भागों में बँटे हुए खरगोश से उसका मतलब था। बोली—इस तौलिये के बदले इसका आधा भाग मैं आपको दे सकती हूँ। इतने ग़ौर से आप क्या देख रही हैं? यह कुत्ते का नहीं, खरगोश का माँस है। मेरा पति एक शिकारी है। उन्होंने अपने सामान का आदान-प्रदान किया। लोगों का विश्वास था कि सौदा लाभदायक रहा। मन ही मन टोन्या लज्जित हो रही थी कि उसने उस बिचारी किसान-रमणी को ठग लिया; जब कि अपने इस सौदे से ख़ुश वह स्त्री अपनी सहेली के साथ, अपने गाँव की ओर चल पड़ी। दूर तक बर्फ़ीला मार्ग चला गया था। उस बर्फ़ पर फिसलते हुए चले जाना बड़ा ही दिलचस्प लगता।

इसी समय भीड़ में शोर-गुल मचा। एक बुढ़िया चिल्ला रही थी—अरे ओ! कहाँ चल दिये? मेरे पैसे कहाँ हैं? तुमने मुझे पैसे दिये ही कब? बेशर्म चोर कहीं के! देखो तो इसे, लोभी सूअर कहीं का! भले चीखिये अथवा चिल्लाइये, वह बेशर्म घूम कर भी पीछे की ओर नहीं देखेगा! रोको, रोको! मैं सच कहती हूँ मिस्टर-कामरेड, मुझे उसने लूट लिया। पकड़ो, उस चोर को। देखो वह जा रहा है। वह रहा। पकड़ो उसे।

—कौनसा व्यक्ति?

—वही साफ़ दाढ़ी-मूँछों वाला। बेहयाई से हँसता हुआ जो जा रहा है न, वही।

—वही? जिसकी आस्तीनों में छेद निकले हुए हैं?

—हाँ-हाँ, वही। पकड़ो उसे।

—जिसकी कुहनियाँ जुड़ी हुई हैं, वह?

—हाँ-हाँ, वही। हे भगवान, मैं लुट गयी।

—यह सब यहाँ क्या हो रहा है?

—एक आदमी ने थोड़ा सा दूध और कुछ कचोड़ियाँ पेट में धर लीं और बिना पैसे दिये चल दिया। इतनी-सी बात है। इसीलिए यह बुढ़िया चीख रही है।

—यह तो बहुत बुरी बात है। ऐसा नहीं होना चाहिए। लोग उसे पकड़ते क्यों नहीं?

—उसका पीछा करना, उसे पकड़ना? अजी, उसके सारे शरीर पर कारतूस की पेटियाँ जड़ी हुई हैं। ज़रा पीछा करके देखिये, वह आपका पीछा करने लगेगा।

दस

चौदहवें डिब्बे में अनेक बेगार सैनिकों के साथ उनका संरक्षक वोरोन्यूक भी था। तीन आदमी बाहर खड़े हो गये। उनमें से एक था प्रोखोर प्रित्यूल्येव, यह किसी शराबखाने का रोकड़िया माना जाता था। दूसरा था वास्या ब्रिकिन, यह था 16 वर्षीय एक किशोर, जो लोहा ढालने वाले एक कारखाने में काम सीख रहा था। तीसरे सज्जन थे, कोस्टोयड-एम्स्कॉ, ये साहब श्रमिक-सहकारी दल से सम्बन्धित, सफेद बालों वाले क्राँतिकारी थे। पुराने राज्य के सभी दण्ड सम्बन्धी समझौतों के वार्तालापों में वे हाजिर थे। बेगार के लिए चुने हुए सैनिक पहले तो एक दूसरे से नितान्त अपरिचित थे, पर अब वे एक दूसरे से अच्छी तरह परिचित हो रहे थे। वास्या और रोकड़िया दोनों व्यात्का प्रान्त के निवासी थे। यह गाड़ी उनके ज़िले से होकर गुज़रने वाली थी।

प्रित्युलेव मालमीश का निवासी था। शीतला के दाग़ों से भरा हुआ उसका चेहरा बड़ा भयानक लगता। बाँहों के नीचे लटकता हुआ, पसीने से भरा उसका काला कुरता उसे मोटी औरत की चोली की तरह आनन्द दे रहा था। मूर्तिवत चुपचाप बैठा, वह पता नहीं क्या सोचा करता और फुंसियों को कुरेदता रहता, जब तक कि उसमें से खून अथवा पीब नहीं निकलने लगता। नेव्सकी से नीचे उतरते वक़्त कुछ दिनों पहले, दोपहर के समय, वह लिटेनी गली के नुक्कड़ पर फौजी गश्त के चँगुल में फँस गया था। उसे अपने कागजात दिखाने को कहा गया। उसके पास चतुर्थ श्रेणी की भोजन-प्राप्ति की पुस्तिका थी। यह पुस्तिका ग़ैर-मजदूरों को दी जाती थी, जिससे कि कुछ भी खरीदना संभव नहीं था। इन्हीं कारणों

से पकड़े हुए लोगों के बीच उसे भी धर लिया गया और सुरक्षा पूर्वक सैनिक छावनी में भेज दिया गया। पहले वाले दल के समान यह दल भी आर्केजल मोर्चे पर खाइयाँ खोदने के लिए भेजा जाने वाला था। लेकिन अब रास्ता बदल दिया गया था और वे मास्को होकर पूर्व की ओर भेजे जा रहे थे। लूगा में उसने युद्ध से पहले नौकरी की थी। वहाँ उसकी पत्नी थी। अपने पति के बारे में दुर्भाग्यपूर्ण समाचारों को सुन कर उसने सोचा कि उसका पति वोलोगडा (आर्केजल के जंक्शन) की ओर भेजा गया होगा। वह उसे छुड़ाने के लिए तुरन्त उस ओर चल पड़ी। लेकिन चूँकि यह दल उस ओर गया ही नहीं था, इसलिए वह अपने पति को पा नहीं सकी। अच्छा होता, यदि वह अपने घर पर ही रुकी रहती। उन दिनों यह कहना बड़ा कठिन था कि कौन व्यक्ति, कितने दिनों के लिए, कहाँ होगा!

प्रित्युलेव का युद्ध के प्रारम्भ होने पर जहाँ तबादला कर दिया गया था, वहाँ वह पैलेगिया के यहाँ रहता था। जिस समय उसे गिरफ्तार किया गया था उन्होंने घूमने के लिए विदा ली ही थी। वह अपने घर के लिए चल पड़ी और यह किसी से मिलने के निश्चित कार्यक्रम के अनुसार दूसरी ओर चल पड़ा। पैगेलिया का शरीर सुडौल था, घने केश और सुन्दर हाथ वाली वह एक मध्यवर्गीय स्थूलकाय स्त्री थी। उसके बाल लापरवाही के साथ कंधों तक लटके रहते। इस समय यही पैगेलिया इसी डिब्बे में यात्रा कर रही थी। स्वेच्छा से उसने इस यात्रा में उसके साथ रहना तय किया था। यह कह सकना मुश्किल था कि इस ढीले-ढाले, कुरूप मनुष्य में ऐसी कौनसी चीज़ थी, जिसने इस रमणी को उसकी ओर आकर्षित कर लिया था?

लेकिन यह स्पष्ट था कि वह उसे एक पल के लिए भी छोड़ना नहीं चाहती थी। दूसरे एक और डिब्बे में ओग्रिस्कोवा नामक छरहरे बदन की प्रित्युलेव की एक अन्य महिला-मित्र भी सफर कर रही थी। पैगेलिया उसे कई भद्दे नामों से सम्बोधित किया करती। इन दोनों

प्रतिद्वन्द्वियों में साँप-नेवले का वैर था और दोनों बड़ी चतुराई से एक दूसरे से अपना बचाव करती रहती थीं। ओग्रिस्कोवा अपने डिब्बे से एक बार भी नीचे नहीं उतरी; और यह कहना मुश्किल था कि फिर भी वह किस तरह अपने प्रेमी से सम्पर्क बनाये हुए थी। इंजिन में कोयला-पानी डालने के लिए जब सब लोग चले जाते, तो सिर्फ़ दूर से ही उसे देख कर वह सन्तोष कर लेती।

ग्यारह

वास्या की कहानी अलग है। लड़ाई में बाप के मर जाने के बाद उसकी माँ ने उसके चाचा के यहाँ काम सीखने के लिए उसे भेज दिया था। अप्राक्सिन बाजार में उसके चाचा की अपनी दूकान थी। स्थानीय सोवियत अधिकारियों ने कुछ प्रश्नों का जवाब देने के लिए उसे पिछली शीत ऋतु में बुलाया था। गलती से वह श्रमिक-संवर्ग-निर्वाचन-मण्डल के कार्यालय में चला गया। सारे कमरों में बेगार सैनिक भरे हुए थे। कई आदमियों के साथ उसे भी घेर कर रात भर के लिए सैमियोनोवस्की-सैनिक-छावनी में बन्द कर दिया। सुबह उन्हें स्टेशन पर ले जाया गया। इन सारी गिरफ्तारियों का समाचार तुरन्त फैल गया और कैदियों के परिवार वाले उनसे मिलने के लिए घटनास्थल पर उपस्थित हो गये। अपनी चाची के साथ वास्या भी आया था। इसी वोरोन्यूक से वास्या के चाचा ने अपनी पत्नी से मिलने के लिए थोड़े समय की मुक्ति की प्रार्थना की। किसी न किसी को शारीरिक रूप से बन्धक रखना आवश्यक था। उसके अभाव में उसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की जा सकी। अंत में वास्या के एवज में उसके चाचा को छुट्टी मिली। इसके बाद वास्या ने अपने चाचा-चाची को फिर कभी नहीं देखा।

वास्या को कुछ भी मालूम नहीं था। जब उसे इस चाल की बात मालूम हुई, तो वह वोरोन्यूक के पाँवों में लोट गया, आँखों में आँसू भरे उसने उसके हाथ चूमे। गिड़गिड़ा कर उसने उसे छोड़ देने की प्रार्थना की। लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। वैसे वोरोन्यूक का स्वभाव कठोर नहीं

था। उन संकटपूर्ण दिनों की अनुशासन की कठोरता के कारण उसने प्रत्युत्तर में बताया कि उसके चाचा पर कितने इल्जाम लगाये गये हैं! बस, इसके बाद वास्या इस श्रमिक दल में शामिल कर लिया गया। चाहे किसी की सरकार हो, सहकारवादी कोस्टोयिड का सम्बन्ध जेलरों के साथ अच्छा रहा है और वह सदैव उनका आदरपात्र बना रहा है। उसने कई बार इस दल के मुखिया का ध्यान वास्या की शोचनीय अवस्था की ओर आकर्षित किया था। मुखिया ने इस भयंकर गलती को स्वीकार तो किया, लेकिन निश्चित स्थान तक पहुँचने से पहले कुछ भी करने में कितने प्रकार की वैधानिक बाधाएँ हैं—यह बताई। गन्तव्य स्थान पर पहुँच कर यथासम्भव सहायता करने का उसने वचन दिया।

वास्या का शरीर सुडौल था। चेहरा आकर्षक। लगता, मानो वह कोई शाही सेवक अथवा किसी चित्र में चित्रित देवदूत हो। बहुत अधिक भोला और सच्चरित्र। घुटनों में हाथ लपेटे बड़ों के चरणों के नीचे बैठ कर उनकी ओर देखते हुए उनकी अनुभव भरी नित-नूतन कथाओं अथवा बातों को सुनना उसे बहुत पसन्द था। बातचीत के दौरान जब वह अपने आँसू रोकने का प्रयत्न करता अथवा जब मुक्त हास्य से उसका कण्ठावरोध हो जाता तो उसके चेहरे पर उभरने वाली माँसपेशियों को देख कर ही बातचीत का आनन्द उठाया जा सकता था।

बारह

ज़िवागो परिवार ने सहकारवादी कोस्टोयड को भोजन पर निमंत्रित किया था। वह उनकी सीट पर बैठा खरगोश की टाँग चूसते हुए लम्बी-लम्बी सीत्कारें भर रहा था। हवा के डर के मारे वह बार-बार जगह बदल रहा था। अन्त में अपनी पसन्द की जगह पर वह सुव्यवस्थित रूप से विराजमान हो गया। 'अब ठीक है' कहते हुए, उसने अपने हिस्से का खरगोश का माँस समाप्त किया, अँगुलियाँ जीभ से साफ़ कीं और फिर उन्हें रूमाल से पोंछ लिया। ज़िवागो परिवार को धन्यवाद देते हुए उसने कहा—यह खिड़की ठीक से बन्द नहीं है। इसे सीमेंट से बन्द कर देना

चाहिए। खैर, मैं कह यह रहा था कि खरगोश का माँस सचमुच बहुत ही स्वादिष्ट था।—हाँ, माफ कीजियेगा, इससे यह नहीं कहा जा सकता कि कृषक उन्नति कर रहे हैं।

—आह, आइये, बैठिये। देखिये, उन स्टेशनों की ओर, जहाँ यह गाड़ी ठहरती है। चहारदीवारें और पेड़ अभी भी मस्तक ऊँचा उठाये खड़े हैं। मानो दावानल इनका कुछ भी बिगाड़ न सका हो। देखिये, ये बाजार, ये औरतें! कितना आश्चर्यजनक! अर्थात् कहीं-कहीं अभी भी जीवन मौजूद है और लोग खुश हैं। कोई व्यक्ति दुखित नहीं है। क्या यह इस बात का न्यायसंगत पहलू नहीं है?

—यदि होता, तो ऐसा ही होता। लेकिन बात ऐसी नहीं है। कैसे कहा जा सकता है कि यही बात है? स्टेशन से 100-50 मील दूर की आन्तरिक अवस्था देखिये। किसान क्षुब्ध हैं और विद्रोह कर रहे हैं। लगता है कि वे बिना विशेष भेदभाव के लाल-दल अथवा श्वेत-दल से डट कर मुकाबला करने को तैयार हैं! वे किसी भी सूत्रबद्ध शासन के खिलाफ हैं, क्योंकि वे स्वयं यह नहीं जानते कि उन्हें किस चीज़ की ज़रूरत है? दरअसल, किसान यह तो जानता है कि उसे क्या चाहिए? लेकिन उसका जो चाहना है, वह हमारी-आपकी कल्पना के 'उसके चाहने' से कुछ भिन्न ही है।

'जब विप्लव के आरम्भ की जानकारी उन्हें मिली, तो उन्होंने सोचा कि अपनी मातृभूमि पर, अपने श्रम से, पूरी आज़ादी के साथ रहने के उनके स्वप्न की पूर्ति हो रही है। लेकिन उन्होंने देखा कि पुरानी जारशाही के बदले में उन्हें मिली है नयी, अपेक्षाकृत अधिक कष्टदायक शासन-व्यवस्था। सचमुच गाँवों में अशान्ति है; और वहाँ शान्ति तथा व्यवस्था स्थापित करना मुश्किल है। और आप कह रहे हैं कि वे खुश हैं। भाई मेरे, बहुत सी बातें ऐसी हैं, जिन्हें या तो आप जानते नहीं, अथवा जानना चाहते ही नहीं।

—अच्छी बात है। मानता हूँ कि बहुत सी बातें मैं नहीं जानता। क्यों यह ज़रूरी है कि मुझे तमाम बातें जाननी ही चाहिए और हर चीज़ के लिए सिरदर्द मोल ले लेना चाहिए? इतिहास मेरी सलाह से तो बनता नहीं। जो कुछ हो रहा है, जब मुझे उसे ही स्वीकार करना है, तो चूल्हे में जाय तथ्यों की बातें। आप कहेंगे, यह अस्वाभाविक है, अयथार्थवादी दृष्टिकोण है। लेकिन वास्तव में रूस में इस समय यथार्थ और स्वाभाविक है ही क्या? मेरा खयाल है इस समय तो अस्ति ही खतरे में है। यह सही है कि मैं यह विश्वास करना चाहता हूँ कि किसानों की हालत अच्छी है और गाँव समृद्ध हैं। यदि मैं ऐसा भरोसा नहीं कर सकता, तो आखिर मैं कर ही क्या सकता हूँ? फिर किस बात पर भरोसा करूँ, और किसके भरोसे ज़िन्दा रहूँ? मैं बाल-बच्चेदार आदमी हूँ भाई, मुझे ज़िन्दा रहना है।

सोने की पटरी पर सिर टेक कर खिड़कियों से बाहर का दृश्य देखते हुए उदास भाव से उसने तर्क करना छोड़ दिया। रोकड़िया प्रित्युलेव उसकी सहेली पैलेगिया, वास्या और वोरोन्यूक के बीच वार्तालाप चल रहा था। अब वास्या और प्रित्युलेव के गाँवों से गाड़ी गुज़रने वाली थी। प्रित्युलेव अपने गाँव की गलियों की कल्पना कर रहा था। पैदल अथवा घोड़े से जाने के रास्ते के बारे में चर्चा करते समय उसकी आँखों में रोशनी चमक उठती और मंत्रमुग्ध-सा वास्या उन चिरपरिचित नामों को दुहरा देता।

—ड्राइ-फोर्ड उतर कर आप बिस्की जा सकते हैं। बिस्की—बिस्की—यही हमारा गाँव है। वहाँ के मोड़ से दायीं ओर घूम जाइये, वेरेटेनिकी पहुँच जायेंगे। नदी से रास्ता काफी दूर पड़ जाता है। है न, ऐसी ही बात? आपने पेल्गा नदी देखी है? ऊपर की ओर, दाहिनी तरफ की पहाड़ी के पास, नदी के किनारे हमारा वेरेटेनिकी गाँव है। उसे देखकर आदमी आश्चर्य करने लगता है और प्रभु की महिमा के प्रति श्रद्धावनत हो उठता है। ढलान में पत्थर की एक खान है। मेरी माँ, मेरी बहन आल्या और आर्या के साथ वहीं रहती है। मेरी माँ कुछ-कुछ

आपकी तरह है, पोल्या काकी! वह आपकी तरह बहुत ही अच्छी है। वोरोन्यूक काका, भगवान के लिए, ओ वोरान्यूक काका, मैं हाथ जोड़ता हूँ, मुझे छोड़ दो।

—क्या है रे? काका, काका! मैं तुम्हारी चाची नहीं हूँ। तुम मुझसे आखिर चाहते क्या हो? मेरा दिमाग खराब हो गया है क्या, जो तुम्हें छोड़ दूँ। आमीन, मैं तो बर्बाद हो जाऊँ। वे मुझे ज़िन्दा जमीन में गाड़ देंगे!

पैलेगिया त्यागुनोवा वास्या के बाल थपथपाते हुए विचारमग्न-सी चुपचाप खिड़की के बाहर देख रही थी। बीच-बीच में उसकी ओर इस तरह मुस्करा कर देख लिया करती, मानो कह रही हो—बेवकूफी मत कर। सबके सामने वोरोन्यूक से ऐसी बातें नहीं की जातीं। धीरज से काम ले। फिक्र मत कर। सब ठीक हो जायेगा।

तेरह

मध्य रूस से आगे बढ़ते समय अनेक विचित्र घटनाएँ घटित हुईं। वे देश के उस अशाँत भाग से गुज़र रहे थे जहाँ सशस्त्र सैनिकों की गारद पड़ी थी। जहाँ गाँवों की क्राँतियों को दबा दिया गया था। बीच में कहीं भी गाड़ी खड़ी हो सकती थी; और सुरक्षा के लिए तैनात सैनिक आकर यात्रियों के कागजातों का निरीक्षण कर लिया करते। इसी तरह एक दिन गाड़ी के रुक जाने पर, न तो वहाँ कोई आदमी ही आया, न किसी ने किसी को जगाया ही। यूरी को डर लगा कि कोई दुर्घटना तो नहीं हो गयी है। वह बाहर निकल आया। चारों ओर सूचीभेद अन्धकार था। लगा कि देवदार वृक्षों के बीच गाड़ी को बिना विशेष कारण के रोक दिया गया है। दूसरे यात्रियों से यूरी को मालूम हुआ कि दरअसल दुर्घटना तो कोई नहीं हुई मगर ड्राइवर ने गाड़ी आगे बढ़ाने से इसलिए इनकार कर दिया है, क्योंकि उसे सन्देह है कि इस अशान्त क्षेत्र में गाड़ी आगे ले जाना खतरे से खाली नहीं है। इसलिए पहले ट्राली द्वारा लाइन का परीक्षण हो जाना चाहिए। यात्रियों के कुछ प्रतिनिधि तथा नौसैनिक

उससे बातचीत कर रहे थे; और आवश्यकता पड़ने पर उसकी मदद अथवा—मरम्मत करने के लिए तैयार थे।

ईंधन की आग की लपटों अथवा चिमनी के निकलने वाले जलते हुए कोयलों से आसपास की बर्फ़ पिघल रही थी। उस प्रकाश में इंजन के आगे-आगे दौड़ती हुई कुछ काली मानव प्रतिमाएँ भागती हुई दिखाई दीं। ड्राइवर रनिंगबोर्ड के आखिरी हिस्से पर पहुँच कर, धक्का रोकने वाले यंत्र के ऊपर से उछल कर गायब हो गया था। पता नहीं कहाँ चला गया; मानो धरती उसे निगल गई हो। कुछ नाविकों ने उसका पीछा किया। उसका उछलना तो दिखाई दिया, लेकिन वे किस ओर, कहाँ गायब हो गये यह कह सकना मुश्किल था। इससे सारे यात्रियों की उत्सुकता बढ़ गई। उन्होंने अचरज भरी निगाहों से देखा कि ड्राइवर का आधा शरीर बर्फ़ में है, और उसका पीछा करने वाले नौसैनिकों का दल अर्द्धवृत्ताकार में शिकारियों की तरह चारों ओर से उसे घेर कर खड़ा है। उसी की भाँति वे भी कमर तक बर्फ़ में डूबे हुए हैं।

ड्राइवर चिल्ला रहा था—बहुत अच्छे। कितना बढ़िया दृश्य है। नौसैनिक अपने साथी कर्मचारी का बन्दूक लिये पीछा कर रहे हैं। यह सिर्फ़ इसलिए कि मैंने गाड़ी खड़ी कर दी। आप सब लोग मेरे गवाह हैं! देख लीजिये, यह कैसी जगह है? थोड़ी दूर पर निश्चय ही कोई चुपचाप रेल की पटरियों के नटबोल्ट खोल रहा होगा। तुम नालायक कहीं के! तुम अपनी माँ, दादी और सात पीढ़ियों सहित जहन्नुम में जाओ। मुझे किसी की परवाह नहीं। मैं यह फिक्र कर रहा था तुम्हारे भले के लिए। नतीजा यह है कि मैं तुम लोगों की कृपा से इस हालत में यहाँ पड़ा हूँ। आगे बढ़ो, मार दो गोली मुझे! मैं यहाँ खड़ा हूँ आप सब लोग देख लीजिए, आप सब लोग गवाह बने रहिये, मैं भाग नहीं रहा हूँ। मार दो मुझे गोली!

भीड़ में से आवाज़ें आने लगीं—चुप भी रहो दादा! उनका यह मतलब नहीं है। कोई उन्हें ऐसा करने थोड़े ही देगा? वे सिर्फ़ तुम्हें धमकाने के

लिए ऐसा कर रहे थे। कुछ लोगों ने प्रार्थना की—ठीक है, गवरिल्का, अपने आप खड़े हो जाओ। पड़े रहने दो उन्हें।

एक नौसैनिक बर्फ़ से बाहर निकल आया। उसके बाल लाल रंग के थे, शरीर विशालकाय। माथा इतना बड़ा कि चेहरा काफी चौड़ा दिखाई देने लगता। यात्रियों की ओर मुड़कर उसने शाँत, व्यवस्थित और गंभीर उक्रेनियन लहजे में कहा—माफ कीजिएगा। यह भीड़ किसलिए लगी हुई है? आप ही बताइये, इस जगह आपको सर्दी नहीं लग जायेगी? कितनी तेज हवा चल रही है! आप अपनी जगह पर सिगड़ियों के पास जाकर क्यों नहीं बैठ जाते?

भीड़ छँट गयी। वह विशालकाय आदमी ड्राइवर के पास जाकर बोला—हमने तुम्हारी काफी सनकें देख ली हैं। बर्फ़ से बाहर निकल आओ और ध्यानपूर्वक तेजी के साथ आगे बढ़ो।

चौदह

पटरी से नीचे उतर जाने के डर के कारण गाड़ी धीमी-गति से आगे बढ़ रही थी। पटरियों पर हवा ने बर्फ़ बिखेर दी थी जिसे किसी ने साफ नहीं किया था। एक निर्जन जले हुए खण्डहर के पास जाकर गाड़ी खड़ी हो गयी। यह था लोवर केल्मिस स्टेशन का भग्नावशेष; जिसका नाम अभी भी धुँधले काले बोर्ड पर पढ़ा जा सकता था। कुछ दूरी पर बर्फ़ की चादर ओढ़े एक खण्डहरप्राय: गाँव था। आग से उसका अन्तिम घर नष्ट हो चुका था; दूसरे मकान की लटकती हुई अधजली लकड़ियाँ दिखाई दे रही थीं। टूटी-फूटी गाड़ियाँ, बाड़े और ध्वस्तप्राय: फर्नीचर गली में चारों ओर इधर-उधर पड़े थे। बर्फ़ में अधजली लकड़ियों के टुकड़े, राख के कारण अजीब से लग रहे थे। स्टेशन इतना निर्जन नहीं था, जितना कि एक नजर में लगता था। वहाँ अब भी कुछ लोग रहते थे। उन खण्डहरों में से स्टेशन-मास्टर निकल कर बाहर आ गया। गार्ड गाड़ी से कूद पड़ा। दोनों ने एक दूसरे का अभिवादन किया। गार्ड ने

सहानुभूतिपूर्ण लहजे में कहा—मेरा खयाल है कि जब इस गाँव में आग लगी, तब यह स्टेशन भी बच नहीं पाया होगा?

—आइये। स्वागत। हाँ, एक बार यहाँ आग लगी थी लेकिन बहुत बुरी नहीं।

—क्या मतलब? समझा नहीं।

—अच्छा ही है। समझने की कोशिश भी मत करो।

—आपका मतलब स्ट्रालिनिकोव से तो नहीं है?

—हाँ, उसी से।

—क्यों? आपने क्या किया था?

—हमने कुछ भी नहीं किया। अपराध था पड़ोसियों का, लेकिन हमें उसकी काफी अच्छी सजा मिल गयी। उस ओर वह गाँव है न—वही लोवर केल्मिस है। उस्त-नेमडिंस्क ज़िले में है वह। यह सब उसी के कारण हुआ है!

—और उन्होंने क्या अपराध किया था?

—दुनिया भर के तमाम अपराध उन्होंने कर डाले। पहला अपराध था, गरीब किसानों की कमेटी को भंग करना। दूसरा अपराध था, लाल-सेना को घोड़े न देना और वे थे तातारी घुड़सवार, इस बात को खयाल में रखियेगा। संगठन की राजाज्ञा का विरोध—यह था तीसरा अपराध। कुल मिलाकर इस तरह तो अपराधों की संख्या तीन ही होती है।

—अच्छा। मैं समझ गया। अच्छी तरह से समझ गया। सो उन पर गोलियाँ चलाई गयीं।

—और नहीं तो क्या?

—सशस्त्र रेलगाड़ी से?

—हाँ।

—बहुत बुरी बात है। लेकिन फिर भी हमारा इससे कोई लेना-देना नहीं।

—कुछ भी हो। यह सब खत्म हो गया। लेकिन एक बुरी खबर आपको और सुनानी बाकी रह गयी। मुझे डर है कि आप लोगों को यहाँ कुछ दिनों के लिए ठहरना पड़ेगा।

—क्यों मजाक कर रहे हो? मैं इस गाड़ी से सैनिकों को युद्धस्थल पर ले जा रहा हूँ।

—मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ जी। पिछले पूरे हफ्ते तक तूफान का उपद्रव था। तमाम रेल की पटरियाँ बर्फ़ में डूबी हुई हैं और उन्हें साफ़ करने वाला कोई नहीं है। आधा गाँव खाली हो चुका है। लोग भाग गये हैं। आधे लोगों को इस काम में लगाया जा सकता है। लेकिन उससे काम चलेगा नहीं।

—कितनी नारकीय अभिशापपूर्ण स्थिति है! आखिर मैं कर ही क्या सकता हूँ!

—लाइन को साफ़ करना होगा।

—बर्फ़ कितनी गहरी है?

—बहुत अधिक नहीं। थोड़ी भिन्नता है। बीच के भाग में सबसे अधिक बुरी हालत है। बीच में दो मील लम्बा एक टुकड़ा है, वहाँ ज़रूर दिक्कत होगी। आगे के जंगल के घने भाग में बर्फ़ अधिक नहीं है। और इस तरफ के खुले प्रदेश में बर्फ़ के कुछ भाग को हवा ने दूर तक फेंक दिया है।

—कमबख्त कितनी गन्दगी है! मैं यात्रियों को इस काम में लगाता हूँ।

—नौसैनिकों को छेड़ना नहीं चाहिए। लेकिन बेगार सैनिकों की संख्या भी काफी है। यात्रियों के साथ लगभग 7 सौ मुसाफिर हैं। काफी हैं। वैसे फावड़ों की कमी है। ज्योंही इसका इन्तजाम हो जायेगा हम काम शुरू कर देंगे। पास के गाँव में फावड़े लाने के लिए आदमी गए हुए हैं। वे आते ही होंगे।

—हे प्रभु, क्या दुर्भाग्य है! तुम्हारा क्या खयाल है, हम स्थिति संभाल लेंगे?

—हाँ, क्यों नहीं। निश्चित रूप से। चिन्ता मत करो, कहावत है कि बड़े-बड़े शहर लोगों की संख्या के बल पर ही जीते गये हैं।

पन्द्रह

लाइन को साफ़ करने में तीन दिन लगे। ज़िवागो परिवार के साथ नूशा ने भी इस काम में भाग लिया था। इस सारी यात्रा के दौरान ये तीन दिन ही बहुत अच्छे गुज़रे।

यह जगह बड़ी रहस्यात्मक दिखाई दे रही थी। कुछ ऐसी चीज़ थी जो कि पुश्किन के पुगाचेव के आन्दोलन और आक्साकोव के रेखाचित्रों में चित्रित भयंकर एशिया का स्मरण दिला देती। ग्रामवासियों की सन्देहभरी सावधान दृष्टि से खण्डहरों से उठने वाली रहस्यमयी भावनाओं को बल मिलता। संदेहपूर्ण नजरों से देखते हुए ग्रामीण कुछ घबराये हुए थे और यात्रियों के सम्पर्क से बचना चाहते थे। वे आपस में भी बातचीत नहीं कर रहे थे। रेल्वे का यह पथ-विस्तार कई विभागों में बाँट दिया गया था। प्रत्येक भाग के लिए कुछ लोगों का समूह छाँट दिया गया था। सब लोग अपने-अपने निर्धारित कार्य-खण्ड की ओर चल पड़े और काम करने में व्यस्त हो गये। बर्फ़ के पहाड़ों ने इन विभागों को एक दूसरे से छिपा दिया था। नींद लेने के लिए जाने के सिवाय सब लोग दिन भर खुले मैदान में काम करते रहते। कुहरे से भरा यह सुहावना दिन मजे-मजे से काम करते हुए सबने बड़े आनन्द से बिताया। जहाँ यूरी काम कर रहा था, उस ओर का दृश्य काफी सुहावना था। घाटी में स्थित पूर्वी आँचल, क्षितिज तक लहराता नजर आ रहा था। दूर पहाड़ी की चोटी पर एक मकान दिखाई दे रहा था। आसपास के पेड़ों ने वहाँ ग्रीष्म ऋतु में घनी छाया ज़रूर की होगी, लेकिन इस समय उसके चारों ओर बर्फ़ का जाल फैला हुआ था; और वृक्ष उसकी कोई मदद नहीं कर पा रहे थे। बर्फ़ के कारण पहाड़ के सारे हिस्से चिकने हो गये थे। रेल्वे के किनारे वसंत ऋतु में तेजी से बहने वाला नाला बर्फ़ से इस तरह ढँका हुआ था, मानो कोई छत्रधारी बालक अपने बिस्तर पर लेटा हुआ हो।

सोच रहा था कि उस मकान में भी कोई रह रहा होगा? अथवा खण्डहरप्राय: यह खाली मकान किसी भूमि-समिति को प्रदान कर दिया गया है? यहाँ जो लोग कभी रहते थे, उनका क्या हुआ? वे सब क्या भाग गये? अथवा किसानों के हाथों मारे गये? अथवा वे खास किस्म के टेक्निकल जानकारी वाले लोकप्रिय व्यक्ति थे, जिन्हें कि यहाँ रहने की विशेष रूप से अनुमति मिली थी? उसकी उत्सुकता को उभारते हुए वह मकान उदास भाव से खामोश खड़ा रहा। उन दिनों में सवाल करना ठीक नहीं था और उनका उत्तर देना कोई आवश्यक नहीं मानता था। आँखों से चकाचौंध कर देने वाली सफ़ेद बर्फ़ पर सूर्य-रश्मियाँ चमक उठीं। यूरी बर्फ़ काट रहा था। बचपन की बातें उसे याद आईं। उसे बाल्यकाल का वह दिन याद आया, जब सुसज्जित कनटोप पहने, भेड़ के कपड़ों में लिपटा हुआ, इसी प्रकार की बर्फ़ को पिरामिडों के आकार में काटा करता था। उन बीते हुए दिनों की ज़िन्दगी का अजीब रंग था। उन दिनों प्रत्येक वस्तु आँखों और पेट के लिए हजम करने की चीज़ थी!

इस समय भी, खुली हवा में तीन दिन तक काम करते समय भी, काम करने वालों के मन में भरे पेट के आनन्द की भावना थी। इसमें कोई आश्चर्य की बात भी नहीं।

रात को ताजी रोटियाँ मिलतीं। किसी को मालूम नहीं वे कहाँ से लाई गयी थीं। रोटियाँ एक ओर से चमकीली, कोने की दरारों में कोयले के टुकड़ों से भरी हुई होते हुए भी बहुत स्वादिष्ट लगतीं।

सोलह

एक तरह से वे इस खण्डहरप्राय: स्टेशन से अभ्यस्त हो गये और यह जगह उन्हें बहुत पसन्द आ गयी। जैसे कि छुट्टियों के दिनों में पहाड़ पर चढ़ते वक़्त थोड़ी देर के लिए विश्राम करने को अच्छी जगह मिल गयी हो। यूरी, इस जगह का सौन्दर्य, इसका आकार प्रकार, यहाँ का विवरण, यहाँ का ध्वस्त स्वरूप कभी नहीं भूल पायेगा। अपनी पुरानी आदतों के अनुसार जब सूर्य अस्त होने लगता, सब लोग वापस लौट

आते। बिर्च-वृक्षों के पीछे, टेलिग्राफरूम के पिछले हिस्से में, हमेशा इसी तरह सूर्य अस्त हुआ करता। इस कमरे का बाहरी हिस्सा गिर कर सारे कमरे में फैल गया था लेकिन अभी भी खिड़की मौजूद थी। दीवार पर काफ़ी के रंग के दीवाली-कागज लगे हुए थे। स्टोव तथा कार्यालय के फर्नीचर के बावजूद भी उसके सामने का एक कोना खाली पड़ा था। बर्बादी से पहले के दिनों की तरह, सूर्य की डूबती हुई किरणें खपरैल के ऊपर रेंगने लगीं और दीवाल के कागज का भूरा रंग गहरा हो उठा। बिर्च-वृक्ष की छाया हेंगर में टंगे हुए कपड़ों की तरह एक ओर लटक आई।

इस मकान के पिछले भाग का प्रतीक्षालय बर्बाद हो चुका था। दरवाजे पर अभी भी ताला लगा हुआ था। वहाँ एक नोटिस लटक रहा था, जिसमें लिखा हुआ था—जिन यात्रियों को दवा-दारू अथवा मलहम-पट्टी की आवश्यकता हो, उनसे प्रार्थना की जाती है कि वे चिन्ता न करें। कुछ विशेष कारणों से मैं यह दरवाजा बन्द कर रहा हूँ। यह नोटिस उसी सिलसिले में दिया जा रहा है—हस्ताक्षर : मेडिकल अटेन्डेंट, आदि आदि।

लाइन के बीच की बर्फ़ जब हटा दी गयी तो सामने फैली हुई लाइन तीर की तरह लम्बी और स्पष्ट दिखाई देने लगी। जंगल की काली छाया के बीच हटाई गयी बर्फ़ की छोटी-छोटी पहाड़ियाँ चमक उठीं।

कुछ अन्तर से, हाथ में फावड़ा लिये, लोगों ने पहली बार अपनी संख्या को देखा : और आश्चर्यचकित रह गये।

सत्तरह

काफी देर हो चुकी थी। अन्धेरा होने ही वाला था। आशा थी कि गाड़ी कुछ ही घण्टों में रवाना हो जायेगी। यूरी के साथ टोन्या, साफ की हुई लाइन का सुन्दर दृश्य देखने के लिए बाहर चली आई। लेकिन अब वहाँ कोई नहीं था। वे दूर तक नजर गड़ाये देखते रहे, फिर शायद थोड़ी-बहुत बातचीत की और वापस लौट पड़े।

आते समय उन्होंने ओग्रेस्कोवा और त्यागुनोवा को भयंकर रूप से झगड़ते देखा। यूरी और टोन्या की दिशा में वे भी चल रही थीं, लेकिन ट्रेन की दूसरी ओर। डिब्बों की अन्तहीन लाइनों के कारण ये दोनों औरतें यूरी और टोन्या को बराबर दिखाई नहीं देती थीं, या तो कुछ कदम आगे होतीं अथवा कुछ कदम पीछे। वे इतनी अधिक उत्तेजित हो गयी थीं कि उनकी शक्ति समाप्त हो गयी। यह इसलिए कहा जा सकता है, क्योंकि उनकी चीखें धीरे-धीरे बुझने लगी थीं। अंत में तो फुसफुसाहट में ही बातचीत होने लगी। हो सकता है, उनके कदमों ने जवाब दे दिया हो। यह भी संभव है कि ठोकर खाकर बर्फ़ पर वे गिर पड़ी हों। त्यागुनोवा ओग्रेस्कोवा का पीछा कर रही है; और जब भी उसे पकड़ पाती है, मरम्मत कर डालती है। जितने भी नाम उसे सूझ सके, वह उन सबका उनके लिए इस्तेमाल कर रही थी। उसकी मधुर और सुरीली आवाज़ बेरुखी और कटुता से भरी हुई थी।

—फूहड़, बदचलन कहीं की। तुम्हें तड़प-तड़प कर मरते देखे बिना मैं यहाँ से एक कदम हिलने वाली नहीं हूँ। तुम पर किसी अपमान का कोई असर नहीं होने वाला। तुम्हें शर्म नहीं आती, आँखें सेंकने के लिए तुम एक छोटे बच्चे को अपनी गोद में लिये पड़ी रहती हो! छिः!

—अच्छा तो वास्या भी तुम्हारा जायज पति है? है वह बहुत अच्छा।

—गन्दी औरत कहीं की? मैं देती हूँ तुम्हें जायज पति! तुम्हारे गले से एक भी शब्द और निकला तो मैं तुम्हारा खून कर दूँगी।

—अपना गुस्सा अपने पास ही रहने दो। अब तुम्हें और क्या चाहिए?

—बेशर्म बिल्लीनुमा चण्डाल औरत! मैं तुझे मरी हुई देखना चाहती हूँ!

—अच्छी बात है। मैं यही सब हूँ। मैं चाण्डाल हूँ, बेशर्म हूँ, बिल्ली हूँ। कम से कम तुम्हारी तुलना में मैं इससे अधिक हो ही नहीं सकती। तुम गटर में पैदा हुई, बिल में तुमने ब्याह किया, चूहा तुम्हें भगा लाया। नमकहराम की औलाद। बचाओ। बचाओ। हत्या! यह मुझे मार डालेगी। कोई इस अनाथ को बचाओ। कोई मुझ बेसहारा लड़की को बचाओ!

टोन्या फुरती से आगे बढ़ती हुई बोली—आइये। मैं यह सब सुनना बर्दाश्त नहीं कर सकती। यह बहुत ज्यादती है। इसका अन्त सचमुच किसी वीभत्स काण्ड से होगा।

अठारह

मौसम बदल गया। दृश्य बदल गये। मैदान समाप्त हो गया। रेल का मार्ग पहाड़ियों में से होता हुआ घरों के बीच से गुज़र रहा था। उत्तर की सर्द हवा के बदले दक्षिण से मिट्टी में तपी हुई गर्म हवा की लहरें आ रही थीं। उतार-चढ़ाव से भरे इस जंगली रास्ते को गाड़ी बमुश्किल पार कर रही थी। देखने लायक कोई खास बात नहीं थी। सारा जंगल अभी भी सर्दी और तन्द्रा में डूबा हुआ था। बीच-बीच में कोई टहनी आपस में टकराती हुई बर्फ़ का बोझा झाड़ लेती।

यूरी आलस से भरा हुआ था। वह अपनी सीट पर सोता रहता, जागता रहता, सोचता रहता और सुनता रहता। लेकिन सुनने लायक कोई खास बात थी ही नहीं।

उन्नीस

यूरी सो रहा था।

मास्को से चलते वक़्त जो ब़र्फ़ गिरने लगी थी, वह रास्ते भर रुकी नहीं थी; तीन दिनों में जिस बर्फ़ को हटाने में उन्होंने कठोर परिश्रम किया था, वह अब गर्म होकर पिघलने लगी थी। मैदानों और पहाड़ों की काफी दूरी तक, जहाँ तक नजर जाती थी, बर्फ़ ही बर्फ़ थी। पहले तो, वह चुपचाप अन्दर पिघलने लगी। जब प्रकृति का यह महान कार्य आधे से अधिक मात्रा में सम्पादित हो गया, उसके बाद यह ईश्वरीय चमत्कार छिपा नहीं रहा। अब यह दृश्यमान हो उठा था। उसके नीचे से पानी मधुर ध्वनि के साथ फूट पड़ा और उसकी आवाज़ से सारा जंगल आलोड़ित हो उठा। जैसे सब कुछ चेतनापूर्ण हो उठा हो।

बहते हुए पानी के खेलने के लिए काफी जगह थी। चट्टानों के बीच उछलता, छोटे-छोटे तालाबों को लबालब भर कर चारों ओर पसरता, जंगलों में बर्फ़ की गहराई में डूबा हुआ, जो भी चीज़ बाधा रूप में सामने आती उसे अपने साथ लपेट कर समतल भूमि पर हाँफता हुआ और ढलान में नीचे गिरते हुए फुहारें छोड़ता हुआ वह आगे बढ़ता जा रहा था। भाप के उठते हुए धुएँ जंगल में व्याप्त हो गये। वसंत के नशे में धुत्त से भरे हुए बादल जंगल में तैर रहे थे। धरती पावन रूप से खिल उठी।

यूरी जाग उठा। उसने अंगड़ाई ली।

कुहनी के बल उठ कर वह देखने लगा।

बीस

[illegible] के क्षेत्र में पहुंचते-पहुंचते अधिक स्टेशन आने लगे। एक-दूसरे स्टेशन के बीच दूरी कम थी। गाड़ी अक्सर रुक जाया करती। छोटी स्टेशनों पर काफी लोग उतरते-चढ़ते। जिन्हें थोड़ी दूर ही जाना था, वे दरवाजे के पास, अथवा सीटों के बीच कहीं भी जगह ढूँढ़ कर बैठ जाते और धीमी आवाज़ में स्थानीय खबरों की मीमाँसा करने लगते। पिछले तीन दिनों से इन लोगों की बातचीत से यूरी को मालूम हुआ कि इस ओर श्वेत-दल का पलड़ा भारी हो रहा है। वे अब तक या तो युर्यातिन पर कब्जा कर चुके हैं, अथवा करने ही वाले हैं। यदि वह गलती नहीं कर रहा है तो श्वेत-दल के नायक पद पर उसका पुराना मित्र गुल्युलिन है, जिससे कि मेल्युजेवो में अन्तिम मुलाकात हुई थी।

इन अफवाहों से उसके पारिवारिक व्यक्ति डर न जायें, इसलिए इस बारे में उसने फिलहाल चुप रहना ही ठीक समझा।

इक्कीस

ब्राह्म-मुहूर्त में यूरी उठ बैठा। पता नहीं, किस प्रकार की खुशी से उसका हृदय इतना भर गया कि वह फिर सो न सका। ट्रेन खड़ी थी। स्टेशन पर पारदर्शी दूधिया चाँदनी फैली हुई थी। पहाड़ी शृंखलाओं पर

अवस्थित इस अन्धकारमय स्थान को पता नहीं किस अदृश्य महान शक्ति ने प्रकाशित करके अत्यन्त रमणीय स्थान का रूप दे दिया था। प्लेटफार्म पर लोग धीमे स्वर में बातचीत करते हुए छाया की भाँति गुज़र रहे थे! सोते हुए यात्रियों के लिए यही युद्ध-पूर्व की शाँति का प्रमाण है—यूरी सोच रहा था।

वास्तव में यह उसका भ्रम था। अन्य स्टेशनों के प्लेटफार्मों की तरह ही इस प्लेटफार्म पर भी चीख-पुकार और चलने वालों के जूतों की चरमराहट की मिश्रित तुमुल ध्वनि गूँज रही थी। पास में एक झरना था। उसके स्वतंत्र और ताजगी भरे प्रवाह ने रात्रि के विस्तार को द्विगुणित कर दिया था। झरने से निरन्तर प्रवाहित होने वाली जलधारा की आवाज़ यात्रियों के कोलाहल से ऊपर उठ गयी थी और इसी ने शाँति के वातावरण का भ्रम पैदा कर दिया था। यूरी सुषुप्तावस्था में इसी आवाज़ से, अज्ञेय शाँति और प्रसन्नता महसूस कर रहा था। उसके बारे में कुछ भी न जानते हुए तथा उसी के बारे में विचार करते हुए वह गम्भीर निद्रा में फिर सो गया।

सोने की पटरी के नीचे दो आदमी बातचीत कर रहे थे—

—अच्छा, अभी भी क्या उनकी दुम दबी हुई है? अब भी वे सीधे रास्ते आये या नहीं?

—तुम्हारा मतलब दूकानदारों से है?

—हाँ, अनाज बेचने वाले!

—ज्योंही कुछ लोगों को सजा मिली, सब ठीक हो गये। ज़िले पर जुर्माना कर दिया गया था।

—कितना?

—चालीस हजार पड—अर्थात् चालीस हजार हथेलियों भरा धान!

—यह तो कहानियों की सी बात हुई। सच?

—मैं तुम्हें झूठ क्यों कहूँगा भला?

—चालीस हजार कच्ची लौकियाँ ?

—नहीं, चालीस हजार पड धान के।

—अच्छा !

—जी हाँ, चालीस हजार पड बढ़िया धान के।

—खैर, तो क्या हुआ ? जमीन काफी उपजाऊ है। यहाँ अनाज का बड़ा व्यापार होता है। रेन्वा नदी के किनारे-किनारे युर्यातिन तक, प्रत्येक गाँव में प्रत्येक घाट पर धान की बड़ी-बड़ी दूकानें हैं।

—इतने ज़ोर से मत बोलो। लोग जाग जायेंगे।

जम्हाई लेते हुए उसने कहा—अच्छी बात है।

—लगता है गाड़ी चल दी। थोड़ा सो लें।

गाड़ी जो वहीं खड़ी रही, उसके पास से एक दूसरी गाड़ी झरने के तुमुलघोष को मंद करती हुई तेजी से आगे निकल गयी। समानान्तर पटरी से गुज़रने वाली इस गाड़ी की सीटी प्लेटफार्म पर गूँज उठी; और थोड़ी देर तक उसकी अन्तिम बत्ती दिखाई देती रही।

—बुरी हालत है। पता नहीं हम यहाँ से कब रवाना होंगे ?

—हाँ, जल्दी की कोई उम्मीद नहीं।

—यह सैनिकों से लदी विशेष गाड़ी है। हो सकता है, स्ट्रेलिनिकोव इसमें हो।

—हो सकता है।

—क्राँति का उत्तर देते समय वह बहुत भयंकर हो उठता है।

—वह गुल्युयेव के पीछे पड़ा है।

—क्या कहा ? यह कौन है ?

—शायद हितमान गलेयेव। लोग कहते हैं कि वह युर्यातिन से बाहर चेक फौजियों का पड़ाव डाले पड़ा है। कई बन्दरगाहों पर उसने कब्जा

जमा लिया है और आगे बढ़ता जा रहा है। वह है हितमान गलेयेव!

—नाम तो नहीं सुना।

—हो सकता है उसका नाम शाहजादा गुल्युलेव हो। मुझे ठीक से याद नहीं आ रहा है।

—हो सकता है उसका नाम कुर्बान हो।

—हो सकता है।

बाईस

उषाकाल में यूरी फिर जाग गया। एक बार फिर किसी अनावृत स्वतंत्रता की खुशी से उसका हृदय भर-सा गया। शायद उसने फिर कोई मधुर स्वप्न देखा हो। गाड़ी पहले की ही तरह निःस्तब्ध खड़ी थी। संभवतः वही स्टेशन हो, वही प्रपात हो! यह भी संभव है कि यह कोई दूसरा ही झरना हो; और कोई दूसरा ही स्टेशन! कुछ भी हो; दोनों में समानता अवश्य थी।

थोड़ी देर बाद वह फिर सोने लगा। ज्योंही वह ऊँघने लगा, बाहर से कोलाहल तथा चलने-फिरने वाले लोगों की पदचाप सुनाई देने लगी। उसकी आँख खुल गयी। कोस्टोयड पथ-रक्षकों के मुखिया से झगड़ रहा था। दोनों एक दूसरे को भला-बुरा कह रहे थे।

एक नये ही किस्म की हवा, जिसमें वसन्त ऋतु से सम्बन्धित कोई आश्चर्यजनक गन्ध मिश्रित थी, व्याप्त हो गयी। यूरी ने नींद में कल्पना की, जैसे पारदर्शी सफेदी में कालापन लिये कोई कल्पित वस्तु, मई की बर्फ़ की हल्की चादर के समान छाई हुई है।

तेईस

दूसरे दिन सुबह के समय टोन्या ने यूरी से कहा—सचमुच आप अद्भुत और महान व्यक्ति हैं। कई तरह की विरोधी बातें आप में आसानी से मिल जायेंगी। या तो शरीर पर मक्खी बैठते ही आपकी नींद खुल जाती

है और सारी रात नींद नहीं आती। और कल रात भर सिवाय आपके, कोई सो नहीं पाया। मैंने आपको जगाने की कोशिश भी की; मगर व्यर्थ। मालूम है आपको, प्रित्युत्येव और वास्या चम्पत हो गये हैं। आप इस बात पर भरोसा ही नहीं करेंगे, बात इतनी ही नहीं है। वोरोन्यूक भी भाग गया है। सच! पता नहीं किस तरह एक साथ, अथवा अलग-अलग उन्होंने भागने की व्यवस्था कर ली। अभी तक तो इसका रहस्य ही नहीं खुला है। वोरोन्यूक की बात तो समझी जा सकती है। दूसरे लोग जब भाग गये तो अपने आप को बचाने के लिए भागने के सिवाय उसके पास कोई चारा ही नहीं था। लेकिन अभी तक यह मालूम नहीं हो सका कि बाकी लोगों का क्या हुआ? कोई नहीं जानता कि त्यागुनोवा ने ओग्रिस्कोवा का खून कर दिया अथवा भाग्य ने उसका साथ नहीं दिया? श्रमिक दल का मुखिया पागलों की तरह इधर उधर दौड़-भाग मचाते हुए ड्राइवर से कह रहा था—जब तक मैं अपने कैदियों को गिरफ्तार नहीं कर लूँ, तुम कानूनन गाड़ी आगे नहीं ले जा सकते। ड्राइवर जवाब दे रहा था—मैं फौज को मोर्चे पर ले जा रहा हूँ। तुम्हारे दल-बल का मैं इन्तज़ार नहीं कर सकता। ऐसा हो ही नहीं सकता।

अंत में दोनों कोस्टोयड की खोज में चल दिये।

—आप संघवादी शिक्षित व्यक्ति हैं। आप चुपचाप बैठे देखते रहे कि एक नादान बालक और कैदी इस तरह लापरवाही के साथ काम करता रहे?

कोस्टोयड ने उसी लहजे में कहा—बहुत मजेदार बात कही है आपने। कैदियों को अपने रक्षक की निगरानी रखनी चाहिए? वाह!

खैर—टोन्या ने कहा—जिस दिन यह सब हुआ, मुर्गे बाँग देने लगे थे, सुबह का वक़्त था। मैं आपको ज़ोर-ज़ोर से हिला कर जगा रही थी—यूरी साहब! जाग उठिये। यहाँ एक पलायन हो चुका है। लेकिन कोई लाभ नहीं। आपके तो कानों के पास तोप का गोला भी छूट जाता तो भी आप नहीं उठते। मुझे और भी बहुत कुछ कहना है। बाद में कहूँगी!...अरे, देखो! पिताजी! यूरा, देखिये, कितना अच्छा है!

खिड़की का एक शीशा टूट गया था। उसके खुले हिस्से से धरती पर एक किनारे से दूसरे किनारे तक फैली हुई वासन्ती बाढ़ दिखाई दे रही थी। कहीं-कहीं किनारों से उफनती हुई नदी बह रही थी और उसका पानी रेल की पटरियों तक आ गया था। लगता कि गाड़ी इसके ऊपर तैरती हुई आगे बढ़ रही है। कहीं-कहीं पानी का ऊपरी धरातल धातु के समान नीले रंग में परिवर्तित हो गया था, शेष हिस्सों पर उषा की गर्म एवं पारदर्शी किरणें फैली हुई थीं मानो ताजा मक्खन रोटी पर चुपड़ा जा रहा हो। इस तटहीन बाढ़ में खेत और पेड़ के खोखले डूबे हुए थे। डूबी हुई झाड़ियों के साथ मकानों का अगले भाग का थोड़ा सा त्रिकोणाकार कोना दिखाई दे रहा था। बाढ़ के बीच एक सँकरा भूमि का टुकड़ा था। पेड़ों की पँक्तियों की परछाईं के कारण, लगता कि जैसे वह धरती और आकाश के बीच लटक रहा हो।

अलेक्जेण्डर अलेक्जेण्ड्रोविच ने कहा—बतकों के उस झुण्ड की ओर देखो।

—कहाँ ?

—उस द्वीप के पास। दाहिनी ओर। धुत, वे उड़ गये। हमसे डर गये।

—हाँ, अब मुझे भी दिखाई दे रहे हैं। मैं आपसे एक बात कहना चाहता था फिर कभी सही...मुझे यह जान कर खुशी हो रही है कि हमारे बेगार सैनिकों और औरतों ने अपना रास्ता निकाल लिया है। मुझे पूरा भरोसा है, किसी ने किसी का खून नहीं किया। वे इसी तरह, पानी की तरह, बह गये, भाग गये!

चौबीस

श्वेत-रात्रि समाप्त हुई। पहाड़, झाड़ी और खड्ड सब कुछ साफ़-साफ़ दिखाई दे रहे थे। लेकिन अपने अस्तित्व में अविश्वास होने के कारण वे परियों की कथाओं की तरह लग रहे थे। चट्टानों की दीवार के अन्त में लटकती हुई पहाड़ी पर बेर की अनेक झाड़ियाँ थीं। उनमें कोंपलें फूट

रही थीं। प्रपात वहाँ से अधिक दूर नहीं था; खड्ड के किनारे से उसे देखा जा सकता था। वास्या भय और खुशी के साथ थक गया था। झरने की तुलना आसपास की किसी वस्तु से नहीं की जा सकती। इस हिस्से में पाये जाने वाले परवाले साँप अथवा अजगरों के डर के कारण, यह स्थान अधिक भयानक दिखाई दे रहा था। यह झरना आधे रास्ते पर एक नुकीली चट्टान से फूट कर दो भागों में बँट गया था। ऊपरी हिस्सा तो स्थिर दिखाई देता, मगर निचली धारा दो भागों में विभक्त होकर बह रही थी। मानो वह फिसलने के डर से संतुलन कायम रखने की सतत चेष्टा में हो। झाड़ी के किनारे वास्या अपनी भेड़ की खाल जमीन पर बिछा कर सोया हुआ था।

एक विशालकाय पक्षी पहाड़ से उड़ा और जंगल में एक वृत्ताकार चक्कर काट कर वास्या के सोने के स्थान के पास के एक चीड़ के वृक्ष पर बैठ गया। उसके गहरे नीले गले और भूरे तथा नीले रंग की छाती की ओर वास्या मुग्धभाव से देखता रहा। यूराल्स के लहजे में उसने धीरे से पुकारा—रोंजा!

वह उठ खड़ा हुआ। भेड़ की खाल उसने कन्धे पर डाल ली और अपने साथी के पास पहुँच गया। बोला—चाची पोल्या, आओ। आह, आपको कितनी सर्दी लग गयी है। आपके बजते हुए दाँतों की आवाज़ मुझे साफ़ सुनाई दे रही है। आप आखिर देख क्या रही हैं? इतनी डरी हुई क्यों हैं? हमें तुरन्त किसी गाँव में पहुँच जाना चाहिए। गाँव वाले हमें कहीं भी छिपा लेंगे। वे अपने जैसे ही दूसरे आदमियों को नुकसान नहीं पहुँचायेंगे। दो दिनों से हमने कुछ भी खाया नहीं है। इस तरह तो हम मर जायेंगे। चाचा वोरोन्यूक ने बड़ा शोर मचाया होगा। सब हमें खोज रहे होंगे। हमें चलना चाहिए। बल्कि, भागना चाहिए। मुझे कुछ भी नहीं सूझता कि आपके साथ मैं क्या करूँ? आप दो दिन से एक शब्द भी नहीं बोलीं। मुझे मालूम है आप बहुत अधिक चिन्ता कर रही हैं। आप इतनी उदास क्यों हैं? यह सच नहीं है क्या, कि आपने कैटी चाची को

गाड़ी से बाहर खींचना चाहा था, आप ओग्रिस्कोवा को धकेल नहीं रही थीं ? मैंने अपनी आँखों से सब कुछ देखा था। घास से उठ कर भागते हुए मैंने उसे भी देखा है। चाचा प्रित्युलेव के साथ वह निश्चित रूप से हमसे मिल जायेंगी। फिर हम सब लोग एक साथ हो लेंगे। चिन्ता छोड़ दीजिए। फिर आपकी आवाज़ फूट पड़ेगी।

त्यागुनोवा उठ बैठी। वास्या का हाथ पकड़ कर उसने कहा—चलो, मेरे प्रिय!

पचीस

डिब्बों की लकड़ियों की चरमराहट के साथ गाड़ी ढालू पहाड़ों पर चढ़ गयी। तट के नीचे की झाड़ी का सिरा रेल के रास्ते तक पहुँच नहीं पा रहा था। नीचे की ओर खेत थे। छिन्न-भिन्न लकड़ी के टुकड़ों और बालू को छोड़कर बाढ़ वापस लौट गयी थी। बड़े-बड़े लठ्ठ पहाड़ी से बह कर नीचे आकर जमा हो गये थे। नीचे वाली छोटी झाड़ी अभी भी पत्रहीन थी। केवल कलियों के पास मोमबत्ती की चर्बी के समान कुछ अस्पष्ट और बिखरी हुई चीज़ छिटक गयी थी; जो उपस्थित शेष वस्तुओं से भिन्न थी। यह बिखरापन और अस्पष्टता ही जीवन के प्रतीक हैं। इसी ने पेड़ों की हरी पत्तियों की उज्ज्वलता के साथ आग लगा दी थी। पास ही एक बिर्च-वृक्ष दुहरी खुली पत्तियों के साथ, तीरों से विद्ध होकर बिखरा पड़ा था। इसकी चमकदार राल महक उठती। उसे देखते ही उसकी सुगन्ध का अनुमान लगाया जा सकता है। बाढ़ द्वारा लायी गयी लकड़ियों के ढेर के पास गाड़ी पहुँच गई। जहाँ से रास्ता मुड़ता था, वहाँ जंगली लकड़ियों के काटने का स्थान दिखाई दे रहा था। धक्के खाकर, चौड़े मेहराब से बाहर की ओर थोड़ी सी झुककर, ब्रेक के झटके के साथ गाड़ी रुक गयी।

इंजिन से सीटी और साँय-साँय की आवाज़ आई। अब यात्रियों को इस प्रकार के संकेतों की आवश्यकता नहीं रही कि इंजिन को ईंधन की ज़रूरत है। तुरन्त दरवाजे खुल गये। किसी छोटे-मोटे शहर की

व्या के बराबर भीड़ इंजिन के पास आकर जमा हो गयी। इंजिन के [illegible] आवश्यक औजारों में आरे वग़ैरह भी थे। दो व्यक्तियों के बीच एक [illegible] बाँट दिया गया। यूरी और उसके ससुर महोदय एक लकड़ी को [illegible] रहे थे।

[illegible] अभी भी अपने डिब्बे में बैठे हुए थे, उन्हें इस श्रम-भार से मुक्त [illegible] दिया गया था। अपने डिब्बे के दरवाजों से सिर निकाल कर हँसते [illegible] काम करने वाले लोगों की ओर उन्होंने देखा। काम करने वालों में [illegible] संकटकालीन प्रशिक्षण प्राप्त प्रौढ़ व्यक्ति, और अभी-अभी कालेजों [illegible] निकले हुए नौजवान लड़के। लगता था कि वे गलती से इन शाँत [illegible] के लोगों में चले आये हों। बूढ़े नाविकों का मजाक उड़ा कर, [illegible] वे चिन्तामुक्त कर देते। ख़ैर इस नयी भर्ती में विभिन्न प्रकार के [illegible] थे और सब लोगों को मालूम था कि यह उनकी अग्नि-परीक्षा की [illegible] है काम करते-करते लोग आपस में मजाक कर रहे थे—ओ [illegible]। मैं भाग थोड़े ही रहा हूँ। मैं तो छोटा सा मुन्ना हूँ। काम कर ही नहीं सकता। मेरी दादी मुझे काम करने से मना करती है।

—ओ मार्था, अपना स्कर्ट मत चीर डालो। सर्दी लग जायेगी।

—ओ रमणी, जंगल में मत जाओ। आकर, मेरी दुल्हन बन जाओ।

छब्बीस

इंजिन के क्लिअरिंग के भाग में लकड़ी के कई चौखटे थे। अलेक्जेण्डर अलेक्जेण्ड्रोविच एवं यूरी उनमें से एक चौखटे पर लकड़ी चीरने लगे। छ: मास पूर्व जब जमीन बर्फ़ से ढँक गयी थी, उससे पहले के मौसम की तरह पृथिवी बर्फ़ का कलेवर छोड़ चुकी थी। यह वसन्त था।

पिछले दिनों की गिरी हुई पत्तियों के ढेर से दुर्गन्ध आ रही थी। सारा जंगल उस कमरे की तरह दिखाई दे रहा था, जहाँ बड़े अर्से तक चिट्ठियाँ, बिल और रसीदें फाड़ कर फेंक दी गयी हों, और सफ़ाई न की जा सकी हो। आरा चलाते हुए यूरी ने कहा—इतनी तेजी से मत चलाइये। वर्ना जल्दी ही थक जायेंगे। थोड़ा आराम कर लें तो क्या हर्ज है?

सम्मिलित रूप से चलाये जाने वाले आरों की आवाज़ से सारा जंगल गूँज उठा। दूर कहीं नाइटेंगल-पक्षी कलरव कर रहा था। मानो बंसी से निकलने वाले स्वर के साथ उसमें लिपटी हुई रेणु फूट पड़ी हो, ठीक उसी तरह से थ्रश पक्षी बीच-बीच में बोल उठता। स्टोव पर जैसे दूध खौल रहा हो, इंजिन की भाप आकाश की ओर उठ रही थी।

अलेक्जेण्डर अलेक्जेण्ड्रोविच ने कहा—तुम मुझसे कुछ कहना चाहते थे न? तुम्हें याद है, क्या कहना चाहते थे? उस समय की बात तुम्हें याद है, जब हम उस छोटे से द्वीप के पास से गुज़र रहे थे जहाँ बतखें डर के मारे उड़ गयी थीं। तुमने कहा था कि बाद में कुछ कहना चाहते हो।

—ओह, हाँ। मैं नहीं जानता कि इसे संक्षेप में किस तरह से आसानी से कह दिया जाय। लेकिन मुझे लगता है कि हम निरन्तर गहराई में पहुँचते जा रहे हैं। यह सारा प्रदेश उपद्रवग्रस्त है। ठीक से नहीं कहा जा सकता कि गन्तव्य-स्थल पर पहुँचने पर हमें कैसी परिस्थिति मिलेगी। सम्भवतः हमें अभी से इस बारे में बातचीत कर लेनी चाहिए कि अगर...मेरा मतलब अपने विश्वासों से नहीं है। इस जंगल में, उस बारे में पाँच मिनट में हम कुछ भी नहीं कह पायेंगे। हम एक दूसरे को अच्छी तरह से जानते भी हैं। आप, टोन्या अथवा मैं, जो इस संकटकालीन विक्षुब्ध समय में, एक नया संसार बनाने की कल्पना कर रहे हैं—हमारी इस प्रकार की चेष्टाओं में, हमारी उसके प्रति जागरूकता का ही फ़र्क़ है। मेरा मतलब यह है कि व्यावहारिक रूप से हमें पहले से कुछ बातें तय कर लेनी चाहिए। ताकि बाद में हमें एक दूसरे के सामने लज्जित न होना पड़े।

—मैं तुम्हारा मतलब समझ गया। जिस तरह से तुमने यह बात रखी है, उसकी भी तारीफ करता हूँ। मैं बताता हूँ। तुम्हें वह सर्दीली रात याद है, जब सरकारी आदेशों से मुतल्लिक कागजात लाकर तुमने मुझे दिये थे? तुम्हें यह भी याद होगा कि वे कितने तीखे, स्पष्ट और अविश्वसनीय थे? उस दिन भी हमारे विचारों और मान्यताओं की

कता ने ही हमें प्रेरित किया था। इस प्रकार के विचार वास्तव में उन लोगों में ही पवित्र रूप से कायम रह सकते हैं, जिन्होंने इसका मर्म ग्रहण किया है। पहली बार प्रकाशित करने पर भी इसकी पवित्रता की कसौटी हो जाती है। उस दिन के बाद राजनीतिक विवेक ने उसे स्थानान्तरित कर दिया। मैं तुम्हें क्या कहूँ? राज्यसत्ता हमारे विपरीत है और इसके विचारों की प्रणाली मेरे लिए नवीन। यदि मैं उनसे सहमत भी होऊँ, तो भी यह सच है कि मुझ से इस बारे में राय ली नहीं गयी थी। जब मुझ पर मेरे लेकिन काम के लिए भरोसा किया गया है, तब, चाहे मैंने उस काम को स्वेच्छा से ग्रहण न किया हो, मैं उसे अंगीकार करने में कृतज्ञता ही अनुभव करता हूँ। टोन्या मुझसे पूछा करती है कि क्या हम उस समय तक पहुँच जायेंगे, जब सब्जियों की खेती हो सके! मैं नहीं जानता। वहाँ की ज़मीन अथवा वहाँ की आबोहवा के बारे में मुझे कुछ भी नहीं मालूम। ग्रीष्म ऋतु, सुना है, यहाँ इतनी अल्पजीवी है कि मुझे आश्चर्य होता है कि कोई भी चीज़ वहाँ पक ही कैसे सकती होगी?

लेकिन साथ ही यह बात भी नहीं है कि बगीचा लगाकर साग-सब्जी बेचने के उद्देश्य से हम इतनी लम्बी यात्रा कर रहे हैं। हम यह यात्रा कर रहे हैं, ईमानदारी से प्रस्तुत परिस्थितियों का सामना करने के लिए। पुरानी नष्टप्रायः क्रूइगर जागीर और मशीनरी में हमारा भी हिस्सा है। हम जा रहे हैं सुव्यवस्थित रूप से ज़िन्दगी बसर करने के लिए। हम उस पुरानी जायदाद की पुनर्प्रतिष्ठा करने, उसका भाग्योदय करने के लिए नहीं, वरन् दूसरों की भाँति हम उसे नष्ट-भ्रष्ट कर देंगे। एक कोपेक कमाने के लिए हजारों सामूहिक हाथों के कर्म-काण्डों में हिस्सा बटायेंगे। मेरा मतलब यह हर्गिज नहीं है कि उस जागीर को मैं पुरानी शर्तों के साथ भेंट रूप में स्वीकार कर लूँगा, यह निरा पागलपन होगा। बेवकूफी होगी। रूस में सम्पत्ति-युग समाप्त हो चुका है।

ठीक हमारी ही तरह ग्रोमेको परिवार ने एक युग पूर्व ही सम्पत्ति प्राप्त करने की लालसा छोड़ दी थी।

सत्ताईस

गाड़ी के इस दम-घोंटू गर्म वातावरण में सोना मुश्किल था। यूरी का तकिया पसीने से लथपथ हो गया था। सोने की पटरी से वह इस तरह सावधानी से उतरा कि दूसरों की नींद न उचट जाय, उसने दरवाजा खोला। सीलन भरी गर्म हवा से उसका चेहरा भीग सा गया; मानो वह मकड़ी के जालों से भरे किसी तहखाने में चला आया हो। कुहरे को देखकर उसने अनुमान लगाया कि कल भीषण गर्मी पड़ेगी। इसीलिए हवा में इतनी उमस है। यह एक बड़ा स्टेशन था; सम्भवतः जंकशन हो। चारों ओर निर्जनता, उदासीनता और उपेक्षा का वातावरण व्याप्त था। किसी को गाड़ी की फिक्र नहीं थी, वह मानो खो गई है अथवा भुला दी गई है। मार्शलिंग-यार्ड से गाड़ी इतनी दूर खड़ी थी कि यदि रेल की पटरियों के अगले भाग पर अवस्थित स्टेशन को यदि धरती निगल जाती, तो भी गाड़ी के किसी यात्री को कोई खबर नहीं होती। दो आवाज़ें सुनाई दे रही थी। पीछे से ऐसी आवाज़ आ रही थी, जैसे कोई धोबी कपड़े पछाँट रहा हो और छींटे उछल रहे हों, अथवा पानी से भीगे हुए झण्डे को हवा फहरा रही हो। आगे की ओर से अस्पष्ट गर्जना सुनाई दे रही थी। युद्ध के वातावरण से अभ्यस्त यूरी के कान चौकन्ने हो गये। प्रतिध्वनित होने वाली इस आवाज़ से उसे मालूम हो गया कि यह तोपखाना है। उसने सोचा—यही है वह। हम मोर्चे पर पहुँच गये हैं। गाड़ी से कूद कर वह कुछ कदम आगे चला आया। आगे दो ही डिब्बे थे। बाकी के डिब्बे गाड़ी से असम्बद्ध होकर इंजिन के साथ चले गये थे। 'इसीलिए उन पर कल इतना नियंत्रण था! उन्हें मालूम था कि वे तुरन्त मोर्चे पर भेजे जाने वाले हैं।' रेल की पटरियों को पार कर, अन्तिम डिब्बे के चक्कर काटते हुए वह स्टेशन को खोज निकालना चाहता था। इसी समय बन्दूकधारी एक संतरी ने रास्ता रोक कर कहा—कहाँ जा रहे हैं आप? अनुमति-पत्र है?

—यह कौनसा स्टेशन है?

—चाहे जो हो। आप कौन हैं?

—मैं मास्को का एक डॉक्टर हूँ। मैं सपरिवार इसी गाड़ी से यात्रा कर रहा हूँ। ये रहे मेरे कागजात!

—इन्हें अपने ही पास रखिये। मैं इस अन्धेरे में पढ़ने की मूर्खता करने वाला नहीं हूँ। देख नहीं रहे हो, यहाँ कितना कुहरा है? यह जानने के लिए कि आप किस किस्म के डॉक्टर हैं, मुझे किसी प्रमाणपत्र की ज़रूरत नहीं। आप जैसे ही अनेक डाक्टर 12 इंच वाली तोपें चला रहे हैं। अपना दिमाग ठिकाने से रखो। मैं तुम्हें...। खैर, जब तक आप ज़िन्दा हैं, यहाँ से रफ़ू हो जाइये।

यूरी ने सोचा, इसने मुझे कोई दूसरा ही आदमी समझ लिया है। उससे तर्क करना व्यर्थ है और उसकी सलाह के अनुसार प्रयाण कर जाना ही बुद्धिमत्ता है। वह घूमकर लौट पड़ा।

तोप की ज्वाला शांत हो चुकी थी। पीछे से आवाज़ आनी बन्द हो गयी थी। दूसरी ओर पूर्व में कुहरे को चीरते हुए सूर्य उदित हो रहा था। उड़ती हुई छायाओं के साथ वह ऐसे लगता, जैसे उदास भाव से कोई नग्न-स्नान करते हुए सलज्ज भाव से बाहर की ओर झाँक रहा हो। गाड़ी की दूरी पार कर यूरी अन्तिम डिब्बे से आगे निकल आया। नीचे बालू का ढेर था। उसके पैर उसमें धँसते जा रहे थे। धरती ढालुआ थी। पानी के छींटों का स्पर्श और उसकी ध्वनि करीब से सुनाई देने लगी। सामने की अदृष्ट आकृतियों को पहचानने की कोशिश करते हुए वह रुक गया। कुहरे के कारण वे असंगत रूप से विशालकाय दीख रहे थे। अन्धकार में नाव किनारे से लगाई जा रही थी। किनारे से एक आकृति बाहर निकल आई। पूछा गया—इस तरह चारों ओर घूमने की इजाजत आपको किसने दी है?

यूरी ने निश्चय कर लिया था कि अब वह किसी से किसी किस्म का सवाल नहीं पूछेगा। मगर उसके मुँह से निकल ही गया—यह कौनसी नदी है? जवाब देने के बजाय संतरी ने सीटी होठों पर रखी ही थी कि

एक दूसरा संतरी, जो यूरी का चुपचाप पीछा कर रहा था, आ उपस्थित हुआ। अपने साथी के पास खड़े होकर वह बातचीत करने लगा। '—इस बारे में कोई शक नहीं। एक बार देख कर ही इस चिड़िया को अच्छी तरह से पहचाना जा सकता है।' पूछता है, 'यह कौन-सा स्टेशन है? यह कौनसी नदी है? आँखों में धूल झोंक रहा है। इसे सीधे घाट पर ले जाएँ अथवा पहले गाड़ी में? तुम क्या कहते हो?'

'—मेरे खयाल में पहले इसे गाड़ी में ही ले चलें। देखें, प्रधान-महोदय क्या कहते हैं? आपके कागजात कहाँ है?' यूरी की ओर देख कर वह गुर्राया। कागजात अपनी मुट्ठी में बंद करके किसी की ओर मुखातिब होकर उसने पुकारा—इसका ध्यान रखना। इसके बाद पहले पहरेदार के साथ वह चल दिया। तीसरी आकृति को अब तक यूरी पहचान नहीं पाया था। वह एक मछुआ था। अब तक वह नाव पर लेटा हुआ था। लेकिन सद्यकर्त्तव्य बोझ तथा नूतन जिम्मेदारी में अपना महत्व बताने के लिए ज़ोर-ज़ोर से बोलते हुए वह उठ बैठा। उसने कहा—आप भाग्यशाली हैं महाशय, कि ये लोग आपको प्रधान के पास लिये जा रहे हैं। शायद आपको मुक्ति मिल जाये। इन्हें भी तो दोष नहीं दिया जा सकता? वे तो कर्त्तव्य के मारे लाचार हैं। आजकल लोग कुछ ज्यादा चतुर हो गये हैं। हो सकता है भविष्य के लिए यह बहुत ही लाभदायक हो। लेकिन अभी कुछ कहा नहीं जा सकता। उनसे एक गलती हो गयी है। दरअसल वे एक निश्चित आदमी की फिराक में हैं? उन्होंने शायद यही समझा है कि कामगार—राज्य के दुश्मन को उन्होंने गिरफ्तार कर लिया है। यह उनकी भूल है। कुछ भी हो, आपको प्रधान से मिलने के लिए ज़ोर देना चाहिए। इन्हें अपने आप कुछ मत करने दीजियेगा। ईश्वर ही मालिक है। दुख की बात यह है कि ये सब राजनीतिक रूप से जागरूक हैं। आपके साथ कुछ भी कर गुज़रने से ये लोग बाज नहीं आयेंगे। इसलिए यदि वे कहें कि मेरे साथ चलो; तो चुपचाप चले मत जाना। प्रधान से मिलने की बात पर ज़ोर देना।

मछुए से ही यूरी को मालूम हुआ कि यह प्रसिद्ध नदी रिन्वा का जल-मार्ग है। और यह स्टेशन है रेजविला—युर्यातिन शहर का औद्योगिक उपनगर। उसी मछुए से यह भी मालूम हुआ कि कुछ मील आगे का हिस्सा श्वेत-दल से फिर जीत लिया गया है। रेजविला के चारों ओर भी उपद्रव हुआ था लेकिन शाँत कर दिया गया। चारों ओर की शाँति का कारण है, यहाँ से नागरिकों का हटा दिया जाना और चारों ओर लगा हुआ सख्त पहरा। स्टेशन पर खड़े कुछ डिब्बों का उपयोग फौजी कार्यालय के रूप में होता है। यहीं फौजी प्रधान स्ट्रेलिनिकोव रहते हैं। उन्हीं के पास सूचना देने के लिए दोनों संतरी गये हैं। पिछले दो संतरियों से यह कुछ अलग किस्म का संतरी मालूम होता था, क्योंकि आते ही बन्दूक के कुन्दे के सहारे वह यूरी को प्रधान के कार्यालय की ओर ले चला, मानो किसी शराबी को सहारा दिया जा रहा हो।

अट्ठाईस

जुड़े हुए दो डिब्बों में से एक में हँसी और वहाँ की चहल-पहल की आवाज़ आ रही थी। यूरी को लेकर उसका रक्षक संकेत कर के अन्दर चला गया। एक सँकरे मार्ग से बीच के चौड़े डिब्बे में उसे ले जाया गया। यह डिब्बा काफी साफ़-सुथरा और आरामदायक था। चुस्त और सुसज्जित व्यक्ति चुपचाप काम में लगे हुए थे। दलबन्दी से परे रहने वाले स्ट्रेलिनिकोव को उसने यहाँ भिन्न रूप में देखा—उस स्ट्रेलिनिकोव को, जो इस क्षेत्र में भय और गौरव का कारण बना हुआ था। सम्भवत: उसकी कार्यवाहियों का वास्तविक केन्द्र कहीं और था। यह तो उसका व्यक्तिगत स्थान, अथवा निजी कार्यालय, किंवा सोने का कमरा था। यहाँ की शून्यता ठीक वैसी ही थी जैसे कार्क के फर्श पर हल्के चप्पलों की आवाज़। यह कार्यालय किसी पुराने डाइनिंग-कार में अवस्थित था। गलीचे बिछे हुए थे। चारों ओर टेबलें सजी हुई थीं। भुलक्कड़ व्यक्ति की तरह दरवाजे के पास वाली टेबल पर बैठे एक नवयुवक आफिसर ने कहा—एक मिनट! यूरी का रक्षक बन्दूक झुकाकर, उसे अँगुलियों से

बजाता हुआ बाहर चला गया। इसके बाद वह नवयुवक अधिकारी मानो जिम्मेदारी से मुक्त, स्वतंत्र हो गया। यूरी की उपस्थिति भुला दी गयी। किसी ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। प्रवेशद्वार के पास खड़ा यूरी, कमरे के अन्तिम कोने पर एक डेस्क पर पड़े हुए अपने कागजातों को आसानी से देख सकता था। पुराने जमाने के कर्नल, एक वृद्ध महाशय वहाँ बैठे हुए थे। सम्भवतः वह फौज का कोई संख्याशास्त्री था। मन ही मन बड़बड़ाते हुए उसने प्रासंगिक पुस्तकों का अध्ययन किया, जमीनों के नक्शे देखे, उनका निरीक्षण करके तुलना करते हुए कुछ चीज़ों को चिपका दिया, इसके बाद खिड़की की ओर देख कर उसने घोषणा की—गर्मी बढ़ती जा रही है। सम्भवतः उन सभी वस्तुओं के परीक्षण से वह इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हो।

लाइन का कनेक्शन जोड़ने के लिए एक बिजली वाला व्यक्ति कमरे में इधर-उधर घूमते हुए अपना काम कर रहा था। दरवाजे के पास वाले नौजवान आफिसर ने उसे खड़े होकर जगह दे दी। चमड़े की फौजी जर्सी पहने कोने में एक टाइपिस्ट अपने टाइपराइटर के साथ मगजपच्ची कर रही थी। टाइपराइटर का कैरीज एक ओर खिसक कर अटक गया था। युवक आफिसर उसके पास जाकर खड़ा हो गया और इस काण्ड की जाँच करने लगा। बिजली वाले महाशय मेज के नीचे झुक कर टाइपराइटर की समस्या हल करने की कोशिश करने लगे। पुराने कर्नल साहब भी बाकी नहीं बचे। वे भी उठ कर वहाँ चले गये। इस तरह ये तमाम लोग टाइपराइटर के रुके हुए कैरीज की समस्या सुलझाने में गंभीर रूप से व्यस्त हो गये।

यूरी कुछ हल्कापन महसूस करने लगा। उसके भाग्य के बारे में ये लोग ही अधिक जानते हैं। लेकिन उन लोगों ने तो यूरा की उपस्थिति की ओर कोई ध्यान ही नहीं दिया। सम्भवतः उन्होंने उसे मरा हुआ ही समझ लिया था। यूरी समझ नहीं पा रहा था कि ये लोग इतने अधिक लापरवाह होंगे और छोटे से इस काम में बुरी तरह व्यस्त होंगे।

वह सोचने लगा—वे इतने लापरवाह क्यों हैं? तोपें दागी जा रही हैं। आदमी मर रहे हैं। और वे शाँत भाव से तटस्थतापूर्वक तापक्रम की बातें सोच रहे हैं—युद्ध की गर्मी के बारे में नहीं—वरन् मौसम की गर्मी के बारे में। हो सकता है कि यह सब इन्होंने इतना अधिक देख लिया हो कि अब इनमें महसूस करने की शक्ति ही न रही हो।

सामने की खिड़की से वह दूसरी ओर देखने लगा।

उनतीस

यहाँ से पहाड़ की ऊँचाई, रेल्वे लाइन के किनारे और राजविले उपनगर की स्टेशन को अच्छी तरह से देखा जा सकता था। स्टेशन अधिक दूर नहीं थी। तीन कदमों के बाद ही सीढ़ियों द्वारा वहाँ पहुँचा जा सकता था। रास्ते के अन्तिम छोर पर टूटे-फूटे इंजिनों का गोदाम था; और भी बहुत कुछ टूटा-फूटा सामान वहाँ पड़ा था। इस इंजिनों के कब्रिस्तान के साथ ही मानवीय समाधियाँ थीं। रेल्वे लाइनों के टूटे-फूटे और जंग लगे हुए लोहों तथा उपनगर की दूकानों के बोर्डों ने वह एक विचित्र किस्म का उपेक्षाभरा दृश्य उपस्थित कर दिया था। सफ़ेद आसमान के नीचे अनेक वर्षों से प्रातःकालीन गर्मी से तपते हुए ये सामान इसी तरह पड़े रहते।

मास्को में रहते वक़्त ही यूरी यह भूल गया था कि दूकानों के साइनबोर्डों का अब कितना महत्त्व रह गया है। जहाँ वह खड़ा था, वहीं से वह सामने लटक रहे, विशालकाय बोर्डों को अच्छी तरह से देख सकता था। एक-मंजिले भवनों पर, अपने भारीभरकम आकार-प्रकार के साथ, वे खिड़कियों के नीचे इस तरह लटक आये थे कि उनके पीछे का मकान छिप-सा गया था। ठीक उसी तरह जिस तरह ग्रामीण लोगों की टोपियों में उनके बच्चों का मुँह छिप जाता है। पश्चिम की ओर का कुहरा समाप्त हो गया था और पूर्व दिशा में शेष बचा हुआ उसका भाग नाटकीय पर्दे की तरह प्रकम्पित होकर अलग हो गया था। एक या दो मील की दूरी पर, राजविले से अधिक ऊँचाई पर प्रान्तीय राजधानी के

आकार का एक बड़ा-सा शहर था। सूर्यनारायण की सतरंगी चादर पर दूरी की पंथरेखा धुँधली-सी दिखाई दे रही थी। पहाड़ की चोटी, प्रत्येक गली, प्रत्येक मकान और इन सबके बीच स्थित बड़े चर्च के गुम्बद अथवा माउण्ट, ऐथोस पर सस्ते किस्म की सफ़ेद पुताई की तरह सूर्य की रोशनी चमक रही थी।

यूरी सोचने लगा—यही है वह युर्यातिन शहर, जिसके बारे में अन्ना और नर्स आन्तिपोवा से वह अक्सर बहुत कुछ सुना करता था। यहाँ कितनी विचित्र परिस्थितियों में मैं पहुँचा हूँ।

फौजियों का ध्यान टाइपराइटर के बजाय, खिड़की में से दिखाई देने वाले एक अन्य दृश्य की ओर मुड़ गया। यूरी ने घूम कर उसकी ओर देखा।

पहरेदारों की देख-रेख में कैदियों का एक जत्था स्टेशन की ऊपरी सीढ़ियों पर चढ़ रहा था। इस जत्थे में एक स्कूली लड़का भी था। उसके सिर में चोट लगी थी। प्रथमोपचार किया जा चुका था, फिर भी सिर पर बँधी हुई पट्टी से रक्त की पतली-सी धारा बह रही थी। अपने पसीने से भरे काले हाथों से वह बारम्बार उसे पोंछ लिया करता। इस जत्थे के अन्त में, दो लाल-दल के सैनिकों के बीच चलते हुए वह अपनी दृढ़ प्रकृति, सुन्दर चेहरे और कमसिन विद्रोही की करुणाजनक स्थिति के कारण ही लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित नहीं कर रहा था; बल्कि मूर्खता भरी हरकतों तथा अपने साथियों के साथ किये जाने वाले हाव-भावों से भी वह जनता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहता था। अभी भी उसके सिर पर स्कूली टोपी लगी हुई थी। जब भी टोपी माथे से सरकती, बजाय उसे हाथ में लेने के, वह उसे सिर पर फिर इस तरह से रख लेता, जिससे कि बँधे हुए घाव की पट्टी अस्त-व्यस्त हो जाय। इस मूर्खतापूर्ण कार्यवाही में एक ऐसी लाक्षणिकता थी, जो साधारण बुद्धि से परे थी। यूरी का मन चँचल और उद्ग्रीव हो उठा। वह मन के विचारों को व्यक्त करने के लिए व्याकुल हो उठा। जैसे वह वहाँ के उपस्थित लोगों को ज़ोर देकर कहना चाहता हो—विधान और वर्दी

के प्रति बर्ती गयी ईमानदारी से ही मुक्ति संभव नहीं है; उसे उठाकर फेंक देने में भी ध्येय-तुष्टि है।

यूरी ने घूम कर देखा, लम्बे और भारी डग भरता हुआ स्ट्रेलिनिकोव कमरे में आकर ठीक बीचोबीच खड़ा हो गया।

डॉक्टर आज तक हजारों व्यक्तियों के सम्पर्क में आया था, हजारों लोगों को वह जानता-पहचानता था, लेकिन उसने आज तक कभी ऐसे विराट व्यक्तित्व सम्पन्न आदमी को नहीं देखा था।

एक ही नजर में बिना कार्य-कारण के, यह स्पष्ट हो गया कि इस व्यक्ति में अपराजेय इच्छा-शक्ति है। अपने आप में उसका व्यक्तित्व इतना प्रबल था कि उसके आस-पास की तमाम चीज़ें उसी की प्रतीक हो उठी थीं। उसका सुगठित शरीर, उन्नत ललाट, नपे तुले कदम, लम्बे पैर, कीचड़ से सने हुए, मगर फिर भी साफ़, घुटनों तक के जूते—और भूरे रंग का कोट, जिस पर अभी-अभी उस्तरी की गयी थी, बहुत आकर्षक लग रहे थे।

उसकी तीव्र बुद्धिमत्ता, अप्रभावित संतुलित सरलता और किसी भी परिस्थिति में अडिग रहने का सरल स्वभाव—यही उसका प्राथमिक अमिट प्रभाव था। यूरी सोच रहा था कि निश्चय ही उसे कोई अनुपम वरदान प्राप्त है। उसकी हर गति में झाँक उठने वाली प्रतिभा सम्भवतः किसी की नकल हो। उन दिनों का यह प्रचलित फैशन था कि लोग ऐतिहासिक महापुरुषों का सा आचरण करने की चेष्टा किया करते। अथवा किसी छोटे-मोटे मोर्चे पर शहीद सिपाही का आदर्श अपनाते; जनता में सम्मानित अथवा कोई भी वह व्यक्ति जिसने कोई महान कार्य किया हो लोगों के अनुकरण का विषय होता। उसी के आदर्श में अपने आप को ढालने की लोग चेष्टा किया करते।

यूरी की उपस्थिति के कारण स्ट्रेलिनिकोव को जो आश्चर्य और झुंझलाहट हो रही थी, उसने उसे पलक झपकते ही छिपा लिया। यूरी को अपने कर्मचारियों में से ही समझकर उसने कहा—बधाई! हमने

उन्हें पीछे की ओर खदेड़ दिया है। यह सब किसी प्रकार का गम्भीर कार्य नहीं, युद्ध का खिलवाड़-सा दिखाई देता है। क्योंकि वे भी हमारी ही भाँति रूसी हैं। फ़र्क़ इतना ही है कि उनके दिमाग में बेवकूफी भरी हुई है—और वे उसे छोड़ना नहीं चाहते। हमें उसे ठोक-पीट कर निकालना ही होगा। उनका कमाण्डर मेरा दोस्त था। वह मुझसे भी गरीब घराने में पैदा हुआ है। एक ही जगह हम बड़े हुए। उसने मेरे लिए बहुत कुछ किया है। मैं उसके प्रति कृतज्ञ हूँ। और आज, मैं इसलिए खुश हो रहा हूँ कि हमने उसे नदी के उस पार तक खदेड़ दिया है।—गुर्यानि, जल्दी करो। टेलीफोन की यह लाइन जल्द ही ठीक हो जानी चाहिए। सिर्फ़ दूतों और तारों के भरोसे हम सारा संभावित काम नहीं कर सकते।..कितनी गर्मी है। किसी तरह मैं सिर्फ़ एक घण्टे ही सो सका।

उसे याद आया कि सामने खड़े व्यक्ति से सम्बन्धित किसी गड़बड़ी का फैसला करने के लिए ही उसे जगाया गया था। उसने मुड़ कर डॉक्टर की ओर देखा।—यह आदमी! नहीं! बकवास। यह उसके समान बिलकुल नहीं है। गधे कहीं के! हँसते हुए उसने कहा—कामरेड, मैं माफी चाहता हूँ। इन लोगों ने किसी आदमी की खोज में आपको गलती से पकड़ लिया है। मेरे सैनिकों की गलती है। मैं क्षमा चाहता हूँ। आप स्वतंत्र हैं। जा सकते हैं। आपकी श्रम-पुस्तिका कहाँ है? अच्छा, ये ही आपके कागजात हैं? ज़रा इसे देख सकता हूँ? ज़िवागो...ज़िवागो... डॉक्टर ज़िवागो...मास्को! आइये, एक मिनट के लिए मेरे कमरे में चले आइये। यह सचिवालय है। मेरा कमरा पास में ही है। इस ओर आ जाइये। मैं आपका अधिक समय नहीं लूँगा।

तीस

वास्तव में स्ट्रेलिनिकोव कौन है?

वह अपने पद का महत्त्व जानता था। वह किसी दल से सम्बन्धित नहीं था। मास्को में पैदा होने के बावजूद भी वह उससे पूरी तरह अनजान बना हुआ था। विश्वविद्यालय की शिक्षा समाप्ति के बाद, उसने स्कूल में

अध्यापन कार्य करना स्वीकार किया था। महायुद्ध में वह पकड़ा गया और वहाँ से भाग गया। लोगों ने सुना कि वह मर गया है। वह अभी हाल ही में जर्मनी की एक जेल से मुक्त होकर आया था। उच्च राजनीतिक विचार वाले तिमिरजिन की देखरेख में उसे छोड़ दिया गया था। उसी के परिवार में उसका बचपन बीता था। नियुक्तियों पर नियंत्रण करने वालों पर उसका बड़ा प्रभाव पड़ा। राजनीतिक विप्लववाद के उस युग में अमर्यादित प्रभावशाली लेख तथा भाषणों का उत्साह समयानुकूल ही था। न वह किसी के अनुकरण पर अवलम्बित था न भाग्य पर ही। अपने इन गुणों का जीवन की प्रस्तुत परिस्थितियों में उसने बड़ी सावधानी के साथ विकास किया था। अधिकारियों का उस पर जो विश्वास था वह सही साबित हुआ। लोवर केल्मिस को भस्मीभूत करने का काण्ड उसके पिछले दिनों के युद्ध-विवरण में महत्त्वपूर्ण घटना थी। यूरी की गाड़ी इस स्टेशन के पास से गुजरी थी जहाँ उसने अन्य लोगों के साथ बर्फ़ हटाने का काम किया था। धान की वसूली में सशस्त्र बाधा डालने वाली 14वीं रेजिमेण्ट और गुबास्लेवो के किसानों का उसने निर्ममतापूर्वक दमन किया था। तुर्कातूय में राजद्रोह आरंभ करने वाले राजिन-सैनिकों से भी उसका पाला पड़ चुका था। चारकिन-उस नामक स्थान पर, जहाँ एक वफादार कमाण्डर की हत्या कर दी गयी थी, उसने डट कर मुकाबला किया था। उपर्युक्त हर परिस्थितियों में उसे आशातीत, आश्चर्यजनक सफलता मिली थी। नियमानुसार विद्रोहियों की खोज करके कठोरतापूर्वक उन पर मुकद्दमा चला कर, उसने उन्हें सजा दी थी। स्थानीय सैनिकों के भाग जाने की आदत को उसी ने नियंत्रित किया। सैनिकों को भर्ती करने की संस्था का पुनर्गठन किया गया। इस तरह से लाल सेना में सैनिकों की जबर्दस्ती भर्ती का काम बढ़ता गया। अंत में जब उत्तर की ओर से श्वेतदल का दबदबा बढ़ने लगा और हालत चिन्ताजनक हो गयी, तब उस पर फौजी कार्यवाही, आक्रमण योजना तथा सैनिक परिचालन सम्बन्धी नयी कूटनीतिक जिम्मेदारियाँ डाल दी गयीं। उसकी कार्यवाहियों ने तत्काल अपना रंग ज़ाहिर किया।

स्ट्रेलिनिकोव को मालूम था कि लोग उसे 'हत्यारा' कहते हैं। स्ट्रेलिनिकोव शब्द का अर्थ ही है—मार डालने वाला—शूटर! इस तरह की बातें शाँतिपूर्वक सुन कर वह टाल देता। विचलित नहीं हो पाता। उसके कामगार पिता को विप्लव में भाग लेने के अपराध में सन् 1905 में कैद कर लिया गया था। उस समय वह आन्दोलन में भाग नहीं ले रहा था। इसलिए ही नहीं कि उसकी उम्र छोटी थी, बल्कि इसलिए भी कि गरीब विद्यार्थी होने के कारण वह पढ़ाई का महत्त्व अधिक समझता था बनिस्बत धनिक-लड़कों के। उसने विविध प्रकार की प्रचुर जानकारी प्राप्त की। साहित्य की डिग्री लेने के बाद उसने विज्ञान एवं गणित-शास्त्र की शिक्षा ली।

फौज में वह भर्ती हो नहीं पाया। उम्र की बाधा थी। उसने अपना नाम स्वयंसेवकों में लिखवा दिया। मोर्चे पर उसे पकड़ लिया गया। रूस में विप्लव होने का समाचार सुनते ही वह वहाँ से भाग कर घर लौट आया। उसमें सुस्पष्ट और बारीक तर्क की असाधारण प्रतिभा थी। विशुद्ध मौलिक पवित्रता और न्याय-बुद्धि के कारण वह सम्माननीय पुरुष माना जाता था। नूतन पृष्ठभूमि के वैज्ञानिक ज्ञान के जटिल कर्म में उसका मस्तिष्क उसका साथ नहीं दे पाता कि इस अज्ञेय वस्तु के प्रति उसे आत्मप्रेरणा प्राप्त हो सके। अप्रत्याशित अन्वेषण की शक्ति उसमें नहीं थी कि अर्थहीन दूरदर्शिता के शुष्क सम्बन्धों को छिन्न-भिन्न कर सके। परोपकार के दृष्टिकोण से भरे हुए मस्तिष्क के अतिरिक्त उसे सिद्धान्त-मुक्त हृदय की आवश्यकता थी, ताकि विशेष कठिनाइयों के अतिरिक्त सामान्य कठिनाइयों पर वह व्यर्थ विचार न करे और अपने छोटे कार्यों को भी महानता प्रदान कर सके। बचपन से ही उसने इस संसार को संघर्ष-क्षेत्र माना था, जहाँ नियमों के प्रति सजग होते हुए भी प्रत्येक व्यक्ति पूर्णता की प्रतिस्पर्द्धा में आगे बढ़ने के लिए सतत प्रयत्नशील है। कभी-कभी उसे लगता कि यह बात सही नहीं है, फिर भी यह कभी नहीं हुआ कि वह अपनी धारणाओं को सरल कर के देखे। अपनी कामनाओं के साथ जीवन और उसको विनष्ट करने वाली अदृश्य शक्तियों के बीच

न्याय करने की उसकी महत्त्वाकाँक्षा विकसित हुई थी कि वह जीवन में वीर सेनानी साबित हो सके, विरुद्ध शक्तियों से बदला ले सके।

असफलताओं से क्षुब्ध होकर उसने सशस्त्र क्राँति के लिए कमर कस ली।

इकतीस

जब वे कमरे में पहुँच गये स्ट्रेलिनिकोव ने दुहराया—ज़िवागो... ज़िवागो...पेशा? मेरा खयाल है...कुलीन...अच्छा...मास्को का एक डॉक्टर! आप वेरिकिनो जा रहे हैं? आश्चर्य की बात है। ऐसे असंगत स्थान के लिए आपने मास्को क्यों छोड़ दिया?

—वह, बस, एक विचार है। अनिश्चित भविष्य की शाँति और आराम की खोज में!

—अरे वाह! कितना रूमानी है। वेरिकिनो? यहाँ के अधिकाँश स्थानों से मैं परिचित हूँ। पहले यह क्रुइगर स्टेट थी। आप उससे किसी तरह से सम्बन्धित तो नहीं हैं? आप उसके उत्तराधिकारी तो नहीं हैं?

—यह सिरदर्द क्यों? उत्तराधिकारी होने से इसका क्या सम्बन्ध है? फिर भी यह सही है कि मेरी पत्नी...!

—आह, यह बात है। लेकिन यदि श्वेत-दल वालों के कारण आपको घर लौटने की बीमारी हो गयी है, तो आपको निराशा होगी। हम लोगों ने उन्हें इस जिले से भगा दिया है।

—क्या अभी तक आप मुझसे मजाक कर रहे हैं?

—और फिर एक डॉक्टर के साथ? एक फौजी डॉक्टर के साथ। हम हैं इस समय युद्ध-काल में। खैर, मेरा यही काम है। आप भगोड़े हैं। विद्रोही जंगल में शरण लेने के लिए भाग रहे हैं। भागने का कारण?

—दो बार मैं घायल हो चुका हूँ; और नाकाम साबित हो चुका हूँ।

—इसके बाद आप यह सिद्ध करने की चेष्टा करेंगे कि आप रूसी नागरिक हैं, सहानुभूति रखने वाले हैं, अथवा पूर्णतः उनके भक्त हैं।

शिक्षा अथवा स्वास्थ्य विभाग की लोक-परिषद् का हवाला भी आप देने वाले होंगे। यह बड़ा रहस्यमय समय है, मेरे प्रिय महाशय यही आखिरी फैसले का वक़्त है। यह समय है चमकती हुई तलवार धारण करने वाले देवदूतों का, अथवा पाताल के विशाल परों वाले पक्षियों का—न कि सहानुभूति दिखलाने वाले लोगों अथवा राजभक्त डॉक्टरों का। फिर भी मैं आपसे कह चुका हूँ कि आप स्वतंत्र हैं। आप जा सकते हैं। मैं अपने शब्द वापस नहीं लूँगा। लेकिन याद रखिये कि यह सिर्फ़ इस बार के लिए है। मुझे लगता है कि हम फिर मिलेंगे; उस समय हमारी बातचीत आज से बिलकुल भिन्न होगी।

यूरी इस चुनौती अथवा धमकी से डरा नहीं। उसने कहा—मुझे मालूम है आप मेरे बारे में क्या सोच रहे हैं? अपने दृष्टिकोण के अनुसार आप ठीक हैं। लेकिन जिस बात पर आप मुझसे चर्चा करना चाहते हैं, वह वही है जिसके बारे में जीवन भर काल्पनिक अभियोक्ता से तर्क करता रहा हूँ। अब तक मुझे किसी न किसी निष्कर्ष पर पहुँच ही जाना चाहिए। मैं इन्हें थोड़े से शब्दों में नहीं कह सकूँगा। बिना उस पर विवाद किये, यदि मैं सचमुच स्वतंत्र हूँ, तो मुझे जाने दीजिए। यदि नहीं, तो यह आप पर है कि आप फैसला करें, कि मेरे साथ क्या किया जाना चाहिए। मेरे पास कोई सफ़ाई नहीं है!

टेलीफोन की लाइन ठीक हो गयी थी। उसकी घंटी ने बाधा डाली। स्ट्रेलिनिकोव ने रिसीवर उठा कर कहा—धन्यवाद, गुर्यान। किसी को कामरेड ज़िवागो को स्टेशन तक पहुँचाने के लिए भेज दो। इस तरह की बेतुकी दुर्घटनाएँ अब नहीं होनी चाहिए। मुझे राजविला चेका ट्राँसपोर्ट विभाग की लाइन दो।

ज़िवागो के चले जाने के बाद स्ट्रेलिनिकोव ने स्टेशन पर फोन किया—उनके साथ एक स्कूली लड़का अपनी टोपी बार-बार खींच कर बँधी हुई पट्टी को अस्त-व्यस्त कर देता है। यह बहुत ही लज्जाजनक है।...ठीक है...यदि उसे ज़रूरत हो तो डॉक्टरी मदद दी जाय...निश्चय ही...

हैं...इन सबके लिए व्यक्तिगत रूप से तुम मेरे प्रति जिम्मेवार रहोगे। अनाज भी...बिलकुल ठीक है। अब, काम की बात।...मैं बात कर रहा हूँ। लाइन मत काटो। धुत्! लाइन पर कोई और ही है। गुर्यान, ए गुर्यान। उन्होंने लाइन काट दी।

अपनी बात पूरी करने का इरादा उसने फिलहाल छोड़ दिया। वह सोच रहा था कि यह मेरा ही कोई छात्र हो सकता है। वह खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया और उसने आसमान की ओर खोजती हुई निगाह डाली। युर्यातिन का वह भाग कहाँ है, जहाँ पत्नी के साथ वह रहता था? क्या उसकी पत्नी और लड़की अभी भी वहीं रहते हैं? क्या वह उनके पास नहीं जा सकता? क्यों नहीं, अभी, इसी क्षण वह चल दे? लेकिन वह जाये कैसे? अगले जनम में ही अब मुलाकात हो सकेगी। पहले उसे इस नई ज़िन्दगी को अच्छी तरह से देख लेना होगा, उसके बाद ही टूटे हुए पुराने जीवन-सूत्र की ओर वह लौट सकेगा। किसी न किसी दिन वह यही करेगा। किसी न किसी दिन, अवश्य। लेकिन कब? कब?

8

आगमन

जिस गाड़ी में ज़िवागो परिवार आया था, वह अब भी स्टेशन पर अन्य गाड़ियों से घिरी हुई पड़ी थी। उन्हें मालूम हो गया था कि अब उनका मास्को से सम्बन्ध टूट गया है। अब वे एक ऐसे प्रदेश में आ गये हैं, जो अपने आप में आकर्षण का केन्द्र स्थल है। पीटर्सबर्ग अथवा मास्को के वनिस्बत यहाँ के लोगों में अधिक सन्निकटता है। स्टेशन के क्षेत्र पर

सैनिक पहरा है। नागरिकों के लिए यह क्षेत्र निषिद्ध है। फिर भी स्थानीय रेलों द्वारा वे किसी तरह बच कर निकल जाते हैं। आराम से गाड़ी में इधर-उधर घूमते हुए वे दरवाजे पर इकट्ठे हो गये थे। लगता था कि अधिकाँश लोग एक दूसरे से परिचित हैं। स्टेशन से गुज़रते वक़्त उन्होंने एक दूसरे को प्यार से पुकारा, एक दूसरे का अभिवादन किया और अलविदा के लिए रूमाल हिलाया। उनकी वाणी, उनका भोजन, उनके वस्त्र और उनके तौर-तरीके—सभी कुछ राजधानी के लोगों से भिन्न थे। यूरी सोच रहा था इन लोगों की आमदनी का जरीया क्या है? उनकी दिलचस्पी किसमें है? उनके भौतिक प्रसाधन क्या हैं? प्रस्तुत आसन्न संकट का सामना वे किस प्रकार कर रहे हैं? और किस प्रकार वे कानून के जाल से बचे हुए हैं? थोड़ी ही देर में उसे अपने प्रश्नों का जवाब मालूम हो गया।

दो

संतरी, कैदियों को ढकेलने वाली अपनी बन्दूक का इस्तेमाल इस समय घूमने जाते वक़्त साथ ले जाई जाने वाली छड़ी की तरह कर रहा था। उसके संरक्षण में यूरी अपने डिब्बे में वापस लौट आया। बहुत अधिक गर्मी थी। लगता था गर्मी के मारे गाड़ी के डिब्बों की छतें पिघल जायेंगी। सामने फैली हुई काली-मिट्टी की चिकनाहट, पीले रंग में चमकती हुई-सी लग रही थी। संतरी की राइफल ने भूमि पर एक लकीर खींच दी; फिर जूतों से टकरा कर अपने स्थान पर आ गयी। वह कह रहा था—ज्वार, बाजरा और अनाज की फसलों के लिए यह स्वर्णिम ऋतु है। साथ ही उसने बताया कि गेहूँ बोने में अभी देर है! जिस प्रान्त से वह आ रहा था, वहाँ गेहूँ अकूलिना के उत्सव के समय ही बोया जाता है। वह यहाँ का रहने वाला नहीं था। ताम्बोव के निकट मारजाँस्क का निवासी था। उसने कहा—आह, कामरेड डॉक्टर, यदि यह गृह-युद्ध न होता, क्रान्ति के विपरीत आक्रमण न होता तो मैं यहाँ थोड़े ही होता?

इस अजनबी प्रदेश में अपना समय थोड़े ही बर्बाद करता? हम लोगों के बीच से काली बिल्ली ने रेखा खींच दी है।* देखें नतीजा क्या होता है?

तीन

यूरी को गाड़ी में ले लेने के लिए सब ने एक साथ अपने हाथ फैला दिये।

—'मैं अपने आप चढ़ जाऊँगा।' उसने विनीत स्वर में कहा।

वह अन्दर चला गया। उसने अपनी पत्नी का कन्धा थपथपाया। टोन्या कह रही थी—अन्ततोगत्वा, यह संकटकाल समाप्त हो गया। खुदा का लाख-लाख शुक्र है। हमें मालूम था कि आप सकुशल हैं।

—तुम्हें कैसे मालूम है?

—संतरी ने आकर हमें बताया था कि आपके साथ कैसा व्यवहार हो रहा है। आह दुविधा का वह समय किस प्रकार गुज़रा था! मैं और पिताजी परेशान हो गये। तमाम उत्तेजनाओं के बाद अब उन्हें नींद आ गयी है। वे वहाँ सो रहे हैं। उन्हें उठाना अब मुमकिन नहीं।

—यहाँ कई नये यात्री आ गये हैं। आइये, मैं आपको उनसे परिचित करवा दूँ। लेकिन पहले यह सुन लीजिये। मुक्ति के लिए आपको सब लोग बधाइयाँ दे रहे हैं।

भीड़ में घिरे हुए एक यात्री की ओर मुड़ कर अपनी पीठ के पीछे खड़े पति की ओर इशारा करती हुई टोन्या ने कहा—वे यहाँ हैं! प्रत्युत्तर में उचक कर उसने अपना हैट ऊपर उठा कर अभिवादन करते हुए, तथा भीड़ चीर कर आगे बढ़ते हुए अपना परिचय दिया—मुझे सामदेवयातोव कहते हैं!

इस नाम की विचित्र ध्वनि से यूरी को लगा कि यह निश्चय ही कोई प्राचीन रूसी वीर-गाथाओं में से निकला हुआ धीरोदात्त नायक होना

---

* रूसी अन्धविश्वास के अनुसार दो व्यक्तियों के बीच में काली बिल्ली द्वारा रास्ता काटने का अर्थ होता है, उनमें कलह होना।

चाहिए। उस कल्पना के अनुसार उसकी दाढ़ी घनी होनी चाहिए, बेल-बूटेदार वस्त्र होने चाहिए, और उसका कमरबन्द नक्काशी किया हुआ होना चाहिए था। लेकिन यहाँ तो अर्वाचीन कलाओं का सम्मिश्रण है—घुँघराली लटें, मूँछें—बकरे के सदृश दाढ़ी...

सामदेवयातोव ने पूछा—सच-सच बताइयेगा, स्ट्रेलिनिकोव से आप डर गये थे या नहीं?

—नहीं तो। क्यों? हमारी आपस में अच्छी तरह बातचीत हुई। निश्चय ही उसका व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली है।

—मुझे भी ऐसा ही लगता है। वह किस प्रकार का आदमी है, इस बारे में मेरी अपनी धारणाएँ हैं। वह यहाँ के लोगों में से नहीं है! आपके मास्कोवासियों में से एक है। नयी विचारधारा की तरह, राजधानी से उसका भी यहाँ आयात किया गया है। हमने कभी ऐसे लोगों के बारे में आवश्यकता महसूस नहीं की थी।

टोन्या ने कहा—प्रिय यूरी, अनफिम येफिमोविच सब कुछ जानते हैं। वे सर्वज्ञ हैं। उन्हें आपके पिताश्री तथा मेरे नाना के बारे में सब कुछ मालूम है। अच्छा, आप स्कूली अध्यापक आन्तिपोव से मिले थे?

वह धीरे से एक ओर सरक गयी। सामदेवयातोव ने प्रसंग की पूर्ति में जवाब देते हुए कहा—आन्तिपोव?

यूरी ने सुना अवश्य, लेकिन उस ओर ध्यान नहीं दिया।

टोन्या कह रही थी—अनफिन यफिमोविच बोलशेविक हैं। इनसे बातचीत और व्यवहार करते समय बहुत सावधान रहना चाहिए।

—मैंने इनके बारे में यह नहीं सोचा था। मेरा खयाल था ये साहब किसी किस्म के कलाकार होंगे।

वे साहब अपनी ही आत्मगाथा सुना रहे थे—मेरे पिता के पास किराये से घोड़े देने वाली सराय थी। उनकी सात ट्रायका गाड़ियाँ चला करती थीं। मैंने विश्वविद्यालय में पढ़ाई की है। हूँ मैं मार्क्सवादी।

—अनफिम येफिमोविच, उनका यह नाम और उनकी स्वदेशभक्ति की चर्चा से जबान लड़खड़ाने लगती है। ये साहब कह रहे थे कि हम परम भाग्यशाली हैं। युर्यातिन शहर के एक भाग में आग लगी हुई है, वहाँ ट्रेन नहीं जा सकती। पुल उड़ा दिया गया है, उस पार जाना संभव नहीं। इसलिए हमारी गाड़ी उसी लाइन से जायेगी, जो हम चाहते थे। हमें तोर्फ़यानाया जाना होगा। यह कितना आश्चर्यजनक है। हमें सामान उतारने-चढ़ाने की झंझट नहीं करनी होगी। ट्रेन ही रास्ता बदल लेगी। येफिमोविच साहब कह रहे हैं कि रवाना होने से पहले घण्टों तक हमारी गाड़ी के डिब्बे इधर-उधर जोड़े जाते रहेंगे।

चार

डिब्बे जोड़े जा रहे थे; खोले जा रहे थे। गाड़ी पटरियाँ बदल रही थी। एक गाड़ी सामने का रास्ता रोके खड़ी थी। जहाँ मोड़ आते, घंटाघर, कारखानों की चिमनियाँ आकाश में ऊपर उठी हुईं दिखाई देने लगतीं। स्टेशन से कुछ ही दूर शहर था। इसी के उपनगर में आग लगी थी। आकाश में उठता हुआ धुआँ दिखाई दे रहा था। सामदेवयातोव के साथ यूरी डिब्बे के फर्श पर बैठा हुआ था। उनके पाँव नीचे लटक रहे थे। सामदेवयातोव सुदूर इशारा करते हुए जो कुछ दिखाई दे रहा था, उसे यूरी को दिखाते हुए उसकी मीमाँसा कर रहे थे। ट्रेन की चाल तेज होने पर जब उनकी आवाज़ मंद हो जाती, तो यूरी के कान के पास अपना मुँह लाकर वे अपनी बातें दुहरा देते। बोले—उन्होंने 'जाइंट-सिनेमा' में आग लगा दी है। केडेट उसकी रक्षा कर रहे हैं। लेकिन शीघ्र ही वे आत्मसमर्पण कर देंगे। कुल मिला कर अभी तक लड़ाई खत्म नहीं हुई है। घंटाघर पर जो काले चिह्न दिखाई दे रहे हैं न, वे दरअसल हमारे आदमी ही हैं। चेक्स* सेना को काट रहे हैं।

---

* चेकोस्लोवाक सैनिकों ने 1918-20 में पूर्वी रूस तथा साइबेरिया की ऐतिहासिक घटनाओं में भाग लिया था।

—मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। पता नहीं, आपको इतनी दूर से सब कुछ कैसे दिखाई दे जाता है?

—देखो, वह शिल्पियों का आवास-स्थान खोखिकी—भस्मीभूत हो रहा है। यहाँ से कुछ दूर खोलोदेयेवो में कुछ दूकानें हैं। मुझे इसलिए उसमें दिलचस्पी है, क्योंकि मेरी सराय वहीं है। सौभाग्य से अग्नि वाह्य-अँचलों में ही लगी है। लगता है, वह केन्द्र की ओर नहीं फैलेगी।

—क्या कहा आपने?

—मैं यह कह रहा हूँ कि नगर का बिचला हिस्सा अभी तक अछूता है। मुख्य गिरजाघर, पुस्तकालय आदि बच जायेंगे। हम लोगों का नाम सामदेवयातोव, सान दोनातोव का रूसी नामकरण है। हम देमि-दोव वंश के हैं।*

—मुझे कुछ भी सुनाई नहीं देता।

—मैंने कहा कि सामदोनातोव सान दोनातो का ही प्रारूप है। लेकिन हो सकता है हमारे वंश के बारे में यह सिर्फ़ जन-श्रुति ही हो।

—इस स्थान को 'स्पिरका-का-डेल' कहा जाता है। बड़ी रमणीय जगह है। लोग यहाँ आमोद-प्रमोद करने के लिए आया करते हैं। इसका नाम बढ़िया है न?

सामने की घाटी में रेल की लाइनें एक दूसरे को काटती हुई निकल गयी थीं। अन्तरिक्ष तक टेलीग्राफ के खम्भे सीधी कतार में खड़े थे—मानो राक्षसों के जूते हों। रेलपथ के साथ महामार्ग की टेढ़ी-मेढ़ी पंथ-रेखाएँ सौन्दर्य-प्रतिस्पर्द्धा कर रही थीं। घाटी के एक छोर पर ये अदृश्य हो जातीं और महापंथ के किसी घुमाव पर वन्दनवार की तरह फिर दिखाई देने लगतीं।

---

* पीटर महान से इजाजत पाकर देमीदोव ने यूराल्स में पहली खदान चालू की थी। वेटिकन द्वारा 19वीं शताब्दी में उनके वंशजों को प्रिंस सान दोनातो की पदवी प्राप्त हुई थी।

—यह है साइबेरिया तक फैला हुआ हमारा महापंथ। अपराधी इसी के [illegible] में गीत गाया करते हैं। अब यह सपक्षीय-सेना के काम करने का [illegible] स्थान बन गया है। तुम्हें यह निश्चित रूप से पसन्द आयेगा। यह [illegible] बिलकुल नहीं है। थोड़े दिनों में तुम इससे इतने अधिक अभ्यस्त हो जाओगे, कि यहाँ से चले जाने के बाद तुम्हें इसका अभाव खटकने लगेगा। यहाँ अनेक अद्भुत बातें मिलेंगी। जल-पम्प के पास स्त्रियों की [illegible] सारी ग्रीष्म ऋतु में खड़ी मिलेंगी। उनके लिए यही मुक्त-वायु का [illegible] बन जाता है।

—हम लोग शहर में नहीं रहेंगे। हम वेरिकिनो जा रहे हैं!

—मुझे मालूम है। तुम्हारी पत्नी ने ही मुझे यह बताया था। लेकिन [illegible] किसी न किसी काम के सिलसिले में तुम्हें शहरों से वास्ता [illegible] मैंने तुम्हारी पत्नी को देखते ही समझ लिया था कि वह [illegible] की जीवित-प्रतिमा है। ठीक उसके दादा की तरह उसकी आँखें, [illegible] और नासिका है! लोगों को वे अच्छी तरह से याद हैं।

[illegible] आकाश पंक्तियों के सहारे तेल के बड़े-बड़े लाल रंग के टैंक दिखाई दे रहे थे। काष्ठ-समूह पर विज्ञापनों के बड़े-बड़े तख्ते लगे हुए [illegible] एक तख्ते पर दो बार बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ था—मोरो [illegible] वेचकिन सीड ड्रिल्स थ्रेसिंग मशीन्स।

—[illegible] एक अच्छा संस्थान था। यहाँ के बने हुए कृषि-यंत्र प्रथम श्रेणी [illegible] होते थे।

—मैंने सुना नहीं। आप क्या कह रहे थे?

—मैं कह रहा हूँ यह एक सुन्दर संस्थान था। सुना तुमने? ये लोग कृषि [illegible] बनाया करते थे। यह एक सीमित उत्तरदायित्व वाली कम्पनी थी। [illegible] इसमें एक भागीदार थे।

—मेरा ख्याल था कि आपने एक बार मुझे कहा है कि वे एक सराय के [illegible] थे।

—हाँ थे। इससे किसी कम्पनी का भागीदार बनने में कोई विशेष बाधा नहीं आती। वे बहुत ही होशियारी से पूँजी लगाया करते थे। जाइंट-सिनेमा में भी उन्होंने पैसे लगाये थे।

—आपको इस पर बड़ा नाज है?

—अपने पिता की निपुणता पर? हाँ, है।

—फिर आपके मार्क्सवाद का क्या हुआ?

—या खुदा! उसका इससे क्या सम्बन्ध है? मार्क्सवादी होने का यह मतलब थोड़े ही है कि आदमी निरा घोंघाबसन्त हो जाय। मार्क्सवाद एक निश्चित शास्त्र है। यह एक यथार्थवादी सिद्धान्त है। यह इतिहास का दर्शन है।

—मार्क्सवाद, एक शास्त्र! एक अजनबी से इस बारे में विवाद करना खतरा मोल लेना है। फिर भी इतना कह दूँ कि मार्क्सवाद में इतनी पूर्णता नहीं है कि उसे शास्त्र कहा जा सके। शास्त्र अधिक सन्तुलित होता है। आप बातें कर रहे हैं मार्क्सवाद एवं स्थूल तटस्थता-दर्शन के विषय में। मुझे ऐसा और कोई सिद्धान्त मालूम नहीं है जो तथ्यों से इतना दूर और स्व-केन्द्रित हो। सामान्यतः लोग अपने सिद्धान्तों को कार्यरूप में परिणित करके उसकी परीक्षा करना चाहते हैं। अनुभव से सीखने के लिए लोग उत्सुक रहते हैं। पूरी शक्ति के साथ ये लोग सम्पूर्णता की, कि उनसे कभी कोई भूल हो ही नहीं—कल्पना की स्थापना करने के लिए इस सीमा तक आतुर रहते हैं कि तमाम चेष्टाओं के साथ वे तथ्य से मुँह मोड़ लेते हैं। खैर, मुझे राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है। हाँ, तथ्यों के प्रति उदासीन रहने वाले लोगों को मैं विशेष पसन्द नहीं करता।

सामदेवयातोव ने यूरी की बातों को विलक्षण व्यक्ति की हास्यास्पद डींग समझा और वह मन्द-मन्द मुस्कराने लगा।

डिब्बे जोड़ने का कार्य भी अभी भी चालू था। जब भी गाड़ी सिगनल के पास से गुज़रती, एक स्त्री अपने बुनने का सामान एक ओर रख कर

सिगनल दे देती और गाड़ी को नगर की दिशा में जाने देती। ड्यूटी पर तैनात इस स्त्री ने उनकी ओर देख कर उन्हें चिढ़ाते हुए घूँसा तान दिया। सामदेवयातोव ने समझा कि उसका लक्ष्य वह स्वयं है। उसे आश्चर्य हो रहा था कि वह ऐसा क्यों कर रही है? उसे उसका चेहरा परिचित लग रहा था। हो सकता है कि वह ग्लाशा तुंतसेवा हो। लेकिन नहीं, यह तो बहुत अधिक बूढ़ी दिखाई दे रही है। लेकिन कुछ भी हो, मुझसे उसकी क्या दुश्मनी है? यह बात सही है कि रूस की मातृभूमि पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं और रेल्वे में काफी अव्यवस्था है। स्वाभाविक रूप से इसका असर उस पर भी पड़ा होगा और उसके दिन बुरी तरह से कट रहे होंगे। शायद वह सोच रही हो कि इन सबके लिए मैं ही जिम्मेवार हूँ। शायद इसीलिए वह घूँसा तान रही थी। अच्छी बात है, जाने दो इस बात को जहन्नुम में। मेरे पास सोचने के लिए क्या और कुछ भी नहीं है?

अन्त में उस स्त्री ने इंजिन-ड्राइवर से चिल्ला कर कुछ कहा और सिगनल देते हुए झण्डी हिला कर गाड़ी को आगे बढ़ने के लिए रास्ता दे दिया। चौदहवाँ डिब्बा ज्योंही उसके पास से गुज़रा, इन दो विदूषकों की ओर देख कर उसने मुँह बिगाड़ कर उन्हें चिढ़ा दिया। उन लोगों को देखते-देखते वह तंग आ गयी थी। सामदेवयातोव फिर विचारमग्न हो गया।

पाँच

तेल के टैंकों, टेलिग्राफ के खम्भों और विज्ञापन के बड़े-बड़े बोर्डों को पीछे छोड़ कर, जब गाड़ी निचली पहाड़ी पार कर जंगल में चली आई, तो बीच-बीच में महापंथ का रास्ता दिखाई देने लगा। सामदेवयातोव ने कहा—चलो हम अपनी सीट पर बैठ जायें। मुझे अगली स्टेशन पर उतरना है। इसके बाद ही तुम्हारी स्टेशन आ जायेगी। खयाल रखना चूक न जाओ।

—मेरा खयाल है, आप यहाँ के आसपास के स्थानों से अच्छी तरह परिचित होंगे?

—यहाँ से 100 मील तक के स्थानों से मैं ठीक अपने आँगन की भाँति ही परिचित हूँ। मैं वकील हूँ। बीस सालों से यही काम कर रहा हूँ। अपने काम के सिलसिले में मुझे अक्सर यात्राएँ करनी पड़ती हैं।

—अभी भी?

—निश्चय ही।

—लेकिन इन दिनों किस तरह का काम-काज हो सकता है?

—अनेक प्रकार के। अनेक किस्म की व्यापारिक कार्यवाहियाँ, समझौते भंग के मुकद्दमे, पिछले अधूरे मसले—इसी तरह के कितने ही काम हैं। इन्हीं सब में गले तक डूबा हुआ हूँ। यही क्या कम है?

—ये तमाम बातें अभी तक खत्म नहीं हुईं?

—हाँ, हुई हैं। लेकिन नाम मात्र के लिए। वास्तव में कार्यरूप में अनेक असंगत लालसाएँ कायम हैं। एक ओर हो रहा है राष्ट्रीयकरण। दूसरी ओर नगर-संघ को ईंधन, प्रान्तीय आर्थिक समिति के लिए भार-वहन की व्यवस्था—काम तो अनेक हैं न? प्रत्येक व्यक्ति अपना अस्तित्व बनाये रखना चाहता है। जीना चाहता है। सक्राँति काल की ये ही विशेषताएँ हैं। अभी भी सिद्धान्त और कार्य के बीच थोड़ा अन्तर शेष है। ऐसे समय में तुम्हें मेरे जैसे साधन-सम्पन्न और कुशल व्यक्ति की ज़रूरत पड़ सकती है। मेरे पिताजी कहा करते थे कि 'सबसे भले मूढ़, जिन्हें न व्यापे जगत गति' तथा, आकस्मिक बाधाएँ अर्थहीन नहीं होती। इस प्रान्त के आधे से अधिक निवासी अपनी आजीविका के लिए मुझ पर निर्भर करते हैं। मैं वेरिकिनो के जंगल में लकड़ियों के लिए एक दिन रुकूँगा। लेकिन अभी नहीं। वहाँ बिना घोड़े के जाया नहीं जा सकता और मेरे घोड़े की टाँग टूटी हुई है। वर्ना इस रद्दी खटारे में मैं यात्रा करता? देखो तो कमबख्त किस प्रकार रेंग रही है। फिर भी इसे रेलगाड़ी—ट्रेन कहा जाता है! वेरिकिनो में मैं तुम्हारे काम आ सकता हूँ। मैं मिकुलित्सिन को अच्छी तरह से जानता हूँ।

—आपको मालूम है कि हम वहाँ क्यों जा रहे हैं? और हमारे क्या इरादे हैं?

—लगभग जानता हूँ। मेरा खयाल है कि 'मातृभूमि की शाश्वत पुकार', 'पसीने की कमाई का आदर्श' आपको वहाँ खींचे लिये जा रहा है!

—लगता है यह आपको पसन्द नहीं। कोई खास एतराज?

—ये आदर्शवादी भोली-भाली बातें हैं। लेकिन हर्ज ही क्या है? भाग्य तुम्हारा साथ दे। कलाकारों की इन बातों पर मुझे विश्वास नहीं। यह सब काल्पनिक संसार की बातें हैं।

—आपका क्या खयाल है, मिकुलित्सिन हमारा स्वागत किस प्रकार करेगा?

—वह तुम्हें आँगन में पैर ही नहीं रखने देगा। झाड़ू से मार भगायेगा। और यदि वह ऐसा करे, तो वह गलत नहीं होगा। कारखाने बन्द पड़े हैं, कामगार भाग गये हैं—आजीविका का कोई साधन नहीं—पर्याप्त भोजन सुलभ नहीं। और ऐसे मौके पर तुम लोग वहाँ जाकर खड़े हो जाओगे। ऐसी हालत में यदि वह तुम्हारी हत्या भी कर डाले, तो भी मैं उसे दोष नहीं दे सकता।

—आप तो एक बोलशेविक हैं। आप यह नहीं मानते कि यह जो कुछ हो रहा है, वह जीवन का लक्षण नहीं, यह निरा पागलपन है? यह बेतुका दुःस्वप्न है?

—मानता हूँ। लेकिन साथ ही साथ यह भी जानता हूँ कि यह ऐतिहासिक रूप से अवश्यम्भावी है। इस अवस्था से हमें गुज़रना ही होगा?

—इसमें अवश्यम्भावी क्या है?

—क्या तुम निरे शिशु हो? अथवा बच्चे होने का बहाना कर रहे हो? जैसे तुम चाँद से सीधे टपक पड़े हो और कुछ जानते ही नहीं।

परान्नभोजी और विलासलिप्त लोग भूखे कामगारों की पीठ पर सवार होकर उन्हें मृत्यु-मुख में क्या सदा के लिए ढकेलते रहेंगे? तुम्हारा खयाल है कि यह सब ऐसे ही चलता रहेगा? निर्दयतापूर्ण अत्याचारों के प्रति जनता के कोप को क्या तुम समझ नहीं सकते? सत्य के अन्वेषण तथा न्यायपूर्ण जीवन बिताने की उनकी अदम्य इच्छा को क्या तुम नहीं जानते? तुम्हारा खयाल है कि संसदीय ढँग से डूमा द्वारा तर्कसंगत परिवर्तन संभव है? बिना किसी एक व्यक्ति के नेतृत्व (तानाशाही) के, क्या इससे कभी मुक्ति मिल सकती है?

—सम्भवतः हम विपरीत तात्पर्यों पर विवाद कर रहे हैं। इस तरह तो यदि सौ साल तक बहस की जाय तो भी कोई नतीजा नहीं निकल सकेगा। मैं स्वयं क्रान्तिकारी विचारधारा का व्यक्ति था, किन्तु अब सोचता हूँ हिंसा द्वारा कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता। जनता को अच्छे मार्ग पर लाने के लिए उन्नत एवं परिष्कृत उपाय ही काम में लाये जाने चाहिए। खैर, छोड़िये इन बातों को। हाँ, मिकुलित्सिन के बारे में आपने जो कुछ कहा, यदि वही सही बात है तो हम लोगों का वहाँ जाना व्यर्थ है। हमें लौट जाना चाहिए।

—ऊहं! पहली बात तो यह कि संसार में केवल वे ही एक आदमी नहीं है। और दूसरी बात यह है कि मिकुलित्सिन खतरनाक रूप से दयालु है। हद से ज्यादा दयालु। वह खूब बड़बड़ायेगा; इनकार कर देगा, अड़ जायेगा, लेकिन फिर मोम की तरह पिघल भी जायेगा। इसके बाद वह अपना कमीज उतार कर तुम्हें दे सकता है; और रोटी का अन्तिम ग्रास तुम्हें बाँट सकता है। मैं अपनी हथेलियों की तरह उससे अच्छी तरह से परिचित हूँ। और सामदेवयातोव ने मिकुलित्सिन की कथा कह सुनाई :

छः

पीटर्सबर्ग से पचीस साल पहले वह यहाँ आया था। वह टेक्निकल विद्यालय का विद्यार्थी था। मुसीबत में पड़कर देश निकाला दे देने पर

[illegible] निरीक्षण में वह यहाँ आया था। क्रूइगर में उसे मैनेजर की नौकरी [illegible] गयी। उसने शादी भी कर ली।

[illegible] दिनों में यहाँ चार बहिनें रहती थीं। एक थीं तुंतसेवा अग्रीपिना, [illegible], गाशा और सीमा। तमाम नौजवान लड़के उनके पीछे पागल [illegible] मिकुलित्सिन ने सबसे बड़ी लड़की से शादी कर ली। थोड़े दिनों बाद [illegible] एक लड़का हुआ। उसका नाम लिबेरिस, लिबुरियस और संक्षेप में [illegible] रखा गया था। यद्यपि वह बचपन से ही कुछ दुष्ट प्रकृति था; [illegible] फिर भी उसमें कुछ असाधारण गुण थे। 15 वर्ष की आयु में ही अपनी जन्म-तिथि को बदल कर वह स्वयंसेवकों की सेना में भर्ती हो [illegible] उसकी कोमल-हृदया माँ इस धक्के को न सह सकी। वह बीमार [illegible] और फिर कभी उठ नहीं सकी। गत वर्ष, क्रान्ति से पहले उसकी [illegible] युद्ध के अन्त में तीन तगमों के साथ वह जननायक बन कर [illegible]। बोलशेविकों का प्रतिनिधि बन कर वह वापस अपने प्रदेश [illegible] था। क्या आपने वन्य बन्धुत्व के बारे में कुछ सुना है?

—नहीं। कुछ भी नहीं सुना।

—तब तुम्हें सारी कथा सुनाने में कोई लाभ नहीं। आधी बात तो खत्म [illegible] गयी। खिड़की से बाहर महापंथ की ओर ताकने में ही क्या तुक है? महापंथ के बारे में ऐसी महत्त्वपूर्ण कौनसी बात है? सपक्षीय? और [illegible] क्या हैं? गृह-युद्ध में ये ही क्रान्तिकारियों की सेना के मेरुदण्ड हैं [illegible] ऐसी शक्ति है जो दो तत्त्वों के संसर्ग से उद्भूत हुई है। एक तो वे राजनीतिक दल हैं, जिन्होंने क्रान्तिकारियों का नेतृत्व स्वीकार कर लिया है; दूसरी ओर वे लोग हैं जो सेना में अधिकारी थे, अथवा सैनिक थे, जिन्होंने युद्ध में हार होते ही अपने अधिकारियों की आज्ञा मानने से इनकार कर दिया। इन दोनों में से सपक्षीय सेना का निर्माण हुआ। इनमें अधिकांश मध्यम श्रेणी के कृषक हैं। फिर भी अनेक प्रकार के लोग इसमें शामिल हैं। गरीब किसान, दिगम्बर भिक्षु, मध्यम श्रेणी के कुलकों के वे पुत्र, जिन्होंने अपने बुजुर्गों के प्रति हथियार उठा लिये थे—वे सब इसमें

शामिल हैं। इन सबके अलावा इसमें अराजकता के आदर्श को मानने वाले, बिना पासपोर्ट के यात्रा करने वाले, लड़कियों के साथ छेड़छाड़ करने के कारण बर्खास्त किये गये लड़के, जर्मन और आस्ट्रिया के युद्धबन्दी, जिन्हें स्वतंत्रता और स्वदेशागमन का वचन दिया गया है, सब लोग इसमें शामिल हैं। इन विभिन्न प्रकार की जनता की इस सेना की एक इकाई को 'वन्य बन्धुत्व' कहा जाता है। इसका नायक है कामरेड फोरेस्टर। यह और कोई नहीं, मिकुलित्सिन का लड़का लिब्बी ही है।

—सचमुच?

—सच! एवरस्यूस की कथा का सिलसिला वापस वहाँ से शुरू होता है कि पहली पत्नी की मृत्यु के बाद उसने फिर शादी की। उसकी दूसरी पत्नी स्वभाव और इरादों से बड़ी भोली-भाली है। विद्यालय से सीधे वह विवाह-वेदी पर जा पहुँची। वह बिलकुल नवयुवती है। लेकिन अपने आप को कमसिन बताने की उसे बड़ी धुन है। वह बालकों की तरह कुछ न कुछ बोलती ही रहती है। उसकी जबान चर-चर करती ही रहती है। किसी से मिलते ही पहले वह उसकी परीक्षा ले लेगी। वह पूछेगी—सुवोरोव की जन्मतिथि क्या है? त्रिभुज की दो भुजाएँ तीसरी के बराबर कब हो सकती हैं? यदि वह आपकी बोलती बन्द कर दे तो उसकी प्रसन्नता की सीमा नहीं रहेगी। थोड़ी देर बाद तुम तो उनसे मिलने ही वाले हो। देख लेना।

उस बूढ़े महाशय की अपनी विशेषताएँ हैं। उसकी इच्छा थी नाविक बनने की। समुद्रीय इंजीनियरिंग का उसने अध्ययन भी किया था। दाढ़ी मूँछें सफ़ाचट्ट। मुँह में धूम्रपान की नली हमेशा दबी रहती है। घरेलू लहजे में दाँतों से बात करता है। भूरी आँखें हैं। वह सामाजिक क्रान्तिकारी है। संवैधानिक विधान सभा के लिए वह प्रादेशिक प्रतिनिधि चुना गया था।

—यह सचमुच बड़ी महत्त्वपूर्ण बात है। सो पिता-पुत्र में वैर है? राजनीतिक विरोध!

—[illegible]: वे एक दूसरे के शत्रु हैं। लेकिन व्यावहारिक रूप से [illegible] और फोरेस्ट में कोई झगड़ा नहीं है। खैर, कहानी का [illegible] फिर हमें बाकी बच रही तीन बहिनों से जोड़ना है। वे अभी [illegible] यूर्यातिन में ही रहती हैं। सब कुंवारी कन्याएँ हैं लेकिन जमाना [illegible] गया है और ये लड़कियाँ भी। सबसे बड़ी अवद्योत्या पब्लिक [illegible] में सहायिका है। साँवली, सलोनी और बहुत अधिक [illegible]शील। छोटी-सी बात पर उसका चेहरा लाल हो उठता है। [illegible]कालय में उसके लिए समय काटना बड़ा मुश्किल है। वहाँ घनघोर [illegible] है। वह पुराने रोग से पीड़ित रहती है। थोड़ी-थोड़ी देर में उसे [illegible] आने लगते हैं और लगता है कि वह जमीन पर गिर पड़ेगी। ये सब [illegible]मिक लक्षण हैं! तीसरी है ग्लाशा—अपने परिवार के लिए वरदान। [illegible] में आगे बढ़ने की महत्त्वाकाँक्षा, आश्चर्यजनक कर्मठ, काम करने [illegible], जो कुछ करती है, उसकी कभी परवाह नहीं करती। सुना है [illegible] फ़ोस्टर लिब्बी अपनी मौसी पर हाथ साफ़ करेंगे। पहले वह [illegible]ई का काम किया करती थी, बाद में मालूम हुआ कि वह किसी [illegible]खाने में काम कर रही है। उसके बारे में आपको कुछ भी मालूम हो, [illegible] पहले हो सकता है कि वह बाल-सँवारने का काम कर रही हो। [illegible] रेल्वे सिगनल के पास एक स्त्री को देखा था न? हमारी ओर जो [illegible] तान रही थी? खुदा बचाये, मैंने सोचा, कहीं ग्लासा रेल्वे में तो [illegible] करने नहीं लगी है? फिर भी मेरे खयाल में वह ग्लाशा नहीं थी। [illegible] [illegible] तो बहुत अधिक बूढ़ी दिखाई देती थी।

[illegible] छोटी है सीमा। वह अपनी बहिनों से बिलकुल भिन्न है। सब लोग उससे परेशान हैं। वह पढ़ी-लिखी है और कविता तथा दर्शन में उसकी अभिरुचि है। लेकिन क्रान्ति के आरम्भ होते ही जन-सामान्य के जागरण के व्याख्यान एवं प्रदर्शनों के सम्पर्क में वह भी आ गयी है। उसको धार्मिक-उन्माद हो गया है। काम पर जाते समय उसकी बहिनें उसे कमरे में बन्द कर जाती हैं, लेकिन वह खिड़की से कूद कर गलियों में भीड़ एकंत्रित करके पुनरोद्भव तथा प्रलय पर भाषण देने लगती है।

अच्छा, अब बातें करना बन्द करें। मेरा स्टेशन आ गया है। अगला स्टेशन ही तुम्हारा है। अच्छा है, तुम भी तैयारी शुरू कर दो।

उसके चले जाने के बाद टोन्या ने कहा—आप क्या सोच रहे हैं, यह तो मुझे नहीं मालूम, लेकिन मेरा खयाल है कि भाग्य ने इस आदमी को हमारे पास भेज दिया है। मुझे लगता है कि यह हमारे भावी जीवन में महत्त्वपूर्ण पार्ट अदा करेगा।

—मैं भी यही सोचता हूँ। लेकिन मुझे सबसे ज्यादा परेशानी इस बात से हो रही है कि यहाँ सब लोग क्रूइगर की पोती के रूप में तुम्हें जानते हैं; और क्रूइगर सर्वप्रसिद्ध है। यहाँ तक कि स्ट्रेलिनिकोव के सामने मैंने ज्योंही वेरिकिनो का नाम लिया उसने पूछा कि हम क्या क्रूइगर के वंशज हैं?

—मुझे लगता है कि जिन सरकारी आदेशों से बचने के लिए हमने मास्को छोड़ा था, वह विशेष फलदायक नहीं हो सका। यहाँ हम और अधिक प्रत्यक्ष हो कर लोगों की नजरों में आ गये। मैं यह नहीं कहती कि जो कुछ हो गया है उस पर व्यर्थ रोया जाय। चिड़िया के खेत चुग जाने के बाद पछताने से कोई लाभ नहीं। खैर, अब हमें चुपचाप रहना चाहिए और हमारा व्यवहार अत्यन्त तटस्थ होना चाहिए। कुल मिला कर, पता नहीं क्यों, मुझे अत्यन्त दुखदायी भविष्य का वहम हो रहा है। खैर, चलो पिताजी को उठा दें। स्टेशन आ रही है। तैयार हो जायें।

सात

तोर्फयानाया स्टेशन के प्लेटफार्म की कुचली हुई और जमी हुई बालू पर अपना सामान बारम्बार गिनते हुए टोन्या खड़ी थी। यद्यपि वह ठीक स्टेशन पर उतर गये थे, फिर भी स्टेशन चूक जाने की उत्तेजना से वह अस्थिर थी। सामने ट्रेन खड़ी थी; फिर भी उसके पहियों कि झनझनाहट अभी भी उसके कानों में गूँज रही थी। इस सुन्नावस्था में न वह किसी चीज़ को ठीक से देख सकती थी, न सुन सकती थी, न समझ सकती थी,

गाड़ी में बैठे लोग उन्हें विदा देते हुए रूमाल हिला रहे थे। लेकिन उसका ध्यान उस ओर नहीं था। न ही उसने देखा कि कब ट्रेन प्लेटफार्म छोड़ कर रवाना हो गयी है। हरित घास और रिक्त मार्ग को देखते हुए उसे अभी भी ऐसा लग रहा था, मानो वह गाड़ी में बैठी हुई है और गाड़ी आगे चली जा रही है। पत्थर के बने हुए इस स्टेशन पर दोनों ओर प्रवेश-द्वार बने हुए थे। तोर्फयानाया स्टेशन पर उतरने वाले ये ही एक मात्र यात्री थे। उन्होंने सामान नीचे रख दिया और एक बेंच पर बैठ गये। स्टेशन की [illegible], वहाँ की शून्यता और स्वच्छता को देख कर उन्हें आश्चर्य हो रहा था। अब तक जितने स्टेशन मिले थे, वहाँ लोग ज़ोर-ज़ोर से कर्कश आवाज़ में, भद्दी ज़बान से बेतुकी बातें किया करते थे। उन सबसे अलग इस स्टेशन का उन पर कुछ अजीब सा ही प्रभाव पड़ा। अभी तक यहाँ का जंगल [illegible] बस्तियों की तरह बर्बर नहीं बन पाया था। जब उनकी गाड़ी स्टेशन से छूट रही थी, तभी बिर्च-वृक्षों से रास्ते के घिर जाने के कारण उन्हें अँधेरा महसूस होने लगा था। अब भी स्थिर छाया उनके हाथों, चेहरों, ज़मीन तथा स्टेशन की दीवारों पर गिर रही थी। झाड़ियों में ठंडक थी और वहाँ कलरव कर रहे पक्षियों की आवाज़ मृदुल। निष्कपट और शान्त नीरवता एक कोने से दूसरे कोने तक छाई हुई थी। रेल-पथ और सड़क ने इन झाड़ियों को दो भागों में बाँट दिया था; और ये दोनों मार्ग वृक्षों की झुकी हुई लम्बी शाखाओं से आच्छादित थे।

अचानक टोन्या को होश आया। उसकी चेतना लौट आई। वह सब कुछ देखने, सुनने और समझने लायक हो गयी। चिड़ियों के मधुर गीत, वनस्थली की नीरवता, एवं स्थिर शान्ति—सब कुछ उसके सामने स्पष्ट हो गया। मन का वक्तव्य वह प्रकट करना चाहती थी कि—'मुझे सहसा विश्वास नहीं हो पाता कि हम यहाँ सकुशल पहुँच गये हैं। स्ट्रेलिनिकोव चाहता, तो आपके सामने भद्र पुरुष का नाटक करते हुए यहाँ तार भेज कर हमें गिरफ्तार करवा सकता था। प्रिय, मुझे उनके तथाकथित विशाल मनोभावों पर विश्वास नहीं होता।' लेकिन वह यह

बात कह नहीं सकी। उसके मुँह से कुछ और ही निकल पड़ा। उसकी आँखों से आँसू फूट पड़े, वह चिल्ला उठी—'कितना मनोरम!' और वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ी।

इसी समय एक प्रौढ़ व्यक्ति, जिसकी वर्दी से मालूम होता था कि वह स्टेशन मास्टर है, उन लोगों के पास चला आया। अपनी टोपी को उठाते हुए, अभिवादन के साथ, विनम्र शब्दों में उसने पूछा—क्या इन देवीजी के लिए स्टेशन के दवाखाने से कोई दवा दे सकता हूँ? ताकि ये होश में आ जायें?

—कोई खास बात नहीं है। यह अभी ठीक हो जायेगी।' अलेक्जेण्ड्रोविच ने कहा।

—सभी जानते हैं कि लम्बी यात्रा की थकान का यही परिणाम होता है। और इतनी अफ्रीकी गर्मी हमारे यहाँ नहीं होती। युर्यातिन की घटनाओं का भी बहुत बड़ा असर पड़ा है!

—वहाँ से गुज़रते समय हमने गाड़ी में से आग की लपटों को देखा था।

—मेरा खयाल है आप रूसी* हैं।

—हाँ, ठीक रूस का—मास्को का।

—मास्को के? फिर तो यह आश्चर्य की बात है कि देवीजी को मानसिक आघात लगा हो। सुना है, वहाँ तो एक ईंट भी नहीं बची।

—जितना कहा जाता है, वैसा कुछ नहीं है। लोग अतिशयोक्ति करते हैं। खैर, यह बात सही है कि हम लोगों के लिए वहाँ रहना कठिन था। यह मेरी लड़की है, यह उसका पति। यह उसका लड़का है और नूशा—यह बच्चे की आया है।

—आप सबसे मिलकर बड़ी खुशी हुई। कैसे हैं आप? ठीक हैं आप? आप लोगों की ही मैं प्रतीक्षा कर रहा था। सामदेवयातोव ने सकमा से

---

* यूरोपियन रूस।

टेलीफोन करके मुझसे कहा था कि ज़िवागो परिवार मास्को से यहाँ आ रहा है और मैं यथासंभव उनकी मदद करूँ। योग्य सेवा बताइये। मुझे लगता है कि आप ही ज़िवागो हैं।

—नहीं, डॉ. ज़िवागो मेरे दामाद हैं। वे रहे। मैं डॉक्टर नहीं, कृषिशास्त्र का प्रोफेसर हूँ। मेरा नाम है ग्रोमेको।

—गलती के लिए मुझे माफ कीजिएगा। मैं आप लोगों से मिलकर सचमुच बहुत ही प्रसन्न हुआ हूँ।

—तो क्या आप सामदेवयातोव को जानते हैं?

—इस आश्चर्यजनक कर्मठ कार्यकर्ता को कौन नहीं जानता? वे ही तो हमारी एकमात्र आशा हैं। उन्होंने जब मुझे कहा कि मैं आपकी हर तरह सहायता करूँ, तो मैंने हाँ भर ली। आपको घोड़ों की आवश्यकता है? और किसी चीज़ की ज़रूरत है? आपको जाना कहाँ है?

—हम लोग वेरिकिनो जाना चाहते हैं। वह यहाँ से कितनी दूर होगा?

—वेरिकिनो! अच्छा, तभी मैं सोच रहा था कि आपकी लड़की को देख कर मैं पता नहीं किस चेहरे को याद कर रहा हूँ? तो आप वेरिकिनो जाना चाहते हैं। इसी से सारी बातें साफ़ हो जाती हैं। श्री क्रूइगर के साथ मिल कर मैंने यह सड़क बनाई थी। घोड़ों का प्रबन्ध किये देता हूँ। किसी को बुला कर गाड़ी का बन्दोबस्त भी कर देता हूँ। दोनात! दोनात! फिलहाल यह सामान उठा कर प्रतीक्षालय में रख दो। अच्छा, घोड़े का क्या इन्तजाम हो सकता है? सुबह से बच्चूस यहाँ चक्कर काट रहा था। चाय वाले कमरे के पीछे की ओर जाकर देखो तो, वह अभी भी वहीं है क्या? कहना कि वेरिकिनो जाने वाले चार यात्री हैं। वे लोग बिलकुल नये हैं। थोड़ा सा सामान है। ज़रा जल्दी। हाँ...देवीजी, आपको एक बुजुर्गाना सलाह देना चाहता हूँ! मैंने जान-बूझ कर आपसे नहीं पूछा कि क्रूइगर महोदय की आप क्या लगती हैं? इस बारे में आपको कुछ कहना पड़े तो बहुत सावधानी से कहिएगा। रास्ते चलते

किसी नये मित्र पर भरोसा करके कुछ भी कह देना आज के समय में ठीक नहीं है।

बच्चूस के नाम से उन सब लोगों को अन्ना की वह बात याद आ गयी, जो वह कहा करती थी कि इस आदमी ने अपने लिए लोहे का अक्षय साँचा बना लिया है; और भी पता नहीं, इस बारे में कितनी ही दन्तकथाएँ वह बताया करती थीं। उन्हें वे सब याद आ गयीं।

सफ़ेद घोड़ी के साथ उसका बच्चा भी था। लटकते हुए कानों और लहराते हुए बालों वाला एक बूढ़ा आदमी चालक था। उसकी लिनेन की कमीज, पाजामा और जूते सभी कुछ सफ़ेद थे। घुँघराले काले बालों वाला रंगीन खिलौने की भाँति वह अश्व-शावक अपनी माँ के पीछे-पीछे कुलाँचें मारता हुआ चल रहा था। गाड़ी में सट कर बैठे यात्री शाँति का अनुभव कर रहे थे। उनके स्वप्न साकार हो गये। यात्रा समाप्त हो गयी। शान्तिपूर्ण दिन ढल रहा था। गाड़ी जब जंगल में से गुज़रती और रास्ते के खड्डों के कारण उछलती, तो गाड़ी में चिपक कर बैठे हुए यात्री एक दूसरे से टकरा जाते और संकोच के कारण झुंझला उठते। सामने फैला हुआ विस्तीर्ण भूखण्ड उनका हार्दिक अभिवादन करता हुआ-सा प्रतीत होता; और वे अपना मस्तक ऊँचा उठा कर तसल्ली की साँस लेकर सीधे बैठ जाते। पहाड़ियों का अपना मौन वक्तव्य था। उनकी भीमकाय छाया गर्वोन्नत रूप से यात्रियों पर निगरानी रख रही थी। आशा और सान्त्वना का प्रतीक गुलाबी रंग खेतों में फैला हुआ था।

गाड़ी चलाने वाले की कमर झुकी हुई थी। वह निरन्तर बड़बड़ाता रहता। उसके बोलने के तरीके में तातारी प्रभाव, मुहावरों का आधिक्य और भाषा में अपने नवीन आविष्कारों की छाप थी। बच्चे की प्रतीक्षा में घोड़ी अपनी चाल धीमी करके उसे अपने बराबर कर लेती। हिलती हुई गाड़ी में टोन्या धीरे से उच्च कण्ठ से चिल्लाई, ताकि किसी आकस्मिक धक्के से उसकी जीभ दाँतों के बीच न आ जाय—शायद यह वही बच्चूस है जिसके बारे में अन्ना कहा करती थी कि किसी लड़ाई में

उनकी अंतड़ियाँ निकल आई थीं और जिसने लोहे की नई अंतड़ियाँ बना दी थीं। शायद यह कहानी मात्र ही हो; लेकिन क्या इसी मनुष्य के बारे में यह कहा जा सकता है?

—तुम ठीक कह रही हो। यह एक कहानी मात्र ही रही होगी। दन्तकथा मात्र। माँ ने बताया था कि जब वह अधिक बूढ़ी नहीं हुई थी, तभी यह कहानी सौ साल पुरानी हो चुकी थी। कुछ भी हो, इतने ज़ोर से मत बोलो। इस बूढ़े को बुरा लग सकता है।

—नहीं, उसे कुछ भी सुनाई नहीं देता। बहरा है। सुन भी ले तो समझ नहीं सकता : उसका दिमाग ठिकाने से नहीं है।

अकारण अकारण वह घोड़ी को प्रिय-अप्रिय नामों से पुकार रहा था—... है इस वर्मा को। परशियन अग्नि-कुण्ड में अब्राहम के बच्चों को ... की भाँति हम भट्टी में सुलग रहे हैं। अजी हाँ, तुमसे ही कह रहा हूँ ...!

इसी तरह बिना विशेष कारण के वह क्रूइगर के कारखानों में गाया जाने वाला कोई गीत गुनगुनाने लगता—

कारखाने के आँगन एवं द्वार नमस्कार।

कच्चे लौह एवं लौहपट नमस्कार।

मालिक की रोटी मेरे लिए नीरस है,

मैं जल पीते-पीते परेशान हो गया हूँ।

एक हंस घाट के किनारे तैर रहा—

वह कच्चे लोहे के बदले अपने पैरों का प्रयोग कर रहा है।

मुझ पर मदिरा का नशा नहीं है,

यह है वैन्या का विछोह।

एक सैनिक बनना,

माशा, विलाप मत करो, मैं मूर्ख नहीं हूँ।

मैं मूर्ख नहीं हूँ, विदूषक नहीं हूँ।

लो, मैं चला शहर को, सेंन्यूरिखा में काम करने।

इस सड़ियल जानवर की ओर देखो मैं इसे कोड़े मारता हूँ और यह मुझे आँख मारती है। आह, फेद्या-न-फेद्या, तुम्हारा चलने का इरादा है या नहीं? इस वन को त्यागा कहा जाता है। इसका अन्त नहीं है। यहाँ पर वन्य बन्धुत्व है। बहुत सारे किसान हैं। अरे, फिर तुम रुक गयीं। दुष्ट कहीं की।

उसने मुड़ कर टोन्या की आँखों में आँखें डाल कर देखा। बोला—देवी, आपका खयाल है कि मैं आपको नहीं जानता कि आप कौन हैं? आप बहुत भोली हैं देवी। यदि मैं आपको नहीं पहचानता, तो मैं अपनी गर्दन कटवाने के लिए तैयार हूँ। मेरी आँखों को धोखा नहीं दिया जा सकता। आप ग्रिगोव (यह क्रूइगर के नाम का उसने अनुवाद किया था) की जीवित प्रतिमा हैं। उन्हें मैं नहीं जानूँगा तो और कौन जानेगा? मैंने अपनी सारी ज़िन्दगी उनके साथ काम किया है। चल-री-चल फिर रुक गयी? जैसे पैर नहीं हों। अजी, मैं तुमसे कह रहा हूँ, महारानी!

'इतनी बड़ी आँखें हैं लेकिन दिमाग बिलकुल नहीं। कितनी भोली हैं आप? आप कह रही हैं कि मैं वही बच्चूस हूँ क्या? जिस बच्चूस की आप बात कर रही हैं, उसे पोस्तनागोव आयरन-बेली के नाम से पुकारा जाता था। उसे मरे कई साल हो गये। मेरा नाम है मेखोनोस्निन। हमारा ईसाई नाम वही है, लेकिन जातीय नाम अलग है।

इसके बाद उसने मिकुलिस्तिन के बारे में बहुत कुछ बताया जो कि वे सामदेवयातोव से पहले ही सुन चुके थे। वह उसकी पहली पत्नी को देवी का स्वरूप बता रहा था और दूसरी को उसकी ही नकल। जब वह वन्य भातृत्व के नेता लिबेरियस की बात करने लगा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि मास्को वाले उससे बिलकुल परिचित नहीं हैं। वहाँ तक उसकी ख्याति न पहुँचने से उसे व्यथा हो रही थी। वह कह रहा—यदि मास्को वालों ने उसके बारे में बहुत कुछ भी नहीं सुना तो आखिर सुना ही क्या?

सन्ध्या हो रही थी, उनकी लम्बी होती हुई छाया उनके आगे-आगे चल रही थी। चौरस वृक्षहीन समतल मैदान को पार कर सूर्यास्त के समय तक वे सतह की काफी ऊँचाई पर पहुँच गये। वे ऐसे लगते थे, मानो किसी किले का चौकीदार चाहरदीवारी का पहरा लगा रहा हो। लम्बी पहाड़ी श्रेणियों में घाटी दूर तक फैली हुई थी। दीवार की भाँति खड़ी इन घाटियों में आकाश घिरा हुआ मालूम होता। लगता, कि पास ही कहीं झरने अपनी मधुर ध्वनि के साथ प्रवाहित हो रहे हैं। इस पर्वत के पृष्ठभाग पर एक बड़ा-सा मकान था। बच्चूस ने कहा—पहाड़ी के उस ओर देखिये। वहीं कहीं मिकुलित्सिन रहता है। नीचे की ओर एक जलमार्ग है। इसे शुत्मा कहते हैं।

नगाड़ों की आवाज़ के साथ बन्दूक की दो गोलियों की आवाज़ पहाड़ी में गूंज उठी।

—यह क्या है? ये सपक्षीय तो नहीं हो सकते? अथवा दादा साहब हमें ही निशाना बना रहे हैं?

—शुक्र है, नहीं। शुत्मा से मिकुलित्सिन भेड़ियों को भगा रहा है।

आठ

मिकुलित्सिन से उनकी मुलाकात मैनेजर के मकान के सामने हुई। इस मुलाकात का आरम्भ मौन स्तब्धता के साथ हुआ और अन्त शोरगुल के साथ बड़े हास्यास्पद रूप में।

उसकी पत्नी हेलन संध्याकालीन-भ्रमण करती हुई जंगल में से आ रही थी। अस्तगामी सूर्य की स्वर्णिम किरणें जंगल में पेड़ों के मध्य से उसके सुनहले बालों पर बिखर रही थीं। वह गर्मी के दिनों के हल्के वस्त्र पहने हुए थी। वह थक गयी थी; और रूमाल से बारम्बार मुँह पोंछ रही थी। बेंत का बना हुआ उसका टोप इलास्टिक द्वारा गर्दन से पीठ की ओर लटका हुआ था। उसका पति उस समय सामने की घाटी से, उसी से मिलने के लिए आ रहा था। बन्दूक में उसे कुछ खराबी लग रही थी, इसलिए वह उसे साफ़ करना चाहता था।

इसी समय बच्चूस तेजी से अपनी चरमराती गाड़ी लिये, सामने से आता दिखाई दिया। सब लोग उतर गये। माथे से अपना हैट उठाते-रखते हुए अलेक्जेण्डर अलेक्जेण्ड्रोविच कुछ गुनगुनाते हुए मिकुलिस्तिन को अपनी बात समझाने लगे। गृहस्वामी इन अभ्यागतों को विस्मयपूर्वक देखते रहे। कुछ देर तक तो उन्हें सूझा ही नहीं कि वे क्या कहें? उनके मौन से आगत थके हुए अतिथि लज्जा के मारे मरे जा रहे थे। जो कुछ कहा गया था, उससे प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित व्यक्तियों के बारे में ही नहीं, साशा, न्यूशा एवं बच्चूस के बारे में भी कोई बात स्पष्ट नहीं हो पा रही थी। इस दुखदायी लज्जाजनक व्यग्रता के भाव में, सब लोग, यहाँ तक कि घोड़ी, अश्व-शावक, सूर्य की अस्त हुई किरणें और हेलन के कन्धे पर भिनभिनाते हुए भ्रमर भी डूब गये। आखिर मिकुलित्सिन ने मौन भंग किया। बोला—मेरी कुछ भी समझ में नहीं आता। मैं कुछ भी समझ नहीं पा रहा हूँ। और शायद मेरी समझ में कुछ आयेगा भी नहीं। इसका क्या मतलब होता है? दक्षिण में गोरवर्ण लोगों को रोटी की कमी नहीं है; फिर उनकी अचानक यह कृपा हम पर हुई कैसे? दुनिया बहुत बड़ी है, लेकिन आप पता नहीं किस चीज़ के कारण यहीं खिंचे चले आये हैं?

—क्या आपने यह भी सोचा है कि इससे, इन पर कितनी जिम्मेवारी आ पड़ेगी?

—हेलन, तुम बीच में मत पड़ो! जी हाँ, यह ठीक कह रही है। क्या आप लोगों को मालूम है कि आप हम पर कितना बड़ा बोझा लाद रहे हैं?

—हे भगवान! महाशय, आप हमें गलत समझ रहे हैं। हम आखिर आपसे कह ही क्या रहे हैं? आपके गले पड़ने, अथवा आपकी शाँति भंग करने का सवाल ही नहीं उठता। हमारी आवश्यकता बहुत छोटी-सी है। हमें चाहिए एक छोटी-सी टूटी-फूटी झोंपड़ी और व्यर्थ पड़ा थोड़ा सा जमीन का टुकड़ा, जहाँ हम अपने खाने के लिए कुछ पैदा कर सकें।

हम जंगल में से चुपके से लकड़ियाँ तोड़ लायेंगे। क्या यह बड़ी माँग है? क्या यही आप पर बहुत बड़ा बोझ हो रहा है?

—नहीं, संसार में इससे भी बड़ी चीज़ें हैं, माँगें हैं। लेकिन उससे हमें कोई मतलब नहीं। लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आ रहा है, कि इस आदर के लिए आपने हमें ही क्यों चुना?

—इसलिए कि हमने आपके बारे में सुना है, और आशा है आपने भी हमारे बारे में कुछ न कुछ सुना ही होगा। इस तरह हम एक दूसरे से बिल्कुल अपरिचित नहीं हैं; और एक अजनबी के सामने अपरिचित रूप में हम नहीं आये हैं।

—अच्छा, तो यह कृपा इसलिए की जा रही है, क्योंकि आप क्रूइगर हैं। लेकिन इस सम्बन्ध का दावा करने की ऐसे समय में आप लोगों की हिम्मत हुई कैसे?

मिकुलित्सिन का पीछे की ओर सँवारे हुए बालों का चेहरा सुन्दर दिखाई देता था। गर्मी की मौसम के लायक वह रेशमी रूसी कमीज पहने हुए था। उसे देख कर लगता था कि इसी प्रकार के आदमी पुराने ज़माने में वोल्गा के किनारे डकैती किया करते थे। आधुनिक काल में इस तरह के लोग सनातन विद्यार्थी के रूप में पाये जाते हैं कि स्वप्नदर्शी होते हुए स्कूल में वे अध्यापन का काम किया करते हैं।

मिकुलित्सिन ने अपनी जवानी स्वतंत्रता-आन्दोलन में अर्पित कर दी थी। उस समय उसे यही अफसोस हुआ करता था कि वह अपने जीवन-काल में स्वतंत्रता को देख नहीं पायेगा। उसका खयाल था कि जब स्वतंत्रता आयेगी तो सब कुछ मर्यादित हो जायेगा। तब इस तर्कसंगत स्वप्नपूर्ति के लिए खूनखराबी शेष नहीं रहेगी। आज जब स्वतंत्रता आई है, तो वह उसकी बड़ी से बड़ी महत्त्वाकाँक्षाओं का भी अतिक्रमण कर चुकी है। वह जन्मजात सर्वहारा लोगों का विश्वसनीय सेनानी था। प्रथम कार्यकारिणी समिति का वह भी एक सदस्य था। वह कारखानों

का नियंत्रण मजदूरों को सौंप देने में विश्वास करता था। लेकिन इस समय उसे उपेक्षित रूप से अकेला छोड़ दिया गया था। अब इन सब के मध्य में होने के बजाय, बन्द कारखानों और भागे हुए कामगारों वाले इस गाँव में वह अकेला पड़ा हुआ है। ऐसी स्थिति में इन अनिमंत्रित अतिथियों का आगमन उसे भाग्य का उपहास-सा लगा। वह क्षुब्ध हो उठा। बोला—इसका कारण मेरी समझ में नहीं आता। इसका मर्म ग्रहण करना मुश्किल है। क्या आपको मालूम है कि आप लोगों के कारण मुझे किस प्रकार का खतरा उठाना पड़ेगा? मुझे लगता है कि मैं पागल हो जाऊँगा। मेरी समझ में कभी भी नहीं आता। मेरी समझ में कभी कुछ आयेगा भी नहीं।

—क्या आप लोग उस ज्वालामुखी का अन्दाज़ लगा सकते हैं, जिस पर हम पहले से ही बैठे हुए हैं?

—एक मिनट, हेलन, ठहरो। मेरी पत्नी बिलकुल ठीक कह रही है। आपके बिना भी यहाँ की स्थिति काफी संकटपूर्ण थी। दो खाइयों के बीच पागलखाने में कुत्ते की ज़िन्दगी व्यतीत करनी पड़ रही है हम लोगों को। लोगों ने मेरा जीना हराम कर रखा है। एक ओर तो वे लोग हैं जिन्होंने मेरा जीना इस लिए दूभर कर दिया है, क्योंकि मेरा लड़का साम्यवादी, बोलशेविक और जनता का लाड़ला है। दूसरी ओर वे लोग हैं जिन्हें इस बात की फिक्र है कि मैं विधान सभा के लिए क्यों निर्वाचित हुआ? कोई भी तो खुश नहीं है। साथ देने वाला कहीं कोई नहीं। और ऐसे समय में आप लोग भग्नदूत की तरह आकर उपस्थित हो गये हैं। अच्छी बात है। आप लोगों के कारण मुझे किसी भी समय एक सैनिक दस्ते का मुकाबला करना पड़ सकता है।

—खैर, भगवान के नाम पर समझदारी से काम लो।

थोड़ी देर बाद वह दयार्द्र हो उठा। बोला—बाहर इस तरह झगड़ने से कोई लाभ नहीं। हम लोग अन्दर बैठ सकते हैं। मुझे मालूम है कि इसका कोई अच्छा नतीजा नहीं निकलने वाला है। मुझे लगता है कि धुँधले

दर्पण में मुझे अपना भविष्य स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। फिर भी हम लोग आपको इस तरह जंगल में थोड़े ही छोड़ देंगे कि भालू आकर आपको खत्म कर दें। हेलन, इनके लिए अध्ययन कक्ष के पास वाले कमरे की व्यवस्था कर दो। बाद में देखेंगे कि इनके लिए कौनसी जगह का इन्तजाम हो सकता है? बगीचे में एक झोंपड़ी का प्रबन्ध बाद में हो जायेगा। अन्दर आ जाइए। बच्चूस, इनका सामान अन्दर ले आओ। ज़रा हाथ लगाना।

आज्ञानुसार सामान रखते हुए बच्चूस बड़बड़ाया—हे जगद्जननि! इनके पास तो तीर्थ-यात्रियों से अधिक सामान है ही नहीं। कुछ नहीं, केवल छोटी सी गठरी। एक सन्दूक तक नहीं?

नौ

शाम को ठंड पड़ने लगी थी। उन्होंने स्नान किया। रात के लिए सोने के कमरे का प्रबन्ध कर दिया गया था। साशा को आशा थी कि उसकी बातचीत सुन कर सब लोग खुश होंगे, अनजाने में ही बालसुलभ चंचलता के नाते उसने गृहस्वामी का अभिवादन किया और अनुग्रहपूर्वक प्रलाप करने लगा। किसी को अपनी ओर ध्यान न देते देख कर वह व्याकुल हो कर रो पड़ा। उसे सबसे बड़ा अफ़सोस इस बात का था कि घोड़ी के बच्चे को बाहर ही क्यों छोड़ दिया गया? उसकी माँ ने उसे धमकाते हुए शान्त रहने के लिए कहा। वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। क्योंकि उसे भय था कि जिस खिलौनों की दूकान से उसे लाया गया है, कहीं उसे वहीं वापस न भेज दिया जाय। वह चाहता था कि उपस्थित तमाम लोग उसके भय को समझें। लेकिन लोगों ने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। इन बालसुलभ लीलाओं का इस समय कोई भी आनन्द लेने की अवस्था में था ही नहीं। इस नये घर में वह बेचैनी सी महसूस करने लगा। उसे लगा कि ज़रूरत से ज्यादा तल्लीनता से सब लोग चुपचाप अपने काम में लगे हुए हैं। साशा को यह सब पसन्द नहीं आया;

परिणामस्वरूप उसे वह दौरा आ गया जिसे लोग आवेश कहा करते हैं। उसे जबर्दस्ती खाना खिलाया गया और सुला दिया गया।

उसके सो जाने के बाद मिकुलिस्तिन की नौकरानी उस्तिन्या भोजन कराने के लिए नूशा को अपने कमरे में ले गयी तथा घर की गुप्त बातों का विस्तृत विवरण देने लगी। सन्ध्याकालीन चाय पर टोन्या, यूरी और अलेक्जेण्ड्रोविच को निमंत्रित किया गया था। दम लेने के लिए यूरी के साथ अलेक्जेण्ड्रोविच बरामदे में आकर खड़े हो गये। उन्होंने कहा—देखो, कितने सितारे हैं?

घनघोर अन्धकार था। एकाध गज़ की दूरी पर खड़े व्यक्ति भी एक दूसरे को ठीक से नहीं देख पाते। उनके पृष्ठभाग से पड़ने वाला प्रकाश उनके सामने की घाटी में गिर रहा था। यूरी और अलेक्जेण्ड्रोविच इस प्रकाश से बाहर थे, इसलिए चारों ओर का अन्धकार और घनीभूत हो उठा था।

—पहले हमें उस झोंपड़े की ओर ध्यान देना होगा यूरी, जिसे वे हमें देना चाहते हैं। यदि वह कामचलाऊ है, तो हमें उसकी मरम्मत शुरू कर देनी चाहिए। इसके बाद बीज बोने के लिए जमीन तैयार करनी होगी। उसके लिए भूमि को गीली कर देना आवश्यक होगा। शायद उसने कहा था कि वह हमें आलू के बीज भी देगा?

—हाँ, उसने कहा था। दूसरे किस्म के बीज देने का भी उसने वादा किया है। झोंपड़ी को शायद बगीचा पार करते समय हमने देखा था। आपको मालूम है, वह कहाँ है? यहाँ से वह लकड़ी का मकान मुश्किल से दिखाई देगा। मैंने रास्ते से गुज़रते वक़्त इशारा भी किया था। आपको याद है? मेरा खयाल है कि वहाँ कभी पुष्पोद्यान रहा होगा। कम से कम दूर से देखने पर ऐसा ही लगता है। हो सकता है कि मेरा अनुमान ग़लत हो। वहाँ अच्छी खाद ज़रूर दी गयी होगी। मेरे खयाल में वह जमीन अब भी काफी उपजाऊ होगी।

—मुझे ठीक-ठीक मालूम नहीं। कल देखने पर पता चलेगा। मेरा खयाल है कि अब वहाँ घास उग आई होगी और जमीन कड़ी हो गयी

होगी। किसी समय उस मकान के पास साग-सब्जियों का छोटा-सा बगीचा अवश्य रहा होगा, जो कि अब काम में न आ रहा हो। सुबह के समय बर्फ़ पड़ने पर जमीन आर्द्र हो जाती होगी। यह जगह बहुत ही बढ़िया है। मुझे बेहद पसन्द आई।

—ये लोग बहुत अच्छे आदमी हैं, विशेषकर मिकुलित्सिन। हेलन पर ज़रूर थोड़ा असर पड़ा है। उसके हृदय में कोई ऐसी चीज़ अवश्य है, जिसे वह स्वयं पसन्द नहीं करती। इसीलिए वह इतनी अधिक बातचीत करती है, और जितनी है, इससे अधिक भोली बनने की चेष्टा करती है। जैसे उसे बड़ी जल्दी हो कि हम उसके बारे में कोई बुरी धारणा बनाएँ, इससे पहले वह अपनी ओर से तुम्हारा ध्यान भंग करने की चेष्टा करने लगती है। खूँटे में लटकते हुए हैट को पहनना भूल जाना उसका भुलक्कड़पन नहीं, बल्कि स्वभाव है।

—अच्छा। अब हमें चलना चाहिए। वर्ना वे हमें असभ्य समझेंगे।

लटकते हुए लैम्प के नीचे गोलमेज के चारों ओर बैठे टोन्या और गृहस्वामी चाय ले रहे थे। उन्होंने मिकुलित्सिन का अन्धकारपूर्ण अध्ययन कक्ष पार किया।

वहाँ दीवार के बराबर एक बड़ी खिड़की थी, जहाँ से घाटी अच्छी तरह से दिखाई दे रही थी। जब थोड़ा प्रकाश शेष था, उस समय बच्चूस के साथ पार किये हुए जलमार्ग और घाटियों वाले मैदान का दृश्य यूरी ने इसी खिड़की से देखा था। खिड़की के पास ही एक विशालकाय टेबल पर एक बन्दूक पड़ी थी। इसके बावजूद भी खाली जगह की ओर ध्यान जाते ही इसकी विशालता और सुव्यवस्था की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट हो जाता। गृहस्वामी और अपने पारिवारिक व्यक्तियों को खाने के कमरे में देख कर उसके मुँह से पहली बात यही निकल पड़ी—कितना बढ़िया मकान है! काम करने के लिए यहाँ वास्तविक प्रेरणा मिलती है। अध्ययन कक्ष कितना बड़ा है!

—चाय आप हल्की पसन्द करते हैं अथवा कड़क? ग्लास या कप में?

—यूरी यह देखो घनचक्र सम्बन्धी यन्त्र! मिकुलित्सिन के सुपुत्र महोदय ने इसे बचपन में बनाया था।

—वह अभी भी बच्चा ही है। हालाँकि उसने कोमच से सोवियत के लिए अनेक प्रदेश जीत लिये हैं।

—कोमच क्या है?

—यह साइबेरिया सरकार की फौज है। संवैधानिक सभा की सत्ता वापस प्राप्त करने के लिए यह लड़ रही है।

—हमने आपके लड़के की बहुत तारीफ सुनी है। आपके लिए यह बड़े गौरव की बात होगी?

—यूराल्स के ये जो मानचित्र हैं, ये फोटोग्राफ उसने अपने आप बनाये हुए कैमरे से लिए हैं।

—बहुत बढ़िया बिस्कुट हैं। सेकरिन के बने हुए हैं?

—नहीं तो। इन दिनों में सेकरिन कहाँ मिलेगी हमें? खुदा कसम, यह शक्कर के बने हुए हैं। आपने देखा नहीं, मैंने आपकी चाय में शक्कर डाली थी?

—मैं फोटोग्राफ्स की ओर देख रहा था। मेरा ध्यान उस समय आपकी ओर नहीं था। लेकिन मुझे विश्वास है कि यह असली चाय होगी।

—यह जेसमाइन चाय है।

—इस मृतलोक में आपने यह प्राप्त कर कैसे ली?

—हमारे पास एक उड़ने वाला जादुई गलीचा है। वह हमारा एक मित्र है। नये किस्म का जन-चर्चित व्यक्ति। वाम पक्षीय। प्रादेशिक आर्थिक काउन्सिल का वह अधिकृत प्रतिनिधित्व करता है। यहाँ से वह शहर में जंगल की लकड़ियाँ ले जाता है और अपने मित्रों के जरीये खाने का

सामान भिजवाने की व्यवस्था कर देता है। ज़रा शक्कर देना तो? अच्छा, क्या आप बता सकते हैं कि ग्रिबोयदोव की मृत्यु कब हुई थी?

—वह 1795 में पैदा हुआ था। लेकिन मुझे याद नहीं आता कि वह किस सन् में मार डाला गया।

—और चाय लेंगे?

—नहीं, धन्यवाद।

—एक और बात। नेजमिगन की संधि की तारीख बताइये और यह भी बताइये कि इस संधि-पत्र पर किस-किस देश ने हस्ताक्षर किये थे?

—उन्हें दिक मत करो, प्रिय। अभी तक उनकी यात्रा की थकान भी दूर नहीं हो पाई है।

—और मुझे यह भी जानना है कि कितने प्रकार के लेंस होते हैं और वे वास्तविक, उल्टा, आवृत्त प्रतिबिम्ब किस अवस्था में लेते हैं?

—आप रसायन शास्त्र के बारे में इतना कैसे जानती हैं?

—युर्यातिन में एक बहुत ही बढ़िया विज्ञान का अध्यापक रहता था। वह लड़के और लड़कियों की—दोनों स्कूलों में पढ़ाया करता था। कैसे बताऊँ कि वह कितना अच्छा आदमी था। आश्चर्यजनक। जब भी वह कोई बात समझाता, सब कुछ स्पष्ट हो जाता। आन्तिपोव उसका नाम था। उसकी शादी एक स्कूल की अध्यापिका के साथ हुई थी। सारी लड़कियाँ उसके पीछे पागल थीं। तमाम लड़कियाँ उसे प्यार करने लगी थीं। स्वयंसेवक के रूप में वह युद्ध में गया था और वहाँ मारा गया। लोग कहते हैं कि प्रस्तुत स्ट्रेलिनिकोव असल में मरा हुआ आन्तिपोव ही है। है यह सब अफवाह की बातें ही। यह संभव नहीं हो सकता। लेकिन कौन कह सकता है, कुछ भी तो संभव हो सकता है। थोड़ी चाय और लेंगे?

9

वेरिकिनो

शरद् ऋतु में जब अधिक अवकाश मिलता, यूरी डायरी लिखने बैठ जाया करता। उसने त्युत्वेव का एक अंश उद्धृत किया—

> कितनी सुन्दर ग्रीष्म ऋतु, कितनी अद्भुत ग्रीष्म ऋतु!
> मन को मुग्ध कर देने वाला यह है जादू।
> इसे पाने के अयोग्य होते हुए, इसे बिना खोजे,
> मैं पूछता हूँ यह तुम्हारे पास आई कैसे?

ग्रीष्म ऋतु में मुझे अक्सर यही महसूस होता है। सुबह से शाम तक अपने लिए और अपने परिवार के लिए मेहनत करने में कितना आनन्द है कि उनके लिए मकान बनाया जाय, भोजन के लिए खेत नीरे जायें। जैसे तुम स्वयं अपने निर्माता हो, जैसे तुम विश्वमित्र हो—सर्व-शक्तिमान की सृजनशीलता के समान बारम्बार जीवन की प्रतिष्ठा करना कितना गौरवयुक्त है! जब तुम्हारे हाथ परिश्रमयुक्त कार्य में रत रहते हैं, तब तुम्हारे मस्तिष्क में नवीन विचार उद्भूत होते हैं। शारीरिक परिश्रम द्वारा ही मस्तिष्क स्थिर रखा जा सकता है। छः घण्टे तक घन चलाने अथवा गड्ढे खोदने के बाद, आकाश में व्याप्त आनन्द एवं सफलता की जीवनदायक साँस लेने के लिए जब कोई हाँफने लगे, तो उससे बढ़ कर लाभ की बात हो ही क्या सकती है? नश्वर विचारों की पृष्ठभूमि में छिपी हुई आत्मप्रेरणा की तुलना अभी तक कागज पर लिखी नहीं जा सकी है; उसे लोगों ने भुला ही दिया है। शहर के सफ़ेद-पोश व्यक्ति मानसिक श्रेष्ठता के अभाव में काफी अथवा तम्बाखू द्वारा कल्पना करने का कष्ट करते हैं। लेकिन वे लोग नहीं जानते कि सबसे बड़ी नशीली औषधि है—कल्पना करने के लिए भी—अच्छा स्वास्थ्य और वास्तविक अनिवार्य आवश्यकताएँ!

अधिक कुछ नहीं कहना है। मैं टालस्टाय के सादगी के सिद्धान्त अथवा उनके 'ग्राम की ओर पुनर्गमन' के उपदेश को नहीं दुहरा रहा हूँ। न ग्रामीण समस्याओं के समाधान के लिए ही अपना कोई हल प्रस्तुत कर रहा हूँ। न उसे समाजवादी दृष्टिकोण से ठीक करने की ही फिक्र में हूँ। मैं कर रहा हूँ यथार्थ की स्थापना। अपने उदाहरण के आधार पर किसी नयी प्रणाली का आविष्कार भी मैं नहीं कर रहा हूँ। हमारी आर्थिक हालत अत्यधिक मिश्रित और देवाधीन है। हम आत्मनिर्भर नहीं हैं। आलू तथा तरकारी की जो खेती हम लोग करते हैं, वह दरअसल हमारी आवश्यकता का एक बहुत छोटा-सा अंश है। हमारी शेष आवश्यकताओं की पूर्ति दूसरी जगह से ही होती है। हम लोगों ने कानून अपने हाथ में ले लिया है। भूमि का जो उपयोग हम कर रहे हैं, वह नाजायज है। हमारे तमाम काम सरकार से छिपा कर किये जाते हैं; जंगल से काटी हुई लकड़ियाँ चुराई हुई हैं। यह कोई स्पष्टीकरण थोड़े ही है कि यह क्रूइगर की सम्पत्ति अथवा जागीर से सम्बन्धित है। मिकुलित्सिन हमारी लज्जा ढंक लेता है, हमारी सुरक्षा करता है। नगर से दूर इस गाँव में भगवान की असीम कृपा से लोग अभी तक यह नहीं जानते कि दरअसल हमारी हस्ती क्या है? मैं इस बात पर खामोश हो जाता हूँ कि मैं डाक्टर हूँ। क्योंकि अपनी स्वतंत्रता पर मैं प्रतिबन्ध लगाना नहीं चाहता। लेकिन किसी न किसी भले आदमी को, किसी न किसी तरीके से मालूम हो ही जाता है कि वेरिकिनो में एक डाक्टर है। नतीजा यह होता है कि कुछ लोग बीस-बीस मील से पैदल रखड़ते हुए यहाँ तक आ पहुँचते हैं। डाक्टरी फीस के रूप में एक मुर्गी, कुछ अंडे अथवा थोड़ा सा मक्खन वे अपने साथ ले आते हैं और मैं इन सबको अस्वीकार नहीं कर सकता। क्योंकि लोगों को विश्वास है कि दवा का असर तब तक नहीं होता, जब तक कि डाक्टर को फीस न दे दी जाय। इस प्रकार मेरी प्रेक्टिस थोड़ी-बहुत चल निकली है। लेकिन अभी भी हमारे तथा मिकुलित्सिन के लिए सम्देवयातोव का ही प्रधान आश्रय है।

उसका चरित्र अद्भुत है, अत्यन्त गूढ़। वह क्रान्ति का पक्का समर्थक है और युर्यातिन-सोवियत के लोगों का उसे पूरा विश्वास प्राप्त है। उसे जो अधिकार मिले हुए हैं; उसके अनुसार यदि वह चाहे तो हमें अथवा मिकुलित्स्तिन को बिना कुछ बताये भी वेरिकिनो से लकड़ियाँ ले जा सकता है। उसे यह भी मालूम है कि यदि वह ऐसा करे, तो हम कुछ भी नहीं कर सकते। दूसरी ओर यदि वह चाहे तो सरकारी तौर पर लूट मचा सकता है। अपनी जेब गर्म कर सकता है। उसे कहने वाला कोई नहीं है। उससे घूस अथवा हिस्से की माँग करने वाला भी कोई नहीं है। फिर भी वह हम लोगों की मदद करता है। पता नहीं क्यों? उसी के कारण स्टेशन मास्टर, मिकुलित्स्तिन तथा यहाँ के प्रत्येक व्यक्ति की कृपा हमें प्राप्त हुई है। वह हमेशा किसी न किसी काम में व्यस्त रहता है। कहीं न कहीं जाने की जल्दी उसे बनी ही रहती है। हमेशा हमारे लिए कोई न कोई चीज़ ले आता है। दोस्तोवस्की के साहित्य और कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो दोनों से वह बखूबी परिचित है और उन पर समान रूप से चर्चा कर सकता है। मेरा खयाल है कि इस आदमी का हृदय यदि सहृदयता और उदारता के कारण इतना उलझा हुआ न होता तो यह कब का मर चुका होता।

दो

कुछ दिनों पश्चात् यूरी ने लिखा—

हम लोग जीर्ण-शीर्ण घर के पृष्ठभाग में अवस्थित लकड़ी के बने दो कमरों वाले मकान में रह रहे हैं। अन्ना की बाल्यावस्था में क्रूइगर इन घरों का उपयोग विशिष्ट घरेलू कर्मचारियों जैसे, मकान की देखभाल रखने वाला, दर्जी अथवा अवकाश प्राप्त दाई, ऐसे लोगों के लिए वह इन कमरों का उपयोग किया करता था। हमने इसकी अच्छी तरह से मरम्मत कर दी। योग्य सलाहकारों की राय लेकर दो चूल्हों का पुनर्निर्माण हुआ। धुएँ के मार्ग का पुनरुद्धार किया गया। अब वे अधिक गर्मी देते हैं। यहाँ का पुराना उद्यान नये पौधों के कारण विलुप्त हो गया

[illegible] ऋतु ने तो सभी कुछ नष्ट कर दिया है। जो पौधे बच रहे हैं वे [illegible] के अन्त पर आँसू बहा रहे हैं। इस हेमानी बाह्य रेखा पर, [illegible] अधिक स्पष्ट दिखाई दे रहा है। सौभाग्यवश पतझड़ के [illegible] एवं गर्म थे। इसलिए वर्षा और शरद् ऋतु के आगमन से पहले [illegible] निकालने के लिए हमें काफी समय मिल गया। मिकुलिस्तिन [illegible] लौटाने के बावजूद भी हमारे पास लगभग 20 बोरे आलू के रह [illegible] हमने उन्हें खत्तियों में रख दिया है। कम्बलों और सूखी घास से [illegible] दिया है। इसी तरह खाने-पीने की अनेक चीज़ें तैयार कर ली [illegible] हैं। फूल-गोभी है, शुष्क बालुका में गड़े हुए गाजर हैं। मूली, [illegible], लौकी, मटर, सेब सब कुछ काफी मात्रा में जमा हो गया है। [illegible] लकड़ी भी पर्याप्त मात्रा में है। वसन्त काल तक इससे काम [illegible] मुझे तहखानों की गर्म, शुष्क हवा बहुत पसन्द है। शरद [illegible] काल में छोटा सा लालटेन लिये ज्योंही कोई बाहर निकल [illegible] है वह, धरती की गंध, बर्फ़ और एक विशेष प्रकार के पौधे का [illegible] जो जमीन से अपनी खुराक लेता रहता है, की गिरफ्त में आ [illegible] है।

•

[illegible] चले आइये। अभी तक अन्धेरा ही है। दरवाजे चरमराते हैं। शायद [illegible] छींकें आ रही हों। खरगोश बर्फ़ पर चरण-चिह्न छोड़ कर इधर-[illegible] भाग रहे हैं। दूर कुत्तों के भोंकने की आवाज़ आ रही है। मुर्गों ने [illegible] खत्म कर दिया है। शायद अब उन्हें अधिक कुछ कहना नहीं [illegible] हुई।

[illegible] की किस्म के एक विशेष प्रकार के जानवर लिकिन्स के गुज़रने के [illegible] पृथिवी पर शैया के धागों की तरह रेखाएँ उभर आई हैं। लोग [illegible] हैं कि यह जानवर रात भर में कई मील यात्रा कर डालता है। उसे [illegible] के लिए चूहेदानियाँ रखी जाती हैं। लेकिन लिकिन्स के स्थान पर [illegible] खरगोश फँसे हुए मिलते हैं। सुबह जब उन्हें निकाला जाता है तो [illegible] में गड़े हुए मरे पड़े मिलते हैं। पहले वसन्त एवं शीत ऋतु के मध्य

काल में, हमें काफी कष्ट उठाना पड़ा था। सिवाय संघर्ष के हम कर ही क्या सकते थे? लेकिन अब, शरद ऋतु में संध्या के समय हम थोड़ा आराम कर सकते हैं। सामदेवयातोव ने मोमबत्तियों का प्रबन्ध कर दिया है। इसलिए हम सब लैम्प के नीचे बैठ जाते हैं। स्त्रियाँ सिलाई अथवा बुनाई का काम करती हैं। अलेक्जेण्डर अलेक्जेण्ड्रोविच ज़ोर-ज़ोर से किताबें पढ़ते हैं। चूल्हा गर्म रहता है। इंजिन की भट्टी में आग झोंकने वाले ड्यूटी पर तैनात व्यक्ति की तरह मैं सिगड़ी को संभालता रहता हूँ ताकि गर्मी का अपव्यय न हो। जलता हुआ कुंदा जब ठीक से नहीं जलता तो उसे उठा कर यथाशक्ति दूर, बर्फ़ पर फेंक देता हूँ। शुष्क उद्यानों की घास को जलाते हुए, चिनगारियाँ फेंकता हुआ, टार्च की तरह चमकता हुआ बर्फ़ पर गिर कर वह अन्धकार में विलीन हो जाता है। टालस्टाय तथा पुश्किन के ग्रंथ तथा रूसी भाषा में अनूदित अन्य महान कृतियों का अध्ययन हम लोग करते हैं।

तीन

वसन्त के प्रारम्भ में यूरी ने लिखा—

मुझे अच्छी तरह से मालूम हो गया है कि टोन्या गर्भवती है। जब मैंने उसे कहा तो उसे विश्वास नहीं हुआ। प्रारम्भिक लक्षण स्पष्ट हैं। इसे प्रमाणित करने वाले बाद के लक्षणों का इन्तजार करने की ज़रूरत नहीं। ऐसे मौके पर स्त्री का चेहरा बदलने लगता है। मेरा मतलब यह नहीं, कि उसका चेहरा रूखा दिखाई देने लगता है। बल्कि कहना यह चाहता हूँ, कि अपने स्वरूप पर उसका नियंत्रण नहीं रह पाता। जिसे वह अपनी कोख में ढो रही है उसी के अधीन उसका भविष्य हो जाता है। अपने आप पर नियंत्रण न होने के कारण वह दिग्विमूढ़-सी हो जाती है। उसकी त्वचा रुक्ष हो जाती है और चेहरा श्रीहीन। अनचाहे रूप से उसकी आँखें भिन्न रूप में चमकने लगती हैं। लगता है मानो वह इन विपरीत अवस्थाओं में सम्बन्ध स्थापित नहीं कर पा रही हो; इसलिए उसकी ओर से अपने प्रति उपेक्षा हो रही हो।

[illegible] और मेरा बचपन का साथ है। इस साल की परिस्थितियों और [illegible] ने तो हमें और अधिक निकट ला दिया है। मैंने देखा है कि वह [illegible], दृढ़ स्वभाव की और अथक परिश्रमरत है। दो कामों के बीच वह [illegible] चतुराई से समय निकाल लेती है कि व्यर्थ समय नष्ट हो ही नहीं [illegible] आदि जननि की परम्परा से चला आ रहा पवित्रता के प्रारूप का [illegible] विचार चिरन्तन है। प्रसवकाल के दौरान में नारी महसूस करती है [illegible] उसे अकेले छोड़ दिया गया हो; उसे लगता है कि पुरुष उससे इस [illegible] हो गया है मानो इस सारे काण्ड से उसका कोई लेना-देना न हो। [illegible] सब बिना कार्य कारण के ही हो गया हो। यह नारी ही है, जो [illegible] को झूले के शान्त एकान्त और सुरक्षित स्थान से किसी ऊँची [illegible] पहुँचाती है। चुपचाप विनम्रता के साथ अकेली ही वह उसका [illegible] करती है। आदि जननी की उसके पुत्र के साथ, प्रभु की [illegible] इसीलिए गौरव के साथ की जाती है। नारी द्वारा मंत्र कहलवाये [illegible] है—'मेरी आत्मा सर्वात्मा के इस रूप को प्रकाशित करती है। मेरे [illegible] प्रभु के साथ मेरी आत्मा का यह अंश खिल उठता है। प्रभु की इस [illegible] के लिए मैं चिर-ऋणी हूँ कि उन्होंने इस दासी को यह गौरव प्रदान [illegible] आने वाली पीढ़ियाँ मुझे पुत्रवती कहेंगी।' इस मंत्र के मर्म का [illegible] है उसकी गोद का शिशु। 'महान् प्रभु ने महान् कार्य किये हैं। यह [illegible] की वृद्धि करेगा। इसी पुत्र के कारण मैं यशवन्ती हो सकूँगी।' [illegible] नारी की वाणी है, बालक के रूप में प्रभु उसे अपनी गोद में [illegible] है। महापुरुषों की माताओं की तो यही भावना रही होगी। [illegible] तो प्रत्येक स्त्री महापुरुषों की माताएँ ही होती हैं। यह बात [illegible] है, कि उनकी यह आशा निराशा के गहरे अन्धकार में डूब जाय।

चार

[illegible] का अन्तहीन अध्ययन जारी है।

[illegible]यातोव अपने साथ काफी उपहार लेकर कल आया था। खाने के [illegible] अनेक चीज़ें थीं, चिराग के लिए तेल था। कला के बारे में हम

लोगों में काफी चर्चा हुई। हमेशा से मैं यही सोचता आया हूँ कि कला के लिए कोई निश्चित श्रेणी नहीं हो सकती। यह ऐसा क्षेत्र नहीं है कि जिसमें असंख्य धारणाएँ हों और अनेक लक्षण मौजूद हों। बल्कि, इसमें मर्यादा और एकाग्रता ही मौलिक रूप से आवश्यक है। यही प्रत्येक महान कलाकृति में परिलक्षित है। यही ऐसी शक्ति है जो इसमें सन्निहित है। इसी में से अनावृत सत्य की सृष्टि होती है। मैंने इसे कभी भी निश्चित विधान के अन्तर्गत नहीं बल्कि इसे समग्रता का एक गुप्त मर्म ही माना है। यह सब मेरे लिए दिन की तरह स्पष्ट है। मैं इसे अपने शरीर की रग-रग में महसूस करता हूँ। लेकिन इसका विश्लेषण करना अथवा इसे व्यक्त करना सरल नहीं।

प्रत्येक कलाकृति अपनी विषयवस्तु द्वारा, परिस्थितियों के रूप तथा चरित्र की मानरेखाओं द्वारा ही प्रभावित कर पाती है। लेकिन इन सबसे अधिक शक्तिशाली वस्तु है इसके अन्तर्निहित कला। कोई भी व्यक्ति रैंस्कोलनिकोव के 'अपराध' की अपेक्षा 'क्राइम एण्ड पनिशमेंट' में व्यक्त कलात्मक भावनाओं से अधिक प्रभावित हो सकता है।

कला के मूल में अनेकरूपता नहीं है। इजिप्त की कला, यूनान और हमारी प्राचीन कला—मेरे खयाल में मूलतः एक समान ही है। इन सब में एक ऐसी धारा अज़स्र रूप से प्रवाहित होती रही है, जो अपने स्वरूप को हजारों वर्षों तक कायम रख सकती है। इसे जीवन-दर्शन का एक विचार कहा जा सकता है। यह इतना विशाल है कि इसे शब्दों में विभाजित करके अभिव्यक्त किया नहीं जा सकता। यदि किसी कृति में विविधता है कि उसमें अनेक विचारधाराओं का समावेश हो जाय, तो उसका यही अर्थ होगा, कि उसमें किसी एक महत्त्वपूर्ण अंश का खटकने लायक अभाव रह गया है। परिणामस्वरूप वह कृति का सार मात्र रह जाती है, जिसे मूल कृति का हृदय कहा जा सकता है, आत्मा कही जा सकती है। उसका आकार रह ही जाता है।

गयी थी। यह था किसी नारी का कण्ठ-स्वर। उसकी आवाज़ मेरे अन्तर्मन में स्पष्ट रूप से प्रतिध्वनित हो उठी। इसी आवाज़ के सहारे मैं अपनी तमाम स्त्री-मित्रों के बारे में सोच गया। किसी की आवाज़ में इतना गाम्भीर्य, दर्द, भार और धीमापन याद नहीं आता। किसी परिचित से ऐसी आवाज़ मेल नहीं खाती। सोचा, सम्भवत: यह टोन्या की आवाज़ हो। इन दिनों उससे अधिक घुल-मिल गया हूँ। हो सकता है कि इतने करीब आ जाने के कारण उसके बोलने के ढंग का विश्लेषण करना मेरे लिए मुश्किल हो। यह भूलने की भी मैंने चेष्टा की, कि यह आवाज़ मेरी पत्नी की ही है। अन्त में इस सम्बन्ध में जानकारी पाने की चेष्टा ही मैंने छोड़ दी। कुछ विरक्त-सा हो गया। यह रहस्य, रहस्य ही बना रहा।

स्वप्न क्या है?

सर्व-सम्मति से यह माना जा चुका है कि दिन में जिस वस्तु विशेष का हम पर गहरा असर पड़े, वही अर्द्ध-चेतनावस्था में रात को स्वप्न में दिखाई देती है। लेकिन मुझे तो यह स्वप्न इस सिद्धान्त के विपरीत-सा ही लग रहा है।

अक्सर ऐसी छोटी-मोटी घटनाओं पर ध्यान जाता ही नहीं। इसे क्षणिक विचार मान कर इस पर सोचने की आवश्यकता ही महसूस नहीं होती। जैसे बिना सोचे-समझे कुछ शब्द मुँह से निकल गये हों, जिस पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत ही नहीं हुई थी। इसी तरह कोई ऐसी चीज़ है, जिस पर ध्यान गया ही न हो, वही रात के समय स्वप्न में सम्पूर्ण आकार के साथ, दिन में उसके प्रति की गयी उपेक्षा के लिए दण्ड देने के लिए प्रस्तुत हो जाती है।

छः

रात। झीना कुहरा। प्रत्येक वस्तु में एक अजीब सी चमक और आकर्षण। कुहरे के इस सूत्र में पृथिवी और आसमान के चाँद-सितारे सभी कुछ बँधे हुए हैं। नक्काशी की तरह रास्ते पर पेड़ों की छाया उभरी

सात

एक डाक्टर अथवा किसान की हैसियत से मैं उपयोगी व्यक्ति बनना चाहता हूँ। साथ ही किसी स्थाई मौलिक कृति का निर्माण करने की भी मेरी लालसा है। कर सकूँ, तो कला अथवा विज्ञान को कोई अभिनव देन देना चाहता हूँ। इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति फॉस्ट की तरह, प्रत्येक प्रकार के अनुभव के सम्पर्क में आता है और उसे प्रकट करने की क्षमता रखता है। अपने से पहले के लोगों द्वारा की गयी गलतियों तथा उसके समकालीन लोगों की भूलों के कारण वह वैज्ञानिक बन गया। वैज्ञानिक उन्नति का राज है बारम्बार फिसल कर उन्मुख होना। तत्कालीन भ्रम और प्रचलित गलत सिद्धान्तों की प्रतिक्रियास्वरूप प्रत्येक कदम आगे बढ़ाया जाता है। फॉस्ट मूलतः कलाकार था। अपने से पहले के वैज्ञानिक दिग्गजों के आदर्श उसके सामने थे। कला का प्रथम चरण है चरम तन्मयता—अडिग लगन। कला के प्रति उसके प्रेम और अपने पूर्वजों के पदचिह्नों के अनुसरण की आत्मप्रेरणा ही उसे प्रगति की ओर ले जाती है। इसी की प्रशंसा से उसकी कला-चेष्टा का आरम्भ होता है।

ऐसी कौनसी चीज़ है, जो मुझे डाक्टर अथवा लेखक की हैसियत से उपयोगी बनने में बाधक है? हमारा एकाकीपन, हमारे नित परिवर्तनशील अव्यवस्थित जीवन का असर, भविष्य के सुन्दर प्रभात को, नये विश्वास के निर्माण को, प्रकाश-स्तम्भ के प्रकाश को प्रभावित नहीं कर सकता। पहली बार इस बात को सुन कर यही समझा जायेगा कि यह कितनी गूढ़ कल्पना है। लेकिन वास्तव में इस आडम्बर का कारण है इसकी पृष्ठभूमि में कल्पना का अभाव! दरअसल कोई वस्तु काल्पनिक है ही नहीं। इसे यह स्वरूप तो किसी प्रतिभावान समर्थ व्यक्ति के हाथों के स्पर्श से ही प्राप्त होता है। पुश्किन इसका जीता-जागता उदाहरण है। सामान्य दायरे में कर्त्तव्य एवं सही कर्म-निष्ठा की उसने कैसी प्रशंसा की है। आजकल तो 'बुर्जुवा' या 'मध्यम-वर्ग'—ये दोनों शब्द अपमानसूचक मान लिये गये हैं। इसी के बारे में पुश्किन ने

खिल उठे। लगता कि जैसे देहात जंभाई लेने के लिए हाथ पसार कर फिर वापस सो जाता हो।

लेनस्की की समाधि का वर्णन पढ़ रहा हूँ—

'जंगल में खिल उठा गुलाब,
वसन्त-प्रेमी बुलबुल सारी रात गाता रहा!'

प्रेमी! यही शब्द स्वाभाविक और उपयुक्त है। कविता के लिए भी उसे 'प्रेमी' की आवश्यकता पड़ी? अथवा सचमुच वह बुलबुल के बारे में ही सोच रहा था? वह अपनी कविता में लिखता है—

बुलबुल की इस चहक पर
जंगल में गूँजने वाली उसकी पागल पुकार पर
दूब की नोकें झूम उठी हैं,
फूलों की पंखुड़ियाँ झड़ने लगी हैं।
घना जंगल चूम रहा है धरती को
जो इसे समझ सके, वे मूर्च्छित हो कर गिर पड़े!

वसन्त के प्रारम्भ में हम वेरिकिनो आये थे। उन दिनों शुत्मा में हरे-भरे पेड़ों की बहार थी। थोड़े ही दिनों बाद शुत्मा में और इस आँगन में बुलबुलें चहकने लगीं।

अपने ऐश्वर्य और विलक्षणता के बीच प्रकृति ने एक बार फिर बुलबुल और अन्य पक्षियों के गीतों का अन्तर छोड़ दिया है!

इस विविधता भरी प्रतिध्वनि का प्रभाव! तुर्गनेव ने इसी के बारे में लिखते हुए उपमा दी थी कि मानो कहीं कोई विशाल राक्षस बांसुरी बजाना शुरू कर रहा हो। इसी की 'टिओख-टिओख' की आवाज़ से ओस की बूँदों से आच्छादित झाड़ियाँ खुशी से झूम उठी हैं।

विनीत, गम्भीर प्रार्थना भरा स्वर प्रतिध्वनित हो रहा है—जागो, जागो!

प्रभावशाली एवं शक्तिशाली होने का राज़ क्या है ? उसने लगभग तमाम चीज़ों की व्यवस्था कर दी थी ताकि टोन्या को साशा के लिए अधिक मौका मिल सके; और मुझे अपने डाक्टरी अभ्यास तथा लिखने के लिए समय मिल सके। हमने उसे पूछा कि उसने इन सब चीज़ों का इन्तजाम किया कैसे ? उसके मुँह से निकलने वाले शब्दों की तरह, उसका इस बात का जवाब वैसा ही गोलगोल था। वह बोला—'हमारी परिस्थितियों में परिवर्तन के लक्षण दृष्टिगोचर हो रहे हैं।' वह अजीब आदमी है। वह मेरा सौतेला भाई है। हम दोनों एक ही नाम धारण करते हैं। लेकिन मैं वास्तव में उसके बारे में अधिक कुछ भी नहीं जानता। दूसरी बार फिर वह मेरी प्रतिभा को अनुप्राणित करने, मेरी कठिनाइयों को सुलझाने और मेरी रक्षा करने के लिए, मेरे जीवनमार्ग पर आ उपस्थित हुआ है। संभवतः प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अपने इर्द-गिर्द के लोगों का चरित्र तो संयुक्त होना ही चाहिए; इसके अलावा कोई ऐसी गुप्त अज्ञात शक्ति भी प्रतीक रूप में होनी चाहिए, जो बिना बुलाये बचाव के लिए आ उपस्थित हो। मेरे प्रच्छन्न जीवन स्रोत में मेरा यह सौतेला भाई उसी तरह का पार्ट अदा कर रहा है।

दस

युर्यातिन के सार्वजनिक पुस्तकालय में से पुस्तकें निकाल कर वह देख रहा था। वाचनालय हवादार था। अनेक खिड़कियाँ थीं। खिड़कियों के सहारे लगभग 100 आदमियों के बैठने के लिए टेबलों की कतारें लगी हुई थीं। पुस्तकालय संध्या के समय बन्द हो जाया करता। नगर में वसन्त ऋतु में रोशनी नहीं होती। लेकिन इससे यूरी को प्रभावित होने की आवश्यकता नहीं थी। क्योंकि हर हालत में वह इस शहर में संध्या के भोजन के समय के बाद कभी रह ही नहीं पाता। सामदेवयातोव की धर्मशाला का जो घोड़ा मिकुलित्सिन ने उसे दिया था, उसे वह बाहर बाँध देता। सुबह से दोपहर तक वह पढ़ता रहता। फिर घोड़े पर सवार होकर वेरिकिनो चला जाता।

ऊनी शाल पहने हुए थी, उसकी आँखें तिरछी थीं। अपनी इच्छानुसार, न कि आवश्यकतानुसार नाक पर वह चश्मा लगा लिया करती।

काले सिल्क की चोली पहने कमजोर छाती की दूसरी सहायिका थी। साँस लेते अथवा बोलते वक़्त, वह अपना मुँह रूमाल से ढके रहती। उसका रूमाल वहाँ से शायद कभी नहीं हटता। इन कर्मचारियों के भी विद्वानों की तरह फूले हुए मोटे चेहरे थे; वैसी ही ढीली त्वचा। वे धीरे-धीरे बोलते हुए नये सदस्यों को वहाँ की नियमावली समझाते। पुस्तक देने के आदेश-पत्र को ढूँढ़ निकालते। किताब को खोज कर लाते वक़्त बीच-बीच में किसी रिपोर्ट या और किसी काम में अटक जाते।

अन्तर्भाग के काल्पनिक संसार और खिड़की से बाहर दिखाई देने वाले वास्तविक शहर का दृश्य अगणित विचारों को प्रेरित कर देता है। उपस्थित लोगों के सूजे हुए चेहरों को देखकर लगता, जैसे सबको गण्डमाला-रोग हो गया हो। उसे बीच-बीच में युर्यातिन स्टेशन पर सिगनल-ड्यूटी पर तैनात कर्कश महिला का चेहरा याद आ जाता। उस समय का दृश्यावलोकन का स्मरण करते हुए, यूरी को धरती पर बैठे सामदेवयातोव की टीका-टिप्पणी याद आ गयी। उन तमाम स्पष्टीकरणों को जोड़ने का वह प्रयत्न कर रहा था। तत्कालीन अवस्था के बजाय वह इस समय वस्तुस्थिति के करीब था। लेकिन उसे ठीक याद नहीं आ रहा था कि सामदेवयातोव ने उससे क्या कहा था?

ग्यारह

यूरी दरवाजे से दूर, कमरे के अन्त में बैठा हुआ था। उसके सामने उस क्षेत्र के मानव-जाति-शास्त्र की अनेक संदर्भ पुस्तकें तथा स्थानीय संकलित आँकड़ों के लेख पड़े थे। पुगाचेव क्रान्ति के इतिहास की दो पुस्तकों की माँग करने पर, रेशमी चोली पहने पुस्तकाध्यक्ष महोदया ने फुसफुसा कर बताया कि कोई भी पाठक एक साथ इतनी पुस्तकें नहीं ले सकता। उन पुस्तकों के लिए उसे कुछ पुस्तकें, संदर्भ ग्रंथ और पत्र-पत्रिकाएँ लौटानी पड़ेंगी। सो वह अपने सामने के उन पुस्तकों के ढेर में

[illegible] छाँटने बैठ गया। महत्त्वपूर्ण पुस्तकों को छोड़ कर शेष [illegible] लौटा दीं और इतिहास सम्बन्धी किताबें ले आया। अपने [illegible] नोट को पढ़ते हुए, उसके शीर्षकों को वह ग़ौर से देख गया। [illegible] की भीड़ अब उसका ध्यान भंग नहीं करती। जो उसके समीप [illegible], वे अब उसके मस्तिष्क में स्थिर स्वरूप प्राप्त कर चुके हैं। बिना [illegible] देखे, उसे मालूम हो जाता है कि वे वही हैं। उसे विश्वास [illegible] खिड़की से बाहर दिखाई देने वाले गिरजाघर अथवा मकान अपने [illegible] भले ही हट जायं, लेकिन ये लोग यहाँ से हटने वाले नहीं हैं। [illegible] अवश्य अपना स्थान बदल दिया था। पूर्वी कोने से कमरे के चारों [illegible] कर वह दक्षिणी खिड़कियों के पास आ गया था और उसकी [illegible] की आँखों में चुभ रही थी। पुस्तकालयाध्यक्षा अपनी टेबल [illegible] खिड़कियों के पास चली गयी। वहाँ रोशनी को अनुपम ढंग से [illegible] वाले लहरियेदार सफ़ेद पर्दे लटक रहे थे। एक को छोड़ कर [illegible] डोरी खींच दी। अन्तिम खिड़की के पास अभी भी एक ओर [illegible]। इस खिड़की के शीशे के चौखटे को खोलने के लिए ज्योंही [illegible] खींची, उसे छींकों का दौरा आ गया। उसके निरन्तर छींकते [illegible] यूरी का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हुआ। उसने सोचा शायद [illegible] मिकुलित्सिन की साली साहिबा होंगी। सामदेवयातोव शायद इन्हीं [illegible] लड़कियों के बारे में कहा करता था। सिर उठा कर उसने अन्य [illegible] की तरह उसकी ओर देखा। एक नये पाठक के कारण वाचनालय [illegible] वातावरण बदल गया था। यूरी पहचान गया, सामने लारा [illegible] खड़ी थी। ज़िवागो की ओर उसकी पीठ थी। पुस्तकाध्यक्ष [illegible] की ओर झुकी हुई वह धीमे स्वर में उससे बातचीत कर रही [illegible] लारा की बातचीत से पुस्तकालय की अध्यक्ष काफी प्रभावित हुई [illegible] लगता था मानो उसका जुकाम गायब हो गया हो। जैसे उसके चेहरे [illegible] निराशा और थकान भाग गई हो, उसने लारा की ओर कृतज्ञतापूर्ण [illegible] से देखा और जेब में रूमाल डालती हुई, वह अपनी टेबल पर [illegible] बैठ गयी। वाचनालय के विभिन्न कोनों में बैठे हुए अनेक लोगों

पर इस घटना का मार्मिक प्रभाव पड़ा। लारा की ओर अनुमोदित दृष्टि से देखते हुए, उपस्थित लोगों के चेहरे पर मुस्कान फैल गयी। लोगों के चेहरों पर उठने वाले इन छोटे-मोटे भावों से यूरी को समझते देर नहीं लगी कि लारा इस क्षेत्र में काफी लोकप्रिय है।

बारह

यूरी की पहली इच्छा हुई, कि वह उसके पास जाकर उससे बातचीत करे। लेकिन भूतकाल के संकोच तथा सादगी के अभावपूर्ण सम्बन्धों के कारण वह उठ कर उससे अनौपचारिक तरीके से मिल नहीं पाया। उसने मन ही मन निश्चय किया कि वह प्रस्तुत स्थिति में व्यवधान नहीं डालेगा और न ही अपने काम से मन हटायेगा। उसे देखने के प्रलोभन को दूर करने के लिए उसने कुर्सी बगल की ओर घुमा दी। परिणामस्वरूप उसका पिछला भाग इस ओर से दिखाई देना बन्द हो गया। एक हाथ से पुस्तक पकड़े और दूसरा हाथ अपने घुटनों पर रखे, उसने प्रयत्न किया कि उसका मन अपने अध्ययन में लगा रहे। लेकिन पढ़ने के विषय से उसके विचारों का संसार बिलकुल अलग था। उसे अचानक याद आया कि वेरिकिनो की शरद्-रात्रि में उसने एक स्वप्न में जिस नारीकंठ का स्वर सुना था—वह स्वर वास्तव में लारा का ही था। इस तथ्य के अन्वेषण से उसे इतना आश्चर्य हुआ कि आवेश के मारे उसने ज़ोर से कुर्सी एक ओर खिसका दी। वाचनालय के शांत कमरे में इस आवाज़ ने सबका ध्यान यूरी की ओर आकर्षित कर लिया। लारा के चेहरे का एक भाग पीछे से दिखाई दे रहा था। वह बालक की तरह तन्मयता के साथ अपनी पुस्तक में खोई हुई बैठी थी। उसका माथा दायें कन्धे की ओर थोड़ा-सा झुका हुआ था। बीच-बीच में कुछ सोचने के लिए वह रुक जाया करती, छत की ओर देखती और फिर गालों पर हाथ टिकाये अपनी नोटबुक में पेन्सिल से तेजी से कुछ नोट करती हुई खो जाती। मेल्यूजेवो में जो कुछ देखा था, वह यूरी को याद हो आया। इसमें किसी प्रकार का त्रियाचरित्र नहीं है। न वह किसी को खुश करने की चेष्टा

करती है, न सुन्दर दिखाई देने का ही प्रयत्न कर रही है। उसे स्त्री-जीवन के इस पक्ष से मानो विरक्ति है। मानो वह अपने आप को सुन्दर होने की सजा दे रही हो। अपने सौन्दर्य के प्रति उसकी यह गौरवपूर्ण शत्रुता उसे और अधिक आकर्षक बना रही थी। यूरी सोच रहा था, वह सारे काम किस कुशलता से करती है! वह पढ़ रही है तो ऐसे, जैसे यह कोई बहुत बड़ा काम न हो; बल्कि यह सरलतम संभव वस्तु हो, जो कोई भी कर सकता है। मानो यह काम भी कुएँ से पानी निकालने अथवा आलू छीलने की तरह हो।

इस प्रकार की भावनाओं की प्रतिक्रिया में यूरी की उत्तेजना शान्त हो [illegible] अनुभव उसे बहुत कम हुआ था। एक [illegible] वाला उसका मस्तिष्क अचानक स्थिर-[illegible] हंस पड़ा। जिस प्रकार लारा की उपस्थिति [illegible] महोदया को प्रभावित कर दिया था, ठीक [illegible] प्रभाव ज़िवागो पर भी पड़ा। कुर्सी के इस कोण के [illegible] उसे कोई परेशानी नहीं थी, न उसका ध्यान ही भंग हो रहा था। एक घंटे से भी अधिक समय तक, वह एकाग्रचित्त होकर अपना काम करता रहा। पुस्तकों के ढेर में से आवश्यक विषयों को वह पढ़ गया। दिन भर के अपने काम से संतुष्ट हो कर उसने अपनी पुस्तकें जमा करवा दीं। उसने सोचा कि प्रातःकाल के कठिन परिश्रम के पश्चात् सरल विवेक सहित, बिना किसी विपरीत लक्ष्य के अपने पुराने मित्र से मिलने का वह निश्चित रूप से अधिकारी है। उससे मिलने का आनन्द न्यायसंगत है।

लेकिन जब वह अपनी जगह से उठा, उसने देखा लारा वहाँ नहीं थी। उसके द्वारा लौटाई हुई पुस्तकें अभी भी काउण्टर पर पड़ी थीं। वह मार्क्सवाद का अध्ययन कर रही थी। अपने अध्यापन कार्य में लगने से पहले वह सम्भवतः फिर से राजनीतिक अध्ययन कर डालना चाहती थी। पुस्तकों के पृष्ठों में आदेश पत्र अटका हुआ था। यूरी ने उसका पता

नोट कर लिया। एक अन्य पाठक से मर्चेन्ट स्ट्रीट, कार्याटीड का मतलब उसने पूछा। उसे मालूम हुआ कि कार्याटीड के मकान से सम्बन्धित जगह बताने की प्रथा युर्यातिन में सुप्रचलित है। ठीक उसी तरह, जिस तरह मास्को में अपने क्षेत्र के मकान को पादरी के प्रदेश के नाम से पुकारा जाता है।

कार्याटीड का मकान इस्पात के समान भूरे तथा काले रंग का था। द्वार पर मूसस की वीणा और मजीरा लिये विशालकाय प्रतिकात्मक मूर्तियाँ लगी हुई थीं। पिछली शताब्दी में किसी व्यवसायी ने इसे निजी रंगभवन के रूप में बनवाया था। उसके उत्तराधिकारियों ने इसे 'मर्चेण्ट गील्ड' को बेच दिया। इसी कारण इस सड़क का यह नाम पड़ा था। इस ओर का सारा क्षेत्र इसी भवन के नाम से प्रसिद्ध था। यह स्थान अब पार्टी की नगर-कमेटी के काम आता था। किसी ज़माने में निचले बाह्य भाग में, जहाँ विज्ञापन तथा कार्यक्रम चिपकाये जाते थे, वहाँ अब घोषणा-पत्र तथा राजाज्ञाओं का प्रदर्शन होता है।

तेरह

मई का प्रारम्भ। दोपहर का समय। ठंडी हवा का अन्धड़। यूरी पुस्तकालय गया था। शहर का काम समाप्त करके वह घर जा रहा था। उसका इरादा बदल गया और वह लारा के घर की ओर चल पड़ा। तेज अन्धड़ के कारण यूरी के ऊपर धूल के बादल उठने लगते। आँखें मलता हुआ एक ओर मुड़ कर वह इस धूल भरे बादल के रुकने की प्रतीक्षा करने लगा। वह आगे बढ़ा। कार्याटीड को उसने पहली ही बार देखा था। लेकिन उसे लगा कि यह स्थान अपने नाम के अनुकूल ही है। उसकी विचित्रता का अमिट प्रभाव यूरी पर पड़ा। पौराणिक स्त्रियों की आदमकद मूर्तियाँ ऊपरी मंजिल की सतह तक कतार में खड़ी थीं। धूलभरी हवा के झोंकों के बीच, उसे लगा कि जैसे घर की तमाम स्त्रियाँ बाहर बरामदे में आकर खड़ी हो गयी हों और उसकी ओर देख रही हों।

लारा के मकान में दो प्रवेश द्वार थे; एक मर्चेन्ट स्ट्रीट में, दूसरा कोने की गली में। उसे ठीक-ठीक मालूम नहीं था कि किस दरवाजे से जाये, इसलिये वह बगलवाली सड़क में चला गया। दरवाजे की ओर मुड़ते ही हवा का एक अन्धड़ फिर उठा और सामने का रास्ता कूड़े-करकट से भर-सा गया। इस अन्धड़ के काले पर्दे के बीच से किसी मुर्गे द्वारा पीछा किये जाने के कारण मुर्गियों का दल चींचीं करता हुआ यूरी के पाँवों के नीचे से भाग गया। अन्धड़ के समाप्त होने पर उसने लारा को कुएँ के पास पानी भरते हुए देखा। उसने दो बाल्टियाँ भरीं और कावड़ में अटका कर वह चलने की तैयारी कर रही थी। बालों को धूल से बचाने के लिए उसने लापरवाही के साथ एक रूमाल से उन्हें बाँध रखा था। लहराते हुए स्कर्ट को उसने घुटनों के बीच दबा रखा था। घर की ओर कदम बढ़ाते ही हवा के कारण उसका रूमाल उड़ कर गिर गया और वह रुक गयी। रूमाल उड़ता हुआ उन मुर्गियों के पास चला गया जो अभी भी मुर्गे से परेशान आनंदपूर्वक चहक रही थीं। यूरी ने लपक कर रूमाल उठाया और लारा के पास चला आया। हमेशा की तरह उसने अपना आश्चर्य भाव पलक झपकते ही छिपा लिया। उसके चेहरे पर किसी नाटकीय भाव को नहीं देखा जा सकता। उसके मुँह से इतना ही निकला—ज़िवागो!

—लारा!

—आप यहाँ कैसे?

—इन बाल्टियों को नीचे रख दो। मैं पहुँचा दूँगा।

—मैं न अधूरा काम छोड़ती हूँ, न आधे रास्ते रुकती हूँ। आप मुझसे ही मिलने आये हैं न? आइये।

—और यहाँ किस लिए आता?

—मुझे क्या पता!

—खैर। इन बाल्टियों को छोड़ दो। यह काम मुझे करने दो। जब तुम काम करो, मैं चुपचाप निष्क्रिय नहीं रह सकता।

—यह भी कोई काम है! रहने दीजिये। आपसे नहीं होगा। सिर्फ़ सीढ़ियों पर पानी फैल जायेगा। अच्छा बताइये तो, आज आप यहाँ कैसे चले आये? यहाँ आप एक साल से हैं। लेकिन कभी यहाँ आने की याद तो आपको आई नहीं। समय ही नहीं मिला होगा?

—तुम्हें कैसे मालूम कि मैं यहाँ साल भर से हूँ!

—अफवाह सुनी थी! मैंने स्वयं आपको वाचनालय में देखा था।

—फिर भी बात नहीं की?

—करती कैसे? डर लगता था। अब आप यह भी कह दीजिये कि आपने मुझे वहाँ देखा ही नहीं था।

बाल्टियों के बोझ से झुकी हुई, उसने मेहराबदार दरवाजा पार किया। फर्श पर बाल्टियों को रख कर उसने कावड़ निकाल डाली। हाथ सीधे किये। छोटे से रूमाल से पोंछ लिये।

—आइये। सामने के अन्तर्भागीय हाल में मैं आपको ले चलती हूँ। वहाँ अधिक उजाला है। एक मिनट आपको रुकना होगा। मैं पीछे की सीढ़ियों से जाकर बाल्टियाँ रख आती हूँ और थोड़ी बहुत व्यवस्था कर आती हूँ। ज्यादा देर नहीं लगेगी। आपने इन साफ़ स्वच्छ सीढ़ियों को देखा? यह पुराना मकान है। गोलाबारी का इस पर कुछ असर हुआ है। कहीं-कहीं दीवार में दरारें पड़ गयी हैं। इस दरार की ओर देखिये, मैं अथवा कात्या जब बाहर जाती हैं तो यहाँ चाबी रख जाया करती हैं। मेरी अनुपस्थिति में यदि कभी आप यहाँ आवें तो चाबी लेकर दरवाजा खोलकर आराम से बैठ सकते हैं। देखिये, यह रही चाबी। लेकिन इस समय मैं इसका उपयोग नहीं करूँगी। पिछले रास्ते से जाऊँगी। आप यहीं खड़े रहिये। मैं अन्दर से दरवाजा खोल दूँगी। यहाँ चूहों की बड़ी मुसीबत है। उनसे पीछा छुड़ाना मुश्किल है। मानो यहाँ इन्हीं का साम्राज्य हो। इन पुरानी दीवारों में अनेक छेद हैं। मैंने तमाम छेदों को बन्द कर दिया है। लेकिन उससे क्या होता है? अच्छा किसी दिन आकर

आप मेरी मदद कीजियेगा? आप यहीं ठहरिये, इस बारे में गम्भीरता से कुछ सोचिये। मुझे अधिक देर नहीं लगेगी। अभी लौट आऊँगी।

यूरी सोच रहा था—जिस प्रकार वह पढ़ने में एकाग्रचित्त थी, उतनी ही सरलता के साथ वह घर के कामकाज में, शारीरिक परिश्रम में दत्तचित्त है। वह कुएँ से पानी भी उसी तरह भरती है, मानो वह पुस्तकें पढ़ रही हो। उसे इसके लिए कोई विशेष प्रयास नहीं करना पड़ता। वह जो कुछ करती है, उसमें सहज सरलता है, एकात्मकता है। उसका जीवन तेजी के साथ आरम्भ हुआ और उसका स्वभाव उसी में ढल गया। जैसे कार्य-कारण से नैसर्गिक परिणाम प्रवाहित होता है, उसी तरह उसे सब कुछ स्वयंसिद्ध है। उसके शब्दों में, उसके विचारों में, उसकी मुसकान में एक सुनिश्चित क्रम है।

ऊपर से लारा ने पुकारा—ज़िवागो!

चौदह

—लाइये, अपना हाथ मुझे दे दीजिये। फर्नीचर से भरे हुए दो अन्धकार पूर्ण कमरों से हमें गुज़रना है। खयाल रखियेगा, कहीं किसी चीज़ से टकरा न जाएँ और अपने हाथ-पाँव न तोड़ बैठें।

—यह तिलिस्म है। मुझे तो यह रास्ता कभी न मिलता। फ्लेट को वापस सजाया जा रहा है क्या?

—ऐसी कोई बात नहीं। फ्लेट किसी और का है। किसका है, यह मुझे नहीं मालूम। मेरा फ्लेट स्कूल की इमारत में था। जब से स्कूल काट्या-नगर-गृह-व्यवस्था-विभाग के लिए ले लिया गया है, मुझे इस फ्लेट का एक हिस्सा दे दिया गया है। पुराने किरायेदार अपना फर्नीचर यहीं छोड़ गये हैं। भयंकर ढेर है। मुझे दूसरों की चीज़ इस्तेमाल करना पसन्द नहीं। इसलिए मैंने इन दोनों कमरों में यह सब भर दिया। खिड़कियों के शीशे पर सफ़ेदी पोत दी कि यह सब दिखाई न दे। हाथ मत छोड़िये, खो जायेंगे। बस, पहुँच गये। ज़रा बायें घूमते ही हम इस भूलभुलैया से

बाहर हो जायेंगे। एक मिनट में ही उजाला नजर आ जायेगा। आगे सीढ़ियाँ हैं, बचियेगा।

दरवाजे के ठीक सामने वाली खिड़की से जो दृश्य दिखाई दे रहा था, उसे देख कर ज़िवागो आश्चर्यचकित-सा रह गया। वहाँ से बाहर का मैदान दिखाई दे रहा था। छोटे मकानों की छतों के साथ नदी के किनारे वाला मैदान फैला हुआ था। भेड़ बकरियाँ वहाँ चरा करतीं। भेड़ों की ऊन नीचे तक लटक रही थी। वहाँ भी शीट ड्रील्स और थ्रेसिंग मशीन के विशालकाय बोर्ड लगे हुए थे।

मास्को से आते वक़्त का यात्रा-विवरण सुनाने वह बैठ गया। स्ट्रेलिनिकोव की बात कहते-कहते वह भूल गया कि संभवतः वह लारा का पति है। उसकी कथा के इस भाग का लारा पर विशेष असर पड़ा।

—आपने उन्हें देखा था? कितनी विचित्र बात है। अभी मैं कुछ ज्यादा नहीं कह सकूँगी। लेकिन यह सब कितना असाधारण है! जैसे संयोग ने आपको उनसे मिलने के लिए बाध्य कर दिया हो। कभी इस बारे में आपको सभी कुछ कहूँगी। आप पर, लगता है उनका अच्छा प्रभाव ही पड़ा है।

—हाँ, कुल मिला कर बहुत अच्छा प्रभाव ही पड़ा। यदि वह चाहता तो मेरी बात नहीं भी मान सकता था। चाहता, तो कोई रू-रियासत नहीं करता। खैर। स्ट्रेलिनिकोव द्वारा बर्बाद किये हुए प्रदेशों से हम गुज़रे। मेरी उसके बारे में अनेक कल्पनाएँ थीं। लेकिन यह अच्छा ही है कि हर मनुष्य हमारी धारणाओं के अनुसार ही नहीं होता। इसीलिए मुझे लगा कि वह किसी एक साँचे में ढला हुआ पुतला नहीं है। ऐसा होता तो मनुष्य के रूप में उसका कभी का अन्त हो गया होता। माना कि उसे किसी निश्चित श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, लेकिन इसके यह माने नहीं कि उसमें मानवता का अपरिहार्य अंश न हो। उसमें वही तो है, जो अमरता का मूल है।

—लोग कहते हैं कि वे पार्टी के सदस्य नहीं हैं।

—सही बात है। मुझे आश्चर्य इसी बात पर होता है कि वह कौन-सी वस्तु है, जो इसके बावजूद भी उसे इतना आकर्षक बनाये हुए है। मुझे लगता है कि वह टूटा हुआ आदमी है। निश्चिय ही इसका अन्त दुःखद होगा। एक दिन उसे अपने इन्हीं कामों के लिए प्रायश्चित्त करना होगा। अपने हाथ में कानून ले लेने वाले क्रान्तिकारी बड़े भयानक सिद्ध होते हैं। अपराधियों की तरह नहीं, बल्कि उस भयंकर मशीन की तरह, जो काबू से बाहर हो गयी हो, अथवा उस चलती हुई रेल की तरह, जिसे नियंत्रण में न रखा जा सके। स्ट्रेलिनिकोव भी औरों की तरह ही पागल है, लेकिन उसका यह पागलपन किताबी जोश के कारण नहीं है। उसके जीवन की यातनाओं का परिणाम है। मैं उसका छिपा हुआ राज नहीं जानता, लेकिन मुझे विश्वास है कि असली कारण यही है। बोलशेविकों के साथ उसका सम्बन्ध एक आकस्मिक घटना मात्र है। वे उसका साथ तभी तक देंगे जब तक उन्हें यह एहसास रहेगा कि वह उनके लिए उपयोगी है तथा उसका सारा कार्य उनके अनुकूल है। फिर जिस क्षण उन्हें उसकी आवश्कता नहीं रहेगी, वे उसे निर्दयतापूर्वक बाहर निकाल फेंकेंगे। जिस प्रकार उन्होंने अन्य मिलिट्री-प्रवीणों को कुचल डाला, इसी तरह उसका भी अन्त कर दिया जायेगा।

—सच?

—मुझे पूरा विश्वास है।

—उनके लिए कोई बचाव नहीं? वे भाग नहीं सकते?

—भागकर वह जायेगा कहाँ, लारा? यह सब जार के ज़माने में चल सकता था। लेकिन आजकल? असंभव!

—आप कितने बदल गये हैं? मैं डर गयी हूँ। पहले क्रान्ति के बारे में आप बिना किसी उत्तेजना के ही बोला करते थे। उनके प्रति इतने कठोर तो नहीं थे।

—बात असल में यह है लारा कि प्रत्येक चीज़ की मर्यादा होती है, सीमा होती है। अब तक तो किसी निश्चित उद्देश्य को प्राप्त कर लिया जाना चाहिए था। लेकिन देखो तो, क्रान्ति भड़काने वालों को कहीं चैन नहीं! परिवर्तन और विध्वंस ही मूल तत्त्व बन गया है। उन्हें किसी चीज़ से सन्तोष नहीं। संक्रान्ति काल की घड़ियों में, नवनिर्माण के लिए अनिवार्य विनाश ही उनके उद्देश्य की चरम-पूर्ति बन गया है। उन्हें और किसी चीज़ के लिए प्रशिक्षित किया ही नहीं गया। सिवाय विनाश-विध्वंस के, वे किसी चीज़ के बारे में कुछ जानते ही नहीं। इसी की सीमाहीन तैयारियों का अनन्त चक्र चलता रहता है। इसीलिए न उनमें वास्तविक प्रतिभा है न सामर्थ्य ही। मनुष्य जीने के लिए पैदा हुआ है, जीने की तैयारी के लिए नहीं। जीवन का स्वयंसिद्ध वरदान जीवन ही है। यह बहुत ही गंभीर बात है लारा। स्कूल से भागे हुए लड़कों की चँचलताभरी कल्पनाओं के भरोसे यह सब कैसे छोड़ दिया जाय? खैर, जाने दो इन बातों को, अब सवाल पूछने की मेरी बारी है। जिस समय हम यहाँ आये थे, स्थानीय गड़बड़ियाँ काफी थीं। उन दिनों तुम यहीं थी?

—थी। चारों ओर आग लगी हुई थी। पता नहीं बमबारी के बावजूद भी यह मकान कैसे बच गया? फिर भी यह पूरी तरह से टूट-फूट चुका है। अभी भी सामने के भाग में बिना फूटे हुए बम के गोले पड़े मिल जायेंगे। जिस प्रकार प्रत्येक सरकार के बदलते समय होता है, ठीक वैसे ही चारों ओर गोलाबारी और आतंक फैला हुआ था। हम इन सब के आदी हो गये थे। मुझे ठीक-ठीक नहीं मालूम कि श्वेत-दल के नियंत्रण में क्या हुआ था। खून, प्रतिहिंसा, ज़ोर-जबर्दस्ती, बदमाशी—वास्तविक प्रेतपूजा का महा-आयोजन! एक बहुत बड़ी बात तो कहना मैं भूल ही गयी। हमारा गेल्युलिन! वह चेकोस्लावियनों के साथ है, गवर्नर जनरल हो गया है!

—मुझे मालूम है। उसके बारे में मैंने भी सुना है। तुमने उसे देखा था?

—बहुत बार। आप सोच ही नहीं सकते, पता नहीं कितने लोगों को बचाने की मैंने व्यवस्था की थी। अधजल गगरी की तरह छलकने वाले [illegible] कप्तानों की तरह वह ओछा आदमी नहीं है। वह अपने पुराने कर्ज की अदायगी के लिए काफी सज्जनता के साथ पेश आया। इस तरह [illegible] ताण्डव प्रस्तुत करने वाले दुर्भाग्यवश नारकीय कीड़े ही थे, कोई भले [illegible] नहीं। गुल्युलिन ने मेरी बड़ी मदद की। उसे अनेक धन्यवाद। आपको तो मालूम ही है, हम पुराने मित्र हैं। जब हम बहुत छोटे थे, उन दिनों वह हमारे घर के सामने वाले मकान में ही रहता था। वहाँ मैं इधर-उधर दौड़ती-खेलती रहती। अधिकतर रेल्वे कर्मचारी रहते थे [illegible] मैंने बचपन में बहुत गरीबी देखी है। इसीलिए क्रान्ति के प्रति मेरा दृष्टिकोण आपसे नितान्त विपरीत है। यह सब मेरे बहुत करीब की चीज है। मैं इसके मर्म को बहुत कुछ समझ सकती हूँ। लेकिन फिर भी [illegible] तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकती कि दरबान का लड़का गुल्युलिन [illegible]-दल का कर्नल अथवा जनरल हो जाय। बात यह है कि मेरे परिवार में कोई सैनिक था ही नहीं। इसलिए मुझे इन पदवियों के बारे में ज्यादा मालूम नहीं है!...और मेरा अपना पेशा है इतिहास पढ़ाना। खैर, हकीकत कुछ ऐसी ही थी। हमने बहुत से लोगों की मदद करने की व्यवस्था कर दी। मैं उससे मिलने अक्सर जाया करती थी। आपके विषय में भी बातचीत होती। प्रत्येक सरकार के व्यक्तियों से मेरे अच्छे सम्बन्ध रहे हैं; और वहाँ मेरे मित्रों की भी कमी नहीं रही। लेकिन उन सबसे मुझे अधिकतर दु:ख और निराशा ही मिल सकी। जैसा कि बुरे उपन्यासों में होता है, कि लोग दो विभागों में बँट जाते हैं—फिर उनका एक दूसरे से कोई ताल्लुक नहीं होता। कोई लेना-देना नहीं रहता। लेकिन वास्तविक जीवन में तो सभी कुछ मिश्रित होकर ही उपस्थित रहता है। जीवन के रंगमंच में यदि आपको सिर्फ़ एक ही प्रकार का पार्ट खेलना पड़े तो आपको अकर्मण्यता और तुच्छता का बोध नहीं होगा? समाज में केवल एक ही स्थान प्राप्त करना, हमेशा किसी एक

ही चीज़ की प्राप्ति के लिए कटिबद्ध रहना, आखिर आपको खल ही जायेगा। ओह, तुम आ गयीं?

आठवर्षीय एक बालिका अन्दर चली आई। उसके बाल अच्छी तरह से सँवारे हुए थे। उसकी आँखों में शैतानी भरी चपलता थी। जब भी वह हँसती उसका सारा चेहरा खिल उठता। उसे मालूम था कि घर में कोई अतिथि आये हुए हैं। यूरी की आवाज़ उसने बाहर दरवाजे पर ही सुन ली थी। लेकिन वह आकस्मिक रूप से आकर माँ को तथा अतिथि को आश्चर्यान्वित कर देना चाहती थी। उसने नम्रतापूर्वक यूरी की अभ्यर्थना की। जिस प्रकार कोई एकाकी बालक, जिसे कच्ची उम्र में ही बहुत कुछ सोचना-समझना पड़ा हो, ठीक उसी तरह वह यूरी की ओर एकटक देखती रही।

—यह है मेरी बेटी कात्या। आइये आप दोनों दोस्ती कर लीजिये!

—मुझे तुमने इसकी तस्वीरें मेल्युजेवो में दिखाई थीं। अब तो यह बहुत बदल गयी है! इतनी बड़ी हो गयी है।

—मैंने तो सोचा कि तुम बाहर ही हो। तुम्हारे आने की आवाज़ मुझे सुनाई ही नहीं दी। जैसे ही मैंने उस दरार में से चाबी निकाल कर दरवाजा खोला, एक बड़ा भारी चूहा बाहर फुदकता हुआ निकल आया—इतना बड़ा था! मैं तो मारे डर के उछल पड़ी। डर के मारे मैं मर जाती।

पानी से निकली मछली की तरह उसने अपना मुँह घुमाते हुए आँखें फाड़ कर बड़ा हास्यास्पद चेहरा बनाया।

—अब तुम जाओ। चाचा यूरी यहीं खाना खायेंगे। कशा भट्टी में सिक रहा है। उसे देखने जाती हूँ। तैयार हो जायेगा, तो तुम्हें बुला लूँगी।

—मुझे शहर आने की उतावल थी, इसलिए मैंने 6 बजे ही खाना खा लिया था। मुझे डर था कि रवाना होते-होते कहीं देर न हो जाय। वैसे मैं स्वयं चाहता हूँ कि यहाँ रुक जाऊँ। घर लौटने में तीन या चार घण्टे लग जायेंगे। इसीलिए मैं जल्दी चला आया था। अब चलूँगा।

—[illegible] तक तो और रुक ही सकते हैं?

—[illegible] चाहता ही हूँ।

पन्द्रह

—[illegible]. अब जब आपने इस तरह दिल खोलकर बातें कही हैं तो मैं भी [illegible] हूँ। जिस स्ट्रेलिनिकोव से आप मिल चुके हैं, वे दरअसल मेरे [illegible] आन्तिपोव हैं। उन्हीं की खोज में मैं युद्धस्थल पर गयी थी; [illegible] उनकी मृत्यु की बात पर मुझे विश्वास नहीं हो रहा था। इसके [illegible] यह सब कुछ सुना तो मुझे इस पर भी विश्वास नहीं हुआ। [illegible] आप से काफी मुक्त रूप से बातचीत करती रही। मैंने उस [illegible] देखा है, लेकिन आपको और उन्हें बराबर खड़ा करके तुलना [illegible] मूर्खता होगी। खैर, यह बिलकुल सच है कि स्ट्रेलिनिकोव [illegible] आन्तिपोव ही है। बहुत से लोगों का खयाल है और मैं इससे [illegible] नहीं करती। कात्या को भी यह मालूम है और उसे अपने पिता [illegible] है। स्ट्रेलिनिकोव उसका बनावटी नाम है। प्रत्येक क्रियाशील [illegible]कारों के लिए जिस प्रकार आवश्यक है कि वह असली नाम को [illegible] न करे, उसी तरह उनके लिए भी ज़रूरी है कि वे छद्म-नाम [illegible] कर लें। यह उनके लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है। और [illegible] हैं वे, जिन्होंने युर्यातिन पर कब्जा जमा लिया और यहाँ अग्निवर्षा [illegible] उन्हें मालूम था कि हम लोग यहीं पर हैं। लेकिन अपनी तटस्थता [illegible] रहस्य के खुल जाने के डर से उन्होंने एक बार भी कोशिश नहीं की, [illegible] वे हमारी खबर लें कि हम जीते हैं या मर गये।...वास्तव में यही [illegible] कर्त्तव्य भी था। मुझसे पूछा जाता, तो मैं यही कहती। आप [illegible]चते होंगे कि मेरा इस तरह सुरक्षित रहना और नगर-कमेटी द्वारा [illegible] रहने के लिए उपयुक्त स्थान देने से यह ज़ाहिर हो जाता है कि वे [illegible] रूप से हमारा खयाल रख रहे होंगे। लेकिन दरअसल बात यह थी [illegible] वे यहाँ आकर हमसे मिलना चाहते थे, परन्तु अपनी इस भावना के [illegible] वे निरन्तर संघर्ष करते रहे। यह आदमियत नहीं। लेकिन इसका

मतलब यह नहीं कि मैं आपके दृष्टिकोण से प्रभावित हो गयी हूँ। आपकी तरह मैं एक ही तरह से सोच नहीं सकती। फिर भी कुछ अस्पष्टता की ऐसी गुंजाइश है, जहाँ हम समानता अनुभव करते हैं। यह अच्छा ही है कि हम जीवन के अहम मसलों पर—अपने जीवन दर्शन में—अलग रहें। खैर। स्ट्रेलिनिकोव की बात...

वे इस समय साइबेरिया में हैं। उन पर लगाये जाने वाले आरोपों की बातें मैंने सुनी हैं; और सुनकर मेरा रक्त ठंडा हो गया है। किसी महत्त्वपूर्ण उच्च पद पर आसीन वे गुल्युलिन के साथ युद्ध कर रहे हैं, और उसे खदेड़ रहे हैं। यही गुल्युलिन उनका बचपन का ही नहीं रण-स्थल का भी साथी था। गुल्युलिन को मालूम है कि स्ट्रेलिनिकोव कौन है; और उसे यह भी मालूम है कि मैं पाशा की पत्नी हूँ। फिर भी उसकी एक चतुराई—यद्यपि मैं उसे अधिक महत्त्व नहीं देती—मैंने कभी इस ओर विशेष ध्यान दिया भी नहीं—पता नहीं क्यों, स्ट्रेलिनिकोव का नाम लेते ही मारे गुस्से के वह मेरे सामने पागल हो जाता है।

वे बहुत अर्से से साइबेरिया में हैं। उसी रेलगाड़ी में उनका अड्डा है, जहाँ आपने उन्हें देखा था। मुझे आशा थी कि कभी न कभी आकस्मिक रूप से मैं उनसे मिल लूँगी। वे अक्सर कोमच—सैनिक संविधान सभा के कार्यालय में जाया करते थे। जब भी वहाँ जाती, मैं गुल्युलिन से किसी न किसी तरह की मदद माँगने जाती, अथवा किसी भयंकर काण्ड को टालने के लिए उससे प्रार्थना करती। उदाहरण के लिए सैनिक अकादमी का मामला! उसे लेकर उन दिनों बड़ा शोरगुल मचा था। यदि कोई निर्देशक थोड़ा भी अप्रिय होता तो केडेट्स उस पर हमला कर देते, उसे गोली मार डालते। बड़ी आसानी से उस पर आरोप लगाया जा सकता था कि वह बोलशेविकों के प्रति सहानुभूति रखता है। उन्हीं दिनों में ज्यू लोगों को खदेड़ दिया गया था। बात की बात है...यदि हम शहर में रहते हैं और बुद्धिजीवी लोगों से हमारा थोड़ा बहुत भी सम्पर्क है, तो यह बात निश्चित है कि हम लोगों का आधे से अधिक सम्बन्ध ज्यू लोगों के साथ रहेगा। लेकिन प्रोग्रोव (राजनीति के विरोधियों की लूट मार—विशेष

सामने लकड़ी का बना हुआ फर्श था। चौराहे के पार नगर का बाग था, वहाँ छायादार वृक्ष, नागफनी और सुगन्धित फूलों के पौधे झूमा करते थे। दरवाजे के बाहर, सड़क पर लाइन लगी रहती। मैं वहाँ खड़ी रहती और इन्तजार करती। मैंने कभी लाइन को लाँघने की कोशिश नहीं की। मैंने कभी किसी को यह भी नहीं बताया कि मैं उनकी पत्नी हूँ। हम दोनों के नाम अलग-अलग हैं। यह आशा करना भी व्यर्थ है कि भावनाओं की पुकार उन्हें विचलित कर दे। उनके तौर तरीके बिलकुल भिन्न हैं। आपको मालूम है, उनके पिता पावेल फोरापोन्टोविच आन्तिपोव, जो पुराने ज़माने के घोषित राजनीतिक अपराधी थे, वे यहाँ से करीब ही महापंथ के एक उपनिवेश में रहते हैं। उन्हें देश-निकाले की सजा मिली हुई है। उनका परम मित्र तिविरजिन भी वहीं है, लेकिन क्या आप विश्वास कर सकते हैं कि न वे अपने पिता से मिलने ही कभी गये; न अपने मित्र से ही मिलने। वे दोनों स्थानीय क्रान्तिकारी कमेटी के सदस्य हैं। उन्होंने अपने पिता को भी नहीं बताया कि वह दरअसल कौन है? उनके पिता को यह सब जानते हुए भी बुरा नहीं लगा। उन्हें मालूम है कि यदि उनके पुत्र को 'नकाब के नीचे' रहना है तो यही ठीक व्यवस्था है। वे उनसे मिल ही कैसे सकते हैं? बस, इस बारे में इतना ही। ये लोग पत्थर के बने हुए हैं। तमाम नियमों और सिद्धान्तों के बावजूद भी उनमें मानवता नाम की कोई चीज़ नहीं है।

यदि मैं यह सिद्ध करने की कोशिश करती भी कि मैं उनकी पत्नी हूँ, तो भी कोई लाभ नहीं होता। ऐसे समय में पत्नियों की क्या बिसात! संसार की पुनर्रचना में संलग्न व्यक्ति ही जो कुछ हैं। हैं! और पत्नी? एक दोपाया जानवर, जिसकी कीमत जूँ अथवा पिस्सू से अधिक नहीं।

उनका ए.डी.सी. आकर लोगों से पूछा करता कि वे उनसे क्यों मिलना चाहते हैं? इसके बाद उन्हें मिलने की इज़ाज़त दे देता। जब मुझ से पूछा गया कि मुझे क्या काम है, तो मैंने यही जवाब दिया कि मैं व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहती हूँ। मुझे मालूम था कि मैं व्यर्थ ही अपना समय

[illegible] रहा हूँ। ए.डी.सी. मुझे सन्देहभरी निगाहों से देखता हुआ [illegible] सिकोड़ कर चला जाता। मेरी उनसे एक बार भी मुलाकात नहीं हो [illegible] आप सोच रहे हैं कि उसे हमारी कोई परवाह नहीं, वह हमसे प्रेम [illegible] करता, हमें भूल गया है। नहीं, ऐसी बात नहीं है। उन्हें मैं बहुत [illegible] तरह से जानती हूँ। मुझे मालूम है कि वे क्या चाहते हैं? वे यह [illegible] चाहते हैं, क्योंकि वे हमें बहुत प्यार करते हैं। खाली हाथ हमारे [illegible] आना उनके लिए संभव नहीं। वे सम्मान और कीर्ति से परिपूर्ण एक [illegible] के रूप में हम लोगों के पास आना चाहते हैं कि वे बालकों की [illegible] सरलता के साथ हमारे चरणों में प्राप्त जयमाला विसर्जित कर दें।

[illegible] फिर अन्दर आ गई। लारा ने उसे अचानक पकड़ कर गले से लगा [illegible] उसे इतना गुदगुदाया कि बस!

सोलह

[illegible] घोड़े पर यूरी घर की ओर लौट रहा था। अनेक बार इस [illegible] गुज़रने के कारण वह इससे इतना अधिक अभ्यस्त हो गया है कि [illegible] विशेष सावधानी बरतने की ज़रूरत नहीं रहती। थोड़ी देर में [illegible] जंगल के उस चौराहे पर आ गया जहाँ से एक रास्ता वेरिकिनो [illegible] जाता है और दूसरा सक्मा नदी वाले मछुवा-गाँव की ओर। [illegible] मशीनों के विज्ञापनों के बड़े-बड़े बोर्ड लटक रहे थे। हमेशा की [illegible] सायंकाल के करीब ही घर पहुँच सकेगा।

[illegible] बात को दो महीने हो गये। नगर से घर लौटने के बजाय उसने [illegible] लारा के यहाँ ही बिताई थी। परिवार वालों को उसने बताया [illegible] किसी आवश्यक काम से उसे सामदेवयातोव की सराय में रात [illegible] ठहरना पड़ा। जो कुछ वह टोन्या से छिपा रहा था वह निश्चित रूप [illegible] था; टोन्या के प्रति विश्वासघात था। उन दोनों के बीच यह [illegible] नयी चीज़ थी। मन ही मन वह टोन्या के प्रति काफी श्रद्धावान [illegible] वह उसकी पूजा करता। संसार की किसी भी चीज़ से अधिक टोन्या [illegible] मस्तिष्क की शान्ति उसके लिए कीमती थी। वह उसकी मान-मर्यादा

की रक्षा के लिए, कि उस पर ज़रा सी भी आँच न आ जाय, हमेशा तत्पर रहा है। उसके पिता अथवा उसके स्वयं से अधिक यूरी की इस बात के प्रति सावधानी थी। टोन्या के गौरव की रक्षा के लिए वह किसी की हत्या तक कर सकता था। और, आज वही, टोन्या के विरुद्ध, उसे चोट पहुँचने में संलग्न है! घर में वह अपराधी की तरह अनुभव करता। परिवार वालों को असली बात मालूम नहीं थी। उनका अपरिवर्तित प्रेम यूरी को और अधिक दुखित कर देता। बातचीत करते समय जब कभी उसे अपनी अपराधी-भावना याद आ जाती, वह सब कुछ भूल जाता। भूल जाता कि उसे क्या कहा जा रहा है? भोजन करते समय यदि उसे अपनी करतूत याद आ जाती तो उसके हाथ से चम्मच छूट जाता और वह अपने सामने से प्लेट हटा देता। उसके गले में खाना अटक जाता। घबरा कर टोन्या पूछती—आपको हो क्या गया है? शहर से लौटते समय आपने कोई बुरी खबर सुनी है क्या? कोई गिरफ्तार हुआ है, अथवा मार डाला गया है? डरिये मत कि मैं घबरा जाऊँगी, कह देने पर जी हल्का हो जायेगा।

वह एक ऐसी स्त्री के प्रति आकर्षित है, जिसकी तुलना टोन्या से उसने कभी की नहीं, जिसे वह कभी ढूँढ़ने नहीं गया था! क्या यह टोन्या के प्रति बेवफाई नहीं है? वह मुक्त-प्रेम पर विश्वास नहीं करता। 'आत्मा' अथवा 'अधिकारों' की आवाज़ के पीछे-पीछे चल देने की बात वह नहीं मानता। इस तरह से सोचना उसे अमर्यादापूर्ण लगता है। उसे मालूम है कि वह विशेष सुविधाओं और अधिकारों से सम्पन्न कोई अति-मानव नहीं है। वह पाप की कालिमा के बोझ से मरा जा रहा था।

—अब आगे क्या होगा? अपने आप से पूछ कर वह किसी दैवी समाधान की कल्पना किया करता। अब इस गाँठ को काटना आवश्यक हो गया है। एक निश्चित समाधान के साथ वह घर लौट रहा था कि वह टोन्या को सारी बात बता देगा, उससे क्षमा माँग लेगा और लारा से कभी नहीं मिलेगा।

[illegible] वह नहीं कर सका। उसे लगा कि उसने लारा को इसके लिए [illegible] स्पष्टीकरण नहीं दिया है; कि वह उसके भले के लिए ही [illegible]-विच्छेद करना चाहता है। उसने एक बार फिर निश्चय किया [illegible] वह लारा को सारी बात बता देगा। फिर उसके और लारा के [illegible] सम्बन्ध समाप्त हो जायेंगे। वे एक दूसरे को कभी नहीं देखेंगे, [illegible] मिलेंगे।

[illegible] भी टिका नहीं। उसे लगा सब कुछ ठीकठाक तो है। अभी [illegible] निर्णय नहीं लिया जा सका है।

[illegible] थी कि वह कितनी निराश और दुखी है। वह कोई दर्दनाक [illegible] करना नहीं चाहती थी। वह शान्ति के साथ उसकी बात [illegible] वह नहीं जानती थी कि उसके गालों पर आँसुओं की धारा [illegible] घर के सामने खड़ी मूर्तियों पर जिस प्रकार बरसात की बूँदें [illegible] हैं, उसी तरह लारा की आँखों से आँसू बहते रहे।

[illegible] धीरे से इतना ही कहा—जैसा आप ठीक समझें, वैसा ही करें। मैं [illegible] कर लूँगी। मेरी चिन्ता मत करिये। उसने यह बात सच्चे दिल [illegible] किसी औपचारिक आडम्बर के कही थी। वह नहीं जानती थी [illegible] वह रो रही है, इसीलिए आँसू पोंछने की ओर उसने ध्यान ही नहीं [illegible]

[illegible] ने सोचा कि लारा उसे गलत समझ रही है। शायद मैं उसे झूठे [illegible] और आशाओं में छोड़ कर जा रहा हूँ। वह मुड़ा कि जो कुछ वह [illegible] नहीं पा रहा है, उसे कह दे।

[illegible] अन्तिम विदा के अनुकूल सब कुछ जब्त करके वह चल पड़ा।

[illegible]रायण के अस्त होते ही जंगल में ठंडी और अन्धकार छा गया। [illegible]रों का झुंड ऊँचे स्वर में भिनभिनाता हुआ उसके गले और चेहरे पर [illegible] जाता। घोड़े की पदध्वनि के साथ मच्छरों को मार भगाने वाले [illegible] हाथों के पीटने की आवाज़ तालबद्ध हो उठी। जीन पर ज़ोर पड़ने

के कारण उससे चरमराहट की ध्वनि आ रही थी। दबी हुई मिट्टी में घोड़े के कदमों की टापों के साथ उसके गले से निकलने वाली हाँफती हुई शुष्क ध्वनि आ रही थी। सामने एक ओर सूर्यनारायण अस्त होने से इनकार रहे थे। दूसरी ओर बुलबुल गा रही थी—'उठो, जागो।' ईस्टर-महोत्सव के रविवार के दिन जिस प्रकार प्रार्थना-मंत्र पढ़े जाते हैं—'जाग, ओ मेरी आत्मा उठ कर जाग। अब सो मत।' अचानक एक साधारण विचार से यूरी स्तब्ध रह गया। उसने सोचा, आखिर इतनी जल्दी है किस बात की? वह अपने निश्चय से नहीं हटेगा। टोन्या के सामने वह सब कुछ स्वीकार कर लेगा। लेकिन क्या यह ज़रूरी है कि यह सब आज ही हो जाय? अभी तक उसने उससे कुछ कहा नहीं था। एक बार शहर जाकर, लारा से मिल आने के बाद भी तो टोन्या को यह सब कहा जा सकता है। उससे कोई खास फ़र्क़ थोड़े ही पड़ेगा। लारा के साथ उसे इस तरह बातचीत करनी चाहिए, इतनी गहराई और हार्दिक अनुभूति के साथ कि उसकी तमाम वेदनाएँ शान्त हो जायं। आह, यह कितनी सुन्दर और अद्भुत बात है। पहले उसने यह क्यों नहीं सोचा?

एक बार फिर लारा से मिलने के विचार से उसका हृदय बाँसों उछलने लगा। उसके मिलन की कल्पना में वह खो गया। शहर के बाहर की झोंपड़ियाँ...वह लारा के घर की ओर जा रहा था। कुछ देर बाद वह इस जंगली रास्ते और वीरान भूमि को छोड़ कर पत्थर और सीमेंट की सड़क पर आ जायेगा। उपनगर के छोटे मकान उसके सामने से गुज़र गये। ठीक उसी तरह, जिस तरह पुस्तक के पन्ने सामने से गुज़र जाते हैं। उस तरह नहीं, जब हम उसका एक-एक पन्ना उलटते हैं। बल्कि उस तरह, जब कि अँगूठे के नीचे एक हिस्सा दबा कर सारी किताब उलट दी जाती है। वह तेजी के साथ भागा जा रहा था।

वर्षा के बादलों के बीच शून्यता में, सड़क के किनारे उसका मकान था। इस रास्ते के छोटे मकानों के प्रति उसे इतना प्यार उमड़ रहा था, कि उसका जी चाहने लगा कि एक-एक को उठा कर चूम ले। उन मकानों

नौजवान के हाथ में दे दो। एक बार फिर मैं चेतावनी दे देता हूँ, कि तुमने भागने की ज़रा भी कोशिश की तो हम बैठे तमाशा नहीं देखते रहेंगे।

—क्या आप ही फारेस्टर हैं? मिकुलित्सिन के सुपुत्र—लिबेरियस?

—नहीं। मैं हूँ, उनका मुख्य सम्पर्क-पदाधिकारी—कम्मेनोदवोर्सकी।

10

महा-पंथ

उस महा-पंथ के किनारे अनेक कस्बे, गाँव और कजाक उपनिवेश थे। साइबेरिया की ओर डाक ले जाने वाली यह सबसे पुरानी, लम्बी-चौड़ी सड़क थी। जिस तरह रोटी को चाकू द्वारा बीच से काट दिया जाता है, उसी तरह अनेक शहरों को, उनकी गलियों के साथ, काटती हुई यह सड़क बीच में पड़ने वाले गाँवों पर एक उड़ती हुई निगाह डालती दाहिने बायें घूमती हुई सीधी चली गयी थी। खोदात्स्कोय में रेल्वे लाइन आने से पहले इसी रास्ते से ट्रायक्रा द्वारा डाक लायी, ले जायी जाती थी। एक ओर चाय, रोटी अथवा सूअर की खाल लिए काफिले चले जाते थे और दूसरी ओर रक्षकों की निगरानी में अपराधियों का दल हाँका जाता। धीमे कदमों से चलते वक़्त उनके पाँवों की बेड़ियाँ झनझना उठतीं। निराशा के अतल अन्धकार में डूबी हुई ये हतोत्साहित आत्माएँ सामने फैले निबिड़ अन्धकारमय जंगल से घिरी हुई थीं। इस चौड़े रास्ते के आसपास रहने वाले लोगों में ब्याह-शादी तथा मित्रता के कारण अच्छा पारिवारिक सम्बन्ध प्रतिष्ठित हो गया था। सड़क और रेल्वे लाइन जहाँ मिलती थी, वहीं खोदात्स्कोय बसा हुआ था। यहाँ इंजिन सुधारने के

फ़िल्म के कुछ कारखाने थे। यहाँ के मकानों में घनघोर आकंठ डूबे हुए लोग रहते, बीमार होते और मर जाते। उन अपराधियों को, जो कड़े श्रम की अवधि समाप्त कर चुके थे टेकनिकल ज्ञान था, उन्हें स्वतंत्र रूप से रहने की सुविधा थी। क्रान्ति के प्राथमिक दिनों में जो प्रदेश-रचना की गयी कभी की समाप्त हो चुकी थी। साइबेरियन प्रान्तीय सरकार ने तक इसे सँजोये रखा; लेकिन उनकी सत्ता भी एडमिरल श्वेत-दल के सुप्रीम कमाण्डर द्वारा समाप्त कर दी गयी। अब प्रभुसत्ता स्थापित थी।

दो

एक रास्ता पहाड़ी के ऊपर की ओर चला जाता था। जहाँ का सुन्दर दृश्य विस्तारपूर्वक दिखाई देने लगता। लगता, कि कभी अन्त ही न होगा। फिर भी जब कभी यात्री आराम बीच में रुक जाते, तो उन्हें यही महसूस होता कि वे पहाड़ी तक पहुँच गये हैं। चक्कर काटती हुई केज्मा नदी के पुल सड़क ऊपर की ओर चली गयी थी। पुल के उस पार की मठिया यहाँ से आसानी से दिखाई देती। हॉली-क्रास शहर के घेरे को हुआ यह रास्ता टेढ़े मेढ़े तरीके से आगे चला जाता।

सड़क शहर के बीच तक पहुँचती तो मठ के मैदान का भाग चला आता था। चौराहे के पास वाले मेहराबदार हरे रंग के ईसामसीह की मूर्ति के चारों ओर सूक्ति खुदी हुई थी—हे प्राणदायक क्रास! अपराजेय दुःख पर विजय पाने वाले

पवित्र-सप्ताह' था। 'लेन्ट' का अन्त। सर्दी समाप्त हो रही थी। पहली निशानी के अनुसार सड़कें काली होने लगी थीं। फिर पर शिरस्त्राण की तरह लम्बी और मोटी सफ़ेद बर्फ़ की धाराएँ खिंची हुई थीं।

घंटा बजाने वाले को देखने के लिए जब बच्चे घंटाघर पर चढ़ जाते, तो उन्हें नीचे के मकान छोटे-छोटे साथ-साथ रखे हुए सन्दूकों की तरह नज़र आते। मकानों के सामने चलते-फिरते अथवा रुकने वाले मनुष्य उन्हें छोटे-छोटे बिन्दुओं की तरह दिखाई देते। राजाज्ञा पढ़ने के लिए लोगों की भीड़ जमा हो गयी थी। लोग जनरल कोलचक की राजाज्ञा पढ़ रहे थे। नयी विशेष-आयु के लोगों के नाम फरमान था।

तीन

रात में कई अप्रत्याशित घटनाएँ घटित हुईं।

मौसम के विपरीत असाधारण रूप से गर्मी बढ़ गयी थी। अत्यन्त रमणीय और शीतल समीर के साथ मंद-मंद वर्षा हो रही थी। लेकिन कोहरे में मिल कर वह धरती पर आने से पहले ही अदृश्य हो जाती। नाले में काफी बरसाती पानी भरा हुआ था, इसी कारण सारी जमीन काली दिखाई दे रही थी। बर्फ़ इस तरह पिघल रहा था मानो पसीना बह रहा हो। बौरों से भरे हुए सेब के ठिंगने पेड़, बाड़ को पार करके झाँक रहे थे। उनसे पानी की बूँदें टपक रही थीं। लकड़ी के फ़र्श पर गिरने वाली हल्की पानी की इन बूँदों की आवाज़ कहीं से भी सुनाई दे सकती थी।

फोटोग्राफर के मैदान में बँधा हुआ कुत्ता चीख रहा था और गुलूलिजन्स के बगीचे का कौवा, चिढ़ कर इस तरह शोर मचा रहा था मानो वह सबको जगाये ही रखेगा।

हॉली-क्रास के निचले भाग में लियूबेजनोव के पास किसी व्यापारी ने तीन गाड़ियाँ भर कर माल भेजा था। वह उसे लेने से, यह कहते हुए इनकार कर रहा था कि उसने इस माल के लिए कभी कहा ही नहीं। चूँकि रात बहुत अधिक हो गयी थी; इसलिए सामान लाने वाले लोग रात भर के लिए इसे रखने के लिए गिड़गिड़ाहट कर रहे थे। लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ। उनकी ये आवाज़ें भी शहर के एक कोने से दूसरे कोने तक सुनाई दे सकती थीं।

ईस्टर महोत्सव अपने पूरे रंग में था। घर में कोई नहीं था। सब लोग उसे अकेली छोड़ कर चले गये थे। सचमुच वह अकेली ही थी। कस्यूशा की तो गिनती भी नहीं की जा सकती। वह आखिर थी ही कौन? दूसरे की आत्मा अन्ध-कूप के समान है—ऐसी कहावत है। शायद वह मित्र है, हो सकता है वह दुश्मन अथवा प्रतिद्वन्द्वी हो। लोग कहते हैं कि वह उसके पति की पहली पत्नी की लड़की है। और उसका पति व्लास कहा करता है कि उसने इसे गोद लिया है। लेकिन मान लो कि वह उसकी सचमुच की ही लड़की हो? या यह भी तो हो सकता है कि वह उसकी लड़की न होकर कुछ और ही हो? पुरुष के मन की कौन जानता है? वैसे देखा जाय तो कस्यूशा में कोई खास बुराई नहीं थी। वह सुन्दर थी, उसके पास दिमाग था और तमीज थी। कम से कम उस टेरियोस्का अथवा उसके पिता से तो अधिक बुद्धि उसमें थी।

इस पवित्र सप्ताह में वह परित्यक्त सी अकेली यहाँ पड़ी है; और सब लोग अपनी अपनी राह चल दिये हैं।

नये भर्ती होने वालों को शस्त्रों का सामर्थ्य समझाता हुआ व्लास उस बड़े चौड़े रास्ते पर चक्कर काट रहा था। उसे अपने मूर्ख लड़के को बचाने की जैसे कोई फिक्र ही न थी।

और टेरियोस्का भी तो इस मौके पर घर से भाग गया है, दिल बहलाने के लिए तथा अपना दुख भूलने के लिए। वह कुइतनी गाँव में अपने सम्बन्धियों के पास चला गया था। बेचारे को स्कूल से निकाल दिया गया। पहले तो सब लोगों ने मिल कर उसे हर क्लास में एक साल बिठाये रखा। इसके बाद जब वह किसी तरह आठवीं कक्षा तक पहुँचा, तो उसे लात मार कर निकाल दिया। यह सब कितना दुःखदायी और निराशापूर्ण है। हे प्रभु! यह सारा सर्वनाश आखिर हुआ क्यों? निराशा के बोझ के मारे उसे लगा कि मर जाना ही बेहतर है। यह सारी मुसीबत क्या क्रान्ति के कारण आई? नहीं, नहीं। इन सारी तकलीफों का कारण

[illegible] युद्ध ने इस देश के पुरुषत्व के पुण्य को ग्रस लिया है। अब [illegible] कचरे के बचा ही क्या है।

[illegible] के ज़माने में बात ही कुछ और थी। वे गम्भीर और शिक्षित [illegible] का काम करते थे। उनके निर्वाह का साधन थी जमीन। [illegible] पोत्या और ओत्या अपने नामों के अनुकूल ही थीं। इन [illegible] जोड़ी बड़ी अच्छी थी। अच्छे से अच्छे आदमी इन लोगों के [illegible] विवाह का प्रस्ताव लेकर आया करते थे। इन्होंने 6 रंगों वाला [illegible] बनाया था। आप चाहे विश्वास करें या न करें, यह गुलुबन्द [illegible] प्रान्त भर में सुप्रसिद्ध हो गया था। उन दिनों सभी चीज़ें सुन्दर थीं [illegible] का युग था। लोगों का प्रत्येक चीज़ से हृदय प्रसन्न हो उठता। [illegible] प्रार्थना सभा हो अथवा नृत्य का आयोजन। वे सीधे-सादे लोग [illegible] परिवार में अधिकाँश या तो किसान थे अथवा मजदूर। उन [illegible] में विवाह योग्य लड़कियों के लिए वास्तविक योग्य पुरुष सहज [illegible] थे। उन की तुलना आज के उच्छृंखल लड़कों से की ही नहीं जा [illegible] वे अपनी प्रेमिकाओं के लिए आसमान के सितारे तोड़ लाने को [illegible] रहते। अब तो सब चीज़ें समाप्त हो गयी हैं। अब तो बच गये हैं [illegible]रिक, वकील या यीड्स जिनकी जबान कैंची की तरह दिन-रात [illegible] रहती है। व्लास और उसके मित्र सोचते हैं कि वे भाषण, भोज [illegible] शुभकामनाओं के बल पर पुराने सुनहले दिन लौटा लायेंगे। लेकिन [illegible] हुई बाजी को जीतने का क्या यही तरीका है? उसके लिए तो [illegible] को हिला देना होगा।

[illegible] बार से अधिक चौराहा पार कर वह बाजार तक जा चुकी थी। उसका घर वहाँ से दूर नहीं था। फिर भी उसकी वहाँ जाने की इच्छा नहीं थी।

बाजार एक बड़े मैदान के आकार का था। पुराने ज़माने में जब यहाँ बाजार लगा करता, तो यह सारा मैदान बैलगाड़ियों से भर जाया करता। एक ओर सेंट हैलन स्ट्रीट थी; और दूसरी ओर दूज के चाँद के

समान वे छोटे आकार वाले मकानों की श्रेणियाँ थीं, जहाँ गोदाम और दूकाने थीं।

उसे उन दिनों की बात याद आ गयी, जब वृद्ध बुख्यानोव चश्मा लगाये, लम्बा फ्राक कोट पहने चतुर्गना लोहे के फाटक पर एक कुर्सी पर बैठा, यहाँ अखबार पढ़ा करता था। चमड़े, जई और चारे के अलावा बैलगाड़ियों के पहिये तथा घोड़ों अथवा अन्य पशुओं के साज-सामान का वह व्यापारी था। उसकी दूकान के एक भाग में धूल भरी मोमबत्तियों की पेटियाँ पड़ी रहतीं। पीछे के छोटे कमरे में न फर्नीचर था, न कोई और सामान। चारों ओर मोम की बड़ी-बड़ी शिलाएँ पड़ी रहतीं। पता नहीं, किस लक्षाधीश मोम-निर्माता के अज्ञात एजेन्टों द्वारा उसका लाखों रुपयों का सौदा होता रहता। इन्हीं दूकानों के बीच गलुजिन की किराने की बड़ी भारी दूकान थी। गलुजिन तथा उसके सहायक महाशय दिन भर चाय पीते रहते। फर्श पर उबली हुई पत्तियाँ बिखरी पड़ी रहतीं। इसी जगह एक विवाहित नवयुवती के रूप में रोकड़ पर बैठना उसे बहुत अच्छा लगता था। उसे बैंगनी रंग बहुत पसन्द था। उसके बढ़िया से बढ़िया कपड़े तथा बर्तन भी इसी रंग के थे। इस दूकान में बैंगनी रंग की मिठाइयों तथा इसी रंग के अन्य सामानों की रौनक में बैठना उसे निहायत पसन्द था। यह क्रान्ति के पूर्व के रूस के आनन्द का प्रतीक और उसके कुमारित्व-काल की स्मृति का रंग था।

नष्टप्राय: गाड़ी के समान दिखाई देने वाला पुराना भूरा ऋतु-सूचक-बोर्ड यहीं, एक कोने में इमारती लकड़ी के मैदान की बगल में लगा हुआ था। इस दुमंजिले मकान में दोनों ओर विशालकाय दरवाजे थे। एक ओर रासायनिक जालकिंद की दूकान और दूसरी ओर लिखित पत्रों को प्रमाणित करने वाले अधिकारी का कार्यालय था। रासायनिक के दूकान के ऊपर स्त्रियों के कपड़े सीने वाला श्मूलेविच अपने बड़े भारी परिवार के साथ रहता था; और दूसरे कार्यालय के ऊपर जो लोग रहते थे उनके सामने के दरवाजे पर लगे हुए बोर्डों से उनके पेशे मालूम हो सकते थे।

कर जूतों की मरम्मत करने वाले सभी लोग यहाँ रहते थे। कामिन्स का कारखाना यहीं था और फोटोग्राफर झुक और भागीदारी वाला स्टूडियो भी यहाँ था। उनकी खिड़की से प्रकाश से आसानी से मालूम हो जाता कि फोटोग्राफर महाशय उनके सहायक अपने काम में काफी रात गये, अभी भी व्यस्त हैं। के नीचे काफी अर्से से भोंक रहे कुत्ते की आवाज़ हेलन स्ट्रीट दूर तक सुनाई दे रही थी।

से गुज़रते वक़्त उसका मत था कि यह भिखमंगी तथा गंदगी है। फिर भी अपने पति की यहूदियों के प्रति नफरत उसे गलत थी। न तो वे यहाँ की जमीन के स्वामी ही हैं, और न ही वे पूर्ण कि उनके कारण रूस का भाग्य बन अथवा बिगड़ सके। मूलेविच से पूछा जाय कि देश में इतनी अशान्ति और उपद्रव तो वह मुँह बिगाड़ कर यही जवाब देगा कि यह सारी लिडोचका की शैतानी है। हुश! ऐसी मूर्खताभरी बातों पर विचार करने से, समय बर्बाद करने के क्या लाभ? दरअसल इस सारी अशान्ति के है शहर! मैं यह थोड़े ही कह रही हूँ कि देश का उत्थान अथवा शहरों पर ही निर्भर करता है। फिर भी यह बात तो सही है कि के लोग पढ़े-लिखे हैं और गाँव वाले उनसे ईर्ष्या करते हुए उनकी करने की कोशिश करते हैं। पूरी नकल तो उनसे हो नहीं पाती, न वे इधर के रहे न उधर के। सच बात यह है कि इसका मूल है अज्ञानता। पढ़ा-लिखा आदमी दीवार के आर-पार देख सकता उसके चार आँखें होती हैं। वह दस साल आगे की बात सोच सकता और हम? हम हैं कि हमारा सिर काट लिया जाय, तो हमें फिक्र है कि हमारा हैट कहाँ गया? नगरनिवासियों का जीवन भी से नहीं गुज़र रहा है, देखो न, वे किस तरह शहर छोड़ कर भागे रहे हैं। ज़रा इस पर ग़ौर फरमाइये न? फिर भी एक बात है, ही जानते हैं कि जीया कैसे जाता है। यहाँ के किसी भी

आदमी को ले लीजिये। वह आत्मनिर्भर है। खुद का स्वयं मालिक! कितना कुछ हम लोगों के पास था। महापंथ के जंगल में नये खेत लहरा रहे थे। उपजाऊ भूमि, भेड़, घोड़े, सुअर, गाय तथा आगामी तीन वर्षों के लिए काफी अन्न! कृषि सम्बन्धी तमाम यंत्र भी उनके पास थे। कोलचक उन्हें अपनी ओर मिलाने की चेष्टा कर रहा था और कमीशर्स उन्हें अपनी सेना में भर्ती करने के लिए प्रयत्नशील था। ज्योर्ज क्रासेस के साथ युद्ध से लौटने वाले हम लोगों के पीछे सभी लोग पड़े हुए थे कि वे उन्हें प्राविधिक शिक्षक के रूप में नियुक्त कर सकें। जो लोग अपना काम अच्छी तरह से जानते हैं उनकी माँग तो हमेशा बनी ही रहेगी।

उसने सोचा कि अब घर चलना चाहिए। इतनी रात बीते किसी स्त्री का इस तरह बाहर सड़कों पर भटकना अच्छी बात नहीं। अपने घर का बगीचा होता तो बात और थी। छिः यह कितना गंदा है। अपने विचारों में दिग्विमूढ़-सी वह घर की ओर लौट पड़ी। फिर भी वह अन्दर नहीं गयी। बरामदे में खड़ी खोदात्सकोय में आधिपत्य जमाये हुए लोगों के बारे में ही सोचती रही। वह उनके बारे में थोड़ा बहुत जानती थी। ये तमाम लोग पुराने राजनीतिक निर्वासित व्यक्ति थे। तिमिरजिन, आन्तिपोव, अराजकवादी 'काला झंडा' वडोविचका, स्थानीय ताला बनाने वाला 'पागलकुत्ता' गोरसेनी, ये सब बहुत चालाक और होशियार थे। उन्हें मालूम था कि वे सब क्या करने वाले हैं और उन्हें क्या करना चाहिए। इस समय भी वह निश्चित रूप से किसी न किसी षड्यन्त्र में लगे हुए होंगे। उनका अब तक का जीवन यंत्रों के साथ ही गुज़रा था, इसलिए वे यंत्रों के समान ही निष्प्राण तथा निर्दय हो गये थे। स्वेटर तथा जर्किन पहने ये लोग होल्डर में धूम्रपान करते, उबला हुआ पानी पीते कि उन्हें कहीं कुछ हो न जाय। बेचारा व्लास अपना समय व्यर्थ बर्बाद कर रहा था।

अपने बारे में उसका खयाल था कि वह नितान्त सीधी-सादी स्त्री है। उसका अपना सोचने का तरीका है। उम्र के लिहाज से वह अपने आप

[illegible] बुद्धिमती और जवान समझती थी। कुल मिलाकर वह किसी [illegible] बुरी नहीं है। फिर भी इस माँद में वह बेचारी परित्यक्ता रूप [illegible] रही है। सेंत्युतिरिखा के बारे में प्रचलित भद्दे गीत की उसे [illegible] गयी—

'गाड़ी बेच सेंत्युतिरिखा, खरीद लाई एक बाजा।'

[illegible] तमाम गन्दी बातें थीं। हॉली-क्रास पर जब यह गीत गाया [illegible] था, तो उसे लगा कि इसका लक्ष्य वह स्वयं है।

[illegible] साँस ली और घर में चली गयी।

चार

[illegible] उतारने के लिए रुके बिना वह शयन कक्ष में चली गयी। [illegible] और शॉल उतारते समय उसके शरीर की हरकतों के कारण [illegible] दर्द उभर आया। उसके ब्लाउज की सिलाई ठीक नहीं थी। [illegible] डर कर पछाड़ खाकर गिरते हुए, दुखियों की रक्षा करने [illegible] प्रभु ईसा की माता से विघ्नहरण की प्रार्थना करते हुए, वह रो [illegible]

[illegible] देर में जब पीड़ा समाप्त हो गयी तो वह कपड़े उतारने लगी। [illegible] उसके मुलायम वस्त्रों में खोया हुआ पीछे का हुक उसे नहीं मिल [illegible]। कश्यूसा की आँख खुल गयी। कमरे में आकर उसने कहा—

—[illegible]तना अन्धेरा है माँ यहाँ, मैं लालटेन ले आऊँ?

—[illegible], कोई ज़रूरत नहीं। यहाँ काफी रोशनी है।

—आप बहुत परेशान हो रही हैं। मैं कुछ मदद करूँ?

—मेरी अँगुलियाँ सुन्न हो गयी हैं। हुक मिल ही नहीं रहा है। मैं तो [illegible] को आई। वह दर्जी बिलकुल अन्धा है, उसे इतना शऊर भी नहीं [illegible] हुक कैसे लगाया जाय? जी करता है कि इसे फाड़ कर उसी के मुँह [illegible] फेंक दूँ।

—देखो माँ, मठ में गाये जाने वाले प्रार्थना के गीत यहाँ तक सुनाई दे रहे हैं। कितना शान्त वातावरण है।

—गाना तो अच्छा ही है; अच्छा नहीं है मेरा मन। मेरे सारे शरीर में पुरानी तकलीफ हो रही है। मेरी कुछ भी समझ में नहीं आता कि क्या करूँ ?

—पिछली बार होम्योपैथ स्टायडोस्की ने आपका इलाज किया था न?

—वह हमेशा कोई न कोई ऐसी बात ही कहेगा जो असंभव हो। खैर, पहली बात तो यह, कि ये होम्योपैथ महाशय किसी काम के नहीं, नीम हकीम हैं। दूसरी बात यह, कि आजकल वे यहाँ हैं कि नहीं। बाहर गये हुए हैं। सभी लोग यहाँ से इस तरह चले गये हैं, मानो सबको लग रहा हो कि यहाँ भूकम्प आने वाला है।

—अच्छा वे जो हंगेरियन डाक्टर थे न? उनके बारे में आपका क्या खयाल है? उनके इलाज से आपको कुछ लाभ हुआ था।

—कोई लाभ नहीं। कोई है ही नहीं। करेंजी लाजोस भी दूसरे हंगेरियनों के साथ सीमा पार है। उसे लाल-सेना ने भर्ती कर लिया है।

—आप भी चिन्ता बहुत करती हैं। आपका दिल बहुत कमजोर हो गया है। गाँव के किसान कहा करते हैं कि आत्म-सुझाव बीमारी में बड़ा फायदा पहुँचाते हैं। अच्छा, आपको उस सैनिक की पत्नी की याद है, जिसने आपका दर्द, यों चुटकी बजाते ही खत्म कर दिया था? उसका क्या नाम था?

—तुम मुझे मूर्ख समझ रही हो न? मेरी पीठ के पीछे मेरे लिए तुम भी सेंत्युतिरिखा-सा गीत गाना शुरू कर दो। तब भी मुझे आश्चर्य नहीं होगा।

—आप भी कैसी बातें कर रही हैं? उसका नाम मेरी जबान पर है, बस याद नहीं आ रहा। जब तक मुझे यह याद नहीं आ जाता मुझे चैन नहीं।

[illegible] जितने पेटीकोट हैं, उससे ज्यादा उसके नाम हैं। पता [illegible] नाम की बात कर रही हो। खवरिखा, मेडवेडिका और [illegible] आदि. पता नहीं उसके कितने नाम हैं। खैर, वह भी यहाँ [illegible] नहीं कहाँ लापता हो गयी है? गर्भपात करने के पाउडर [illegible]-बोलों बनाने के अपराध में उसे कैद कर लिया गया था। [illegible] उसे पसन्द नहीं आई। वहाँ से वह पूर्व की ओर कहीं भाग [illegible] तो कहती हूँ, कि सभी लोग भाग रहे हैं। रह गये हैं हम [illegible] दोनों के अलावा यहाँ कोई ईमानदार नेक औरत नहीं है। [illegible] मज़ाक नहीं कर रही हूँ। यहाँ कहीं किसी तरह की डाक्टरी [illegible] की कोई उम्मीद नहीं। कुछ हो भी जाय तो पैसे अथवा प्रेम [illegible] के कारण भी तुम्हें कोई डाक्टर नसीब नहीं हो सकता। लोग [illegible] एक डाक्टर युर्यातिन में है। वह मास्को के किसी प्रोफेसर [illegible] और आत्महत्या किये हुए किसी व्यापारी का लड़का है। मैं [illegible] चाहती थी। लेकिन कम्युनिस्टों ने सड़क को 12 टुकड़ों में [illegible] खैर। चलो। चल कर सोएँ। तुम्हारे उस विद्यार्थी ब्लाजहिन [illegible] दिमाग खराब कर रखा है। 'नहीं' मत कहो। मैं सब समझती [illegible] तो तुम्हारा चेहरा कैसा हो रहा है? मैंने उसे एक फोटोग्राफ [illegible] करने के लिए दिया है, वह उसी पर रातभर प्राण सेंकता रहेगा। [illegible] शायद न तो खुद ही सोते हैं और न किसी को सोने देते हैं। उनके [illegible] के भोंकने की आवाज़ सारे नगर में सुनाई दे रही है। हमारे यहाँ भी [illegible] के पेड़ पर कौवा काँव-काँव कर रहा है। लगता है आज भी नींद [illegible] नहीं होगी। तुम इतनी बेचैन क्यों हो रही हो? भावुक मत बनो। [illegible] लड़कियाँ उन्हें प्यार न कर सकें तो आखिर विद्यार्थी लड़के हैं किस [illegible] की दवा?

पाँच

जाकर देखो तो, वह कुत्ता इतना शोर क्यों मचा रहा है? कोई न कोई बात अवश्य है। ठहरो। पहले मुझे पता लगा लेने दो कि बात क्या है।

वर्ना पुलिस यहाँ आ धमकेगी। उस्ती, शिवोब्लू तुम लोग यहीं ठहरो। तुम्हारे बिना भी हमारा काम चल जायेगा।'—केन्द्रीय समिति के प्रतिनिधि लिडोचका ने सपक्षीय नेता द्वारा चुप रहने की हिदायत की परवाह न करते हुए अपनी बकवास जारी रखी—

लूट, निष्क्रमण, हिंसा, गोलीबार और अत्याचार की नीति से साइबेरिया का बुर्जुवा सैनिकवादी तंत्र उन लोगों की आँखें खोल देगा जो अभी भी मुगालते में हैं। साइबेरिया और यूराल्स के श्रमजीवी किसानों को अब यह बात समझ लेनी चाहिए कि यह उनका ही विरोध नहीं है, बल्कि तमाम खेतिहर किसानों का विरोध है। यह बात स्पष्ट है कि नगरों के सर्वहारा वर्ग, किरखीज तथा बुड्यात के गरीब किसानों, सैनिकों के साथ मैत्री करने पर ही...

अन्त में लिडोचका को हस्तक्षेप का बोध हुआ। वह चुप हो गया। उसने रूमाल से अपना तर-ब-तर चेहरा पोंछा। उसके आसपास बैठे लोगों ने कहा—थोड़ा आराम कर लीजिये। पानी पी लीजिये।

चिन्तित सपक्षीय नेता को आश्वस्त किया जा रहा था कि सभी कुछ ठीक-ठाक है। फिर यह सारा आडम्बर किसलिए? खिड़की में से सिगनल-लेम्प दिखाई दे रहा है। इसी बात को अलंकृत भाषा में कहा जाय तो उसकी आँखें व्योम-मण्डल में लगी हुई हैं। हमें अपना विचार-विमर्श बंद क्यों कर देना चाहिए? कामरेड लिडोचका, आप अपना भाषण जारी रखिये।

फोटोग्राफर के सामने के मैदान में पड़े बड़े-बड़े लट्ठों को एक ओर हटा कर सड़क के बीच में एक गन्दे स्थान पर यह ग़ैरकानूनी सभा हो रही थी। छत तक लट्ठों के ढेर से प्रवेशद्वार के निकट का अन्धकारमय कमरा अलग कर दिया गया था। वहाँ एक गुप्त मार्ग भी था, जहाँ से भाग कर मठ के पिछले हिस्से की एक निर्जन गली में जाया जा सकता था।

वक्ता के चेहरे पर सुस्ती भरी शान्ति थी। एक कान से दूसरे कान तक दाढ़ी और गंजे सिर पर टोपी। घबराहट के कारण वह पसीने से तर हो

[illegible] बार-बार उसकी सिगरेट बुझ जाया करती और जलाने की वह [illegible] चेष्टा करता रहता। अपने सामने छितरे पड़े कागजों को, [illegible] आँखों से उसने इस तरह देखा, मानो वह उनको सूँघ रहा हो। [illegible] कहा—सोवियत्स के जरीये ही नगरों एवं देहातों के गरीबों [illegible] सूत्र में बाँधा जा सकता है। चाहे वे इसे पसन्द करें या न करें। [illegible] के मजदूरों ने जिस मार्ग को अपनाने के लिए बहुत अर्से पहले [illegible] था उसी मार्ग को साइबेरिया के किसानों को भी अपनाना [illegible] एडमिरलों तथा हैटमैनों के घृणास्पद [illegible] और सशस्त्र पराक्रम द्वारा कृषकों की [illegible] स्थापित करना। बुर्जुवाई भाड़े के [illegible] कज़ाकी सैनिकों से डटकर लड़ना [illegible] होगा।

[illegible] पसीना पोंछा। उपस्थित श्रोताओं में से एक [illegible] कर अपना मंतव्य प्रगट करने की इजाजत माँगी।

[illegible] का सपक्षीय इकाई का सेनापति वक्ता के ठीक पीछे [illegible]-रहित मस्ती में बैठा हुआ था। उद्दण्डतापूर्वक वह भाषण के बीच बारम्बार हस्तक्षेप कर रहा था और वक्ता के प्रति उसका कोई सम्माननीय भाव नहीं था। यह विश्वास करना कठिन था कि इतनी कम उम्र का लड़का सारी सेना का उत्तरदायित्व संभाले हुए है; और उसके आदमी उस पर जान न्योछावर करने को हर घड़ी तैयार हैं। उसके आसपास दो अंगरक्षक चुपचाप खड़े थे। उनके चेहरों से ही पता चल जाता था कि वे अपने स्वामी के प्रति कितने अन्ध-भक्त हैं। वहाँ जिस विषय पर विचारविमर्श हो रहा था उसमें उनकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। जो कुछ वहाँ कहा जा रहा था उसका भी उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा था। न वे बोलते थे, न उनके चेहरों पर मुस्कराहट अथवा किसी किस्म का भाव था। कमरे में लगभग 12 व्यक्ति होंगे। कुछ लोग खड़े थे, कुछ नीचे फर्श पर विराजमान थे। तीन चार प्रमुख अतिथि आगे की

कुर्सियों पर बैठे हुए थे। ये वही पुराने कर्मठ कार्यकर्ता थे जिन्होंने 1905 की क्रान्ति में भाग लिया था। तिमिरजिन मास्को की क्रान्ति के बाद बहुत कुछ बदल गया था। इस परिवर्तन की रुक्षता उसके चेहरे से झाँक रही थी। पास ही बैठे आन्तिपोव उनकी हर बात की हाँ-में-हाँ मिला रहे थे। ये वे क्रान्तिकारी थे, जिन्होंने स्वतंत्रता-देवी के सामने अपनी पहली ज्वलंत आहुति दी थी। मुर्तिवत् चुपचाप बैठे हुए ये वे लोग थे, जिनमें राजनीतिक धारणाओं और संकल्पों के कारण सारे मानवीय गुण समाप्त हो गये थे। इस सभा में उपस्थित अन्य लोगों में रूसी अराजकवाद के स्तम्भ 'काला झंडा' डोविचको भी था। वे एक क्षण के लिए भी स्थिर नहीं रह सकते थे। उनका शरीर काफी विशालकाय और भारीभरकम था। सिंह-केश के समान उनके बाल लहरा रहे थे। या तो वे तुर्की के साथ हुए युद्ध में अधिकारी थे, नहीं तो जापान के साथ हुए युद्ध में अधिकारी अवश्य रहे होंगे। सनातन स्वप्नदर्शी। अपनी कल्पनाओं में आकण्ठ डूबे हुए। उनका स्वभाव बड़प्पनभरा और बहुत ही अच्छा था। अपने विशाल आकार-प्रकार और बड़े दिल के सामने उनके लिए छोटी-मोटी बातें विशेष महत्त्व नहीं रख पातीं। क्या बात हो रही है, उस ओर उनका ध्यान नहीं था। जो कुछ कहा जा रहा था, यदि वह विरोधियों का मत भी होता, तो भी वे उसे अपना ही मत समझते। लिहाजा प्रत्येक बात के प्रति उनकी सहमति थी। उनकी बगल में स्विरिड बैठा हुआ था। पहले यह जानवर पकड़ने का काम किया करता था। यद्यपि वह खेतिहर किसान नहीं था फिर भी उसके काले कुरते से उसके कृषक होने का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। अपनी मुट्ठी में बंद क्रास से वह छाती खुजलाता रहता। सहृदय, निरक्षर और अर्द्ध-बुर्याती। हल्के पतले बाल। भीनी मूँछें। दाढ़ी घनी नहीं थी। चेहरे पर मुस्कान खिली रहती। उसका मंगोल चेहरा उसे उसकी उम्र से ज्यादा वृद्ध साबित कर रहा था।

केन्द्रीय समिति की ओर से साइबेरिया के सैनिक मिशन पर दौरा करने वाला व्यक्ति इस समय भाषण दे रहा था। जिन-जिन क्षेत्रों में उसे अब

[illegible] मन ही मन उनका सर्वेक्षण किया। जिन श्रोताओं के [illegible] दे रहा था, उनमें उसकी विशेष दिलचस्पी नहीं थी। [illegible] क्रान्तिकारी की हैसियत से बचपन से ही जन-सेनानी [illegible] के नाते उसे वह नवयुवक सेनापति बहुत प्यारा लगा। [illegible] बैठे इस नौजवान सेनापति की धृष्टता को ही वह क्षमा [illegible] था; बल्कि उसकी मान्यता थी कि यही सच्चे क्रान्तिकारी [illegible] है। जिस प्रकार शक्तिशाली प्रेमी की रुक्षता से कोई स्त्री [illegible] उठती है, ठीक उसी तरह उस नवयुवक सेनापति की [illegible] वह प्रसन्न हो रहा था।

[illegible] नेता था मिकुलित्सिन का पुत्र लिबेरियस। वक्ता थे [illegible] पार्टी के भूतपूर्व सदस्य कोस्तोयद अमरस्काय। एक [illegible] समाजवादी क्रान्तिकारी थे। उन्होंने अपने विचार परिष्कृत [illegible] थे, अपनी पुरानी गलतियों को स्वीकार कर लिया था और [illegible]त्मक वक्तव्यों में उसका विशद वर्णन कर चुके थे। [illegible]मस्वरूप साम्यवादी दल ने उन्हें केवल अपने में ले ही नहीं लिया, [illegible] उन्हें वर्तमान उत्तरदायित्व भी सौंप दिया।

यद्यपि वह एक सैनिक ही था, फिर भी उसे इस कार्य के लिए इसलिए चुन लिया गया था, क्योंकि वह कई वर्षों से क्रान्तिकारी कार्यों में लगा हुआ था और जारशाही के ज़माने में अग्नि-परीक्षा दे चुका था। चूँकि वह सहकारी दल का सदस्य था, इसलिए साइबेरिया के विद्रोही क्षेत्र के किसानों के मनोभावों को वह अधिक अच्छी तरह से जानता था। उनके मिशन के लिए सैनिक अनुभव के बनिस्बत यही गुण विशेष महत्त्वपूर्ण था। अपने राजनीतिक विश्वासों के परिवर्तन के कारण, उसका स्वरूप और व्यवहार इतना बदल गया था कि अचानक उसे पहचानना मुश्किल था। पहले वह गंजा था अथवा दाढ़ी रखता था, यह कोई नहीं जानता। यह उसका छद्म वेश ही था। पार्टी का कड़ा आदेश था कि वह अपने आप को छिपाये रखे। उसका गुप्त नाम था कामरेड बेरन्दे अथवा लिडोचका।

वडोविचन्के ने जब समय से पूर्व यह वक्तव्य दे दिया कि अभी पढ़े गये केन्द्रीय समिति के आदेशों से वह पूरी तरह सहमत है, तो थोड़ी देर के लिए काफी शोर-गुल मचा। जब कुछ शान्ति हुई, तो कोस्टोयद ने आगे कहा—किसान समूह को यथासंभव अधिक से अधिक संख्या में आन्दोलन में सम्मिलित करने के लिए पार्टी की प्रान्तीय समिति के अधिकार क्षेत्र में कार्य करने वाली सभी सपक्षीय इकाइयों से तत्काल सम्पर्क स्थापित करना अत्यन्त आवश्यक है।

इसके बाद उसने पूरे विवरण के साथ गुप्त बैठक का स्थान, 'पासवर्ड' (गुप्त संकेत) कोड तथा संवाद-प्रेषण के साधनों पर प्रकाश डाला।

फिर उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि हमारी इन इकाइयों को श्वेत-दल के शस्त्र भण्डार, उनके खाद्यान्न भण्डार तथा अन्य उपकरणों व साधनों के बारे में आवश्यक सूचना मिलनी चाहिए। यह भी उन्हें बता दिया जाना चाहिए कि उनका धन कहाँ है और उसके लिए उन्होंने जो सुरक्षात्मक व्यवस्था कर रखी है, उसके बारे में भी उन्हें सारी बातें मालूम होनी चाहिए। इसके अलावा, सपक्षीय सैन्य टुकड़ियों के संगठन, इनके सेनापतियों, युद्ध साहचर्य अनुशासन, षड्यन्त्रात्मक कार्य, बाहरी दुनिया से सम्पर्क, स्थानीय जनता के साथ व्यवहार, युद्ध-क्रान्तिकारी मैदानी न्यायाधिकरण, शत्रु क्षेत्रों में विध्वंस की चालों—उदाहरणार्थ, पुलों, रेल-मार्गों, जहाजों, नावों, स्टेशनों तथा कारखानों—इनके प्राविधिक उपकरणों, टेलीग्राफ आफिसों, खदानों आदि के सम्बन्ध में भी हमें पूरा विवरण तैयार कर लेना चाहिए।

लिबेरियस के लिए अधिक सुनना संभव नहीं था। एक नौसिखिये की बकवास की तरह जो मुँह में आया वह बकता जा रहा था। उसके काम से इन बातों का कोई ताल्लुक नहीं था।

उसने कहा—बहुत बढ़िया भाषण है। दिल को छू देने वाला। मेरा खयाल है बिना ना-नू किये, बिना किसी विरोध के हमें इन तमाम बातों

इसे स्वीकार कर लेना चाहिए। वर्ना हमें कम्युनिस्ट दल का सहयोग नहीं मिल सकेगा?

—बिल्कुल।

—अच्छा मेरे प्यारे लिडोचका। ज़रा आँखें खोलकर देखो। तोपखाना और घुड़सवार दल वाले हमारे तीन रेजीमेन्ट महीनों से अभियान कर रहे हैं—आगे बढ़ रहे हैं—उस हालत में मैं तुम्हारी इन बचपन भरी बातों का क्या करूँ?

कोस्तोयद ने मन ही मन सोचा—कितना आश्चर्यजनक! कितनी शक्ति!

टिवरजिन को लिबेरियस की धृष्टतापूर्ण बात और उसका तरीका पसन्द नहीं था। उसने हस्तक्षेप करते हुए कहा—एक बात है, जो स्पष्ट नहीं है। आदेशों की गलती को मैं ठीक करना चाहता हूँ। कृपया मुझे प्रस्ताव पढ़ने दें ताकि मैं निश्चित हो सकूँ। युद्ध के पुराने अनुभवी कर्मठ कार्यकर्ताओं को, जो मोर्चे में पहले भी भाग ले चुके हैं, तथा जो क्रान्ति के समय में सैनिक-संगठन में संलग्न थे, उन्हें समिति में ले लिया जाना चाहिए। अधिक अच्छा हो यदि समिति में एक या दो एन.सी.ओ. तथा एक सैनिक प्राविधिक-विशेषज्ञ रहे। कामरेड सभाध्यक्ष, मुझे आशा है कि मैं अपनी बात को स्पष्ट रूप से, सही तरीके से कह रहा हूँ।

—'बस करो। बहुत हो चुका। प्रस्ताव! प्रस्ताव पेश किया जाय। अब घर जाने का समय हो गया। बहुत देर हो रही है।' लोगों की आवाज़ें सुनाई देने लगी।

भारी कंठ से सुगंभीर स्वर में वडोविचन्के ने कहा—मैं बहुमत के पक्ष में हूँ। इसी बात को काव्यात्मक रूप से कहा जाय तो, नागरिक संस्थाएँ प्रजातंत्र के आधार पर स्थापित की जानी चाहिए। ठीक उस पौधे की तरह, जो जमीन में जड़ें फैला लेता है। बाड़े के खम्भे रोपने की तरह उन्हें हथौड़ा मार कर नहीं गाड़ा जा सकता। जैकोविन तानाशाही की

यही गलती थी, इसीलिए थरमिडोरियनों ने अस्थाई सन्धि को कुचल डाला था।

उसके मित्र तथा हमसफर स्विरिड ने समर्थन में सिर हिलाते हुए कहा—यह दिन के प्रकाश की तरह स्पष्ट है। बच्चा तक इस बात को आसानी से समझ सकता है। हमने काफी देर कर दी है। इसे हमें पहले ही समझ लेना चाहिए था। अब श्रीगणेश हो चुका है, पीछे हटने का कोई सवाल ही नहीं। बाँध टूट गया है, अब हमें आगे बढ़ना ही होगा।

लोग 'प्रस्ताव, प्रस्ताव' चिल्लाते रहे। इसके बाद और भी कुछ कहा गया। लेकिन वह सारा अर्थहीन प्रलाप था। प्रातःकाल के करीब सभा बर्खास्त हुई। सामान्य सावधानी के साथ एक-एक करके वे सब अपने-अपने घर चले गये।

छः

महापंथ के बगल का वह स्थान अत्यन्त रमणीय था, जहाँ पझीन्का नदी पोसद कुइतेनी तथा माले येरमोले को दो भागों में बाँट देती है। कुइतेनी से कोलचक द्वारा भर्ती किये गये नये जवानों की विदाई के लिए एक समारोह आयोजित किया गया था। येरमोले में कर्नल स्ट्रेस के निरीक्षण में एक मेडिकल बोर्ड ईस्टर की छुट्टियों के बाद यह जाँच करने में व्यस्त था कि भर्ती के लायक कितने व्यक्ति मिल सकते हैं! इसके लिए गाँव में घुड़सवार कजाकों के रक्षा दल तैनात थे।

ईस्टर सप्ताह के असामान्य उत्तरार्द्ध का तीसरा दिन था। वसन्त ऋतु के प्रारम्भिक दिन। गर्मी बहुत थी। हवा बिलकुल बन्द। कुइतेनी में खुले आकाश के नीचे नये भर्ती किये गये नौजवानों के लिए खाद्य पदार्थ रखे हुए थे। यह स्थान महापंथ से कुछ दूर हट कर था, ताकि यातायात अवरुद्ध न हो।

तमाम उपलब्ध साधनों के साथ ग्रामीणों ने इस आयोजन की व्यवस्था की थी।

खाने की उत्तमोत्तम सामग्री टेबल पर सुसज्जित थी। मेजों के चारों ओर नई घास की चमक में हल्के नीले अण्डों के छिलके पड़े हुए थे। उपस्थित युवकों तथा युवतियों की पोशाक भी लाल-पीले रंग की थी। आकाश में लाल रंग के बादल मानो उनके साथ मस्ती से मण्डरा रहे थे।

गुलाबी कमीज पहने, गले में रूमाल डाले अपने अँगूठे को हिलाते हुए ब्लाज गलुजिन महापंथ के ऊपरी हिस्से के पफनुत्किन की सीढ़ियों से उतर कर इस समारोह में सम्मिलित होने के लिए आये। उन्होंने अपना भाषण आरम्भ किया—

मेरे प्रिय जवानो! तुम सब लोगों के स्वास्थ्य की शुभकामनाओं के साथ चेम्पेन के बदले मैं यह घर की बनी हुई वोडका पीता हूँ। रवाना होने वाले तुम नौजवानों के दीर्घ जीवन के आनन्दमय वर्षों की मंगलकामनाओं के साथ मैं यह वोडका ग्रहण करता हूँ। मेरी बहुत इच्छा है, कि मैं आपको कई स्वादिष्ट प्रकार के टोस्ट दे सकूँ! मेरे प्रिय नौजवानो, तुम्हारे सामने विशाल कार्य-क्षेत्र है। तुम्हें उन विध्वंसकों के विरुद्ध लोहा लेना है, जो आज अपने भाई के खून से होली खेल रहे हैं। तुम्हें अपनी मातृभूमि के गौरव की रक्षा करनी है। जनता की इच्छा थी कि वह शान्तिपूर्वक क्रान्ति की विजय पर चर्चा करे। मगर बोलशेविकों की पार्टी ने—जो कि विदेशी पूँजी की ग़ुलाम है—संविधान सभा को विघटित कर दिया है। यही जनता की एकमात्र आशा थी। इसे ज़ोर-जबर्दस्ती नष्ट कर दिया गया है। अब असहाय अरक्षित लोगों की खून की नदी बह रही है! प्रस्थान करने वाले मेरे प्रिय नौजवानो! तुम्हें सुपुर्द की गयी है जिम्मेदारी—कि तुम लोग हमारे शस्त्रों की लाज रख सको। हम लज्जावनत अपने बहादुर मित्रों के चिर-कृतज्ञ हैं। कारण, कि आज केवल कम्युनिस्ट ही नहीं, बल्कि जर्मनी तथा आस्ट्रिया भी पुनः अपनी टेढ़ी गर्दन ऊपर उठा रहे हैं। युवको, डरो मत भगवान हम लोगों के साथ है!

ज़ोरदार हर्षध्वनि के साथ उसकी आवाज़ डूब गयी। कच्चे वोडका का गिलास उठा कर वह एक ही साँस में उसे गटक गया। उसे इसमें कोई

खास मजा नहीं आया। उसे वाइन पसन्द थी और अच्छे किस्म की वाइन पसन्द थी। लेकिन उसे तसल्ली इस बात की थी कि वह इस समय सार्वजनिक हित के लिए यह आत्मत्याग स्वेच्छापूर्वक कर रहा है।

—यह बूढ़ा तो काफी अच्छा भाषण दे देता है जी, मेल्यूकोव की इससे तुलना नहीं की जा सकती। खुदा कसम, सच।

अपने पास बैठे अपने मित्र टेरेन्टी गलुजिन से गोस्का रेबिका ने टेबल के नीचे शराबियों के शोरगुल के बीच बड़ी मस्ती भरी आवाज़ में कहा—यह निश्चित रूप से भला आदमी ही है। नहीं तो बेकार इतना कष्ट थोड़े ही करता? आशा है कि इतने परिश्रम के बदले में तुम्हारी भर्ती माफ कर दी जायगी।

—गोश्का, शर्म आनी चाहिए तुम्हें। मेरी भर्ती को टलवा दे, कोई कोशिश करके तो देखे। जिस दिन तुम्हें भर्ती का पत्र मिलेगा, देख लेना, उसी दिन मुझे भी मिलेगा। हम एक ही पल्टन में काम करेंगे। उन हरामजादों ने मुझे स्कूल से निकाल दिया था। माँ इस बात को लेकर अपने प्राण सेक रही है। लेकिन शायद कमीशन अभी नहीं मिलेगा। हाँ, पिताजी को मालूम है कि भाषण कैसे दिया जाता है? भाषण को ज़ोरदार बनाने के लिए देखा नहीं, कितना प्रदर्शन करना होता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि यह उनका स्वाभाविक गुण है। ये पढ़े-लिखे कुछ भी नहीं।

—तुमने संका पफनुत्किन के बारे में सुना है?

—सुना है। भयंकर संक्रामक बीमारी है।

—भयंकर! अजी, असाध्य रोग है। कोई इलाज नहीं। इस बात की हमें ही सावधानी रखनी चाहिए, कि हम किसके सम्पर्क में आते हैं।

—दु:ख की बात ही है। वे आत्महत्या करना चाहते थे। उन्हें बुलाया गया है। अब येरमोले में उनकी मेडिकल जाँच हो रही है। शायद उसे वे ले लेंगे। इससे पहले वह कहता है कि वह जाकर सपक्षियों से मिल लेगा ताकि समाज की बुराइयों से बदला लिया जा सके।

—अच्छा, तुम बात कर रहे थे संक्रामक रोग के बारे में। उससे बच भी जाओगे तो दूसरी बीमारी के पंजे में फँस जाओगे।

—मैं तुम्हारा मतलब समझ गया। यह रोग ही नहीं, गुप्त पाप भी है।

—चुप रहो। वर्ना गर्दन मरोड़ दूँगा। दोस्तों से इस तरह बातचीत की जाती है?

—शान्त हो जाओ। यह तो मैं मजाक कर रहा था। मैं दरअसल तुम्हें यह बता रहा था कि ईस्टर के लिए मैं पजिंस्क गया था। वहाँ एक [illegible] लेक्चरर आये हुए हैं। अराजकवादी हैं। बड़े दिलचस्प आदमी। वे व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बातें कर रहे थे। मुझे उनकी बातें बड़ी मजेदार लगीं। मैं अराजकवादियों में मिल जाऊँगा। देख लेना। लेक्चरर महाशय कहते थे कि हममें एक ऐसी आन्तरिक शक्ति है, जिसे हमें जगाना होगा। वह बता रहा था कि कामुकता तथा चरित्र, पाशविक विद्युत शक्ति का ही प्रभाव है। समझ रहे हो? कैसी बात लगी? उसकी प्रतिभा अद्वितीय थी।...लोग सिर हिला हिला कर कितना शोर कर रहे हैं। कान बहरे हो जायं। अब अधिक बर्दाश्त नहीं होता।

—अच्छी बात है। गोश्का एक बात बताओ? मैं समाजवाद की शब्दावली के बारे में अधिक नहीं जानता। 'सबोटाजनिक' (विध्वंसक) शब्द का मतलब क्या होता है?

—बताता हूँ। मैं इन बातों का विशेषज्ञ हूँ। लेकिन इस समय मैं नशे में हूँ। मुझे अकेले छोड़ दो। 'सबोटाजनिक' वह है जो एक ही समुदाय में हो। 'वटागा' एक गुट है। अच्छा, अब यदि कहो कि तुम 'सबोटाजनिक' हो, तो इसका मतलब यह हुआ कि उसी वटागा के सदस्य हो। कुछ समझ रहे हो कि नहीं गधे?

—मैं तो समझता था कि यह कोई गाली है। मगर तुम तो उस विद्युत शक्ति के बारे में बात कर रहे थे न? मैंने भी इस बारे में कुछ सुना है। मैं तो पीटर्सवर्ग से एक 'ज़िन्दा-तिलिस्मात' मँगवाने की बात सोच रहा

था। मैंने इसका विज्ञापन देखा था। उसमें लिखा था कि इससे ताकत बढ़ जाती है। मगर इसके बाद ही क्रान्ति आ गयी और हमें दूसरी बातों पर सोचना पड़ा।

टेरेन्टी का वक्तव्य पूरा हो भी नहीं पाया था कि मेजों के आसपास से शोरगुल उठा और वह भी पास के किसी बम के धड़ाके की भयंकर ध्वनि में डूब गया। दूसरी बार और ज़ोर से विस्फोट हुआ। लोग अपनी जगहों से उछल गये। जो लोग डगमगा रहे थे, वे अपने पैरों पर खड़े हो गये। कुछ लोगों ने लड़खड़ाते कदमों से बाहर जाने की कोशिश की। कुछ मेज के नीचे जाकर पड़ रहे। औरतें चीखने लगीं।

व्लास अपराधी का पता लगाने की चेष्टा कर रहा था। उसे तुरन्त मालूम हो गया कि विस्फोट की यह आवाज़ गाँव से, या हो सकता है, मेजों के बिलकुल करीब से आयी हो। उसकी गर्दन की नसें तन गयीं। उसका चेहरा नीललोहित हो उठा। वह ज़ोर से चीखा—हमारे 'रैंक' में 'जूडास' कौन है? किसने यह शैतानी की है? हथगोला लेकर कौन इधर घूम रहा था? कौन है आस्तीन का साँप? मैं उसकी गर्दन मरोड़ डालूँगा, फिर भले वह मेरा लड़का ही क्यों न हो। नागरिको, मैं ऐसी बेहूदा मजाक पसन्द नहीं करता। सारा गाँव घेरेबन्दी के अन्तर्गत ले लिया जाय। हम अपराधी को खोज निकालेंगे। वह भाग कर आखिर जायेगा कहाँ?

शायद उपस्थित लोगों ने उसकी पूरी बात सुनी, हो सकता है न सुनी हो। सबका ध्यान येरमोले के जिला हॉल से उठने वाले काले धुएँ के आसमान की ओर आकर्षित हो गया। सब नदी की ओर दौड़ पड़े कि देखें हकीकत क्या है?

हाल में आग लग गयी थी। नये भर्ती किये गये जवान निर्वाचन अधिकारियों के साथ नंगे बदन, केवल पतलून पहने भाग निकले।

घुड़सवार कजाक सैनिक जीन कसे हुए सरपट घोड़े पर भागे चले जा रहे थे कि अपराधी का पता लगाया जा सके।

[illegible] की खतरे की घंटी की आवाज़ सुन कर बहुत से लोग कुइतेनी [illegible] सड़क पर दौड़ पड़े। स्थिति बहुत तेजी से बिगड़ती जा रही थी।

[illegible] कर्नल स्ट्रेस कजाकों के साथ कुइतेनी पहुँच गये। गाँव को घेर लिया गया। प्रत्येक झोंपड़ी की तलाशी शुरू हुई।

[illegible] आधे नौजवान पार्टी में ही बेसुध पड़े थे। दीन-दुनिया की उन्हें कोई खबर नहीं थी।

जब यह मालूम हुआ कि रक्षक-सेना गाँव में पहुँच गयी, तब तक अन्धेरा छा गया था। भागने वाले नौजवानों में टेरेन्टी और गोश्का भी थे। धक्कममुक्का करते हुए वे निकटतम खलिहान तक पहुँच गये। अन्धेरे के कारण और शोरगुल की उत्तेजना के कारण, यह मालूम कर सकना मुश्किल था कि यह खलिहान किसका है, पर मछली तथा मोम की गन्ध से यह अनुमान आसानी से लगाया जा सकता था कि यह गाँव की दूकान का गोदाम है।

ये नौजवान निर्दोष थे और उनका छिपना, सिवाय मूर्खता के कुछ भी मायने नहीं रखता था। अधिकांश तो इसलिए दौड़ पड़े, क्योंकि वे नशे में धुत्त थे और होश-हवाश खो चुके थे। कुछ लोगों ने उनके इस भागने के कार्यक्रम में साथ दिया और वे भी दौड़ने की शक्ति का प्रदर्शन करने लगे।

यह बात सच थी कि उनके मित्र किसी गुंडों से कम नहीं थे। लेकिन उनके बारे में कुछ कहा भी तो नहीं जा सकता, क्योंकि आज कोई भी घटना किसी भी प्रकार का राजनीतिक स्वरूप धारण कर सकती है। सोवियत क्षेत्र में यही गुंडागर्दी काली-प्रतिक्रिया के नाम से जानी जाती है और प्रजातंत्रीय क्षेत्र में इसे बोलशेविक लक्षण माना जाता है।

खलिहान में सिर्फ़ वे ही नहीं थे बल्कि और भी बहुत से लोग पहले से ही वहाँ जमा थे।

मैदान तथा फर्श के बीच की जगह दोनों गाँवों की जनता की भीड़ से भरी हुई थी। कुइतेनी के लोग अभी भी नशे में चूर थे। कुछ लोग नाक

बजा रहे थे। नींद में ही उनके मुँह से कभी-कभी कराहट निकल जाया करती।

चारों ओर सूचीभेद अन्धकार था। गर्मी बहुत अधिक थी। हवा बंद। चारों ओर से भयंकर दुर्गन्ध आ रही थी। गुप्त-स्थान की खोज में जो लोग बाद में आये थे, उन्होंने संकीर्ण मार्ग को अवरुद्ध कर दिया था। कुछ देर बाद लोगों का शोर समाप्त हो गया। शराब के नशे में धुत्त लोग सो गये थे। सिर्फ़ भीड़ में डरे हुए स्वर में गोश्का, टेरेन्टी तथा कोस्का निरन्तर बातचीत कर रहे थे।

कोस्का कह रहा था—इतने ज़ोर से मत बोलो। तुम्हारे कारण हम सभी पकड़े जायेंगे। शैतान, दुष्ट, सुनते नहीं हो क्या? स्ट्रेस की पार्टी यहाँ-वहाँ सब जगह खोज कर रही है। वे उस सड़क के पार की ओर गये थे। अब इस ओर आते ही होंगे। वे यत्र-तत्र-सर्वत्र फैले हुए हैं। दम साधे रहो। वर्ना मैं तुम्हारा गला घोंट दूँगा...सौभाग्य से वे सब चले गये!

—तुम यहाँ आये किस कारण से, मूर्ख कहीं के?

—मैंने गोश्का को चिल्लाते हुए सुना कि छिप जाओ। बस, इसीलिए मैं यहाँ लुकता-छिपता रेंगता हुआ चला आया।

—गोश्का के भाग कर छिप जाने का तो कारण है। उसका सारा परिवार मुसीबत में पड़ा हुआ है। उसके तमाम रिश्तेदार खोदादस्काय रेल्वे यार्ड में काम करते हैं। हिलो मत। शान्त रहो। सभी जगह भूत बिखरे पड़े हैं। ज़रा भी हिले कि फँस जाओगे। तुम्हें बदबू नहीं आ रही है? मालूम है तुम्हें, स्ट्रेस इस गाँव में इस तरह चक्कर क्यों काट रहा है? वह किसी बाहर के आदमी की तलाश में है। तुम्हें मालूम है कोश्का, यह गड़बड़ शुरू कैसे हुई?

—संका ने शुरूआत की थी। संका पफनुत्किन। हम सब भर्ती के कार्यालय में नंगे खड़े डाक्टर की प्रतीक्षा कर रहे थे। अपनी बारी आने पर संका ने कपड़े उतारने से इनकार कर दिया। वह पिये हुए था। क्लर्क

[illegible] ने उसे कपड़े उतार देने को फिर कहा। लेकिन उसने यही [illegible] दिया—'मैं अपने कपड़े नहीं उतारूँगा। मैं अपने शरीर के गुप्त [illegible] लोगों के सामने नहीं खोल सकता।' उसे लज्जा आ रही थी। [illegible] उसके बाईं ओर आया और उसके जबड़े पर एक घूंसा जमा दिया। [illegible] चाहे मत मानो, पलक झपकते ही उसने दवात तथा सेना की सूची [illegible] हुई टेबल को लात मार कर पटक दिया। इसी समय स्ट्रेस वहाँ आ [illegible] वह चिल्लाया—मैं किसी की गुंडागर्दी बर्दाश्त नहीं कर सकता। [illegible]कारी कार्यालय में कानून के खिलाफ जाने वाले आदमी को मैं [illegible] पाठ पढ़ाऊँगा। इसका अगुवा कौन है?

—[illegible] इसके बाद संका ने कहा कि कामरेड अपना सामान संभाल लो। [illegible] अपनी चीज़ें उठाईं और कपड़े पहनते-पहनते उसके पीछे दौड़ पड़ा। [illegible] हवा की तरह तेजी से दौड़ पड़े। हमारे साथ एक या दो आदमी और [illegible] भाग आये। अपनी पूरी ताकत के साथ हम तेजी से भागने लगे। वे हमारा पीछा कर रहे हैं। लेकिन यदि तुम पूछो कि यह सब क्यों हो गया, तो मैं इसका जवाब नहीं दे सकता। मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता।

—बम की क्या बात है?

—कौनसे बम की?

—किसने फेंका? बम या गोला, जो कुछ भी हो...?

—हे भगवान! तुम यही सोचते हो कि उसने फेंका था?

—फिर किसने फेंका?

—मुझे क्या मालूम? वह कोई दूसरा ही होगा। जिसने भी यह शोरगुल सुना, उसने यही सोचा होगा कि जब यह सारा गोरखधन्धा चल रहा है तो मैं ही क्यों न इस आग में थोड़ा-सा घी डाल दूँ। उसने यही सोचा होगा कि लोग किसी दूसरे पर संदेह करेंगे। पंझिस्क का ही कोई राजनीतिज्ञ होगा। यह जगह इन लोगों से भरी पड़ी है।

—चुप रहो। सुनो, स्ट्रेस के आदमी वापस लौट रहे हैं। हम मारे जायेंगे। देखो, सड़क पर जूतों की चरमराहट, घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनाई पड़ रही है न? चुप रहो।

पीटर्सबर्गीय लहजे में कमाण्डर अपनी रौबीली आवाज़ में कह रहा था—मुझसे बहस मत करो। तुम मुझे इस तरह बेवकूफ नहीं बना सकते। मुझे मालूम है, यहाँ कोई आदमी बातचीत ज़रूर कर रहा था।

येरमोले का मेयर, वृद्ध-मछुआ ओत्व्याजित्सीन निवेदन कर रहा था—महाराज, आप अवश्य कुछ न कुछ सुन रहे होंगे। गाँव के लोग बातचीत तो करते ही हैं। यह गिरजाघर का अहाता तो है नहीं। हो सकता है कि लोग बातें कर रहे हों। हर घर आदमियों से भरा पड़ा है। आखिर वे गूँगे पशु तो हैं नहीं। हो सकता है कि कोई नींद में से डर के मारे उठ खड़ा हुआ हो।

—दुष्ट कहीं के! गंवारों जैसी बकवास करना बंद करो। ज्यादा अक्लमंदी मत बघारो। तुम्हारे पर निकल आये हैं। मुझे मालूम है अब थोड़ी देर बाद तुम बोलशेविज्म की भाषा में बोलने लगोगे।

—मेहरबान हुजूर। आप कह क्या रहे हैं? योर एक्सीलेंसी, मिस्टर कर्नल, हमारे गाँव के लोग तो इतने मूढ़ हैं कि वे प्रार्थना की पुस्तक तक नहीं पढ़ सकते। वे बोलशेविज्म का क्या करेंगे?

—जब तक तुम्हें पकड़ नहीं लिया जाता, तुम इसी तरह बकबक करते रहोगे। क्या दूकान की पूरी तरह तलाशी ली जा चुकी है? एक-एक चीज़ की जाँच-पड़ताल करो। और खयाल रखो कि तुम पीछे की ओर खड़े रहो।

—जी हुजूर।

—पफनुत्किन, रयाबिख और नेखवालेनिक-ज़िन्दे या मुर्दे-मुझे मिलने ही चाहिए। चाहे जहाँ भी हो, हाजिर करो, चाहे उसके लिए सारा समुन्दर छान डालना पड़े, मुझे ये आदमी मिलने ही चाहिए। हाँ,

जिन का वह कुत्ता (उसका संकेत उसके पुत्र की ओर था) भी
मुझे कोई परवाह नहीं कि उसका बाप देशभक्ति की कितनी
बघारता है। वह बातचीत तो करेगा गँवार गधे की तरह। लेकिन
मो नहीं रहे हैं। जब कोई दूकानदार इस तरह भाषण देने लगे,
लेना चाहिए कुछ न कुछ दाल में काला है। मुझे मालूम हुआ
है कि ल्लुजिन राजनीतिक अपराधियों को छिपाया करता है; और अपने
क्रास में ग़ैर-कानूनी सभाएँ किया करता है। उस धूर्त को मेरे
हाजिर किया जाय। मैंने अभी तक उसके बारे में कोई निश्चय
किया है। मगर कोई भी बात उसके विरुद्ध मिली, तो मैं उसे छोड़ने
नहीं हूँ। उसे फाँसी पर लटका दूँगा ताकि दूसरों को सबक मिल
जाये।

देने वाले जब काफी दूर चले गये तो कोस्का ने टेरेन्टी से धीरे से
जो कि भय के मारे अधमरा हो रहा था—सुना?

हुई आवाज़ में उसने कहा—हाँ।

—का, गोस्का और मेरे लिए, अब एक ही जगह है—वह है वन।
मतलब यह नहीं कि हमें वहाँ हमेशा के लिए ही रहना होगा। फिर
उस समय तक, जब तक कि ये लोग शान्त न हो जायें वहीं रहना
होगा इसके सिवाय कोई उपाय नहीं। इसके बाद देखेंगे—हो सकता है
कि हम वापस लौट कर आ सकें।

11

वनवास

भियों द्वारा यूरी को गिरफ़्तार किये हुए करीब दो साल हो चुके हैं।
उसकी स्वतंत्रता की सीमा अस्पष्ट है। न वह दीवारों से घिरा हुआ है, न
उस पर पहरा है, न कोई उसके कार्यों पर ही निगरानी रखता है।

सपक्षियों की शक्ति निरन्तर बढ़ती जा रही थी। जिस भू-प्रदेश अथवा बस्तियों से ये लोग गुज़रते, वहाँ के स्थानीय निवासियों से वे पृथक् नहीं रह पाते, उन लोगों में मिल कर, उन्हें अपने साथ लेते हुए उन्हीं में विलीन हो जाते।

लगता, जैसे यूरी का यह बन्धन, उसकी यह लाचारी, सिर्फ़ भ्रम है। वह पूरी तरह स्वतंत्र है। बात सिर्फ़ इतनी-सी है कि वह अपनी स्वतंत्रता से पूरा लाभ नहीं उठा पाता। उसकी यह परवशता वास्तव में जीवन की अन्य मजबूरियों से भिन्न नहीं है, जो कि अक्सर अदृश्य, अविचारणीय, अस्तित्वहीन अथवा काल्पनिक सी प्रतीत होती हैं। यह बात सही है कि न वह बेड़ियों से जड़ा हुआ था, न उस पर कोई निगरानी ही रखी जाती थी, फिर भी उसे इस काल्पनिक ग़ुलामी के आगे सिर झुकाना ही पड़ता था।

सपक्षियों के इस दल से भागने की उसने तीन बार कोशिश की। लेकिन सफल नहीं हो सका, पकड़ा गया। उसे किसी प्रकार की सजा नहीं मिली। फिर भी वह जानता था कि वह आग से खेल रहा है। इसलिए इसके बाद भाग निकलने की बात उसने छोड़ दी।

सपक्षियों के प्रधान लिबेरियस मिकुलित्सिन को उसका साथ पसन्द था, इसलिए वह उसे चाहता था। उसके सोने की व्यवस्था उसी के तम्बू में की गयी थी। यूरी इस गले पड़ी दोस्ती से परेशान था।

दो

सपक्षीय निरन्तर पूर्व की ओर बढ़ते जा रहे थे। जब यह अभियान प्रगति करता, तो पश्चिमी साइबेरियन से कोलचक को भगाने के आन्दोलन का रूप धारण कर लेता और श्वेत दल पीछे से हमला करके उन्हें घेर लेने की स्थिति उत्पन्न कर देता, तो पूर्व की ओर बढ़ने का यही अभियान भाग निकलने का प्रयास बन जाता। काफी अर्से तक यूरी इस माया का अर्थ नहीं समझ पाया।

उनका रास्ता महापंथ के समानान्तर ही था। रास्ते में पड़ने वाले गाँव तथा छोटे-छोटे नगर युद्ध के परिणामों के अनुसार या तो कम्युनिस्टों के थे, अथवा श्वेतों के। एक ही नजर में यह जानना मुश्किल था कि इस समय वे किसके कब्जे में हैं?

जब कृषकों की सेना एक बस्ती से गुज़रती तो अन्य तमाम बातें नगण्य हो जातीं। दोनों ओर के मकान मानो सिकुड़ कर जमीन में धँस जाना चाहते। बन्दूकधारी घुड़सवार आपस में धक्कममुक्का करते हुए, कीचड़ उछालते हुए इन मकानों से ऊँचे दिखाई देते।

एक दिन, जब वे पाजिंस्क नामक एक छोटे नगर में थे, यूरी एक दवा बेचने वाले की दूकान पर ब्रिटिश मेडिकल सामग्री को अपने कब्जे में लेने के लिए गया, जो कि श्वेत दल के अधिकारियों की एक इकाई छोड़कर चली गयी थी; और जिसे सपक्षियों ने लूट के माल की भाँति अपने कब्जे में ले लिया था।

वर्षा काल के एक शुष्क अपराह्न के समय, जब कि केवल दो रंग ही सब जगह छाये हुए थे—जहाँ उजाला था वह भाग श्वेत दिखाई दे रहा था; और बाकी का सब कुछ काले अन्धकार में घिरा हुआ। यूरी के मस्तिष्क में भी उसी प्रकार की स्पष्ट शुष्कता थी, जिसमें अन्य कोई रंग मिश्रित नहीं हो पा रहा था।

ध्वस्त-मार्ग सेनाओं के आवागमन से काले कीचड़ की नदी-सा दिखाई दे रहा था। केवल कुछ ही ऐसे स्थान थे, जहाँ से रास्ता पार किया जा सकता था। वहाँ तक पहुँचने के लिए कई मकानों को पार करना पड़ता। आज से तीन साल पहले मास्को से ट्रेन में आते हुए जिस पेलेगिया त्यागुनोवा से उसकी मुलाकात हुई थी, वह उसे वहाँ दिखाई दी। उसी ने पहले ज़िवागो को पहचाना। अपनी ओर इस तरह ताकती हुई, इसी स्त्री को पहले तो ज़िवागो पहचान नहीं पाया, जो मार्ग की दूसरी ओर खड़ी थी, जैसे कि वह नहर के दूसरे किनारे पर खड़ी हो। उसके चेहरे से

मालूम पड़ता था कि पहचान लेने पर वह उसका स्वागत करने के लिए तत्पर है, अन्यथा वह मौन ही रहेगी।

ज़िवागो ने उसे पहचान लिया। उसे याद आई भीड़ से लदे हुए रेल के डिब्बे की, मजदूर, संतरी और उस स्त्री की, जिसके कन्धे पर कपड़े की गठरी थी। उसकी आँखों के सामने उसके परिवार का नक्शा खिंच गया। उस यात्रा की छोटी से छोटी घटनाएँ उसे याद आने लगीं। याद आई अपने प्रत्येक परिजन की, जिनके अभाव में आज वह अथाह नैराश्य सागर में डूबा हुआ है।

जहाँ से रास्ता पार किया जा सकता है, उस ओर बढ़ने का उसने इशारा किया और स्वयं भी उस ओर बढ़ा। स्वागत के पश्चात् त्यागुनोवा ने पिछले दो वर्षों की अनेक बातें बतलायीं। उसने उस वास्या की भी याद दिलाई जो निष्कपट और नितान्त भोला था। जिसे कि अनुचित रूप से बंदी किया गया था और जो उनके साथ, उसी डिब्बे में यात्रा कर रहा था। साथ ही उसने बताया कि उसने किस प्रकार वेरेटेन्निकी गाँव में वास्या की माँ के साथ समय बिताया। वह वहाँ प्रसन्न थी। लेकिन सारा गाँव उसे पराया व्यक्ति समझता। इसके बाद वास्या के साथ प्रेम करने का झूठा आरोप उस पर लगाया गया। अन्त में प्राण बचाने के लिए, उसे उस गाँव से भागना पड़ा। फिर वह अपनी विवाहित बहन ओल्गा गलुजिना के साथ हॉलीक्रास गाँव में रहने लगी। जब उसने यह सुना कि पास के ही किसी गाँव में प्रित्युलेव आ गया है, वह हॉलीक्रास छोड़ कर, पाजिन्स्क चली आई। वह गलत अफवाह थी। लाचार हालत में उसे यहीं रहना पड़ा। अब उसे यहाँ काम मिल गया था।

इसी बीच उसके साथियों को दुर्भाग्य की क्रूरतम लीला भुगतनी पड़ी। खाद्यान्न की पूर्ति रोकने का बदला लेने के लिए वेरेटेन्निकी पर आक्रमण किया गया। सुना है कि वास्या का मकान जलाकर राख कर दिया गया और उसके परिवार का एक व्यक्ति उसी में जल कर मर गया। हॉलीक्रास में पेलेगिया के बहनोई व्लास गलुजिन को भी, या तो जेल में

भेज दिया गया है अथवा उसे मार डाला गया है। उसका भतीजा लापता हो गया। उनके बारे में सारी हकीकत कोई निश्चित रूप से नहीं जानता। कुछ समय तक उसकी बहन को भूखे रह कर समय गुजारना पड़ा। इसके बाद अपने गुजारे के लिए उसे अपने एक रिश्तेदार किसान के यहाँ नौकरी करनी पड़ी।

यूरी जिस केमिस्ट की दूकान का स्टाक जब्त कर रहा था, वहीं त्यागुनोवा काम करती थी। इस कार्यवाही के कारण केमिस्ट के तमाम आश्रित बर्बाद हो रहे थे। लेकिन असहाय और विवश यूरी कर ही क्या सकता था?

यूरी की गाड़ी दूकान के पिछले भाग में खड़ी हो गयी। बोरे, पेटियाँ तथा बोतलें सब बाहर निकाले गये। सारे व्यक्तियों की तरह केमिस्ट के घोड़े ने भी इस दुखद दृश्य को देखा।

दिन की वर्षा समाप्त होने वाली थी। आकाश स्वच्छ हो रहा था। बादलों के पर्दे से डूबते हुए सूर्य ने झाँक कर इस दृश्य की साक्षी दी और फिर अशुभ शकुन की, कांसे के रंग की काली एवं लाल रश्मियों से सारा दृश्य कुंठित हो गया। गोबर का कीचड़ यहाँ-वहाँ बिखरा पड़ा था। हवा का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वर्षा की भीनी लहरों के गिरने पर, उस कीचड़ का रंग सिन्दूर के रंग की तरह दिखाई देने लगा।

गलियों से गुज़रती हुई फौजें गहरे गड्ढों को पैदल अथवा घोड़ों पर चढ़ कर पार कर रही थीं। इस जब्त किये हुए सामान में कोकीन भी था। नपक्षी दल के प्रधान को हाल ही में इसकी आदत लगी थी।

तीन

सर्दियों में टाइफ़ुस के ज्वर का प्रकोप और गर्मियों में पेचिश के रोग से पीड़ित रोगियों की संख्या कम नहीं थी। फिर युद्ध के आरम्भ हो जाने के कारण घायलों की संख्या भी बढ़ती जा रही थी। ऐसे समय में यूरी का सारा ध्यान अपने काम में लगा हुआ था।

निरन्तर मार खाने तथा अक्सर पीछे हटते रहने के बावजूद भी सपक्षियों के सैनिक अधिकारियों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही थी। जिस क्षेत्र से यह कृषि सेना गुज़रती, वहाँ के असंतुष्ट व्यक्ति तथा दुश्मन की सेना से भागे हुए लोग इसमें शामिल होते जाते। पिछले अठारह महीनों से इस इकाई का मूल आकार दस गुना बढ़ गया है। इसकी शक्ति उस सीमा तक पहुँच गयी है जिसके बारे में हॉलीक्रास की सभा में इसके प्रधान लिबेरियस ने शेखी भरी घोषणा की थी।

यूरी के साथ नवनियुक्त, मगर काफी अनुभवी अनेक चपरासी थे तथा दो मुख्य सहायक। दोनों ही पहले के युद्ध-बन्दी थे। एक था हंगेरियन कम्यूनिस्ट करेंजी लैजोस। ये महाशय पहले आस्ट्रिया की सेना में मेडिकल आफिसर थे। दूसरे साहब थे क्रोट एन्जेलर। इन्हें आंशिक रूप से डाक्टरी प्रशिक्षण प्राप्त था। यूरी लैजोस के साथ जर्मनी में बातचीत कर सकता था। एन्जेलर मामूली तौर पर रूसी भाषा समझ सकता था।

चार

अन्तर्राष्ट्रीय रेडक्रास की प्रतिज्ञा के अनुसार, सेना के मेडिकल कर्मचारियों को योद्धाओं की सैनिक गतिविधियों में भाग नहीं लेना चाहिए। लेकिन यूरी को एक बार इस प्रतिज्ञा को भंग करना पड़ा। रणस्थल में अपने काम पर नियुक्त डॉक्टर को एक बार लड़ने वालों के भविष्य का ही सामना करना पड़ गया।

अग्रिम पंक्ति, जहाँ उसे दुश्मनों की गोलीबारी का सामना करना पड़ा था, जंगल के एक किनारे पर थी। वह अपनी इकाई के टेलीफोन वाले के समीप कूद कर जमीन पर लेट गया। पीठ पीछे विस्तृत जंगल फैला हुआ था, सामने खुला मैदान—और इस असुरक्षित खुले स्थान की दूसरी ओर से श्वेत दल हमला कर रहा था।

श्वेत-दल के सैनिक यूरी के इतने निकट थे कि वह उनकी शक्लें अच्छी तरह देख सकता था। ये वे युवक थे जिन्हें राजधानियों के नागरिकों में से

हाल ही में भर्ती किया गया था। साथ में प्रशिक्षण देने वाले सुरक्षित सेना के बड़े लोग भी थे। युद्ध को गतिशीलता इन युवकों द्वारा ही प्राप्त हो रही थी। ये थे कालेज के प्राथमिक वर्ष अथवा हाई स्कूल के उत्साही छात्र।

उनमें से अनेक लोगों की सूरत यूरी को जानी-पहचानी लग रही थी, लेकिन वास्तव में वह किसी से परिचित नहीं था। कुछ देर बाद उसे अपने स्कूली-मित्रों की याद हो आई। उसे लगा कि सामने युद्धमग्न ये लड़के तो ठीक उसके भाइयों जैसे ही हैं। बाकी के लोगों के बारे में उसे महसूस हुआ कि शायद वह उन्हें थियेटर की भीड़ में अथवा बीते हुए वर्षों में किसी गली में अवश्य देख चुका है। उनके भाव-अभिव्यक्त चेहरों के प्रति वह इतना अधिक आकृष्ट हुआ कि वे सब उसे अपने ही वर्ग के निजी प्राणी प्रतीत होने लगे। कर्त्तव्य के प्रति उनकी निष्ठा ने उनमें परमानन्ददायक वीरता पैदा कर दी थी; जो सम्भतः अनावश्यक थी; साथ ही उत्तेजनात्मक भी। इधर-उधर फैले हुए वे लोग निर्देशों का पालन किये बिना वे सीधे आगे बढ़ रहे थे। न वे अचानक दौड़ पड़ते, न उछल कर जमीन पर ही लेट जाते। यह भी सच है कि यह खुला प्रदेश उन्हें छिपाने के लिए अनुपयुक्त था। सपक्षियों की गोलियों ने उन्हें नेस्तनाबूद कर दिया।

उस लम्बे चौड़े बंजर मैदान के बीच एक सूखा पेड़ था। बिजली गिरने के कारण वह जल गया था। आग के कारण उसका रंग स्याह हो गया था। या हो सकता है वह पहले के कुछ युद्धों का परिणाम भुगत चुका हो; तथा उसकी लकड़ियाँ चीर दी गयी हों। प्रत्येक नवयुवक ने इसकी ओर देखा, साथ ही इसकी आड़ में सही निशाना लगाने के प्रलोभन को रोक कर आगे बढ़ गया।

सपक्षियों के पास सीमित कारतूस थे। क्षेत्रीय समझौते द्वारा दिये गये आदेश के अनुसार वे यह मानने को बाध्य थे कि उच्च सेनाओं को काम में न लाया जाय। सिर्फ़ नजदीकी निशानों पर ही गोली चलाई जाय।

यूरी के पास राइफल नहीं थी। घास पर लेटे-लेटे वह इन गतिविधियों को देख रहा था। उसकी सहानुभूति इन वीर बालकों के साथ थी, जो सीना तान कर मृत्यु का सामना कर रहे थे। उसने हृदय से उनकी सफलता की कामना की। संभवतः ये लड़के भी वैसे ही परिवारों के थे जो कि भावना, शिक्षा, नैतिक अनुशासन के मूल्यों में उसी के परिवार के ही समान थे। एकाएक उसके मन में यह विचार आया कि वह आगे बढ़ कर, मैदान पार करके उनके पास पहुँच जाय, अपने आप को उनके हवाले कर दे और मुक्ति पा जाये। लेकिन यह खतरे से खाली नहीं था। सिर के ऊपर हाथ उठा कर दौड़ते समय दोनों ओर की गोली उसकी छाती और पीठ में लग सकती थी। एक ओर से गद्दारी करने की सजा के बतौर, और दूसरी ओर से उसके उद्देश्य को गलत समझने के कारण। इस परिस्थिति की विषमता को वह जानता था और पहले भी वह इसका सामना कर चुका था। भागने के ऐसे समस्त सम्भव प्रस्तावों पर विचार करके उन्हें व्यर्थ मान कर, अब वह उनका परित्याग कर चुका था। खुले मैदान की ओर नज़र गड़ाये, घास पर पेट के बल लेटा हुआ, बिना शस्त्र के वह युद्ध के परिणामों को देख रहा था।

जिस समय चारों ओर यह घातक संघर्ष जारी हो, निष्क्रिय रूप से इसे चुपचाप देखते रहना मानवीय सहनशक्ति के बाहर है। सवाल यह नहीं है कि वह उस पक्ष के प्रति वफादारी दर्शाये, जिसने उसे बन्दी बना रखा है। न अपने प्राणों की रक्षा का ही प्रश्न था। बल्कि सवाल था प्रस्तुत परिस्थितियों के सामने सिर झुकाने का। उन कानूनों के आगे झुकने का, जिनके द्वारा कि सामने घटित हो रही घटनाओं का संचालन हो रहा था।

तुम्हें भी वही करना पड़ेगा जो कि हर व्यक्ति कर रहा था। सामने युद्ध जारी था। मार-काट हो रही थी। उस पर तथा उसके साथियों पर गोली चलाई जा रही थी। विवश होकर प्रत्युत्तर में उसे भी गोली चलानी पड़ी।

उसके पास ही टेलीफोन वाला पीड़ा के साथ तड़फड़ा कर उछला और ढेर हो गया। ज़िवागो घिसटते हुए उसके पास पहुँचा। उसकी कारतूस

की पेटी और राइफिल उसने ले ली। फिर वापस अपने स्थान पर आकर उसी अवस्था में पड़ा रहा। वह तब तक एक के बाद एक गोली चलाता रहा, जब तक कि बन्दूक खाली न हो गयी।

मन के कोमल भावों के कारण वह उन युवकों पर गोली चलाना नहीं चाहता था, जिनकी वह अभी-अभी प्रशंसा कर चुका था। जिनके प्रति उसके मन में सहानुभूति थी। केवल हवा में गोली चलाना मूर्खतापूर्ण था। इसलिए उसने अपनी गोलियों का निशाना बनाया उस पेड़ को, जो उजड़ा हुआ पड़ा था और उसके बीच कोई नहीं था।

अपने लक्ष्य पर नज़र गड़ाये, वह धीमे-धीमे बन्दूक का घोड़ा दबा देता। वह गोली इस तरह चलाता, जैसे वह उसे चलाना न चाहता हो और वह अपने आप चल जाती हो। उसकी चलायी हुई गोलियाँ पेड़ से टकरा कर इधर-उधर फैल गयीं। लेकिन आह! लाख सतर्कता के बावजूद भी उसके और लक्ष्य के बीच कोई न कोई नौजवान आ ही जाता। उसकी गोली से दो लड़के घायल हो गये। एक लड़का, जो कि पेड़ के समीप ही पड़ा था, लगता था कि मर गया है।

अन्त में श्वेत दल ने आक्रमण को व्यर्थ मान कर वापसी का आदेश दे दिया। सपक्षी कम थे। उनकी प्रमुख सेना का एक भाग आगे बढ़ रहा था और कुछ सैनिकों ने थोड़ी दूर पर दुश्मनों की अधिकांश सेना को रोके रखा था। अपनी कमजोरी को छिपाये रखने के लिए उन्होंने भागते हुए श्वेत सैनिकों का पीछा नहीं किया।

सफ़ाई के काम में स्ट्रेचर लिये दो चपरासी और उसके सहायक उसकी मदद कर रहे थे। उन्हें घायलों को संभालने का आदेश देकर, वह इस निरर्थक आशा के साथ टेलीफोन वाले के पास पहुँचा कि शायद अभी भी वह ज़िन्दा हो और शायद उसे बचाया जा सके। कमीज में हाथ डाल कर उसकी छाती टटोल कर उसने देखा। हृदय की गति बन्द हो चुकी थी।

मृतक के गले में रेशम के धागे से बँधा हुआ एक ताबीज लटक रहा था। यूरी ने उसे निकाल लिया। इसमें एक कागज था, जो कि मोड़ कर एक

कपड़े में सी दिया गया था। ताबीज खोल कर देखने पर मालूम हुआ कि अपभ्रंश रूप में प्रचलित बाइबिल के 19वें धर्मगीत की कुछ पँक्तियाँ उस ताबीज में लिखी हुई थीं।

लोगों का विश्वास था कि इन पंक्तियों में जादू का असर है और यह उनका गोली से बचाव कर सकती है। पिछले साम्राज्यवादियों के संघर्ष में सैनिक इसे ताबीज़ बना कर पहना करते थे। दशाब्दियों बाद बन्दी इसे अपने कपड़ों में सी लिया करते और इसके गीत जेल में गाया करते।

टेलीफोन वाले को छोड़ कर यूरी मैदान में उन श्वेत गार्ड्समैनों के पास गया, जिन्हें कि उसकी गोली ने मार गिराया था। लड़कों के चेहरों पर निर्दोषिता और सबको क्षमा कर देने वाले कष्ट की छाप अंकित थी। यूरी सोच रहा था—मैंने उन्हें क्यों मार गिराया?

उसने युवक का कोट उतारा। सम्भवतः उसकी माँ ने बड़ी सावधानी के साथ उसका नाम और जातीय उपकरण-सेरोयाझा रेंटसेविच, टेढ़े मेढ़े अक्षरों में काढ़ दिया था। सेरोयाझा की कमीज के खुले हुए भाग से एक जंजीर बाहर लटक रही थी। एक क्रास, एक लाकेट तथा सोने की सुँघनी रखने जैसी कोई डिब्बी, यही सारा सामान था। यह डिब्बी दाँतेदार थी, उसमें शायद एक कील गाड़ी गयी थी। उसमें से एक कागज बाहर निकल पड़ा। यूरी ने उसे खोल कर आश्चर्यचकित दृष्टि से देखा, इसमें भी वही 19वें धर्मगीत का श्लोक था। परन्तु इस बार सही-सही सेत्वोनिक संस्करण के अनुसार।

सेरोयाझा हिला। आह भरी। वह जीवित था।

बाद में मालूम हुआ, कि मामूली-सी अन्दरूनी चोट के कारण वह बेहोश हो गया था। उसकी माँ द्वारा बाँधे गये ताबीज़ से गोली टकराई थी और वह बच गया था। लेकिन सवाल यह था कि इस घायल व्यक्ति का किया क्या जाय? यह उस वक़्त की बात है, जब कि चारों ओर पशुता का बोलबाला था। युद्धबन्दी मुश्किल से जीवित अवस्था में कारावास तक पहुँचाये जाते। घायल दुश्मनों को लड़ाई के मैदान में ही

खत्म कर दिया जाता। फिर भी सपक्षीय सेना की नीति नरम थी। उनकी स्थिति के अनुसार दुश्मन की सेना से भागे हुए बहुत से सैनिकों को यहाँ आश्रय मिल जाता था। इस मामले में भी यह बात गुप्त रखी जा सकती थी; और कहा जा सकता था कि रेन्टसेविच अभी हाल ही में श्वेत दल में शरीक हुआ है।

यूरी ने मृत टेलीफोन वाले के कपड़े उतारे और अपने विश्वस्त एन्जेलर की सहायता से उस युवक को वे कपड़े पहना दिये। उसकी चिकित्सा करके उसे सामान्य स्थिति में ले आया गया और उसे मुक्त कर दिया गया।

रेन्टसेविच ने अपने मन की यह बात छिपाई नहीं कि वह फिर कोलचक की सेना में जाकर कम्युनिस्टों से लड़ना चाहता है।

पाँच

पतझड़ में सपक्षियों ने 'फौक्सेस थिकेट' में डेरा डाला। यह गहरे ढलान वाली जंगली पहाड़ी थी। इसके तीनों ओर से झाग उगलती हुई और किनारे काटती हुई नदी बहती थी। एक साल पहले श्वेत दल के लोग यहाँ समीपवर्ती लोगों की सहायता से आवास कर चुके थे। फिर अपनी किलेबन्दी तोड़े बिना ही वे यहाँ से चले गये। अब उनके द्वारा खोदी हुई खाइयों और संचार के साधनों का उपयोग सपक्षीय दल कर रहा था।

यूरी इसी तरह के एक गड्ढे में लिबेरियस मिकुलित्सिन के साथ रहता था। उसके निरन्तर बात करते रहने की आदत के कारण, वह दो दिनों से सो नहीं पाया था।

—मैं सोच रहा हूँ कि इस समय मेरे पूज्य माता-पिता...मेरे पिताजी इस समय क्या कर रहे होंगे?

यूरी ने दीर्घ साँस लेकर मन ही मन कहा—हे भगवान्! मुझे इस तरह की बेवकूफी भरी बातों से कितनी नफरत है! और यह है अपने पिता की जीवित प्रतिकृति!

—हमारी अब तक हुई बातचीत से तुम उनसे अच्छी तरह परिचित हो चुके होंगे! मेरा खयाल है कि तुमने उनके विरुद्ध कोई धारणा नहीं बनाई होगी। क्या कहते हो?

—लिबेरियस एवरेसीविच, कल चुनाव से पूर्व की हमारी बैठक होने वाली है। वोडका बनाने वाले अर्दलियों की सुनवाई होगी। लाजोस के साथ ही मुझे भी अपने बयानों पर विचार करना है। मैं दो रातों से सो नहीं पाया हूँ। क्या हम यह बातचीत इस समय बन्द नहीं कर सकते? मैं बहुत थक गया हूँ।

—खैर, यह सब तो होता रहेगा। हाँ बताओ तो मेरे बुजुर्ग वृद्ध माता-पिता के बारे में तुम्हारा क्या खयाल है?

—पहली बात तो यह कि आपके पिता काफी जवान हैं। पता नहीं, आप उनके बारे में इस तरह की बातें क्यों कर रहे हैं? खैर, मैं बताता हूँ। मुझे समाजवादियों की विचारधारा के बारे में अधिक मालूम नहीं है। बोल्शेविक तथा अन्य समाजवादियों में मुझे ज्यादा अन्तर दिखाई नहीं देता। रूस में सम्प्रति अशान्ति एवं उपद्रव फैलाने के लिए जो लोग उत्तरदायी हैं, उनमें आपके पिताश्री भी हैं। वे पूरे क्रान्तिकारी हैं, कर्म से और चरित्र से। आपकी ही तरह रूसी लोगों में उत्तेजना फैलाने के वे समर्थक हैं।

—तुम उनकी प्रशंसा कर रहे हो, अथवा उन पर दोषारोपण कर रहे हो?

—मैं फिर प्रार्थना करता हूँ महाशय, कि इस बातचीत को फिर किसी उपयुक्त समय के लिए इस बार स्थगित कर दिया जाय। हाँ, मैं यह भी कहना चाहता था कि आप इन दिनों कोकीन ज्यादा लेने लगे हैं। जिस स्टाक का मैं इन्चार्ज हूँ, उसका आप जानबूझ कर अपव्यय कर रहे हैं। आपको यह भी मालूम है कि यह अन्य कामों के लिए अधिक उपयोगी है। साथ ही यह भी बात आपको नये सिरे से बताने की आवश्यकता

नहीं कि यह एक किस्म का जहर है और आपके स्वास्थ्य के लिए मैं जिम्मेदार हूँ।

—कल रात को मनन-चक्र को तुमने स्थगित कर दिया था। सामाजिक जीवन के प्रति तुम्हारी भावनाएँ उसी तरह शुष्क हैं, जिस तरह कि निरक्षर खेतिहर महिला की, या पुराने विचारों के बुजुर्वा लोगों की। इस पर भी तुम डॉक्टर हो। तुमने काफी कुछ पढ़ा है; और सुना है कि तुम स्वयं लिखते भी हो? तुम्हारे पास इसका क्या स्पष्टीकरण है?

—नहीं, मैं कोई स्पष्टीकरण नहीं दे सकता। मुझ में अक्ल नहीं है। उसके लिए अब कोई उपाय नहीं। भले आपको मेरे लिए अफसोस हो!

—यह झूठी उदासीनता किस लिए? व्यंग्य करना तो आसान है। लेकिन तुम्हें सोचना चाहिए कि हम शिक्षण वर्गों में क्या कर रहे हैं? यदि तुम्हें यह सब मालूम हो जाय तो तुम्हारा स्वभाव इतना उद्दण्ड नहीं रहेगा।

—हे भगवान! लिबेरियस। मैं उद्दण्ड नहीं हूँ। आपके शिक्षा कार्यों के प्रति मेरी असीम श्रद्धा है। आपके विवाद सम्बन्धी नोट्स मैंने पढ़े हैं, जो आपने आन्तरिक रूप से प्रसारित किये हैं। सैनिकों के नैतिक उत्थान के प्रति आपके विचारों की मैं प्रशंसा करता हूँ। आपके इस प्रयत्न से भी मैं सहमत हूँ कि सैनिकों का अपने साथियों के प्रति कैसा व्यवहार होना चाहिए। कमजोरों, असहायों तथा महिलाओं के सम्मान और सतीत्व के प्रश्न के बारे में मुझे समझाने की आवश्यकता नहीं। इस प्रकार के नीति-वचनों को मैंने रट रखा है। अपनी जवानी में मैं भी अपने को सुधारने में प्रयत्नशील था। मैं इन बातों का मजाक नहीं उड़ाता। लेकिन अक्टूबर की क्रान्ति के बाद सुधार की भावना को जो स्वरूप दिया गया है, उससे मैं निरुत्साहित ही हुआ हूँ। इसे व्यवहार में लाना मुश्किल है। सिर्फ़ इस विषय पर की गयी बातों के कारण खून की नदी बह चुकी है। इसीलिए मुझे शंका होती है कि लक्ष्यपूर्ति के लिए किसी भी साधन को काम में लाना क्या न्यायसंगत है? और जब ये ही लोग जीवन के

पुनर्निर्माण की बातें करते हैं तो मैं अपना आपा खो देता हूँ। निराश हो जाता हूँ।

'जीवन को नया रूप देना!' जो लोग ऐसी बातें करते हैं, वे जीवन के बारे में सचमुच कुछ जानते ही नहीं। उनका तजुर्बा चाहे जितना बड़ा हो, लेकिन उन्होंने जीवन की साँसों तथा उसके हृदय के स्पन्दन को करीब से कभी महसूस ही नहीं किया। वे इसे कच्ची मिट्टी समझते हैं कि जिसे वे अपने हाथों से नया रूप देंगे! लेकिन जीवन कोई मिट्टी का लौंदा तो है नहीं कि उसे जैसा चाहे घड़ दिया जाय। वह है चिन्मय—उसे नया स्वरूप देना किसी के बस की बात नहीं। यदि सच कहा जाय तो जीवन आत्मपरिवर्तन का ही नाम है। जीवन है निरन्तर परिवर्तनशील, नये स्वरूप ग्रहण करने वाला—वह हमारी और आपकी सैद्धान्तिक धारणाओं से परे है।

—खैर, फिर भी यदि तुम हमारी सभाओं में हाजिर रहो, यदि हमारे महान प्रतिभासम्पन्न व्यक्तियों के सम्पर्क में आओ, तो तुम्हें इतनी ओछाई से सोचने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। इसके बाद तुम निराशा से इतने जकड़े नहीं रहोगे। मैं जानता हूँ इस रोग की शुरूआत कैसे होती है? तुम यह तो देखते हो कि हम पराजित होते हैं, लेकिन उसके आगे की आशा की किरण तुम्हें दिखाई नहीं देती? लेकिन मेरे दोस्त, इन बातों से डरने की कोई ज़रूरत नहीं। मैं इससे भी बदतर चीज़ों का हवाला दे सकता हूँ। यह मेरे अपने अनुभवों की बात है। इसे फिलहाल सार्वजनिक रूप से ज़ाहिर नहीं किया जा सकता। पर तुम्हारी इन बातों के बावजूद भी मैं अपने मस्तिष्क का सन्तुलन खोना नहीं चाहता। हमारे ये आघात अस्थाई हैं। आखिर कोलचक को परास्त होना ही पड़ेगा। तुम मेरी यह बात याद रखना। देख लेना, भविष्य में जीत हमारी ही होगी। सो, अब खुश हो जाओ।

यूरी ने मन ही मन सोचा—अब यह कैसे बताया जाय? एक व्यक्ति में इतनी विवेकशून्यता एवं बचपना कैसे हो सकता है? मैं हमेशा से इन्हें

यह बताता आया हूँ कि हमारे विचारों में मतभेद है। इसने मुझे बलपूर्वक बन्दी बना कर रखा है। मेरी इच्छाओं के विरुद्ध मुझे यहाँ रख कर वह सोचता है कि उसकी कमजोरियों से मैं व्यथित होता हूँ और उसकी आशाओं से मैं खुश हो सकता हूँ। मुझे उत्साह मिल सकता है। एक व्यक्ति किस सीमा तक अन्धा हो सकता है? इनका खयाल है कि अखिल ब्रह्माण्ड का भविष्य अक्तूबर क्रान्ति की सफलता पर ही निर्भर है।

यूरी चुप हो गया। उसके कन्धे हिलाने से यह स्पष्ट हो गया कि निराशा के कारण वह अपना संयम खो बैठा है। यह बात लिबेरियस से छिपी नहीं रही।

उसने कहा—'जूपिटर', तुम्हारा गुस्सा देख कर लगता है कि तुम गलती कर रहे हो?

—आप यह क्यों नहीं समझते कि इन सबका मेरे लिए कोई महत्त्व नहीं है। 'जूपिटर', 'डरो मत', जो 'ए' कहता है 'बी' भी वही कहेगा तथा 'मूर ने अपना काम कर लिया, अब वह जा सकता है', इन सब फालतू की बातों का मुझ पर कोई असर नहीं पड़ सकता। आपके जो मन में हो, करिये, यदि मैं 'ए' कहूँगा, तो 'बी' नहीं कहूँगा। मैं जानता हूँ कि आप इस रूस के उद्धारक हैं, देश के उज्ज्वल दीपक हैं। आपके बिना देश रसातल में चला जायेगा, मुसीबतें टूट पड़ेंगी, चारों ओर अज्ञानान्धकार छा जायेगा। फिर भी मैं आप में से किसी की परवाह नहीं करता। मैं आप लोगों को पसन्द नहीं करता। बस। मेरे लिए आप लोग चाहें जहन्नुम में जायें।

—'जिन लोगों का काम ही सोचना है, और जो कहावतें बनाया करते हैं, वे कहते हैं कि घोड़े को पानी के हौज के पास तो ले जाया जा सकता है, लेकिन उसे पानी पीने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता।' जिन्होंने कभी मुक्ति अथवा लाभ की याचना नहीं की, उन पर अहसान करने की आप लोगों की आदत बन गयी है। आपका खयाल है कि आपके इस कैम्प और आपके साहचर्य से बढ़कर मुझे और कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा

होगा ? आप शायद यह भी आशा करते होंगे कि बन्दी बनाने के लिए मैं आपके प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करूँ ? शायद आप चाहते हैं कि अपने पुत्र तथा पत्नी से अलग रहने के लिए, अपने समस्त प्रिय परिजनों से परित्यक्त निर्जन वनवास भुगतने के लिए मैं आपको धन्यवाद दूँ ?

—अफवाह है कि किसी अज्ञात शक्ति ने—जो कि रूसी सेना नहीं थी—वेरिकिनो पर हमला करके उसे बरबाद कर डाला। कामेनोडवारेस्की ने इस बात का खण्डन नहीं किया। उसका कहना है कि हमारे और उनके लोग भागने में सफल रहे। यह बात स्पष्ट है कि काल्पनिक लम्बे बालों वाले योद्धाओं की तरह के गद्दों के लबादे पहने तथा बालों का टोप लगाये भीषण तुषारापात के समय रिनवा नदी को पार करके वे वेरिकिनो में घुस आये और वहाँ के प्रत्येक प्राणी को गोली से मार डाला गया। जिस रहस्यपूर्ण ढंग से वे आये थे, उसी रहस्यपूर्ण ढंग से वे गायब भी हो गये। क्या यह सही नहीं है ?

—बकवास है। सब गलत। झूठी अफवाह है !

—सैनिकों के नैतिक उत्थान की बातें करते समय, जिस प्रकार आप रहमदिल होने का दावा करते हैं—यदि वास्तव में आप इतने ही सहृदय हैं—तो मुझे छोड़ दें। मुझे जाने दें। मैं अपने परिवार की खोज-खबर लूँगा। पता नहीं वे कहाँ हैं—यह भी मुझे नहीं मालूम, कि वे ज़िन्दा हैं या मर गये ? यदि आप ऐसा नहीं कर सकते, तो भगवान के लिए चुप हो जाइये और मुझे अकेला छोड़ दीजिये। मुझे और किसी बात में किसी तरह की दिलचस्पी नहीं है। इस पर भी आप बातें करते रहे, तो मैं जवाब नहीं दूँगा। खैर, क्या मुझे सोने का भी अधिकार नहीं है ?

यूरी अपने सोने की लकड़ी की पटरी पर तकिये में मुँह छिपाये सीधा लेटा हुआ था। लिबेरियस द्वारा अपनी बात को प्रमाणित करने तथा उसे सांत्वना देने के लिए कही गयी बातों को वह सुनना नहीं चाहता था। सम्भवतः वह कहना चाहता था कि वसन्त ऋतु से पहले श्वेतों को परास्त कर दिया जायगा। गृह-युद्ध समाप्त हो जायेगा, शान्ति स्थापित

होगी। स्वतंत्रता और सम्पन्नता फैलेगी, और उसके बाद यूरी को एक क्षण के लिए भी नजरबन्द नहीं रखा जायेगा। तब तक उसे सन्तोष से काम लेना चाहिए। आखिर सबको त्याग करना ही पड़ा है, सबको धीरज से इन्तज़ार करना पड़ा है। कुछ महीनों और प्रतीक्षा कर लेने में कुछ बिगड़ नहीं जायेगा। फिर तुम इस समय जाओगे भी कहाँ? तुम्हें अकेले न छोड़ने में तुम्हारी ही भलाई है।

—'ठीक एक ग्रामोफोन रेकार्ड की तरह! उसे तोड़ डालो।' क्रोध के आवेश में निराशा के कारण उससे बोला नहीं जा रहा था। वह किसी भी प्रकार इन तमाम बातों को रोक नहीं सकता। वर्षों से निरन्तर दुहराई जाने वाली इन बातों से यह आदमी कभी भी अघाता नहीं? यह पिशाच, पता नहीं कब तक इसी तरह अपनी आवाज़ निरन्तर सुनाता रहेगा? दिन रात बकने की उसकी आदत है। हे ईश्वर, मुझे इससे कितनी नफरत है। एक दिन मैं इसे मार डालूँगा। मैं उसकी हत्या कर डालूँगा।

—टोन्या, मेरे प्यारे बच्चो, तुम कहाँ हो? क्या तुम लोग अभी तक जीवित हो? टोन्या के बच्चा होने वाला था। पता नहीं, प्रसव का समय उसने कैसे काटा होगा? कौन जाने लड़का हुआ अथवा लड़की? मेरे प्रियजनो, तुम लोगों का क्या हुआ? टोन्या मैंने सदा तुम्हारा तिरस्कार किया है? लारा! प्राण निकल जाने के डर से तुम्हारा नाम लेने का साहस मुझमें नहीं है।

हे भगवान, यह राक्षस अभी भी बके जा रहा है। एक दिन यह सीमा का अतिक्रमण कर लेगा और मैं इसका गला घोंट दूँगा। मार डालूँगा।

छः

गर्मी समाप्त हो चुकी थी। सुनहले पतझड़ का स्वच्छ दिन था। 'फौक्सेज थिकेट' के पश्चिमी सिरे पर श्वेत दल द्वारा बनाया हुआ ब्लाक हाउस का लकड़ी का कंगूरा अभी तक भूमि पर खड़ा था। यही पर यूरी ने अपने

हंगेरियन साथी लाजोस को मिलने तथा बातचीत करने के लिए बुलाया था। वह ठीक समय पर पहुँच गया था और अपने मित्र की प्रतीक्षा कर रहा था। खुदी हुई भूमि के किनारे-किनारे घूमते हुए, ऊँचाई से वहाँ का दृश्य देखने के लिए वह खम्भे पर चढ़ गया और मशीनगन के लिए बने हुए खाली सुराख से नदी के उस पार की जंगल की भूमि की ओर देखने लगा।

पतझड़ के कारण देवदार, चीड़ तथा झड़े हुए पत्तों के पेड़ों का अन्तर स्पष्ट हो गया था।' मार्गों और खाइयों के तल की मिट्टी, तुषारपात से सख्त हो चुकी थी। पत्तियों के ढेर यहाँ जमा हो गये थे, और ये पत्तियाँ सूख कर मुड़ गयी थीं। इन पतित पत्तों से पतझड़ की गँध आ रही थी। उसे मसालों से बने हुए कटे सेब की खुशबू आई और उसकी तृष्णा जागृत हो गई। सूखी हुई डालियाँ, गीली मिट्टी की महक तथा सितम्बर के नीले कोहरे में हाल ही में बुझी हुई आग के धुएँ का भ्रम होता।

'—क्या हाल है साथी?' उसने जर्मन भाषा में पूछा। इसके बाद वे अपने काम की बातें करने लगे।

—तीन बातें हैं। एक तो वोडका बनाने वाले अर्दलियों का कोर्ट-मार्शल, दूसरे फील्ड एम्बूलेंस तथा मेडिकल स्टोर्स का पुनर्गठन तथा मानसिक रोगियों की चिकित्सा की योजना। प्रिय लाजोस, मुझे नहीं मालूम कि तुम मुझसे सहमत हो या नहीं, लेकिन मैं महसूस कर रहा हूँ कि हम लोग पागल होते जा रहे हैं और हमारा यह पागलपन संक्रामक है।

—यह बड़ा दिलचस्प सवाल है। थोड़ी देर बाद इस पर बातचीत करेंगे। इससे पहले मैं कुछ और ही कहना चाहता हूँ। कैम्प में अशान्ति है। वोडका बनाने वालों के प्रति लोगों की सहानुभूति है। लोग श्वेतों के कारण भाग रहे अपने परिवारों के लिए भी चिन्तित हैं। तुम्हें शायद मालूम ही होगा कि औरतों, बच्चों तथा.बूढ़ों का एक जत्था इस ओर आ रहा है। कुछ सपक्षीय लोगों ने यहाँ से तब तक जाने से इनकार कर दिया है, जब तक कि यह दल यहाँ न पहुँच जाय।

—मुझे मालूम है। उनके लिए हमें प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

—और यह हो रहा है हमारी इकाई के संयुक्त कमान—हमसे स्वतंत्र यूनिटों के चुनाव से ठीक पूर्व—मेरा खयाल है कि एक ही उम्मीदवार हैं—कामरेड लिबेरियस। कुछ लोग वडोविचेन्को को खड़ा कर रहे हैं। हमारे सिद्धान्तों से विपरीत लोगों का दल उनका समर्थन कर रहा है। ये लोग वोडका तैयार करने वाले लोगों के साथ के हैं। इसमें दूकानदारों के लड़के, कुल्का तथा कोलचक के भागे हुए लोग शामिल हैं। वे ही सबसे ज्यादा शोरगुल मचा रहे हैं।

—तुम्हारा क्या खयाल है, मामले की सुनवाई में क्या होगा?

—उन्हें मृत्यु-दंड दिया जायेगा। लेकिन संभवतः फिलहाल इसे कार्यान्वित नहीं किया जाय। कुछ दिनों के लिए स्थगित कर दिया जायेगा।

—खैर, काम की बात। सर्वप्रथम फील्ड एम्बूलैंस...

—ठीक है। मानसिक रोगों की चिकित्सा की बात से मुझे आश्चर्य बिल्कुल नहीं हुआ। हमारे सामने जो मानसिक रोग उत्पन्न हो रहा है और फैल रहा है, वह हमारी परिस्थितियों के अनुसार पैदा हुआ विशिष्ट रोग है। इसकी उत्पत्ति ऐतिहासिक कारणों से हुई है। पाम्फिल पालिख जार की सेना में निजी-अधिकारी था, वह अब क्रान्ति के प्रति विशेष रूप से जागरूक है। साथ ही उसकी पैदाइशी भावना है कि वह एक विशिष्ट वर्ग का व्यक्ति है। वह इसलिए चिन्तित है कि यदि वह मर गया तो उसके परिवार के लोग श्वेत-दल के हाथ पड़ जायेंगे और उसके कार्यों के लिए उन्हें जवाब देना पड़ा तो क्या होगा? विचित्र किस्म का मानसिक रोग है। आने वाले जत्थे में सम्भवतः उसका परिवार भी है। मैं रूसी भाषा अच्छी तरह से नहीं जानता, इसलिए उसकी जाँच करना मेरे लिए मुश्किल है। तुम एन्जेलर अथवा कामेनोडवोरस्की की मदद से पता लगा सकते हो।

—मैं पालेख को अच्छी तरह जानता हूँ। सेना की काउन्सिल की सभाओं में कई बार मैं उसके सम्पर्क में आया हूँ। छोटा मस्तक, काला रंग और क्रूर स्वभाव। सज़ा देने अथवा गोली मार देने में उसका रवैया हमेशा चरम सीमा पर होता है। विरुद्ध गति के स्वभाव वाले व्यक्ति के रूप में ही मैंने उसे सदैव देखा है। फिर भी इस केस को मैं हाथ में लूँगा।

सात

आकाश स्वच्छ था। धूप निकली हुई। पूरे सप्ताह मौसम शान्त और शुष्क रहा।

विशाल शिविर से सामान्य रूप से आने वाली शोर की आवाज़, दूर गरज रहे समुद्र की तरह लगती। चलने-फिरने की आवाज़, बातचीत का शोर, कुल्हाड़ी से लकड़ी चीरने की आवाज़, कुत्ते के भोंकने का स्वर, घोड़ों की हिनहिनाहट तथा मुर्गे की बाँग की मिली-जुली आवाज़ें आ रही थीं।

धूप से तपे हुए लोगों का झुण्ड जंगल में मुस्कराता हुआ जा रहा था। जो डॉक्टर को जानते थे, उन्होंने उसका अभिवादन किया। सपक्षीय दल के आदमियों ने कैम्प उखाड़ने से तब तक के लिए इनकार कर दिया था, जब तक कि उनके परिवार के भागे हुए सदस्य यहाँ तक नहीं पहुँच जाते। वे अब यहाँ तक पहुँचने ही वाले थे। डेरा कूच करने की तैयारियाँ हो चुकी थीं। चूँकि भागने वाले आ ही रहे थे—वस्तुओं की सफ़ाई, उनकी समुचित व्यवस्था हो रही थी। गाड़ियों को गिना जा रहा था, उनकी जाँच हो रही थी।

जंगल के बीच में अक्सर सभाएँ हुआ करती थीं, इसलिए वहाँ का मैदान साफ़ हो चुका था। यहाँ एक ऊँचा मिट्टी का टीला-सा था, जहाँ की घास रौंद-रौंद कर दबाई जा चुकी थी। उस दिन किसी महत्त्वपूर्ण घोषणा के लिए आम-सभा होने वाली थी।

जंगल के सारे पेड़ सूखकर पीले पड़ गये थे। फिर भी गहरे भाग वाले पेड़ अभी भी हरे और ताजे दिखाई दे रहे थे। अपराह्न के बाद का सूर्य अस्त

हो रहा था और जंगल के बीच में उसकी किरणें घुसी जा रही थीं। काँच की भाँति पारदर्शी पत्तियाँ हरी लपटों की भाँति दिखाई दे रही थीं।

मुख्य सम्पर्क अधिकारी कामेनोडवोरस्की अपने तम्बू के बाहर खुले स्थान में बैठा कागजों को जला रहा था। जनरल कैपेल्स के जो कागजात उसके हाथ में पड़ गये थे उनमें से तथा सपक्षियों की फाइलों में से काम के कागजात निकाल कर, बाकी सारे कागज वह आग में डालता जाता था। डूबते हुए सूर्य के पीछे जलती हुई आग पारदर्शी लग रही थी। लपटें दिखाई नहीं दे रही थीं। सिर्फ़ गर्म हवा के स्पन्दन से ही लगता था कि यहाँ कुछ जल रहा है।

यूरी की बचपन से ही सूर्यास्त के समय जंगल की शोभा निहारने में रुचि थी। ऐसे समय उसे लगता कि यह सारा प्रकाश उसके शरीर के आरपार होकर उसे नहला रहा हो। मानो जीवन का मूल उसकी छाती में स्पन्दन पैदा कर रहा हो और उसके शरीर में प्रवेश करके उसके कन्धों के पास, परों के रूप में निकल आया हो। जीवन के प्रति एक छोटे बच्चे के मन में जो भावना होती है और जो बाद में हमेशा अन्दरूनी व्यक्तित्व के रूप में विकसित होती रहती है—वही भावना अपनी पूर्ण मौलिकता के साथ उस पर नियंत्रण स्थापित करती हुई उसमें पैदा हो रही थी।

अस्तगामी सूर्य की चमक, जंगल तथा वहाँ की प्रत्येक वस्तु उसे किसी बालिका के आकार में दिखाई देने लगी। आँखें बन्द करके वह सोचने लगा—लारा!

सम्पूर्ण जीवन को सम्बोधित करते हुए वह कहने लगा—ईश्वर की सत्ता सम्पूर्ण भूमि में व्याप्त है। सूर्य से प्रकाशमान वातावरण मेरे सामने उपस्थित है।

साथ ही प्रत्येक दिन का यथार्थ जीवन भी उसके सामने प्रस्तुत था। रूस अक्तूबर क्रान्ति से गुज़र रहा था और यूरी सपक्षियों का बन्दी था। अपने इन्हीं विचारों में तल्लीन वह कामेनोडवोरस्की की जलती हुई आग के पास पहुँचा।

—पुराने कागजात जला रहे हैं क्या? अभी तक खत्म नहीं हुए?

—कितने कागजात हैं! इनसे काफ़ी दिनों तक आग जलती रह सकती है।

यूरी ने अपने बूट से एक कागज के ढेर को सरकाया। इसमें श्वेत-दल के स्टाफ-हेडक्वार्टर्स के पत्र-व्यवहार थे। उसने सोचा, शायद इसमें रेंटसेविच के बारे में कुछ मालूम हो सके। परन्तु जो भी कागजात उसने देखे, वे कोड के अनुसार पुराने भेजे गये सन्देश थे। एक अन्य ढेर को भी उसने ठोकर मारी। उसमें सपक्षियों की सभाओं की कार्यवाहियों का शुष्क और नीरस विवरण था।

कामेनोडवोरस्की ने अपनी जेब से एक कागज निकाला और यूरी को दे दिया।

—यह है मेडिकल यूनिट के लिए आगे बढ़ने का आदेश! सपक्षियों के परिवार के भाग कर आने वाले व्यक्तियों का जत्था निकट आ गया है और हमारे कैम्प का अन्दरूनी विद्रोह शाम तक समाप्त हो जायेगा। इसके बाद यहाँ से हम कभी भी रवाना हो सकते हैं।

यूरी ने आदेश-पत्र को देख कर कुछ उत्तेजित स्वर में कहा—पिछली बार से भी कम गाड़ियाँ मुझे दी जा रही हैं। नये घायल व्यक्तियों को भी तो ले जाना है। जो चल सकेंगे, चलेंगे। परन्तु ऐसे लोग बहुत कम हैं! स्ट्रेचर पर पड़े लोगों का क्या किया जाय? इसके अलावा स्टोर का सामान है, बिस्तरे हैं, डाक्टरी साज-सामान है।

—तैते पाँव पसारिये जेति लम्बी सोर। किसी तरह तुम्हें व्यवस्था करनी ही होगी। साधनों को देखते हुए ही अपनी आवश्यकताओं को व्यवस्थित करना होगा!...एक और बात। यह हम सब का अनुरोध है। हमारा एक साथी है—आजमाया हुआ, परिपक्व, अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान सैनिक। उसकी तबीयत कुछ खराब है।

—पालिख? लाजोस ने मुझसे बताया था।

—जाकर उसे देख लो। पूरी तरह से जाँच करना।

—मानसिक रोग है ?

—मेरा भी यही खयाल है। वह कहता है कि उसे [illegible] है [illegible] ही है। अनिन्द्रा, सिरदर्द!

—अच्छी बात है। मैं अभी फुर्सत में हूँ। जाकर उसे देखता हूँ। सभा कब शुरू होगी ?

—मेरा खयाल है कि सब लोग आ ही रहे हैं लेकिन फालतू सिरदर्द क्यों लिया जाय ? तुम्हें तो मालूम ही है, मैं कहीं नहीं जाऊँगा। वे हमारे बिना भी काम चला लेंगे।

—मैं जाकर पालिख को देख आता हूँ, यद्यपि नींद के मारे मेरी आँखें मुँदी जा रही हैं। लिबेरियस महाशय रात को दार्शनिक तत्त्वज्ञान बघारने लगते हैं। उनकी बातों से मैं परेशान हो गया हूँ। खैर, इस समय मुझे पालिख कहाँ मिलेगा ?

—कचरे के गड्ढे से कुछ आगे खुले स्थान में, कमाण्डरों के तम्बुओं में से एक में पालिख है। उसके परिवार के लोग जत्थे में आ रहे हैं। उन तम्बुओं में से किसी एक में वह तुम्हें मिल जायेगा। उसका पद बटालियन कमाण्डर के समान है। क्रान्ति के समय किये गये महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए उसे यह गौरव प्रदान किया गया है।

आठ

अनेक रातें जाग कर बिताने के कारण, पालिख को देखने जाते समय यूरी बहुत अधिक थकान महसूस कर रहा था। अपने शिविर में जाकर वह लेट सकता था। लेकिन डर था कि किसी भी समय लिबेरियस आकर उसे अपनी बातों से परेशान कर सकता है। पेड़ों से घिरे हुए एक स्थान पर वह रुक गया। चमकती हुई पत्तियों का गलीचा-सा बिछा हुआ था। अस्तगामी सूर्य की रश्मियाँ गलीचे को सुनहला रंग प्रदान कर रही थीं। इस दोहरी चमक से किसी की भी आँखें शिथिल हो जातीं और वह सोने के लिए ललचा उठता।

खड़खड़ाती हुई, रेशम की भाँति कोमल पत्तियों पर यूरी लेट गया। मिट्टी के एक लोंदे को तकिया बनाकर, अपनी भुजाओं को माथे के नीचे रख कर वह सो गया। नींद आते देर नहीं लगी। रोशनी और छाया की जिस चमक ने उसे सुला दिया था, उसने अब इस प्रकार से उसे ढँक लिया कि उसका जमीन पर चित लेटा हुआ शरीर रोशनी तथा पत्तियों से पृथक् नहीं रहा। मानो उसने जादुई टोपी पहन ली हो। थोड़ी देर बाद ही नींद और विश्राम करने की उसकी लालसा ने उसे जगा दिया। सीधे कारणों का प्रभाव एक सीमा तक ही होता है; इसके बाद वे ही विपरीत प्रभाव डालने लगते हैं। इस तथ्य की जानकारी कि उसे सोने तथा आराम करने के लिए समय नहीं मिल रहा है, इसी कारण वह निरन्तर शिथिलता महसूस कर रहा था। उसके मस्तिष्क में विचार-चक्र चलने लगा। बिगड़े हुए इंजिन की तरह उसका दिमाग चल-चल कर रुक जाता। दरअसल इसी भीतरी दुविधा ने उसे थका कर परेशान कर दिया था। वह सोच रहा था—वह गधा लिबेरियस! जैसे दुनिया की अन्य तमाम बातें आदमी को पागल बनाने के लिए पर्याप्त न हो—बस इसी की कसर थी! वह एक स्वस्थ आदमी को बन्दी बना कर, उसे जानबूझ कर पागल बना डालना चाहता है। और ऊपर से मित्रता भरी अघा देने वाली चरचर करता और रहता है।

जिस ओर से प्रकाश आ रहा था, उस ओर से रेशमी वस्त्रों के खोलने, बन्द करने के क्रम के अनुसार अपने पंख फैलाकर उड़ती हुई, एक तितली वहाँ से गुज़री। अपने रंग-रूप के अनुकूल एक चीड़ के पेड़ की शाखा पर बैठ कर पता नहीं कहाँ विलीन हो गयी। यह भी सम्भवतः यूरी की ही तरह छाया प्रकाश के साथ आँख-मिचौनी खेल रही थी।

उसके मस्तिष्क में बारम्बार सामान्य रूप से आने वाले विचार चक्कर काटने लगे। अपने मेडिकल कार्यों में उसने इन सबका जिक्र अप्रत्यक्ष रूप से कई बार किया था। उच्चकोटि की विचार-शक्ति तथा लक्ष्य ग्रहण करने की शक्ति से सम्बन्धित यह विषय है। योग्य व्यक्ति के ही

जीवित रहने का आग्रह, मजाकिया तरीके से नकल करना और संरक्षण के रंगों में रंग कर किसी वस्तु को देखना है। प्रकृति द्वारा प्राणियों के जीवन का चुनाव ही वास्तव में चेतना का जन्म और विकास है। और विषय क्या है? लक्ष्य क्या है? इनके अस्तित्व की स्थापना कैसे की जाय? उसकी विचारधारा उसे डारविन से लेकर शेलिंग तक तथा तितली से लेकर आधुनिक चित्रकला तथा प्रभावाभिव्यक्तवादी कला आदि के विषयों तक खींच लाई।

एक बार वह फिर सो गया। थोड़ी देर बाद किसी के धीमे स्वर में की जाने वाली बातचीत ने उसे उठा दिया। जो थोड़े बहुत शब्द उसने सुने थे, उनसे यह आभास तो मिल ही जाता था कि कोई गुप्त तथा [illegible] योजना बनाई जा रही है। उसे यहाँ पड़े किसी ने नहीं देखा था, षड्यन्त्रकारियों को उसके वहाँ होने का संदेह नहीं था। यदि ज़रा सा भी खटका हो जाता, तो उसे अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता। मरे हुए आदमी की तरह चुपचाप दम साधे यूरी उनकी बातचीत सुनने लगा।

कुछ आवाज़ें पहचानी हुई मालूम पड़ती थीं। गोश्का, संका, कोश्का तथा उनके सामान्य साथी टेरेन्टी गल्युजिन आदि—ये सब निकम्मे युवक थे जिनका प्रत्येक उपद्रव तथा अशान्ति के पीछे हाथ रहता था। जाखर भी इस दल में शामिल था। यह और भी अधिक दुष्ट प्रकृति का व्यक्ति था। वोडका के मामले से वह भी सम्बन्धित था। उसके विरुद्ध सम्प्रति इसलिए कार्यवाही नहीं की गयी थी, क्योंकि उसने इस काण्ड के मुख्य अपराधियों की निन्दा घोषित की थी। यूरी को सबसे अधिक आश्चर्य हुआ शिवोब्लू को वहाँ देख कर। यह सिलवर यूनिट का पक्का सपक्षी था और कमाण्डर के अंगरक्षकों में से एक था। स्टेन्का रेजीन तथा पूगाचेव की पुरानी परस्परा को कायम रखते हुए इस लोकप्रिय व्यक्ति को लोग 'हेटमेन्स ईयर'* कह कर सम्बोधित किया करते थे। स्पष्ट था कि वह भी प्रस्तुत षड्यंत्र में शामिल है।

---

* सेनापति का गुप्तचर

षड्यंत्रकारी दुश्मन की आगे बढ़ी हुई सेना के दूतों से सम्पर्क स्थापित कर रहे थे। उनकी बातें सुनाई नहीं दे रही थीं। सम्भवत: उन्हें डर हो कि कहीं कोई मौन व्यक्ति छिपा बैठा, उनकी वार्ता में हस्तक्षेप उपस्थित न कर दे।

बातचीत करने का अधिकांश काम शराबी जाखर कर रहा था। प्रतिक्षण वह भद्दे शब्दों में अपनी कठोर आवाज़ से गालियाँ दे रहा था। मालूम होता था कि यही इन बदमाशों का सरदार है।

—अब तुम सब सुनो। पहली बात तो यह है कि हमें इस बात को बिलकुल गुप्त रखना है। यदि किसी ने जबान खोली—तो देख लो, यह रहा छुर्रा! मैं उसकी बोटी-बोटी काट डालूँगा। आई बात समझ में? तुम सब जानते हो, कि हम बुरी तरह फँस गये हैं। बचने का कोई उपाय नहीं। हमें किसी न किसी तरह मुक्ति प्राप्त करनी ही होगी। वे उसे जीवित ले जाना चाहते हैं। अब ये लोग बता रहे हैं कि उनका अधिकारी गलेवाय आ रहा है। (उन्होंने उसकी भूल सुधारते हुए बताया—गुल्युलिन—लेकिन वह नाम के हिज्जे ठीक से समझ नहीं पाया, इसलिए बोला) अच्छा जनरल गालेलाव ही सही। ऐसा मौका फिर नहीं आयेगा। उनके प्रतिनिधि यहाँ मौजूद हैं। ये पूरी बात बतायेंगे। तुम भी जो कुछ कहना चाहते हो, कह दो।

इस बार दूत कुछ कह रहे थे। उनकी एक बात भी पूरी नहीं समझ सका। लेकिन बोलते-बोलते जिस तरह वे बीच-बीच में रुक जाते थे, उससे लगता था कि वे उन्हें अपनी योजना समझा रहे हैं। जाखर बोला—

'सुना तुमने?' क्या ही बढ़िया आदमी है वह! हम उसके लिए क्यों सिर-दर्द मोल लें। वह आदमी भी तो नहीं है। वह विक्षिप्त है, साधु है अथवा भिक्षुक है। टेरेन्टी तुम बड़बड़ाना बन्द करो। गधा कहीं का! एक झापड़ दूँगा कि बस बड़बड़ाते रहोगे। मैं कह रहा था, कि वह साधु है। हाँ वह साधु है, इसका बस चले तो वह हम सबको भिक्षु बना देगा। वह कहता

है, गाली मत दो, शिकायत मत करो, शराब मत पियो और औरतों की बातें करना छोड़ दो। इस तरह से कोई आदमी कैसे रह सकता है? आज रात को हम लोग उसे फोर्ड तक नीचे ले आयेंगे। मैं कोशिश करूँगा कि वह निश्चित रूप से वहाँ तक आ जाय। इसके बाद हम सब मिल कर उस पर टूट पड़ेंगे। यह कोई बहुत मुश्किल नहीं होगा। मुश्किल यह है कि वे उसे ज़िन्दा पकड़ना चाहते हैं। वे कहते हैं कि उसे बाँध लो। खैर, देखा जायेगा। यदि यह उपाय काम में नहीं आया तो मैं खुद उससे निपट लूँगा। ये लोग मदद करने के लिए अपने आदमी भेज देंगे।

अपनी योजना समझाते हुए वह धीरे-धीरे आगे बढ़ गया और यूरी को उनकी बातचीत सुनाई देनी बन्द हो गयी।

—यह सारी बातचीत नालायक लिबेरियस के बारे में ही थी, जिसे वे श्वेत-दल को ज़िन्दा सुपुर्द करने अथवा मार डालने का षड्यंत्र रच रहे थे। भय और घृणा के मारे वह यह भूल ही गया कि स्वयं उसने कितनी ही बार उसके मर जाने की बात सोची है। उसे इस बात की सूचना कैसे दी जाय? उसने निश्चय किया कि कामेनोडवोरस्की के पास जाकर बिना किसी का नाम बताये, वह इस षड्यंत्र के बारे में सब कुछ बता दे, और लिबेरियस को सावधान रहने की चेतावनी दे दे।

वापस लौटने पर उसने देखा कि कामेनोडवोरस्की वहाँ नहीं है। सिर्फ़ एक आदमी वहाँ खड़ा है कि आग अधिक न फैल जाय।

षड्यंत्र सफल नहीं हो सका। इस बारे में पहले से ही सूचना मिल चुकी थी। उसी दिन रहस्योद्‌घाटन हुआ और षड्यंत्रकारी गिरफ्तार कर लिये गये।

यह जान कर यूरी को और भी अधिक निराशा हुई।

नौ

यह बात सब को मालूम हो गयी थी कि सपक्षियों के परिवार वालों का दल थोड़ी ही दूर रह गया है और अब एकाध दिन में ही यहाँ पहुँचने

वाला है। उनका स्वागत करने तथा डेरा कूच करने की तैयारियाँ हो रही थीं।

यूरी पालिख को देखने गया। वह अपने तम्बू के बाहर लकड़ी चीर रहा था। डॉक्टर को देख कर पालिख ने कहा:—अपने मेहमानों के लिए तैयारी कर रहा हूँ। मेरी पत्नी तथा बच्चे आने वाले हैं। तम्बू काफी नीचा है और यहाँ वर्षा का पानी चला आता है। इन लकड़ियों से छत बना लेने पर सुरक्षा रहेगी।

—पालिख, वे तुम्हारे परिवार वालों को तम्बू में रहने की अनुमति थोड़े ही देंगे? ग़ैर-सैनिक महिलाएँ तथा बच्चे कैम्प में कैसे रखे जा सकते हैं? वे बाहर कहीं डिब्बों में ठहराये जायेंगे। खाली समय में पेट भर कर उन्हें देख सकोगे। लेकिन मेरे खयाल में वे इस तम्बू में आकर नहीं ठहर सकेंगे। खैर, मैं यह कहने के लिए तुम्हारे पास नहीं आया हूँ। मुझे मालूम हुआ है कि तुम बहुत कमजोर हो गये हो। तुम्हें नींद नहीं आती। क्या यह सच है? मैं तो कहता हूँ, तुम भले-चंगे हो। तुम्हें हजामत ज़रूर बनवा लेनी चाहिए।

पालिख का शरीर काफ़ी विशालकाय था। उसके दाढ़ी थी। लगता था जैसे माथे के दो भाग हों। सामने की हड्डी गोलाकार थी; अथवा यों कहिये, कि ऐसी थी कि मानो भौंहों के ऊपर किसी ने इस्पात की परत रख दी हो। आँखों में तेज की दीप्ति दिखाई देती।

क्रान्ति के प्रारम्भ में ऐसी आशंका थी कि 1905 की क्रान्ति की तरह यह कोशिश भी अधूरी रह जायेगी और इसका प्रभाव केवल कुछ शिक्षितों पर ही पड़ेगा। समाज की गहरी परतों पर कोई असर नहीं होगा। परन्तु इस बार क्रान्ति का प्रचार करने के सभी प्रयास किये थे, ताकि जनता में अशांति फैले और वह भी क्रान्ति के लपेटे में आकर भड़क उठे।

उस प्रारम्भिक काल में विवेकशील व्यक्तियों, अधिकारियों आदि को घृणा की दृष्टि से देखने वाले पालिख जैसे लोगों को वामपंथी लोग विचारशील मानते थे और उनका सम्मान करते थे। उनकी अमानवीयता

को एक वर्ग विशेष का गुण माना जाता था। उनकी पशुता को प्रोलितेरियत सुदृढ़ता एवं क्रान्तिकारी प्रवृत्ति का प्रतीक माना जाता था। इन्हीं गुणों से पालिख ने इतनी ख्याति अर्जित की थी कि सपक्षीय नेता और पार्टी के सदस्य उसका सम्मान किया करते थे।

यूरी को उदासी से भरा यह असामाजिक विशालकाय दैत्य, सीमित स्वार्थ वाला तथा उत्साहहीनता के कारण सही सलामत मस्तिप्क का आदमी नहीं लगा।

पालिख ने स्वागत किया—तम्बू में आ जाओ।

—नहीं। यहीं ठीक हूँ। भीतर की अपेक्षा बाहर खुली हवा में बात करना मुझे अच्छा लगता है।

—अच्छा। जैसी तुम्हारी मर्जी। आओ, हम इन्हीं लकड़ियों पर बैठ जायें।

वे लचकदार टहनियों पर बैठ गये। पालिख ने अपनी जीवन-कथा यूरी को सुनाई। वह कहने लगा—लोग कहते हैं कि एक कहानी जल्द ही समाप्त हो जाती है। परन्तु मेरी कहानी लम्बी है। पिछले तीन सालों में मैं अपनी कहानी खत्म नहीं कर सका। मेरी समझ में नहीं आता कि शुरू कैसे करूँ ? अच्छी बात है, कोशिश करता हूँ। मेरी पत्नी, बच्चे और मैं। हम जवान थे। वह घर की देखभाल किया करती। मैं खेतों में काम करता। ज़िन्दगी बुरी नहीं कट रही थी। उन्होंने मुझे सेना में भर्ती कर लिया और युद्ध में भेज दिया! हाँ, युद्ध! युद्ध के बारे में मैं तुम्हें क्या बताऊँ ? कामरेड डाक्टर, तुमने युद्ध देखा ही है। उसके बाद क्रान्ति हुई। मैंने ज्वलंत प्रकाश देखा। सैनिकों की आँखें खुल चुकी थीं। हमने महसूस किया कि दुश्मन केवल विदेशी ही नहीं है। देश में भी दुश्मनों की कमी नहीं है। 'विश्व क्रान्ति के सेनानियों, अपनी राइफल झुका दो, अपने देश को लौट जाओ और बुर्जुवाओं के प्रति विद्रोह कर दो।' इसी प्रकार की बहुत सी बातें। तुम्हें तो यह सब मालूम ही है। उसके बाद गृह-युद्ध शुरू हुआ। मैं सपक्षियों के दल में शामिल हो गया। अब हमें

कथा का बहुत-सा भाग छोड़ देना होगा; अन्यथा यह कभी खत्म ही नहीं होगी। वह दुष्ट पश्चिमी मोर्चे के दो स्टावरोपोल रेजिमेन्ट ले आया है और प्रथम ओरेनबर्ग कजाक की। मैं कोई बच्चा तो हूँ नहीं। सब समझता हूँ। मैंने भी सेना में नौकरी करके ज़िन्दगी काटी है। यह भयंकर कार्यवाही है। इसका सम्बन्ध सीधे तौर पर हम लोगों से है। इन सबको लेकर वह हम पर टूट पड़ना चाहता है और हमें घेर लेना चाहता है।

'परन्तु मेरी एक पत्नी है, बच्चे हैं। यदि वह सिर पर सवार हो गया तो वे उससे कैसे पीछा छुड़ायेंगे? निश्चित रूप से वे निर्दोष हैं, इन तमाम जंजालों से उनका कोई लेना-देना नहीं। परन्तु वह किसी की सुनेगा थोड़े ही? वह मेरी पत्नी को पकड़ कर उसे बाँध देगा और मुझसे बदला लेने के लिए उनको नारकीय यंत्रणा देगा। उन्हें दारुण यातनाएँ देता हुआ उनके शरीर की प्रत्येक हड्डी तोड़ डालेगा। उन्हें चीर कर टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा!...और तुम पूछते हो कि मैं सोता क्यों नहीं? कोई आदमी चाहे इस्पात का ही क्यों न बना हो, फिर भी यह सब उसके दिमाग को असन्तुलित करने के लिए काफ़ी है!

—पालिख, तुम कितने विचित्र व्यक्ति हो। तुम्हें समझ पाना मेरे लिए मुश्किल है। कई वर्षों से तुम अपने परिवार से दूर रहे। तुम्हें पता भी नहीं था कि वे कहाँ हैं। उनके बारे में आज तक तुम्हें किसी तरह की चिन्ता नहीं हुई। अब जब कि उनसे तुम्हारी शीघ्र ही मुलाकात होने वाली है—ऐसे अवसर पर तुम बजाय खुश होने के मर्सिया गा रहे हो?

—अब तो बात ही दूसरी है। यह श्वेत दल हमें पराजित करता जा रहा है। फिर भी यह सिर्फ़ मेरी ही बात तो नहीं है। मेरी बात समाप्तप्राय: है। मैं शीघ्र ही मर जाऊँगा। पका हुआ आम हूँ, अब टपकूँ तब टपकूँ। परन्तु दूसरी दुनिया में जाते समय अपने छोटे-छोटे बच्चों को तो अपने साथ नहीं ले जा सकता। वे तो यहीं रहेंगे और यदि वे उसके क्रूर हाथों में पड़ गये, तो वह उनकी बोटी-बोटी काट डालेगा, उन्हें पीस कर उनका बूँद-बूँद खून निकाल लेगा। उनकी चमड़ी उधेड़ देगा।

—इसीलिए तुम्हें क्रीप्स की बीमारी है। [illegible]
के दृश्य दिखाई देते हैं।

—डॉक्टर, अभी तक मैंने तुम्हें सबसे महत्त्वपूर्ण बात तो बताई ही नहीं। अब बताता हूँ। मैं सच-सच कहूँगा। लेकिन इसका उपयोग मेरे विरुद्ध मत करना।

—मैंने अनेक आदमियों को मार डाला है। बहुत सारे अधिकारियों के खून से मेरे हाथ रंगे हुए हैं। अधिकारी, जनता...और भी पता नहीं कौन कौन! मुझे इसके लिए कभी पश्चात्ताप नहीं हुआ। मैंने पानी की तरह रक्त बहाया है। नाम और संख्या याद रखने का सवाल ही नहीं। परन्तु एक छोटे से प्राणी को चाह कर भी मैं नहीं भुला पाता। मैंने उस मासूम बच्चे की हत्या कर डाली। बस, उसी को नहीं भुला पा रहा हूँ। पता नहीं क्यों, मैंने उसे मार डाला। मुझे उसे देख कर हँसी आ गयी थी और मैंने मजाक-मजाक में उसे गोली मार दी।

फरवरी की क्रान्ति में, केरन्स्की के समय की बात है। उन दिनों सैनिक विद्रोह हुआ था। हम लोग एक रेल्वे स्टेशन के समीप थे। मोर्चे से हम हट आये थे। उन्होंने उत्तेजित करने वाले एक युवक को हमारे पास भेजा ताकि हम मोर्चे पर पुनः चले जायं। वह मुर्गी के बच्चे की तरह था। उसने नारा लगाया—विजय प्राप्ति तक लड़ो!

'यह नारा लगाते लगाते वह पानी के हौज पर खड़ा हो गया। यह हौज रेल्वे के प्लेटफार्म पर था। उस हौज पर चढ़कर...तुम समझ रहे हो न?...चिल्लाने लगा, ताकि लोगों में उत्तेजना आ जाय। इसी समय अचानक हौज का ढक्कन उलट गया और वह नीचे गिर पड़ा। सीधा पानी में—धप्! तुम कल्पना भी नहीं कर सकते कि उसे इस तरह गिरते देखकर कितनी हँसी आई हम लोगों को। मेरे हाथ में राइफल थी और हँसते-हँसते मेरे पेट में बल पड़ गये थे। हँसी रुक ही नहीं रही थी। जैसे वह मुझे गुदगुदा रहा हो। मैंने निशाना साधा, और गोली दाग दी। मैं

नहीं जानता कि यह घटना कैसे घट गयी? जैसे किसी ने जबर्दस्ती मुझसे यह सब करवा दिया हो।

'यही कारण है कि मुझे 'क्रिप्स' रोग है। सपनों में मुझे स्टेशन की वह रात दिखाई देती है। उस समय यह केवल मजाक था। अब मैं दुखी हूँ।

—क्या यह घटना मेल्युजेवो नगर के समीप विरुचि स्टेशन पर घटी थी?

—ठीक ठीक याद नहीं।

—क्या जेबुशिनो के उपद्रव में तुम शामिल थे?

—याद नहीं आ रहा।

—तब तुम किस मोर्चे पर थे? क्या पश्चिमी मोर्चा था? तुम पश्चिम में थे?

—ऐसे ही किसी स्थान पर था। हो सकता है पश्चिम में रहा हूँ। मुझे ठीक-ठीक याद नहीं आ रहा।

12

पलायन

बच्चों तथा सामानों के साथ सपक्षियों का परिवार मुख्य सपक्षी सेना के साथ काफी समय से था। उसके बाद गाड़ियों के पीछे मवेशियों का, विशेषकर हज़ारों की तादाद में गायों का झुण्ड आया।

स्त्रियों के कारण शिविर में एक नया ही रूप प्रकट हुआ। किसी सैनिक की पत्नी कुवरिखा जो मवेशियों का इलाज किया करती थी; और जिसे लोग जादूगरनी समझते थे, चर्चा का विषय थी। बड़ा कोट पहने, तिकोना हेट डाले वह डींग हाँका करती कि उसने यह सब किसी कैदी

की टोपी तथा कपड़ों से, (जो कि ब्रिटिश सामग्री के साथ कोलचक द्वारा भेजा गया था) उसने अपने ये कपड़े बनवाये हैं। किसी अज्ञात कारणों से कोलचक ने उसे केझया जेल में कैद रखा था, जहाँ से साम्यवादियों ने उसे छुड़ाया।

सपक्षी दल 'फाक्सेस थिकेट' से मैदान में चले आये थे। यहाँ उन्हें तब तक रुकना था, जब तक कि आस-पास के क्षेत्र की जाँच नहीं हो जाती; और शिविर के लिए उपयुक्त स्थान नहीं मिल जाता। स्थानान्तर के प्राथमिक दिनों में, जब कि तम्बू गाड़े गये थे, यूरी को काफी अवकाश था। इस अर्से में वह यहाँ की प्रत्येक दिशा में घूम आया; और उसे भरोसा हो गया कि इस सघन जंगल में कोई भी बड़ी आसानी से खो सकता है। अपने इस भ्रमण में उसे दो स्थान इतने पसन्द आये कि उनका [illegible] वह कभी भूल नहीं पायेगा। एक स्थान था त्यागा के छोर पर [illegible] के बाहर। पतझड़ के कारण जंगल निरावरण हो गया था। इसलिए जिस प्रकार खुले दरवाजे से सब कुछ दिखाई दे सकता है, उसी तरह वहाँ का सारा दृश्य स्पष्ट दिखाई देता। लगता कि जैसे वृक्षों और पक्षियों में घनिष्ठ सम्बन्ध है। जैसे रोवन पक्षी ने इन्हें बहुत दिनों के बाद देखा हो और पेड़ों ने कुछ भी करने से इनकार कर दिया हो। परन्तु अन्त में उन्हें उस पर दया आ गयी हो और धात्री की तरह, बटन खोल कर उन्होंने अपने इन शिशुओं के लिए छाती खोल दी हो और मुस्करा कर कह रही हो, अच्छी बात है, ठीक है। कोई बात नहीं—लो अपना पेट भर लो।

दूसरा स्थान और भी विचित्र था। यह स्थान एक ओर काफी ढालू था। घाटी के ऊपर से देखने पर लगता कि नीचे का भाग ऊपरी भाग से बिलकुल भिन्न है। जल-स्रोत, खाई या फिर जंगली मैदान, बेतरतीब उगा हुआ घास—मगर वास्तव में यह सब ऊपरी भाग की पुनरावृत्ति ही थी। मानो वृक्ष विनीत भाव से तुम्हारे चरणों तक झुक आये हों और निचली सतह में डूब गये हों। हो सकता है यहाँ कभी भू-क्षरण हुआ हो।

भयंकर दैत्य के समान यह जंगल बादलों की सतह के साथ भागता हुआ, ठोकर खाकर अपनी स्थिति से असंतुलित होकर किसी झुण्ड से टकरा जाता, फिर पता नहीं किस चमत्कार के बल पर वह अन्तिम क्षण में सुरक्षा की व्यवस्था कर लेता। तभी तो जमीन पर गिर कर भी वह कुशलतापूर्वक किलकारियाँ भर रहा था। घाटी का सिरा इसीलिए अद्भुत नहीं लग रहा था, बल्कि इसलिए कि इसके सारे किनारे ग्रेनाइट-पत्थर के टुकड़ों द्वारा आबद्ध कर लिये गये थे। यूरी को निश्चय हो गया कि यह मूलतः प्राकृतिक स्वरूप नहीं है बल्कि मनुष्य के कौशल के चिह्न यहाँ मौजूद हैं। सम्भवतः यह क़ोई पुराना मंदिर हो, जहाँ अज्ञात मूर्तिपूजकों द्वारा प्रार्थनाएँ तथा बलिदान किये जाते रहे हों।

यह वही स्थान था, जहाँ ठंडे और उद्विग्न प्रभात में षड्यन्त्र के ग्यारह सरदारों के साथ दो अर्दलियों को वोडका बनाने के अपराध में मृत्युदण्ड देने के लिए लाया गया। लिबेरियस के वफादार और विश्वस्त 20 अंगरक्षकों की टुकड़ी उन्हें अर्द्ध-वृत्ताकार में ढकेलती हुई ला रही थी। उनके हाथों में राइफलें थीं और उनके कदम चुस्त थे। भाग निकलने का कोई उपाय नहीं था। तहकीकात की लम्बी सज़ा पाकर, अपराधी घोषित होने के परिणामस्वरूप कैदियों के चेहरों पर से मानवीय सौजन्य समाप्त हो गया था। वे भूतों की तरह काले, क्रोधित और रुक्ष दिखाई देते। गिरफ्तार करते समय उन्हें निःशस्त्र कर दिया गया था। किसी को इस बात का खयाल ही नहीं आया कि मृत्यु-दण्ड देने से पहले उनकी एक बार और तलाशी ली जानी चाहिए। महत्त्वहीन, तिरस्कृत और मृत्यु के इतने करीब इन लोगों की फिर से तलाशी लेना व्यर्थ ही नहीं, बल्कि बड़ी नीचता भी सिद्ध होती है। लेकिन इस समय अकस्मात वडोविचेन्को के मित्र रझानित्स्की ने जो उसके साथ ही चला आ रहा और स्वयं पुराना अराजकतावादी था, उसने सिवोल्‍वू को लक्ष्य करते हुए रक्षक संतरियों पर तीन गोलियाँ मारी। वह पक्का निशानेबाज था। लेकिन उत्तेजना के कारण इस समय उसका हाथ काँप गया और वह

निशाना चूक गया। स्वाभाविक ही था रक्षक सन्तरी उस पर टूट पड़ें अथवा उसे मार डालें। रझानित्स्की के रिवाल्वर में तीन गोलियाँ अभी भी बाकी थीं। परन्तु, अपनी असफलता से विक्षुब्ध वह रक्षकों की उपस्थिति भूल गया; और उसने वह पिस्तोल पत्थर की चट्टान पर फेंक दी। चौथी गोली घोषित अपराधी पचकोल्या के पैर में लगी। वह घायल हो गया। दर्द से चीखते हुए, अपना पाँव पकड़ कर वह एक ओर गिर पड़ा। संका और कोस्का ने उसे बाँह पकड़ कर उठाया और उसे घसीटते हुए ले चले ताकि वह अपने साथियों द्वारा कुचल न दिया जाय। घायल पैर को नीचे रखने में असमर्थ पचकोल्या उछला और लँगड़ाता हुआ उस चट्टान की फलक की ओर बढ़ा जहाँ दण्डित व्यक्तियों को ले जाया जा रहा था। वह पागल की तरह चिल्ला रहा था। उसकी अमानवीय चीख ने उपस्थित दूसरे दण्डित व्यक्तियों का चेहरा भय से विकृत कर दिया। इसके बाद जो कुछ हुआ वह अकल्पनीय है। प्रलाप, गालियों, प्रार्थनाओं और अभिशापों का तूफान एक साथ उमड़ पड़ा।

टेरेन्टी इस समय भी अपनी स्कूली टोपी पहने हुए था। उसने टोपी उतार कर अपने घुटनों पर रख दी और झुक कर अन्य लोगों के पीछे भयंकर पत्थरों की ओर बढ़ा। वह बारम्बार सन्तरियों के चरण छूता। हिचकियों के मारे उसका कलेजा मुँह को आ रहा था। अर्धचेतनावस्था में, धीमे स्वर में टेरेन्टी कह रहा था—साथियों मुझे माफ कर दो। मुझे जाने दो। ऐसी गलती मैं फिर कभी नहीं करूँगा। मुझे मत मारो। मैंने अभी तक दुनिया देखी ही नहीं है। मुझे कुछ दिन और जीने दो। मैं एक बार अपनी माँ से मिलना चाहता हूँ। दया करके मुझे जाने दो। मुझे मेहरबानी करके माफ कर दो। मैं तुम्हारे लिए सब कुछ करने को तैयार हूँ। मैं तुम्हारे चरणों की मिट्टी चूमता हूँ। हाय बचाओ, बचाओ। मैं मरा।

कोई दूसरा मिनमिना रहा था—मेरे अच्छे दोस्तो, दयालु साथियों, दो युद्धों में एक ही उद्देश्य के लिए हम साथ ही लड़े हैं। हमें छोड़ दो दोस्तों।

इस दया का मूल्य हम ज़रूर चुका देंगे। हम जीवन भर तुम्हारा एहसान मानेंगे। बातों से ही नहीं अपने कामों से हम अपनी बातें साबित कर देंगे। क्या तुम सुनते नहीं? तुम जवाब क्यों नहीं देते? क्या तुममें प्रभु मसीह नहीं है?

कुछ लोग शिवोव्लू को लक्ष्य करके चिल्ला रहे थे—मसीहघातक-जूडास! यदि हम देशद्रोही हैं तो तुम हमसे भी बढ़कर द्रोही हो। तुम कुत्ते हो। तुम कुत्ते हो। जिस जार के लिए तुमने शपथ ली थी उस वैधानिक जार को तुमने मार डाला। तुमने हमारे प्रति वफादारी की कसम खाई थी और तुमने हमें भी दगा दिया। फोरेस्टर को भी तुम धोखा दे सकते हो। तुम ही लोग उसे धोखा दे सकते हो।

सारे जीवन की तरह मृत्यु के समय भी वडोविचेन्को अपने प्रति ईमानदार रहा। मृत्यु के समीप होते हुए भी लहराते हुए बालों वाला अपना सिर ऊँचा उठाये उसने एक सिद्धान्तवादी के दृढ़ स्वर में ज़ोर देकर कहा—इनके सामने अपने आप को मत गिराओ, मत झुकाओ। इनके सामने नम्रता का कोई अर्थ नहीं। ये नर्क-द्वार के रक्षक, तुम्हारी बात नहीं सुनेंगे। तुम्हारी पीड़ा नहीं समझेंगे। हिम्मत मत हारो। इतिहास एक दिन सत्य को अवश्य प्रमाणित करेगा। आने वाली पीढ़ियाँ इनके काले कारनामों के कीर्ति-स्तम्भ से परिचित रहेंगी। विश्व की क्रान्ति के सुप्रभात में हम शहीदाना मृत्यु प्राप्त कर रहे हैं। आत्मक्रान्ति की जय हो। अराजकतावाद ज़िन्दाबाद।

एक साथ बीस गोलियों की बौछार ने घोषित अपराधियों को समाप्त कर डाला। जो बच गये उन पर दुबारा गोलियों की बौछार की गयी। टेरेन्टी ने काफी खींचातानी की, लेकिन अन्त में वह भी ठंढा हो गया।

दो

आगामी शीतकाल के लिए पूर्व की ओर जाने का विचार छोड़ नहीं दिया गया था। सुरक्षा सेना को महापंथ से दूर वयाटस्का-केझया जल-

विभाजन पर भेज दिया गया था। यूरी को अकेला छोड़कर लिबेरियस अक्सर गायब रहता।

लेकिन सपक्षियों को कहीं भी जाने में काफी देर हो चुकी थी; और वास्तव में उन्हें कहीं जाना था भी नहीं। यह समय उनके लिए बहुत घातक था। अपने विनाश की अन्तिम घड़ी में श्वेत दल ने निश्चय किया कि इन अनियमित जंगली टुकड़ियों को किसी तरह पूरी तरह नष्ट कर दिया जाय और इनसे हमेशा के लिए पीछा छुड़ा लिया जाय। चारों ओर से घेरा डालकर दबाव डाला जा रहा था। यदि इस घेरे की परिधि छोटी होती तो इनके लिए बड़ी मुश्किल होती। लेकिन घेरे के फैले हुए आकार के कारण वे अब तक सुरक्षित थे। आगामी शिशिर के कारण त्यागा अधिक दुर्गम बन गया था और श्वेतों की पार्श्वसेना के पास समीपस्थ कृषकसेना पर आक्रमण करने के अलावा कोई चारा नहीं था।

वहाँ से हट जाना एक तरह से असंभव हो गया। यदि सुनिश्चित योजना होती तो इस घेरे से छुटकारा पाकर वे नयी स्थिति में आ सकते थे। लेकिन किसी निश्चित योजना को क्रियान्वित नहीं किया गया। लोग बन्धनमुक्त हो गये। छोटे कमाण्डर हिम्मत हार गये। इसके साथ ही उनका अपने नीचे के सहायकों पर जो अनुशासनात्मक प्रभाव था, वह समाप्त हो गया। बड़े कमाण्डर रात को सभा करते, मिलते और परस्पर विरोधी सुझाव प्रस्तुत करते। अन्त में तय किया गया कि त्यागा के मध्य में सम्प्रति किलेबन्दी कर ली जाय और यहाँ से आगे बढ़ने का विचार छोड़ दिया जाय। शीतकाल की गहरी बर्फ़ त्यागा को अगम्य बना देगी, लिहाजा श्वेत दल के लिए उसमें घुसना मुश्किल होगा। तात्कालिक काम था, अन्दर के भाग में घुस जाना और रसद एकत्रित कर लेना।

शिविर अधिकारी ने सूचित किया कि मैदा और आलू समाप्तप्राय: हैं। फिर भी उसे आशा थी कि मवेशियों की तादाद संतोषजनक है और शीतकाल में दूध और गोश्त पर्याप्त मात्रा में मिलता रहेगा। शीतकालीन कपड़ों की कमी थी। कुछ सपक्षीय सैनिक तो आधे कपड़े

पहने ही फिर रहे थे। निश्चय किया गया कि शिविर के तमाम कुत्ते मार डाले जायें और अनुभवी आदमियों को कुत्तों की खाल की जाकेट बनवाने बिठा दिया जाय ताकि उसे उलट कर शीत ऋतु में पहना जा सके।

घायलों को ले जाने के लिए साधनों की कमी थी। गाड़ियों का उपयोग अधिक महत्त्वपूर्ण कामों के लिए होता। पिछली बार जब उन्होंने डेरा कूच किया तो उन्हें तीस मील तक घायलों को स्ट्रेचर पर ले जाना पड़ा था। कुनाइन, ग्लोवर साल्ट और आयोडिन, बस इतनी ही दवाएँ थीं। आयोडिन भी वाष्प-जल के रूप में ही था। मरहमपट्टी अथवा आपरेशन के समय उसे अल्कोहाल में घोलना पड़ता था। वोडका बनाने के साधनों के नष्ट हो जाने का लोगों को अभी भी अफसोस था। दूसरों की अपेक्षा जिन्हें कम अपराधी पाया गया था और जिन्हें मृत्युदण्ड नहीं दिया गया था, उन वोडका बनाने वाले लोगों को अल्कोहल बनाने के साधनों को सुधारने अथवा नये सिरे से बनाने का आदेश दिया गया। इस समाचार का उत्सुकतापूर्वक बड़ा स्वागत किया गया। नशाखोरी फूट पड़ी और सार्वजनिक आचार-भ्रष्टता उद्दाम वेग से बढ़ने लगी। इस तरह से बनाया हुआ वोडका शत प्रतिशत शुद्ध होता, इसलिए वाष्प-जल में मिलाने के लिए बिलकुल ठीक था। कुनाइन से टिंचर बन सकता था। शीत ऋतु के प्रारम्भ होते ही फैलने वाले टायफुस की बीमारी के लिए यही उपयुक्त दवा थी।

तीन

पालेख और उसके परिवार को देखने के लिए यूरी एक बार उसके यहाँ गया था। उसकी पत्नी के साथ दो लड़कियाँ और एक लड़का था। इन्होंने पिछला ग्रीष्म, खुले आकाश के नीचे धूलभरी सड़क पर खाक छानते हुए बिताया। वे सब अपने पिछले कटु अनुभवों से भयभीत और आगत मुसीबतों की कल्पना से संत्रस्त थे। चारों के हल्के बाल सूर्य से तप कर सन की तरह धूमिल हो गये थे। चेहरे बदरंग हो गये थे। अपनी

प्रदर्शित करने के लिए बच्चों की उम्र तो बहुत छोटी थी। लेकिन मां का चेहरा अति परिश्रम और भय के कारण निर्जीव-सा दे रहा था। उसके होठ सिकुड़ कर सूख गये थे। उसके चेहरे की ना, यातना और संरक्षण के अभाव में गायब हो गयी थी। पालेख को बहुत प्यार करता था। तेज किये गये वसूले की धार से वह लिए तरह-तरह के खिलौने बनाया करता। यूरी उसके इस उत्साह कर्म-कौशल को देखकर चकित रह गया। परिवार के आ जाने से चेहरे पर प्रसन्नता भरी रौनक आ गयी। उसकी तबीयत सुधरने लेकिन इसी समय खबर मिली कि अनागरिक स्त्रियों तथा बच्चों यहां रहना शिविर के अनुशासन के विरुद्ध है; और उन्हें शिविर से दूर शीतकालीन गृहों में रहने के लिए कुशल पथरक्षकों के साथ रहा है। सम्प्रति योजना पर बड़ी-बड़ी बातें ही हो रही थीं। क्रियान्वित करने की किसी को फिक्र नहीं थी। लेकिन यूरी जानता ऐसा एक न एक दिन अवश्य होगा।

निराश हो गया और फिर क्रीप्स की बीमारी से पीड़ित हो गया।

चार

ऋतु अभी तक पूरी तरह जोश में आ नहीं पाई थी। शिविर दुःख, श्चितता, भ्रमपूर्ण धमकी भरी स्थितियों और असंगत घटनाओं के में गुज़र रहा था। श्वेतों की योजना के अनुसार उनका घेरा पूरा हो । अपनी रुक्षता और हठ के लिए प्रसिद्ध वेसलेगो और जनरल न केड्री के आतंक ने शिविर के शरणार्थियों को और गाँवों में घेरे के पीछे रहने वाली शान्त जनता को व्याकुल कर दिया था। ओं के पास अपने घेरे को मजबूत बनाने का कोई जरीया नहीं था, लिए सपक्षियों के लिए वैसे चिन्ता की कोई बात नहीं थी। परन्तु लिए क्रियाहीन रहना भी असंभव था। इस स्थिति को स्वीकार का अर्थ था शत्रुओं के नैतिक बल को बढ़ावा देना। वे इस फन्दे में ने ही सुरक्षित क्यों न हों, उन्हें आक्रमण करना ही था। भले ही यह

मात्र सैनिक प्रदर्शन ही क्यों न हो। एक शक्तिशाली सेना इस काम के लिए नियुक्त की गयी और घेरे के पश्चिमी भाग के विरुद्ध भेज दी गयी। कई दिनों तक लड़ाई हुई। अन्त में श्वेत दल को मुँह की खानी पड़ी। वे पीछे हट गये। उनको इस तरह हटा देने से त्यागा में आने का रास्ता खुल गया। नये शरणार्थियों की बाढ़ उस ओर उमड़ पड़ी। श्वेतों के क्रूर दण्ड की कार्यवाहियों से आतंकित आसपास के देहात के किसान अपने घरों से भाग कर अब कृषक-सेना में भर्ती होने की फिराक में सपक्षियों के पास चले आ रहे थे। उनका खयाल था कि ये ही उनके नैसर्गिक रक्षक हैं।

शिविर अपने ही आश्रितों से दुखित और परेशान था, इस पर ये अनिच्छुक नये आगत चले आये। इन सबको संभालना उनके लिए मुश्किल था। इन भगोड़ों से मिलने के लिए दूत भेजे गये। उन्हें चिलिम्का नदी के गाँव में एक ओर हटा दिया गया। गाँव का नाम था द्वोरी। यहाँ की मील के चारों ओर खेतों के आस-पास मकान थे। यहीं पर शीतकाल में शरणार्थियों को बसाने की व्यवस्था प्रस्तावित की गयी थी और उनके लिए आवश्यक सामग्री अलग रख कर समुचित व्यवस्था करने की चेष्टा हो रही थी। जब कि इस प्रकार की तैयारियाँ हो ही रही थीं, घटनाएँ अपने ही रास्ते के आगे बढ़ने लगीं और स्थिति शिविर के अधिकारी के संभाले नहीं संभल रही थी। शत्रु ने अपनी स्थिति के कारण बाहर निकलने का रास्ता बन्द कर दिया था और जो सैन्य-टुकड़ी उन्हें हटाने के लिए भेजी गयी थी, वह वापस लौटकर नहीं आ सकी। सपक्षियों की मुसीबत महिला-शरणार्थियों के कारण और भी अधिक बढ़ गयी। घने जंगल के कारण उन्हें खोज निकालना मुश्किल था। जब दूत उनका नेतृत्व करने जाते तो वे जंगलों पर धावा बोल देती। पेड़ों को काट गिराती, सड़क और पुल बनाती। विलक्षणता के साथ वे अपने साधनों का स्वयं विकास कर रही थीं।

उनकी ये तमाम हरकतें सपक्षियों की धारणाओं और योजनाओं से नितान्त विपरीत थी।

लिबेरियस ने देखा कि उनकी तमाम योजनाएँ अस्त-व्यस्त हो गयी हैं।

पाँच

महापंथ इसी जगह पर त्यागा के छोर को पार करता था। यहाँ खड़े लिबेरियस ने सिविरिड से जब ये तमाम बातें सुनीं, तो वह आपे से बाहर हो गया। महापंथ के किनारे खड़े उसके कुछ कर्मचारी इस बात पर बहस कर रहे थे कि किनारे-किनारे जाने वाली तार की लाइन काट दी जाय अथवा नहीं? अंतिम निर्णय का अधिकार लिबेरियस को ही था। परन्तु सिविरिड के साथ बातचीत में मग्न लिबेरियस हाथ के इशारे से उन्हें रुकने का संकेत कर रहा था।

वडोविचेन्को के मारे जाने से सिविरिड बहुत दुखी था। उसका अपराध सिर्फ़ इतना ही था कि उसका प्रभाव लिबेरियस के विरुद्ध था और उससे शिविर में कलह उत्पन्न हो सकता था। कभी-कभी सिविरिड सोचा करता कि क्यों न वह पक्षावलम्बियों का साथ छोड़ कर अपने एकान्त निजी स्वतंत्र जीवन की ओर वापस लौट जाय। लेकिन उसका यह सोचना बेकार था। अब उसके पास पसन्दगी अथवा नापसन्दगी का कोई सवाल ही नहीं था। यदि कभी उसने इन वन्य बन्धुओं को छोड़ने की कोशिश की, तो उसे भी वही सब भुगतना पड़ेगा जो वडोविचेन्को को भुगतना पड़ा था।

मौसम खराब था। तेज हवा के कारण बादल छितर गये थे। जमीन के ऊपर उड़ता हुआ काजल बिछ गया था। प्रमत्त झोंकों की तरह उस क्षेत्र को ढकती हुई श्वेत बर्फ़ गिरने लगी। धरती श्वेत परिधान से छिप-सी गयी। दूसरे ही क्षण यह झीना आवरण विलीन हो गया और पिघल कर अंगारों की तरह चमकने लगा। जमीन समीपस्थ तिरछी बौछारों के कारण जलमग्न हो गयी। काले आसमान के नीचे जमीन कोयले के समान दिखाई दे रही थी। कभी-कभी जब बादल अपनी खिड़कियों को खोल कर शीशे की चमक के साथ आकाश में हवा का संचार कर देते तो

जमीन पर बिना सोखा हुआ जल उसका उत्तर देता और उसकी खुली खिड़कियों में भी वैसी ही प्रभा चमक उठती।

हवा के सहारे वर्षा उड़ रही थी और देवदार के जंगलों में धुआँ छा गया था। तार-लाइनें माला के सूत्र की तरह दिखाई देती। पानी की बूँदें तारों पर स्थिर भाव से चिपकी हुई पड़ी थीं, मानो वे कभी गिरेंगी ही नहीं। भागने वाली औरतों से मिलने के लिए जो लोग भेजे गये थे, उनमें सिविरिड भी एक था। वह लिबेरियस को, उसने वहाँ जो कुछ देखा था, बताना चाहता था। जो आदेश दिये थे उससे बड़ी भ्रान्ति फैली हुई थी, और सचमुच वे प्रस्तुत परिस्थितियों में लागू किये भी नहीं जा सकते थे। हताश और विश्वासहीन, कमजोर से कमजोर स्त्रियों ने जो कठिन कर्म सम्पादित किया था, वह उन सबकी कथा उसे सुनाना चाहता था। पैदल घिसटते हुए, बोरियों से गठरियों तथा बच्चों के भार से बोझिल श्रांत-क्लांत सद्य माताएँ, जिनके स्तनों का दूध सूख गया था, आगामी यात्रा के भय से त्रस्त हो उठी थीं। उन्होंने अपनी गोद के बच्चों को छोड़ दिया। थैलों में से अनाज बाहर निकाला और पीछे की ओर लौट पड़ीं। शत्रुओं के जाल में फँसना, उन्हें जंगली जानवरों के ग्रास बन जाने से अधिक बेहतर लगा।

शक्तिशाली स्त्रियों ने इसके विपरीत जो साहस और आत्मसंयम दिखाया उसकी कल्पना पुरुष भी नहीं कर सकेंगे।

सिविरिड और भी बहुत सारी बातें कहना चाहता था। जो खतरा अभी अभी समाप्त हो चुका है, उससे भी कहीं अधिक भयंकर खतरे की सूचना वह उसे देना चाहता था। लेकिन लिबेरियस द्वारा प्रदर्शित अरुचि के कारण उसका स्वर मंद हो गया। लिबेरियस के अधैर्य का कारण यही नहीं था कि महापंथ से उसके साथी उसे पुकार रहे थे, बल्कि पिछले पन्द्रह दिनों से इसी तरह की चेतावनियों को सुनते-सुनते वह उसे पूरी तरह हृदयंगम कर चुका था।

—मुझे सोचने का थोड़ा समय दो, साथी। सही शब्दों को ढूँढ़ना मेरे लिए बहुत आसान नहीं है। वे मेरे होठों तक आकर रुक जाते हैं और मेरा दम घुटने लगता है। मैं सिर्फ़ इतना ही कहता हूँ कि स्त्रियों के शिविर में जाकर उन्हें इस व्यर्थ प्रपंच से रोको। ज़रा बताओ तो, यह सब क्या है? हम सब कोलचक के विरुद्ध अभियान कर रहे हैं, अथवा स्त्रियों के वर्ग-युद्ध को भड़का रहे हैं? खैर, तुम जाओ। मैंने जो कहा है, वही करो। इस विषय में ज्यादा चर्वित-चर्वण करने की ज़रूरत नहीं। मेरी वहाँ ज़रूरत है। लोग मुझे बुला रहे हैं।

—इन सबके मूल में है वह डाइन कुवरिखा। खुदा जाने वह क्या है? वह कहती है कि मवेशियों की निगरानी के लिए मुझे रख लो।

—पशु चिकित्सा से तुम्हारा मतलब है?

—हाँ। लेकिन वह मवेशियों की देखभाल भी नहीं करती। वह चुड़ेल युवा शरणार्थी स्त्रियों को काम से विरत कर रही है। वह कहती है—तुम्हारी तकलीफों का कारण तुम खुद हो। दोष तुम्हारा खुद का है? अपने स्कर्ट का पल्ला थामे, लाल-झंडे की ओर दौड़ने का इसके सिवाय और क्या नतीजा हो सकता है?

—किन शरणार्थियों के बारे में तुम कह रहे हो? हमारे शिविर के या बाहर के।

—वास्तव में बाहर के। नये लोग, अजनबी...

—लेकिन उन्हें तो द्वोरी जाने का आदेश दिया गया था। वे यहाँ कैसे चले आये?

—द्वोरी! वह जला दिया गया है। वहाँ कुछ भी नहीं बचा है, सिवाय खाक के। जब ये लोग वहाँ पहुँचे, तो वहाँ कोई जीवित प्राणी उन्हें नहीं मिला। वहाँ था सिर्फ़ ध्वंसावशेष। आधे से अधिक लोग तो पागल हो गये थे। वे चीखते, चिल्लाते, बड़बड़ाते, सीधे श्वेतों के पास चले गये। आधे इस ओर मुड़ पड़े।

—लेकिन इस भयंकर दलदल से उन्होंने त्यागा पार किया कैसे?

—आरे और कुल्हाड़ी के जरीये। हमारे यहाँ से जो नौजवान पहरेदारी करने गये थे, वे उनकी मदद करने लगे। सुना है, उन्होंने बीस मील लम्बी सड़क बना ली है। औरतों की बातें! उन्होंने ऐसे काम किये हैं, जो हम महीनों में नहीं कर पाते!

—बड़ी अच्छी बात है। बीस मील लम्बी सड़क! और तुम उस पर खुश हो रहे हो? गधे कहीं के। यही तो श्वेत चाहते हैं। त्यागा के लिए महापंथ—अब बस, अस्त्र-शस्त्र लेकर आगे बढ़ना ही उनके लिए बाकी रहा है।

—उन्हें दूसरी ओर मोड़ने वाली सेना भेजनी चाहिए। यह चाल चल जायेगी।

—धन्यवाद! मुझे क्या करना चाहिए, यह मैं स्वयं सोच लूँगा।

छः

सर्दी के दिन छोटे होते जा रहे थे। पाँच बजे तक अन्धेरा छा जाता। जिस जगह कुछ दिन पहले लिबेरियस सिविरिड से बातचीत कर रहा था, उस रास्ते को पार करते हुए यूरी अपने शिविर की ओर लौट रहा था। शिविर की सीमा के रोवन वृक्ष और वहाँ के टीले के पास, उसने अपने प्रतिद्वन्द्वी कुवरिखा की चेतावनी भरी आवाज़ सुनी। पशुओं का इलाज करने के कारण वह मजाक में उसे अपनी प्रतिद्वन्द्वी कहा करता था। कर्कश और फटे हुए स्वर में वह कुछ गुनगुना रही थी। आसपास खड़े स्त्री-पुरुष हँस रहे थे। उसे लगा कि उसके काम में इससे बाधा पड़ रही है। थोड़ी देर बात शान्ति हो गयी। शायद भीड़ छँट गयी थी। अपने आप को अकेली मान कर, वह जैसे स्वयं के लिए गा रही हो, गुनगुनाने लगी। रोवन वृक्ष के सामने दलदल से घिरी हुई पगडंडियों के सहारे यूरी सावधानी के साथ चला आ रहा था। वह बीच रास्ते में रुक गया। कुवरिखा कोई पुराना लोकगीत गा रही थी। पुराने लोकगीत हवा में

तैरते हुए शब्दों का बाँध है। लगता है कि वे स्थिर अविचलित खड़े हैं। परन्तु थोड़ी देर बाद मालूम होता कि इसकी गति गहराई की ओर मुड़ गयी है और उसकी स्थिरता भ्रम मात्र थी। पुनरुक्ति तथा उपमा के जरीये अपने विषय को क्रमिक रूप से प्रकट करते हुए ये लोकगीत किसी रहस्यमय उद्देश्य तक पहुँच जाते हैं। समय की गति रोकने का पागलपन भरा प्रयत्न, दर्द और आत्मसंयम के बीच अपनी अभिव्यक्ति पा जाता है। कुवरिखा गा रही थी—

—जब खरगोश विस्तृत संसार में भागता है,
विस्तृत संसार में, श्वेत बर्फ़ के ऊपर,
रोवन वृक्ष के पार, लटकते कानों वाला खरगोश दौड़ पड़ा—
रोवन वृक्ष के पार और उससे करता शिकायत
मैं लम्बे कानों वाला डरपोक खरगोश
रास्ते के जंगली जानवरों से भयभीत
जंगली जानवरों के रास्ते, जंगली भेड़िये का भूखा पेट
मुझ पर दया करो रोवन
अपना सौंदर्य समेट लो उस धूर्त शत्रु से
धूर्त शत्रु, धूर्त कौवा!
अपने लाल जामुन को बिखर जाने दो हवा में,
उसे हाथ भर के ले जाने दो!
विस्तृत संसार में श्वेत बर्फ़ के ऊपर—
और मुझे जाने दो अपने नगर में,
सड़क के छोर पर अन्तिम मकान,
अन्तिम मकान की अन्तिम खिड़की,
जहाँ वह सात्विक निर्जनता में छिपी बैठी है।

मेरी इच्छित प्रेमिका
मेरे अवरुद्ध प्रेम को वाणी दो मेरी दुल्हन
एक मर्म बोल, एक उत्कट अभिव्यक्तिपूर्ण शब्द!
कारावास से व्यथित मैं एक सिपाही,
मैं बेचारा सिपाही, कारावास के दुख से व्यथित,
मैं अपने निर्मल प्रिय के पास जाऊँगा!

सात

गाय को झुण्ड में से अलग करके, उसके सींगों में बँधी हुई रस्सी पेड़ के सहारे बाँध दी गई। उसकी मालकिन पालेख की पत्नी अगाथा उसका इलाज करवाने आई थी और इस समय पेड़ के ठूँठ पर आगे पैर फैलाये बैठी थी।

गायों का शेष झुण्ड वन-मार्ग में पहाड़ों के बराबर ऊँचे त्रिकोणाकार देवदार वृक्ष समूह के अन्धेरे में चारों ओर से घिरा हुआ था। गायें काली अथवा सफेद थीं। साइबेरिया में प्रसिद्ध स्विट्जरलैंड जाति की ये गायें, अपने मालिकों की ही तरह थकी हुई थीं। सुख और आराम का अभाव, अनन्त यात्रा और अगाध भीड़भड़क्का। जगह की कमी के कारण वे पागल सी एक दूसरे पर चढ़ जातीं। सांडों की तरह चिंघाड़ते हुए, वायु में पूँछ उठाये अपने बछड़ों के साथ वे जंगल की ओर भाग गयीं। झाड़ियों और टहनियों को कुचलते हुए इस भागते हुए झुण्ड के पीछे उनके रखवारे, बूढ़े और बच्चे चिल्लाते हुए दौड़ पड़े। शिशिर के आकाश में भी घने वृक्षों के सिरों के वृत्त से घिरे हुए काले और श्वेत बादल इधर-उधर मँडराते, इकट्ठे होते और गायों की तरह ही तितर-बितर हो जाते।

जिज्ञासु दर्शकों के झुण्ड से उस जादूगरनी को परेशानी होने लगी। उन सबकी ओर उसने अपनी दुष्टताभरी निगाहों से देखा। लेकिन एक सच्चे

कलाकार की तरह इस भीड़ से विचलित हो जाना, उसे अपमानजनक लगा। इसलिए उसने निश्चय किया कि वह उन सबकी परवाह नहीं करेगी। यूरी ने उसे भीड़ के पीछे से देखा, लेकिन उसकी नज़र यूरी पर नहीं पड़ सकी। सामान्य फौजी टोपी और सिकुड़े हुए कालर का बड़ा कोट पहने, उस वृद्ध स्त्री की आँखों में उत्तेजना और क्रोध के भाव, युवा स्त्री की तरह दिखायी दे रहे थे। स्पष्टतया उसे परवाह नहीं थी कि वह क्या पहने हुए है और उसे क्या पहनना चाहिए।

पालेख की पत्नी के चेहरे के परिवर्तन को देखकर यूरी आश्चर्यचकित रह गया। उसकी आँखें मानो बाहर निकली पड़ रही थीं; और उसकी गर्दन इतनी पतली और लम्बी दिखाई देती, जैसे गाड़ी का धूरा। पिछले कुछ ही दिनों में वह इतनी बूढ़ी दिखाई देने लगी थी कि यूरी एकाएक उसे पहचान तक नहीं सका। यह था उस पर गुप्त भय का भयंकर प्रभाव।

वह कह रही थी—यह दूध नहीं देती। मेरा खयाल था कि यह गाभिन होगी। उस हालत में तो इसे अब तक दूध देना शुरू कर देना चाहिए। लेकिन दूध का कहीं पता ही नहीं है।

—वह गाभिन कैसे होगी? फोड़े की पपड़ी तुम्हें इसके थनों में दिखाई नहीं देती। मैं तुम्हें जड़ी-बूटी का एक तेल दूँगी। उसे यहाँ मलना। हाँ, मंतर भी पढ़ दूँगी।

—मेरी दूसरी समस्या है, मेरा पति।

—मैं उसको भी तुम्हारे लिए मोहित कर दूँगी। फिर वह कहीं नहीं भटकेगा। वह तुमसे ही चिपका रहेगा। अच्छा, तुम्हारी तीसरी समस्या क्या है?

—मेरी समस्या यह नहीं है कि वह कहीं और भटकता फिरता है। ऐसी कोई बात नहीं। बल्कि दुर्भाग्य यह है कि वह मुझसे अथवा बच्चों से इतनी बुरी तरह चिपट जाता है कि, बस! और इसी से उसका दिल टूटने लगता है। मुझे मालूम है, वह क्या सोचता है। उसका खयाल है कि

शिविर को बाँट दिया जायेगा और हमें कहीं और भेज दिया जायेगा। फिर हम दुश्मनों के हाथों पड़ जायेंगे। उसकी अनुपस्थिति में हमारी रक्षा करने वाला कोई नहीं होगा। हमें नारकीय यंत्रणा दी जायेगी। मैं यह सब जानती हूँ। मुझे डर लगता है कि कहीं वह आत्महत्या न कर डाले।

—अच्छी बात है। मैं इस पर विचार करके तुम्हारी तकलीफ दूर करने की चेष्टा करूँगी। तुम्हारी तीसरी मुसीबत क्या है?

—तीसरी कोई मुसीबत नहीं। बस मेरी गाय और मेरा पति...

—तब तो तुम मुसीबतों के मामले में भी बहुत गरीब हो। प्रिय, ईश्वर तुम्हारे प्रति कितना दयालु है। इस तरह का सौभाग्य घास के ढेर में सूई ढूंढ़ने के बराबर है। तुम्हारे पास सिर्फ़ दो ही दुःख हैं, एक गाय और दूसरा प्रिय पति। खैर, चलो काम शुरू करें। तुम मुझे गाय का इलाज करने के बदले में क्या दोगी?

—क्या दूँ?

—रोटी और तुम्हारा पति।

दर्शक हँस पड़े। वह बोली—क्या तुम मजाक कर रही हो?

—महँगा सौदा है क्या? अच्छी बात है रोटी की बात जाने दो। मैं अपना काम तुम्हारे पति से ही चला लूँगी।

हँसी और तेज हो गयी। उसने पूछा—नाम क्या है? तुम्हारे पति का नहीं, गाय का।

—सुन्दरी!

—गायों का आधा झुण्ड यही कहलाता है। ठीक है। भगवान पर भरोसा रखो। उसकी दुआ के साथ हम अपना काम शुरू करें।

उसने गाय का नाम दुहराया। पहले तो उसकी बातें गाय से कुछ मतलब रखती थीं। लेकिन बाद में वह बहक गयी और अगाथा को जादू की

अनेक नसीहतें देने बैठ गयी। यूरी मंत्रमुग्ध-सा चुपचाप खड़ा सुन रहा था। मानो वह पहली बार यूरोपीय रूस से साइबेरिया पहुँचा हो। उसे याद आया, ठीक इसी तरह उसने बच्चूस के मुँह से अनर्गल मधुर प्रलाप सुना था। 'आन्टी मार्गेस्टा! बुधवार को आकर हमारी मेहमान बनो। बीमारी दूर कर दो, जादू हटा दो, चर्मरोग का नाश कर दो। बछिया के थन छोड़ो। चुपचाप रहो। शान्त खड़ी रहो। बहने दो दूध की धारा। आपकी कृपा से रक्तरोग निकल जायेगा। चर्म रोग दूर हो जायेगा। इन तमाम विनाशक बीमारियों को बिच्छू के पौधों में डाल दो। पैगम्बर की तरह जादूगर की वाचा में बल है। देखो अगाथा, मेरी प्यारी, तुम्हें सब कुछ जान लेना चाहिए। बचाव के लिए मंतर और सुरक्षा के लिए मंतर। सामने देखो और कहो, वहाँ वन है। परन्तु वहाँ क्या है, अधम शक्तियाँ दिव्य आत्माओं से लड़ रही हैं। तुम्हारे लोगों की तरह वे भी युद्ध कर रही हैं। सामने देखो, उस ओर नहीं, अपनी आँखों के सामने, पीछे की ओर नहीं, मेरी अँगुली की सीध में। हाँ, उस ओर। तुम सोच रही हो की ये दो टहनियां हैं, जिन्हें हवा आपस में मिला रही है। लेकिन वास्तव में यह राक्षस की माया है। जल-प्रेत अपनी लड़की का माथा गूँथ रहा था। लोगों को आते देख कर वह डर गयी है। इसीलिए उसका माथा आधा सँवारा हुआ ही रह गया। लेकिन एक न एक दिन वह-अपना काम खत्म कर ही देगा। देख लेना...अथवा तुम फिर अपना लाल झण्डा उठा लो। क्या यह झण्डा है? और तो कुछ नहीं? यह मृत स्त्री का पीला रूमाल है। इसे हिला कर वह लोगों को लुभाती है। चंचलता के साथ चलती हुई, आँख का इशारा करके नौजवानों को मृत्यु प्राप्त करने के लिए निमंत्रित करती है। प्रलोभन देती है। अकाल और प्लेग भेजती है। यही है वह, जिस पर तुमने विश्वास किया था। तुम सोच रही थी कि यह झण्डा है और तुम्हें अपने पास दरिद्रता दूर करने के लिए बुला रहा है। मेरी प्यारी लड़की, आज तुम्हें हर चीज़ से सावधान रहना चाहिए, प्रत्येक वस्तु की जानकारी रखनी चाहिए। उदाहरण के लिए वह पक्षी एक मैना है, वह जानवर एक भालू।

'अब दूसरी बात। संभव है तुम किसी की कल्पना कर रही हो। मुझे बता दो। उसे तुम्हारे लिए मैं व्याकुल कर दूँगी। चाहे वह तुम्हारा फोरेस्टर हो अथवा कोलचक या प्रिन्स इवान—कोई भी क्यों न हो। तुम शायद सोच रही हो कि मैं शेखी बघार रही हूँ। नहीं, मैं सारी बात बताती हूँ। मैं मूठ मार सकती हूँ। छूरे से बर्फ़ में खून निकाल सकती हूँ। मैं ऐसा जादू कर सकती हूँ कि कोलचक अथवा स्ट्रेलिनिकोव या कोई नव-नियुक्त जार तुम्हारे कदमों के पीछे चलता रहे। तुम इसे झूठ समझती हो?'

'जिस प्रकार संसार में हमें कभी-कभी गहरे और शक्तिशाली विचार दिखाई देते हैं, वे दरअसल दया से मिश्रित नहीं होते। जितना ही हम प्रेम करते हैं, उतने ही हम उसके भाजन बनते जाते हैं। समय आने पर मनुष्य की अपनी स्त्री के प्रति दया की सीमा समाप्त हो जाती है और उसकी कल्पना उसे संभावित संसार से दूर ले जाती है और ऐसी स्थिति में ला पटकती है, जो जीवन से बिलकुल असम्बद्ध है। तब वह पाती है, अपने आप को नये वातावरण के आधीन, और गुज़री हुई सदियों के प्रकृति प्रदत्त नियमों से घिरी हुई।'

यूरी अनुभव कर रहा था, कुवरिखा के अंतिम शब्द प्राचीन इतिहास के अंश थे। जो प्रतिलिपि करने वालों के दोष से अथवा जादूगरों एवं भाटों द्वारा की गयी पुनरुक्ति के कारण इतने बदल गये थे कि उसका असली मौलिक अर्थ समाप्त हो गया था। फिर भी वह इन बेतरतीब भावों के मर्म से व्याकुल हो उठा और वास्तविक घटनाओं की शक्ति से विह्वल हो उठा।

जैसे लारा के अधखुले बायें कन्धे पर, मानो गुप्त ताले को चाबी द्वारा खोल दिया गया हो, तलवार घुसी और उसके कन्धे निरावरण हो गये।

और उसके मन की तमाम बातें अबाध गति से प्रगट होकर बहने लगीं। विचित्र शहरों, अनेक सड़कों, देहातों और मकानों की स्मृतियाँ फिल्म की तरह सामने दौड़ने लगीं। जैसे लिपटा हुआ तागा खुल गया हो, जैसे

रिबन का बण्डल ढालू जमीन पर लुढ़का [illegible]
प्रेम करता था और सचमुच वह कितनी प्रिय थी। [illegible]
सी चीज़ है, जो उसे इतना सुन्दर बना देती है? वह ऐसा [illegible]
है, जिसका नाम ढूँढ़ा जा सके, गुणों की सूची में से जिसे छांटा [illegible]।
नहीं, यह संभव नहीं, वह अद्वितीय थी। अद्वितीय सरल। जैसे विश्व-रचयिता ने अपने अंश स्पर्श द्वारा उस पर तेजस्वी रेखा खींच दी हो। और परिणामस्वरूप यह दैवी आकृति प्रकट हो गयी हो। अपनी आत्मा के प्रकाश से सराबोर, एक बच्चे की तरह, जो नहा कर तौलिये में अच्छी तरह लिपटा हुआ हो।

और अब? वह साइबेरिया के जंगल में घिरे हुए सपक्षियों के साथ है। उनके भाग्य के साथ ही उसकी किस्मत जुटी हुई है। कितनी बदनसीब स्थिति है। यूरी की आँखों में गहरी धुन्ध छा गयी। सामने की प्रत्येक वस्तु उसे धुन्ध-भरी दिखाई देने लगी। सम्भवतः उस समय वहाँ बर्फ़ के बजाय मन्द-मन्द वर्षा होने लगी थी। उसे लगा कि जैसे एक भीमाकार झण्डा हवा में लहरा हो। जिसका आकार सड़क के एक कोने से दूसरे कोने तक, वन मार्ग के एक कोने से दूसरे कोने तक, एक अद्भुत देवता के शीश के प्रतिबिम्ब की तरह लटक रहा हो।

वह रोया। वर्षा ने उसे चूम लिया। उसे भिगो दिया।

—अब जाओ। मैंने तुम्हारी गाय को जादू के बल पर रक्षित कर दिया है। वह जल्द ही अच्छी हो जाएगी। आदिजननी से प्रार्थना करना, जो कि प्रकाश का उद्गम है; और जो नाद-ब्रह्म की टीका है।

आठ

त्यागा के पश्चिमी किनारों पर लड़ाई हो रही थी। त्यागा का आकार इतना विशालकाय था कि यह लड़ाई सीमावर्ती प्रदेश के झगड़े की तरह लगती। उसके मध्यभाग में शिविर छिपा हुआ था। यहाँ लोगों की इतनी भीड़ थी कि भले कितने ही आदमी रणस्थल पर क्यों न चले जायें, वहाँ

लोगों की कमी नहीं होने पाती। इस भीषण जंगल में युद्ध-निनाद बड़ी मुश्किल से शिविर तक सुनाई दे पाता। फिर अकस्मात जंगल में गोलियों की सनसनाहट गूँज उठी। लोग विस्मय से दिग्विमूढ़ अपने तम्बुओं अथवा डिब्बों की गाड़ियों की ओर भागे। पलक झपकते ही विप्लव का सा दृश्य दिखाई देने लगा। अपना अपना सामान उठाये प्रत्येक व्यक्ति भागने की चेष्टा करने लगा।

डरने की कोई बात नहीं थी। सपक्षियों का दल उस ओर चला आया, जहाँ से गोलियों की आवाज़ सुनाई दी थी।

एक घायल आदमी जमीन पर चित पड़ा था। उसकी एक भुजा और एक पाँव काट दिया गया था। यह कल्पना भी नहीं की जा सकती कि अवशिष्ट पाँव और कटे हुए हाथ को लिये वह शिविर तक आया कैसे? उसकी पीठ पर एक तख्ती लटक रही थी, जिसमें बहुत सारी गालियों के बाद यह धमकी दी गयी थी, कि यह लाल-दल के लिए सबक है। यह भी लिखा हुआ था, कि एक निश्चित तिथि तक यदि हथियार नहीं डाल दिये गये, तो यही नतीजा प्रत्येक सपक्षी को भुगतना पड़ेगा।

रक्तस्नात, दम तोड़ते हुए घायल व्यक्ति ने अपने दुर्बल स्वर में कराहते हुए बताया कि उसे मृत्यु-दण्ड माफ कर दिया गया था। फाँसी लटकाने के बजाय उसके हाथ-पाँव काट दिये गये थे, ताकि शिविर में पहुँचने पर सपक्षी आतंक से घबरा जायें। उन्होंने उसे शिविर के बाहर तक पहुँचाया था और फिर शिविर की ओर रेंगने की आज्ञा दी थी। पीछे से हवा में गोलियाँ चलाई जा रही थीं और वह आगे बढ़ रहा था।

वह बोल नहीं पा रहा था। उसके शब्द गले में अटक जाते। उसकी बात समझने के लिए उपस्थित लोग उसके मुँह के पास तक झुक आये। उसका दम उखड़ने लगा, फिर भी वह बोला—देखो साथियो, उनके सैन्यदल शक्तिहीन हो गये हैं। जीत हमारी ही होगी। वहाँ एक खाई है, वे हमें डरा देना चाहते हैं। मैं जानता हूँ कि मैं बच नहीं सकूँगा। लो मैं गया।

—'थोड़ा आराम करो। शान्त रहो।' 'तुम देख नहीं रहे हो कि उसे बोलने देना कितना कष्टदायक है। कसाई कहीं के।'

घायल ने अपने वक्तव्य का सिलसिला जोड़ते हुए आगे कहा—उसने कहा मैं तुम्हें खून से नहला दूँगा, यदि तुमने यह नहीं बताया कि तुम कौन हो? और मैं उसे कैसे बताता कि मैं सिर्फ़ एक भगोड़ा हूँ, इसके अलावा कुछ नहीं। मैं उनके पास से तुम लोगों के पास आ रहा था।

—तुम सिर्फ़, वह—वह—ही कह रहे हो, तुमने उसका नाम नहीं बताया? वह कौन था?

—मुझे दम लेने दो। बताता हूँ। वह है हेटमेन वेकिसिन, कर्नल स्ट्रेस विटसिन का आदमी, तुम्हें नहीं मालूम कि वह किस तरह का आदमी है। सारा शहर त्राहि-त्राहि कर रहा है। वे खौलते हुए पानी में आदमी को उबालते हैं। वह बोटी-बोटी काट डालता है। गर्दन पकड़ कर पता नहीं तुम्हें किस नर्क में धकेल दिया जाय, तुम जान ही नहीं सकते। रेल के एक डिब्बे में अधनंगे, अन्दरूनी कपड़े पहने चालीस आदमी कैद हैं। वे दरवाजा खोल कर फिर किसी को उसमें डाल देते हैं। ठीक वैसे ही जैसे मुर्गी के बच्चे को हलाल करने के लिए पकड़ा जाता है। किसी को फाँसी के फन्दे में लटका देते हैं। किसी को लोहे के छड़ से पीटते हैं। मारते-मारते वे धज्जियाँ उड़ा देते हैं। घावों पर नमक छिड़क देते हैं। खौलता हुआ पानी डाल देते हैं। कै करने पर उसे खाने के लिए बाध्य करते हैं। बच्चों और स्त्रियों को भी...हे भगवान।

उस हतभागे का अन्तिम क्षण आ चुका था। उसके मुँह से चीख निकली और बिना अपनी कहानी पूरी तरह समाप्त किये, वह मर गया। उपस्थित लोग मृत्यु के लक्षण समझ गये। उन्होंने अपनी टोपी उतारी और मृत-आत्मा के प्रति सम्मान दिखाने के लिए कन्धों और छाती पर क्रास अंकित कर लिया।

उसी दिन, उसी सन्ध्या को शिविर में एक और भयंकर घटना घटी।

पालेख मृत व्यक्ति के पास खड़ी भीड़ में खड़ा था। उसने उसे देखा था, उसकी बात सुनी थी। उसकी पीठ पर लटक रही तख्ती पढ़ी थी। अपने परिवार के लिए उसका सनातन भय एक दूसरी ही चरम सीमा पर पहुँच गया। अपनी कल्पना में उसे स्पष्ट दिखाई दिया कि अत्याचार की धीमी आँच पर उसके पारिवारिक सदस्य जलाये जा रहे हैं। उनका चेहरा वेदना से विदीर्ण हो रहा है। वे मदद के लिए चिल्ला रहे हैं। वह अधिक बर्दाश्त नहीं कर सका।

उनकी भावी यातना को बर्दास्त न कर सकने के कारण उसने अपनी स्त्री तथा तीनों बच्चों की हत्या कर डाली। जिस तेज चाकू से वह अपने बच्चों के लिए खिलौने बनाया करता था, उसी से उसने उनका अन्त कर डाला।

आश्चर्य की बात तो यह थी कि इसके बाद भी उसने आत्महत्या नहीं की। यूरी की समझ में नहीं आ रहा था कि पता नहीं अब वह क्या सोच रहा होगा? अब उसे किसी तरह की उम्मीद नहीं रही होगी, कोई इरादा नहीं रहा होगा। कोई योजना शेष नहीं रही होगी। स्पष्टत: उसने अपने जीवन का अन्त कर डाला था। वह पागल हो गया।

सैनिक समिति के सदस्यों के साथ लिबेरियस और यूरी बैठे, इस काण्ड के बारे में विचारविमर्श कर रहे थे। उस समय वह स्वच्छन्द भाव से शिविर के आसपास घूम रहा था। उसका सिर छाती पर लटका हुआ था। शून्य में ताकती हुई उसकी गन्दी पीली आँखें चमक रही थीं। अस्पष्ट मूढ़ता, क्रूरता अविजित यातना की मुस्कान उसके चेहरे पर थी।

उसके प्रति किसी की सहानुभूति नहीं थी। सभी उससे दूर रहते। कुछ लोगों का कहना था कि उसे मार डालना चाहिए। लेकिन उनकी इस बात को अधिक समर्थन प्राप्त नहीं हो सका। उसके लिए अब संसार में कुछ भी शेष नहीं था। भोर में वह शिविर से गायब हो गया।

तुषारपात के साथ शिशिर पूरे जोश में था। बर्फ़ीली [illegible]
निकलता, थोड़ी देर शान्त खड़ा रहता, इसके बाद गायब हो जाता। [illegible]
सूर्य से पृथिवी अभ्यस्त थी, यह वैसा सूर्य नहीं था। एक लाल गोला-सा
वन में लटक आया। शहर की अम्बर-पीली रश्मि रेखाएँ शहद की तरह
वृक्षों के सिरों पर फैल गयीं और वायुमण्डल के मध्य में ही जम गयीं।

रास्ते चलते यूरी को लिबेरियस मिल गया। उसने उसे रोक कर शाम को
अपने शिविर में आने के लिए निमंत्रित किया। बहुत सारे समाचार भी
वह उसे बताना चाहता था।

यूरी ने उत्सुकतापूर्वक पूछा—वेरिकिनो की कोई खबर है?

—नहीं, तुम्हारे अथवा मेरे परिवार वालों के बारे में कोई समाचार
नहीं। फिर भी, यह संतोष की बात है कि वे समय से पहले ही वहाँ से
चले गये थे। खैर, रात के समय हम इस विषय पर बातचीत करेंगे। मैं
तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा। सन्ध्या के समय ज़रूर आना।

—मुझे सिर्फ़ इतना ही बता दीजिये कि हमारे परिवार के क्या
हालचाल हैं?

—तुम सिर्फ़ अपनी नाक तक ही देख सकते हो, इससे दूर नहीं? जहाँ
तक मुझे मालूम है, वे कुशल से हैं। परन्तु बात यह है कि जो खबर बहुत
ही बढ़िया है वह मैं तुम्हें सुनाना चाहता हूँ। थोड़ा माँस खाओगे?

—कृपया विषय मत बदलिये।

—तुम नहीं खाओगे? ठीक है। खैर, मुझे थोड़ा खाना है। रोटी और
सब्जी की ही हमें अधिक आवश्यकता है। यहाँ रक्तरोग फैल रहा है।
पिछले पतझड़ में हमें फली और बेरी जमा कर लेनी चाहिए थी। उस
समय चुनने के लिए स्त्रियाँ भी काफी थीं। खैर, मैं कह रहा था—
हमारी स्थिति बहुत अच्छी है। मैंने जो भविष्यवाणी की थी, वह सत्य
सिद्ध हो रही है। संकट के दिन गुज़र चुके हैं। कोलचक की सेनाएँ पीछे

हट रही हैं। मैं क्या कहता था? देख लो। याद है तुम्हें, तुम उस समय कितना शोक मनाया करते थे?
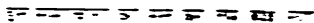
—मैं कब शोक मनाता था?

—'हर वक़्त। खास कर जब हम विटसिन द्वारा पीछे हटाये जा रहे थे तब।' यूरी को याद आई विद्रोहियों के मारे जाने की बात, पालेख द्वारा स्त्री तथा अपने बच्चों की हत्या, अर्थहीन ख़ूंखार अस्त-व्यस्तता। श्वेत दल और क्रान्तिकारी अत्याचार करने में एक दूसरे से प्रतिस्पर्द्धा कर रहे थे। अत्याचार, अत्याचार को जन्म देता, बढ़ाता। यूरी की नाक में लहू की गन्ध-सी भर गयी। उसका गला रुँधने लगा। वमन-सा होने लगा। सिर चकराने के कारण आँखें भारी होने लगीं। वह सिर्फ़ शोक-प्रदर्शन ही नहीं था, वह कुछ और ही था। लेकिन यह सब इस लिबेरियस को कैसे समझाया जाय?

लेबिरियस के तम्बू में लकड़ी की मशालें जल रही थीं। लकड़ी जलने से कोयले की गन्ध आ रही थी और नीचे पड़े बर्तन में राख गिर रही थी। लिबेरियस ने कहा—देखो, मुझे क्या जलाना पड़ता है! तेल है नहीं। और ये लकड़ियाँ सूखी होने के कारण जल कर जल्द ही खत्म हो जाती हैं। थोड़ा माँस नहीं लोगे? अच्छा रक्त-रोग के बारे में...तुम किसकी प्रतीक्षा कर रहे हो? क्या इस के लिए कर्मचारियों की सभा बुलाई जानी चाहिए, इस पर लम्बे चौड़े व्याख्यान होने चाहिए?

—ईश्वर के लिए मुझे इस तरह मत सताइये। मुझे सिर्फ़ इतना बता दीजिये कि आप मेरे परिवार के बारे में क्या जानते हैं?

—मुझे जो कुछ मालूम हुआ है वह अन्तिम सरकारी विज्ञप्ति द्वारा—कि गृह-युद्ध समाप्त हो गया है। कोलचक की सेनाएँ नष्ट कर दी गयी हैं। क्रान्तिकारी सेना का मुख्य भाग, उनका पीछा कर रहा है। उसे पूर्व में समुद्र की ओर ढकेला जा रहा है। दूसरी ओर बाकी बचे हुए श्वेत दल के लोगों की सफ़ाई करने में हम सम्मिलित हो रहे हैं। रूस का सारा दक्षिणी

भाग शत्रुओं से खाली हो गया है [illegible]
हो रहे हो? खुश होने के लिए क्या [illegible]

—मैं खुश हूँ। लेकिन आपने यह नहीं बताया कि हमारा [illegible] कहाँ है?

—वेरिकिनो में तो नहीं है; और यह अच्छी बात है। तुम्हें याद है एक बार तुमने पिछली ग्रीष्म ऋतु में वेरिकिनो पर हुए आक्रमण के बारे में कहा था। मैं सोचता था; यह सिर्फ़ बकवास है। लेकिन अब मालूम हुआ कि सारा गाँव बर्बाद हो गया है। इसलिए लगता है कि कोई न कोई बात हुई अवश्य थी। इसीलिए कहता हूँ कि अच्छा ही हुआ कि वे वहाँ से निकल कर चले गये।

और युर्यातिन का क्या हुआ?

—यह और भी अविश्वसनीय कथा है। कुछ भी हो, यह सच नहीं हो सकती।

—क्या?

—लोग कहते हैं कि अब भी वहाँ श्वेत दल के लोग हैं। लेकिन यह संभव नहीं, तुम स्वयं देख लेना।

उसने मशाल में दूसरी लकड़ी डाली। एक फटा-पुराना नक्शा निकाला। हाथ में पेंसिल लिये वह उस ज़िले की ओर संकेत कर रहा था। उसने कहा—यह वही भाग है, जहाँ से श्वेतों को खदेड़ दिया गया है। यहाँ से, यहाँ से, और यहाँ से, इस सारे क्षेत्र से? समझ रहे हो?

—हाँ।

—इसीलिए मैं कहता हूँ कि वे युर्यातिन के पास कहीं हो नहीं सकते। संचार साधनों के कट जाने के कारण उनके लिए बच कर निकल भागना मुश्किल है। उनके कमाण्डर भी इतने बेवकूफ नहीं हो सकते...एक बच्चा भी समझ सकता है...अरे, तुमने कोट पहन लिया? कहाँ जा रहे हो?

—यहाँ धुएँ से मेरा दम घुट रहा है। मैं बाहर की थोड़ी हवा खाकर अभी लौट आता हूँ।

बाहर आकर उसने लकड़ी पर जमी हुई बर्फ़ साफ़ की। तम्बू के प्रवेश के समीप ही वह घुटनों के बल, हथेली में मुँह छिपाये बैठ गया!

त्यागा, शिविर और सपक्षियों के साथ बिताये गये अठारह महीने, उसके दिमाग से बिलकुल विलुप्त हो गये। इन सबके बारे में वह जैसे बिलकुल भूल गया हो। अपने प्रियजनों की स्मृति की भीड़ उसके दिमाग में भर गयी। एक-एक प्रियजन व्यक्ति की प्रेतछाया-सी उसके सामने से गुज़रने लगी। प्रत्येक छाया एक दूसरे से अधिक भयानक थी।...बर्फ़ीली हवा में साशा को गोद में लिये टोन्या जा रही है। वह पूरी ताकत के साथ आगे बढ़ना चाहती है। लेकिन बर्फ़ीली तूफान ने उसे पीछे ढकेल दिया है। वह ठोकर खा कर गिर पड़ी। उठने की शक्ति उसमें नहीं है। तेज हवा थपेड़े मार रही है और बर्फ़ उसे ढक रही है। ओह, वह भूल ही गया, उसकी गोद में तो दो बच्चे हैं। साशा तथा एक बच्चा और। उसके दोनों हाथ खाली नहीं थे और उसकी मदद करने वाला कोई नहीं था। बच्चों का पिता गायब है। कोई नहीं जानता, वह कहाँ चला गया ? वह बहुत दूर है। हमेशा वह दूर ही रहता है। सारे जीवन वह उनसे अलग रहा है। पता नहीं वह किस किस्म का पिता है ? क्या कोई पिता अपने बच्चों से इतने दिनों तक इतनी दूर रह सकता है ? उसके अपने पिता का भी तो यही हाल था। पता नहीं अलेक्जेण्डर अलेक्जेण्ड्रोविच इस समय कहाँ होंगे ? नूशा तथा दूसरे लोग कहाँ है ? अच्छा है कि उन सब लोगों के बारे में न सोचा जाय, उनके बारे में कोई प्रश्न न किया जाय।

वह उठा और मुड़ कर वापस लौटने लगा। लेकिन उसका विचार बदल गया। बहुत दिनों पहले उसने एक जोड़ा स्काइज, बिस्कुट का डिब्बा और आवश्यक सामान अलग रख छोड़ा था ताकि अवसर मिलने पर पलायन किया जा सके। शिविर के बायीं ओर एक देवदार के पेड़ के नीचे उसने अपना यह सामान गाड़ रखा था। पेड़ में चाकू से उसने एक निशान

भी लगा दिया था ताकि ज़रूरत पड़ने पर [illegible]
बर्फ़ की दरारों के बीच गड़े हुए अपने गुप्तकोष को [illegible]

पूर्णिमा की चाँदनी रात थी। उसे मालूम था कि किस-किस [illegible] लगा हुआ है। सावधानी के साथ उनसे बचता हुआ, खुले मैदान के टीले और रोवन वृक्ष के समीप जब वह आया, एक सन्तरी ने दूर से देख कर उसे टोका—रुक जाओ। वर्ना गोली मार दूँगा। कौन है? 'संकेत' दो?

—भले आदमी तुम्हें हो क्या गया है? तुम मुझे नहीं पहचानते? मैं शिविर का डाक्टर हूँ—डाक्टर ज़िवागो।

—माफ़ करना डाक्टर। मैं पहचान नहीं पाया। कोई अपराध हो या न हो मैं तुम्हें आगे नहीं जाने दूँगा। तुम चाहे ज़िवागो होवो या और कुछ। हुक्म आखिर हुक्म है।

—जैसी तुम्हारी मर्जी। संकेत शब्द है—लाल साइबेरिया; और जवाब है—मध्यस्थ मुर्दाबाद।

—यह ठीक है। जा सकते हो। इतनी रात गये कहाँ जा रहे हो? क्या इरादा है?

—प्यास लगी थी और सो नहीं पा रहा था। सोचा कि बाहर जाकर टहल आऊँ, हवा और बर्फ़ दोनों खूब मिलेगी। मुझे यह रोवन वृक्ष दिखाई दे रहा था जिसमें बर्फ़ से आच्छादित बेरियां लटक रही थीं।

—अति भद्रपुरुषों की अति बुद्धिमानी! शीत-ऋतु में बेरियाँ तोड़ना! तीन साल हो गये हमें, कि हम लोगों की अक्ल सुधार दें। लेकिन वही ढाक के तीन पात। अच्छी बात है जाइये और तोड़िये बेरियाँ। आपका पागलपन आपको मुबारक हो। मुझे क्या पड़ी है?

जिस तरह दबे पाँव वह आया था, उसी तेजी के साथ वह अपनी स्काइज पर खड़ा हुआ और पतली वायु की तरह नंगी शीतकालीन झाड़ियों को पार करके अस्पृश्य बर्फ़ के मैदान को, सीटी बजाते हुए पार कर गया।

पगडंडी के सहारे वह रोवन वृक्ष के नीचे चला आया। वृक्ष अपनी दो टहनियाँ फैलाये उसका स्वागत कर रहा था। उसे लारा की सुदीर्घ श्वेत सुडौल भुजाएँ याद आ गयीं। उसने प्रत्युत्तर में टहनियों को अपने पास खींच लिया। वृक्ष से बर्फ़ की फुहरियाँ टपकने लगीं।

—मैं तुम्हें खोज निकालूँगा, मेरे प्रिय, मेरे सौन्दर्य और मेरे रोवन वृक्ष—मेरे अपने रक्त और माँस, मैं तुमसे आकर ज़रूर मिलूँगा।

पूरे चाँद की स्वच्छ रात थी। निशानांकि वृक्ष के पास जाकर उसने अपना सामान निकाला और शिविर छोड़ कर चल दिया।

13

ध्वंसावशेष

युर्यातिन के ऊपरी भाग के मकानों तथा गिरजाघरों से पहाड़ की तराई में टेढ़ी-मेढ़ी मर्चेंट स्ट्रीट के ध्वंसावशेष स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। इसके एक कोने में काला और भूरा कार्याटिड का मकान है। इस मकान के बाहरी भाग के निचले हिस्से में विशाल वर्गाकार पत्थरों पर नये सरकारी आदेश तथा घोषणाएँ चिपकाई हुई हैं। इनके सामने खड़े कुछ लोग चुपचाप इन्हें पढ़ रहे थे।

बर्फ़ गल चुकी थी। मौसम शुष्क था। पाला गिर रहा था। अब अन्धकार नहीं था। शीत ऋतु समाप्त हो गयी थी और ग्रीष्म ऋतु का आगमन हो रहा था। सायंकाल में देर तक रहने वाला यह प्रकाश आनन्द और भय की भावनाओं से मिश्रित था।

श्वेत दल के लोग शहर को छोड़ कर जा चुके थे। कत्लेआम, बमबाजी और युद्धजनित आतंक समाप्त हो चुका था। बीच की यह स्थिति भी

वैसी ही दुखदायी लग रही थी जिस तरह शि[illegible] वसन्त ऋतु के लम्बे दिनों का आगमन।

दीवार पर चिपकाई हुई एक घोषणा में लिखा हुआ था—योग्य व्यक्तियों को 50 रूबल फीस देने पर खाद्य कार्यालय, युर्यातिन सोवियत, नम्बर 5, अक्टूबर स्ट्रीट से श्रम पुस्तिका मिल सकती है। जिस किसी के पास श्रम-पुस्तिका नहीं होगी अथवा जो इस सम्बन्ध में गलत जानकारी देंगे, झूठा वक्तव्य देंगे उन्हें युद्धकालीन नियमों के अनुसार कठोरतम दण्ड दिया जायेगा। श्रम पुस्तिका के बारे में पूरा विवरण अधिकृत गजट में प्रकाशित किया गया है जो कि खाद्य कार्यालय के 137 नम्बर के कमरे पर चिपकाया हुआ है।

एक दूसरी घोषणा में बताया गया था कि नगर की खाद्य स्थिति संतोषजनक है। इसमें अन्न वितरकों की धाँधली और अनुशासनहीनता फैलाने वाले बुर्जुवाओं का जिक्र करते हुए उनके संग्रह करने की मनोवृत्ति की निन्दा की गयी थी। अन्त में लिखा गया था कि इस तरह का अनुचित संग्रह करने वालों को गोली से उड़ा दिया जायेगा।

तीसरी घोषणा में बताया गया था कि शोषित वर्ग के अतिरिक्त लोग उपभोक्ता कम्यून के सदस्य हो सकते हैं। इस बारे में पूरा विवरण खाद्य कार्यालय, युर्यातिन सोवियत, नम्बर 5, अक्टूबर स्ट्रीट के कमरा नम्बर 137 से प्राप्त किया जा सकता है।

सैनिकों को चेतावनी दी गयी थी कि जिस व्यक्ति ने अभी तक अपने शस्त्रास्त्र समर्पित नहीं किये हैं तथा जो बिना परमिट के अपने पास हथियार रखे हुए है, उसके प्रति कठोर कार्यवाही की जायेगी। अनुमति-पत्र युर्यातिन क्रान्तिकारी सैनिक समिति, 6, अक्टूबर स्ट्रीट, कमरा नम्बर 63 स्थित कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते हैं।

दो

मकान के सामने की भीड़ में एक क्षीणकाय व्यक्ति भी शामिल हो गया। धूल और गन्दगी से भरा यह व्यक्ति अपने कन्धे पर एक डंडे के साथ

भोजन का थैला लटकाये हुए था। उसकी ललाई वाली दाढ़ी भूरी हो रही थी। यह था डॉक्टर ज़िवागो। इनका महीन रोंओं वाला कोट या तो भोजन के बदले किसी को दे दिया गया होगा, या सड़क पर उससे किसी ने छीन लिया होगा। फटी हुई छोटी आस्तीन वाली जैकट यह साबित कर रही थी कि इसी तरह के विनिमय की कोई बात निश्चित रूप से हुई होगी। झोले में रोटी का एक टुकड़ा था, शायद समीपस्थ नगर के किसी गाँव में यह उसे दान के रूप में प्राप्त हुआ था। एक घण्टे पहले वह युर्यातिन की सीमा पर पहुँच गया था, लेकिन हारे थके और कमजोर पैरों के साथ यहाँ तक आने में उसे एक घण्टा लग गया। यात्रा के कारण वह बहुत थक गया था। उसे लगता कि वह अपने घुटनों के बल अब गिरा, तब गिरा। बड़ी सावधानी के साथ उसने रास्ता पार किया। गली के प्रत्येक ईंट-पत्थर के प्रति उसके हृदय में प्रेम उमड़ रहा था; क्योंकि उसे कोई आशा नहीं थी कि वह किसी दिन, किसी प्रकार यहाँ तक पहुँच सकेगा। इस नगर को देख कर उसे उतनी ही प्रसन्नता हुई, जितनी कि किसी मित्र को देखने से होती है।

साइबेरिया से यहाँ आने तक की अधिकांश यात्रा उसने रेल्वे-पथ के सहारे चलते-चलते की थी। सारा क्षेत्र उदासीन, उपेक्षित और बर्फ़ से ढँका पड़ा था। श्वेत दल के लोगों द्वारा छोड़ी हुई ट्रेनें बेकार पड़ी थीं। इसका कारण था ईंधन की कमी, बर्फ़ की अधिकता और कोलचक की पराजय। मीलों तक बर्फ़ में गड़े हुए ट्रेनों के बेकार डिब्बे दिखाई देते थे। इनमें से कुछ डिब्बे राजनीतिक भगोड़ों और डकैतों के अड्डे बन गये थे। लेकिन अधिकांश रास्ता सर्दी और टायफुस से मरने वाले लोगों की कब्र बन गया था। आसपास के गाँव भी इस बीमारी और उसके परिणाम से आतंकित थे। इन दिनों यह कहावत सत्य सिद्ध हो रही थी कि एक आदमी दूसरे आदमी के लिए भेड़िया है! एक यात्री सामने आते हुए दूसरे यात्री को देख कर एक ओर हट जाता। एक अपरिचित व्यक्ति दूसरे अपरिचित व्यक्ति को इसलिए मार डालता कि उसे भय था कि

कहीं यह मुझे न मार डाले। इधर-उधर मनुष्य-भक्षण की घटनाएँ भी हो जातीं। मानवीय सभ्यता के नियम विलुप्त हो गये थे। आदम-कालीन जंगली नियम अमल में लाये जा रहे थे। उन्हें सपने भी वे ही दिखाई देते जो प्रागैतिहासिक काल में गुफाओं में रहने वाले लोग देखा करते थे।

यूरी के सामने से एक छाया छिपती हुई और तेजी से भागती हुई, उससे आगे निकलने का प्रयत्न कर रही थी। यदि संभव होता तो वह स्वयं उससे बचने की कोशिश करता। वह छाया उसे परिचित दिखाई दी। सम्भवतः उसने उसे सपक्षीय शिविर में देखा हो। बात सही थी। बर्फ़ से ढकी हुई ट्रेन के 'अन्तरराष्ट्रीय शयन कक्ष' के डिब्बे से निकल कर वह लड़का उसी में वापस लौट गया। ओह, यह वन्य-भातृत्व संघ का ही एक सदस्य था। यह था टेरेन्टी गल्यूजिन। उसे षड्यंत्र के आरोप में गोली मार दी गयी थी। वह सिर्फ़ घायल होकर बेहोश हो गया था। इसके बाद वध-स्थल से रेंगते-रेंगते वह बाहर निकल आया और घने जंगल में छिप गया। घावों के ठीक हो जाने पर कल्पित नाम धारण कर वह अपने घर हॉली-क्रास की ओर जा रहा था।

यूरी की यात्रा की घटनाएँ इतनी विचित्र ओर अस्पष्ट थीं कि लगता जैसे यह इस मृतलोक की नहीं, बल्कि किसी दूसरे उपग्रह के जीवन की झाँकी हो—जो कि इस भूतल पर उतर आयी हों। मानवीय इतिहास के प्रति अपने सच्चे स्वरूप में शेष थी सिर्फ़ प्रकृति। उसका दृश्य ही वास्तविक था।

सुन्दर लिखावट के समान, काले और सुन्दर भोजपत्र शान्त, पीले, भूरे और काले रंग से मिश्रित सन्ध्या, बर्फ़ की बहती हुई नदी के बीच बिल्ली के छोटे से चुपचाप बैठे बच्चे की तरह दिखाई दे रही थी।

कार्याटीड के मकान के सामने चिपकाये हुए घोषणा-पत्रों को पढ़ने की कोशिश करने वाले यूरी की आँखें बारम्बार गली पार के मकान की तीसरी मंजिल की खिड़की पर जा टिकतीं। यह उसी कमरे की खिड़की

थी जहाँ पुराने किरायेदार का फर्नीचर रखा हुआ था। यहाँ किसी समय सफ़ेदी पुती हुई थी, लेकिन अब खिड़कियों के काँच साफ़ कर दिये गये थे। यूरी की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या पुराने किरायेदार वापस लौट आये हैं ? लारा चली गयी क्या ? अथवा फ्लेट में नये किरायेदार आ गये हैं ?

यह अनिश्चित स्थिति असह्य थी। सड़क पार करके वह सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। जब वह शिविर में था, तब वह इसके घुमाव तथा इसकी नक्काशी को कई बार याद कर चुका था। यहाँ से वह कमरा भी दिखाई देता था जहाँ पुरानी बाल्टियाँ तथा टीन के डिब्बे रखे हुए थे। यहाँ आने पर तमाम चीज़ों को पुरानी हालत में देख कर यूरी को कुछ तसल्ली हुई। मन ही मन उसने सीढ़ियों को उसकी वफादारी के लिए धन्यवाद दिया। किसी समय दरवाजे पर घंटी लगी हुई थी। लेकिन अब वह टूट गयी थी। दरवाजा खटखटाने से पहले उसकी नज़र दरवाजे के ताले पर पड़ी। ताले और दरवाजे की हालत सामान्य ह्रास की प्रस्तुत निशानी थी। ज़िवागो को विश्वास हो गया कि यदि लारा और कात्या जीवित हैं और यदि वे युर्यातिन में ही हैं, तो भी वे यहाँ नहीं हैं। वह इससे भी भयंकर दुखद घटना का सामना करने के लिए तैयार हो कर ही यहाँ आया था। फिर भी मन को ढाढस देने के लिए उसने पास के सुराख में रखी हुई चाबी ढूँढ़ने के लिए हाथ बढ़ाया। इसी जगह एक बार कात्या चूहों के उपद्रव से डर गयी थी। वहाँ कोई जानवर न हो, इससे आश्वस्त होने के लिए उसने दीवार पर एक ठोकर मारी। उसे विश्वास नहीं था कि उस दरार में उसे कोई चीज़ मिलेगी। दरार पर एक ईंट रखी हुई थी। उसने उसे हटाकर अन्दर हाथ डाला। चाबी के साथ एक पत्र लिखा हुआ था। सीढ़ियों के पास जाकर वह उसे पढ़ने लगा। यह देख कर उसके आश्चर्य की सीमा नहीं रही, कि पत्र उसी के नाम लिखा हुआ था। उसने पढ़ा—

'स्वामी ! मैंने सुना है कि आप जीवित हैं और सकुशल वापस लौट आये हैं। किसी ने आपको नगर के निकट ही देखा था और उसने मुझे इत्तला

दी है। मेरा खयाल है कि आप वेरिकिनो जायेंगे, इसीलिए मैं वहाँ जा रही हूँ। फिर भी यह चाबी और पत्र पुराने स्थान पर इसलिए रख रही हूँ कि शायद आप यहाँ आयें। वापस लौट मत जाइयेगा। मेरा इन्तज़ार करें। फ्लेट खाली है। मैं सामने के कमरे में हूँ। थोड़ा बहुत खाने का सामान, उबले हुए आलू रख कर जा रही हूँ। बर्तन पर ढक्कन अवश्य रखें, ताकि चूहे वहाँ तक न पहुँच सकें। मैं खुशी के मारे पागल हो रही हूँ।'

यूरी ने यह ध्यान नहीं दिया कि पत्र की पीठ पर भी कुछ लिखा हुआ था। उसने पत्र को चूमा और चाबी के साथ अपनी जेब में रख लिया। उसे कुछ तिक्तता, कुछ दुख महसूस हो रहा था। लारा गयी है वेरिकिनो; और वहाँ की स्थिति का कोई स्पष्टीकरण नहीं है। इसका मतलब यह हुआ कि उसका परिवार वहाँ नहीं है। चिन्ता ही नहीं, वह व्यथित भी हो उठा। उदास होकर वह बैठ गया। उसे लारा के प्रति गुस्सा आ रहा था कि उसने उसके परिवार के बारे में कुछ भी नहीं लिखा कि वे वहाँ हैं, कैसे हैं? जैसे उनका अस्तित्व ही न हो!

अन्धकार फैलता जा रहा था और प्रकाश के रहते-रहते उसे बहुत सारा काम कर डालना था। सबसे महत्त्वपूर्ण काम था सामने की दीवालों पर चिपकाये हुए आदेश-पत्रों, घोषणाओं को पढ़ना। इन दिनों नये नियमों की जानकारी आवश्यक थी। वर्ना जान से हाथ धोना पड़ता।

बिना फ्लेट में गये और बिना अपना झोला उतारे वह भित्ती-पत्रों से घिरी हुई दीवार के पास जाकर घोषणा-पत्र और आदेश पढ़ने लगा।

तीन

अखबारों में छपे हुए लेख, दिये गये भाषणों का विवरण तथा राजाज्ञाओं की विज्ञप्तियों के शीर्षकों पर वह एक नज़र डाल गया। धनवान वर्गों के सदस्यों के कर, मूल्यांकन तथा अधियाचन, मजदूरों के नियंत्रण की स्थापना, कारखानों की तथा कार्य-समिति की स्थापना, नये अधिकारियों द्वारा प्रचलित नियमों के बदले ये नियम लागू किये गये थे। यह उनका आग्रह था कि श्वेत दल के लोगों के समय में यदि जनता यह

भूल गयी हो कि वे किसी भी प्रकार का समझौता करने वाले लोग नहीं हैं—इन आदेश पत्रों से वे अपनी इस नीति को फिर से आग्रहपूर्वक याद दिला देना चाहते थे। पुनरुक्ति की इस सीमाहीन नीरसता से यूरी का सिर दर्द करने लगा। यह किस समय का कार्य-चक्र है? क्या यह प्रथम विद्रोह के समय के आदेश-पत्र हैं? अथवा श्वेतों के पश्चात् आने वाली शासन सत्ता के लोगों के? ये क्या पिछले साल लिखे गये थे? उसके जीवन में सिर्फ़ एक ही बार इस प्रकार का असमझौतावादी भाव तथा एकनिष्ठा से उत्साह उत्पन्न हुआ था? उस क्षण के लिए क्या उसे सारी ज़िन्दगी, इन अपरिवर्तनीय, निर्जीव, तीखे, अर्थहीन और पूरी न होने वाली माँगों को पढ़ते हुए बिताना होगा? क्या एक क्षणिक उत्तेजित उदारता के परिणाम स्वरूप उसे हमेशा के लिए ग़ुलाम बन कर रहना होगा?

एक प्रतिवेदन को पढ़कर उसकी आँखें चमक उठीं। लिखा था—अकाल के समाचार यह प्रमाणित करते हैं, कि स्थानीय संस्थाएँ निष्क्रिय हो गयी हैं। भारी भ्रष्टाचार है तथा विशाल पैमाने पर सट्टा किया जा रहा है। हमारी फेक्टरियाँ तथा कार्य-समितियाँ इस समय क्या कर रही हैं? सिवाय इसके कि युर्यातिन और राजविले के वाणिज्य हिस्से में आम तलाशी ली जा रही है। कठोर आतंकवादी कार्यवाही और मुनाफाखोर सट्टेबाजों को गोली से उड़ा देने से ही क्या हम अकाल से बच सकते हैं?

यूरी सोच रहा था—अन्धा होना भी कितना अच्छा है। जिस समय रोटी इस धरती से कभी की गायब हो चुकी है, उसके बारे में बातें करना! जब कि किसानों और गाँवों का अस्तित्व ही नहीं है, उनके बारे में सोचना! क्या उनमें ज़रा भी स्मरण-शक्ति नहीं है? क्या उन्हें अपनी ही पुरानी योजनाएँ तथा कार्यवाहियाँ याद नहीं हैं? क्या वे भूल गये हैं कि उनके ही कारण एक पत्थर पर दूसरा पत्थर टिका हुआ नहीं रहा। ये आदमी किस किस्म के हैं, जो अस्तित्वहीन चीज़ों के बारे में समय-असमय गरमागरम बातें करते रहते हैं? और अपने आसपास की चीज़ों की वास्तविकता के बारे में आँखें मूँदे रहते हैं?

उसे चक्कर आ रहा था। थोड़ी देर बाद वह बेहोश होकर गिर पड़ा। आसपास के लोगों ने मदद करते हुए उसे उठाकर पूछा—आप कहाँ जाना चाहते हैं?

होश में आने पर धन्यवाद देते हुए यूरी ने कहा—मैं सामने ही रहता हूँ। मुझे सिर्फ़ यह सड़क पार करनी है।

चार

ऊपर जाकर उसने लारा के फ्लेट का दरवाजा खोल दिया। जमीन पर अभी भी प्रकाश था। पहले की तुलना में अब अधिक अन्धकार नहीं था। इस बात से उसे खुशी हो रही थी कि सूर्य के इस प्रकाश ने उसे थोड़ा अवकाश दे दिया था।

ताले में चाबी के डालने की आवाज़ के साथ ही अन्दर भयंकर हलचल मच गयी। टिन के डिब्बों के गिरने की आवाज़ें सुनाई दीं। इधर-उधर से चूहे गिर पड़े और छितरा गये। इस सारे दृश्य से परेशान और अपने आप को असहाय समझते हुए यूरी ने निश्चय किया कि वह रात किसी दूसरे ऐसे कमरे में गुज़ारेगा, जहाँ दरवाजा अच्छी तरह से बन्द किया जा सके और चूहे के बिलों को मूँदा जा सके। वह फ्लेट के उस कोने की ओर चल पड़ा जिसके बारे में वह कुछ भी नहीं जानता था; और जहाँ कि लारा रहती थी। यहाँ की दोनों खिड़कियाँ सड़क की ओर थीं। खिड़की के ठीक सामने कार्याटिड का वह मकान दिखाई दे रहा था जहाँ विभिन्न प्रकार के घोषणा-पत्र और राजाज्ञाएँ चिपकाई हुई थीं। उसकी ओर पीठ किये लोग उन्हें पढ़ रहे थे। बाहर की तरह इस कमरे में भी पर्याप्त उजाला था। प्रारम्भिक वसन्त की इस सन्ध्याकालीन रोशनी में लगता कि यह कमरा भी बाहर का ही एक भाग है। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना ही था कि अन्दर ठंड कुछ ज्यादा थी।

यहाँ आने के बाद एक दो घंटे इधर-उधर भटकने की थकान के कारण जो कमजोरी उसे महसूस हो रही थी, उससे उसे लगा कि जैसे वह

बीमार हो गया हो। सड़क पर फैले हुए प्रकाश को अन्तर्भाग में पाकर यूरी को कुछ तसल्ली महसूस हुई। नगर की मनोवृत्ति तथा जीवन के साथ उसे तादात्म्य-सा अनुभव हुआ, और उसका भय दूर हो गया। उसे लगा कि अब वह बीमार नहीं हो सकता। वसन्तकालीन सन्ध्या के पारदर्शी प्रकाश में नवीन आशाओं की पूर्ति के लक्षण उसे दिखाई देने लगे। उसने सोचा, सब कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा। उसकी सारी कामनाएँ पूर्ण होंगी। सारी चीज़ों को मिला कर, जोड़ कर व्यवस्थित कर लिया जायेगा। बिखरी हुई तमाम बातों को ढूँढ़ कर वह सबकी व्याख्या कर लेगा। लारा को देखने, उससे मिलने की प्रसन्नता का वह इन्तज़ार कर रहा था। उसके मिलते ही सब कुछ शुभ्र शुभ प्रमाणित हो जायेगा। इसके बाद सब कुछ व्यवस्थित हो जायेगा।

थकान गायब हो गयी। अनियंत्रित उत्तेजना भरी अधीरता से वह व्याकुल हो उठा। सम्प्रति कमजोरी के बजाय आगत बीमारी के ये स्पष्ट लक्षण थे। आराम करने से पहले, वह अपने बाल और बढ़ी हुई दाढ़ी कटवाना चाहता था। शहर में से गुज़रते वक़्त वह नाई की दूकान की तलाश करते समय उसने अधिकांश दूकानों को खाली देखा। कुछ दूकानों की व्यवस्था और व्यवसाय बदल गया था। शेष बन्द हो गयी थीं। उसके पास उस्तरा नहीं था। कैंची से काम चल सकता था, इसलिए उसने लारा का सारा ड्रेसिंग टेबल खोज डाला, लेकिन कैंची उसे मिली नहीं। उसे याद आया, पास ही एक दर्जी की दूकान है। बन्द होने से पहले यदि वह वहाँ पहुँच जाय, तो उनसे कैंची उधार माँगी जा सकती है।

पाँच

उसकी याददाश्त ठीक थी। दर्जी की दूकान अभी भी वहाँ थी। अग्रभाग की विशाल खिड़की के साथ इस दूकान का प्रवेश द्वार सड़क की ओर ही था। यहाँ से अन्दर काम करने वालों को आसानी से देखा जा सकता है। दर्जिनियों से भरी हुई इस दूकान में नियमित रूप से काम करने वाली

स्थानीय वयोवृद्ध महिलाओं की संख्या भी काफी थी। मकान पर चिपकाये गये घोषणापत्र के अनुसार श्रम- करने के हेतु उनके लिए काम ढूँढ़ निकालना आवश्यक दर्जिनियों में इन स्त्रियों को आसानी से पहचाना जा सकता दूकान में सिर्फ़ सैनिकों के लिए ही कपड़े तैयार होते थे। तलून के अलावा विभिन्न नस्लों के कुत्तों के चमड़े के जैकेट थे। इस तरह की योजना सपक्षीय दल में वह पहले भी देख चुका ने वाली नई दर्जिनियों के लिए यह काम कठिन था। जब वे की मशीन चला रही थीं उनकी अँगुलियाँ अँगूठों की तरह दिखाई थीं, यूरी ने दरवाजा खटखटाया और अन्दर आने की इज़ाज़त प्रत्युत्तर मिला कि यहाँ व्यक्तिगत काम लिया नहीं जाता। वे उन्हें अकेले छोड़कर यहाँ से चले जायें। एक स्त्री ने हाथ उठा को छोटी नाव का आकार देते हुए यह बताने में कसर नहीं उसकी हरकतों से वे नाराज हो रही हैं। भौंहों के संकेत से जब पूछा गया कि आखिर वह चाहता क्या है? तो उसने वापस के इशारों में जवाब दिया—मुझे कैंची चाहिए। चूँकि यह बात के समझ में नहीं आई, इसलिए उन्होंने इसे निरी उद्दण्डता ही बाहर खड़े फटेहाल और भद्दे तरीके से व्यवहार करते हुए वह -सा दिखाई दे रहा था। दर्जिनियों ने समझा कि सम्भवतः वह मजाक उड़ा रहा है। सो खिसियानी हँसी हँसते हुए उसे चले जाने इशारा करके वे अपने काम में व्यस्त हो गयीं।

निश्चय किया कि पिछले दरवाजे को खटखटा कर देखा जाय।

वर्ण की, अधेड़ उम्र की, एक रुक्ष-सी स्त्री ने आकर पिछला जा खोल दिया। उसकी काली पोशाक से ज़ाहिर होता था कि वह दर्जिन है।

—तुम हमारे पीछे क्यों पड़े हो, जी? हमें अपना काम क्यों नहीं करने अच्छी बात है, बताओ, क्या बात है? क्या चाहिए तुम्हें?

—मुझे कैंची की ज़रूरत है। इसमें ताज्जुब की कोई बात नहीं। अपने बाल और दाढ़ी काटने के लिए मुझे कैंची चाहिए। अपना काम यहीं खत्म करके तत्काल कैंची लौटा दूँगा। दे दें, कृतज्ञ रहूँगा।

अविश्वास और आश्चर्य के मारे इस स्त्री को भरोसा हो गया कि इस आदमी का दिमाग ठिकाने पर नहीं है। यूरी ने अपना वक्तव्य जारी रखा—मैं एक लम्बा सफर तय करके अभी-अभी आया हूँ। मैं बाल कटवाना चाहता हूँ और यहाँ कोई नाई की दूकान खुली नहीं है। इसीलिए मैंने सोचा कि यह काम मैं खुद ही क्यों न कर लूँ? लेकिन मेरे पास कैंची नहीं है? आपकी बड़ी कृपा होगी, यदि आप मुझे थोड़ी देर के लिए कैंची उधार दे सकें।

—ठीक है। आओ। केश काटने का सामान मिल जायेगा। लेकिन याद रखना, यदि तुम्हारे दिमाग में कोई चाल खेलने का इरादा हो—अथवा राजनीतिक कारणों से अपना रूप बदलना चाहते हो, तो मैं इसकी इत्तिला संबंधित अधिकारियों को कर दूँगी, इसके लिए मुझे फिर बाद में दोष मत देना। आखिर तुम्हारे लिए हम अपनी जान जोखिम में थोड़े ही डालेंगे?

—आप भी कैसी बातें कर रही हैं!

वह उसे अपने साथ एक छोटे से कमरे में ले गयी। उसे एक कुर्सी पर बिठा दिया गया। नाई की दूकान की तरह उसके चिबुक तक चादर ढक दी गई और वह देवी जी एक जोड़ी कैंची, कंघी, उस्तरा आदि सामान ले आयीं।

यूरी के आश्चर्य को देखकर उसने कहा—मैंने हर तरह का काम किया है। दूसरे महायुद्ध में जब मैं परिचारिका थी, तब मैंने बाल काटने का काम सीखा था। अच्छा, पहले मैं बाल काट देती हूँ, इसके बाद दाढ़ी बना दूँगी।

—बड़ी कृपा। यदि केश बिल्कुल छोटे कर दें तो और मेहरबानी।

—मैं अपनी ओर से किसी तरह की कसर नहीं रहने दूँगी। अच्छा, एक बात बताओ, तुम तो पढ़े-लिखे मालूम होते हो, फिर इस तरह गँवारों का सा अभिनय क्यों करते हो, जैसे जानते ही नहीं कि हम यहाँ 10 दिनों का सप्ताह मानते हैं और आज महीने की 17 तारीख है। प्रत्येक 7 अंक की तारीख को यहाँ के नाई छुट्टी नहीं मानते? तुम्हें मालूम नहीं है?

—सचमुच, मुझे कुछ भी नहीं मालूम। नाटक नहीं रच रहा हूँ। मैंने आपको बताया न, कि मैं अभी-अभी बहुत दूर से आ रहा हूँ।

—हिलो मत, अन्यथा चमड़ी कट जायेगी। तो, तुम अभी आये हो! लेकिन आये कैसे?

—अपने दोनों पाँवों पर।

—महापंथ से?

—कुछ रास्ता महापंथ से तय किया, कुछ रेल्वे लाइन के साथ-साथ। रास्ते में पता नहीं, कितने किस्म की गाड़ियाँ पड़ी थीं। लेकिन सब बेकार...बर्फ़ से ढकी हुईं।

—बस थोड़ा-सा और है। फिर मेरा काम खत्म। पारिवारिक काम है?

—नहीं तो। मैं ऋण-सहकारी-संस्थाओं के पर्यटन निरीक्षक के रूप में काम करता था। मुझे अपने काम के सिलसिले में साइबेरिया के दौरे पर भेजा गया था और वहाँ जाकर मैं बुरी तरह फँस गया। आप तो जानती ही हैं, एक भी ट्रेन वहाँ से आजकल नहीं आती। सो, पैदल चलने के अलावा चारा ही क्या था? रास्ता तय करने में छः सप्ताह लगे। बीच में जो कुछ देखा, वह कहना भी चाहूँ तो समझ में नहीं आता कि उसकी शुरूआत कैसे करूँ?

—मैं तुम्हारी जगह होती, तो कुछ कहती ही नहीं। मेरी एक या दो नसीहतें गाँठ बाँध कर रख लो। पहले अपना चेहरा आईने में देखो। चद्दर में से हाथ निकाल लो, लो पकड़ो। ठीक है।

—मेरे खयाल में इन बालों को थोड़ा और छोटा कर दें तो कैसा रहेगा?

—छोटे कर देने पर भद्दे लगेंगे। मैं कह रही थी—कुछ बोलो मत। इस जमाने में चुप रहना ही बेहतर है। ऋण सहकारिता, लक्जरी ट्रेन, निरीक्षण यात्रा, इन तमाम बातों को भूल जाओ। देखते नहीं हो, समय कैसा है? वर्ना ऐसे फेर में पड़ जाओगे कि छुटकारा पाना मुश्किल हो जायेगा। अधिक अच्छा तो यह है कि तुम डाक्टर अथवा स्कूल-मास्टर बनने का बहाना कर लो। दाढ़ी छोटी हो गयी है। अब साबुन लगाकर साफ़ कर देती हूँ। इसके बाद तुम 10 साल पहले के जवान दिखाई देने लगोगे। मैं केटली का पानी गर्म करके अभी ले आती हूँ।

यूरी बैठा सोच रहा था—यह कौन है? किसी न किसी तरह से इससे मेरा सम्बन्ध-सम्पर्क ज़रूर रहा होगा। या तो इस महिला को मैंने कहीं देखा है, अथवा इसके बारे में कुछ सुना है...या इनके कारण किसी बात की याद ताजा हो आती है। लेकिन समझ में नहीं आता कि यह कौन है?

गरम पानी लाते हुए उसने कहा—अब हजामत। हाँ, मैं क्या कह रही थी? यही, कि इस जमाने में न बोलना ही अधिक अच्छा है। कहावत है कि बोलना यदि चाँदी है तो चुप रहना सोना है। सच ही तो है। स्पेशल ट्रेनों तथा ऋण-सहकारिता आदि के बजाय तुम्हारे लिए बेहतर यही होगा कि तुम अपने आप को डाक्टर अथवा मास्टर बताओ। जो कुछ तुमने देखा, उसे अपने पास ही रहने दो। यह सब सुन कर कौन तुमसे प्रभावित होगा? तकलीफ तो नहीं हो रही है?

—हो रही है। बहुत थोड़ी।

—थोड़ी तकलीफ तो होती ही है। मैं कर ही क्या सकती हूँ? थोड़ा धीरज रखो। तुम्हारी चमड़ी रेजर से अभ्यस्त नहीं है न, इसलिए। एक मिनट। हाँ, ऐसी कोई बात नहीं, जिसे लोगों ने खुद न देखा हो। हत्या, बलात्कार, भगा ले जाने की घटनाएँ, मनुष्यों का शिकार—श्वेत दल के शासन में हमें क्या कुछ नहीं भुगतना पड़ा। एक छोटे नवाब को एक ध्वजधारी के प्रति कुछ रोष था। जंगल में उस पर गुप्त रूप से आक्रमण

करने के लिए सैनिकों को भेजा गया। उसे निरस्त्र करके पहरे के साथ उसे राजविले भेज दिया गया। उन दिनों राजविले आज के क्षेत्रीय चेका के समान था—जहाँ कि फाँसी दी जाती है। सब कुछ जानते हुए भी हम लोग कर ही क्या सकते हैं? आपके केश कितने कड़े हैं! हाँ तो ध्वजधारी की स्त्री पागल-सी हो गई। कोल्या, हाय उसका क्या होता? वह तुरन्त सर्वोच्च अधिकारी—जनरल गैल्युलिन के पास गई। यह तो कहने की बात है। सीधे उसके पास कोई थोड़ी पहुँच सकता है? वहाँ तक पहुँचने के लिए बहुत ताने-बाने बुनने पड़ते हैं। अगली सड़क पर एक लड़की रहती है, बहुत ही भली। वह जानती है कि वहाँ तक कैसे पहुँचा जाय। उसका स्वभाव ही असाधारण रूप से भला है। लोगों की मदद करने के लिए वह सदा तैयार रहती है। वह दूसरों की तरह नहीं है। बहुत ही समझदार। आप कल्पना भी नहीं कर सकते, उन दिनों यहाँ चारों ओर क्या कुछ होता था! तरह-तरह के वीभत्स अत्याचार, जैसे स्पेनिश उपन्यास...

यूरी समझ गया कि बात लारा के सम्बन्ध में कही जा रही है। लेकिन वह चुप ही रहा। अधिक विवरण जानने की उसने उत्सुकता ज़ाहिर नहीं की।

वह कह रही थी—अब दूसरी बात है। यह सच है कि अब भी जाँच पड़ताल होती है। सूचनाएँ दी जाती हैं, गोलीबार होता है। पर अब हकीकत ही दूसरी है। पहली बात तो यह कि—सरकार नई है। अभी तक यह पूरी तरह जम भी नहीं पाई है। कुछ भी हो, है यह जनता की सरकार। यही उसकी सबसे बड़ी ताकत है। हमारे परिवार में मुझे मिला कर चार बहिनें हैं—चारों मजदूरी करती हैं। इसलिए स्वाभाविक रूप से हमारी रुचि बोलशेविकों की ओर रहेगी ही। हमारी एक बहिन मर गई। उसका पति एक राजनीतिक निर्वासित और स्थानीय एक फैक्टरी में मैनेजर था। उनका लड़का, मेरा भांजा कृषक-सेना का अध्यक्ष है। काफी प्रसिद्ध आदमी है।

यूरी को याद आया यह वही स्त्री है, लिबेरियस की चाची, मिकुलित्सिन की साली, स्थानीय दन्तकथाओं की नायिका, सिगनल देने वाली स्त्री, दर्जिन, बाल काटने वाली, आदि आदि कामों में दक्ष। हरफन मौला।

लेकिन यूरी ने अपने मनोभाव प्रकट नहीं होने दिये। वह कह रही थी—मेरा भतीजा कारखानों और मजदूरों के बीच पला और बड़ा हुआ। जनता के प्रति उसका शुरू से ही आकर्षण था। आपने वेरिकिनो कारखाने का नाम सुना होगा? देखिये तो, दाढ़ी ठीक हो रही है? मैं भी कितनी बेवकूफ हूँ। आपकी आधी ठुड्डी तो अच्छी तरह साफ हो गई और आधी खुरखुरी ही रह गई। बातें करते रहने पर यही होता है। आपने मुझे टोका क्यों नहीं? साबुन का फैन सूख गया है। पानी भी ठंडा हो गया है। अच्छा, मैं इसे गर्म करके अभी ले आती हूँ।

वापस लौटाने पर यूरी ने पूछा—वेरिकिनो तो यहाँ से बहुत दूर है? है न? इस उपद्रव के बीच वह तो निरापद रहा होगा?

—बिलकुल निरापद तो नहीं। कहीं-कहीं तो यहाँ की तुलना में वहाँ की हालत और भी ज्यादा खराब रही। वहाँ कुछ सशस्त्र दल थे। आज तक किसी को नहीं मालूम कि वे किस प्रकार के थे। वे हमारी भाषा नहीं बोलते। वे घर-घर जाकर, जिसे पाते, उसे गोली मार देते। शीतकाल की बात है। बर्फ़ पर शव पड़े मिलते। सिर मत हिलाइये। चमड़ी कट जायेगी।

—आप तो कह रही थीं कि आपके बहनोई वहीं रहते हैं। जिस समय यह सब हुआ, उस समय वे वहीं थे?

—ईश्वर की कृपा से वह और उसकी पत्नी अर्थात् दूसरी स्त्री समय पर वहाँ से निकल गये थे। वे कहाँ गये, यह कोई नहीं जानता। लेकिन यह निश्चय है कि वे फरार होकर बच निकले हैं। वहाँ कुछ नये लोग भी थे। मास्को के कुछ अपचरित लोग। वे उनसे भी पहले चले गये। उन दो आदमियों में से एक नौजवान डाक्टर 'गायब' है। यह तो ढाढस बँधाने के लिए बोलने का तरीका है। 'गायब' तो कहा जाता है—वास्तव में

वह या तो मर गया होगा, अथवा मार डाला गया होगा? इस बात की काफी खोज की। लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। बड़े आदमी को वापस मास्को बुला लिया गया। वह कृषि विशेषज्ञ प्रोफेसर था। श्वेत दल के लोगों के आने से ठीक पहले मास्को जाते हुए वे युर्यातिन में ठहरे थे। आप फिर हिलने लगे? भले आदमी, इस तरह हिलने से चमड़ी कट जायेगी? खैर, अपने पैसों की आपने पूरी कसर निकाल ली है।

तो वे मास्को में हैं? मास्को में!

छः

तीसरी बार वाली फ्लेट में जब वह लौट कर आया तो उसके दिमाग में एक ही बात बारम्बार चक्कर काट रही थी—'वे मास्को में हैं! मास्को में!'

बड़े फ्लेट में चूहों का उत्पात उसी तरह जारी था। यूरी को विश्वास हो गया कि थकान भले चाहे जितनी हो, चूहों के इस उपद्रव-काण्ड में सोना मुश्किल है। सोने से पहले चूहों के बिलों को मूँद देना आवश्यक है। सौभाग्य की बात यह है कि सोने के कमरे में, फ्लेट के अन्य भाग की अपेक्षा कम बिल थे। अन्धेरा बढ़ता जा रहा था, इसलिए यह आवश्यक था कि वह अपना काम तुरन्त कर डाले। रसोईघर की मेज पर, संभवतः उसके आने की संभावित आशा में, एक लालटेन रखी हुई थी। पास ही दियासलाई पड़ी थी। दियासलाई और पैराफिन तेल, दोनों का महत्त्व वह जानता था, इसलिए मितव्ययिता आवश्यक थी। थोड़ी देर में ही उसने बिलों को टूटे हुए शीशों से भर दिया। दरवाजा इतना फिट था कि एक बार बन्द कर देने पर चूहों के अन्दर आने की कोई संभावना नहीं रहती।

कमरे के एक कोने में डच सिगड़ी थी। वह जाकर लकड़ियाँ ले आया और उसने सिगड़ी जला दी। आग में डाली जाने वाली लकड़ियों पर के.डी. का चिह्न अंकित था। उसने तुरन्त पहचान लिया कि कारखानों द्वारा अस्वीकृत लकड़ी को जलाने के काम में लाते समय, क्रूइगर के जमाने

में, उस पर इसी तरह का निशान अंकित कर दिया जाता था। इन चिह्नों को यहाँ देख वह कुछ अस्थिर हो उठा। इन लड़कियों के यहाँ आने का मतलब था, लारा का सामदेवयातोव के साथ सम्बन्ध। पहले यूरी के लिये भी इसी तरह सामान भिजवाने की व्यवस्था वह कर दिया करता था। उसके प्रति उसकी कृतज्ञता की भावना में अन्य भावनाएँ मिश्रित हो गयीं; और वह व्यथापूर्ण गुप्त लज्जा अनुभव करने लगा। सामदेवयातोव सिर्फ़ सौजन्यवश ही उसकी मदद कर रहा होगा, इस बात की सम्भावना बहुत कम थी। उसे सामदेवयातोव की स्वच्छन्द वृत्ति तथा लारा की स्त्र्योचित प्रवृत्ति याद आई। दोनों में कोई न कोई बात अवश्य रही होगी। सूखी लड़कियों के जलने के साथ-साथ यूरी की अन्ध द्वेष की कल्पना, निश्चय में बदल गयी। चारों ओर के संताप में एक चिन्ता दूसरी चिन्ता को बढ़ाती गयी। अपने संदेह को हटाना उसे आवश्यक नहीं लगा; फिर भी उसका दिमाग किसी एक विषय पर स्थिर नहीं था। अपने परिवार के लोगों के बारे में सोचते समय उसकी यह द्वेषपूर्ण भावना सम्पूर्ण रूप से विलीन हो गयी।

—मेरे प्रिय स्वजनों, तो आप मास्को में हैं। उसे लगा कि मानो उस दर्जिन ने उसे आश्वासन दे दिया हो कि वे वहाँ सकुशल पहुँच गये हैं! तो इस बार आप सबने मेरे बिना ही इतनी लम्बी यात्रा की? आप लोगों को रास्ते में तकलीफ तो नहीं हुई? अलेक्जेण्डर अलेक्जेण्ड्रोविच को वापस क्यों बुलाया गया है? शायद उन्हें अकादमी में वापस काम मिल गया हो! हमारे घर की क्या हालत है? अरे, मैं भी तो कितना बेवकूफ हूँ, कौन जानता है कि घर अभी कायम भी है या नहीं? हे प्रभु, यह सब कितना कष्टप्रद है? क्या मैं सोचना बन्द नहीं कर सकता? मुझे लग रहा है कि मैं बीमार हूँ। मेरा क्या होगा? टोन्या, प्रिय टोन्या, टोन्या का क्या होगा, सशा और अलेक्जेण्ड्रोविच का क्या होगा? मैं क्यों अपने स्वजनों से बिछुड़ गया? हम लोग एक दूसरे से क्यों बारम्बार अलग हो जाते हैं? लेकिन अब हम फिर एक साथ हो जायेंगे। फिर मिल जायेंगे। निश्चित रूप से मिलेंगे। पैदल चल कर, सात समन्दर का फासला तय

करके भी मुझे तुम तक आना पड़ा तो भी मैं तुम लोगों के पास आऊँगा। हमारा मिलन निश्चित रूप से होगा। सब कुछ फिर से व्यवस्थित हो जायेगा।

'आह, मैं धरती में क्यों नहीं समा जाता। यह कितनी क्रूर भूल है कि मुझे याद ही नहीं रहता कि टोन्या के दूसरा बच्चा होने वाला था। अब तक हो भी गया होगा? यह भूल पहली ही बार नहीं हुई है। इससे पहले भी मैं ऐसी गलती कर चुका हूँ। उसने अपने प्रसव का समय कैसे गुज़ारा होगा? सचमुच, मास्को जाते समय वे युर्यातिन में ठहरे थे? लारा तो उन्हें जानती नहीं। और एक अपरिचित दर्जिन अथवा हेयर-ड्रेसर उन सबके बारे में इतना जानती है! फिर लारा ने अपने पत्र में उनके बारे में कुछ भी क्यों नहीं लिखा? वह इतनी उदासीन और तटस्थ क्यों है? यह उतनी ही विचित्र बात है, जितना कि सामदेवयातोव के बारे में कुछ भी न लिखना। एक नयी दृष्टि से उसने कमरे के चारों ओर देखा। बहुत दिनों से अनुपस्थित तथा गुप्त-वास करने वाले, पता नहीं किस आदमी का यह सारा साजो-सामान है? इसमें लारा का क्या है, जिससे कि उसके बारे में कुछ अन्दाज़ लगाया जा सके? दीवार पर अपरिचित स्त्री-पुरुषों की तस्वीरें लगी हुई हैं। इन अनजाने स्त्री-पुरुषों की नजरों के नीचे बैठा यूरी बेचैनी महसूस करने लगा। वहाँ पड़े सामान से उसे परायेपन की गन्ध आने लगी। उसे लगा कि बिना पूछे, पराये आदमी की तरह वह यहाँ चला आया है। यहाँ मानो उसे किसी ने चाहा नहीं, किसी ने निमंत्रित किया नहीं।...और इसी घर को याद करके, यहाँ आने की आतुरता में, न जाने उसने कितनी बेवकूफियाँ की हैं। लारा की अनुपस्थिति में वह इन्हीं कमरों को उसका प्रतीक मान रहा था। उससे मिलने की लालसा में, यहाँ चले आना कितनी नादानी है? सामदेवयातोव जैसे हृष्ट-पुष्ट, सुन्दर, समर्थ और व्यवहार-निपुण, कुशल व्यक्ति के सामने उसके प्रेम की अवास्तविक भाषा की क्या तुलना? जो वह 'उसके लिए' है, क्या वह 'उसकी इच्छा' के

अनुकूल है? सीधी सी बात है। वह सब कुछ जानता है और अच्छी तरह जानता है।

वसन्तकालीन संध्या की सायं-सायं की आवाज़ में दूर सड़क पर खेलने वाले बच्चों का कोलाहल सुनाई दे रहा था; मानो निखिल विश्व के विस्तार के जीवित होने की घोषणा की जा रही हो। व्यापक क्षेत्र में प्रसिद्ध यह विश्व का विराट स्वरूप है—उसकी माता का। शहीद, हठी, उन्मत्त, अनुत्तरदायी अथवा मतिभ्रष्ट, चाहे जैसे लोग हों, उसके शाश्वत सौन्दर्य को अकल्पनीय भावभंगिमा सहित प्रेम करते हैं। ओह, जीवित रहना कितना मधुर है! जीवित रहना और जीवन से प्रेम करना कितना अच्छा है! जीवन और उसके अस्तित्व के प्रति कोटि-कोटि धन्यवाद।

लारा भी तो यही है। जीवन से प्रत्यक्ष रूप में बात की नहीं जा सकती। लेकिन वह जीवन की साक्षात् प्रतिमा—जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाली है। उसकी भावभंगिमा ही उसकी वाक्-शक्ति है और बहरे-गूँगों के लिए वह श्रवण का वरदान है। भ्रमवश उसने अभी-अभी उसके बारे में जो प्रताड़ना की थी, वह हजार बार, लाख बार असत्य है! वह निर्दोष है। वह अतुलनीय है। यूरी की आँखों में प्रेम और पश्चात्ताप के आँसू छलक आये।

प्रज्वलित सिगड़ी के ढक्कन को खोल कर आग को उसने उलटा-पलटा। जो लकड़ियां जल रही थीं, उसे अन्दर घुसेड़ कर, न जलने वाली लकड़ियों को उसने बाहर निकाल दिया। सिगड़ी का दरवाजा खुला रख कर, वह प्रज्वलित अग्नि की क्रीड़ा करती हुई लपटों के सामने बैठ गया। अग्नि-ज्वालाओं के प्रकाश और उसकी मधुर गर्मी के खेल से प्रमुदित उसके सामने बैठा, वह अपना हाथ और चेहरा सेकता रहा। लारा की अनुपस्थिति असह्य रूप से उसे खलने लगी। वह किसी ऐसी चीज़ के लिए व्याकुल हो उठा, जो लारा को उसके समीप ले आये। उसने अपनी जेब में रखा हुआ, सिकड़ा हुआ पत्र निकाला। वह उलटा

मुड़ा हुआ था। उसने देखा कि वहाँ और भी कुछ लिखा हुआ है, जिसे उसने अभी तक पढ़ा नहीं है। पत्र को ठीक करके, नृत्य करती हुई लपटों के सामने वह पढ़ने बैठ गया।

'...आप जानते ही होंगे कि आप के घर वाले मास्को में हैं। टोन्या के लड़की हुई है।...' इसके बाद लिखी हुई पँक्तियों को काट दिया गया था। उसने आगे लिखा था—'मैंने इन पँक्तियों को इसलिए काट दिया है कि इनका यहाँ लिखना नादानी ही होगी। जब हम आमने-सामने मिलेंगे, तब दिल खोल कर सारी बातें कहूँगी। अभी मैं जल्दी में हूँ। मैं बाहर जा रही हूँ। मुझे घोड़े की ज़रूरत है। यदि वह नहीं मिला, तो पता नहीं मैं क्या कर सकूँगी? कात्या के साथ होने से काफी मुश्किल है...' इसके बाद शेष भाग अस्पष्ट था। यूरी ने शान्त भाव से सोचा कि [illegible] ने उसे घोड़ा मिल गया होगा। यदि वह उस व्यक्ति के बारे में कुछ छिपाना चाहती, तो उसका उल्लेख इस तरह अपने पत्र में थोड़े ही करती?

सात

आग की लपटों के शान्त हो जाने पर यूरी ने सिगड़ी का मुँह बंद कर दिया। भोजन करने के बाद उसे इतने ज़ोर से नींद आने लगी कि बिना कपड़े उतारे ही वह सोफे पर सो गया। दीवारों के पीछे से आने वाली चूहों की उद्दण्ड और तीखी आवाज़, उसकी नींद में बाधा नहीं डाल सकी। एक के बाद एक उसने बुरा स्वप्न देखा—

वह मास्को में काँच के बन्द दरवाजे वाले फ्लेट में हैण्डल पकड़े खड़ा था। दूसरी ओर नाविक पोशाक पहने हुए उसका लड़का सशा दरवाजा पीट-पीट कर, रोते हुए अन्दर आने के लिए प्रार्थना कर रहा था। बच्चे के पीछे से किसी जल-प्रपात की आवाज़ आ रही थी। उसके छींटों से बच्चे का चेहरा भींग गया था, और दरवाजे पर भी कोहरा छाया हुआ था। जल-प्रपात से भयानक आवाज़ आ रही थी, मानो कोई नल फूट गया हो। या दरवाजा जंगली प्रदेश में हो, जहाँ पहाड़ से जल की तीव्र धारा

बह रही थी। उसके दूसरी ओर हजारों वर्ष पुरानी ठंडी गुफाएँ थीं। चारों ओर सूचीभेद अन्धकार छाया हुआ था। जल-प्रपात की आवाज़ में बच्चे की भयातुर आवाज़ डूब गयी। वह बारम्बार 'पिताजी, पिताजी' की पुकार मचा रहा था। यूरी का हृदय फटा जा रहा था। बालक को अपनी गोद में उठाने के लिए उनका मन व्याकुल हो रहा था कि उसे लेकर जितनी दूर जाया जा सके, भाग जायं। आँसुओं से भरे चेहरे के साथ फिर भी वह दरवाजे का हैण्डल पकड़े खड़ा था, ताकि बच्चा अन्दर न आ जाय। किसी दूसरी स्त्री के प्रति झूठी मर्यादा और कर्तव्य की भावना के कारण वह बालक को अन्दर आने से रोक रहा था। यह स्त्री इस बालक की माँ नहीं थी और किसी भी समय दूसरे दरवाजे से वहाँ आ सकती थी।

जब वह उठा, तो आँसू और पसीने से तर-ब-तर था। उसे लगा कि वह बीमार है। ज्वर आ गया है। यह टायफुस नहीं। यह एक प्रकार की हरारत है, जो गम्भीर बीमारी का रूप धारण कर सकती है; और इससे संकटकालीन स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। इस संक्रामक खतरनाक बीमारी से अब देखना यही है कि जीत मृत्यु की होती है, या जीवन की।

दूसरे स्वप्न में शीतकालीन अन्धकारयुक्त प्रातःकाल में बत्तियाँ जल रही थीं, और वह मास्को की भीड़ भरी सड़क पर जा रहा था। तड़के का यातायात, ट्रामों की बज रही घंटियों की आवाज़ तथा भूरी बर्फ़ से आच्छादित सड़क पर बत्तियों की पीली रोशनी पड़ रही थी। लगता था कि यह क्रान्ति से पहले का समय है। एक तीन मंजिल का भवन। फैली हुई बड़ी खिड़की। लम्बा पर्दा। लोग सोये हुए हैं, मानो गाड़ी के डिब्बे में हों और डिब्बा कचरे और गन्दगी से भरा हुआ हो। यहाँ अनेक मित्र, सम्बन्धी-आगन्तुक तथा गृहविहीन लोग आये हुए हैं। गृहस्वामिनी है लारा। ड्रेसिंग गाऊन पहने वह कमरे में चुपचाप काम करती हुई इधर-उधर आ जा रही है। यूरी उसके पीछे-पीछे चलते हुए असम्बद्ध बातों का मूर्खतापूर्ण उल्लेख कर रहा है। लारा के पास उसकी बड़बड़ाहट की

ओर ध्यान देने का अवकाश नहीं है। कभी-कभी वह शान्त भाव से उसकी ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देख कर मुस्करा देती है। इन संकेतों से ही वे आपस में भावों का आदान-प्रदान कर रहे हैं। यह स्त्री कितनी चित्ताकर्षक है। इसी के लिए उसने, जो कुछ उसके पास था, वह सब कुछ न्योछावर कर दिया और संसार की प्रत्येक वस्तु की तुलना में इसे ही उसने हार्दिक रूप से पसन्द किया था कि उसके समान कोई वस्तु मूल्यवान नहीं थी।

आठ

अन्धकार में अक्षरों की तरह चमकने वाली कोई आन्तरिक वस्तु रो रही थी और उससे शिकायत कर रही थी।

नींद और बेहोशी की बड़बड़ाहट के बीच के क्षणों में उसे याद आया कि वह बीमार है। वह टायफुस से पीड़ित है। ऐसे टायफुस से जिसका जिक्र पुस्तकों में सुलभ नहीं है। मुझे भूख लगी है, कुछ खाना चाहिए, वर्ना मैं भूखों मर जाऊँगा।

कुहनी के बल उठने का प्रयास करने पर उसे मालूम हुआ कि वह हिलने-डुलने में भी असमर्थ है; और इसके बाद फिर बेहोशी में अथवा नींद में वह खो गया। उसने अपने आप से पूछा—मैं यहाँ कितनी देर से पड़ा हूँ? सोफे पर सोने के लिए जब मैं गया था, उस समय वसन्त का प्रारम्भ था। लेकिन अब तो खिड़कियों पर इतना पाला दिखाई दे रहा है कि कमरे में अन्धकार छा गया है। रसोईघर में अभी भी चूहे शोर मचा रहे हैं। उनका उपद्रव जारी है। पुनः उठने पर उसने ढकी हुई खिड़कियों में से सूर्योदय अथवा सूर्यास्त का प्रकाश देखा, जो पारदर्शी काँच पर लाल शराब के समान दिखाई दे रहा था।

उसे लगा कि जैसे उसने नजदीक से कोई आवाज़ सुनी हो। यह अनुमान लगा कर कि कहीं वह पागल तो नहीं हुआ जा रहा है, वह भयभीत हो उठा। आत्मप्रताड़ना से रोते हुए उसने प्रभु से शिकायत की '—हे

ईश्वर, तुमने मेरा परित्याग क्यों कर दिया? हे सनातन चिर प्रकाश, तुमने मुझे इस तरह नर्क के अन्धकार में क्यों ढकेल दिया?'

उसे याद आया कि वह स्वप्न देख रहा था और बेहोशी में बड़बड़ा रहा था। दरअसल में वह नहा-धोकर तथा साफ़ कपड़े पहने सोफे पर नहीं, बल्कि नये लगाये गये बिस्तर पर सो रहा है। एक स्त्री उस पर झुकी हुई है, जिसके बालों से उसके बाल छू गये हैं। उसके आँसू, यूरी के आँसुओं के साथ बह रहे हैं।

यह थी लारा! वह खुशी के मारे फिर बेहोश हो गया।

नौ

उसे शिकायत थी कि परमपिता ने उसका परित्याग कर दिया है। लेकिन अब उसे लग रहा था, स्वर्ग का समग्र स्वरूप उसके बिस्तर के करीब झुक आया है। प्रसन्नता के मारे उसे चक्कर आने लगे।

उसका सारा जीवन सक्रिय था, वह हमेशा घर के काम-काज, मरीजों की देखभाल, अध्ययन-मनन अथवा लिखने के कार्यों में व्यस्त रहता। कार्य-संघर्ष अथवा चिन्तन मनन को छोड़ कर प्रकृति की गोद में अपने आप को समर्पित कर देना, कितना सुखदायी है!

लारा की देखभाल और परिचर्या के कारण वह जल्द ही अच्छा हो गया। लारा के आश्चर्यजनक सौन्दर्यपूर्ण जीवन के स्पर्श का उस पर सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ा।

धीमे स्वर में अनेक महत्त्वहीन बातें होतीं लेकिन उनका महत्त्व प्लेटो के कथोपकथन से कम नहीं होता।

जिस कारण से वे सारी दुनियाँ से भिन्न थे, वही कारण उन दोनों को समीप ले आया था। आधुनिक व्यक्तियों का जो सबसे बड़ा दुर्भाग्य है—किताबी प्रेम—उनका जबर्दस्ती का उत्साह, उनकी मृतप्रायः सुस्ती, कला और विज्ञान के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों की हज़ारों

नसीहतें और कर्मानुष्ठानों के प्रति श्रद्धा—ताकि प्रतिभावान व्यक्ति विरल ही बने रहें। वे दोनों इससे दूर थे।

प्रेम तो बहुत सारे लोग करते हैं, लेकिन यह आभास नहीं हो पाता कि इसमें कोई बहुत उल्लेखनीय बात है। लेकिन उन दोनों में बहुत प्रेम था। यही उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी। उनके अस्तित्व का बोध देने वाली भावनाएँ जिस समय अबाध समय की साँस की तरह उपस्थित होतीं, वे उसमें हार्दिकता अनुभव करते। जीवन और स्वयं के बारे में उनकी अनुबोधन शक्ति बढ़ जाती।

दस

'आपको अपने परिवार के पास अवश्य जाना चाहिए। आवश्यकता से अधिक एक दिन भी मैं आपको रोकना नहीं चाहती। देखिये तो, क्या से क्या हो गया? जब आप बीमार थे, तब से कितना कुछ बदल गया है? सोवियत रूस के भंग होते ही हमारा अस्तित्व छिन्न-भिन्न हो गया। हमारे लिए आवश्यक सामान की पूर्ति मास्को भेज दी जाती है, जो कि वहाँ के लिए समुद्र में बूँद के समान है। सामान के ये ढेर उस गड्ढे में समा जाते हैं और हमारे पास कुछ भी शेष नहीं रहता। न मेल गाड़ी है, न यात्री-गाड़ी। सभी ट्रेनों का उपयोग खाद्यान्न ले जाने के लिए हो रहा है। नगर में गयदा विद्रोह की तरह काफी शिकायत भरी आवाज़ें सुनाई दे रही हैं। इस असंतोष का खुला प्रतिकार करने के लिए चेका उन्मत्त हो रहा है। आप कितने कमजोर हैं? यात्रा करेंगे कैसे? देखिये तो, आपका शरीर ढाँचा मात्र रह गया है। क्या सचमुच आप पैदल जा सकेंगे? ठीक हो जाते, तो बात दूसरी थी। वर्ना वहाँ तक आप पहुँच नहीं पायेंगे।

'मेरी राय तो यह है कि फिलहाल यहीं कुछ काम ढूँढ़ लीजिये। आप अपने पेशे के अनुसार ही काम करिये। यहाँ के लोग उसे पसन्द भी करेंगे। कुछ न कुछ काम तो आखिर आपको करना ही है। जो स्थिति सामने है, वह कोई बहुत अच्छी थोड़े ही है? आपके पिता साइबेरिया के लखपति थे, आपकी पत्नी एक धनवान की लड़की है। और आप

पार्टिशन (सपक्षी) के फरार व्यक्ति हैं। बचने का कोई उपाय नहीं। क्रान्तिकारी सेना का पद आपने छोड़ दिया है—यह बहुत ही घातक है। आपके लिए बेकार रहना खतरनाक है। देखो तो, मेरी भी स्थिति अच्छी नहीं है। मुझे भी कुछ न कुछ करना ही होगा। मैं तो जैसे ज्वालामुखी पर खड़ी हूँ।

—तुम्हारा मतलब है—कि स्ट्रेलिनिकोव के बारे में क्या होगा?

—हाँ, उन्हीं के लिए तो कहती हूँ। पता नहीं, उनके कितने शत्रु पैदा हो गये हैं। अब चूँकि कम्युनिस्ट सेना जीत गयी है, अतः ग़ैर-दलीय सैनिक जो उच्चपदाधिकारी थे और जो अधिक अनुभवी थे, उनकी किस्मत ही फूट गयी है। उन्हें यदि केवल निकाल दिया जाय अथवा देशनिकाला दे दिया जाय—मारा न जाय, तो ही गनीमत समझिये। उन पर बहुत खतरा है। वे उनका शिकार बन सकते हैं। आपको मालूम है, वे पूर्व की ओर गये थे। वहाँ से भाग कर वे कहीं छिप गये हैं। उनकी तलाश जारी है। जाने दीजिये, उनके बारे में मैं अधिक बात नहीं कर सकती। मुझे रोना पसन्द नहीं; और यदि मैंने आगे कुछ भी कहा तो मैं रो पड़ूँगी।

—उसके साथ तुम्हारा बहुत प्रेम था लारा? अभी भी उतना ही है?

—प्रिय, मैंने उनसे विवाह किया है। वे मेरे पति हैं। उनका व्यक्तित्व आश्चर्यजनक ओजस्वी है। हमारे वैवाहिक जीवन के नष्ट होने का कारण मैं स्वयं हूँ। यह मतलब नहीं कि मैंने कभी उन्हें दुःख दिया हो, हानि पहुँचाई हो। वे कितने प्रभावशाली एवं उदार-हृदय हैं और सच्चाई उनकी कितनी बड़ी खूबी है, यह मैं कैसे बताऊँ...ओह, मेरी तबीयत ठीक नहीं है। उनकी तुलना में मैं कुछ भी नहीं हूँ...यही तो मेरा सबसे बड़ा अपराध है। जाने दीजिए, इस समय इस बारे में अधिक बातचीत न करें। फिर किसी समय कहूँगी।

—तुम्हारी टोन्या कितनी सुन्दर और प्रिय है। जब उसे बच्ची हुई थी, तब मैं उसके पास थी। हमारी आपस में खूब पटी। खैर, इस समय इस बारे में हम कोई बात न करें तो ही अच्छा है।

'मैं कह रही थी, हम दोनों को काम करना चाहिए। रोज़ सुबह हम काम करने जाएँगे और महीने के अन्त में करोड़ों रुबल्स के रूप में वेतन ले आयेंगे। आपको मालूम है, अभी तक पुराने साइबेरियन नोट प्रचलित थे। इसके बाद उनकी समाप्ति हो गयी। जिस समय आप बीमार थे, मेरे पास कुछ भी नहीं था। पता नहीं, किस तरह से मैंने काम चलाया है। सुना है कि नये बैंक-नोट लेकर एक पूरी गाड़ी यहाँ आ रही है। कम से कम 40 ट्रक होंगे। बड़े कागजों पर दो रंगों में इन्हें छापा गया है। लाल और नीले रंग में छपे हुए ये नोट वर्गों में बँटे हुए हैं। नीले वर्ग वाले नोट 50 लाख रुबल्स के बराबर हैं, तथा लाल रंग वाले 100 लाख रुबल्स के बराबर। पर इनकी छपाई बहुत बढ़िया नहीं है।

ग्यारह

—तुम इतने दिनों तक वेरिकिनो में कैसे रहीं? मेरा खयाल था कि वहाँ कोई नहीं है! बिलकुल सुनसान जगह है।

—कात्या को लेकर मैं वहाँ आपका मकान साफ़ करने चली गयी थी। मैंने सोचा कि वापस आकर आप शायद वहीं जायेंगे। लेकिन वहाँ की स्थिति देख कर मैं हाथ जोड़ कर भगवान से प्रार्थना करती रही कि आप वहाँ न जावें।

—क्यों? क्या स्थिति बहुत खराब है?

—कोई खास बात नहीं। गन्दगी थी। जाकर साफ़ कर आई।

—इस तरह बात को टालो मत। मैं जानता हूँ, तुम कुछ छिपा रही हो! मैं तुम्हारी गुप्त बातें जानने के लिए बहुत उत्सुक नहीं हूँ। तुम्हें कहने के लिए बाध्य नहीं करूँगा। अच्छा टोन्या और नयी बच्ची के बारें में बताओ? नयी बच्ची का क्या नाम रखा है?

—आपकी माताजी की स्मृति में—माशा!

—उनके बारे में और भी कुछ कहो।

—अभी नहीं। मैं रो पड़ूँगी।

—सामदेवयातोव बहुत दिलचस्प व्यक्ति हैं। उसी से तुम्हें घोड़ा मिला होगा ?

—हाँ।

—मैं उन्हें अच्छी तरह से जानता हूँ। जब मैं अपने परिवार के साथ यहाँ रहने के लिए आया, तब वे भी यहीं रहते थे। उन्होंने हमारी बड़ी मदद की।

—मुझे मालूम है। उन्होंने ही मुझे बताया था।

—तुम्हारी उनसे अक्सर मुलाकात होती रहती होगी ? वे तुम्हारे काम अवश्य आते होंगे ?

—उनकी मुझ पर दया है। बिना उनके मैं कर ही क्या सकती थी ?

—कुछ कुछ अन्दाज लगा सकता हूँ। मेरा खयाल है, तुम्हारी आपस में अच्छी दोस्ती है। समय-असमय पर वे यहाँ आते रहते हैं ?

—अक्सर। स्वाभाविक ही है।

—और तुम्हें बहुत अच्छा लगता होगा ! मैं जानता हूँ, मुझे ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए। इस तरह की बात पूछने का मुझे कोई हक नहीं। मैं ज़रूरत से ज्यादा आगे बढ़ गया था। माफ करना।

—ओह, समझी। आपका मतलब क्या है, मैं समझ गयी। आप शायद सोच रहे हैं कि मैत्री के अलावा हमारी मित्रता के बीच और क्या है ? कुछ भी नहीं। मेरे वजन का सोना भी यदि मुझे दिया जाय तो भी, मुझे कोई अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकता। इस तरह के देन-लेन करने के सौदे को मैं बेहद नापसन्द करती हूँ। उनके साथ मेरी कोई समानता नहीं है। व्यावहारिक जीवन में इस तरह के साधन-सम्पन्न आत्मविश्वासी तथा जबर्दस्त प्रभावशाली व्यक्तित्व बहुत काम के हैं। इसे मैं पुरुषों की अनिवार्य उन्मत्त प्रवृत्ति से अधिक कुछ नहीं समझती। निश्चित रूप से मेरे प्रेम और जीवन की रूपरेखा यह नहीं है। सामदेवयातोव मुझे एक ऐसे व्यक्ति की याद दिला देते हैं, जो बहुत ही

अधोगति मनोवृत्ति का व्यक्ति है। उसी के कारण [illegible]
हूँ। मेरी इस स्थिति के लिए वही दोषी है।

—मुझे नहीं मालूम, तुम अपने बारे में क्या सोचा करती हो? [illegible] तुम स्पष्ट रूप से नहीं बताओ कि तुम क्या हो, मैं कैसे जान सकता हूँ? मुझे तो लगता है सकल संसार में तुम्हीं सर्वश्रेष्ठ स्त्री हो।

—मैं गम्भीरता से अपने दुःख की बात बताना चाहती हूँ और आप—आप मेरी स्तुति गा रहे हैं! जैसे हम गपशप मारने बैठक में बैठे हों। मुझ में, मेरे सारे जीवन में, एक दर्द घनीभूत होकर छाया हुआ है। कुछ ऐसी परिस्थितियाँ थीं; कि बहुत छोटी उम्र में ज़िन्दगी को मैंने बहुत करीब से देखा; और बहुत ही गलत पक्ष से—सस्ते और विकृत रूप में! यह सब उस व्यक्ति की नजरों से, जो पुराने जमाने के स्वार्थी और दंभी हैं। वे प्रत्येक वस्तु का लाभ उठाना चाहते हैं। जो उन्हें पसन्द आता है, वही करते हैं।

—समझ रहा हूँ। मैं भी सोच रहा था कि कोई न कोई बात है ज़रूर। तुम्हारी अनुभवहीनता के साथ युवावस्था के प्रवेश के समय के बलात्कार से पीड़ित भावना का अनुमान मैं लगा सकता हूँ। पर यह सब गुज़रे हुए जमाने की बातें हैं। इन्हें याद करके दुखित होने से क्या होगा? जो तुमसे प्रेम करते हैं, ऐसे हम जैसे लोग, तुम्हारे दर्द की, तुम्हारी तकलीफ की फिक्र करेंगे। काश, मैं उस समय तुम्हारे बचाव के लिए तुम्हारे पास होता!

'एक बात कहूँ—मैं उन्हीं लोगों के प्रति द्वेष रखता हूँ और घृणा करता हूँ, जिनसे मेरी किसी प्रकार की समानता नहीं है। जिनके कारण मुझे अपने प्रति कुछ भिन्नता महसूस हो, वही मेरा प्रतिद्वन्द्वी है। यदि मैं किसी व्यक्ति को पसन्द करता हूँ, समझता हूँ—और यदि वह उसी महिला से प्रेम करे, जिससे मैं करता हूँ, तो मेरी उसके प्रति न कोई शिकायत होगी, न गुस्सा ही। मैं उसके साथ कलह नहीं करूँगा बल्कि मुझे उसके साथ दुखान्त समानता महसूस होगी। हाँ, यह स्वाभाविक ही

है कि मैं अपनी प्रिय रमणी को किसी की अंकशायिनी के रूप में नहीं देख सकता। मैं उस हालत में उस स्त्री को छोड़ दूँगा। लेकिन द्वेष के कारण नहीं, क्रोध के कारण भी नहीं। ठीक उसी तरह, जिस तरह किसी कलाकार को एक कृति बनाते देखकर, जिसे मैं बनाना चाहता था, इसलिए छोड़ दूँगा कि वह अब सिर्फ़ अनुकृति मात्र होगी। मैं इस आशा के साथ इसका परित्याग कर दूँगा कि सम्भवतः उस कलाकार द्वारा वह कृति अधिक बेहतर रूप धारण कर सके।

ख़ैर, हम इस विषय पर बात नहीं कर रहे थे। यदि तुम्हें किसी से कोई शिकायत न हो, किसी तरह का दुःख न हो, तो सम्भवतः मैं तुम्हें प्यार नहीं कर सकता। जो कभी पतित नहीं हुआ, जिसके कदम कभी डगमगाये न हों—वे निर्जीव व्यक्ति हैं। मेरी नजरों में उनका मूल्य तीन कौड़ी भी नहीं है। उन्होंने जीवन के सौन्दर्य को निकट से देखा ही नहीं।

—इसी सौन्दर्य के बारे में सोचने के लिए कल्पना में एकाग्रता और बच्चे की-सी सरलता होनी चाहिए। यही मुझे नसीब नहीं हो सका। यदि शुरूआत में किसी अन्य व्यक्ति के ओछे विचारों की अमिट छाप मुझ पर पड़ी होती, तो मेरा भी जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण होता। मेरे जीवन के प्रारंभ में ही अनैतिक तथा स्वार्थपरता की मूर्ति आकर उपस्थित हो गयी। इसके बाद मैंने एक ऐसे व्यक्ति के साथ विवाह किया जो सचमुच बहुत बड़े थे; असाधारण थे। वे मुझे चाहते थे। मैं उन्हें प्यार करती थी। फिर भी हमारा दाम्पत्य-जीवन नष्ट हो गया।

—एक मिनट। अपने पति के सम्बन्ध में बताने से पहले उस दूसरे व्यक्ति के बारे में कहो। मैंने कहा न, मैं उनसे द्वेष नहीं करता। मेरा द्वेष और क्रोध अपने से हीन व्यक्तियों के प्रति ही हो सकता है।

—किसके सम्बन्ध में कहूँ?

—उस नराधम के सम्बन्ध में—जिसने तुम्हारे जीवन में विष घोल दिया! वह कौन था?

—मास्को का एक सुप्रसिद्ध वकील। वे मेरे पिता के मित्र थे। उनकी मृत्यु के पश्चात् हमारी हालत बहुत खराब हो गयी। उसने हमारी मदद की। वह अविवाहित और धनी था। उसके बारे में मैंने जो कुछ कहा है, उससे लगता है कि वह दिलचस्प आदमी होगा। सचमुच वह बिलकुल साधारण व्यक्ति नहीं था। नाम भी बताऊँ?

—मैंने उसे एक बार देखा है। मैं उसे जानता हूँ।

—सचमुच?

—उस समय शायद तुम स्कूल में ही पढ़ती थी। मैं भी लड़का ही था। एक दिन तुम्हारी माँ के विष लेने पर हम वहाँ गये थे। उस सन्ध्या के समय मैंने तुम्हें उसके साथ देखा था।

—ओह, मुझे याद आ रहा है।

—वहाँ कोमारोवस्की था।

—हो सकता है? बिलकुल संभव है। हम साथ ही रहते थे।

—तुम लजा रही हो?

—उनका नाम सुनना मुझे बड़ा विचित्र-सा लगता है। बहुत दिन हो गये, सुनने की अभ्यस्त नहीं हूँ न? आज आपके मुँह से उनका नाम सुन रही हूँ—इसलिये!

—मेरा उन दिनों का एक दोस्त मेरे साथ था। उसी ने मुझे बताया था। वह कोमारोवस्की को जानता था। इसलिए कि एक बार बड़ी असामान्य स्थिति में उसने उसे देखा था। बात यह थी कि जब वह लड़का ही था, तो एक रेल से यात्रा करते समय उसने मेरे करोड़पति उद्योगी पिता की आत्महत्या की घटना अपनी आँखों देखी थी। वे चलती गाड़ी से कूद पड़े थे। यही कोमारोवस्की मेरे पिता का वकील था। वह उस समय उनके साथ था। उसने पिताजी को खूब शराब पिलायी और उन्हें धुत्त कर दिया। इनकी चालों के कारण ही उनका सारा कारोबार इस तरह चौपट हो गया कि वे तकरीबन दिवालिया हो गये। मेरे पिता की आत्महत्या

का दोष इसी आदमी के सिर पर है। इसी के कारण मुझे अनाथ होना पड़ा।

—संभव है। कितनी असाधारण बात है! सचमुच—यह बात सही है? तो आपके जीवन में दु:ख घोलने के लिए भी वही उत्तरदायी था? सम्भवत: दु:ख की यह समानता ही हमें एक दूसरे के करीब ले आई है। लगता है, भाग्य ने पहले से ही सबकुछ निर्धारित कर रखा था।

यही एक ऐसा व्यक्ति है जिसके प्रति मेरी अदम्य शत्रुता है, पागलपन भरा द्वेष है।

—मैं उससे घृणा करती हूँ।

—लेकिन तुम स्वयं नहीं जानती। मनुष्य का स्वभाव कितना विचित्र है, विरोधी विचारों और रहस्यों से भरा हुआ! उस व्यक्ति के प्रति तुम्हारी व्यक्त घृणा में हो सकता है कि कोई ऐसी चीज़ हो, जो अपने अबाध्य प्रेमी के प्रेम से भी बढ़ तुम्हें किसी समय तसल्ली दे सके। तुम्हें उससे भी अधिक अपने निकट खींच ले!

—ओह, कितनी भयंकर बात है। यद्यपि यह कितनी अस्वाभाविक है, फिर भी, जिस तरीके से आप कह रहे हैं, मुझे लगता है कि यह बिलकुल सही है। लेकिन सच होते हुए भी कितनी भयंकर!

—डरो मत। मेरी बात पर ध्यान मत दो। मैं सिर्फ़ इतना ही कहना चाहता हूँ कि मुझे सिर्फ़ द्वेष है उनसे, जो अचेतन रूप से दूषित हैं, जिसे तुम ग्रहण नहीं कर सकतीं। जिसके बारे में तुम अनुमान भी नहीं लगा सकतीं। मैं तुम्हारे हेयर-ब्रश, शरीर के पसीने की प्रत्येक बूँद, हवा के उन प्रत्येक किटाणुओं से, जिन्हें तुम साँस के जरीये ग्रहण करती हो, इसलिए द्वेष करता हूँ, क्योंकि वे तुम्हारे रक्त में घुस कर विष घोलते हैं। उसी तरह संक्रामक बीमारी की तरह मैं उस व्यक्ति से, कोमारोवस्की से इसलिए द्वेष करता हूँ कि मुझे लगता कि एक दिन यमदूत की तरह वह तुम्हें मुझसे छीन कर अपने साथ ले जायेगा। मुझे मालूम है, तुम इसे भ्रान्तिपूर्ण मूर्खता कहोगी। लेकिन इससे अधिक स्पष्ट रूप से किस तरह

कहूँ कि मैं तुम्हें मन, मतिष्क, और परिणाम की किसी भी सीमा से अधिक प्यार करता हूँ।

बारह

—तुम्हारे पति के बारे में कुछ और जानना चाहता हूँ।

—मेल्यूजेवो में जब मैं उनकी तलाश कर रही थी, मैंने आपको बहुत कुछ बताया था। इसके बाद जब आपने अपनी गिरफ्तारी और उनके सामने अपनी पेशी की कथा सुनाई, उस समय भी मैंने उनके बारे में बहुत कुछ कहा था। एक बार जब वे अपनी कार में बैठ रहे थे, मैंने दूर से उन्हें देखा है। वे चारों ओर से संरक्षकों से घिरे हुए थे। लेकिन मुझे वे ठीक पहले जैसे ही दिखाई दे रहे थे। उनके चेहरे पर वही ईमानदारी की रौनक, उनके सौंदर्य में वही दृढ़ता, वही पौरुष, वही आडम्बरहीनता! मुझे लगा कि उनकी भाव-भंगिमा में कुछ टूटी हुई चीज़ है, जिससे उनका चेहरा बेरंग दिखाई देने लगा है। सिद्धान्त और विचारधारा की प्रतीक पाषाण-प्रतिमा के रूप में एक जीवित मनुष्य का चेहरा देख कर मैं डर गयी थी। मुझे लगा कि उन्होंने अपने आपको किसी भयंकर और निर्दय वस्तु अथवा व्यक्ति के प्रति समर्पित कर दिया है; जो अन्त में उन्हें ही निगल जायेगा। जैसे उन पर किसी ने हस्ताक्षर अंकित कर दिये हों—और यह बात आज सत्य सिद्ध हो रही है। लेकिन शायद मैं कुछ बहक-सी गयी हूँ। शायद मैं आपसे बहुत ज्यादा प्रभावित हुई हूँ—खास कर जब आपने अपनी मुलाकात के सिलसिले में, उनका जो वर्णन किया था—उससे! बावजूद इसके कि हम एक दूसरे के प्रति क्या महसूस करते हैं—मैं आपसे बहुत ज्यादा प्रभावित हुई हूँ।

—क्रान्ति से पहले तुम्हारा वैवाहिक जीवन कैसा था?

—जब मैं बच्ची ही थी, मैं चरित्र की निर्मलता के प्रति बहुत निष्ठावान थी। उसके प्रति मेरा आकर्षण था, रुचि थी। पाशा मेरी इस इच्छा की पूर्ति थे। पाशा और गुल्युलिन और मैं एक ही जग़ह रहते थे।

जब वे बहुत छोटे थे, तभी से वे मेरे प्रति आकर्षित थे। जब भी वे मुझे देखते, शर्म से लाल हो जाते। मुझे यह सब कहना तो नहीं चाहिए। लेकिन इस तरह का नाटक करना कि मैं कुछ जानती ही नहीं थी, यह उससे भी बुरा है। मैं सब कुछ जानती थी। लेकिन प्रत्येक बालक अपने इस बचपने की भावनाओं को, अपने अहंकार के विरुद्ध प्रदर्शित नहीं करना चाहता। उसके चेहरे की ओर देख कर एक ही नज़र में सब कुछ समझा जा सकता था। जिस प्रकार आप में और मुझमें बहुत सी समानताएँ हैं, उसी तरह उनमें और मुझमें बड़ी विभिन्नता थी। मैंने हृदय से उस छोटी उम्र में ही उनका वरण कर लिया था और निश्चय किया था कि जब बड़ी होऊँगी, उन्हीं के साथ ब्याह करूँगी। मुझे ठीक याद नहीं, उनके पिता या तो रेल्वे में सिगनलमैन थे, अथवा गार्ड। अपने परिश्रम और प्रतिभा के बल पर उन्होंने शास्त्रीय ग्रंथों और गणित शास्त्र का काफी गहराई से अध्ययन किया और पारंगत हो गये। यह कोई छोटी बात नहीं।

—जब तुम एक दूसरे को इतना चाहते थे, फिर वैवाहिक जीवन किस प्रकार नष्ट हुआ?

—आप जानते हैं कि इसका जवाब देना कितना कठिन है? आप स्वयं समझदार हैं, आपको क्या बताऊँ कि इस अर्से में किस तरह का मानव जीवन प्रस्तुत हुआ है—कि रूस के तमाम परिवार छिन्न-भिन्न हो गये हैं—मेरे और आपके घरेलू जीवन का ही सवाल नहीं है, यह सवाल सबका है। वे प्यार करते हों अथवा न करते हों, उनका चरित्र कैसा ही क्यों न हो, प्रस्तुत परिस्थितियों ने प्रत्येक रूसी नागरिक को प्रभावित किया है। सारी व्यवस्था धूल में मिल गई है। समाज के पुनर्गठन की योजना में सब कुछ झाड़-पोंछ कर फेंक दिया गया है। जो कुछ शेष रहा है—वह है मानवता की काँपती हुई आत्मा, जो कि इस पाशविक शक्ति के सामने नतमस्तक होने के लिए बाध्य है। मनुष्य की सनातन स्वाभाविक प्रवृत्ति, कि वह अपने निकटस्थ पड़ोसी से सम्पर्क स्थापित

करे, खत्म हो गई है। जिस प्रकार संसार के प्रारम्भिक काल में, आदम और ईव के पास अपना शरीर ढँकने को कुछ भी नहीं था, ठीक उसी तरह आज हमारे पास लज्जा ढँकने के लिए कुछ भी नहीं है। हजारों सालों से मनुष्य की प्रवृत्त उन्नति के हम ध्वंसावशेष मात्र हैं—आज सिवाय उसकी याद में रोने के और हमारे पास बचा ही क्या है? उसी आदम और ईव के रूप में हम एक दूसरे के सामने प्रस्तुत हैं, उसी तरह हम एक दूसरे को प्यार करते हैं। एक दूसरे से सट जाते हैं।

तेरह

थोड़ी देर मौन रहने के बाद, शान्त होकर उसने आगे कहा—

यदि किसी दिन स्ट्रेलिनिकोव पुन: पाशा आन्तिपोव के रूप में अपनी विद्रोही उग्र प्रवृत्ति को छोड़ कर वापस आ सके; यदि किसी दैवी चमत्कार के कारण उन्हें मैं उनकी मेज पर, पुस्तकों में तल्लीन देख सकूँ—तो मैं पृथिवी के किसी भी कोने में क्यों न रहूँ—नंगे पाँव, उन तक दौड़ कर पहुँच जाऊँगी। मेरे रोंएँ-रोंएँ से उनके लिए पुकार निकलेगी। उनकी पिछली सरल ईमानदारी के प्रति मैं संसार की कोई भी वस्तु न्योछावर करने को तैयार हूँ। यहाँ तक कि आपको भी, जिनके प्रेम में निश्छल आनन्द है, स्वाभाविकता है और जो मेरा अपना एक अंग बन गया है—उसे भी उनके लिए छोड़ दूँगी। ओह, माफ करना...पता नहीं मैं क्या कह गयी...

वह उसकी छाती पर लुढ़क पड़ी और रोने लगी।

उसने अपने आँसू पोंछ कर संयत स्वर में कहा—क्या कर्त्तव्य की यही पुकार आपको टोन्या के पास नहीं खींच रही है? आह, हे प्रभु, हम कितने असहाय हैं। हम लोगों का क्या होगा? हम क्या करें?

—मैंने आपके प्रश्न का जवाब नहीं दिया कि हमारे वैवाहिक जीवन के नष्ट हो जाने का कारण क्या है? मैं बताती हूँ। यह सिर्फ़ मेरी ही कहानी नहीं है, यह आज बहुत से लोगों का दुखान्त दुर्भाग्य है।

—कहो।

—युद्ध से दो साल पहले हमारा विवाह हुआ था। हमारे दाम्पत्य जीवन का श्रीगणेश हुआ ही था कि युद्ध छिड़ गया। इस पीढ़ी के लिए सबसे अधिक दुर्भाग्यपूर्ण घातक अगर कोई चीज़ है तो वह है—युद्ध! मुझे अपने बचपन के दिन याद आते हैं, जब कि हम गत शताब्दियों के शान्तिपूर्ण दृष्टिकोण से सहमत थे। यह सभी लोग मानते थे कि तर्क-संगत बात सुनी जाय, लेकिन किया वही जाय, जिसके लिए आत्मा गवाही दे। हत्याओं की कथा सिर्फ़ उपन्यास, कहानियों, नाटकों आदि में ही पाई जाती थी। वास्तविक जीवन में एक आदमी द्वारा दूसरे आदमी के ख़ून करने की घटना शायद ही कभी हो पाती।...और इसके बाद अचानक सब कुछ बदल गया। शान्त, निर्दोष और व्यवस्थित जीवन के बदले रक्तपात, आँसू और पागलपन भरा, कानून द्वारा मान्य किया गया पुरस्कृत हत्याकाण्ड आरम्भ हुआ।

'मैं कहती हूँ, इसकी सज़ा उन लोगों को एक न एक दिन अवश्य भुगतनी होगी। आपको तो याद ही होगा कि किस प्रकार विघटन का आरम्भ हुआ था। किस प्रकार एक साथ तमाम चीज़ें खंडित होने लगीं। खाद्यान्न की पूर्ति किस प्रकार समाप्त हो गयी। घरेलू जीवन किस प्रकार विषग्रस्त हो गया और नैतिक पतन किस तेजी से आरम्भ हुआ?'

—मैं सुन रहा हूँ। तुम कहती रहो। मैं जानता हूँ कि आगे तुम क्या कहोगी। इस विषय पर तुम्हारा वक्तव्य मुझे बहुत दिलचस्प लग रहा है।

—इसके बाद सारे रूस में चारों ओर झूठ और धोखा छा गया। यही तमाम बुराइयों की जड़ है। व्यक्तिगत विचारों के मूल्य का ह्रास होते ही लोग सोचने लगे कि नैतिकता पुराने जमाने की बात हो गयी है। दूसरों के साथ सुर से सुर मिला कर एक ही गीत गाने की विचित्र प्रथा का आरम्भ हुआ। दूसरों के लादे गये विचारों पर जीना; जिस प्रकार पहले जारशाही के गुणानुवाद गाये जाते थे, उसी तरह अब क्रान्तिकारियों की विरुदावली गायी जाने लगी। सामाजिक बुराइयाँ संक्रामक बीमारियों की

तरह बढ़ने लगीं। उससे कोई चीज़ नहीं बची, उसका प्रभाव सारी चीज़ों पर पड़ा। कुछ ऐसी गड़बड़ी हुई कि लोग स्वाभाविक और मुक्त होने के बजाय, मूर्खतापूर्ण आडम्बर रचने में व्यस्त हो गये। प्रत्येक की बातचीत में कृत्रिमता, प्रदर्शन तथा बाध्यता स्पष्ट दिखाई देने लगी। लोग सोचने लगे कि अखिल विश्वव्यापी महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों के बारे में उन्हें पर्याप्त रूप से अपने आप को विद्वान साबित करना ही चाहिए।

'पाशा आन्तिपोव! वे अपने प्रति कितने ईमानदार और नपे-तुले चुस्त व्यक्ति थे, बाह्य रूप को वास्तविकता से अलग करने में समर्थ थे—पता नहीं, जीवन की इस विडम्बना को उन्होंने समझा क्यों नहीं? यहीं उन्होंने भयंकर और घातक गलती की। उन्होंने समय की गति को गलत समझा। चारों ओर व्याप्त सामाजिक बुराइयों को उन्होंने व्यक्तिगत और घरेलू रूप में समझा। दकियानूसी विचारधारा और अस्वाभाविक औपचारिक स्वर की इस स्थिति को देख कर उन्होंने अपने आप को बिलकुल गया-गुज़रा समझा। उन्हें लगा कि जैसे उनका अस्तित्व ही नहीं है। आप कहेंगे, कि इस तरह की मामूली बात का वैवाहिक जीवन पर असर कैसे पड़ सकता है? लेकिन आपको कैसे बताऊँ कि ये बातें कितनी महत्त्वपूर्ण हैं। इन्हीं छोटी बातों के कारण वे क्या कुछ नहीं कर बैठे?'

'युद्ध में जाने के लिए उनसे किसी ने नहीं कहा। वे सोचते थे कि वे हम लोगों के लिए भार हैं; और उनके चले जाने से हम लोग आराम की साँस ले सकेंगे। उनके पागलपन की यही शुरूआत थी। इस प्रकार के गलत निर्देशित बचपन भरे पागलपन के कारण उन्होंने ऐसी छोटी-मोटी बातों से बुरा मान लिया, जिन पर साधारणतया कोई ध्यान ही नहीं देता। घटनाचक्र ने उन्हें उद्विग्न कर दिया। वे इतिहास के साथ झगड़ते रहे, कलह करते रहे। इतिहास के विरुद्ध अपनी जीत के पीछे वे इस तरह उन्मत्त हो उठे। यही मूर्खतापूर्ण महत्त्वाकांक्षा उन्हें मृत्यु-पंथ की ओर ढकेले लिये जा रही है। हे प्रभु, काश, मैं उन्हें इससे बचा सकती।

—उसके लिए तुम्हारा प्रेम कितना निर्मल और अटूट है। तुम्हारा यह प्यार बना रहे। मैं बीच का काँटा नहीं बनूँगा। मैं उनसे द्वेष नहीं करता।

चौदह

ग्रीष्म ऋतु आई और चली गई। उस ओर किसी ने ध्यान ही नहीं दिया। मास्को जाने की योजना बनाते-बनाते यूरी ने तीन अस्थाई काम हाथ में ले लिए। फिर भी मुद्रा-ह्रास के कारण जीवन निर्वाह कठिन था। उषाकाल में, जब कौओं की आवाज़ सुनाई देती, वह उठता। 'जॉइन्ट' सिनेमा के आगे यूराल्स कजाक सेना के प्रिन्टिंग प्रेस—जिसका कि नाम अब 'रेड कम्पोजिटर' रख दिया गया था, को पार कर वह अस्पताल के बाहरी रोगियों के विभाग में जाकर कार्य करता। यही उसका मुख्य काम था।

इस दस दिवसीय सप्ताह के अन्तर्गत म्येस्की स्ट्रीट में 'युर्यातिन स्वास्थ्य सेवा' की तीन बैठकों में वह भाग ले चुका था।

नगर के दूसरे भाग में सामदेवयातोव के पिता द्वारा अपनी पत्नी की स्मृति में बनाये गये अस्पताल का स्त्री-चिकित्सा विभाग था। उसका नाम बदल कर अब रोजा लक्जेम्बर्ग रख दिया गया था। वहाँ वह चिकित्सा के घटाये हुए पाठ्यक्रम के अन्तर्गत सामान्य रोग-निदान, औषधि विज्ञान तथा शल्य चिकित्सा अथवा एकाध ऐच्छिक विषय पर भाषण देने का काम करता। रात को जब वह काम से वापस लौट कर आता तो भूख और थकान के मारे टूट-सा जाता। लारा उस समय अपने काम में व्यस्त होती। अपना स्कर्ट ऊपर खोंसे, बाँहें चढ़ाये, बिखरे बालों के साथ जब वह काम करती तो वह काफी लम्बी दिखाई देने लगती; जैस लम्बी एड़ी वाले जूते पहने वह किसी नृत्य में नाचने के लिए जा रही हो कि लगता वह कोई शाही सुन्दरी हो। यूरी उसकी ओर देख कर डर जाता।

वह रसोई बनाती, कपड़े धोती, फर्श साफ करती, कपड़ों की मरम्मत करती, इस्तरी करती। इन सबसे फुरसत मिलती तो वह कात्या को

बैठ जाती अथवा नाक तक किताब सटाये राजनीतिक पुस्तकें पढ़ती; ताकि पुनर्गठित स्कूलों में अपने पढ़ाने के पुराने पद पर वह जा सके। ज्यों-ज्यों वह लारा और कात्या के निकट आता जाता, त्यों-त्यों अपने घरेलू जीवन को मान्यता देने का उसका साहस टूटता जाता। परिवार के प्रति अपने टूटे हुए विश्वास, और उनके प्रति अपने कर्त्तव्य की भावना से वह झुक-सा जाता। लारा अथवा कात्या के प्रति उसका कोई विरोध नहीं था। बल्कि उनके प्रति उसका उतना ही प्रेम अब भी था। अविभाज्य, अखंडित!

लेकिन फिर भी अन्तर्द्वन्द्व की पीड़ा से वह दुःखी था। लेकिन अब पुराने रोग के रोगी की तरह वह इससे अभ्यस्त हो गया था।

पन्द्रह

दो तीन महीने इसी तरह गुज़ारने के बाद अक्टूबर में एक दिन यूरी ने लारा से कहा—ऐसा लगता है कि मुझे अब नौकरी छोड़नी होगी। हमेशा ऐसा ही होता है। पहले सब कुछ अच्छा ही लगता है। वे कहते हैं—'आओ, हम अच्छे कामों का और ईमानदारी का स्वागत करते हैं। हम नये विचारों को पसन्द करते हैं। हमारे लिए इससे बढ़ कर ख़ुशी की क्या बात हो सकती है? अपना काम करो, अनुसंधान जारी रखो, और संघर्ष करते रहो।'

व्यावहारिक रूप से ये सब क्रान्ति और सरकार की प्रशंसा में इस्तेमाल किये जाने वाले शब्द मात्र हैं। मैं इससे ऊब गया हूँ। मैं ऐसी चीज़ों से अभ्यस्त नहीं हूँ।

मैं उनका पक्ष नहीं लेता। लेकिन जानता हूँ कि वे अपने दृष्टिकोण से सही हैं। फिर भी मैं उन्हें युग-नायक नहीं मानता। न अपने आप को उनसे हीन समझता हूँ और न अस्पष्टता और अत्याचार का पक्ष ही लेता हूँ। वेन्देनयापिन के बारे में तुमने कुछ सुना है?

—आप ही ने एक बार मुझे बताया था। सीमा तुन्तसेवा उनके बारे में अक्सर बातें किया करती है। वह उनकी बड़ी प्रशंसक है। लेकिन मैंने

उनकी कोई पुस्तक अभी तक नहीं पढ़ी। मेरी रुचि दर्शन में नहीं है। मेरा खयाल है कि जीवन और कला में दर्शन का महत्त्व नमक की तरह है। लेकिन इसी को बहुत अधिक महत्त्व देना मुझे वैसा ही लगता है, जैसा किसी को नमक के पानी पर रहने के लिए कहना। इन ऊटपटांग बातों के लिए मुझे माफ करना।

—नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। मैं तुम्हारे विचारों से सहमत ही हूँ। मेरा खयाल है कि मुझ पर मेरे मामा का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा है। मैं अन्तःप्रेरणा पर विश्वास करता हूँ। कितनी अजीब बात है यह, कि लोग कहते हैं कि मेरा बीमारी का विश्लेषण खरा होता है! यह है भी सच कि मैं इसमें गलती नहीं करता। लेकिन सारी स्थिति एक ही नजर में भाँप लेना अन्तःप्रेरणा नहीं है तो और क्या है?

अपने लेक्चरों में इसका उल्लेख करने का साहस जब मैंने किया तो सब लोग मिल कर शोर मचाने लगे—यह आदर्शवाद है, रहस्यवाद है, गोथे का प्रकृति दर्शन है, शेलिंगवाद है।

अब मैं यहाँ से बाहर चला जाना चाहता हूँ। फिर भी तब तक अस्पताल में काम करता रहूँगा, जब तक कि वे मुझे निकाल नहीं देते। लेकिन स्वास्थ्य विभाग और स्त्रियों की चिकित्सा वाली संस्था से त्यागपत्र दे दूँगा। यह तुम्हें दुखी करने के लिए नहीं कह रहा हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि किसी दिन वे मुझे निश्चित रूप से गिरफ्तार कर लेंगे। भगवान की दया से अभी तक ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति नहीं आई है। लेकिन तुम ठीक कहती हो, सावधान रहना अच्छा ही है। जैसा कि मैंने देखा है जब भी सरकार सत्तारूढ़ होती है, वह कुछ निश्चित स्थितियों के क्रम से गुज़रती है। प्रथम चरण में यह तर्क, आलोचना और पूर्वग्रह की भावना पर विजय होती है। इसके बाद दूसरे चरण में दूषित शक्तियों का, झूठी सहानुभूति रखने वालों का और मिर्जापुरी लोटों का प्रभुत्व हो जाता है। सन्देहों की भरमार, खुफिया लोगों की भीड़, षड्यंत्रबाजी और घृणा का प्रचार—यही सब इन दिनों हो रहा है। हम दूसरे चरण को पार कर रहे

हैं। एक उदाहरण देता हूँ। स्थानीय क्रान्तिकारी ट्रिब्यूनल में वोदात्स्कोय से स्थानान्तरित दो नये सदस्य कार्यकर्ताओं में राजनीतिक अपराधी तिमिरजिन और आन्तिपोव भी हैं। •

—वे मुझे अच्छी तरह से जानते हैं। उनमें से एक मेरे ससुर हैं। उनके यहाँ आने पर ही मैं कात्या और अपने जीवन के सम्बन्ध में चिन्ता कर रही हूँ। आन्तिपोव मुझे पसन्द नहीं करते। वे कुछ भी कर गुज़र सकते हैं। क्रान्तिकारी न्याय के नाम पर इन दिनों वे चाहें तो मुझे और पाशा को समाप्त कर सकते हैं।

सचमुच थोड़े दिनों के बाद ही कार्यवाही शुरू हो गयी। अस्पताल के पास वाले 49, बयानोवका स्ट्रीट में बेवा गोरेग्लडोव के मकान की तलाशी ली गयी। शस्त्रागार हाथ लगा। क्रान्तिकारी विरोधी षड्यन्त्र का पता चल गया। सूचना मिली कि संदिग्ध व्यक्ति नदी के मार्ग से भाग निकले। लोग बातें करते 'इससे उन्हें क्या लाभ होगा? हाँ, यदि वे ब्लाग वेश्चेंक में अमूर में कूद पड़ते तो तैर कर चीन तक पहुँच जाते।'

लारा ने कहा:—स्थिति अच्छी नहीं है। हम भी अधिक दिनों तक सुरक्षित नहीं रह सकते। किसी भी समय मुझे और आपको गिरफ्तार किया जा सकता है। मुझे फिक्र यही है कि कात्या का क्या होगा? मैं एक माँ हूँ और इस प्रकार की दुर्घटना अपने जीते जी कैसे होने दूँ? इस बारे में सोच कर कोई योजना बनानी होगी। चिन्ता के मारे मैं अपना होश खो रही हूँ।

—ऐसी हालत में हम कर ही क्या सकते हैं? इससे बच निकलना हमारे बूते के बाहर है। सब कुछ भाग्य पर ही निर्भर है।

—मुझे मालूम है कि बच निकलना मुश्किल है। ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ हम जा कर छिप सकें। फिर भी सक्रिय क्षेत्र से हम दूर जा सकते हैं। वेरिकिनो जाया जा सकता है। वह सुनसान जगह है। वहाँ हम कम सक्रिय रहेंगे। लोगों की नजरों से बचे रहेंगे। हमारा पता लगा सकने में उन्हें कम से कम एक साल लग जायेगा। तब तक शायद हालत सुधर

जायें। सामदेवयातोव हमें शहर की घटनाओं से सूचित करते रहेंगे। हो सकता है गुप्तवास करने में भी वे हमारी मदद करें। आपका क्या खयाल है? वह जगह निर्जन है, कोई प्राणी वहाँ रहता नहीं। लेकिन सुना है कि वहाँ आलू काफी तादाद में हैं। वह स्थान डरावना ज़रूर है, लेकिन आन्तिपोव और तिमिरजिन से ज्यादा नहीं!

—मैं क्या जवाब दूँ? तुम्हीं तो मास्को जाने के लिए मुझसे आग्रह कर रही थी! यह आसान है। स्टेशन पर पूछने पर मालूम हुआ कि अब उन्हें कालाबाजार करने वालों की ज्यादा फिक्र नहीं है। कागजों की ज्यादा जाँच पड़ताल नहीं होती। अब गोली चलाने की घटनाएँ भी कम होती हैं। वे इस काम से ऊब गये हैं। थक गये हैं। साथ ही अपने पत्रों का जवाब न मिलने के कारण मैं मास्को के बारे में चिन्तित हूँ। वहाँ जाकर देखना चाहिए कि उनके क्या हालचाल हैं? मुझे पत्र का इन्तज़ार करना चाहिए। लेकिन उस हालत में तुम्हारी योजना के अनुसार वेरिकिनो कैसे चला जाय? तुम अकेली तो ऐसी जगह जाना चाहोगी नहीं?

—नहीं। आपके बिना यह संभव नहीं।

—इसके बावजूद भी तुम मुझे मास्को जाने के लिए कहती हो?

—हाँ, आपको वहाँ अवश्य जाना चाहिए।

—सुनो। एक मजेदार योजना बताता हूँ। हम तीनों मास्को चल दें।

—मास्को? आप कह क्या रहे हैं? मैं वहाँ क्या करूँगी? नहीं। मैं नहीं जा सकती। मेरे पाशा के भाग्य का फैसला यहीं होगा। मैं यहीं रहूँगी ताकि आवश्यकता पड़ने पर मैं वक़्त पर हाजिर रह सकूँ।

—अच्छी बात है। कात्या के बारे में तुम्हारा क्या विचार है?

—सीमा तुंतसेवा मुझसे मिलने के लिए कभी-कभी आती है। मैंने कात्या के बारे में उससे बातचीत की है।

—जानता हूँ। मैंने उसे कई बार देखा है।

—मुझे ठीक-ठीक नहीं मालूम आप मर्दों की आँखें कहाँ जाकर टिक जाती हैं। मैं मर्द होती तो उससे प्रेम करने लगती। वह कितनी प्यारी, सुंदर, शिष्ट, निपुण, शिक्षित, उदार और समझदार है!

—यहाँ आने पर उसकी बहन ग्लाफीरा ने मेरे बाल बनाये थे।

—ये दोनों, अपनी बड़ी बहन अवद्योत्या के साथ रहती हैं। यह एक अच्छा, ईमानदार और काम करने वाला परिवार है। मैं चाहती हूँ कि यदि कोई बुरी घटना घटी—आप और मैं गिरफ्तार कर लिये गये, तो कात्या को वे अपने पास रख लें और उसकी देखरेख करें।

—यदि कोई दूसरा उपाय नहीं हो, तभी। भगवान न करे, ऐसा हो।

—लोग कहते हैं कि सीमा का दिमाग ठीक नहीं है। यह विशेषण उसे अपने गहरे और मौलिक दृष्टिकोण के कारण मिला है। आपके और उसके विचारों में असाधारण समानता है। इसीलिए सोचती हूँ कि हमारी अनुपस्थिति में कात्या का लालन-पालन सीमा द्वारा ही हो।

सोलह

एक बार और यूरी स्टेशन तक जा कर खाली हाथों लौट आया। अभी तक सब कुछ अनिश्चित था। यूरी और लारा—दोनों के सामने अज्ञात स्थिति प्रस्तुत थी। प्राथमिक हिमपात के कारण अन्धेरा छाया हुआ था।

सीमा लारा से मिलने आई थी और वे आपस में बातें कर रही थीं, लेकिन लगता था कि सीमा भाषण दे रही हो। यूरी उनके बीच में पड़ना नहीं चाहता था। एकान्त में रहने के लिए, वह बगल के कमरे में जा कर सोफे पर लेट गया। दोनों कमरों के बीच का दरवाजा खुला था, पर्दा लटक रहा था; और दूसरे कमरे से उनकी आवाज़ स्पष्ट सुनाई दे रही थी।

—मैं सिलाई का काम करते हुए भी तुम्हारी बातें अच्छी तरह से ध्यानपूर्वक सुन सकती हूँ। मैंने कालेज में इतिहास और दर्शन शास्त्र का अध्ययन किया था। इसलिए इन विषयों पर मुझे तुम्हारा दृष्टिकोण बहुत पसन्द है। तुम्हारी बातें बहुत मीठी होती हैं! मुझे बहुत अच्छी लगती हैं।

कात्या के बारे में चिन्ता करते-करते हम पिछली कुछ रातों तक सो नहीं सके। माँ होने के नाते मेरा यह फ़र्ज़ है कि यदि हमें कुछ हो जाय तो कात्या सुरक्षित रहे। इस पर मैं धीरज और शान्ति के साथ विचार करना चाहती हूँ। लेकिन मेरी अक्ल कुछ भी काम नहीं करती।...अब बर्फ़ गिरने वाली है। ऐसे मौसम में तुम्हारा विद्वत्तापूर्ण लम्बा भाषण मुझे अच्छा लगता है। तुम कहती रहो सीमा, मैं सुन रही हूँ।

—मैं पिछली बार कहाँ तक कह चुकी हूँ?

लारा के उत्तर को यूरी नहीं सुन सका। सीमा कह रही थी—'संस्कृति' और 'युग' की बातें मुझे पसन्द नहीं। वे बड़ी भ्रमपूर्ण होती हैं। मेरा खयाल है कि मनुष्य कर्म और प्रभु के अंश से बना हुआ है। मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति उसकी शताब्दियों की साधना और कर्मानुष्ठान का फल है। इस प्रकार की साधना पहले पहल हुई इजिप्त में, फिर ग्रीस में। प्राचीन पैगम्बरों के धर्म-शास्त्र में तीसरी जगह। इसके मुकाबले में अभी तक कोई चीज़ सामने आई नहीं। आज के युग में इसी के लिए प्रेरणा है—यही ईसाई धर्म है। नये और पुराने धर्म-शास्त्रों के अनुसार प्रत्येक शहादत प्रभु ईसा मसीह के उद्भव का प्रतीक है। इस तरह से यह सिद्ध हो जाता है कि अर्वाचीन और प्राचीन धर्म-शास्त्र में निश्चित प्रभेद है।

प्रभु के जन्म के बाद कुमारी मेरी का कौमार्य अक्षत रहा। इन दोनों के बीच भिन्नता की एक रेखा खींची जा सकती है। ये किस प्रकार की घटनाएँ हैं? दोनों आधिदैविक हैं, दोनों को समान रूप से आश्चर्यजनक माना जाता है। इनमें फ़र्क़ यही है कि दोनों अपने-अपने तरीके से इसे आधिदैविक मानते हैं। एक पुराने जमाने के लोग, दूसरे रोमनकालीन लोग—वे अधिक परिष्कृत थे।

एक दृष्टान्त है कि मूसा समुद्र पर जादू के बल पर शासन करता है। सारे तत्त्व जादूगर की आज्ञाओं का पालन करते हैं। वहाँ सब कुछ सुना जा सकता है, देखा जा सकता है। इसके अनुसार सब कुछ या तो महान है अथवा भयंकर।

दूसरे दृष्टिकोण में इसी कथा की लड़की एक 'साधारण कन्या' के रूप में है, जिसकी ओर प्राचीनकाल में किसी ने ध्यान नहीं दिया था। वह गुप्त रूप से, शान्त भाव से एक बालक को जन्म देती है—जीवन का एक आश्चर्य प्रस्तुत करती है। बाद में इसी को 'सबका जीवन' कहा गया था। उसके बालक का जन्म सिर्फ़ कानूनी और सामाजिक मर्यादा की दृष्टि से ही अवैध नहीं है, बल्कि प्रकृति के भी विरुद्ध है। वह आवश्यकतावश बालक को जन्म नहीं देती, बल्कि एक चमत्कार के कारण, एक दिव्य प्रेरणा के कारण बालक को जन्म देती है—कि जीवन का आधार विवशता नहीं रहा—यह वही प्रेरणा है। सामान्य के स्थान पर असामान्य सिद्धान्त की रचना विवशता के बल पर नहीं, आत्म-प्रेरणा के बल पर ही सिद्ध हुई है।

प्राचीन युग के गुणों की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वहीन यह साधारण मानवीय घटना कितने महत्त्वपूर्ण तथ्य को प्रतिपादित करती है! यही नवीन धर्मादेश है! साधारण के स्थान पर असाधारण की प्रतिष्ठा, काम के दिनों के बजाय उत्सव, विवशता के बजाय, मुक्त प्रेरणा!

संसार में परिवर्तन हुआ। रोम एक किनारे रह गया। अनेक व्यक्तियों का शासन एक ओर धरा रह गया। 'एक तरह के लोग', 'एक राष्ट्र के रूप में' रहने के लिए, सशस्त्र सेना द्वारा जो कर्त्तव्य बोझ लादा गया था, वह समाप्त हो गया। एक नेता और एक राष्ट्र गुज़रे हुए जमाने की बात है। उसके स्थान पर व्यक्तित्व और स्वतन्त्रता के सिद्धान्त की प्रतिष्ठा हुई। मानवीय जीवन की कथा ईश्वर की कथा बन गई। चर्च की भाषा में इसी को इस तरह कहा जा सकता है कि—ईश्वरीय आदेश के समय आदम ने ईश्वर होने का प्रयास किया था; किन्तु वह असफल रहा। तब ईश्वर आदमी बनने के लिए इस धरातल पर प्रकट हुआ—ताकि आदम ईश्वर बन सके।

थोड़ी देर रुक कर सीमा ने वापस अपने विषय पर आने की चेष्टा करते हुए कहा—कामगारों का ध्यान रखने, माताओं के संरक्षण की

व्यवस्था, धन की सत्ता के विरुद्ध संघर्ष, हमारे क्रान्तिकारी युग की देन है—नवीन, चिरकालिक स्थायी सफलताएँ! परन्तु जीवन की व्याख्या और प्रसन्नता के दर्शन के सम्बन्ध में, इसके अन्तर्गत जो शिक्षा दी जाती है—यह असंभव है कि उसे गम्भीर रूप में ग्रहण किया जाय? यह अतीत का कितना हास्यास्पद अवशेष है? यदि इन नेताओं की भाषण अथवा लेखन-शक्ति में इतिहास के प्रवाह को बदलने की इतनी शक्ति है, तो हमें आदिम जाति एवं पुराने लोगों के बाइबिल युग में लौट जाना होगा। लेकिन गनीमत है कि ऐसा हो नहीं सकता।

'अब कुछ क्राइस्ट और मेरी मेगडोलेन के बारे में। प्रार्थना के अन्तर्गत 'भावना' शब्द प्राथमिक रूप से कष्ट—क्राइस्ट की 'भावना' से है। बाद में आनन्द और बुराइयों के लिए इस शब्द का प्रयोग किया गया है—'मेरा हृदय भावनाओं का गुलाम है, मैं जंगल के जानवर की भाँति हो गया हूँ। स्वर्ग से निष्कासित हम अपनी भावनाओं के गुलाम न रह कर, पुनः उसमें प्रवेश के योग्य बने।'

'हो सकता है, मैं गलती कर रही होऊँ, लेकिन मैं भावनाओं को अवरुद्ध करने और शरीर को पीड़ा पहुँचाने के सिद्धान्त में विश्वास नहीं करती। इस प्रकार कठोर कष्ट और पश्चात्ताप से शरीर की विभिन्न दुर्बलताओं को अधिक महत्त्व मिलता है और बारम्बार यह देखने की इच्छा भी होती है कि हमारा शरीर दुर्बल है या सशक्त?

'ईस्टर के दिनों में मृत्यु के अवसर पर मेरी-मेगडोलेन के क्राइस्ट के पुनरुद्भव के बारे में उल्लेख किया है। इसका ठीक-ठीक कारण तो मैं नहीं जानती, लेकिन मुझे लगता है कि जीवन-मुक्ति के समय यह उक्ति यथेष्ट रूप से सामयिक है। अब देखना यह है कि इसमें कितनी सच्ची भावनाएँ हैं और कितना कठोर निर्देशन!

'हो सकता है, यह कोई दूसरी मेरी हो, अथवा मेरी मेगडोलेन ही हो। वह ईश्वर से प्रार्थना करती है—मुझे ऋण मुक्त कर दो। जिस प्रकार मैं अपने बाल खोल देती हूँ, मुझे बुराइयों के बन्धनों से मुक्त कर दो।

'पश्चात्ताप की अभिव्यक्ति, क्षमा की आकांक्षा, अधिक ठोस और वास्तविक हो नहीं सकती।

'चर्च के सिद्धान्त का एक विस्मृत भाषण है, जिसमें मेरी मेगडोलेन का सुनिश्चित रूप से उल्लेख किया गया है। वह क्राइस्ट से पश्चात्ताप के आँसू स्वीकार करने की प्रार्थना करती है। अपनी वेदना की सचाई से प्रभावित होने की प्रार्थना करती है; कि वह अपने बालों से क्राइस्ट के परम पुनीत चरणों को पखार सके, ताकि स्वर्ग में भय और लज्जा से दबी हुई, वह स्मरण दिला सके कि उसके केशों में ईश्वर ने स्थान पाया था। 'हमें छूने दो आपके परम पुनीत चरण! मुझे आँसुओं से उन्हें भिंगोने दो।'

'यह सब है बालों के बारे में! वह कहती है—मेरे अपराधों और आपके आदेशों की गहराई के भार को और कौन वहन कर सकता है?

'कितनी समानता है! प्रभु और जीवन के बीच कितना तादात्म्य! भगवान और व्यक्ति के बीच, भगवान और स्त्री के बीच कितना सहज आत्म-निवेदन!

सत्तरह

स्टेशन से थका हुआ यूरी घर लौटा था। 9 दिन तक डट कर काम करने के बाद छुट्टी के दिन वह काफी देर तक सोता रहता। उसकी आँखें भारी हो रही थीं, फिर भी वह सीमा की बातचीत सुन रहा था। सुनना अच्छा लग रहा था। उसने सोचा—वास्तव में इसने कोल्या मामा की पुस्तकों में से ये विचार लिये हैं। फिर भी यह कितनी बुद्धिमति है, कितनी प्रतिभावान।

वह उठ कर खिड़की के पास चला गया। अन्धेरा हो रहा था और लग रहा था कि बाहर बर्फ़ गिर रही होगी। अपना स्थान ढूँढ़ते-ढूँढ़ते फुदकती हुई दो चिड़ियाँ अन्दर आ गयीं। वे कूड़े के एक हिस्से पर बैठ गयीं, दरवाजे पर उड़ीं, जमीन पर उतरीं और यार्ड में कूद गयीं।

यूरी ने सोचा—'चिड़िया आई, बर्फ़ के लिए!' इसी समय दूसरे कमरे से सीमा की बुलन्द आवाज़ सुनाई दी—'चिड़ियाँ मेहमानों का संदेश लेकर आई है। या तो मेहमान आयेंगे या कोई चिट्ठी।'

किसी ने घंटी बजाई। पर्दा उठा कर लारा दरवाजे पर गयी और किवाड़ खोल दिये। लारा, ग्लाफिरा से बातचीत कर रही थी।

—आप सीमा के लिए आई हैं? वह यहाँ है। आइये।

—नहीं, मैं उसके लिए नहीं आई हूँ। हाँ, यदि वह तैयार हो, तो हम साथ ही चली जायेंगी! मैं तुम्हारे मित्र के लिए एक चिट्ठी लाई हूँ। मैं एक बार डाक-घर में भी काम कर चुकी हूँ न। पाँच महीने से यह पत्र इधर-उधर भटक रहा था। उनको पता ही नहीं मिल रहा था। आखिर जब उन्होंने पूछा, तो मुझे ही बताना पड़ा। तुम्हारा यह मित्र एक बार मेरे यहाँ आकर हजामत बनवा गया है।

फटा हुआ लिफाफा मुड़ कर गन्दा हो गया था। अनेक कागजों पर लिखा हुआ यह लम्बा पत्र डाकघर में खोला जा चुका था। बिना इस ओर ध्यान दिये कि यह पत्र उसके हाथों कैसे पड़ा, उसने पत्र ले लिया और पढ़ने लगा। उस समय वह इस बात से सचेत था कि वह लारा के युर्यातिन स्थित मकान में है। किन्तु जैसे-जैसे वह पढ़ता गया, वह इस बात को भूलता गया। सीमा बाहर आई, नमस्कार करके चली गयी। बिना ध्यान दिये उसने औपचारिक रूप से विदा दी; और वह जान भी नहीं पाया कि वह कब चली गयी। कुछ समय बाद अपने चारों ओर का वातावरण वह बिलकुल भूल गया।

टोन्या ने लिखा था—

'हमारे एक लड़की हुई है। आपकी माँ की स्मृति में उसका नाम माशा रखा है।'

'अनेक प्रमुख व्यक्ति तथा प्रोफेसर, जो दक्षिणपंथी सोशलिस्ट पार्टी के लोग हैं, जिनमें मिल्यूकोव; किंजेवेटर, कुसकोव तथा अनेक व्यक्तियों के

साथ आपके मामा कोल्या भी शामिल हैं—इन सबको रूस से निष्कासित कर दिया गया है।'

यह दुर्भाग्य की बात है; खास कर उस हालत में, जब कि आप हमारे साथ नहीं हैं। फिर भी खुदा का लाख-लाख शुक्र है कि ऐसे भयानक समय में हमें सिर्फ़ निष्कासन का ही दण्ड मिला! लेकिन आप कहाँ हैं?

'मैं यह पत्र आन्तिपोव के पते से भेज रही हूँ। यदि किसी दिन वह आपको पा सकी, तो यह पत्र वह आपको दे देगी।'

'मेरे दुःख की सीमा नहीं है कि इस निष्कासन के बाद आपसे कभी मुलाकात हो सकेगी या नहीं? मेरा निश्चित विश्वास है कि आप सकुशल हैं, जीवित हैं।'

'जब आप प्रकट हो जायेंगे, तब तक आशा है कि रूस में स्थिति इतनी नाजुक नहीं रहेगी; और आपको पार-पत्र आसानी से मिल जायेगा। तब भगवान की दया से, हम एक बार फिर मिल जायेंगे। लेकिन अपने इतने बड़े सौभाग्य पर मुझे स्वयं विश्वास नहीं होता।'

'दुःख की बात यह है कि मैं आपको बहुत प्यार करती हूँ; मगर आप मुझे नहीं चाहते। मैं इस न्याय का कारण खोजना चाहती हूँ। इस बात का अर्थ समझने की कोशिश करती हूँ, इसका कारण ढूँढ़ निकालने की चेष्टा करती हूँ। अपने बारे में बहुत सोचने पर भी मुझे नहीं मालूम कि किस ग़लती के कारण मुझे यह दुर्भाग्य भुगतना पड़ रहा है? क्यों आपके विचार मेरे प्रति इतने अनुदार हैं? मेरी प्रतिच्छाया आपको टूटे हुए काँच में ही क्यों दिखाई देती है?'

'काश, आप जान सकते कि मैं आपको कितना प्यार करती हूँ। आप में जो कुछ साधारण और असाधारण है, जो कुछ सुविधाजनक और असुविधाजनक है, वह सब मुझे प्रिय है। जो कुछ आप में है, वह सब मेरे लिए मूल्यवान है। अभिव्यक्ति से मुखरित आपका सुन्दर चेहरा मुझे बार-बार याद आ जाता है। वासना और इच्छाओं पर आपकी बुद्धि ने

विजय पाई है—आपकी कोई इच्छा ही तो नहीं है—इस विरक्ति से भी मुझे प्यार है। संसार में आपसे बढ़ कर मेरे लिये और है ही क्या?'

'किन्तु सुनिए, यदि आप मुझे इतने प्रिय न भी होते, यदि मैं आपको इतना पसन्द न भी कर पाती, अथवा आपकी प्रशंसा न कर पाती, तो भी मैं यही सोचती कि मैं आपके प्रेम में आकण्ठ डूबी हुई हूँ। फिर मेरा उपेक्षाभाव क्या मुझमें छिप नहीं जाता, आपको अपमानजनक, कष्टदायक दण्ड देने के भय मात्र से ही मैं यह समझने का ध्यान नहीं रखती, कि मैं आपसे प्रेम नहीं करती। इस बात को न मैं जान पाती, न आप। क्योंकि प्रेम न करना एक हत्या के समान है। मुझमें किसी पर इतनी चोट पहुँचाने की शक्ति नहीं है।'

'अभी तक कुछ भी निश्चित नहीं है। लेकिन सम्भवत: हम पेरिस जा रहे हैं। पिताजी आपको आशीर्वाद भेज रहे हैं। सशा बड़ा हो गया है। सुन्दर न होते हुए भी वह स्वस्थ लड़का है। आपके बारे में जब भी कभी बातचीत होती है, वह चिल्लाने लगता है, फिर उसे शान्त करना और मेरे लिये रुलाई रोकना मुश्किल हो जाता है। अच्छा, अलविदा। आने वाले वर्षों की अन्तहीन जुदाई, अनिश्चितताओं में आपके दीर्घजीवन की कामना के लिए मुझे आप पर क्राइस्ट का निशान बना लेने दो। सुदीर्घ अन्धकारमय मार्ग को निष्कंटक पार करने के लिए मैं अपनी मंगलकामनाएँ आप तक भेजती हूँ। मुझे आप से कोई शिकायत नहीं।'

'आप चाहे जहाँ रहें, चाहे जिस रूप में रहें, मैं यही चाहती हूँ कि आप कुशल से रहें। बस।'

'यूराल्स छोड़ने से पहले मैं लारा से परिचित हो चुकी हूँ। यूराल्स हमारे लिए कितना भयानक और निर्णायक स्थान सिद्ध हुआ है! कठिन समय में वह बराबर मेरे साथ रही। प्रसूति के समय उसने मेरी सहायता की है। मैं उसके प्रति कृतज्ञ हूँ। मैं बनावटी बातें करना नहीं चाहती। वह ठीक मुझसे विपरीत है। मैंने जीवन को सरल बनाने और बुद्धिगत हल

का पक्ष ग्रहण करने के लिए जन्म लिया है? जब कि उसने उलझन पैदा करने और मार्ग को भ्रामक बनाने के लिए!'

'खुदा हाफिज! मैं पत्र यहीं समाप्त करती हूँ। सामान बाँधा जा रहा है। यूरा, ओ यूरा, मेरे प्रीतम, मेरे पति—यह सब क्या हो रहा है? क्या हम कभी एक दूसरे से नहीं मिल सकेंगे?'

'मैंने जो कुछ लिखा है, उसका अर्थ आप समझ रहे हैं? समझ रहे हैं न? वे जल्दी मचा रहे हैं। लगता है कि मुझे मृत्यु की ओर घसीट कर ले जाया जा रहा है। यूरा ओ यूरा!'

पत्र समाप्त करके उसने आँखें उठा कर सामने की ओर देखा। आँसू नहीं थे। चिंता की ज्वाला से वे कभी के सूख चुके थे। उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। अपने इर्द-गिर्द के वातावरण को वह भूल गया।

हवा के कारण बाहर तेजी के साथ बर्फ़ गिर रही थी। मानो किसी को पकड़ने के लिए दौड़ रही हो। उस ओर टकटकी लगाये यूरा देखता रहा। बर्फ़ की ओर उसकी नजर नहीं थी बल्कि सामने बिखरी हुई बर्फ़ में वह टोन्या का पत्र पढ़ रहा था। बर्फ़ के जो तारे झिलमिला रहे थे, वे उसे पत्र के बीच की सफ़ेद जगह की तरह दिखाई देने लगे—सफ़ेद—अन्तहीन!

वह छाती पकड़ कर चीख पड़ा। उसे लगा कि जैसे वह बेहोश हो जायेगा।

लड़खड़ाते हुए कदमों के साथ वह सोफे तक पहुँचा और अचेत होकर उस पर गिर पड़ा।

14

पाशा

शिशिर-ऋतु की तेज बर्फ़ गिर रही थी। अस्पताल से आने पर यूरी को लारा हॉल में ही मिल गयी। वह किंकर्त्तव्यविमूढ़, हतबुद्धि और आहत सी दिखाई दे रही थी। उसने कहा—कोमारोवस्की यहीं है!

—कहाँ, यहाँ ?

—नहीं, यहाँ नहीं। वे सुबह आये थे। कहते थे की रात को भी आऊँगा। वे आप से कुछ बातचीत करना चाहते हैं।

—वह यहाँ क्यों आया था ?

—मैं उनकी कोई बात नहीं समझी। सुदूरपूर्व जाने से पहले वे आपको और पाशा को देखने के लिए यहाँ आये थे। वे कहते हैं, पाशा, आप और मैं—हम तीनों भयंकर खतरे में हैं। उन्होंने कहा कि यदि उनकी राय पर चला जाय तो बचाव का कोई रास्ता निकल सकता है।

—मैं बाहर जा रहा हूँ। उससे मिलने की मेरी कोई इच्छा नहीं।

लारा उसके पैरों से लिपट गई। यूरी ने एक तरह जबरदस्ती ही उसे ऊपर उठाया। वह रोती हुई कह रही थी—आप कहीं मत जाइए। मैं उनसे अकेले में डरती ही नहीं हूँ; बल्कि उनसे घृणा भी करती हूँ। इसके अलावा वे इतने अनुभवी और कुशल हैं कि उनकी राय हमारे बहुत काम आ सकती है। मुझे मालूम है, उन्हें देखकर आपको अरुचि होगी। लेकिन इसके बावजूद भी आप जाइये मत। मैं अकेले में उनके सामने नहीं रहना चाहती!

—तुम्हें हो क्या गया है ? इतनी परेशान क्यों हो रही हो ? आखिर तुम चाहती क्या हो ? उठो, हँस दो। इस प्रेत ने तुम्हें बहुत डरा दिया है।

डरो मत। मैं यहीं हूँ। कहीं नहीं जाऊँगा। तुम्हारे लिए, तुम्हारे एक इशारे से, मैं बखुशी उसकी हत्या कर सकता हूँ।

आध घण्टे बाद रात्रि का अन्धकार छाने लगा। चूहों के बिल मूँदे जा चुके थे। चूहों से बचने के लिए एक बिल्ला भी रखा गया था, जो कि आँखें मूँदे गंभीरतापूर्वक ध्यानस्थ होकर चिन्तन-मनन करता हुआ बैठा रहता। चूहे अभी भी थे। लेकिन अब सावधान हो गये थे।

तय किया गया कि कोमारोवस्की को रसोईघर में ही बिठाया जाय। रोटी और उबाले हुए आलुओं की प्लेटें सजा दी गयीं। विशालकाय फर्नीचर के बीच, छोटे लालटेन की तरह रेंडी के तेल की बोतल में एक बत्ती धरी हुई थी।

उस दिसम्बर की काली रात में, कोमारोवस्की जब उनके घर आया तो वह बर्फ़ से ढका हुआ था। टोपी, कोट और बूट से झरने वाली बर्फ़ के कारण नीचे फर्श पर एक छोटा-सा तालाब बन गया था। (पहले वह मूँछें और दाढ़ी नहीं रखता था।) इस समय उसकी दाढ़ी-मूँछों पर बर्फ़ का पलस्तर लगा हुआ था। पुराना, पर बढ़िया सूट पहने, अन्दर आकर औपचारिक अभ्यर्थना से पहले उसने जेब से एक कंघा निकाल कर अपने बालों को सँवारा। इसके बाद उसने दोनों हाथ लारा और यूरी की ओर बढ़ा दिये। यूरी की ओर मुखातिब होकर उसने कहा—मेरा खयाल है, हम काफी पुराने परिचित हैं। शायद तुम्हें मालूम ही है कि मैं तुम्हारे पिता का घनिष्ट मित्र था। उनकी मृत्यु मेरे हाथों में ही हुई थी। लेकिन तुम्हारी उनसे कोई समानता नहीं। वे बहुत खर्चीले, मुक्त और मनमौजी आदमी थे। तुम पर शायद तुम्हारी माँ का अधिक प्रभाव पड़ा है। वह एक भली आदर्शवादी स्त्री थी।

—लारा ने मुझे बताया था कि आप मुझसे मिलना चाहते हैं। शायद कुछ काम हो। यह मुलाकात मेरी इच्छा से नहीं हो रही है; और न मुझे यही याद आ रहा है कि हमारा कोई पुराना परिचय है। अच्छा, काम की बात शुरू कीजिए।

—मैं तुम दोनों को देख कर बहुत खुश हुआ हूँ। मैं सब कुछ अच्छी तरह से जानता-समझता हूँ। बल्कि, मुझे कहना चाहिए कि तुम दोनों की जोड़ी बहुत अच्छी जँचती है!

—ठहरिये! आप अपने मतलब की बात कहिये। आप भूल गये हैं कि आपको क्या कहना चाहिए? हमने आपसे अपने पर टीका करने के लिए नहीं कहा था।

—आह, तुम तो बड़ी तेजी से गर्म हो रहे हो। लगता है कि पिता का असर तुम पर किसी हद तक मौजूद है। वे भी इसी तरह आपे से बाहर हो जाया करते थे। अच्छा, मेरे बच्चों, मेरे आशीर्वाद लो। सचमुच तुम बच्चे ही हो। बोलने में ही नहीं, हर तरह से तुम लोग बिलकुल नादान हो। तुम शायद अपने बारे में जितना नहीं जानते, उतना मैंने तुम्हारे बारे में, इन दो ही दिनों में मालूम कर लिया है। तुम लोग शायद नहीं जानते, कि तुम तलवार की धार पर चल रहे हो। यदि इस बारे में कुछ किया नहीं गया तो तुम्हारी स्वतंत्रता के—और शायद तुम्हारे जीवन के दिन भी गिने-चुने ही बाकी बचे हैं। यूरी एन्ड्रेविच, यहाँ एक निश्चित साम्यवादी पद्धति है। कुछ ही लोग उसकी माया सही तौर पर समझ पाते हैं। लेकिन ऐसा तो नहीं देखा कि कोई अपने जीवन को इस तरह उपेक्षा भाव से लापरवाही से फेंक दे। प्रस्तुत भय से इस तरह आँखें मूँद लेने का तात्पर्य मेरी समझ में नहीं आता। उन तमाम लोगों के लिए तुम तिरस्कृत और बदनाम हो। यदि तुम्हारा अतीतकालीन इतिहास तुम्हीं तक गुप्त रह सकता, तो बात दूसरी थी। मगर मास्को के तमाम लोग तुम्हें अच्छी तरह से जानते हैं। कामरेड आन्तिपोव और तिमिरजिन अपने घातक हथियार तेज कर रहे हैं।

कुछ भी हो यूरी, तुम आखिर पुरुष हो। तुम्हें अपने जीवन को खतरे में डाल कर बेवकूफी करने का पूरा अधिकार है। लेकिन लारा एक बच्चे की माँ है। वह तुम्हारी तरह स्वतंत्र नहीं। वह तुम्हारी तरह अन्धी होकर नहीं चल सकती। मैंने उसे स्थिति की गम्भीरता समझाने की

काफी कोशिश की। लेकिन वह मेरी बात पर कान ही नहीं देती। अच्छा हो, यदि तुम अपने प्रभाव के बल पर उसे यह समझा सको कि उसे अपनी कन्या की सुरक्षा के लिए मेरे प्रस्ताव का अपमान नहीं करना चाहिए।

—मैंने कभी किसी पर अपने विचार नहीं लादे; खास कर जो मेरे अति निकट हैं, उन पर तो नहीं ही। लारा आपकी बात सुनती है अथवा नहीं, यह उसके अधिकार की बात है। जैसा वह उचित समझे, करे। यह उसका अपना मामला है। इसके अलावा मुझे यह भी नहीं मालूम कि आपका प्रस्ताव क्या है ?

—मुझे तुम्हारे पिता की बहुत याद आ रही है। ठीक तुम्हारी ही तरह वे भी ज़िद्दी थे। मैं अपना प्रस्ताव तुम्हें बताता हूँ, बिना बीच में बोले तुम धीरज के साथ सुन सकोगे ?

महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों का आयोजन ज़ोर-शोर से हो रहा है। काफी विश्वस्त सूत्रों से मुझे जो समाचार मिले हैं, उन्हें तुम सच ही मान लो। वे निपुण, कानून के प्रति उदार, जनतांत्रिक पद्धति की स्थापना करना चाहते हैं। यह जल्द ही होने वाला है। इसलिए दण्ड देने वाले लोगों का काम समाप्त करने से पहले, उन्हें स्थानीय हिसाब-किताब साफ करने के लिए कह दिया गया है। वे बड़ी जल्दी में हैं। इसलिए प्रस्तुत परिस्थितियों के अन्त से पहले भीषण क्रूरता का सामना करना होगा। तुम्हारा नाम भी सूची में है। मैंने स्वयं देखा है। समय आने से पहले तुम्हें अपने बचाव के बारे में सोच लेना चाहिए। यह सब भूमिका के बतौर कहने के बाद मैं मुख्य विषय पर आता हूँ—

प्रशान्त महासागर के किनारे के समुद्रीय प्रान्त में अस्थाई सरकार और संविधान सभा के प्रति वफादार राजनीतिक सेनाओं का केन्द्रीयकरण किया जा रहा है। डूमा के सदस्य, कई प्रमुख लोग, झेमस्टवोज के प्रतिष्ठित सदस्य और सार्वजनिक व्यापारी और उद्योगपति, स्वयंसेवक सेना के अविशिष्ट लोग इसमें शामिल हैं। सुदूर पूर्व में गणतंत्र की

स्थापना की योजना बनाई जा रही है। सोवियत सरकार इस समय इस ओर से आँखें मूँदे बैठी है। जिस प्रकार रेल में धक्के से बचाने के लिए एक यंत्र होता है, उसी तरह इस गणतंत्र द्वारा साम्यवादी साइबेरिया और बाहरी संसार के बीच यह गणतंत्र काम करेगा। इनमें आधे से अधिक लोग साम्यवादी ही होंगे। जब भी उचित समय आयेगा, वहाँ सत्तारूढ़ व्यक्तियों के विप्लव द्वारा गणतंत्र को समाप्त कर दिया जायेगा! सारी योजना स्पष्ट है, फिर भी इससे हमें दम मारने के लिए थोड़ा समय मिल जायेगा। इस स्थिति से हमें अधिक से अधिक लाभ उठा लेना चाहिए। क्रान्ति से पहले मैं अनेक व्यापारियों और प्रतिष्ठित लोगों का वकील रहा हूँ और उनका काम देखता रहा हूँ। वे मुझे अच्छी तरह से जानते हैं। इसीलिए राजनीतिक समिति की ओर से, मेरे पास एक दूत इस नयी सरकार में न्याय-मंत्री के पद के लिए निमंत्रित करने आया था। यह निमंत्रण गुप्त है; और सोवियत सरकार की अनौपचारिक स्वीकृति इसे मिली हुई है। मैंने यह पद स्वीकार कर लिया है; और इस समय वहीं जा रहा हूँ। यह जो कुछ हो रहा है, वह सोवियत सरकार की गुप्त आज्ञानुसार ही हो रहा है। लेकिन इस बारे में खुले-आम बात अभी तक नहीं की जा सकती।

मैं तुम्हें और लारा को अपने साथ ले जा सकता हूँ। वहाँ तुम्हें बोट मिल जायेगा और तुम अपने परिवार के पास जा सकोगे। तुम्हें मालूम ही होगा कि उन्हें निष्कासन का दण्ड मिला है!

'मैंने लारा से प्रतिज्ञा की है कि मैं स्ट्रेलिनिकोव को किसी प्रकार बचा लूँगा। मास्को द्वारा मान्यता प्राप्त सरकार द्वारा मैं उसे पूर्वी साइबेरिया में भेजने की व्यवस्था कर सकता हूँ। हमारे स्वायत्त क्षेत्र को पार करने में मैं उसकी मदद कर सकूँगा। यदि भागने में वह असफल रहा तो मैं किसी दूसरे बन्दी के विनिमय में उसे प्राप्त कर लूँगा।'

कोमारोवस्की की बातें लारा की समझ में नहीं आ रही थी। लेकिन जब यूरी और स्ट्रेलिनिकोव के बचाने की बात आई, तो वह सजग हो गयी।

संकोच भरे स्वर में उसने यूरी से कहा—यह आपके और 'उनके' लिए कितनी महत्त्वपूर्ण बात है।

—तुम ज़रूरत से ज्यादा विश्वास कर रही हो लारा। मैं यह नहीं कहता कि कोमारोवस्की साहब हमें जानबूझ कर गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन अभी तक उन्होंने जो कुछ कहा है, वह सब असंभव है।

कोमारोवस्की की ओर मुखातिब होकर उसने कहा—मेरे बारे में इतनी दिलचस्पी लेने के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया। मेरे बारे में यह योजना कोई उपयोगी नहीं। जहाँ तक स्ट्रेलिनिकोव का प्रश्न है, लारा को ही इस बारे में विचार करना होगा।

लारा ने कहा—मतलब सिर्फ़ यह है, कि हम इनके साथ जाते हैं या नहीं? आपको अच्छी तरह से मालूम है, आपके बिना मैं कहीं नहीं जा सकती।

यूरी द्वारा अस्पताल से लायी हुई शराब को पानी में मिला कर कोमारोवस्की पी गया और उबले हुए आलुओं को चबाते हुए वह नशे में धुत्त हो गया।

दो

यूरी और लारा को नींद आ रही थी। वे एकान्त में बहुत-सी बातचीत करना चाहते थे। परन्तु कोमारोवस्की वहीं बैठा रहा। वे उसकी उपस्थिति से परेशान हो गये। वह बेढँगी, अस्त-व्यस्त, लम्बी चौड़ी और अस्पष्ट आवाज़ में बड़बड़ाता रहा। वह मंगोलिया के महत्त्व के बारे में कुछ कह रहा था। न लारा को उसमें दिलचस्पी थी, न यूरी को ही। वह कह रहा था मंगोलिया अनन्त खनिज सम्पत्ति का सोना उगलने वाला क्षेत्र है, जिसकी ओर संसार की ललचाई हुई आँखें लगी हुई हैं। तुम्हारे काम की बात यह है कि जैसे ही तुम मंगोलिया की सीमा से पार हुए कि तुम संसार में वायु की तरह स्वतंत्र विचरण कर सकोगे।

उसके लम्बे भाषण से उकता कर लारा रोने को हो आई। विदा के लिए उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए उसने स्पष्ट विरक्ति के साथ कहा—बहुत देर हो गयी है। आपके जाने का समय हो गया है। मुझे बुरी तरह नींद आ रही है।

—ओह! देर तो हो ही रही है। लेकिन तुम लोग इतने अभद्र थोड़े ही हो सकते हो कि इस अन्धेरी रात में मुझे बाहर धकेल दो। मैं इस शहर से अच्छी तरह परिचित नहीं हूँ। मेरे लिए रास्ता ढूँढ़ निकालना बहुत मुश्किल है।

—आपने यह सब पहले क्यों नहीं सोचा? इतनी देर ठहरने के लिए आपको कहा किसने था?

—तुम मेरे प्रति इतनी कठोर कैसे हो रही हो, लारा? तुमने मुझसे एक बार भी तो यह नहीं पूछा कि मेरे पास रहने के लिए कोई जगह है भी या नहीं?

—मुझे इससे कोई मतलब नहीं। यदि आप यह सोच रहे हैं कि हम आपको यहीं सोने के लिए निमंत्रित करें, तो मैं यह बता देती हूँ कि टोन्या और मेरे सोने के कमरे में जगह नहीं है। दूसरे कमरे चूहों से भरे पड़े हैं।

—कोई बात नहीं।

—जैसी आपकी मर्जी।

तीन

—तुम रात भर जागती हो; खाना खाती नहीं; दिन भर भूत की तरह इधर-उधर भटकती रहती हो। बात क्या है? इतनी चिन्ता मत किया करो।

—इझोट—अस्पताल का चौकीदार नीचे की धोबिन से प्रेम करता है। वह आया था। उसने बताया कि यहाँ तलाशी होने वाली है।

—इसमें कोई नई बात नहीं। यह कभी भी हो सकता है। इसलिए समय रहते हमें यहाँ से फरार हो जाना चाहिए। मास्को जाया नहीं जा सकता। अच्छा, तुम्हारी राय के अनुसार वेरिकिनो क्यों न चला जाय? वहाँ चुपचाप पड़े रहेंगे। एक हफ्ते, दो हफ्ते, इसी तरह माह-दर-माह!

—ओह, यह बहुत ही अच्छा रहेगा। मैं जानती हूँ कि आप अपने सुनसान घर को देख कर, कितने दुखित नहीं होंगे। पता नहीं, आपकी पीड़ा में मुझे जो खुशी मिलेगी उसका अर्थ क्या होगा? जैसे किसी की प्रिय और पवित्र वस्तु को कुचल दिया जाय! मैं आपका इस तरह का बलिदान हर्गिज स्वीकार नहीं करती। लेकिन इस समय, इसके अलावा और कोई चारा भी तो नहीं। आपका मकान तो रहने लायक नहीं है। हाँ मिकुलित्सिन का घर किसी हद तक ठीक है।

—तुम इतनी समझदार हो और तुम्हारी दृष्टि इतनी तेज है, यह जान कर मैं कृतज्ञता महसूस करता हूँ। सुनो, कोमारोवस्की का उस दिन के झगड़े के बाद क्या हुआ?

—मैं कुछ भी नहीं जानती। मुझे कोई मतलब भी नहीं। आपने क्यों पूछा?

—कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि उसके प्रस्ताव के बारे में हम दोनों का दृष्टिकोण एक-सा नहीं हो सकता। हम दोनों की परिस्थिति एक-सी नहीं है। तुम्हें अपनी लड़की की फिक्र करनी है। मेरे भय में तुम हिस्सा बँटवाना चाहती हो, लेकिन दरअसल तुम्हें इसका कोई अधिकार नहीं। वेरिकिनो में, इस शिशिर ऋतु में, बिना शक्ति और आशा के; उस निर्जन जंगल में रहना क्या निरा पागलपन नहीं है?

अच्छी बात है, पागलपन ही सही। सामदेवयातोव से घोड़ा माँग कर, उसके अन्तर्गत चोरबाजारी करने वाले लोगों से हम प्रार्थना करेंगे कि यदि हमारी इज्जत की अभी भी कोई कीमत है तो हमें खाने-पीने का सामान उधार दे दो। सामदेवयातोव को कह देंगे कि जब तक उसे घोड़े

की ज़रूरत न हो, वह वहाँ न आवे। हम कुछ दिनों के लिए बिलकुल एकांत चाहते हैं। चलो मेरे प्राण, चलो चलें। हम स्वयं लकड़ियाँ काट लायेंगे और काम चला लेंगे।

मैं तुम्हारे सामने झूठा आडम्बर नहीं करता। लेकिन यह सच है कि इसमें हमारी कोई पसन्दगी अथवा नापसन्दगी नहीं है। मौत हमारे दरवाजे पर खड़ी है। इसलिए गिने-चुने दिनों को हम अपने ही तरीके से क्यों न बितायें? मृत्यु के कारण विलग होने से पहले, क्यों न हम एकान्त में एक दूसरे के ही पास रहें? हम अपनी आशाओं को अपने प्रियजनों के साथ ही विसर्जित करते हैं। पूर्वी महासागर की गुरुगंभीर वाणी में हमारी प्रेम की मौन भाषा मुखरित हो उठेगी। जीवन का अन्त इसी तरह सार्थक हो।

आज से बहुत सालों पहले जब स्कूली पोशाक में मैंने तुम्हें देखा था, उस समय भी तुम इतनी ही सुन्दर थी, जितनी कि आज! पता नहीं, तुम मुझमें कौन सी प्रेरणा का बीज बो गई हो, बहुत कोशिश करने पर भी मैं उसकी व्याख्या आज तक नहीं कर सका। धूमिल रोशनी और बुझती हुई आवाज़ की तरह, यही प्रेरणा मेरी समस्त काया में व्याप्त हो गयी। तुम्हारी प्रेरणा से संसार की सभी वस्तुओं को देखने का माध्यम मुझे मिल गया।

उस समय ही तुम्हें देखकर मुझे लगा कि इस दुबली-पतली छोटी-सी लड़की में अखिल विश्व के नारित्व का गुरुत्वाकर्षण सन्निहित है। यदि तुम्हें उस समय अपनी अँगुली के अग्रभाग से भी छू लेता, तो एक चिनगारी निकल कर सारे कमरे को प्रकाशित कर देती। या तो वह मुझे मार डालती अथवा मेरे शेष जीवन में वेदनापूर्ण लालसा अथवा चुम्बकीय प्रवाह भर देती।

उस समय मैंने अपने आप से आश्चर्यचकित होकर पूछा—यदि प्रेम की उत्तेजना का दु:ख इतना गहरा है, तो स्त्री होने पर यह कष्ट कितना अथाह न होता होगा?

मैंने कहा न, यह सब किसी को पागल कर देने के लिए पर्याप्त है। और मेरा सब कुछ इसी पागलपन में छिपा हुआ है।

पलंग के छोर पर सुसज्जित, विचारमग्न और संकोच से सिकुड़ी हुई वह बैठी थी। यूरी उसके पास ही कुर्सी पर बैठा धीरे-धीरे बोल रहा था। वह उसकी ओर गाल पर हाथ रखे चुपचाप ताकती रही। बीच-बीच में उसका सिर यूरी के कन्धे पर लुढ़क जाता और वह भूल जाती कि खुशी के मारे उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह रही है।

यूरी को अपने आलिंगन पाश में आबद्ध करते हुए उसने कहा—आप कितने विवेकशील हैं! हर बारे में आपका अन्दाज़ कितना सही है। मेरे लिए आपका ही आश्रय है। मेरी ताकत आप ही हैं। चलो चलें। मैं आपको एक बात बताऊँगी।

यूरी ने सोचा वह अपने गर्भवती होने की बात कहना चाहती है। उसने जवाब दिया—मैं जानता हूँ।

चार

परिचित-अपरिचित व्यक्तियों के बीच में से अपने स्ले में बैठे यूरी, लारा और कात्या वेरिकिनो की ओर चल पड़े। रास्ते में सामदेवयातोव भी मिला और कोमारोवस्की भी, लेकिन दोनों ने उनसे नज़र बचा ली। रास्ते में ग्लासा ने उन्हें देखा और विदाई का हाथ हिला दिया। सीमा के मिलने पर वे कुछ देर के लिए रुके। सीमा ने कहा—वापस लौटने पर मैं आपसे बहुत सी बातें करूँगी।

भोजन की सामग्री उन्होंने घास के नीचे रख दी थी। यूरी स्ले में इस तरह बैठा था, जैसे कोई ग्रामीण बैठा हो। शीतकाल के मध्याह्न में सूर्यास्त से पहले ही दिन समाप्त हो जाता है। यूरी ने घोड़े को चाबुक लगाई, और वह तीर की तरह सरपट दौड़ पड़ा। यूरी ने कहा—मैं तुम्हें वह स्थान बताना चाहता था जहाँ सपक्षियों ने मुझे गिरफ्तार किया था। लेकिन जंगल की शान्त नीरवता ने सब कुछ अपरिलक्षित रूप से बदल दिया है। वह उस जगह को कब पार कर गया, उसे मालूम ही नहीं हो सका।

ज़िवागो-भवन के आगे वे स्ले से उतर गये। अन्धेरा होने वाला था, इसलिए उन्हें जल्दी थी। वेरिकिनो उजाड़ और सुनसान था। वहाँ कोई नहीं था। लारा कह रही थी—हमें जल्दी करनी चाहिए। थोड़ी देर में ही अन्धेरा हो जायेगा। सोचने का समय बिलकुल नहीं है। घोड़े को खलिहान में बाँध दीजिये, तब तक मैं एक कमरे को साफ़ करने और रहने लायक बना देती हूँ। नहीं, आपके मकान में नहीं, मिकुलित्सिन के घर में ही हम रहेंगे। वहाँ की प्रत्येक चीज़ आपको रुलाये बिना नहीं छोड़ेगी। पहला काम है, सिगड़ी को जला कर तैयार करना। आप कुछ भी बोलते क्यों नहीं?

—एक मिनट। थोड़ी देर में मैं ठीक हो जाऊँगा। तुम ठीक कह रही हो। मिकुलित्सिन के मकान में रहना ही ठीक होगा।

वे आगे बढ़ गये।

पाँच

मिकुलित्सिन के मकान का दरवाजा बन्द था। यूरी ने पेंचकस और लकड़ी की पटरी के जरीये ताला खोला। बिना कपड़े खोले वे अन्दर चले गये। मकान के अन्दर मिकुलित्सिन के अध्ययन कक्ष की स्वच्छता देख कर यूरी चकित रह गया। लगा कि जैसे अभी तक यहाँ कोई रह रहा था। फिर उसने ताले के बजाय कुंडी का इस्तेमाल क्यों किया? कुछ भी हो, मिकुलित्सिन यहाँ नहीं हो सकते। फिर कौन था? लेकिन उन्होंने इस रहस्य को जानने के लिए अधिक मगजपच्ची नहीं की। आजकल जगह-जगह भगोड़े फिर रहे हैं। फिर इस ओर अधलुटे मकानों की भी कमी थोड़े ही है?

शायद कोई आफिसर गुप्तवास कर रहा है। उन्होंने सोचा—यदि वह वापस लौट आया, तो उसके लिए भी व्यवस्था कर दी जायेगी। यहाँ कमरों की कमी नहीं।

घोड़े को खलिहान में बाँध दिया गया।

बिना कपड़े उतारे, अपने फर-कोट और कम्बल में लिपटे हुए सारे दिन खुली हवा में खेलते रहने वाले निर्दोष बालकों की तरह वे गहरी, शान्त और आनन्दपूर्ण निद्रा में खो गये।

छः

दो कमरे साफ़ किये जा चुके थे, वे रहने लायक बन गये थे। यूरी की अँगुलियाँ कुछ लिखने के लिए मचलने लगीं। उसने निश्चय किया कि लारा और कात्या के सो जाने के बाद वह अपना यह काम शुरू करेगा। वह दिन भर इस अनलिखे को लिखने के लिए बेचैन रहा। यूरी सोच रहा था कि यदि वह लारा के साथ यहाँ कुछ दिन और रहा, तो वह कुछ मौलिक, नवीन और उपयुक्त कृति की रचना कर सकेगा।

—बहुत व्यस्त हैं? क्या कर रहे हैं?

—सिगड़ी में कोयले झोंक रहा हूँ। बात क्या है?

—मैं टब की तलाश में हूँ। कपड़े धोने के लिए चाहिए।

—इस तरह से लकड़ियाँ जलायी गयीं तो बाद में बिना उसके काम चलाना होगा। मैं लकड़ी के बाड़े की ओर जाकर देखता हूँ, शायद वहाँ कुछ लकड़ियाँ बच रही हों? हाँ तुम क्या कह रही थी—टब? मैंने कहीं देखा ज़रूर है, लेकिन याद नहीं आता—कहाँ?

मैंने भी कहीं देखा है। मुझे भी याद नहीं आता कि कहाँ देखा था। कोई बात नहीं। मैं एक बर्तन में फ़र्श साफ़ करने के लिए पानी गर्म किये लेती हूँ। जो बच जायेगा, उससे अपने और कात्या के कपड़े धो लूँगी। आप भी अपने कपड़े दे दें। सब कुछ व्यवस्थित हो जाय, उसके बाद शाम को गर्म पानी से स्नान कर लेंगे।

—अच्छा, मैं अपने कपड़े ले आता हूँ। तुम्हारी इच्छानुसार मैंने सारा फर्नीचर यहाँ से हटा दिया है।

—खैर, जब तक टब नहीं मिल जाता, मैं बेसिन में कपड़े धो लूँगी। लेकिन वह चिकना बहुत हो गया है, रगड़ कर साफ़ करना होगा।

—जैसे ही सिगड़ी गर्म हो जायेगी, मैं दूसरा फर्नीचर हटा दूँगा। मुझे अधिकांश चीज़ें डेस्क की दराजों में मिल जाती हैं। साबुन, दियासलाई, कागज, पेन्सिल, पेन और स्याही—और टेबल पर पड़े लैम्प में पैराफिन तेल भी है। मुझे मालूम है यह सब मिकुलित्सिन के पास नहीं था। लेकिन कोई न कोई इसे कहीं न कहीं से लाया ज़रूर है।

—इसे कहते हैं तकदीर! यह हमारा अपरिचित साथी है। देखो हम फिर बातें करने लगे; उधर पानी खौल रहा है।

एक कमरे से दूसरे कमरे में ज़ोर-ज़ोर से बोलते, आपस में टकराते, वे काम करने में व्यस्त थे। कात्या उनके पीछे-पीछे भागती फिरती। उसके इधर-उधर फुदकने पर जब उसे डाँटा गया, तो वह रोते हुए बोली—मुझे सर्दी लग रही है।

यूरी ने सोचा, इस जमाने के ये बिचारे बच्चे! हमारे बंजारों के जीवन के दु:ख के ये भी शिकार हैं! उसने आश्वासन देते हुए कहा—रोने की बात नहीं बेटी। स्टोव गर्म हो गया है। फिर तुम्हें ठंड नहीं लगेगी।

—स्टोव गर्म हो रहा है, लेकिन मैं ठण्डी हो रही हूँ।

—थोड़ा धीरज रखो। मैं स्टोव जलाता हूँ। माँ ने कहा था न, शाम को नहाने के लिए तुम्हें गरम पानी मिलेगा। लिबेरियस के पुराने खिलौनों को निकालकर कात्या को देते हुए उसने कहा—लो खेलो।

टूटी अधटूटी ईंटें और चौकोर लकड़ी के टुकड़े, ट्रेन, इंजिन और तस्वीरों को देख कर, कात्या ने सयानों के लहजे में कहा—यूरी एंड्रोविच, ये मेरे लायक नहीं हैं। ये तो छोटे बच्चे के लिए हैं। मैं बड़ी हो गयी हूँ।

इसके बाद वह इन खिलौनों से खेलने लगी। शहर से अपने साथ वह गुड़िया लेती आयी थी। इस गुड़िया—नैना—के लिए बनाया हुआ उसका यह मकान अधिक स्थायी था, बनिस्बत उन मकानों के, जिसमें उसने अपना अधिकांश जीवन गुज़ार दिया था।

लारा रसोईघर में थी। वहाँ से उसे देखते हुए वह सोच रही थी—बच्चों का यह घर का प्रेम तो देखो। घर और व्यवस्था के प्रति यह आदिम लालसा किसी भी प्रकार नष्ट नहीं हो सकती। बच्चे अधिक ईमानदार हैं; कि वे सत्य से भयभीत नहीं होते। और एक हम हैं कि जो हमें सबसे अधिक प्रिय है, उसे छोड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं, कि हमें जो अच्छा नहीं लगता, उसकी तारीफ करते हैं; कि जिसे हम समझ नहीं पाते, उसके लिए स्वीकृति दे देते हैं!

यूरी को टब मिल गया था। उसे लाते हुए उसने कहा—यह अपनी जगह पर नहीं, उस छत के नीचे पड़ा था।

सात

साथ लाई हुई सामग्री पका कर तैयार कर ली गयी। कात्या तब तक खाती और किलकती रही, जब तक कि उसका पेट फटने न लगा। भरे पेट शरारतें करती हुई, अन्त में वह माँ के पसमीने में छिपकर सोफे पर सिकुड़ कर सो गयी। लारा को खाना बनाने और कात्या तथा यूरी की प्रसन्नता को याद करके बड़ा संतोष हो रहा था। एक ओर लेटते हुए उसने कहा—इसी तरह क्रीत दासी की तरह सारी ज़िन्दगी ग़ुलामी करते हुए मैं परम सौभाग्य मानूँगी और प्रसन्न रहूँगी, यदि मुझे इतना सा मालूम हो जाय, कि इसका अन्त क्या होगा? यह सब व्यर्थ और लक्ष्यहीन नहीं है? मुझे आप याद दिलाते रहें कि हम यहाँ स्थाई रूप से एक साथ रहने के लिए आए हैं। क्योंकि सचाई यह है कि यह सब मुझे नाटक की तरह लग रहा है कि हम किसी के मकान में जबर्दस्ती घुस आये हैं। और पागलों की तरह चीखते-चिल्लाते इधर-उधर फिर रहे हैं। हम नहीं जानते कि यह ज़िन्दगी नहीं है—यह है रंगमंच का सेट। यह सब नाटकीय रूप धारण करने जैसा है कि हम अभिनय कर रहे हैं।

—तुम्हीं तो यहाँ आने का इतना आग्रह कर रही थी। मैं तो सहमत था नहीं।

—मैंने ही कहा था। लगता है, भूल हुई। इसीलिए आपको इसे बार-बार सोचना पड़ रहा है, हिचकिचाहट महसूस होती है। लेकिन मेरे लिए दृढ़संकल्प लेने के सिवाय कोई चारा नहीं है। अन्दर आने पर अपने बच्चे का खटोला देख कर आप मूर्छित से होने लगते हैं। यह आपका अधिकार है। लेकिन कात्या के लिए मेरा फिक्र करना आपको ठीक नहीं लगता। आप के प्रेम के लिए मुझे सब कुछ छोड़ देना होगा।

—लारा। ज़रा सोचो। अभी भी देर नहीं हुई है। तुम जो ठीक समझो, वही करो। मैं पहले ही कहता था कि कोमारोवस्की की योजना पर तुम्हें गम्भीरता से विचार करना चाहिए। खैर। घोड़ा हमारे पास है, चाहें तो सीधे वापस युर्यातिन जा सकते हैं। शायद कोमारोवस्की अभी तक वहीं है!

—मैंने ज़रा-सा कहा—और आप बुरा मान गये। युर्यातिन में यदि बचने का कोई रास्ता होता तो हम यहाँ थोड़े ही आते? सुनिश्चित योजना के बिना यह अनिश्चितता हमेशा कायम रहेगी। कोमारोवस्की की योजना विचार करने लायक है। वह नफरत करने लायक भले ही हो, लेकिन वह मूर्ख नहीं है। उसे सारी बातों की जानकारी है। यह कितनी खतरनाक जगह है? चारों ओर सीमाहीन सांय-सांय हवाओं के बीच खुला मैदान—कि यदि हम बर्फ़ में दब जायें, तो सुबह उसमें से निकल भी नहीं सकते। हो सकता है कि जो हमारी दैवी-मदद कर रहा है, वह अचानक हमारी गर्दन मरोड़ कर उसका गरम-गरम लहू पीने के लिए लालायित हो उठे? हमारे पास बन्दूक भी तो नहीं है। आपके कारण मैं कुछ भी सोच नहीं पाती।

—आखिर तुम चाहती क्या हो, साफ़ कहो न? मैं क्या करूँ?

—मैं स्वयं नहीं जानती कि मैं क्या करने के लिए आपसे कहूँ? अजी, आप मुझे सदा अपने अँगूठे के नीचे दबा कर रखिये और याद दिलाते रहिये कि मैं आपकी खरीदी हुई क्रीत दासी हूँ। मुझे सर मत उठाने दो। सोचने का काम मेरा नहीं है।

आपकी टोन्या और मेरा पाशा हमसे हजार गुना अच्छे हैं।

प्रेम की अभिव्यक्ति को भी तो भगवान का आशीर्वाद चाहिए। आपको प्रेम करना जैसे स्वर्ग में सिखाया गया हो और मेरे साथ यह जानने के लिए धरती पर भेज दिया गया हो कि आप कहीं अपना पाठ भूल तो नहीं गये हैं? हम दोनों में सीमाहीन एकात्मकता है। हमें प्रत्येक वस्तु समान-भाव से आनन्द प्रदान करती है। प्रत्येक वस्तु को हमने अन्तःकरण से धारण किया है। फिर भी हमेशा से हमारी प्रतीक्षा करती हुई आत्मसमर्पण की इस घड़ी में कुछ ऐसी वस्तु है, जिसका अभाव शेष रह गया है—जो कि गृहस्थी की शान्ति को भंग कर देती है।

आँसुओं के भीगे चेहरे सहित वह उसके गले से लिपट गयी।

बोली—हमारी स्थिति कितनी भिन्न है? मुक्त गगन में विहार करने के लिए प्रभु ने आपको शक्तिशाली पंख दिये हैं। जब कि मैं स्त्री हूँ—मेरे पंख जमीन पर बैठ कर अपने बच्चों को सुरक्षित रूप से सेने के लिए हैं।

लारा का यह कथन यूरी को बहुत अच्छा लगा। लेकिन अपनी भावुकता कहीं ज़ाहिर न हो जाय, इसलिए वह खामोश रहा।

—यह सच है कि हमारे इस यायावर जीवन में विकृति है, झूठ है। लेकिन हमने इसे कभी चाहा नहीं। आगे बढ़कर हमने इसकी माँग कभी की नहीं। इसका आविष्कार हमने नहीं किया। लेकिन यही तो सभी जगह हो रहा है। यह इस युग की देन है। दिन भर मैं इसी बारे में सोचता रहा। बेकार बैठे रहना मुझे पसन्द नहीं। और यहाँ थोड़े दिन और रुकने के लिए कुछ न कुछ काम करना ही चाहिए। पहले हमने अपने परिवार के साथ यहाँ सफलतापूर्वक खेती का काम किया था। लेकिन मुझमें इस समय वही काम शुरू करने की शक्ति और हिम्मत नहीं है। मैं कुछ और ही करना चाहता हूँ।

धीरे-धीरे व्यवस्था जम रही है। मुझे लगता है कि अब प्रकाशन का कार्य फिर से चालू हो जायेगा। मैं यही सोच रहा था कि सामदेवयातोव

के साथ उदार शर्तों सहित हम ऐसी कोई व्यवस्था कर लें कि हम यहाँ छः-सात महीने किसी तरह गुज़ार सकें। मैं उनके लिए पुस्तकें लिखूँगा, डाक्टरी, साहित्यिक कविता संग्रह अथा उच्च कोटि के विदेशी ग्रंथों का अनुवाद। मेरा भाषाओं पर अच्छा अधिकार है। मैंने पिछले दिनों पीटर्सबर्ग के एक प्रकाशक का इसी तरह का विज्ञापन देखा था। वह सिर्फ़ अनुवाद ही प्रकाशित करता है। मुझे विश्वास है इससे कुछ पैसे मिल जायेंगे।

—मैं यही सोच रही थी। लेकिन मुझे भविष्य की स्थिरता में विश्वास नहीं है। मुझे लगता है कि जैसे हमें यहाँ से कहीं दूसरी जगह चल देना होगा। लेकिन जब तक हमें अवकाश मिला हुआ है, मैं चाहती हूँ कि आपने जो कविताएँ मुझे सुनाई थीं, वे निकाल कर रख दें।

आठ

शाम को वे गर्म पानी से खूब नहाये। टेबल के पास यूरी खिड़की के सामने बैठा हुआ था। उसकी पीठ कमरे की ओर थी। वहाँ लारा अपने केशों को तौलिये से पगड़ी की तरह बाँधे, साबुन की गंध के साथ कात्या को सुलाने के लिए थपथपा रही थी। अपने काम की तन्मयता में उसे अपने चारों ओर का वातावरण प्रसन्नतापूर्ण और आरामदायक लगा।

सोने का बहाना करते-करते लारा सचमुच सो गई। कात्या के स्वच्छ धुले हुए कपड़े चमक रहे थे।

चारों ओर फैली हुई निस्तब्धता में उसे जीवन की स्पष्ट धड़कन सुनाई दे रही थी। लैम्प की रोशनी सफ़ेद कागज के पन्नों और दवात पर सोने का मुलम्मा चढ़ा रही थी। शिशिर का तुषार देखने के लिए वह अन्धेरे कमरे से दूसरे कमरे में घुसा और खिड़की से बाहर देखने लगा। रात्रि की सुन्दरता अनिर्वचनीय थी।

वह वापस लौट आया। लिखने बैठा। जो कुछ उसने देखा था, उसी के प्रवाह में वह कविता लिखना चाहता था। उसके मस्तिष्क में निश्चित

आकार बनाई हुई, अर्ध-विकसित कविताओं की पँक्तियाँ, धाराप्रवाहिक रूप से लिखी जाने लगी। 'क्रिसमस नाइट' और 'विन्टर स्टार' को लिखने के बाद, उन पुरानी कविता को पूरी करने बैठा जिन्हें वह अधूरी छोड़ चुका था। उन्हें पूरी कर नहीं पाया और दूसरी मौलिक कविताओं की रचना में खो गया। दो तीन पँक्तियों को लिख लेने के बाद वह अपने भावों पर स्वयं आश्चर्यचकित-सा हो गया। इस स्वयंस्फूर्त प्रेरणा के कारण, भाषा स्वयंप्रवाहित होने लगी और मनुष्य के लिए बोलने वाली इस भाषा में संगीत की झंकार अपने आप आकर मिश्रित हो गयी।

स्वाभाविक नियमों के अनुसार भाषा का प्रवाह लय और ध्वनि के साथ गतिमान हो उठा और उनमें से अनगिनत विधान और विधियों की सृष्टि हुई।

उसे लगा कि यह सब उसने स्वयं ने नहीं, बल्कि किसी अज्ञात शक्ति ने उससे करवाया है। जैसे वह स्वयं मिथ्या हो, सिर्फ़ गतिमान संकेत निर्देशित पुतला मात्र!

इस विचार से वह आत्मप्रवंचना, असंतोष और हीनता के भावों से भर-सा गया।

सामने सफ़ेद तकियों पर दो सिर रखे हुए थे। चाँद और सितारों के नीचे बर्फ़ भरी रात में, साफ़ स्वच्छ कमरों में, धुले हुए उजले इन दो प्राणियों की प्रतिमा को देख कर उसके हृदय में एक ही आशय की विजय प्राप्ति की लहर उठी और उसके चारों ओर व्याप्त हो गयी।

हे ईश्वर, यह सब क्या मेरे लिए ही है? यह सब कुछ तुमने मुझे क्यों दे दिया? क्यों मुझे तुमने इस संसार में भटकने के लिए इस तरह छोड़ दिया? तुम्हारे ऐश्वर्यशाली सितारों के नीचे भाग्यहीन, प्रताड़ित और निर्दोष अनुराग के चरणों में मुझे इस तरह क्यों धर दिया?

तीन बज गये। सुदूरपूर्व की आत्मविस्मृति की एकाग्रता से वह वापस वास्तविकता में लौट आया। वह संतुष्ट था, प्रसन्न था, शक्तिसम्पन्न था, चारों ओर फैली हुई खुले प्रदेश की निस्तब्धता अब भंग हो गयी।

वह अन्धेरे कमरे में चला गया। सामने के दरवाजे पर जो गलीचा बर्फ़ के बचाव के लिए रखा गया था, उसे उसने हटा दिया, कोट पहिना और बाहर चला गया।

श्वेत बर्फ़ चमक रही थी। सामने, सिवाय इस रजत प्रकाश के कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। मैदान के उस पार, नाले के ऊपर, उसने पेंसिल से खींची हुई लकीरों की तरह चार छायाओं को देखा।

वे भेड़िये थे। चन्द्रमा की ओर अथवा उसके घर की ओर मुँह उठाये वे चिल्ला रहे थे। थोड़ी देर बाद, मानो वे यूरी के विचार समझ गये हों, कुत्तों की तरह धीरे-धीरे चले गये।

वापस आकर उसने दरवाजे बन्द कर दिये। कम्बल और गलीचों को दरारों में मूँद दिया, ताकि बर्फ़ और ठंड अन्दर न आ सके। अपनी टेबल पर लौट आया। लैम्प की रोशनी उसी तरह चमकती हुई, उसका स्वागत कर रही थी। लिखने की अब उसकी प्रवृत्ति नहीं हो रही थी। सिवाय उन भेड़ियों के वह और कुछ भी सोच नहीं पाया।

वह थक गया था।

लारा की आँख खुल गयी। बोली—अभी तक काम कर रहे हो, प्रिय? उसकी आवाज़ नींद से बुझी हुई थी—मोमबत्ती की तरह जलती और चमकती हुई रात। मेरे पास आइये और यहाँ बैठिये। मैं अपने स्वप्नों की बात बताऊँ?

उसने बत्ती बुझा दी।

नौ

कात्या को खिलाते हुए और लारा के घर के काम-काज में मदद करने में यूरी सारे दिन व्यस्त रहा। काम करते-करते जब दोनों के हाथ आपस में मिल जाते तो वे तमाम बातें भूल जाते और एक दूसरे के पास विमुग्ध भाव से बैठे रहते। इसके बाद उन्हें जब कात्या की याद आती कि वह

अकेली होगी, अथवा घोड़े को दाना-पानी देना होगा, वे फिर काम में लग जाते।

यूरी अच्छी तरह से सो नहीं पाया था। उसके सिर में मीठा-मीठा दर्द हो रहा था; और नशे की तरह हरारत महसूस हो रही थी। वह अधीरतापूर्वक रात का इन्तज़ार करता रहा कि अधूरे छोड़े हुए अपने लेखन कार्य को पूरा कर डाले।

तन्द्रा ने उसके विचारों पर आवरण-सा डाल दिया और अस्पष्टता में सब कुछ डूब गया। उसका कृतित्व यही अन्तिम स्वरूप प्राप्त करने वाला था। थकान और आलस्य की अवस्था में सभी कुछ परिवर्तित हो उठा और भिन्न स्वरूप में प्रस्तुत हो गया। उसे लगा कि वेरिकिनो में कुछ दिन और ठहरने की उसकी इच्छा पूरी नहीं होगी। लगा कि लारा से अलग होने का समय निकट आ गया है। उसके साथ ही जीवन और उसकी समस्त आशाएँ तिरोहित हो जायेंगी। उसका हृदय व्यथित था, फिर भी वह बेकरारी से रात का इन्तज़ार कर रहा था कि वह अपनी वेदना को इस तरह प्रकट करे कि उसे सुन कर दूसरे लोग रो पड़ें।

बर्फ़ीले मैदान में उसने जिन सियारों को देखा था, वे अब सियार नहीं, बल्कि कृतित्व की विषयवस्तु बन गये थे। लगता कि वे शत्रुओं की तरह उसे और लारा को तहस-नहस कर डालना चाहते हैं। उन्हें वेरिकिनो से भगा देना चाहते हैं। सन्ध्या तक उसकी यह कल्पना प्रागैतिहासिक जानवर अथवा अजगर के रूप में परिवर्तित हो गयी, जो कि शुत्मा के रास्ते से चले आ रहे थे और उनके खून के प्यासे हो रहे थे।

सन्ध्या के समय जब लारा और कात्या सो गयीं, उसने टेबल-लैम्प जलाया। वह पिछली कविताओं को संशोधित रूप से दुबारा, साफ़ अक्षरों में लिखने बैठ गया। नवीन कविताएँ घसीट के अक्षरों में संक्षेप में लिखी गयी थीं। इन गूढ़ाक्षरों को स्पष्ट करने के लिए हमेशा की तरह उसे निराशा की ही शरण लेनी पड़ती। पिछली रात को कच्चे रूप से लिखे हुए अवतरणों ने उसे आश्चर्यान्वित कर दिया था। आशातीत कुछ सफल

पँक्तियों से विह्वल होकर वह रो पड़ा था। फिर उन्हीं पँक्तियों को दुबारा पढ़ कर वह उदास हो गया कि ये पँक्तियाँ अज्ञेय हैं।

वह जो कुछ लिखना चाहता था, मौलिक रूप से। अब तक वह किसी ऐसी भाषा के लिए प्रयत्न करता रहा है, जो उसके भावों को इस तरह अभिव्यक्त कर दे कि सुनने वाले अथवा पढ़ने वाले को बिना प्रयास के, बिना यह देखे कि वक्तव्य का माध्यम क्या है, समझ में आ जाय। जीवन भर वह इस तरह की मौलिक शैली की खोज करता रहा और आज निराशा के कारण दुखित हो उठा कि वह अपने आदर्श और महत्त्वाकांक्षाओं से कितना दूर है।

लारा कब बिस्तर से उठ कर, उसकी टेबल के पास आई, उसे पता ही नहीं चल सका। अपनी पोशाक में वह दुबली-पतली और काफी लम्बी दिखाई दे रही थी। डर के मारे पीली पड़ी लारा को इस तरह देखकर वह आश्चर्यचकित हो गया। लारा फुसफुसा रही थी—सुन रहे हैं आप? कुत्ते रो रहे हैं। कितना भयंकर है। यह बहुत बुरे शकुन हैं। सुबह तक किसी तरह बर्दाश्त करने के बाद हम यहाँ से चले जायेंगे। एक मिनट भी हम यहाँ नहीं ठहरेंगे।

एक घंटे बाद, बहुत समझाने-बुझाने पर वह सो गयी।

यूरा बाहर आया। पता नहीं, किस दिशा से सियार आये और किस दिशा में वे गायब हो गये। उनके झुण्ड को वह देख सकता था, लेकिन गिन वह नहीं सका कि कुल मिलाकर कितने सियार होंगे। यह निश्चित था कि उनकी संख्या काफी है।

दस

वेरिकिनो में रहते हुए उन्हें तेरह दिन हो गये थे। कोई खास नई बात नहीं हुई। सियार रात को फिर चिल्लाते। पिछले सप्ताह उनकी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी, लेकिन अब वे फिर वापिस लौट आये थे। लारा उन्हें कुत्तों का विलाप समझ कर, बुरे शकुन से भयभीत, लौट जाने का निश्चय करती। काम में इतनी अधिक व्यस्त रहने के कारण वह इसी

बात की रट लगाये नहीं रह सकी। फिर भी बीच-बीच में वह बेचैन हो उठती।

बार-बार इन अशुभ आवाज़ों को सुनते-सुनते आखिर दूसरे सप्ताह में लारा ने अपने लौटने की तैयारियाँ करनी शुरू कर दीं। लगता, इतने दिनों तक उनका यहाँ रहना, वास्तव में कभी हुआ ही नहीं था।

ठंड थी। अन्धेरा था। मेघाछन्न बादलों को देखकर लगता कि बर्फ़ गिरने वाली है। शारीरिक मानसिक थकान से चूर, अस्त-व्यस्त विचारों के साथ वह एक कमरे से दूसरे कमरे में चक्कर काट रहा था कि लारा क्या निश्चय करती है, और फिर उसे क्या करना होगा?

शायद वह स्वयं कोई निश्चय नहीं कर पाई। अभी-अभी, वह एक सीधी सादी ईमानदारी और प्यार भरी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए यहाँ हमेशा-हमेशा के लिए बस जाने को, काम करते रहने के लिये, कुछ भी बलिदान करने के लिए तैयार थी।

सामान्य रूप से घर का काम-काज करने के बाद वह सामान बाँधने लगी। यूरी से घोड़ा तैयार करने को कहा। उसने रवाना होने का निश्चय कर लिया था। यूरी ने न विरोध किया न बहस की। शहर की ओर लौटना निरा पागलपन था जहाँ कि गिरफ्तारियों का ताँता लगा हुआ था। साथ ही वह यह भी जानता था कि बिना किसी प्रकार के हथियार के, इस वीरान जगह में इस तरह समय गुज़ारना भी कम पागलपन नहीं है। खाने की सामग्री और घोड़े का चारा भी समाप्तप्राय: था। यदि वहाँ रहने का निश्चय होता तो वह प्रयत्न करके कहीं न कहीं से खाने और चारे का इन्तजाम करता भी। लेकिन अनिश्चित से थोड़े दिनों के लिए प्रयत्न करना बेकार था। वह घोड़ा तैयार करने चल दिया। घोड़े को दाना पानी देने और उसे तैयार करने का उसे अभ्यास नहीं था। यद्यपि सामदेवयातोव ने उसे इस बारे में कई बार नसीहत दी थी, लेकिन वह बार-बार भूल जाया करता। किसी तरह उसने घोड़ा तैयार किया; और लारा को बुलाने अन्दर चल दिया।

लारा कात्या के साथ कोट पहने तैयार थी। सामान बाँधा जा चुका था। उसकी रुलाई रोके नहीं रुक रही थी। उसने प्रार्थना की—थोड़ी देर बैठ जाओ।

इसके बाद वह स्वयं कुर्सी पर धप् से बैठ गई। उठ कर उसने अस्त-व्यस्त लड़खड़ाते शब्दों में तीव्र वेदनायुक्त स्वर में अवरुद्ध कंठ से पूछा कि क्या वह उसके जाने के इरादे से सहमत नहीं है ?

—मैं क्या करूँ ? मैं नहीं जानती कि यह सब कैसे और क्यों हो रहा है ? लेकिन आप भी तो देखिए कि इस समय जाना संभव कैसे होगा ? बहुत देर हो गई है। थोड़ी देर में अन्धकार हो जाएगा। हम जंगल में खो जायेंगे। मैं ठीक नहीं कह रही हूँ ? आप जैसा कहेंगे मैं करूँगी, लेकिन इस समय जाने का इरादा छोड़ दीजिए। आप कुछ भी कहते क्यों नहीं ? पता नहीं, हमने आधा दिन किस तरह बर्बाद कर दिया। कल शायद हम अधिक शान्ति के साथ सोच सकेंगे—एक रात और रह जाने में हर्ज क्या है ? कल सुबह होते ही छः-सात बजे, हम यहाँ से रवाना हो जायेंगे। सिगड़ी जला कर एक बार और आप अपना लिखने का काम कर लें। क्या यह ठीक नहीं होगा ? हे प्रभु, क्या मुझसे फिर कोई भूल हो रही है ?

—तुम बात को बढ़ा रही हो। अन्धेरा होने में अभी काफी देर है। लेकिन जैसा तुम ठीक समझो, करो। उतावली करने से, इस तरह उखड़ जाने से काम नहीं चलेगा। चलो, कोट उतार दो और सामान खोल डालो। कात्या कह रही थी कि उसे भूख लगी है। खाने के लिए कुछ तैयारी कर लो। तुम ठीक कहती हो। अचानक इस तरह चले जाने में कोई तुक नहीं है। मैं सिगड़ी जलाता हूँ। इससे पहले मैं ज़रा बाहर जाकर देख आता हूँ कि हमारे लकड़ियों के भण्डार में कुछ लकड़ियाँ बची हैं या नहीं ?

ग्यारह

जहाँ लकड़ियों का भण्डार था, वहाँ से ज़िवागो-भवन तक स्ले के कई निशान बन गये। इस शिशिर में बर्फ़ काफी गिरी थी। प्रवेश द्वार पर बर्फ़

के कारण छतें नीचे झुक आई थीं और यार्ड कुबड़ा-सा दिखाई देने लगा था। ऊपर आधा चाँद चमक रहा था। यूरी का मन विकृत और गमगीन था। उसे लगा कि चाँद जुदाई का शकुन प्रकट कर रहा है और नीचे निर्जनता का प्रतिबिम्ब पड़ रहा है।

उसने स्ले से लकड़ियाँ नीचे उतार दीं।

अपने दुर्भाग्य को कोसते हुए लारा के लिए उसने ईश्वर से प्रार्थना की—हे प्रभु, इस अभागी, सरलहृदया, नम्र, प्रिय लारा को सलामत रखना।

घोड़ी हिनहिनाई। उसे आश्चर्य हुआ, यह खुश है या डर गयी है? लेकिन घोड़े डर के मारे हिनहिनाते नहीं! यह इतनी मूर्ख थोड़े ही होगी कि सियारों की गंध पाकर वह अपनी उपस्थिति का संकेत उन्हें दे दे। वह शायद घर जाने की बात सोच रही होगी। उसने कहा—थोड़ी देर और ठहरो, कुछ ही देर बाद हम घर की ओर लौट पड़ेंगे।

इस बार घोड़ी फिर हिनहिनाई। कारण था, सामने दूर से कहीं किसी घोड़े की आवाज़ का आना। इसका क्या मतलब होता है? उसने सोचा—हमारा खयाल था कि वेरिकिनो बिलकुल उजड़ा हुआ होगा, शायद यह हमारी ग़लती थी। यह बात उसके ध्यान में ही नहीं आई कि उसके यहाँ कोई मेहमान आ सकता है। और उनके घोड़े के हिनहिनाने की यह आवाज़ हो सकती है।

जल्दी क्या है? उसने लकड़ियों का ढेर उतार कर रख दिया, घोड़ी को बाँधा। स्ले को यथास्थान रखने के बाद, घोड़ी के सामने बचा-खुचा घास डाल दिया।

पोर्च के सामने एक और स्ले खड़ी थी और उसके आसपास एक मोटा अजनबी घूम रहा था; जो कभी घोड़े को थपथपाता, कभी उसके बालों को सहलाता। अन्दर से किसी की आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह रुक गया। कोमारोवस्की कात्या और लारा से बात कर रहा था। आवाज़ से पता चलता था कि लारा अस्थिर है और चिल्ला रही है। उसके विरोध

का स्वर कभी ऊँचा उठता और कभी वह उसके साथ सहमत हो जाती। शायद वे यूरी के बारे में ही बातचीत कर रहे थे। वह कह रहा था कि यूरी का अधिक विश्वास नहीं किया जा सकता। कौन कह सकता है कि वह अपने परिवार वालों को अधिक प्यार करता है अथवा तुम्हें? वह शायद कह रहा था कि दो तलवारें एक म्यान में नहीं रह सकतीं। या इन दो पाटों के बीच उसकी दुर्गति होगी।

यूरी अन्दर चला गया।

कोमारोवस्की फर-कोट पहने हुए था और लारा कात्या को कोट पहना रही थी जिसका हुक उसे नहीं मिल रहा था और कात्या विरोध कर रही थी—'धीरे माँ, तुम मुझे मार डालोगी।' वे बाहर जाने के कपड़ों में रवाना होने की तैयारी में खड़े थे। यूरी के आते ही लारा और कोमारोवस्की दोनों उसकी ओर एक साथ, एक ही बात, एक ही स्वर में कहते हुए बढ़े—आप कहाँ चले गये थे? यहाँ आपकी सख्त ज़रूरत थी।

—कैसे हो यूरी एण्ड्रेविच? तुमने मुझे निमंत्रित नहीं किया और पिछली बार जो कहा-सुनी हुई थी, उसके बावजूद भी मैं यहाँ फिर एक बार हाजिर हुआ हूँ।

—आप ठीक हैं?

लारा ने पूछा—आप कहाँ चले गये थे? सुनिये, ये क्या कह रहे हैं? अब हमें कोई न कोई फ़ैसला करना ही होगा। व्यर्थ समय बर्बाद नहीं किया जा सकता।

—लेकिन हम सब खड़े क्यों हैं? बैठ जाइये, कोमारोवस्की साहब, बैठ जाइये। हाँ तुम पूछ रही थी कि मैं कहाँ चला गया था? तुम नहीं जानती कि मैं लकड़ियाँ लाने गया था? इसके बाद घोड़े की देखभाल कर रहा था। बैठ जाइये, कोमारोवस्की साहब।

—इन्हें यहाँ देख कर आपको आश्चर्य नहीं हो रहा है? हम सोच रहे थे कि ये कहीं चले न गये हों। हम सोच ही रहे थे कि क्यों न इनके प्रस्ताव

पर विचार किया जाय? अब आप ही इन्हें सब कुछ बता दीजिये। जो कुछ भी आप कहना चाहते हैं, कह दीजिये।

कोमारोवस्की ने कहा—मुझे ठीक-ठीक नहीं मालूम लारा क्या सोच रही है। एक बात मैं स्पष्ट कर दूँ कि मैंने जानबूझ कर यह बात फैलाई थी कि यहाँ से चला गया हूँ। लेकिन मैं रुका रहा, ताकि तुम दोनों को सोचने-विचारने और फ़ैसला करने का समय मिल सके। मुझे आशा है कि अब तुम लोग बिना सोचे-समझे निर्णय नहीं करोगे।

लारा बीच में बोली—अब अधिक टाला नहीं जा सकता। हमें तुरन्त रवाना हो जाना चाहिए। कल सुबह...लेकिन कोमारोवस्की को आप स्वयं यह कह सकते हैं।

—बात ठीक है, लेकिन एक मिनट ठहरो। हम इस तरह खड़े क्यों रहें? बैठ जाइये। इन गंभीर बातों को एक मिनट में तो तय किया नहीं जा सकता। शायद मेरी बात कोमारोवस्की साहब को बुरी लगे। सुनिये, मैं आपके साथ नहीं जा सकता। लारा का मामला अलग है। कभी कभी, जब हमारी परेशानियों का कारण एक-सा नहीं रहता और जब हम एक नहीं, दो व्यक्तियों के रूप में एक दूसरे के सामने प्रस्तुत होते हैं, तब मैंने सदा लारा से कहा है कि वह आपकी योजना पर विचार करे। वास्तव में वह अब तक आपकी योजना के बारे में ही सोच रही थी।

लारा बीच में बोली—लेकिन एक शंर्त पर, कि आप हमारे साथ चलेंगे।

—जुदा होना जितना कठिन मेरे लिए है, मुझे मालूम है, उतना ही कठिन तुम्हारे लिए भी होगा। लेकिन शायद हमें अपनी भावनाओं को दूर रख कर त्याग करना ही होगा। कारण, मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा।

—लेकिन आपने सुना नहीं, कोमारोवस्की क्या कह रहे हैं? कल सुबह...

—लारा उस बारे में सोच रही है, जो मैंने अभी-अभी उसे कहा है। सुदूर-पूर्व सरकार की ट्रेन स्टेशन पर तैयार खड़ी है। वह कल पूर्व के

लिए रवाना हो रही है। आधे डिब्बे इनमें संचार मंत्रालय के लिए हैं, इसी गाड़ी से मैं जा रहा हूँ। कई सीटें मेरे और मेरे सहायकों के लिए सुरक्षित हैं। आराम से सफर की जा सकती है। फिर ऐसा मौका मिलेगा नहीं। मुझे मालूम है कि तुम्हारा स्वभाव उग्र है। एक बार निश्चय कर लेने पर तुम उस पर पुनर्विचार नहीं कर सकते। लेकिन लारा के बारे में तो सोचो। वह कह रही है कि बिना तुम्हारे वह जायेगी ही नहीं। चलो हमारे साथ व्लादिवोस्टक तक नहीं तो युर्यातिन तक ही चलो। वहाँ चलकर सोचेंगे। लेकिन हमें जल्दी करनी चाहिए। एक क्षण भी बर्बाद नहीं किया जा सकता। मैं स्वयं गाड़ी नहीं चलाता। मेरा कोचवान है। पाँचों के लिए तो मेरी गाड़ी में जगह नहीं होगी। लेकिन तुम्हारे पास तो सामदेवयातोव का घोड़ा है ही। क्या वह अब भी तैयार है?

—नहीं, मैंने उसे खोल दिया है।

—कोई बात नहीं। जितनी जल्दी हो सके, जीन कस दो। मेरा कोचवान तुम्हारी मदद करेगा। परेशानी की बात ही क्या है, तुम्हारे स्ले की कोई ज़रूरत नहीं। हम किसी तरह गाड़ी में समा जायेंगे। लेकिन भगवान के लिए जल्दी करो। जो कुछ तुरन्त हाथ लग सके, वही यात्रा के लिए आवश्यक सामान बाँध लो। भूलो मत कि यह एक बच्ची की ज़िन्दगी का सवाल है।

—मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि आप क्या कह रहे हैं? आप तो इस तरह बातें कर रहे हैं, जैसे मैंने आपके साथ चलने का निश्चय कर लिया हो। आप जाइये, और मजे में रहिये। यदि लारा जाना चाहे, तो वह भी आपके साथ जा सकती है। घर की चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं। तुम लोगों के जाने के बाद इसे साफ़ करके ताला लगा दूँगा।

—आप क्या कह रहे हैं? 'यदि लारा चाहे तो'—क्या आपको विश्वास नहीं होता कि मैं आपके बिना कहीं नहीं जा सकती? अपने आप मैं कोई निर्णय नहीं ले सकती। इसलिए 'घर साफ़ करने' की, 'ताला लगाने' की इन बातों का क्या मतलब है?

—सो, तुम अपने निश्चय पर दृढ़ हो? अच्छी बात है—कोमारोवस्की ने कहा—यदि लारा इजाजत दे तो मैं तुमसे अकेले में कुछ कहना चाहता हूँ।

—यदि कोई इतनी आवश्यक बात हो तो मैं हाजिर हूँ। चलिये, रसोईघर में चलें। इजाजत है लारा?

बारह

—स्ट्रेलिनिकोव को गिरफ्तार करके मृत्यु-दण्ड दिया गया था और उसे गोली मार दी गयी।

—ओह, कितनी भयंकर बात है! सच?

—यही मुझे बताया गया है और मुझे विश्वास हो गया है कि यह सच है।

—लारा को मत कहियेगा। वह पागल हो जायेगी।

—मैं नहीं कहूँगा। इसीलिए तुमसे अकेले बात करना चाहता था। जो कुछ हो चुका है, उसके बाद लारा और कात्या की ज़िन्दगी खतरे में है। उन्हें बचाने के लिए तुम्हें मेरी मदद करनी होगी। हमारे साथ न चलने का तुम्हारा निश्चय पक्का है?

—बिलकुल।

—लेकिन वह बिना तुम्हारे जायेगी नहीं। मेरी समझ में नहीं आता कि क्या किया जाय? अच्छा एक दूसरे तरीके से तुम मेरी मदद कर सकते हो। तुम्हें इस तरह का भाव बताना होगा कि हमारे साथ नहीं तो हमारे पीछे तुम आ रहे हो। थोड़ा झूठ ज़रूर बोलना पड़ेगा। लेकिन अपने इस प्रस्ताव में तुम्हारा खयाल भी मुझे है। मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि ज्योंही मुझे मौका मिला मैं तुम्हें पूर्व की ओर भेज दूँगा। वहाँ से जहाँ भी तुम जाना चाहो, उसके लिए मैं व्यवस्था कर दूँगा। लेकिन तुम्हें लारा को यह विश्वास दिलाना होगा कि तुम हमारे पीछे आ रहे हो। तुम कह

सकते हो कि स्ले तैयार करके मैं पीछे आता हूँ और बिना समय बर्बाद किये हम लोग रवाना हो जायें।

—स्ट्रेलिनिकोव के बारे में समाचार सुन कर मैं इतना दिग्विमूढ़ हो गया हूँ कि मेरी समझ में आपकी कोई बात नहीं आ रही है। फिर भी मुझे मालूम है कि आजकल के नियमानुसार यदि एक बार स्ट्रेलिनिकोव का हिसाब चुकता कर दिया गया है; तो लारा और कात्या का जीवन खतरे से खाली नहीं है। किसी न किसी तरह से तो हमें जुदा होना ही होगा। ऐसी हालत में क्या हर्ज है, यदि हमारी जुदाई आपके हाथों ही हो। ले जाइये उसे, ले जाइये उसे, उतनी दूर, जितनी दूर ले जाया जा सके। मैं तुम्हारी इच्छानुसार सारा नाटक रच लूँगा। फिर एक दिन अपने जीवन की, लारा की, अपनी सुरक्षा की, और पार-पत्र पाने की तथा परिवार के लिए समुद्री यात्रा की आज्ञा के लिए मैं आपके सामने घुटने टेक कर प्रार्थना करूँगा। और आपकी इस कृपा को पाकर खुश होऊँगा। लेकिन मुझे थोड़ा समय दो। मैं उत्तेजित हो गया हूँ, मेरा दिल टूट गया है, मैं ठीक तरह से कुछ भी सोच नहीं पाता। पता नहीं, आपकी बात मन लेने पर मुझसे कितनी बड़ी भूल होगी और जीवन के अन्त तक मुझे इसके लिए किस तरह प्रायश्चित्त करते रहना होगा? लेकिन सिवाय इसके कि मैं अन्धे की तरह आपकी आज्ञाओं का पालन करूँ, मैं कर ही क्या सकता हूँ? आपकी ही इच्छा पूरी हो, न रहे मेरी इच्छा! अच्छी बात है, यही हो। मैं जाकर कहूँगा कि मैं स्ले तैयार करके तुम लोगों के पीछे आ रहा हूँ। लेकिन इस समय आप जायेंगे कैसे? अन्धेरा हो रहा है—सामने घना जंगल सियारों से भरा हुआ है।

—मुझे मालूम है। चिन्ता की कोई बात नहीं। मेरे पास एक बन्दूक और रिवाल्वर है। ठंड दूर करने के लिए थोड़ी शराब भी लाया हूँ। मेरे पास काफी है। तुम पीओगे?

तेरह

ओह, यह मैंने क्या कर डाला? मैंने उसका परित्याग कर दिया!

लारा, ओ लारा!

मेरी आवाज़ अब उन तक नहीं पहुँच सकती।

सभी कुछ ठीक-ठाक और सुव्यवस्थित रूप से निपट जाने से वह खुश हो रही होगी। वह सोच रही होगी कि मेरे साथ वह किसी ऐसी सुव्यवस्थित जगह जा रही है। वह आशा कर रही होगी, कि मैं उनके पीछे-पीछे आ रहा हूँ। जंगल पार करने से पहले मैं उनके साथ हो लूँगा।

विदा भी न दे सका। जैसे कंठ में कुछ फँस गया हो। बोला नहीं जा रहा था। मैंने पीठ मोड़ ली थी।

वह पोर्च में खड़ा था। उसका सारा ध्यान सामने के बिन्दु पर केन्द्रित था। बर्च-वृक्षों से घिरी हुई सड़क पहाड़ के ऊपर चढ़ जाती है। वहाँ जाती हुई स्ले दिखाई दे रही थी। अस्तगामी सूर्य की वक्र किरणें अभी भी खुले मैदान में फैली हुई थीं।

अलविदा, प्रिय अलविदा। हमेशा के लिए चले जाने वाले मेरे प्रेम अलविदा।

एक के बाद एक बर्च वृक्षों को पार करती हुई स्ले धीमी पड़ गयी, शायद रुक गयी। उसने मन ही मन में सोचा—वे वापस लौट रहे हैं। वे लौट रहे हैं।

उत्तेजना के मारे उससे खड़ा नहीं रहा जाता था; कि वह बेहोश होकर गिर पड़ेगा।

वे क्यों खड़े हो गये? हे प्रभु, क्या तुम मुझे अपना मीत लौटा दोगे?

लेकिन वे चल पड़े।

विदा, लारा, अलविदा। अब हमारी मुलाकात होगी किसी दूसरे संसार में। आह, अब तुम्हें इस जीवन में फिर कभी नहीं देख सकूँगा!

अन्धेरा हो रहा था। उसने चारों ओर देखा प्रकृति का प्रत्येक दृश्य जैसे परम मित्रों की भाँति सहानुभूतिपूर्ण नेत्रों से उसे निहार रहा था।

उसने मन ही मन कहा—धन्यवाद, मित्रो धन्यवाद! मैं थोड़ी देर में ठीक हो जाऊँगा।

वह कमरे में लौट आया। जैसे उसने संसार की ओर से पीठ मोड़ ली हो। मन ही मन उसने कहा—मेरा सौभाग्य सूर्य अस्त हो गया है।

चाह कर भी वह इन शब्दों को ज़ोर से नहीं कह पा रहा था।

दो बातें उसके दिमाग में एक साथ चक्कर काट रही थीं—

—पहले मास्को जाऊँगा। पहला सवाल है अपने आप को बचाना। अनिद्रा की बीमारी की चपेट में आने से बचना होगा। सारी रात काम करता रहूँगा जब तक कि नींद बुरी तरह से न आने लगे। स्टोव जला देना चाहिए। रात को बहुत ठंड पड़ेगी।

मन का दूसरा स्वर कहता—मैं तुम्हारी स्मृति के साथ बैठा रहूँगा। जब तक कि मेरी बाँहें, मेरे हाथ, मेरे होंठ तुम्हें याद करते हैं, तब तक तुम्हारे लिए रोता रहूँगा। मेरा यह विलाप अक्षय बना रहे और तुम्हारे प्रेम के अनुकूल प्रमाणित हो।

कुछ दिनों बाद मैं भी यहाँ से चला आऊँगा। कागज पर समुद्र की तरह अपने दु:ख को उँड़ेल दूँगा कि तूफान उसके अन्तराल को मथ दे और विशालाकार बड़ी-बड़ी लहरें किनारों पर अपने चिह्न अवशेष छोड़ दें।

दरवाजा बन्द करके वह शयन कक्ष की ओर गया। रवाना होने की तैयारी में वहाँ सब कुछ अस्त-व्यस्त बिखरा पड़ा था। वह बिस्तर के सामने घुटनों के बल बैठ गया। बच्चों की तरह, पलंग पर सिर रख कर छाती फाड़ कर वह रोने लगा।

चौदह

थोड़ी देर बाद वह उठा। अपना मुँह पोंछा। कोमारोवस्की जो शराब छोड़ गया था उसे ग्लास में डाल कर आँसुओं की व्यर्थता को भुलाने के लिए वह उसे गट-गट पी गया।

उनके अन्तर्द्वन्द्व के कारण उसका मस्तिष्क स्थिर नहीं था। जीवन में वह कभी इतना अस्त-व्यस्त नहीं रहा। अपने बारे में वह सब कुछ भूल गया। अपने बारे में उसे किसी तरह की कोई रुचि नहीं रही। रात उसके लिए दिन के समान हो गई। वह भूल गया समय की गणना को, कि लारा को यहाँ से गये कितने दिन गुज़र गये। वह वोडका पीता और लारा के बारे में लिखता। लिखता और काट डालता। इसी क्रम में उसकी वास्तविक लारा उससे दूर होती गई। भावाभिव्यक्ति के लिए सशक्त समर्थ शब्द नहीं मिल पाते कि वह अपने जीवन के अतीत को मुक्त रूप से प्रस्तुत कर सके। परिणामस्वरूप वास्तविकता की ओजस्विता उसकी कविताओं में से गायब हो गई।

लारा द्वारा भेजे गये सन्देश की तरह, उसकी शुभकामनाओं की तरह, स्वप्न में देखे गये उसके प्रतिबिम्ब की तरह, उसके मस्तक पर उसके रखे हुए हाथ के स्पर्श की तरह, उसे अपनी काव्य-रचना में आनन्द प्राप्त होता। कविताओं में भाव्यशून्यता के बजाय समाधान की प्रतिष्ठा हुई। कविताओं के इस ऊँचे स्तर से उसे सान्त्वना मिलती!

लारा के वियोग में दग्ध, अपनी पिछली रचनाओं में वह कुछ न कुछ लिखता। बढ़ाता। प्रकृति, दैनिक जीवन तथा अन्य विषयों के साथ-साथ सामाजिक और वैयक्तिक जीवन की भूमिका के विचार उसके मस्तिष्क में चक्कर लगाने लगते।

स्वीकृत प्रणाली से जिसे इतिहास का क्रम कहा जाता है वह इतिहास नहीं, वनस्पति वर्ग से लिया गया साक्षात् स्वरूप प्राप्त इतिहास का प्रतिबिम्ब उस पर निखर आया। शिशिर ऋतु अचानक वसन्त ऋतु में परिवर्तित हो जाती है। इस नवीन रूप धारण करने की क्रिया में जानवरों के विकास से अधिक तेजी है; क्योंकि जानवर पौधों से अधिक तेजी से विकसित नहीं होते। इस विकास की गति को, रुक कर अपनी आँखों से देखा नहीं जा सकता। देखने पर तो यह हमें गतिहीन स्थिर ही दिखाई देगा। यह हमारी दृष्टि की स्थिरता का दोष है। समाज और इतिहास अदृश्य रूप से विकसित होता रहता है।

टालस्टाय ने भी शायद इसी विषय पर विचार किया है। लेकिन इस तरह, इन शब्दों में नहीं। उन्होंने इतिहास को अस्वीकार करते हुए लिखा था कि नेपोलियन अथवा किसी राजा, सामन्त अथवा किसी भी एक व्यक्ति द्वारा इतिहास आगे नहीं बढ़ा है। इतिहास किसी एक व्यक्ति द्वारा रचा नहीं जा सकता। न एक व्यक्ति इतिहास बन सकता है, न उसे देखा जा सकता है। ठीक उसी तरह, जिस तरह दूब का ऊगना और विकसित होना नहीं देखा जा सकता।

राजा, युद्ध और क्रान्तियाँ इतिहास के मार्मिक तत्त्व हैं। क्रान्तियों की पृष्ठभूमि में दृढ़निश्चय के क्रियाशील व्यक्ति रहे हैं। जिनका मस्तिष्क एक ध्येय पर अटल है, ऐसे व्यक्तियों की प्रतिभा केन्द्रित रहती है। वे सारी पुरानी परिपाटी को चन्द घंटों, दिनों, महीनों अथवा सालों में उलट देना चाहते हैं। बाद में शताब्दियों तक इस केन्द्रित एकनिष्ठ प्रवृत्ति की पवित्रता की पूजा होती रहती है।

मेल्युजेवो के वे दिन याद आये, जब लारा से उसकी मुलाकात हुई थी।

उस समय क्रान्ति ईश्वरीय संकेत थी। उस समय प्रत्येक व्यक्ति सही स्थान पर था। निजी उत्तेजना से लोग पागल हो गये थे। किसी उच्च सिद्धान्त की प्रतिष्ठा के ये प्रारूप थे।

'क्या सौन्दर्य सदा लोकोपयोगी है? सौन्दर्य साकार ही है। इसी में जीवन का स्पन्दन है। क्योंकि बिना आकार के जीवन धारण किया नहीं जा सकता। इसीलिए कला का प्रत्येक पक्ष दुखपूर्ण तरीके से जीवित रहने की खुशी का अनुभव करता है। कला की आकृति उसे इसी तरह तसल्ली देती है।'

इस टिप्पणी को लिखने पर दुःख और आनन्द की मिश्रित भावनाओं से उसका सिर दर्द करने लगा।

इन दिनों सामदेवयातोव आये थे। उन्होंने बताया कि लारा कोमारोवस्की के साथ रवाना हो गयी है। घोड़े की ठीक तरह से

देखभाल न करने के लिए रोष प्रकट करते हुए, वे उसे अपने साथ ले गये। यूरी का कहना था कि दो-चार दिन उसे और छोड़ जाओ। वापस जवाब मिला—दो-चार दिन बाद इसे वापस ले आऊँगा। आते वक़्त वे अपने साथ बहुत सारी शराब ले आये थे, वह यूरी को दे दी गयी। सामदेवयातोव ने वादा किया कि अगली बार वे हमेशा के लिए यूरी को अपने साथ, युर्यातिन ले जायेंगे।

जिस प्रकार बचपन में उसे अपनी माँ की आवाज़ छला करती थी, उसी प्रकार उसे लगता कि प्रत्येक दिशा से उसे कोई पुकार रहा है—यूरी।

अपने काम में व्यस्त होते हुए भी उसे लारा इतनी अधिक याद आती कि उसके अभाव से लगता कि उसका हृदय विदीर्ण हो जायेगा।

दूसरे हफ्ते में उसे विचित्र किस्म के भ्रम होने लगे। एक बुरे सपने से डर कर जब उसकी आँखें खुलीं, तो उसे सामने के नाले पर रोशनी की एक चमक दिखाई दी, इसके बाद बन्दूक की आवाज़।

उसे इस अनपेक्षित घटना पर आश्चर्य हुआ, विश्वास नहीं हो सका।

वापस सोते हुए उसने सोचा—संभवतः यह स्वप्न है।

पन्द्रह

यूरी ने निश्चय किया कि अब संभल जाना चाहिये। समझदारी से काम लेना चाहिए। यदि आत्मरक्षा करनी ही है, तो उसके लिए आसान तरीका काम में लाया जा सकता है। सोचा कि सामदेवयातोव के आते ही वह उसके साथ चला जायेगा।

सामने के मैदान की बर्फ़ पर किसी के चलने के हलके पदचाप सुनाई दिये।

कौन?

सामदेवयातोव तो नहीं हो सकता। उसके पास अपना घोड़ा है। शायद मुझे बुलाने कोई आया हो। हो सकता है शहर लौट चलने की आज्ञा हो।

या मुझे गिरफ्तार करने के लिए आदमी आये हों। लेकिन ऐसा होता तो एक आदमी नहीं आता और मुझे ले जाने के लिए उनके पास वाहन अवश्य होता।

शायद मिकुत्सिन हो।

वह व्यक्ति बिना हिचकिचाहट के, पूरे आत्मविश्वास के साथ आकर दरवाजे पर रुक गया।

उसने सरल भाव से पूछा—आप किससे मिलना चाहते हैं?

जवाब न मिलने पर वह आश्चर्यचकित-सा आगन्तुक व्यक्ति को देखता रहा। प्रस्तुत व्यक्ति हट्टाकट्टा सौम्य स्कंध पुरुष था। कन्धे पर बन्दूक लटक रही थी। उसके इस स्वरूप को देख कर वह आश्चर्यचकित रह गया था। वह समझ गया कि उन्हें जो दैवी मदद मिल जाया करती थी, वह इसी आदमी के कारण। उसे लगा कि इस आदमी को उसने पहले कहीं देखा है।

आगन्तुक को शायद मालूम था कि मकान में कोई रहता है। सम्भवतः वह यूरी को पहचानता भी था।

पता नहीं किस वर्ष की दग्ध मई के प्रातःकाल में, ट्रेन का एक डिब्बा, एक अधिकारी...। दृढ़ निश्चयी, एकनिष्ठ—हाँ स्ट्रेलिनिकोव! पाशा!

सोलह

इन व्याकुल बना देने वाले भयपूर्ण दिनों में जिस प्रकार रूस का प्रत्येक व्यक्ति निराश स्वर में क्रुद्ध होकर ज़ोर से बोलने लगता, ठीक उसी तरह वे दोनों आपस में घण्टों बातचीत करते रहे।

स्ट्रेलिनिकोव बातचीत खत्म करना नहीं चाहता था। वार्तालाप को जारी रखने का वह हर संभव प्रयत्न कर रहा था। जैसे उसे अकेले रहने में डर लग रहा हो। पता नहीं वह अपने आप से डर रहा था अथवा निराशा से भरी स्मृतियाँ उसे डरा रही थीं; अथवा हो सकता है वह आत्मप्रताड़ना से

दु:खी हो, जो कि आदमी को इतना हीन और अरुचिपूर्ण बना देती है कि असह्य लज्जा के मारे वह मर जाना चाहता हो। या सम्भवत: उसने कोई ऐसा निश्चय किया हो, जिसके विचार के साथ, वह अकेले में रहना नहीं चाहता हो। उस निश्चय को क्रियान्वित करने में, इस बातचीत द्वारा जो देर हो, उससे कुछ छद्म तसल्ली उसे मिल रही हो।

वह इस बात को छिपा गया। लेकिन वैसे वह खुले दिल से प्रत्येक विषय पर बोल रहा था—

इस युग की क्रान्ति की बीमारी संक्रामक रूप में फैल गयी थी। हृदय में कुछ और होते हुए भी लोग इस आडम्बर में बहे जा रहे थे। किसी के दिमाग में कोई बात स्पष्ट नहीं थी। कारण ऐसे थे कि प्रत्येक व्यक्ति आत्मवंचना से प्रताड़ित था कि प्रत्येक को लगता कि वह ऐसे अपराध कर रहा है, जिसकी किसी को जानकारी नहीं है। किसी भय के कारण नहीं, अपने आप लोग स्वयं को प्रताड़ित करने लगे थे। इस विनाशक प्रवृत्ति के कारण आध्यात्मिकता जैसी कोई चीज़ शेष नहीं रही।

पदाधिकारी सैनिक के रूप में पाशा आन्तिपोव ने अनेक सैनिक कोर्टों में निर्णय करने के पद पर काम किया है। कई शपथ-साक्षियाँ सुनी हैं। कई घोषित अपराधियों को सज़ा दी है।

आज वही छिपने के अपराध का अपराधी है।

वह सारे जीवन का लेखा-जोखा करके हिसाब ठीक करना चाहता था।

वह कह रहा था—टेबल की दराजों में सामान देख कर शायद तुम चकित रह गये थे? वह सब मिलेट्री को दिये गये माल में से मेरे विश्वस्त और भरोसे के आदमियों द्वारा यहाँ लाया गया था। यों कहा जाय तो मेरा सारा जीवन ऐश्वर्यशाली रहा है। 'ऐसी बात नहीं है?'—हाँ, यह मेरी पत्नी का तकियाकलाम था। जब तुम से मिला तभी मैं यह तुम्हें कहने वाला था। सचमुच, मैं अपनी पत्नी और कन्या से मिलने के लिए ही यहाँ आया था। मुझे मालूम था कि तुम उनके साथ हो। तुम्हारा नाम भी मैं जानता

था। किसी विशेष कारणों से, हजारों लोगों के सम्पर्क में आने पर भी, मैंने तुम्हारा नाम छाँट कर तुम्हें पहचान लिया था। डा. ज़िवागो! तहकीकात के सिलसिले में तुम्हारी पेशी मेरे यहाँ हुई थी?

—अब तुम्हें अफसोस हो रहा होगा कि तुमने मुझे गोली नहीं मार दी?

पाशा ने इस प्रश्न का जवाब नहीं दिया। शायद उसने सुना ही नहीं। अपने विचारों में मग्न वह कहता गया—वास्तव में मुझे ईर्ष्या हुई है, लेकिन उस मामले में नहीं 'ऐसी बात नहीं है?'

सुदूर पूर्व के मेरे गुप्तवास के बाद मैं यहाँ कुछ ही दिन पहले आया था। कोर्ट-मार्शल के अन्तर्गत मुझ पर धोखा देने का अपराध लगाया गया था। नतीजा स्पष्ट है। मैं अपराधी नहीं था। सोचा, भविष्य में शायद कभी अपनी अच्छाई प्रमाणित कर सकूँ। इसलिए मैंने फरार होने का निश्चय कर लिया। अब भी मैं गुप्त रह सकता था। मुझे गिरफ्तार कर सकें, इससे पहले संन्यासी के रूप में इधर-उधर घूमता हुआ जीवन बिता सकता था। यह मुश्किल नहीं होता यदि वह धूर्त लड़का मुझे मिल गया होता, जिस पर मैंने विश्वास किया और जिसने मुझे धोखा दिया।

लोगों से बचता हुआ जब मैं पिछली शीत ऋतु में साइबेरिया से पैदल भाग रहा था, बुरी तरह थका हुआ और भूखा-प्यासा। बर्फ़ के खण्डों में अथवा किनारे पड़ी बेकार ट्रेनों के डिब्बे में सोने के सिवाय कोई चारा नहीं था। इस लड़के ने मुझे बताया कि वह सपक्षी दल का सदस्य है और उसे किसी अपराध के सिलसिले में गोली मार दी गयी थी। किसी तरह वह बच कर निकल भागा है। जंगल में कुछ दिनों वह छिपा रहा। वहाँ उसके घाव भर गये और मेरी तरह वह भी छिपता हुआ भागता फिर रहा था। वह दुश्चरित्र और मूर्ख था। आलसी होने के कारण उसे स्कूल से निकाल दिया गया था।

इस विवरण से यूरी को लगा कि वह इस लड़के को जानता है।

पूछा—उस लड़के का नाम टेरन्टी गलुजिन था?

—हाँ।

—तो उसने जो कुछ कहा, सच ही कहा। एक शब्द भी झूठ नहीं।

—उसके पिता को शत्रु मान कर गोली मार दी गयी थी। उसकी माँ कैदखाने में थी और संभावना थी कि उसे भी गोली मार दी जायेगी। वह अपनी माँ को बहुत चाहता था, उसके लिए कुछ भी करने को तैयार था। स्थानीय चेका में जाकर उसने आत्मसमर्पण कर दिया और उनके लिए काम करने को राजी हो गया। उसे मौका मिल गया, इस शर्त के साथ कि वह मुखबिर हो जाय। उसने बता दिया कि मैं कहाँ छिपा हुआ हूँ। परन्तु भाग्यवश मैं वहाँ से निकल चुका था।

कई अच्छे-बुरे अभियान और प्रयत्नों के साथ मैंने साइबेरिया पार किया और देश के उस भाग में पहुँचा, जहाँ मैं काफी अच्छी तरह प्रसिद्ध हूँ। मुझे मालूम था कि वे यहाँ मुझे तलाश नहीं करेंगे। उनके खयाल में मेरी यहाँ आने की हिम्मत हो ही नहीं सकती। वे चेका के आसपास मुझे ढूँढ़ रहे थे; उस समय मैं इस घर में अथवा यहीं-कहीं आसपास छिपा हुआ था। मैं जानता था कि मैं यहाँ सुरक्षित हूँ। लेकिन अब सब कुछ समाप्त हो गया है। वे करीब आ गये हैं। रात हो रही है। मैं कई सालों से सो नहीं पाया। मोमबत्तियाँ हैं न? थोड़ी देर हम बातचीत करते रहें, तब तक, जब तक कि तुम बर्दाश्त कर सको। मैं चाहता हूँ कि मोमबत्ती के प्रकाश में सारी रात हम बातचीत करते रहें।

—मोमबत्तियाँ अभी भी हैं।

—रोटी है?

—नहीं।

—फिर तुम क्या खाते हो? लेकिन यह भी कैसा बेहूदा प्रश्न है। आलुओं की यहाँ कमी नहीं है।

—ठीक कह रहे हो। आलू काफी तादाद में हैं। यहाँ रहने वाले भले आदमी थे। वे आलू जमा करना जानते थे। आलुओं को इस तरह रखा गया है कि न तो वे जमे हैं न सड़े ही हैं।

इसके बाद पाशा क्रान्ति के विषय में बातचीत करने लगा।

सत्तरह

—तुम इसका मतलब नहीं समझ सकोगे। तुम्हारा लालन-पालन दूसरे ही तरीके से हुआ है। चारों ओर उपनगरों, रेलों तथा मकानों में गन्दगी फैली हुई थी। गन्दगी, भुखमरी, जनाधिक्य, कामगारों का पतन, स्त्रियों के चरित्र का ह्रास, यही सब था। धूर्तता तथा दुष्टता मुक्त थी। अमीर गरीबों के आँसुओं पर हँसते। वे लोग शासन करते, जो परोपजीवी थे। उनकी विशेषता यह थी कि वे अपने आप को किसी चीज़ के लिए परेशान करने का कष्ट नहीं करते। न उन्हें किसी को कुछ देने की फिक्र थी, न यहाँ कुछ छोड़ जाने की। लेकिन हमारे लिए जीवन एक संघर्ष था। अपने प्रियजनों के लिए हम पर्वत हिला देने को तैयार थे। हमारा बस चलता तो हम उनका बाल भी बाँका नहीं होने देते। लेकिन हमें कितना कुछ भुगतना पड़ा।

सुनो, आगे कुछ कहूँ इससे पहले मैं तुम्हें यह बता देना चाहता हूँ कि तुम शीघ्र ही वेरिकिनो से चले जाओ। यदि तुम्हारा जीवन के प्रति ज़रा भी मोह है तो यहाँ एक क्षण भी मत रुको। मुझ पर जो कुछ बीतेगी, मैं संभाल लूँगा। लेकिन तुम यहाँ रहे तो तुम भी चपेटे में आ जाओगे। मुझसे बातचीत करना, कम अपराध नहीं है। इसके अलावा यहाँ सियारों की तादाद भी काफी है। पिछली रात बड़ी मुश्किल से मैं इन सियारों के बीच से रास्ता निकाल कर आ सका हूँ।

—तुम्हीं गोली चला रहे थे?

—हाँ। तुमने सुना होगा। मैं अपने गुप्तवास की ओर जा रहा था कि मुझे मालूम हो गया कि वहाँ के लोग मार दिये गये हैं। मेरा पता चल गया है। मैं अधिक देर तक तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा। रात भर रह कर चला जाऊँगा।

अच्छा यदि तुम बोर नहीं हो गये हो तो मैं कहते रहना चाहता हूँ। मास्को या रूस में ही तेमरस्काया-यामस्काया स्ट्रीट नहीं है जिनमें

शौकीन विलासी नवयुवक किराये की लड़कियों के साथ किराये की गाड़ियों में घूमा करते थे। वह सड़क, वहाँ के रात्रि का जीवन, अतीतकालीन शताब्दियों की रात्रि का वह जीवन, इन व्यसनी विलासी लोगों की संसार के किसी कोने में कभी कमी नहीं रही।

उसी समय सामाजिक विचारों की व्युत्पत्ति हुई।

युवा लड़के नि:स्वार्थ भाव से मोर्चे पर लड़ते हुए मारे जाते। तमाम पत्रकार धन की सत्ता समाप्त करने के लिए सोच रहे थे। गरीबों की मानवीय प्रतिष्ठा के लिए मार्क्सवाद सामने आया। मार्क्स ने युग की बुराई की जड़ को ढूँढ़ निकाला। और वह इस युग का महान नायक बन गया।

और उसी तेमरस्काया, यामस्काया स्ट्रीट में घोषणाएँ होतीं, गोलियाँ चलतीं, नौजवान लड़ते हुए मारे जाते।

...जब वह लड़की ही थी, वह कितनी खूबसूरत थी! मैं उसे देखा करता। उस समय भी उसकी निगाहों में वही सतर्कता थी, जिसे आसानी से पढ़ा जा सकता था। उस जमाने के आँसू, अभिशाप, भ्रान्त आशाएँ, प्रतिहिंसा और गौरव का प्रतिबिम्ब उसके चेहरे पर देखा जा सकता था। उसके बालिका-हृदय में सहज लज्जा के साथ शानदार हिम्मत थी। उस युग को, उसके चेहरे पर उसके नाम से ही जान सकते हो। यह छोटी बात नहीं। युग का भाग्य और प्रतीक उसे प्रकृति द्वारा जन्मजात मिला था।

—मैंने भी उन दिनों उसे देखा था। ठीक इसी रूप में। किसी महान नाटक की गुप्त नायिका की तरह, उसकी छाया दीवाल के सहारे असहाय, सतर्क, आत्म-रक्षा के लिए आतुर, चली जा रही थी। तुम्हारे कहने से सब कुछ याद हो आया।

—तुमने देखा था, याद है तुम्हें? फिर तुमने क्या किया?

—यह दूसरी कथा है।

—खैर। पैरिस की क्रान्ति, रूसी प्रवासियों की पीढ़ियाँ, जार का वध—किसी ने योजना बनाई, किसी ने उसे क्रियान्वित कर डाला। यूरोप की संसदों और विश्वविद्यालयों में, संसार के कामगारों के सारे आन्दोलन में इन नये विचारों की पद्धति अपने नवीन रूप में चरम सीमा पर पहुँच गयी। इसका दर्द और उसका कठोर इलाज दया के नाम पर आविष्कृत किया गया—यह सब लेनिन में सन्निहित हो गया, जिसने इसे अभिव्यक्ति दी, इसे व्यक्तित्व दिया—कि वह संसार में इस तरह आया कि अपने पुराने कारनामों की भरपाई की जा सके।

साथ ही रूस का विराट रूप संसार के सामने प्रकट हुआ। ऐसे प्रज्वलित रूप में कि मनुष्य के समस्त दुःख और दुर्भाग्य के लिए मुक्ति का प्रकाश सिद्ध हो सके। लेकिन तुम्हें यह सब सुनाने से क्या लाभ?

इस लड़की के लिए मैंने अध्ययन किया और स्कूल-मास्टर बन गया और हम युर्यातिन चले आये। इसी के लिए मैंने किताबें कंठस्थ कर डालीं और ज्ञान की अगाध राशि में डूब गया ताकि मैं उसके लिए उपयोगी सिद्ध हो सकूँ। विवाह के तीन साल बाद मैं युद्ध में गया और वहाँ से लौटते समय मैंने इस अफवाह का लाभ उठाया कि मैं मार डाला गया हूँ। फिर बनावटी नाम के साथ मैं क्रान्ति के इस संग्राम में कूद पड़ा। ताकि मेरी सारी ग़लतियाँ उसकी नज़रों से ओझल हो जायें। उसकी तमाम यातनाओं को मैं धो-पोंछ देना चाहता था।

वे मेरे पास ही थे। उनके पास जाने की इच्छा को दबाने का मुझे कितना प्रयत्न करना पड़ता था। लेकिन जीवन के इस महत्त्वपूर्ण कार्य को मैं पहले समाप्त कर देना चाहता था।

वह जब अन्दर आई तो लगा कि जैसे खिड़की खोल दी गयी हो और सारा कमरा वायु और प्रकाश से भर गया हो।

—मैं जानता हूँ कि तुम उसे कितना प्यार करते हो। लेकिन तुम्हें मालूम है, वह तुम्हें कितना प्रेम करती है?

—क्या कहा?

—मैंने कहा कि तुम्हें मालूम है वह तुम्हें कितना प्यार करती है?

—तुम कैसे कह रहे हो?

—उसने मुझे कहा था।

—उसने कहा था। तुमसे?

—हाँ।

—यह पूछना ठीक तो नहीं है, लेकिन बता सकते हो कि उसने ठीक-ठीक क्या कहा था?

—उसने कहा कि तुम एक आदर्श-आदमी हो, कि तुम्हारे मुकाबले का कोई आदमी इस धरती पर नहीं है। तुम्हारी ईमानदारी की तारीफ करती हुई वह कहती थी कि यदि घुटनों के बल रेंग कर भी तुम तक पहुँचा जा सके, तो पृथिवी के किसी भी कोने से वह दौड़ती हुई तुम्हारे पास चली आयेगी।

—माफ करना, तुम्हें वे परिस्थितियाँ याद हैं, जब उसने यह सब कहा था।

—वह इस कमरे की सफ़ाई कर रही थी। कार्पेट झाड़ने बाहर खड़ी थी।

—कौनसी कार्पेट? यहाँ दो हैं।

—यह और वह।

—उसके लिए ये बहुत भारी हैं। तुमने उसकी मदद की होगी?

—हाँ।

—एक हिस्सा तुमने पकड़ा होगा और धूल से बचने के लिए मुड़ कर उसने अपना चेहरा पीछे की ओर फेर लिया होगा। आँखें मींच कर उसने हँसते हुए यह कहा होगा? फिर उस भारी कार्पेट को दो भागों में मोड़ा होगा। फिर चार भागों में। और तब उसने मजाक में यह कहा होगा।

वे उठ खड़े हुए। खिड़कियों से सामने का दृश्य दिखाई दे रहा था। स्ट्रेलिनिकोव यूरी के पास आया, उसका हाथ पकड़ कर उसने अपनी छाती पर रखा, दबाया। फिर तेजी के साथ टहलता रहा। बोला—

—माफ करना डाक्टर। मैं तुमसे बहुत कुछ पूछना चाहता हूँ। मेहरबानी करके तुम चले मत जाना। मैं स्वयं जल्द ही चला जाऊँगा। ज़रा सोचो छः सालों का वियोग, अमानवीय आत्म-नियंत्रण! मैं सोच रहा था कि जब पूरी आजादी मिल जायेगी, मैं उनके पास चला जाऊँगा। लेकिन मेरा सारा अन्दाज़ ग़लत सिद्ध हुआ। कल मैं गिरफ्तार कर लिया जाऊँगा। तुम उसके बहुत करीब हो। प्रिय हो। एक दिन तुम शायद उससे मिलो।...लेकिन मैं कह क्या रहा हूँ!...मेरा दिमाग ठिकाने नहीं है...वे मुझे अपने बचाव में कुछ भी नहीं कहने देंगे। मैं जानता हूँ, कार्यवाही कैसे की जाती है।

अठारह

बहुत दिनों के बाद यूरी इतनी गहरी नींद में सो सका। पाशा रात भर वहीं दूसरे कमरे में रहा। रात में एकाध बार उठ कर, उसने सिर तक कम्बल खींच कर ओढ़ लिया और फिर प्रगाढ़ निद्रा में तल्लीन हो गया। बचपन के कई स्वप्न उसे वास्तविक रूप में और करीब से दिखाई दिये।

बहुत देर से उठ सका। सिर दर्द कर रहा था। उसे याद आया, पाशा यहीं है। अब तक शायद उठ गया होगा। यदि नहीं, तो उठा कर काफी बना कर साथ ही पीयेंगे।

—पाशा!

कोई जवाब नहीं मिला। सोचा, गहरी नींद में सोया होगा। उसने तसल्ली के साथ कपड़े पहने और पाशा के कमरे में चला गया। वहाँ कोई नहीं था। मेज पर हैट पड़ा था। सोचा, घूमने गया होगा।

मुझे आज वेरिकिनो छोड़ कर चल देना चाहिए। लेकिन देर बहुत हो चुकी है। बहुत सोया। हमेशा ऐसा ही कुछ न कुछ कारण हो जाता है।

रसोईघर की बत्ती जला कर बाल्टी उठा कर वह कूएँ की ओर चला।

रास्ते के उस पार पाशा का सिर बर्फ़ के जमे हुए एक भाग पर पड़ा था। उसने गोली मारकर आत्महत्या कर ली थी। बायीं कनपटी से वेग से निकलने वाली खून की धारा बर्फ़ में फैल गयी थी और वहाँ लाल पिण्ड बन गया था—ठीक बर्फ़ की रोवनवरीज् की तरह!

15

पटाक्षेप

शेष रह गई है ज़िवागो के प्रतिकूल विकास के आठ या दस वर्षों की कहानी। धीरे-धीरे डाक्टर अथवा लेखक की हैसियत से उसकी प्रतिभा क्षय-ग्रस्त होती गई। अपने प्रति चरम विरक्ति के परिणामस्वरूप वह अपने हृदय-रोग के प्रति भी उदासीन बना रहा।

सोवियत रूस के सबसे अधिक अनिश्चित और ऊहापोह के एन.ई.पी. के आरम्भ में वह मास्को आया था। सपक्षियों के दल से युर्यातिन लौटते समय उसने जो दुर्दशा देखी थी, उससे भी अधिक इस समय यहाँ की हालत खराब थी। जिन कपड़ों की थोड़ी-बहुत भी कीमत थी, उन्हें वह रोटी अथवा लज्जा ढँकने के लिए कुछ फटे-पुराने कपड़ों के विनिमय में दे चुका था। इस वेशभूषा के कारण चारों ओर फैले हुए क्रान्तिकारी सैनिकों की नजरों से वह बचा हुआ था।

फटी-पुरानी सैनिक वर्दी पहने एक सुन्दर कृषक लड़का भी उसके पीछे-पीछे चला आ रहा था। अपने पुराने परिचित घरों में, जहाँ किसी समय

उसका स्वागत किया जाता था, वे दोनों साथ-साथ गए। घुमा-फिरा कर बातचीत करके उन्होंने मालूम कर लिया कि उनके परिवार के लोग किन परिस्थितियों में यहाँ से चले गये थे।

दोनों शर्म के मारे मरे जा रहे थे, इसलिए भीड़ से कतरा रहे थे कि कहीं उन्हें किसी से बातचीत न करनी पड़ जाय। किसी परिचित अथवा पुराने मित्र के सामने पड़ जाने पर वे किसी गली के कोने में जाकर खड़े हो जाते ताकि बिना किसी बाधा के वे अपना समय गुजार सकें। चिथड़े पहने डॉक्टर ज़िवागो उस किसान की तरह लगता जो कि 'सत्य शोध' के लिए घर से निकल पड़ा हो, उसका साथी अनुरक्त, आज्ञाकारी शिष्य की भाँति उसके पीछे-पीछे चल रहा था।

यह कौन था?

दो

यात्रा का अधिकांश भाग यूरी ने पैदल और बाद में रेल द्वारा तय किया। सपक्षियों के दल से आने पर साईबेरिया और यूराल्स के उजड़े हुए गाँवों से वह गुज़रा था, उनसे भी इस रास्ते के गाँवों की हालत बदतर थी। तब शिशिर ऋतु थी, अब ग्रीष्म का अन्त और पतझड़ का प्रारम्भ था।

आधे गाँव खाली पड़े थे। आक्रमण के समय खेत बिना काटे छोड़ दिये गये थे। यह था युद्ध का—गृह-युद्ध का, परिणाम। सितम्बर के अन्तिम तीन दिनों तक वह नदी के ढालू रास्ते के किनारे-किनारे चलता रहा। एक ओर नदी बह रही थी और दूसरी ओर अन्तरिक्ष के किनारे तक बादलों को छूते हुए खेत फैले हुए थे। बीच का काफी स्थान छोड़ कर घना जंगल था। जंगल के गहरे नाले नदी में आकर मिल जाते। परित्यक्त खेतों से पका हुआ धान टपक रहा था। यूरी ने मुट्ठी भर धान उठाया और पकाने का कोई साधन और उपाय न होने के कारण वह उसे कच्चा ही चबा गया और फिर किसी तरह इस चारे को हजम भी कर गया।

बिना आग के जलते हुए वेदना-विदग्ध ये खेत अपनी मूक व्यथा प्रकट कर रहे थे। ऊपर चितकबरे बादल दौड़ रहे थे, उनकी छाया इन खेतों पर पड़ रही थी। साधारणतया धान को पकने ही नहीं दिया जाता। गाँव के लोग और खास कर बच्चे उन्हें कच्चा ही तोड़ लाते। इसी कच्चे धान को तोड़कर खाते हुए और अपनी जेबों में भरते हुये उसने सारा रास्ता तय किया था। उसे लगा कि जैसे खेत ज्वर की भयंकर बीमारी से कराह रहे हों और जंगल उस भयंकर बीमारी से निवृत्त हो गया हो। मानो भगवान जंगल में छिपा बैठा हो और शैतान खेतों में।

तीन

नदी की विपरीत दिशा के एक खंडहरप्राय: गाँव से वह गुज़रा। एकाध जले हुए और ध्वस्तप्राय: मकान खड़े थे। वे भी खाली थे। भस्मप्राय: पत्थर के टुकड़ों के साथ चूल्हे की धुआँ निकालने वाली नालियाँ लटक रही थीं। नदी की ओर जाने वाली चट्टानों के बीच मधुमक्खियों ने अपना अड्डा जमा लिया था। अन्तिम मकान के सामने बिना काम में लाये तीन पत्थर, बिना खुदे हुए पड़े थे। शान्त सन्ध्या थी। दरवाजा खोलकर उस मकान के अन्दर जाते ही हवा का एक तेज झोंका चला आया और पुआल तथा घास के तिनके फर्श पर इधर-उधर उड़ने लगे। दीवार पर चिपकाये हुए कागज लटकते हुए फड़फड़ाये। यहाँ भी चूहों की भरमार थी।

जैसे सारी गति मध्यम हो गयी थी।

बहती नदी के साथ चलने वाली सड़क और बादलों के साथ वह चला जा रहा था। सारे वातावरण में पता नहीं कौन-सी वस्तु व्याप्त थी कि उसकी ओर निरन्तर देखते रहने से यूरी का सर दर्द करने लगा था।

चूहों के कारण भयंकर रूप से प्लेग फैला हुआ था। रास्ते में अन्धकार से घिरे खुले मैदान में सोने के लिए जब भी वह बाध्य होता, चारों ओर से चूहे आकर उस पर चढ़ जाते। दिन में भी इनकी कमी नहीं रहती।

गन्दगी पर पलने वाले कुत्ते उसका पीछा करते कि मौका मिलते ही उस पर झपट पड़ें। बिना चूहों की परवाह किये वे यूरी का पीछा करते और जब वह रुक कर उनकी ओर बढ़ता तो वे दुम दबा कर भाग जाते।

जंगल और खेतों का स्वरूप बिलकुल अलग-अलग था। बर्बाद खेत अनाथों की तरह लगते, जनशून्यता के कारण अभिशप्त से। लेकिन जंगल इस बर्बादी से अलग, कारावास से मुक्त, स्वतन्त्रतापूर्वक अपना सिर ताने खड़ा था।

सूर्य गाँव के खेतों के पीछे छिप रहा था। तप्त स्वर्णिम किरणें घाटी में, उनकी दरारों में घुस रही थीं। यूरी बाहर निकल आया, सड़क पार की और पास के मील के पत्थर पर जाकर बैठ गया।

घाटी के किनारे से एक सिर उठता हुआ दिखाई दिया, फिर कन्धे और फिर भुजाएँ। कोई पानी की बाल्टी लिये चट्टानों के ऊपर चढ़ रहा था।

—क्या तुम पानी पीना चाहते हो? यदि तुम मुझे कोई नुकसान न पहुँचाओ तो मैं भी तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा।

—हाँ, धन्यवाद। मुझे बहुत प्यास लगी है। डरो मत। यहाँ आओ। मैं तुम्हें क्यों नुकसान पहुँचाऊँगा भला?

पानी लाने वाला लड़का किशोर ही था। उसके बाल बिखरे हुए थे, पाँव नंगे थे, चेहरा रूखा-सूखा। यूरी के सौहार्दपूर्ण व्यवहार के बावजूद भी उसके मन से सन्देह गया नहीं। थोड़ी देर बाद पता नहीं क्यों, वह खुशी के मारे उत्साहित हो उठा। बाल्टी नीचे रखकर यूरी के पास आते हुए उसने कहा—ऐसा...ऐसा नहीं हो सकता...क्या मैं सपना देख रहा हूँ? माफ करना कामरेड, मेरा खयाल है कि मैं आपको जानता हूँ! हाँ, हाँ जानता हूँ। आप...आप डॉक्टर ही हैं न?

—और तुम कौन हो?

—मुझे नहीं पहचाना?

—नहीं।

—मास्को वाली गाड़ी में हम साथ ही थे। आपको याद नहीं, मजदूरी करने के लिए मैं बेगारी में पकड़ा गया था।

यह था वास्या व्रेकिन। उसने नीचे झुक कर यूरी का हाथ पकड़ कर चूम लिया।

यह जला हुआ गाँव था उसकी मातृभूमि वेरिटेन्निकी। उसकी माँ मर चुकी थी। गाँव बर्बाद हो चुका था। जिस समय तहकीकात चल रही थी, वह दुःख से पागल हो गई और नदी में कूदकर उसने आत्महत्या कर ली। उसकी दो बहिनें आल्या और आर्या किसी अनाथालय में हैं, जिनके बारे में निश्चित रूप से वह कुछ भी नहीं जानता। वह यूरी के साथ मास्को चल दिया।

चार

रास्ते में उसने अपनी आप-बीती बड़े विस्तार के साथ सुनाई। वह कह रहा था—पिछले शिशिर में जब हमने खेत बोये थे हमारी मुसीबतें आरम्भ हो गयीं। बस जैसे ही पोल्या गयी, हमारा दुर्भाग्य शुरू हो गया। आप उसे जानते हैं?

—नहीं। नहीं जानता। कौन है?

—अजी आप उसे नहीं जानते! वह भी तो हमारे साथ रेल में थी। बार-बार बाल सँवारती रहती थी?

—हाँ, हाँ। वह? ठीक। मुझे याद है, एक बार वह मुझे साइबेरिया के एक शहर में भी मिली थी।

—सच? पोल्या आपको मिली थी?

—तुझे हो क्या गया है रे? इतने ज़ोर से हाथ मत खींच भले आदमी। और अब लड़कियों की तरह शर्मा क्यों रहा है?

—जल्दी बताओ वह कैसी है?

—बिलकुल ठीक। वह तुम लोगों के बारे में बातचीत करती रही। शायद उसने यह भी बताया था कि वह तुम लोगों के साथ रह चुकी है?

—हाँ, वह हमारे साथ रहती थी। माँ उसे ओल्या और आर्या की तरह बहुत ही प्यार करती थी। बड़ी भली लड़की थी। काम करने में होशियार। सिलाई का काम तो इतना बढ़िया करती कि बस। लेकिन वेरिटेन्निकी की अफवाहों से उसका जीना दूभर हो गया था। गाँव में एक रौटन-खारलम रहता था वह उसके पीछे पड़ा था। लेकिन पोल्या उसकी ओर फूटी आँखों भी नहीं देखती। इसी कारण वह मुझसे जलता था। इसीलिए वह पोल्या और मेरे बारे में बदनामी फैला रहा था। अन्त में वह अधिक बर्दाश्त नहीं कर सकी और चली गई। इसके बाद हमारी तमाम मुसीबतें शुरू हो गयीं।

उन दिनों वहाँ एक भयंकर हत्याकांड हो गया था। एक विधवा को बुसकोय के पास वाले जंगल में उसके घर में मार डाला गया था। वह अकेली अपने फार्म पर काम करती थी। एक विशालकाय कुत्ते के साथ वह मर्दाने जूते पहने दिन भर खेत और घर का काम करती रहती। पिछले साल बर्फ़ समय से पहले गिरने लगी थी। बुढ़िया अपने आलू खोद नहीं पाई थी। उसने गाँव में आकर मदद करने के लिए मुझसे कहा और वादा किया कि वह मजदूरी में आलू अथवा पैसे देगी। मैं राजी हो गया। लेकिन जब वहाँ काम करने गया तो देखा खारलम भी वहाँ काम कर रहा था। बुढ़िया ने मुझे यह बात बताई नहीं थी। मैं झगड़ने से तो रहा? चुपचाप उस खराब मौसम में काम करता रहा। वर्षा, बर्फ़, मिट्टी और कीचड़ में लथपथ हम काम करते रहे। अन्त में आलुओं को सुखाने के लिये धुआँ देने की तैयारी होने लगी। बुढ़िया ने हमारा हिसाब चुकता कर दिया और खारलम को जाने को कहकर, मुझे रुक जाने को कहा। थोड़ी देर बाद उसने बताया कि वह अपनी खेती का विशेष भाग सरकार को देना नहीं चाहती; इसलिये उसने जग के आकार का गड्ढा खोद रखा है, जहाँ आलुओं को छिपाकर रखना चाहती है। उसे विश्वास था कि मैं उसे धोखा नहीं दूँगा। हम दोनों ने मिल कर गड्ढे में आलू छिपाकर ऊपर मिट्टी डाल दी। वास्तव में मैंने इस बारे में कभी किसी को कुछ भी नहीं कहा। न अपनी माँ से, न अपनी बहिनों से। कोई एक माह बाद

न में चोरी हो गयी। वायस्कोय से आने वाले लोगों ने बताया कि दरवाजा खुला पड़ा था और सारा फार्म लूट लिया गया था। उसका कुत्ता गोर्डोन भी वहाँ नहीं था। थोड़े दिन बाद जब सेन्ट बेसिल के शुभ अवसर पर बारिश हो चुकी थी तो ऊँची जमीन से बर्फ़ को साफ़ कर दिया गया था, उस समय उसका कुत्ता गोर्डोन वापस लौट आया। जहाँ आलू गाड़े गये थे, उसने वहाँ खुदाई की। उसमें से उस बुढ़िया के मर्दानि जूते वाले पैर बाहर निकल आये।

गाँव में सभी को उस बुढ़िया के लिये अफ़सोस था। किसी ने खारलम पर शक नहीं किया। उस पर शक किया भी कैसे जा सकता था? यदि उसने हत्या की होती तो वह इस तरह अकड़ कर गाँव में थोड़े ही चल सकता था? लोग सोचते, यदि उसने हत्या की होती तो कभी का गाँव छोड़कर चला गया होता। इस हत्याकाण्ड से खुश थे सिर्फ़ कुल्कस। उन्होंने इस मौके का फायदा उठाया। वे कहने लगे—शहर वालों की करतूत देख लो। यह तो उन्होंने तुम्हें चेतावनी भर दी है। ये जंगल के डाकू नहीं, ये वही लोग थे। अभी तक तो आगे देखना है वे क्या नहीं करते? वे यहाँ से सब कुछ ले जायेंगे। तुम्हें भूखों मार डालेंगे। हम बताते हैं, ऐसी हालत में तुम्हें क्या करना चाहिए? जो कुछ तुमने खून-पसीना एक करके पैदा किया है, उसे लेने के लिये जब वे आवें तो उन्हें कहना कि हमारे पास कुछ भी नहीं बचा है। और यदि इसके बावजूद भी, गाँव की इच्छा के विरुद्ध सरकारी टैक्स वसूल किया जायेगा; तो हम उन्हें देख लेंगे। बूढ़े लोगों ने गाँव में मिलकर पंचायत की और इस बात को ठेका दिया। खारलम को मौका मिल गया। वह यही चाहता था। वह शहर में जाकर बोला—गाँवों में यह सब हो रहा है। हमारे लिए गरीबों की समिति बननी चाहिए। मुझे ज़रा सा इशारा कर दो और मैं सभी को एक दूसरे के खिलाफ भड़का देता हूँ। इसके बाद पता नहीं वह कहाँ भाग गया। वापस लौट कर आया ही नहीं। इसके बाद जो कुछ हुआ, उसके लिए किसी को दोष नहीं दिया जा सकता। यह सब किसी के किये से हुआ

भी नहीं। यह तो जैसे निश्चित विधान के अनुसार हो गया। क्रान्तिकारी सेना के लोग शहर से आये और यहाँ न्यायालय स्थापित कर दिया गया। फिर सब लोग मुझ पर सवार हो गये। यह सब खारलम की ही करतूत थी। उसी ने उन्हें बताया था कि मैं बेगारों वाले झुण्ड से किस तरह धोखा देकर भाग आया था। उसके कहने के अनुसार उस बुढ़िया की हत्या मैंने ही की थी; और मैंने ही गाँव वालों को उकसाया था। बस, मुझे बन्द कर दिया गया। यह तो खैर मैं जानता था कि फर्श के तख्ते किस तरह से निकाले जायें। मैं यहाँ से भाग कर एक गुफा में आकर छिप कर बैठ गया। सारा गाँव मेरे सामने ही जला दिया गया और मैं देख भी नहीं सका। माँ नदी में डूब मरीं और मैं जान भी नहीं सका। पता नहीं यह सब कैसे हो गया?

क्रान्तिकारी सेना के लोग एक घर में बैठे वोडका पी रहे थे और नशे में धुत्त हो गये थे। असावधानी के कारण एक घर में आग लग गयी और फिर एक घर से दूसरे घर में फैलती हुई सारे गाँव को उसने जला कर खाक कर दिया। मजे की बात यह है कि शहर के वे लोग जिस मकान में थे, वहाँ कुछ भी नहीं हुआ। गाँव वालों को किसी ने भागने को कहा नहीं, लेकिन डर के मारे वे भाग गये। कुल्कस ने यह अफवाह फैला दी कि प्रत्येक दसवें आदमी को गोली से मार डाला जायेगा। सब लोग भाग गये। जब मैं बाहर निकला तो कहीं कोई नहीं था।

पाँच

एन.ई.पी. के आरम्भ में 1922 की वसन्त ऋतु में यूरी मास्को पहुँचा। सेवियर के गिरजाघर के गुम्बजों से सूर्य का प्रकाशपुंज चौराहे पर खेल रहा था, जहाँ पत्थरों के बीच की दरारों में घास उग आई थी। निजी उद्योग-धन्धों से प्रतिबन्ध हटा लिया गया था। निश्चित सीमाओं में व्यवसाय करना चालू हो गया था। एक व्यापारी द्वारा किये गये व्यापार के आधार पर सट्टा चल निकला था। लेकिन इस लेन-देन से किसी नयी सम्पत्ति का सृजन नहीं हो सका। कई बार बिकी हुई चीज़ों को बारम्बार

बेच-बेच कर लोगों ने काफी पैसा कमा लिया था। इससे हालत में कोई सुधार नहीं हुआ।

भद्र समाज के कई लोग अपने पुस्तकालय की पुस्तकें निकाल लाये और नगर समिति से पुस्तकों की सहकारी दूकान खोलने के लिए उन्होंने इज़ाज़त माँगी। क्रान्ति के प्राथमिक दिनों से ही खाली पड़ा एक गोदाम उन्हें दे दिया गया। उन्होंने वहाँ अपनी तमाम अच्छी-बुरी पुस्तकें बेच डालीं। संकटकालीन दिनों में प्राध्यापकों की स्त्रियों ने रोटी बना कर बेचने का अवैध काम शुरू किया था। अब खुलेआम उनका भी धन्धा चल निकला। सब लोग बदल गये। प्रस्तुत क्रान्ति को स्वीकार कर लिया गया। इस पर उन्हें विश्वास हो आया। लोग कह रहे थे—यही वास्तविक स्थिति है। पहले यें ही लोग सिर्फ़ 'हाँ', 'जी हाँ' अथवा 'बहुत अच्छा' के अलावा कुछ कह नहीं पाते थे।

मास्को पहुँचने पर यूरी ने कहा—अब तुम्हें किसी न किसी काम में लग जाना चाहिए।

—मैं पढ़ना चाहता हूँ।

—ठीक है।

—दूसरी मेरी इच्छा है कि मैं अपनी माँ की एक तस्वीर अपनी याददाश्त के आधार पर बनाऊँ।

—यह भी अच्छा खयाल है। लेकिन इसके लिए चित्रकला का अभ्यास होना चाहिए। तुमने इसके लिए कभी कोशिश की है?

—जब मैं अपने चाचा के यहाँ काम सीखता था, तब उनकी नजरें बचा कर दीवार पर कोयले से ऐसे ही टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें खींचा करता था।

—तो फिर ठीक है। देखते हैं, क्या किया जा सकता है।

वास्या में चित्रकार होने की कोई विशेष प्रतिभा नहीं थी। लेकिन दस्तकारी में उसकी औसत योग्यता थी। यूरी ने अपने मित्रों की सहायता से स्ट्रोगनोव इन्स्टीट्यूट में उसे भर्ती करवा दिया। सामान्य

ज्ञान के अतिरिक्त प्रिंटिंग, बाइंडिंग और पुस्तक प्रकाशन के सम्बन्ध में, थोड़े ही दिनों में उसने अच्छी योग्यता हासिल कर ली।

वास्या और यूरी के प्रयत्न संयुक्त हो गये। यूरी ने विभिन्न विषयों पर बीस-पचीस पृष्ठों की कई पुस्तकें लिखीं और वास्या ने कम्पोज कर के छाप दी। इस संस्था में सिखाये गये काम को व्यावहारिक रूप से प्रमाणित करने का नियम था, जिससे कि उसने लाभ उठाया।

पुरानी पुस्तकों की जो दूकान अभी हाल ही में उनके मित्रों ने खोली थीं, इनके द्वारा ये पुस्तिकाएँ बेच दी गयीं।

इन पुस्तकों में उसका जीवन दर्शन, औषधि शास्त्र पर उसके विचार, स्वास्थ्य और रोग की परिभाषा, मानवीय विकास का क्रम, जाति वर्ग का परिवर्तन और उसके स्थूल सिद्धान्त, धर्म तथा इतिहास पर विचार, आदि विषयों पर उसने पुस्तिकाएँ लिखीं। इन पुस्तकों में यूरी के मामा का प्रभाव स्पष्ट था। वे बोलचाल की भाषा और पद्धति में लिखी गयी पुस्तिकाएँ थीं। इसके अलावा कुछ कविता-संग्रह, कथा-संग्रह तथा पुगोचेव-प्रदेश के संस्मरण भी लिखे गये। ये पुस्तिकाएँ उन प्रचलित और सुप्रसिद्ध विषयों पर लिखी गयी थीं जो कि विवादास्पद, निर्णीत और अप्रमाणित थे। रचनाशैली सजीव और मौलिक थी। लिहाजा पुस्तिकाओं की अच्छी बिक्री हुई और पाठकों ने उन्हें पसन्द किया। उन दिनों हर विषय पर प्रवीण लोगों की बहुतायत थी। काव्य-रचना और साहित्य अनुवाद के लिए विशेषता प्राप्त लोग सुलभ थे। प्रत्येक विषयों के सिद्धान्तों के अध्ययन के लिए अनेक संस्थाएँ स्थापित की जा चुकी थीं। विचारों के बड़े-बड़े महल संयोजित किये गये थे और कलात्मक विचारों के लिए अनेक अकादमियों की स्थापना की गयी थी। इस तरह की आडम्बरपूर्ण दिखावटी पचास से भी अधिक संस्थाओं का यूरी मेडिकल-सलाहकार था।

काफी अर्से तक वास्या और यूरी की मित्रता बनी रही। वे एक साथ ही रहते थे, हालाँकि उनका निवास स्थान अत्यन्त गन्दा और रहने के

लायक नहीं था। एक बार यूरी अपने पुराने मकान में जा आया था। वहाँ जाने पर मालूम हुआ कि उसके परिवार के चले जाने पर उनकी हैसियत अब बिलकुल बदल गयी है। जो कमरे उनके नाम पर दर्ज किये गये थे, उनमें नये किरायेदार आकर बस गये हैं। वहाँ अब उनकी कोई चीज़ शेष नहीं रही। यूरी को लोग प्लेग के चूहे की तरह खतरनाक मानते और कोशिश करते थे कि उससे दूर ही रहा जाय।

मार्केल अब पुरानी जगह नहीं था। वह अब बड़ा आदमी हो गया था और मुचनोव गोरोड (जहाँ पहले स्वेंटिट्स्की रहा करते थे) में गृह-व्यवस्थापक नियुक्त हो गया था। यद्यपि उसे मैनेजर का फ्लेट मिला हुआ था लेकिन उसे पुराने कुली का कमरा ही ज्यादा पसन्द आया। जहाँ कि एक बड़ी भारी रशियन अँगोठी थी। जाड़े के मौसम में फ्लेट के तमाम नल टूट-फूट जाते थे। लेकिन मार्केल के कमरे के नल में निरन्तर पानी रहता और शिशिर ऋतु में कमरा गरम।

यूरी और वास्या के बीच के मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध धीरे-धीरे ढीले पड़ने लगे। वास्या ने अद्भुत तरीके से तरक्की कर ली थी। अब वह किसी गाँव का रूखे बाल बिखराये नंगे पैरों वाला गरीब लड़का नहीं था। क्रान्ति द्वारा उद्घोषित सत्यों का प्रत्यक्ष आत्म-प्रमाण उसे दिन-प्रतिदिन अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। चूँकि वह यूरी की तमाम कमजोरियों से प्रत्यक्ष रूप में अच्छी तरह से परिचित था, इसलिए वास्या का यह रुख यूरी को दुखित कर देता।

विभिन्न सरकारी दफ्तरों से अपने परिवार का राजनैतिक विस्थापन, उनके रूस वापस लौटने के लिए इज़ाज़त एवं अपने लिए पार-पत्र प्राप्त कर पेरिस से उन्हें लौटा लाने के लिए अनुमति प्राप्त करने में वह प्रयत्नशील था।

उसके प्रयत्नों की उत्साहहीनता और व्यर्थता से वास्या को आश्चर्य होने लगा था। यूरी इस बात पर विश्वास करने के लिए उतावला हो उठता कि उसके तमाम प्रयत्न अर्थहीन हैं। जब भी वह बोलता, तो किसी

काम को करने की इच्छा में किसी तरह का विश्वास प्रतिध्वनित नहीं होता।

वास्या की निगाहों में यूरी की अनेकानेक गलतियाँ आने लगीं। यूरी को न्यायोचित स्पष्ट आलोचना पसन्द थी, लेकिन वास्या के इस नूतन रूप का असर उनके मैत्रीपूर्ण रिश्तों पर अवश्य पड़ा। अन्त में दोस्ती समाप्त हो गयी। दोनों अलग हो गये। यूरी ने, जहाँ वह उसके साथ रहता था, उस कमरे को छोड़ दिया।

और वह मुचनोव गोरोड में चला आया जहाँ मार्केल सर्वेसर्वा था। यहाँ उसके लिए पहले से ही उसने स्वेंटिटस्की के पिछले फ्लेट में एक कमरा रख छोड़ा था। इसमें एक परित्यक्त स्नानागार था और एक खिड़की वाला कमरा। जिसका पीछे की ओर से रास्ता था।

यहाँ आने पर उसकी अपने प्रति विरक्ति अधिक बढ़ गयी। उसने दवा लेनी छोड़ दी और मित्रों से मिलना बन्द कर दिया।

बड़ी गरीबी में वह दिन काट रहा था।

छः

शिशिर ऋतु और रविवार का दिन। छतों पर से खम्भों के रूप में और खिड़कियों में से फुहारों के रूप में धुआँ निकल रहा था। शहर का जीवन अभी भी सुव्यवस्थित नहीं हो सका था। मुचनोव गोरोड के किरायेदार गन्दे कपड़े पहने इधर-उधर फिर रहे थे। अधिकांश लोग बीमार थे।

रविवार होने के कारण मार्केल अपने पूरे परिवार के साथ घर में ही था। रसोईघर की बड़ी टेबल पर सब लोग मिल कर खाना खा रहे थे। पहले यहीं से राशनिंग की व्यवस्था की जाती थी। लेकिन अब तो राशनिंग की जगह दूसरे प्रकार के नियंत्रण कायम हो चुके थे। कमरे का आधे से अधिक भाग उस रूसी चूल्हे द्वारा घेर लिया गया था। उसके एक ओर बिस्तर लटक रहे थे दूसरी ओर रजाइयाँ। कमरे के दोनों ओर बैंचें लगी हुई थीं। दीवार के सहारे एक ओर नल लगा हुआ था। बैंचों के नीचे घर-गृहस्थी का सामान पड़ा था।

स्टोव पूरी तेजी से जल रहा था इसलिए कमरा काफी गर्म था। सामने एक ओर मार्केल की पत्नी रसोई बनाने में व्यस्त थी। इसी समय दो बाल्टियाँ लिये यूरी अन्दर चला आया।

—मालूम होता है बहुत भूख लग रही है!

—बैठ जाओ। बेतकल्लुफ़ी से आ जाओ। खा लो!

—धन्यवाद! मैं भोजन कर चुका हूँ।

—अजी, बैठ भी जाओ। मुझे मालूम है तुम खाना किसे कहते हो? यह है गर्मागर्म। ले लो। नाक मत सिकोड़ो! बढ़िया स्वादिष्ट खाना है। पकाये हुए आलू, कचौड़ी, कासा!

—माफ करना भाई। मेरे आने से दरवाजे खुले रह गये और ठंडी हवा अन्दर चली आई। जितना संभव हो, पानी ले जाना चाहता हूँ। स्नानागार मैंने साफ़ कर लिया है, उस ओर के टब को भरना बाकी है। इसके बाद तुम्हें अधिक परेशान नहीं करूँगा। बात यह है कि और कहीं पानी मिलता भी तो नहीं।

—चलो उठाओ यह सब, अपने आप ले लो। खा लो। तुम शरबत माँगते, तो शायद हम नहीं देते। लेकिन पानी की कोई कमी नहीं। जितना चाहो, ले जा सकते हो। बिलकुल मुफ्त। तुमसे एक पैसा तक नहीं लेंगे।

वे सब हँस पड़े।

तीसरी अथवा चौथी बार जब वह आया तो मार्केल ने लहजा बदल कर कहा—मेरे ये दामाद मुझसे पूछ रहे हैं कि तुम कौन हो? मैंने उन्हें बता दिया। लेकिन उन्हें विश्वास ही नहीं होता। परवाह मत करो। तुम पानी ले जाते रहो। बस, इतना ध्यान रखना कि फ़र्श पर पानी न फैले। यदि यह यहाँ जम गया तो तुम इसे खुरेचने के लिए तो आओगे नहीं। भले आदमी, अच्छी तरह से दरवाजा बन्द कर दो। हवा आ रही है। हाँ, तो

मैं इन्हें बता रहा था कि तुम कौन हो ? ये विश्वास ही नहीं करते। कहते हैं तुम्हारी पढ़ाई लिखाई पर इतने सारे जो पैसे खर्च किये गये थे, उससे क्या लाभ हुआ ? सच बात है। बताओ तो ?

इसके बाद जब वह फिर आया तो नाराज़गी के स्वर में मार्केल ने कहा—अब बस करो भाई। हर चीज़ की सीमा होती है। यदि मेरी मरीना तुम्हारी इतनी तरफदारी न करती तो मैं अब तक दरवाजा बन्द कर डालता। तुम्हें मरीना याद है ? टेबल के उस ओर खड़ी वह रही—काली-सी—लेकिन अब मारे शर्म के लाल हुई जा रही है। वह कहती है कि 'तुम्हारी भावनाओं पर चोट न पहुँचाई जाय।' जैसे कि हम सचमुच तुम्हें चोट पहुँचा रहे हों। वह आजकल केन्द्रीय तारघर में टेलिग्रेफिस्ट है। विदेशी भाषाएँ जानती है। कहती है—'तुम भाग्यहीन हो!' बड़ा दर्द हो रहा है उसे, तुम्हारे लिए तो जैसे वह आग और पानी में कूद पड़ने को तैयार हो। यह तो ऐसे कह रही है जैसे कि तुम्हारे इस भाग्य के लिए मैं ही दोषी होऊँ। तुमने आखिर उस संकट के दिनों में घर छोड़ा क्यों ? साइबेरिया भाग जाना तुम्हारी बहुत बड़ी गलती थी। एक हम हैं, देख लो। हम कहीं नहीं गये। अब हम मजे में हैं। तुमने टोन्या की ठीक से देखभाल नहीं की, तभी तो वह बिचारी इधर-उधर मारी-मारी फिर रही है। खैर, यह तुम्हारा अपना मामला है। मुझे क्या पड़ी है ? सिर्फ़ मुझे तो इतना ही बता दो कि इतने सारे पानी का आखिर करोगे क्या ? अब तुम पर गरम भी तो नहीं हुआ जा सकता। क्योंकि मालूम है तुम बिलकुल चिकने घड़े हो, कोई असर नहीं होगा।

सिवाय मरीना के सब लोग हँस पड़े। वह गुस्से से इधर-उधर देखती हुई झुंझला रही थी। उसने अभी तक एक शब्द भी नहीं कहा था; इसलिए उसकी ओर यूरी का ध्यान गया भी नहीं।

यूरी ने जवाब दिया—बहुत सारी सफ़ाई करनी है। फ़र्श धोना है। कपड़े साफ़ करने हैं।

मार्केल ने आश्चर्यचकित स्वर में कहा—तुम्हें यह कहते शर्म नहीं आती यूरी एण्ड्रेविच? तुम यह सब स्वयं करोगे—अकेले ही? अब थोड़ी देर बाद तुम यहाँ चीनी लाउण्ड्री खोलने की सोच रहे होवोगे?

आगथा बोली—मैं अपनी लड़की को भेज देती हूँ। वह तुम्हारी सफ़ाई और कपड़े धोने का सारा काम कर देगी। डरो मत बेटी, तुम देख नहीं रही हो, ये बड़े घराने के कितने अच्छे आदमी हैं? किसी मक्खी तक को नुकसान नहीं पहुँचा सकते।

—तुम भी क्या कहती हो आगथा! यह भी कहीं हो सकता है कि मरीना मेरा फ़र्श साफ़ करे? सपने में भी नहीं। मैं सारी व्यवस्था कर लूँगा। वह भला मेरे लिए अपने हाथ क्यों गन्दे करेगी?

—वाह, आप तो अपने हाथ गन्दे कर सकते हैं और मैं नहीं? मरीना बीच में बोली—यह सारी बातें जाने दीजिए यूरी साहब, बताइये तो, मैं यदि आपके यहाँ ऊपर आ जाऊँ तो मुझे धक्के मार कर तो नहीं निकाल देंगे?

उसके अद्वितीय मधुर स्वर की ओर यूरी का ध्यान अब गया।

इस प्रकार पानी की बाल्टियाँ उठा कर ले जाने से जो बात शुरू हुई थी वह कुछ ही दिनों बाद आगे चल कर घनिष्ठ मैत्री में परिणत हो गयी। वह अक्सर ऊपर जाकर उसके घर के कामकाज में हाथ बँटाया करती। इसी तरह काम करने के लिए एक बार वह ऊपर गयी और वापस लौट कर नहीं आई।

वह यूरी की तीसरी पत्नी बनी।

यद्यपि टोन्या को तलाक नहीं दिया गया था और न ही मरीना के साथ उसका विवाह चर्च में अथवा रजिस्ट्री द्वारा ही हुआ था। फिर भी उनके बच्चे हुए। मार्केल और आगथा अपनी लड़की के बारे में गौरव से कहा करते—वह डॉक्टर की पत्नी है!

कभी-कभी मार्केल बड़बड़ाता—इनका विवाह न तो गिरजाघर में ही हुआ है न रजिस्ट्री द्वारा ही!

मार्केल की आपत्ति का आगथा जवाब देती—तुम भी कैसी बातें करते हो? टोन्या के जीवित रहते हुए वह दूसरा विवाह कैसे कर सकता है?

मार्केल जवाब देता—टोन्या को अब इससे क्या लेना-देना है? उसका जीना, न जीना बराबर ही है। मरीना को ब्याह से कोई नहीं रोक सकता।

यूरी कभी-कभी मजाक में कहा करता—हमारा प्रेम बीस बाल्टियों भर है।

मरीना ने उसकी विचित्रताओं को, अव्यवस्था और लापरवाही को संजो लिया। उसकी अद्भुत चित्तवृत्ति और कल्पनाओं के साथ सामंजस्य स्थापित कर लिया। वह जानती थी कि यह आदमी कितना विरक्त है। उसके स्वभाव, उसकी प्रकृति और उसके झिड़कने को वह आसानी से सह जाती।

उसका प्रेम यूरी के प्रति बढ़ता ही गया। कभी-कभी तो यूरी की ग़लतियों के कारण उन्हें बहुत तंग होना पड़ता, बड़ी तकलीफ़ भुगतनी पड़ती। ऐसी स्थिति में वह पोस्ट आफिस का काम छोड़ देती। गनीमत यह थी कि पोस्ट आफिस में उसका काम इतना अच्छा था कि इस तरह की अनेक ग़ैरहाज़िरियों के बावजूद भी उसे काम पर ले लिया जाता। यूरी की भावनाओं को चोट न पहुँचे, इसलिए वह उसके साथ अनेक विचित्र कार्य करती हुई एक घर से दूसरे घर जाती।

फ़र्शों की लकड़ियाँ चीरने का काम उन्होंने शुरू किया। अनेक काला-बाजार करने वाले लोग, जिन्होंने मौके का फायदा उठा कर काफी धन इकट्ठा कर लिया था, ये ही किरायेदार उनके ग्राहक थे। इनमें सरकार के निकट सम्पर्क में आने वाले कलाकार और विद्वान भी शामिल थे, जिनकी इन दिनों चाँदी थी। एक दिन कार्पेट को बचाते हुए कि कहीं वह लकड़ी के बुरादे से खराब न हो जायं, वे अध्ययन कक्ष की ओर जा रहे

थे। वहाँ एक आदमी एकाग्रचित्त से पुस्तक पढ़ रहा था। इन लोगों की ओर नज़र उठा कर देखने का कष्ट भी उसने नहीं किया। पास से गुज़रने पर उसने देखा, यह उसी की लिखी हुई पुस्तक का एक संस्करण है, जो कि वास्या ने प्रकाशित की थी।

सात

मरीना के दो लड़कियाँ हुईं। एक कपिटोलिना और दूसरी कपोडिया। एक थी छः साल की और दूसरी छः महीने की। पास ही ब्रोनी स्ट्रीट में गोर्डन का मकान था। ये दोनों मित्र अक्सर मिलने चले आया करते थे।

गोर्डन जहाँ रहता था वह किसी समय एक दर्जी की जगह थी। बाहर सुनहले अक्षरों में लिखा हुआ दर्जी का नाम अभी भी चमक रहा था। इस समय गोर्डन के कमरे में बैठे हुए थे—मरीना, ज़िवागो, डुडरोव और बच्चे। थोड़ी देर बाद मरीना बच्चों को लेकर चली गई।

वे बिना उत्तेजित हुए आराम से बैठे गप्पें मार रहे थे। इस तरह की बातचीत का मजा वे ही ले सकते हैं, जिनके पीछे अनेक वर्षों की मित्रता की भूमिका हो और जो बचपन से ही एक साथ रहे हों। ऐसे मौकों पर जिस व्यक्ति की शब्द-संयोजन की क्षमता समर्थ हो, वही विषयानुकूल स्पष्टता से बातचीत कर सकता है। यूरी ही एक ऐसा व्यक्ति था। दूसरे दोस्तों को तो अपनी बात को धाआवाज़हक रूप से प्रकट करने के लिये शब्दों को खोजना पड़ता। मसलन, वह, हाँ वह—बेईमानी, बेईमान, हाँ हाँ बेईमान ही है और क्या बेईमानी ही तो! आदि।

गोर्डन और डुडरोव अच्छे विश्वविद्यालयों के दायरों में रह चुके हैं। उनका अध्ययन काफी मँजा हुआ है। अच्छे काव्य और संगीत के साहचर्य में उनका जीवन व्यतीत हुआ था जो कि कल भी उतना ही सुन्दर था, जितना कि आज। वे यूरी को इस समय जो तत्त्वोपदेश दे रहे थे, वे एक मित्र की राय के बजाय विषय से फिसल जाने के परिणामस्वरूप बतंगड़ मात्र था। जैसे किसी गाड़ी को यथास्थान ले

जाना सफल नहीं हुआ हो। और वापस लौटाना मुमकिन न हो और वे किसी पर बरस पड़ना चाहते हों। इसलिये उन्होंने यूरी पर धर्मोपदेश और नसीहतों की बौछार लगा दी।

यूरी के सामने उनकी भावनाओं का स्रोत, उनकी दया की अस्थिरता दिन की रोशनी की तरह स्पष्ट थी।

वह कहता—मैं क्या कहूँ? तुम जिस दायरे और जिन नामों का उल्लेख बार-बार करते हो, और कला की जिस चमक-दमक का तुम लोग हवाला दे रहे हो, वह सब कितनी छोटी है! तुम लोगों के बारे में एक ही बात अच्छी है—वह यह, कि तुम भी इसी युग में रह रहे हो और मेरे दोस्त हो। डुडरोव अभी हाल ही में अपने देश-निष्कासन के प्रथम क्रम से वापस लौट आया था। उसे नागरिक अधिकार दे दिये गये थे और विश्वविद्यालय में लेक्चर देने का अधिकार भी उसे मिल गया था। इस समय वह अपने वनवास की मानसिक स्थिति का रहस्योद्घाटन करते हुए बता रहा था कि उसकी आलोचना किसी भीरुता या अन्य कोई बाह्य विचार से प्रभावित नहीं है।

वह कह रहा था कि अभियोग के सिलसिले में होने वाली बहस, कारावास में उसके साथ व्यवहार तथा तहकीकात करने वालों से दिल खोल कर की गई बातचीत ने उसके दिमाग को ठिकाने से लगा दिया है। राजनीति में वह पुनर्दीक्षित हो गया। उसकी आँखें खुल गयीं।

गोर्डन ने सहमति में सिर हिला दिया।

सामान्य लोगों की तरह डुडरोव ने अपनी बात का प्रतिपादन करते हुए एक धार्मिक पुस्तक उठा ली। उसकी यह अनर्थक धार्मिक वार्ता इस युग के अनुकूल ही थी।

यूरी सोच रहा था जो लोग स्वतन्त्र नहीं हैं, वे दासता की ही पूजा करते रहते हैं। वे राजनीतिक मर्म को सफलता की चरम सीमा मानते हैं और यूरी इनकी कट्टरता अधिक बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था। लेकिन वह चुप ही रहा। दोस्तों की भावनाओं पर चोट पहुँचाना वह नहीं चाहता था।

यूरी उठ खड़ा हुआ। बोला—अब मैं चलूँगा। तुम इतने नाराज़ क्यों हो रहे हो ? यहाँ बहुत गर्मी हो रही है। जैसे दम घुटा जा रहा हो।

—ओह, माफ करना, हम बहुत धूम्रपान करने लगे हैं। हम लोग भूल ही जाते हैं कि तुम्हारी उपस्थिति में यह सब नाजायज है।

—अब मैं चलूँगा, मिशा। काफी बातें हो चुकीं। मेरी इतनी फिक्र करने के लिए धन्यवाद। मैं ढोंग नहीं कर रहा हूँ। सचमुच मुझे हृदय की बीमारी है। अभी मैं चालीस का भी नहीं हुआ हूँ, लेकिन लगता है कि अब वह शुभ दिन आने ही वाला है, जिस दिन इसकी धड़कन बिलकुल बन्द हो जायगी।

—धुत्। अभी हमें तुम्हारी शव यात्रा में जाने की फुर्सत नहीं है! तुम हम सबको मार कर फिर मरोगे। देख लेना।

—आजकल यह बीमारी बहुत आम हो गयी है। इससे अधिक लोग मरते नहीं। फिर भी यह हमारे युग की व्यापक देन है। उसका कारण हमारी नैतिकता ही है। यदि नियमित रूप से प्रपंचभरा जीवन व्यतीत किया जाय, जो करते हो, उसके विपरीत कहो, जिसे तुम पसन्द नहीं करते, उसके प्रति विनीत भाव बताओ, जिसके कारण दुर्भाग्य का आगमन होता है, उसके प्रति स्वागत के गीत संजोवो, फिर तुम्हारा स्वास्थ्य सदा ठीक बना रहेगा! नाड़ी मण्डल आखिर तुम्हारे शरीर का स्थूल भाग है। इसी में आत्मा का निवास है। खैर, जाने दो। अब मैं अधिक बर्दाश्त नहीं कर सकता। तुम्हारी नूतन दीक्षा की बात सुन कर मुझे उस घोड़े की याद आ जाती है, जो सर्कस की कवायद को गर्वोक्ति के साथ कहे; कि वह कितनी शान के साथ यहाँ ग़ुलाम बना दिया गया।

—ठीक कहते हो। तुम घोड़ों की ही बात सुन सकते हो। आदमी की नहीं। गोर्डन ने डुडरोव का पक्ष लेते हुए कहा।

—अच्छी बात है। यही होगा। अब मुझे जाने दो। मुझे साँस लेने में तकलीफ़ हो रही है। मैं सच कहता हूँ। बात बढ़ाकर कहना मेरी आदत नहीं।

—चले कैसे जाओगे? हम जाने ही नहीं देंगे। पहले सच्चे दिल से यह बताओ कि अब तुम्हें ठीक रास्ते पर चलना चाहिए कि नहीं? टोन्या और मरीना का मामला साफ़ होना ही चाहिए। आखिर औरतें भी इन्सान हैं, उनके भी दिल है, कि वे महसूस कर सकती हैं, कि दर्द उन्हें भी सालता है। यह कोई अच्छी बात नहीं है कि तुम्हारे जैसा आदमी इस तरह बर्बाद हो। अब तुम्हें होश में आ जाना चाहिए। तुम्हें अपनी प्रेक्टिस वापिस चालू कर देनी चाहिए।

—ठीक है। एक-एक करके तुम्हारी बात का जवाब देता हूँ। मैं भी आजकल इन्हीं बातों पर विचार कर रहा हूँ। इसलिए यह निश्चित है कि कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होने वाला है। इसके बाद सब कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा। देख लेना। सच कह रहा हूँ। इसके बाद सब कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा। मैं जीना चाहता हूँ। जीने की मेरी इच्छा है। जीने का अर्थ है संघर्ष करना। संघर्ष का अर्थ है आगे बढ़ना।

अपने समाचारों का दूसरा भाग भी तुम्हें सुना देता हूँ। आजकल पैरिस से मुझे पत्र मिलने लगे हैं। साशा ने प्रारम्भिक पढ़ाई समाप्त कर ली है और माशा स्कूल जाने वाली है। मैंने अभी तक माशा को देखा नहीं है। मुझे मालूम है कि वे सब फ्राँसिसी नागरिक हो गये हैं; फिर भी मुझे विश्वास है कि एक दिन वे लौट आयेंगे... और फिर सब कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा।

मुझे लगता है कि टोन्या और उसके पिता मरीना के बारे में सब कुछ जानते हैं। मैंने नहीं लिखा, फिर भी इधर-उधर से सुन कर उन्हें मालूम हो ही गया होगा। पिता की तरह अलेक्जेण्डर अलेक्जेण्ड्रोविच इस बात से नाराज़ हुए ही होंगे। उन्हें आघात लगा होगा। सम्भवतः इसी कारण से टोन्या और मेरे बीच पाँच साल तक पत्रव्यवहार बन्द रहा। मास्को आने पर मैं उन्हें पत्र लिखा करता था, लेकिन अचानक उन्होंने जवाब देना बन्द कर दिया। अभी हाल ही मैं उनके पत्र फिर आने लगे हैं। बच्चे भी बड़े प्यार से पत्र लिखते हैं। पता नहीं अचानक वे इतने दयार्द्र क्यों हो

...? हो सकता है टोन्या को कोई अच्छा व्यक्ति मिल गया हो, मुझे ...म नहीं है, लेकिन यदि मिला हो तो अच्छा ही है। अब मैं एक ... भी नहीं रुक सकता। मैं जाता हूँ। विदा।

दूसरे दिन मरीना अपने दोनों बच्चों के साथ व्याकुल भाव से मीशा के पास आई। घबराये हुए स्वर में उसने पूछा—यूरी यहाँ है क्या?

—वह रात को वापस घर नहीं पहुँचा?

—नहीं।

—तो शायद वह डुडरोव के यहाँ होगा?

—मैं वहाँ से ही आई हूँ। निकी डुडरोव विश्वविद्यालय गये हुए हैं। लेकिन पड़ोसी यूरी को जानते हैं। वे कहते हैं कि वे यहाँ नहीं आये।

—तब कहाँ गया होगा?

—मरीना ने छोटी बच्ची को नीचे रख दिया; और मूर्च्छित होकर गिर पड़ी।

आठ

दो दिन तक डुडरोव और गोर्डन मरीना के पास बैठे रहे। साथ ही बारी-बारी से वे प्रत्येक सम्भव स्थान पर यूरी को ढूँढ़ आये।

तीसरे दिन विभिन्न पोस्ट आफिसों से रवाना की गयी तीन चिट्ठियाँ तीनों मित्रों को मिलीं। यूरी ने दुःख ज़ाहिर किया था कि उसके कारण लोगों को बड़ी तकलीफ़ हुई होगी। चिन्ता न करने की बात लिखते हुए उसने प्रार्थना की थी कि उसके बारे में किसी तरह की खोज-खबर न की जाय। उससे कोई लाभ न होगा। आगे उसने लिखा था कि एकान्त में रह कर वह आत्म-शुद्धि करना और नये सिरे से जीवन शुरू करना चाहता है। जैसे ही वह किसी निश्चय पर पहुँचेगा, वह वापस मरीना और बच्चों के पास लौट आयेगा। गोर्डन को उसने लिखा कि मरीना के लिए वह एक मनीआर्डर भेज रहा है। वह उसे दे देना और कहना कि बच्चों

के लिए वह नर्स रख ले, ताकि वह काम पर जा सके। उसने मरीना को सीधे मनीआर्डर इसीलिए नहीं भेजा कि उसे डर था कि यदि किसी की नज़र इस पर पड़ गयी तो चोरी हो सकती है।

मनीआर्डर शीघ्र ही आ गया। जितना पैसा भेजा गया था, उसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। मरीना वापस काम पर जाने लगी थी, कुछ दिनों तक परेशान रहने के बाद उसने इस घटना को यूरी की एक विचित्र हरकत मान कर धीरज धर लिया। यूरी के इस पलायन के कारण उसने अपने काम से त्याग पत्र दे दिया! तीनों उसकी तलाश करते रहे। लेकिन जैसा कि यूरी ने लिखा था, उनकी खोज बिलकुल बेकार थी। उन्हें उसका कोई पता नहीं मिल सका।

उस समय भी वह उनसे बहुत अधिक दूर नहीं था। उस दिन गोर्डन को छोड़कर सन्ध्या से कुछ समय पहले वह ब्रोने स्ट्रीट पार करके घर की ओर मुड़ रहा था कि उससे लगभग सौ गज के फ़ासले पर उसने अपने सौतेले भाई युवग्राफ को देखा। तीन साल से उसने उसके बारे में कुछ भी जाना-सुना नहीं था। युवग्राफ हाल ही में मास्को पहुँचा था। एकबारगी ज़िवागो को लगा कि मानो वह आसमान से टपक पड़ा हो। यूरी के प्रत्येक प्रश्नों का जवाब उसने हँसते हुए, कन्धे हिला कर ही दिया। यूरी से थोड़ी देर बातचीत होते ही युवग्राफ को उसकी कठिनाइयों का अन्दाज़ हो गया। सड़क पार करते हुए, भीड़ में से गुज़रते समय, युवग्राफ ने यूरी के लिए एक क्रियात्मक योजना प्रस्तुत की। यह उसी का प्रस्ताव था कि कुछ दिनों के लिए वह गुप्त रहकर एकान्त में रहे।

आर्ट्स थिएटर के समीप उसने उसके लिए एक कमरे की व्यवस्था कर दी। एक अस्पताल में, जहाँ यूरी को अनुसन्धान करने का काफी अवसर मिल सकता था, वह कोशिश कर रहा था कि उसे जगह मिल जाय। पैसे से ही नहीं, हर प्रकार से उसने उसकी मदद की। उसकी पारिवारिक दिक्कतों के निवारण के लिए भी वह प्रयत्न कर रहा था कि या तो वे यहाँ लौट आवें अथवा यूरी ही पैरिस चला जाय।

उसकी शक्ति और प्रभाव अद्भुत और रहस्यमय था। उसकी सहायता ने यूरी में नये जीवन का संचार कर दिया।

नौ

उसका अध्ययन कक्ष काफी बड़ा था। यहाँ बैठते ही अधूरी कृतियों को पूरी करने की उसे प्रेरणा मिलती। अपरिमित उत्साह से वह भर उठता। भावी आविष्कारों और विचारों का मानो यह संग्रहालय हो। युवग्राफ की अस्पताल के अधिकारियों से बातचीत चलती रही और यूरी का नया पेशा अनिर्णीत काल के लिए स्थगित हो गया। इस बीच के समय में उसे लिखने का काफी अवसर मिला। अपनी पुरानी कविताओं को फिर से लिखने, सँजोने और पूरी करने में वह व्यस्त हो गया। इसके बाद नये काम की ओर उसका ध्यान गया। वह लेख की स्थूल रूपरेखा बनाता अथवा कविता का मध्य, अन्त अथवा आरम्भ, जैसा भी ध्यान में आता, लिखता जाता।

तमाम लेखों और कविताओं का एक ही विषय था—शहर!

दस

बाद में उसके कागजों में एक नोट मिला—

जब सन् 22 में मैं मास्को वापस आया तो यहाँ सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट पड़ा था। यह क्रान्ति के कुछ वर्षों बाद का प्रयोग था। यह एक महान शहर है और शहर ही वास्तविक रूप से समकालीन कला के प्रोत्साहन-स्रोत हैं।

भावनाओं के इस नवीन समन्वय का सीधा सम्पर्क जीवन से ही है।

जिस प्रकार कविता की पँक्तियों में भावों का अनुक्रम सन्निहित है, उसी तरह इक्के, गाड़ियों, कारों, बसों और ट्रामों के साथ शहर तेजी के साथ आगे बढ़ रहा है।

ऐसे जीवन में कला की अभिव्यक्ति के लिए ग्रामीण सरलता कैसे आ सकती है? इसका प्रयत्न करना साहित्यिक छल है। इसकी प्रेरणा का उद्गम स्थल देहात नहीं, किताबी ज्ञान है।

गाँव की भाषा ही हमारे जीवन की सजीव वाणी है।

मैं एक व्यस्त चौराहे पर रहता हूँ। मास्को सूर्य की चकाचौंध से अन्धा हो रहा है। सड़क की व्यस्तता में सूर्य-किरणों का खिलवाड़, बादलों के रंग के मध्य में साँस लेते हुए मेरे चारों ओर मँडरा-से रहे हैं। जैसे वे मेरे लिखने की तारीफ़ कर रहे हों, और मुझे कह रहे हों कि मैं कुछ ऐसा लिखूँ—उनकी प्रशंसा में—कि लोग उसे देखकर सिर हिलाने लगें।

बाहर के भारी सीमाहीन शोरगुल तथा हलचलें हमारे जीवन की अभिव्यक्ति हैं।

मैं इन्हीं रूपरेखाओं के विधान के अन्तर्गत शहर सम्बन्धी कविता लिखना चाहता हूँ।

ज़िवागो की सुरक्षित रचनाओं में इस तरह की कोई कविता नहीं मिली।

ग्यारह

अपने नये काम पर जाने के लिए ज़िवागो ने अगस्त के अन्तिम पक्ष में एक दिन गेझनी स्ट्रीट में बोटकिन होस्पीटल जाने के लिए एक ट्राम पकड़ी। लेकिन भाग्य ने साथ नहीं दिया। ट्राम बिलकुल खटारा थी। उसकी मोटर खराब थी, लिहाजा हर कदम पर कुछ न कुछ खराबी उसे आगे बढ़ने से रोक देती। ट्राम चलाने वाला ड्राइवर अपने औजारों के साथ बाहर आता, चारों ओर से उसका निरीक्षण करता और फिर उसे ठक-ठक करके सुधारने में व्यस्त हो जाता। इस ट्राम के कारण यातायात ठप्प हो गया था और रास्ता अवरुद्ध। पीछे के वाहनों की कतारें मैनेजी के चौराहे से भी आगे तक चली गयी थीं। सुबह का समय था। गर्मी काफी भी। भीड़ के कारण ट्राम में दम लेने को भी हवा नहीं थी।

एक ट्राम से दूसरी ट्राम को पार करता हुआ काला बादल आसमान में ऊपर ही ऊपर मँडरा रहा था। तूफान के आसार नज़र आ रहे थे। यूरी खिड़की से सटा हुआ चुपचाप, अपने आप में खोया हुआ बैठा था। प्रत्येक व्यक्ति की ओर वह गहरी नज़रों से देख रहा था।

एक वृद्ध महिला, बेंत का बना हुआ हैट और लायनिन के कपड़े पहने ट्राम के चबूतरे की ओर जा रही थी। उसके हाथ में कागजों का एक बण्डल था। गर्मी के मारे वह उसी से हवा कर रही थी। बीच-बीच में पसीना पोंछने के लिए हल्के लेस का रूमाल निकाल कर भौंहों और मुंह पर थपथपा लिया करती। यूरी की नज़रों से वह बार-बार ओझल हो जाती। फिर ट्राम के रुकने पर जब वह आगे बढ़ी, तो ज़िवागो की दृष्टि उस पर पड़ी।

उसे याद आई, उन स्कूली दिनों की बात, जब कि इस तरह के सवाल हल करना बच्चों को सिखाया जाता है कि यदि एक गाड़ी इस रफ़्तार से इतनी देर चले तो इतने मील वह कितनी देर में तय करेगी? लेकिन लगा की जीवन की रफ़्तार में गणित के ये कायदे किसी काम नहीं आ सकते। कई लोगों की बात याद आई। समानान्तर चलने पर भी पता नहीं किन परिस्थितियों के कारण कुछ लोग पहले पहुँच गये, कुछ बाद में। कुछ पहुँच सके, कुछ बीच में ही रह गये। कौन कह सकता है कि कौन किससे कितना अधिक जीयेगा? अन्योन्याश्रित सिद्धान्त के आधार पर ही तो सब कुछ चलता है!

बिजली चमकने लगी। बादलों की गर्जना सुनाई देने लगी। ट्राम बीसवीं बार रुक गयी। वह फिर खराब हो गयी थी। बरसात की पहली बौछार से सड़क, फ़र्श तथा वह वृद्ध महिला भींग गयी। तेज हवा पेड़ों पर से गुज़री। पत्ते फड़फड़ाये। वृद्ध महिला का टोप गिरने लगा, उसने उसे संभाल लिया।

यूरी को लगा कि बीमारी और कमजोरी के कारण वह मूर्च्छित हो जायेगा। उसने खिड़की खोलने की कोशिश की। लेकिन वह उसे हिला भी नहीं सका। लोग कह रहे थे, अरे यह खिड़की कीलों से ठुकी हुई है। नहीं खुलेगी। लेकिन भय से आच्छादित और अपनी मूर्च्छना से बचने की कोशिश करता हुआ वह कुछ भी सुन नहीं पा रहा था। वह निरन्तर कोशिश करता रहा, खिड़की को खोलने की।

उसे तीव्र पीड़ा का बोध हुआ। जैसे अन्दर की कोई चीज़ टूट गयी हो। लगा कि जैसे अन्त करीब आ गया हो। ट्राम आगे बढ़ी। प्रेसन्या स्ट्रीट पर जाकर फिर रुक गयी।

अमानवीय शक्ति के साथ यूरी भीड़ को चीरता हुआ प्लेटफार्म पर आ गया। ताजी हवा से उसे कुछ होश आया। उसे लगा कि शायद वह अच्छा हो रहा है। भीड़ को चीरते हुए वह आगे बढ़ने लगा। लोगों की आवाज़ों और गालियों की ओर उसका ध्यान नहीं था। रुकी हुई ट्राम से उतर कर वह सड़क की ओर बढ़ा। एक कदम, दूसरा और तीसरा कदम...और वह गिर पड़ा। इसके बाद वह फिर उठ नहीं सका।

ट्राम से कई लोग बाहर निकल आये। भीड़ एकत्रित हो गयी थी। तरह-तरह की बातें होने लगीं। तुरन्त मालूम हो गया कि उसके हृदय की गति बन्द हो गयी है।

वह वृद्ध महिला पास आई, उसने लोगों की बातचीत सुनी, एक नज़र मृतक पर डाल कर, वह आगे बढ़ गयी।

कुछ लोगों का मत था कि शव को ट्राम में रख कर अस्पताल ले जाया जाय तथा कुछ लोगों की राय थी कि पुलिस को तुरन्त इत्तिला करके बुलाया जाय।

वह वृद्ध विदेशी महिला अधिक देर तक वहाँ नहीं रुकी। यह थी मेल्यूज़ेवो वाली मेडमेजेल। अब वह काफी बूढ़ी हो गयी थी। पिछले बारह वर्षों से अपने स्वदेश जाने के हेतु वह अनुमति पत्र प्राप्ति के लिए सम्बन्धित अधिकारियों से खतोखिताबत करती रही। अब उसे स्वीकृति मिल चुकी थी और पार-पत्र के लिए वह मास्को आई थी। इस समय वह अपने दूतावास की ओर इसी उद्देश्य से जा रही थी। उसके हाथ में सम्बन्धित कागजों का पुलिन्दा डोरी से बँधा हुआ था। उसी से वह हवा कर रही थी।

वह अनजाने में ही पास से गुज़र गयी, बिना जाने कि उसी ने ज़िवागो में जीवन की अन्तिम ललक, कुछ क्षणों के लिए ही सही, पैदा कर दी थी।

बारह

खुले दरवाजे से रास्ता और कमरा स्पष्ट दिखाई दे रहा था। त्रिकोणाकार में रखी हुई टेबल पर शव रखा हुआ था। यह वही टेबल था, जिस पर यूरी पहले लिखने का काम किया करता था। पाण्डुलिपियों को दराजों में रख दिया गया था और उनके ठीक ऊपर ज़िवागो की लाश पड़ी थी। तकियों से उसका सिर कुछ ऊपर उठा दिया गया था।

सफ़ेद वकाइन के पुष्प-गुच्छों से शव आच्छादित था। खिड़कियों से आने वाला प्रकाश फूलों के मध्य से गुज़र कर शव के चेहरे और हाथों पर पड़ रहा था। पुष्पगुच्छ की पत्तियों और छोटी टहनियों का प्रतिबिम्ब टेबल पर पड़ रहा था मानो उन्होंने अभी-अभी लहराना बन्द कर दिया हो।

अब तक मृतकों की व्यवस्थित दाह-क्रिया की रीति वापस प्रचलित हो गयी थी। बच्चों के भविष्य का खयाल रखते हुए तथा मरीना की टेलीग्राफ आफिस की स्थिति को मद्देनजर रखते हुए, यह तय किया गया कि ज़िवागो की अन्तिम क्रिया नागरिक तरीके से ही हो। सम्बन्धित अधिकारियों को सूचित किया जा चुका था और अब उनके आदमियों के आने की प्रतीक्षा की जा रही थी।

बीच के समय में लगता कि जैसे कमरा खाली हो गया हो, मानो एक किरायेदार जा चुका हो और दूसरा किरायेदार आने वाला हो।

वहाँ की यह निस्तब्ध शान्ति समवेदना प्रदर्शित करने वाले लोगों के आ जाने से भंग हो गयी। इनकी संख्या बहुत अधिक नहीं थी। फिर भी इतने आदमियों के आने की आशा भी नहीं की जाती थी। अधिकांश वे लोग थे जो कि जीवन के किसी न किसी दौरान में उसके सम्पर्क में आये थे और उसे जानते थे—जिन्हें कि बाद में वह भूल गया था। उसका साहित्यिक कृतित्व और वैज्ञानिक कार्य-कौशल उन अनेक आदमियों को भी खींच लाया, जिन्होंने उसे आज पहली और आखिरी बार देखा था।

किसी तरह का विशेष समारोह नहीं। निश्चल शान्ति। सिर्फ़ फूल ही मृत्यु के समय के गीत गा रहे थे। जैसे खिलने और सुगन्धित होने से भी अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य उनके जिम्मे हो। सम्भवत: उन्हें भी लगा कि वे भी इस संसार से शीघ्र विदा होने वाले हैं, इसीलिए उनकी सुगन्ध सारे वातावरण में व्याप्त हो गयी। लगता कि वे धार्मिक विधि सम्पादित कर रहे हैं।

वनस्पति जगत् हमारे और मृत्यु-जगत् के बीच का निकटतम पड़ोसी है। जीवन का रहस्य और नवीन स्वरूप प्राप्त करने की विधि के साक्षी हैं कब्रिस्तान के वृक्ष, जमीन की हरियाली और शव पर चढ़ाये जाने वाले पुष्प-दल। इसीलिए मेरी मेगडोलेन ने ईसा मसीह को कब्र से उठने पर न पहचानने के कारण माली ही समझा था।

तेरह

यूरी का केमरगर स्ट्रीट वाला पता ही दर्ज किया हुआ था, इसलिए पहले शव यहीं लाया गया। इसके बाद उनके मित्रों को ज़िवागो की मृत्यु की सूचना मिली। उन्हें बड़ा धक्का लगा।

चौड़े खुले दरवाजे से दु:ख और वेदना से चीत्कार भरती, अर्द्ध-चेतनावस्था में मरीना शव के पास आकर पछाड़ खाकर गिर पड़ी।

कमरा साफ़ नहीं था। शव-पेटी के लिए व्यवस्था की जा चुकी थी।

मरीना रो रही थी। उसका कंठ अवरुद्ध था। विलाप करते-करते उसका हृदय विदीर्ण हो रहा था। जिस प्रकार गाँव के लोग अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए किसी तरह की लाज नहीं करते। उसी प्रकार मरीना सबके सामने रो रही थी।

जब शवपेटिका आ गयी और शव को कमरे से हटाया जाने लगा तो मरीना उससे चिपट गयी। बड़ी मुश्किल से उसे हटाया गया।

यह सब कुछ पहले दिन हुआ। आज दूसरा दिन है। दु:ख का वेग कुछ कम हो गया है। लेकिन अभी तक उसे पूरा होश नहीं आया था। कल से वह यहीं बैठी है। एक मिनट के लिए भी वहाँ से नहीं हिली।

गोर्डन और डुडरोव भी कम दुःखी नहीं थे। पास ही बैठा मार्केल ज़ोर-ज़ोर से रोते हुए नाक से बहने वाले पानी को रूमाल से पोंछ लिया करता।

इस सारे समुदाय में दो व्यक्ति ऐसे थे—एक स्त्री और एक पुरुष—जो सबसे अलग चुपचाप खड़े थे। उन्होंने किसी तरह के निकट सम्बन्ध का दावा नहीं किया। लेकिन बिना किसी दावे के भी उनकी उपस्थिति यूरी पर उनके निकट अधिकार को स्पष्ट रूप से ज़ाहिर कर रही थी। इन दोनों ने अन्तिम संस्कारों की व्यवस्था का प्रबन्ध भार अपने ऊपर लिया था। उनका इस तरह चुपचाप रहना एक अद्भुत प्रभाव उत्पन्न करता था। मानो वे अन्तिम संस्कारों से ही नहीं, उसकी मृत्यु से भी सम्बन्धित हों—इस रूप में नहीं कि मृत्यु का कारण वे हों—बल्कि मृत्यु की साक्षी ये ही हैं, इस रूप में। यूरी से इनके विशेष सम्बन्ध की बात कोई नहीं जानता था। लेकिन मन ही मन सबने मान लिया था कि मृत्यु के समय इन लोगों से जो सम्बन्ध स्थापित हुए थे, वे विवाद से परे हैं। उपस्थित कुछ लोग उन्हें जानते थे। कुछ लोग अनुमान लगा रहे थे। कुछ लोगों ने उनकी ओर ध्यान ही नहीं दिया।

जब भी वह किरगिज आँखों वाला आदमी इस स्त्री के साथ अन्दर आता, सब अदब से उठ कर खड़े हो जाते और उनके लिए रास्ता छोड़ देते, ताकि शव की अन्तिम क्रिया करने की व्यवस्था में कोई बाधा न पड़े।

ऐसे ही एकान्त में बैठ कर दोनों काम की बातें कर रहे थे।

—आगे क्या हो रहा है युवग्राफ एण्ड्रेविच?

—दफन रात को ही किया जा सकेगा। आध घंटे में डाक्टरों के संघ के लोग आयेंगे और शव को अपनी क्लब में ले जायेंगे। आम बैठक चार बजे होगी। उनके कोई कागजात ठीक नहीं हैं। श्रम-पुस्तिका काफी पुरानी है। ट्रेड यूनियन का कार्ड था ज़रूर, लेकिन उसे बदलवाया नहीं गया है; न चन्दा ही दिया गया है। इन सबकी व्यवस्था करने में ही इतनी देर हुई

है। अब हमें जल्द ही तैयार हो जाना चाहिए। तुम अकेली रहना चाहती हो न? मैं थोड़ी देर में वापस आता हूँ। शायद टेलीफोन है....

बाहर यूरी के दोस्त, अस्पताल में काम करने वाले लोग, मुद्रक, पुस्तक विक्रेता आदि के साथ मरीना अपने बच्चों को लिए जहाँ खड़ी थी, युवग्राफ भी वहाँ चला आया। बाहर के कमरे में मरीना ठीक ऐसे बैठी थी, जिस प्रकार किसी कैदी से मिलने के लिए बाहर बैठा कोई इन्तज़ार कर रहा हो। सामने का रास्ता और हॉल खचाखच भर गया था। दरवाजा खोल दिया गया।

लोग बातें कर रहे थे। जैसे-जैसे वे दूर जाते, उनकी आवाज़ तेज होने लगती। जो वहाँ खड़े थे, उनकी फुसफुसाहट की आवाज़ भी मुश्किल से सुनाई देती।

युवग्राफ टेलीफोन पर मृतक के सम्बन्ध में जानकारी और संस्कार के कार्यक्रमों के बारे में बातचीत कर रहा था।

—दफन-क्रिया के बाद तुम चली मत जाना, लारा। मुझे मालूम नहीं, तुम कहाँ रहती हो? मुझ पर एक एहसान करना। कल या परसों, एक दिन बैठ कर मैं अपने भाई के कागजात छाँट लेना चाहता हूँ। तुम उनके बारे में सबसे अधिक जानती हो। मुझे इसीलिए तुम्हारी मदद की ज़रूरत है। तुम अपने यहाँ आने के बारे में कुछ कह रही थी, मैं समझ नहीं पाया। अभी सारी बातें समझाने के लिए कह भी नहीं रहा हूँ। प्रार्थना इतनी ही है कि बिना अपना पता बताये, यहाँ से चली मत जाना।

—अब बताने को विशेष है ही क्या युवग्राफ? मास्को स्टेशन पर अपना सामान छोड़ कर पुरानी सड़कों पर घूमने आई थी। कुछ सड़कों को पहचान सकी, कुछ इतनी बदल गयी हैं कि उन्हें पहचाना ही नहीं जा सकता। जब मैं इसं स्ट्रीट से गज़री तो मुझे यह मकान याद आ गया। यहीं मेरा पाशा विद्यार्थी के रूप में रहता था। लोग कहते हैं कि उसे गोली मार दी गयी है। इसीलिए मैं यहाँ चली आई कि शायद पुराने

किरायेदार यहीं रहते हों। यहाँ मैंने तुम्हें खड़े पाया। दरवाजा खुला था। लोगों की भीड़ थी। कमरे में शव पड़ा हुआ था।

—ठहरो लारा। तुमने पाशा—स्ट्रेलिनिकोव के बारे में जो कुछ कहा, उसके बारे में मैं कुछ कहना चाहता हूँ। गृह-युद्ध के समय मैं उससे एकाध बार मिला था। उस समय नहीं जानता था कि यह नाम मेरे पारिवारिक मामलों के लिए इतना महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा। मैं कह रहा था, पाशा की मृत्यु के सम्बन्ध में—तुम्हारे कथन की बात। हो सकता है तुमने भूल से ही ऐसा कहा हो,—कि वह मारा गया है। वास्तव में उसने खुदकुशी कर ली थी। अपने आप गोली मार ली थी।

—उनकी मृत्यु सम्बन्धी कथा का यह रूप भी मैंने सुना है। लेकिन मुझे विश्वास नहीं होता। मेरा पाशा ऐसा आदमी नहीं था, जो आत्महत्या कर ले।

—लेकिन यह सच है लारा कि जहाँ यूरी रहते थे उसी घर में उसने आत्महत्या की थी। उस समय तुम ब्लाडीवोस्टक चली गयी थी। तुम्हारे जाने के तुरन्त बाद ही यह घटना घटित हुई। यूरी को लाश मिली। उसी ने उसे दफनाया।

क्या वास्तव में यही सच है कि उन्होंने खुद गोली मार ली—आत्महत्या कर ली? लोगों ने जब मुझसे कहा, तो मुझे यकीन नहीं आया। और फिर उसी घर में? मैं सारी बातें जानना चाहती हूँ। क्या वे दोनों आपस में मिले थे? क्या वे एक दूसरे को पहचान गये।

—यूरी ने मुझे बताया था कि उनकी आपस में काफी देर तक बातचीत होती रही।

—वास्तव में तुम सच कह रहे हो? भगवान करे, यही सच हो। कैसा विचित्र समझौता! मैं और भी बहुत कुछ पूछना चाहती हूँ। मुझे इस बारे में कही हुई प्रत्येक बात बहुत प्रिय है। माफ करना युवग्राफ, मैं कुछ देर के लिए चुपचाप, एकान्त में रह कर सोचना चाहती हूँ।

—अवश्य। अवश्य।

—हाँ, तुमने कहा था कि मैं यहाँ से चली न जाऊँ। ठीक है, मैं नहीं जाऊँगी। जब तक ज़रूरी होगा, मैं तुम्हारे पास रह कर यूरी की पाण्डुलिपियों को छाँटने में तुम्हारी मदद करूँगी। मैं उनका एक-एक अक्षर अच्छी तरह से पहचान सकती हूँ। उनके अक्षर का एक-एक मुड़ाव मेरी रग-रग में समाया हुआ है। मैं हृदय से सब कुछ जानती, महसूस करती हूँ। इसे मैंने जीवन के रक्त से सींचा है। अच्छा, मुझे ठीक-ठीक नहीं मालूम कि सही जानकारी किस किस दफ्तर से हासिल की जा सकती है। एक बहुत ही दुखदायक भयंकर बात है। बाद में बताऊँगी। यह है एक बच्चे के बारे में। लेकिन अन्तिम संस्कार से लौटने पर कहूँगी। मैं इसके लिए कितनी भटकती फिरी हूँ? मान लो किसी बच्चे का पता लगाना आवश्यक हो, जिसे कि किसी अजनबी को पालन-पोषण के लिए दे दिया गया था। क्या कोई ऐसी जगह नहीं, जहाँ से देश के तमाम अनाथ बालकों के बारे में सब कुछ जाना जा सके? इन सभी लावारिस भटकने वाले अनाथ बच्चों का कोई लेखा कहीं मिल सकता है? नहीं, अभी मत कहो। बाद में बताना। आह, जीवन कितना भयग्रसित है!

पता नहीं मेरी लड़की कब आयेगी? कात्या संगीत और अभिनय कला में काफी रुचि ले रही है। उसमें इस कला की अच्छी प्रतिभा है। उसकी पढ़ाई की व्यवस्था करना चाहती हूँ; अथवा किसी नाटक के स्कूल में डालना चाहती हूँ। इसीलिए मैं उसे छोड़ कर यहाँ आई हूँ। इन सबकी व्यवस्था करके मैं वापस चली जाऊँगी। सभी कुछ कितना उलझन भरा है। लेकिन जाने दो। हम इस विषय पर बाद में बात करेंगे। शायद शव लेने के लिए लोग आ रहे हैं। ठहरो, शव के सामने तिपाई रख दूँ। लाश काफी ऊँचाई पर है, लोग उन तक पहुँच नहीं पाते कि वे उनका अन्तिम चुम्बन ले सकें।

ओह यह सब कितना दुखदायी, कितना भयंकर, कितना असह्य है!

—अच्छी बात है, मैं दरवाजा खोल देता हूँ कि लोग अन्दर आ जायें।
—तुम्हारी चिन्ताओं की तमाम बातों को सुन लेने के बाद भी मेरा यह निवेदन है कि तुम मेरी मदद करना। निराश मत होवो। दुर्भाग्य के समय आशा और कर्त्तव्यपालन ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात है। निराशा का मतलब है कर्त्तव्य की अवहेलना करना।

लेकिन लारा कुछ भी नहीं सुन रही थी। न उसने खुले दरवाजे से लोगों को अन्दर आते देखा। न उसे स्त्रियों का विलाप सुनाई दिया, न पुरुषों की खाँसी, न व्यवस्था करने वालों की हलचल की ओर ही उसका ध्यान गया; न संवेदना प्रकट करने वाले लोगों की ओर ही उसने देखा।

उसका हृदय ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था और सिर दर्द करने लगा था। आँखें बन्द करके अपनी स्मृतियों और विचारों को दूर रखते हुए वह जी-जान से कोशिश कर रही थी कि वह कहीं बेहोश न हो जाय। जैसे वह किसी सुदूर व्यापी भविष्य के चिन्तन में डूब गयी हो, जिसे प्रत्यक्ष रूप से वह इस जीवन में कभी नहीं देख सकेगी। ऐसा भविष्य, जिसकी प्रतीक्षा करते-करते वह वृद्ध हो गयी। ऐसा भविष्य, जहाँ वह स्वयं वृद्धा होगी।

कोई शेष नहीं रहा। एक सामने मरा पड़ा है। दूसरे ने आत्महत्या कर ली। जीवित बच रहा है वह, जिसे मर जाना चाहिए था। जिसकी उसने हत्या करने की कोशिश की थी। जिसने उसे अनजाने में ही पाप की जँजीरों से घेर दिया था। और वह प्रेत एशिया के अनजाने प्रदेशों में न जाने कहाँ भटक रहा है।....

यह वही कमरा है, जहाँ कोमारोवस्की की हत्या का संकल्प लेकर वह पाशा से मिलने आई थी। उस समय उसके जीवन में यूरी का प्रवेश नहीं हुआ था। उस दिन की बातचीत कोशिश करने पर भी उसे याद नहीं आ रही थी। स्मृति में खिड़की के ऊपर एक धब्बा-सा उतर आता जो कि मोमबत्ती के पिघले हुए मोम के कारण बन गया था। इस धब्बे को यूरी ने देखा था। शायद सब कुछ पहले से ही निर्दिष्ट था। अन्तिमक्रिया

कितनी विशाल और भयंकर है! ऐसा अवसर सब लोगों को नहीं मिलता। यह गौरव यूरी के अनुकूल ही है। सचमुच वे ऐसे ही व्यक्ति थे। जिनके लिए लोग बाद में रोते रहें। गौरव और निष्कृति की लहर उसके आसपास से दौड़ गयी।

असम्बद्ध रूप से स्वतन्त्रता के साथ उसने जो समय यूरी के साथ बिताया था—वह याद हो आया।

अधीर होकर वह कुर्सी से उठ खड़ी हुई। उसके मन में जो कुछ गुज़र रहा था, वह इतना अगम्य, अज्ञेय और दुर्बोध था कि उसे व्यक्त किया नहीं जा सकता।

उसे लग रहा था कि वह विदा दे रही हो। चारों ओर की प्रस्तुत भीड़ की ओर उसने देखा।

युवग्राफ आगे बढ़ा। पवित्र चिह्नों को तीन बार अंकित करके उसने उसके ठंडे ललाट और हाथों को चूमा।

इसके बाद, शव पर रखे हुए फूलों पर अपने समस्त अस्तित्व के साथ वह झुक गयी।

चौदह

इतनी देर वह अपने आँसुओं को जब्त किये बैठी थी। लेकिन अब उसका हृदय फूट निकला। रोते-रोते हिचकियाँ बँध गयी। आँसुओं से गाल, कपड़े और लाश भींगने लगी।

उसने कुछ भी नहीं कहा। कुछ सोचा भी नहीं। कई बातें-घटनाएँ स्वच्छन्द बादलों की तरह अथवा यूरी के साथ किये गये मुक्त वार्तालाप की तरह उसके मस्तिष्क में घुमड़ रही थीं।

इसको उन्होंने हृदय से महसूस किया था। यह ज्ञान था जो सहज-प्रवृत्ति से प्राप्त होता है। उस समय उसने मृत्यु के बारे में सोचा था कि वह आये और तमाम मजबूरियों का अन्त हो जाय। लेकिन वह अभी

नक जीवित है। यूरी को उसने आज ही नहीं, पहले भी कितनी ही बार खो दिया था।

आह, कितना नवीन, कितना स्वच्छन्द मुक्त प्रेम था वह जिसकी तुलना संसार की किसी चीज़ से की नहीं जा सकती। उन्होंने उस अनिर्वचनीय सुख का अनुभव किया था, लोग जिसके गीत गाया करते हैं।

उनके प्रेम में किसी प्रकार की आवश्यकता की शर्त नहीं थी। वे इसलिए प्रेम करते थे कि उनका रोम-रोम यही चाहता था। ऊपर का आसमान और नीचे की धरती यही चाहती थी। उससे भी अधिक, उनसे मिलने वाले अजनबी, सड़कें, कमरे की दीवारें, उनके प्रेम को देखकर आनन्दित हो उठती थीं।

ऐसा था उनका प्रेम।

सम्पूर्णता की यही अनुरूपता उनके जीवन का आधार थी।

पन्द्रह

उसका स्वर सरल हो गया। प्रचलित शब्दों की वाणी में उसने यूरी से विदा ली। उत्तेजना रहित नीरस शब्द मुँह से निकलते और नष्ट हो जाते।

आँसुओं से भीगे हुए ये शब्द जैसे सिकुड़ गये और सड़क पर सूखी पत्तियों की तरह इधर-उधर उड़ने लगे।

फिर हम यहाँ इस तरह मिल गये। देखो तो, किस विचित्र तरीके से भगवान हमें मिला देता है। आह, यह कितना भयंकर है, मुझसे बर्दाश्त नहीं होता। यह परिस्थिति भी ठीक उसी तरह की ही है। आपका इस तरह चले जाना ही मेरा अन्त है। जैसे कुछ और भी बड़ी घटना घटित होने वाली है जिससे पिण्ड छुड़ाया नहीं जा सकता। जीवन और मृत्यु की समस्या! प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति का सौन्दर्य-प्रेम—प्रेम का अद्वितीय सौन्दर्य!

मेरे विराट रूप, विदा! मेरे प्रिय विदा। मेरे प्राण, मेरे गौरव, विदा।

मेरी तीव्र प्रवाहयुक्ता पुण्यसलिला नदी विदा, तुम्हारी लहरों की किल्लोल में मैंने प्यार किया, तुम्हारे प्रवाह में मैंने प्रेम रस स्नान किया था—अलविदा।

याद है आपको—आपने मुझे उस बर्फ़ीले दिन में विदा दी थी? आपने कितना छल किया? क्या मैं आपके बिना कहीं जा सकती थी? कभी नहीं। लेकिन मुझे मालूम है, आपने कलेजे पर पत्थर रख कर मुझे मेरे भले के लिए रवाना कर दिया था। उसके बाद सभी कुछ गलत हो गया। सभी कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो गया। मैं आखिर आपके बिना जाती कहाँ? हे प्रभु, जी ही जानता है कि मुझ पर इसके बाद क्या गुज़री। लेकिन आपको तो नहीं मालूम। ओह, मैंने क्या कर डाला? मुझसे कितना बड़ा अपराध हो गया। लेकिन वास्तव में मैं निर्दोष हूँ।

तीन महीने मैं बीमार पड़ी रही। एक महीने से तो मुझे होश ही नहीं था। ज़िन्दगी जीने लायक नहीं रही। हृदय में शान्ति नहीं। मैं दुःख और दया के लिए जीना नहीं चाहती। लेकिन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात तो मैंने आपको बताई ही नहीं। मेरी हिम्मत ही नहीं होती कहने की। हर बार जब भी मैंने जीवन के इस भाग का रहस्य आपके सामने अनावृत करने का प्रयत्न किया है, मुझसे आगे कुछ कहा नहीं जाता। मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ओह, यह कितना भयंकर है। मुझे अभी भी विश्वास नहीं है कि मेरे होश-हवाश कायम हैं।

वह रोती रही। अचानक उसने सिर ऊपर उठा कर देखा कि कमरे में काफी लोग चले आये हैं। वह तिपाई से उठ कर, शव को छोड़ कर, दूर हट गई। हथेली से आँसू पोंछ लिये।

छः आदमी शव के पास आये। उन्होंने लाश उठाई; और बाहर चले गये।

सोलह

लारा काफी अर्से तक केमरगर स्ट्रीट में रही। यूरी के कागजातों की छानबीन उसकी मदद से शुरू हुई और बिना उसके समाप्त हो गई। बातचीत के दौरान उसने युवग्राफ को एक महत्त्वपूर्ण बात बता दी।

एक दिन वह बाहर गई और वापस लौट कर नहीं आई। शायद उसे सड़क पर गिरफ्तार कर लिया गया हो। उन दिनों यह कोई अनहोनी बात नहीं थी। अथवा कहीं गायब हो गई हो। हो सकता है कि उसकी मृत्यु हो गयी हो।

16

विशेष

तान्या की बात अभी तक बाकी है।

—मेजर जनरल युवग्राफ ज़िवागो, क्रिश्च्यना के बारे में—जो कि जर्मनों के साथ हुए युद्ध में बहादुरी के साथ लड़ती हुई मारी गई थी—अधिक तथ्य इकट्ठे करना चाहता था। क्रिश्च्यना की सगाई डुडरोव के साथ हो चुकी थी। लेकिन विवाह नहीं हो पाया और उसकी मृत्यु हो गई। जब वह विश्वविद्यालय में था, तब वह उसे बहुत तंग किया करती थी। उसकी इस शैतानी के बीच ही दोनों में प्रेम सम्बन्ध स्थापित हुआ था। इस क्रिश्च्यना के बारे में तान्या बहुत कुछ जानती थी। इसीलिए युवग्राफ ने उसे अपने पास बुलाया था। उसके बारे में बताते-बताते उसने अपनी कथा भी कह सुनाई।

वह एक अनाथ लड़की थी। जिसके माता-पिता का कोई ठिकाना नहीं। कुछ लोग कहते हैं कि वह कोमारोवस्की की लड़की है। लेकिन कुछ लोगों का कथन है, वह उसकी भी लड़की नहीं है, बल्कि वह किसी संभ्रान्त उच्च कुल के भले आदमी की लड़की है। जो भी हो, उसका लालन-पालन वास्या और मर्फा ने किया था। मर्फा सिगनल दिखाने का काम किया करती थी और वास्या बहुत ही भला आदमी था। उनके एक

लड़का था, लेकिन अपाहिज। उसकी टाँगें बेकार थीं। मर्फा की नज़रों में तान्या ही उसके लड़के की इस दीनावस्था के लिए जिम्मेवार थी। एक दिन अपनी गाय बेचकर वास्या बोरी भर कर नोट ले आया। उस जमाने की वह सम्पत्ति एक आने के बराबर थी। लेकिन शराब के नशे में धुत्त वह मजाक में उसकी बड़ी महिमा गाते हुये कहा करता कि देखो मैं कितना धनवान हूँ।

एक दिन एक बुढ़िया ने दरवाजा खटखटाया। वह बहुत बीमार थी। उसने वास्या से प्रार्थना की कि उसे अस्पताल पहुँचा दिया जाय। वास्या ने गाड़ी जोती और उस बुढ़िया को लेकर चल दिया। थोड़ी देर बाद जब गाड़ी वापस लौट आई तो मर्फा ने दरवाजा खोल दिया कि शायद उसका पति वापस लौट आया होगा। लेकिन वहाँ कोई दूसरा ही आदमी था। डकैत! उसने धमकाया—बताओ, तुमने धन कहाँ छिपा रखा है? वर्ना मार डालूँगा।

मर्फा समझ गयी कि उसके पति कि हत्या की जा चुकी है। मारे डर और दु:ख के वह विक्षिप्त-सी हो गई। आखिर उसने बता दिया कि तलघर में धन छिपाया हुआ पड़ा है। डकैत को सहज ही विश्वास नहीं हुआ। उसने कहा, यदि तुमने कोई चाल चली तो ठीक नहीं होगा। इस पर मर्फा ने कहा, मेरी टाँगें ठीक नहीं हैं, सीढ़ियों से चढ़-उतर नहीं सकती। मैं अपनी लड़की—तान्या को—तुम्हारे साथ भेज देती हूँ। तान्या का खून सर्द हो गया। डकैत भी समझ गया कि उसे इस लड़की की रत्ती भर परवाह नहीं है। उसने उसके तीन साल के लड़के को गोद में उठाया और तलघर में घुस गया।

पागलपन के साथ मर्फा ने तलघर का दरवाजा बन्द कर दिया और उस पर भारी सन्दूक रख दी। थोड़ी देर बाद अन्दर से गुर्राने की आवाज़ आई—दरवाजा खोल दो, वर्ना बच्चे को मार डालूँगा। लेकिन मर्फा होश-हवाश खो बैठी थी। उसे कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। वह सन्दूक पर बैठी अपनी बहादुरी

पर विकृत आवाज़ में हँस रही थी। उसे देख कर तान्या डर गई। उसने प्रार्थना की कि बच्चे की ज़िन्दगी बचाने के लिए वह दरवाजा खोल दे। लेकिन उसने कोई बात नहीं सुनी। वह उसी तरह चीखती-चिल्लाती रही। थोड़ी देर बाद तान्या ने बच्चे की दर्दनाक चीत्कार सुनी। उसका गला घोंट दिया गया। वह मर गया।

बाहर वह बुढ़िया अभी भी गाड़ी में बैठी थी। उसने तान्या को अपने साथ चलने को कहा। उसे याद आया गाड़ी आने का समय है। यह सिगनल केबिन पहाड़ की ऊँचाई पर था जहाँ गाड़ी बहुत धीमे-धीमे चढ़ पाती थी। वह पागलों की तरह रेल के चीलों पर दौड़ने लगी। इंजिन ड्राइवर उसे पहचानता था। उसने गाड़ी रोक दी। गाड़ी से लाल सेना के फौजी नीचे कूद पड़े। पूरी हकीकत मालूम होने पर उन्होंने तलघर का दरवाजा खोला और डकैत को बाहर निकाला। उस मृतक-बच्चे की चीत्कार से भी भयंकर दर्दीली आवाज़ में वह चीख रहा था—मुझे माफ कर दो। मुझे छोड़ दो। मेरी जान बख्श दो। अब मैं ऐसा काम कभी नहीं करूँगा। लेकिन किसी ने उसकी कोई बात नहीं सुनी। लोगों ने कानून अपने हाथ में ले लिया था। उसे मार डाला।

इसके बाद उसी गाड़ी में बैठकर पता नहीं वह कहाँ-कहाँ भटकती रही।

मेजर जनरल युवग्राफ ने उसकी सारी कथा सुन कर कहा—बड़ी अद्भुत बात है। सारी बात मैं बाद में बताऊँगा। इस समय मुझे समय नहीं है। हो सकता है बाद में मैं तुम्हें फिर से खोज निकालूँ। कौन कह सकता है कि मैं ही तुम्हारे सामने चाचा के रूप में हाजिर न हो जाऊँ और तुम्हारी इच्छानुसार तुम्हारी शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था कर दूँ?

दो

पाँच या दस साल बाद एक ग्रीष्म ऋतु की दुपहरी में डुडरोव और गोर्डन फिल मिले। वे ज़िवागो की सम्पादित और संवर्द्धित रचनाएँ पढ़ रहे थे। यह पुस्तक एक तरह से उन्हें कंठस्थ थी। अन्धेरा हो गया था इसलिए पढ़ने के लिए उन्होंने बत्ती जला दी।

सामने दूर तक फैली हुई थी लेखक की मातृभूमि—मास्को शहर, एक स्थान विशेष के रूप में नहीं, एक नायिका की तरह।

वे किताब के अन्तिम अध्याय तक पहुँच रहे थे।

युद्ध के पश्चात् आशा की जाती थी स्वाधीनता और जागरण की, लेकिन युद्ध पूर्व के इन वर्षों ने यह सिद्ध कर दिया कि यह विजय का पूर्वाभास नहीं है। और यही उसका ऐतिहासिक अर्थ है।

खिड़की के पास बैठे हुए वृद्धावस्था को प्राप्त इन दोनों व्यक्तियों को लग रहा था कि स्वतन्त्रता का उत्साह वहाँ मौजूद है। सन्ध्या के समय नीचे की सड़क पर भविष्य स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। भविष्य के इस शुभागमन का कारण है वे स्वयं! और अब यह उन्हीं का एक भाग बन गया है।

अपने परम पुनीत स्वदेश के लिए, इस कथा के पात्रों के लिए तथा शेष समस्त जन-समुदाय के प्रति उन्होंने हार्दिक उल्लास महसूस किया कि उनकी प्रसन्नता मूक संगीत में अन्तर्हित हो गयी और सुदूर तक व्याप्त हो गयी।

लगा कि जैसे यह पुस्तक उनकी अनुभूतियों की संवाहक है, साक्षी है!

इति शुभश्री

उपन्यास

यह कथा (डॉ. ज़िवागो) किसी विशेष राजनीतिक मतवाद पर आक्रमण नहीं है; यह दिखाती है कि किस प्रकार जन-आन्दोलन—चाहे उन का क्षेत्र विचार, राजनीति, इतिहास, उद्योग या कृषि कुछ भी हो—व्यक्ति की ज़िन्दगी को विघटित कर देते हैं। शोलोखोव का भी अभिप्राय यही है। यूरी ज़िवागो इतिहास के ज्वार पर हचकोले खाता रहता है; अपने सारे संघर्ष के बावजूद कुछ भी उपलब्ध नहीं कर पाता। अन्ततः वह एक टूटा हुआ व्यक्ति होता है—एक संक्षिप्त किन्तु सघन प्रेम, व्यर्थ गँवाये वर्षों, निष्कासित परिवार और अपनी निरर्थकता की स्मृति से ग्रस्त। इतिहास की कारणता और क्रान्तिकारी तथा क्रान्त्योत्तर राजनीति की जड़बुद्धिता के बीच मनुष्य के लिए कोई सम्भावना नहीं है।

—पॉल वेस्ट

वाग्देवी
पॉकेट
बुक्स

वाग्देवी प्रकाशन
बीकानेर
ISBN 81-85127-99-9